

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) NTA
राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET)

संस्कृत

प्रश्न पत्र : II

परीक्षा ज्ञान कोश

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

प्रधान संपादक

ए.के. महाजन

लेखक

कृष्ण कुमार यादव (एम.ए. बी.एड.)

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण एवं चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने रूप प्रिंटिंग प्रेस, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर,
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है
फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 695/-

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

विषय-सूची

संस्कृत

UGC NET/JRF

[illegible]

GDC

■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2008 का हल.....	1-10
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2012 का हल.....	11-21
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2013 का हल.....	22-32
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2015 का हल.....	33-40

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग NTA नेट संस्कृत नवीन परीक्षा पाठ्यक्रम

इकाई-I

वैदिक-साहित्य

(क) वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय:

- वेदों का काल : मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार
- संहिता साहित्य
- संवाद सूक्त : पुरुवा-उर्वशी, यम-यमी, सरमा-पणि, विश्वामित्र-नदी
- ब्राह्मण साहित्य
- आरण्यक साहित्य
- वेदांग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई-II

(ख) वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :-

1. निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :-

- ऋग्वेद :- अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.125), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129)
- शुक्लयजुर्वेद :- शिवसंकल्प, अध्याय-34 (1-6), प्रजापति, अध्याय-23 (1-5)
- अथर्ववेद :- राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)
- 2. ब्राह्मण-साहित्य : प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पंचमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेष, वाङ्मनस)।
- 3. उपनिषद्-साहित्य : निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन : ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर।
- 4. वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति :
 - ऋक्सप्रतिशाख्य : निम्नलिखित परिभाषाएँ - समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।
 - निरुक्त (अध्याय 1 तथा 2)
 - चार पद - नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,
 - निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन
 - निर्वचन के सिद्धान्त
 - निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति :
 - आचार्य, वीर, हृद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस, मेघ, वाक् उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।
 - निरुक्त (अध्याय 7 दैवत काण्ड)
 - वैदिक स्वर : उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित।
 - वैदिक व्याख्या पद्धति : प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई-III

दर्शन-साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय:

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)

इकाई-IV

(ख) दर्शन-साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :

- ईश्वरकृष्ण; सांख्यकारिका - सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।
- सदानन्द; वेदान्तसार : अनुबन्ध-चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पंचीकरण, विवर्त, महावाक्य, जीवन्मुक्ति।
- अन्नंभट्ट; तर्कसंग्रह/केशव मिश्र; तर्कभाषा:
 - पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द), प्रामाण्यवाद, प्रमेय।
- 1. लौगाक्षिभास्कर; अर्थसंग्रह
- 2. पतंजलि; योगसूत्र, - (व्यासभाष्य): चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य।
- 3. बादरायण ; ब्रह्मसूत्र 1.1 (शांकरभाष्य)
- 4. विश्वनाथपंचानन; न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)
- 5. सर्वदर्शनसंग्रह; जैनमत, बौद्धमत

इकाई-V

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(क) सामान्य-परिचय : निम्नलिखित आचार्यों का परिचय

- पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैयट, शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।
- पाणिनीय शिक्षा
- भाषाविज्ञान :
 - भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्ष, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीय ध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर) अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर।

इकाई-VI

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन :

- परिभाषाएँ - संहिता, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, धि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- सन्धि - अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- सुबन्त - अजन्त - राम, सर्व (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु।
हलन्त - लिह, विश्ववाह चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मधवन, पथिन्, विद्वस्, अस्मद् युष्मद्।
- समास- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- तद्धित - अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- तिङन्त - भू, एध्, अद्, अस्, हु, दिव्, षुज्, तुद्, तन्, कृ, रुध्, क्रीज्, चुर्
- णिजन्त; सन्नन्त; यङन्त; यङ्लुगन्त; नामधातु
- कृदन्त - तव्य/तव्यत्; अनीयर; यत्; ण्यत्; क्यप्; शतृ; शानच्; क्त्वा; क्त; क्तवत्; तुमुन्; णमुल्।
- स्त्रीप्रत्यय - लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- कारक प्रकरण-सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान-सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- महाभाष्य (पस्पशाहिक)-
शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ संबंध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।
- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) -
स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का संबंध, शब्द-अर्थ संबंध, ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई-VII

संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय :

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय:

- भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्ष, बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पंडिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर।
- काव्यशास्त्र : रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, वक्रोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे।

इकाई-VIII

(ख) निम्नलिखित का विशिष्ट अध्ययन :

- पद्य : बुद्धचरितम् (प्रथम) रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम्, (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
- नाट्य : स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्।
- गद्य : दशकुमारचरितम् (अष्टम-उच्छ्वास), हर्षचरितम्, (पञ्चम-उच्छ्वास), कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- चम्पूकाव्य : नलचम्पू : (प्रथम-उच्छ्वास)
- साहित्यदर्पण :
काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति-(संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद) श्रव्यकाव्य (गद्य, पद्य, मिश्र काव्य-लक्षणा)

• काव्यप्रकाश :

काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यंजनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)

अलंकार:-

वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपहनुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, सकंर, संसृष्टि।

• ध्वन्यालोक : (प्रथम उद्योत)

• वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)

• भरत-नाट्यशास्त्रम् (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)

• दशरूपकम् (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

• छन्द परिचय-

आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्य, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई-IX

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय:

- रामायण - विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान
- महाभारत - विषयवस्तु, काल महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।
- पुराण - पुराण की परिभाषा, महापुराण-उपपुराण, पौराणिक, सृष्टि-विज्ञान, पौराणिक आख्यान।
- प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय।
- लिपि : ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त।
- अभिलेख का सामान्य परिचय

इकाई -X

(ख) निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

- कौटिलीय-अर्थशास्त्रम् (प्रथम-विनयाधिकारिक)
- मनुस्मृति - (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
- याज्ञवल्क्यस्मृति - (व्यवहाराध्याय)
- लिपि तथा अभिलेख-
 - गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि।
 - अशोक के अभिलेख-प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख
 - मौर्योत्तरकालीन अभिलेख- कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
 - गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख-समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2004

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. देवेषु भूषिष्ठैः सूक्तैः स्तुतः :

- (a) अग्निः (b) रुद्रः
(c) इन्द्रः (d) वरुणः

Ans : (c) – देवेषु भूषिष्ठैः सूक्तैः इन्द्रः स्तुतः। अर्थात् भूषिष्ठ सूक्त में इन्द्र की स्तुति की गयी है। इन्द्र को दन्तोहर्ता वृत्रहा आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

2. शतपथब्राह्मणम्

- (a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) कृष्णयजुर्वेदस्य

Ans : (b) शतपथ ब्राह्मण शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिनि एवं काण्व दोनों शाखाओं में मिलता है।

3. धर्मसूत्रम् आयति

- (a) शिक्षायाम् (b) छन्दसि
(c) कल्पे (d) निरुक्ते

Ans : (c) धर्मसूत्र कल्प का एक भाग है कल्प छः वेदाङ्गों में एक है। कल्प के चार भाग होते हैं- श्रौतसूत्र, शुल्बसूत्र, गृह्यसूत्र तथा धर्मसूत्र।

4. वेदपाठस्य विकृतयः

- (a) तिस्त्रः (b) चतस्रः
(c) अष्ट (d) नव

Ans : (c) वेदपाठस्य विकृतिः - अष्टः। यथा - जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और धन।

5. वेदस्य नेत्रम् :

- (a) व्याकरणम् (b) छन्दः
(c) ज्योतिषम् (d) निरुक्तम्

Ans : (c) वेदस्य नेत्रम् - ज्योतिषमयनं चक्षुः, व्याकरण - मुखं व्याकरणं स्मृतं। छन्द - छन्दः पादौ तु वेदस्य, निरुक्त - श्रोतमुच्यते निरुक्तम्।

6. यम-यमी-संवादः वर्तते

- (a) ऋग्वेदे (b) यजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (a) यम-यमी संवाद ऋग्वेद के 10वें मण्डल का दशवां सूक्त है। इसके अलावा विश्वामित्र नदी संवाद 3/33 । पुरुरवा उर्वशी- संवाद 10/95 में प्राप्त होता है।

7. पृथिवीसूक्तः

- (a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) यजुर्वेदस्य

Ans : (c) पृथ्वीसूक्त-अथर्ववेद की शौनक शाखा के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है इसके देवता-पृथ्वी तथा ऋषि-अथर्वा हैं।

8. मैत्रेयी शिक्षामवाप :

- (a) याज्ञवल्क्यात् (b) पैप्लात्
(c) जैमिनेः (d) कौत्सात्

Ans : (a) मैत्रेयीशिक्षा याज्ञवल्क्यात् अवाप्। अर्थात् मैत्रेयी शिक्षा याज्ञवल्कीय शिक्षा में प्राप्त होती है।

9. निरुक्तेऽस्ति :

- (a) वेदमन्त्राणां संग्रहः (b) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्
(c) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम् (d) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया

Ans : (b) निरुक्तेऽस्ति-वैदिकशब्दानां निर्वचनम्। यास्क रचित निरुक्त में वेद के कठिन शब्दों का निर्वचन किया गया है।

10. ताण्ड्यब्राह्मणम्

- (a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) कृष्णयजुर्वेदस्य (d) सामवेदस्य

Ans : (d) ताण्ड्यब्राह्मण-सामवेद का ब्राह्मण है इसे प्रौढब्राह्मण भी कहा जाता है अन्य ब्राह्मण-पञ्चविंश, षड्विंश, आर्षेय, दैवत इत्यादि।

11. नचिकेतसः पितुर्नाम :

- (a) वाजस्रवाः (b) श्वेतकेतुः
(c) याज्ञवल्क्यः (d) जाबालिः

Ans : (a) कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता के पिता का नाम - वाजस्रवा था।

12. बालगङ्गाधर तिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्वः :

- (a) 6000 (b) 3500
(c) 2500 (d) 1200

Ans : (a) बालगङ्गाधर तिलक ने ऋग्वेद का काल निर्धारण ज्योतिष के आधार पर 6000 BC निर्धारित किया है।

13. सांख्यमते प्रकृतिविकृतयाः :

- (a) सप्त (b) पञ्च
(c) तिस्त्रः (d) नव

Ans : (a) सांख्यमते प्रकृति विकृति-सप्त हैं यथा - महत्, अहंकार, पञ्च तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)।

14. सांख्यमते विकृतयः :

- (a) सप्त (b) नव
(c) षोडश (d) अष्टादश

Ans : (c) सांख्यमते विकृति षोडश हैं जैसे - मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा पञ्च महाभूत।

15. सांख्यनये एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते :

- (a) अहङ्कारात् (b) महतः
(c) प्रकृतेः (d) पञ्चतन्मात्रेभ्यः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) सांख्यमते अहङ्कारात् एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते। सांख्यशास्त्र में 25 तत्त्व हैं लेकिन जो ग्यारह इन्द्रियाँ हैं उनकी उत्पत्ति अहङ्कार से होती है।
= सांख्यशास्त्र में 25 तत्त्व हैं लेकिन जो ग्यारह इन्द्रियाँ हैं उनमें से अहङ्कार की उत्पत्ति 11 इन्द्रियों से होती है। जैसे- प्रकृति → महत्तत्त्व → अहङ्कार → पञ्चतन्मात्राये → मन → एकादशेन्द्रिय → पञ्चमहाभूत ।

16. वेदान्तो नाम :

- (a) रामायणप्रमाणम् (b) धर्मशास्त्रप्रमाणम्
(c) उपनिषत्प्रमाणम् (d) अर्थशास्त्रप्रमाणम्

Ans : (c) - वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरक सूत्रादीनि च। ब्रह्मविद्या की प्रमाण रूप उपनिषदे ही मुख्य रूप से वेदान्त है।

17. सांख्यमते अन्तःकरणम् :

- (a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) पञ्चविधम्

Ans : (b) सांख्यमते अन्तःकरणम् त्रिविधम् अर्थात् सांख्य मतानुसार अन्तःकरण तीन हैं- (1) बुद्धि (2) मन (3) अहङ्कार।

18. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् :

- (a) जीव एव ब्रह्म (b) जीव एव ईश्वरः
(c) जीव एव अज्ञानम् (d) जीव एव पुरुषः

Ans : (a) अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् - जीवब्रह्मैक्यम् शुद्ध चैतन्यम् इत्यादि।

19. अनुबन्धः :

- (a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चविधः (d) षड्विधः

Ans : (b) अनुबन्ध - वेदान्तसार में चार अनुबन्ध हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन।

20. अध्यारोपस्य लक्षणम्

- (a) वस्तुनि अवस्वारोपः (b) अवस्तुनि वस्वारोपः
(c) जीवे ब्रह्मण आरोपः (d) न किमपि

Ans : (a) वस्तुन्यवस्वारोपोऽध्यारोपः - वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है जैसे - रज्जु में सर्प की प्रतीति ।

21. अद्वैते सुषुप्ते देवता

- (a) वैश्वानरः (b) ईश्वरः
(c) हिरण्यगर्भः (d) अग्निः

Ans : (b) अद्वैते सुषुप्ते देवता - ईश्वरः। वेदान्तसार के 25 खण्ड में जागरण काल के विषयों से रहित होने के कारण स्वप्न कही जाती है।

22. न्यायदर्शनानुसारं प्रमाणानि :

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्याय दर्शन के अनुसार चार प्रमाण हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

23. न्यायमते वाक्यम् :

- (a) पदवर्णशब्दाः
(b) अभिधालक्षणाव्यञ्जनाः
(c) आकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः
(d) पदपदार्थयोजना

Ans : (c) वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षाआसक्तियुक्तः पदोच्चयः - योग्यता आकांक्षा, आसक्ति से युक्त पदसमवाय को वाक्य कहा जाता है।

24. परार्थानुमाने अवयवाः :

- (a) त्रयः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) नव

Ans : (b) परार्थानुमान के पांच अवयव हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

25. परः सन्निकर्षः :

- (a) संहिता (b) वृद्धि
(c) नदी (d) घि

Ans : (a) (1) परः सन्निकर्षः संहिता अर्थात् दो वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं जैसे- सुधी + उपास्यः में धकारोत्तरवर्ती ई और परवर्ती उ में संहिता होने के कारण संधि कार्य हुआ है। (2) वृद्धिरेचि, (3) यूस्त्र्याख्यौ नदी, (4) शेषोध्यसखि।

26. अदेङ्

- (a) गुणः (b) प्रातिपदिकम्
(c) अपृक्तः (d) पदम्

Ans : (a) (1) अदेङ्गुणः-अत् और एङ् अर्थात् अ, ए, ओ की गुण संज्ञा होती है। (2) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, (3) अपृक्तम् एकालप्रत्ययः, (4) सुप्तिङन्तं पदम्।

27. न वेति :

- (a) उपधा (b) विभाषा
(c) निष्ठा (d) संहिता

Ans : (b) (1) न वेति विभाषा, (2) अलोऽन्त्यात्पूर्वं उपधा, (3) क्तक्तवतूनिष्ठा, (4) परः सन्निकर्षः संहिता।

28. तुल्यास्यप्रयत्नः :

- (a) घि (b) सवर्णम्
(c) निष्ठा (d) प्रगृह्यम्

Ans : (b) (1) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न एक होते हैं उनकी सवर्ण संज्ञा होती है। (2) शेषोध्यसखि, (3) क्तक्तवतूनिष्ठा, (4) ईदूदेद्विवचनम् प्रगृह्यम्।

29. कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायाः :

- (a) प्रथमा (b) पञ्चमी
(c) चतुर्थी (d) षष्ठी

Ans : (d) कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठी विभक्तिर्भवति- कर्म आदि कारक के भी सम्बन्ध मात्र की विवक्षा करने में षष्ठी विभक्ति होती है - जैसे- मातुःस्मरति।

30. प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः :

- (a) द्वन्द्वः (b) अव्ययीभावः
(c) तत्पुरुषः (d) बहुव्रीहिः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) (1) प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः, (2) प्रायेण उत्तर पदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः, (3) प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः, (4) प्रायेणोभयपदार्थप्रधानोद्वन्द्वः।

31. उपपदविभक्तेः बलीयसी।

- (a) अनुपपदविभक्ति (b) कारकविभक्तिः
(c) प्रथमाविभक्तिः (d) न कोऽपि विभक्तिः

Ans : (b) उपपदविभक्तेः कारक विभक्तिर्वलीयसी अर्थात् पद के सम्बन्ध से होने वाली विभक्ति से क्रिया के सम्बन्ध से होने वाली विभक्ति बलवती होती है। जैसे-गुरुः देवं नमस्करोति।

32. भाषा विनिमयस्य साधनम्।

- (a) विचार (b) आचार
(c) वित्त (d) वस्तु

Ans : (a) भाषा विचार विनिमयस्य साधनम् - “अपने व्यापकतम रूप में भाषा का अर्थ है अपने विचारों और मनोभावों को व्यक्त करने वाले ऐसे संकेतों का कुल योग जो देखे और सुने जा सके इच्छानुसार उत्पन्न किए एवं दोहराए जा सके”। डा० भोला नाथ तिवारी।

33. भाषाणां वर्गीकरणस्य आधारः स्वीकृतः :

- (a) कालः (b) धर्मः
(c) प्रकृतिः (d) आकृतिः

Ans : (d) भाषा वर्गीकरण का आधार - विश्व की अनेक भाषाओं को ध्यान में रखते हुए भाषा का दो भागों में वर्गीकरण किया गया है- (1) आकृतिमूलक वर्गीकरण - आकृति शब्दों या पदों की रचना के आधार पर, (2) पारिवारिक वर्गीकरण - अर्थ तत्त्व एवं रूपतत्त्व की समानता के आधार पर - 4 खण्डों में कुल 18 परिवार।

34. कादयो मावसानाः :

- (a) स्वरः (b) अर्धस्वराः
(c) स्पर्शाः (d) ऊष्माणः

Ans : (c) कादयो मावसानाः स्पर्शाः अर्थात् - क् से लेकर म् तक के वर्ण स्पर्श सञ्ज्ञक होते हैं। य्, व्, र्, ल्, अन्तस्थ। श्, ष्, स्, ह् ऊष्म वर्ण कहे जाते हैं तथा अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ अच् कहे जाते हैं।

35. भारतीयार्यभाषासु प्राचीनतमा :

- (a) पालिभाषा (b) प्राकृतभाषा
(c) वैदिकसंस्कृतभाषा (d) लौकिकसंस्कृतभाषा

Ans : (c) भारतीयार्यभाषासु वैदिक संस्कृत प्राचीनतमा भाषाऽस्ति - भारतीय आर्यों की प्राचीन भाषा वैदिक संस्कृत है क्योंकि वेदों को अपौरुषेय कहा गया है तथा संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी तथा इसे देव वाणी भी कहा जाता है।

36. भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति :

- (a) संस्कृतभाषा (b) आङ्ग्लभाषा
(c) तमिलभाषा (d) प्राकृतभाषा

Ans : (c) भारोपीयपरिवार की भाषा को दो वर्गों में बांटा गया है- (i) केन्तुम्-लैटिन, ग्रीक, इटैलियन, फ्रेंच, ब्रीटन, गोलिक, तोखारी। (ii) सतम् - अवेस्ता, फारसी, संस्कृत, हिन्दी, रूसी, बुल्गेरियन, लिथुआनियन् अंग्रेजी। अतः तमिलभाषा भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है।

37. 'वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' इत्युक्तिः :

- (a) बुद्धचरिते (b) रघुवंशे
(c) नैषधीयचरिते (d) शिशुपालवधे

Ans : (b) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य का यह मङ्गलाचरण है जिसमें भगवान् शंकर तथा पार्वती की आराधना की गयी है।

शब्द और अर्थ के समान नित्य सम्बद्ध तथा संसार के माता-पिता भगवती पार्वती और भगवान् शंकर को शब्दार्थ परिज्ञान के लिए मैं प्रणाम करता हूँ।

38. केवलं मन्दाक्रान्ताछन्दसि निबद्धम् :

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) मेघदूतम्
(c) बुद्धचरितम् (d) नैषधीयचरितम्

Ans : (b) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् गीतिकाव्य मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखा गया है। मन्दाक्रान्ता का लक्षण इस प्रकार है- मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्पौ नतौ ताद् गुरु चेत्। इसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण दो गुरु वर्ण आये तथा 4, 6 तथा 7 पर यति होती है। कुल 17 वर्ण होते हैं।

39. कालानुसारी क्रमः :

- (a) कालिदासः, भासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(b) भासः, कालिदासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(c) भवभूतिः, कालिदासः, भासः, बाणभट्टः
(d) बाणभट्टः, भासः, कालिदासः, भवभूतिः

Ans : (b)

कालक्रम - भास - 100 ई.पू. से 200 ई. के मध्य-13 नाटक
कालिदास - प्रथम शताब्दी ई. पूर्व - 7 रचनाएँ
बाणभट्ट - सातवीं शताब्दी का पूर्वाह्न - 5 रचनाएँ
भवभूति - सातवीं आठवीं - 3 रचनाएँ

40. शुकनासोपदेशः वर्तते :

- (a) दशकुमारचरिते
(b) कादम्बर्याम्
(c) हर्षचरिते
(d) अभिज्ञानशाकुन्तले

Ans : (b) शुकनासोपदेशः कादम्बर्याम् वर्तते। शुकनासोपदेशः का वर्णन कादम्बरी कथामुखम् के पूर्वाह्न में है। कादम्बरी कथा दो भागों में विभाजित है। (1) पूर्वाह्न, (2) उत्तराह्न। इस कथा में तीन जन्मों की कहानी वर्णित है।

41. करुणरसप्रधानं नाटकम् :

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) उत्तररामचरितम्
(d) मृच्छकटिकम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) भवभूति विरचित उत्तरामचरितम् नाटक करुण रस प्रधान है जो सात अंको का है। इसके तृतीय अङ्क में कहा भी गया है— एकोरसः करुण एवं निमित्तभेदाद्।
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् – शृंगाररस, (iii) स्वप्नवासवदत्तम् – शृंगाररस, (iv) मृच्छकटिकम् – शृंगाररस।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) वेणीसंहार	(i) भवभूति:
(B) स्वप्नवासवदत्तम्	(ii) कालिदासः
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	(iii) भट्टनारायणः
(D) उत्तररामचरितम्	(iv) भासः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(i)	(iii)
(b)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)

Ans : (d) वेणीसंहार - भट्टनारायण
स्वप्नवासवदत्तम् - भास
अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कालिदास
उत्तररामचरितम् - भवभूति

43. “तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्” इत्युक्तिः सङ्गच्छते :

(a) मृच्छकटिके	(b) वेणीसंहारे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले	(d) उत्तररामचरिते

Ans : (c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में श्लोकचतुष्टय का वर्णन है— चतुर्थअङ्क के चार प्रसिद्ध श्लोक महाकवि कालिदास रचित ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के हैं जो इस प्रकार हैं —

- (i) यास्यत्यद्य शाकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया 4/6
(ii) अस्मानसाधु विचिन्त्य 4/17
या
अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे 4/19
(iii) शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रिय सखीवृत्तिं 4/18
(iv) भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी 4/20

44. साहित्यदर्पणस्य प्रणेता :

- | |
|-------------------------------|
| (a) पण्डितराज जगन्नाथः |
| (b) कविराज विश्वनाथः |
| (c) दीपशिखा कालिदासः |
| (d) श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिः |

Ans : (b) साहित्यदर्पण के प्रणेता – आचार्य विश्वनाथ हैं। रसगङ्गाधर – पं. जगन्नाथ (7 वीं शताब्दी) (चार आनन)। दीपशिखा कालिदास की उपाधि है।

45. अग्रिमा शब्दशक्तिः :

(a) तात्पर्याख्या	(b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना	(d) अभिधा

Ans : (d) तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा।। (सा0 द0) अर्थ वाच्य – लक्ष्य एवं व्यंग्य तीन प्रकार का माना गया है। वाच्य अभिधा से, लक्ष्य-लक्षणा से तथा व्यङ्ग्य व्यञ्जना से बोध होता है संकेतित अर्थ का बोध कराने वाली प्रथम शक्ति अभिधा है।

46. शब्दस्यार्थादिकस्य वृत्तिः :

(a) अभिधा	(b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना	(d) तात्पर्याख्या

Ans : (c) शब्द के अर्थ आदि को बताने वाली वृत्ति व्यञ्जना है। अनेक अर्थ वाले शब्द के एक अर्थ में संयोग आदि से नियन्त्रित हो जाने पर अन्य अर्थ का बोध जिस शक्ति से होता है वह व्यञ्जना कही जाती है। जैसे – सशंख चक्रो हरिः। शंख एवं चक्र के योग वश ही हरि शब्द विष्णु का बोध कराता है।

47. सर्गबन्धो :

(a) नाटकम्	(b) गद्यकाव्यम्
(c) महाकाव्यम्	(d) चम्पूकाव्यम्

Ans : (c) –सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैकं नायकः सुरः । सद्वंशः क्षत्रियोवापि धीरोदात्त गुणान्वितः ।। महाकाव्य का लक्षण है— महाकाव्य सर्गों में विभक्त होना चाहिए। नायक, देवता, क्षत्रिय। शृंगार, वीर और शान्त में से कोई एक प्रधानरस होना चाहिए।

48. रूपकभेदाः :

(a) अष्टौ	(b) नव
(c) दश	(d) एकादशा

Ans : (c) – रूपक के दश भेद होते हैं –

1. नाटक
2. प्रकरण
3. भाण
4. प्रहसन
5. डिम
6. व्यायोग
7. समवकार
8. वीथी
9. अङ्क
10. ईहामृग

49. विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणम् :

- | |
|---|
| (a) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि |
| (b) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् |
| (c) वाक्यं रसात्मकं काव्यम् |
| (d) इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली |

Ans : (c) विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणमस्ति –

- (i) वाक्यं रसात्मकं काव्यं – (आचार्यविश्वनाथ) साहित्य दर्पण।
- (ii) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि – आचार्य मम्मट (काव्य प्रकाश)
- (iii) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् – पं जगन्नाथ (रसगङ्गाधर)
- (iv) शरीरं तावद् इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली – दण्डी (काव्यादर्श)

50. वीररसस्य स्थायीभावः :

(a) क्रोधः	(b) उत्साहः
(c) भयम्	(d) विस्मय

Ans : (b)

कुल नव रस माने जाते हैं काव्य प्रकाश के अनुसार –

1. शृंगार – रति
2. रौद्र – क्रोध
3. बीभत्स – जुगुत्सा
4. हास्य – हास
5. करुण – शोक
6. वीर – उत्साह
7. भयानक – भय
8. अद्भुत – विस्मय
9. शान्त – निर्वेद

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2005

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति वचनं कस्याम् उपनिषदोपलभ्यते?

- (a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) मुण्डकोपनिषदि (d) ऐतरेयोपनिषदि

Ans : (c) 'सत्यमेव जयते नानृतम्' यह वचन मुण्डकोपनिषद् में प्राप्त होता है। मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है, अथर्ववेद के अन्तर्गत तीन उपनिषदे प्राप्त होती हैं। (1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माण्डूक्योपनिषद्। मुण्डकोपनिषद् शौनकाशाखा से सम्बन्धित है।

2. 'विश्वामित्र -नदी संवाद ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले उपलभ्यते?

- (a) प्रथममण्डले (b) तृतीयमण्डले
(c) दशममण्डले (d) अष्टममण्डले

Ans : (b) विश्वामित्र नदी संवाद ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में है। विश्वामित्र- नदी संवाद- 3/33/1 ऋग्वेद में दश मण्डल हैं प्रथम मण्डल में अगस्त्य लोपा मुदा संवाद है। दशम मण्डल में सरमा पणि तथा यम-यमी संवाद मिलता है।

3. 'शतपथब्राह्मणम् केन वेदेन सम्प्रक्रमम् ?

- (a) सामवेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (b) यजुर्वेद की दो शाखायें प्राप्त होती हैं - (1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की कई शाखायें प्राप्त होती हैं- माध्यन्दिनसंहिता, काण्वसंहिता, वाजसनेयी इत्यादि। शतपथ ब्राह्मण भी शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण है।

4. त्रीणि पदानि कस्य देवस्य प्रसिद्धानि?

- (a) अग्नेः (b) इन्द्रस्य
(c) सवितुः (d) विष्णोः

Ans : (d) तीन पदों के लिए भगवान् विष्णु प्रसिद्ध हैं क्योंकि इन्होंने सिर्फ तीन पदों से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को माप लिया था। इसीलिए इनका नाम त्रिविक्रम पड़ा। इन्द्र को शचीपति एवं मरुत्वान् कहते हैं अग्नि जातवेदा के लिए प्रसिद्ध है।

5. 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदेद्वयमुपयुज्यते?

- (a) कृष्णयजुर्वेदे (b) ऋग्वेदे
(c) अथर्ववेदे (d) शुक्लयजुर्वेदे

Ans : (c) 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह मन्त्र अथर्ववेद से सम्बन्धित है। अथर्ववेद में इस मन्त्र का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। यह मन्त्र इहलौकिक है।

6. पैप्पलाद शाखा केन वेदेन सम्प्रक्रमता?

- (a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (c) महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में नवधाऽथर्वणो वेदः कहकर अथर्ववेद की नव शाखाओं का उल्लेख किया है जिसमें से वर्तमान में सिर्फ दो ही शाखायें प्राप्त होती हैं- (1) पैप्पलाद शाखा (2) शौनकीय शाखा। पिप्पलाद ऋषि के नाम से इस शाखा का नाम पैप्पलाद पड़ा।

7. तैत्तिरीयारण्यकम् के वेदमवलम्बते?

- (a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

Ans : (a) यजुर्वेद के दो भाग - (1) कृष्णयजुर्वेद (2) शुक्ल यजुर्वेद। कृष्णयजुर्वेद के दो आरण्यक मिलते हैं- तैत्तिरीय आरण्यक (2) मैत्रायणी आरण्यक। शुक्लयजुर्वेद के अन्तर्गत बृहदारण्यक आता है।

8. को नाम वे दशतयी इति शब्देन व्यपदिश्यते?

- (a) सामवेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) ऋग्वेद

Ans : (d) ऋग्वेद को दशतयी नाम से भी जाना जाता है। इसी प्रकार सामवेद को संगीत एवं अथर्ववेद को लौकिक उपनामों से भी जाना जाता है।

9. ऋग्वेदस्य नवम मण्डले को नाम देव स्तुति लभते?

- (a) इन्द्रः (b) विष्णुः
(c) रुद्रः (d) सोमः

Ans : (d) ऋग्वेद के नवम् मण्डल में 120 सूक्तों में सोम की स्तुति की गयी है। इसी प्रकार ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 145वें सूक्त में विष्णु की स्तुति की गयी है। इन्द्र ऋग्वेद का सबसे प्रभावशाली देवता है इसकी स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है।

10. वेदाङ्गानि कति :

- (a) पञ्च (b) दश
(c) षट् (d) द्वादश

Ans : (c) वेदपुरुष के 6 (षट्) अङ्ग बताये गये हैं जो इस प्रकार हैं (1) शिक्षा (2) कल्प (3) निरुक्त (4) व्याकरण (5) छन्द (6) ज्योतिष। जिसमें से व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है।

11. त्रिष्टुप् छन्दसि कति अक्षराणि विराजन्ते?

- (a) त्रिंशत् (b) चतुर्विंशति
(c) चतुश्चत्वारिंशत् (d) षट्त्रिंशत्

Ans : (c) त्रिष्टुप् छन्द में चतुश्चत्वारिंशत् (44) अक्षर होते हैं इस छन्द में चार चरण होते हैं प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। $11 \times 4 = 44$ वर्ण।

12. श्रौतसूत्रं किं वेदाङ्गविषयीकरोति?

- (a) कल्पम् (b) निरुक्तम्
(c) ज्योतिषम् (d) व्याकरणम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) षड्वेदाङ्गो में कल्प का विशेष स्थान है। कल्प को वेदपुरुष का हाथ माना गया है। कल्प मुख्यतः चार भागों में विभक्त है- (1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र।

13. सांख्यस्य मतमिदम् :

- (a) आरम्भवादः (b) विवर्तवादः
(c) असत्कार्यवादः (d) सत्कार्यवादः

Ans : (d) सांख्यदर्शन के प्रमुख आचार्य कपिल माने जाते हैं। सांख्यदर्शन में परिणामवाद को ही सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है। सत्कार्यवाद की पुष्टि के लिए 5 हेतु माने गये हैं - (1) असद्व्यवस्था (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्यशक्यकरणात् और (5) कारणभावात्।

14. त्रिगुणातीतोऽयम्

- (a) महान् (b) अहङ्कार
(c) पुरुषः (d) विकारः

Ans : (c) पुरुषः त्रिगुणातीतः। अव्यक्त एवं सभी पदार्थ त्रिगुण, अविवेकि विषय आदि होते हुये संघात रूप है। जन्म, मरण एवं इन्द्रियों की व्यवस्था होने एवं अलग-अलग रूप में प्रवृत्त होने से पुरुष त्रिगुणत्व की श्रेणी में आता है।

15. विषादोऽस्य स्वरूपम्

- (a) सत्त्वगुणस्य (b) तमोगुणस्य
(c) रजोगुणस्य (d) पुरुषस्य

Ans : (b) विषाद तमोगुण का स्वरूप है। तीन गुण हैं यह गुणत्रय के नाम से भी जाने जाते हैं- (1) सत्त्वगुण (2) रजोगुण (3) तमोगुण।

16. भूतद्यहङ्काराद् उत्पद्यते

- (a) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकम् (b) कर्मेन्द्रियपञ्चकम्
(c) तन्मात्रपञ्चकम् (d) मनः

Ans : (c) अहङ्कार से पञ्चतन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है। पञ्चमहाभूत है- आकाश, वायु, तेज, जल और पृथिवी। पञ्चतन्मात्राएँ हैं- शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध इनका क्रमशः एक दूसरे से सम्बन्ध है।

17. अनुबन्धोऽयम्

- (a) पञ्चीकरणम् (b) अज्ञानम्
(c) विषयः (d) लक्षणम्

Ans : (c) विषयोऽनुबन्धः - विषयः जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्।

18. नैमित्तिकं कर्मैदम्

- (a) ज्योतिष्टोमयज्ञम् (b) ब्रह्महत्या
(c) जातेष्टि (d) सन्ध्यावन्दनम्

Ans : (c) पुत्रजन्म आदि के निमित्त किये जाने वाले जातेष्टि आदि नैमित्तिक कर्म है। ब्रह्महत्या आदि निषिद्ध कर्म है। ज्योतिष्टोम आदि काम्य कर्म की श्रेणी में आते हैं तथा सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म है।

19. विज्ञानमयकोशोऽयम्

- (a) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + बुद्धिः
(b) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + मनः
(c) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादिपञ्चकम्
(d) पञ्चकमेन्द्रियाणि + बुद्धिः

Ans : (a) वेदान्तसार में पञ्च ज्ञानेन्द्रियों (श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) से युक्त बुद्धि को विज्ञानमय कोश कहा गया है। इयं बुद्धिज्ञानेन्द्रियैः संहिता विज्ञानमय कोशो भवति।

20. 'जीवन्मुक्तः' इत्यस्य अर्थो विद्यते-

- (a) जीवनात् मुक्तः (b) जीवितः सन् मुक्तः
(c) प्रारब्धकर्मयो मुक्तः (d) शुभवासनानुवृत्तेर्मुक्तः

Ans : (a) जीवनाद् मुक्तः इति जीवन्मुक्तः। तात्पर्य यह है कि समस्त बन्धनों से रहित हो जाने से केवल ब्रह्म में ही तत्पर रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ को जीवन्मुक्त कहते हैं।

स्रोत- वेदान्तदर्शन-सदानन्द श्रीवास्तव पृ0सं0-205

21. न्यायवैशेषिकानुसारं गुणाः कति सन्ति-

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) चतुर्विंशतिः (d) सप्तदश

Ans : (c) न्यायवैशेषिकानुसारं गुण 24 हैं जो इस प्रकार हैं- रूप, रस-गन्ध-स्पर्श-संख्या-परिमाण-पृथक्त्व-संयोग-विभाग-परत्व-अपरत्व गुरुत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःख- इच्छा-द्वेष-प्रयत्न- धर्म-अधर्म तथा संस्कार।

22. घटः स्वगतरूपादेः -

- (a) असमवायिकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) न कारणम्

Ans : (b) घट अपने रूपादि का समवायिकारण है जिस प्रकार तन्तु पट के प्रति समवायि कारण हैं। यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा- तन्तवः पटस्य समवायि कारणम्।

23. श्रोत्रेण शब्द साक्षात्कारे सन्निकर्षः -

- (a) संयोगः (b) विशेषण विशेष्यभावः
(c) समवायः (d) संयुक्तसमवाय

Ans : (c) जब कान से शब्द ग्रहण किया जाता है उस समय कर्ण ही इन्द्रिय है तथा शब्द अर्थ है। इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय सन्निकर्ष कहलाता है।

24. सादृश्यज्ञानं करणम् -

- (a) अनुमितेः (b) उपमितेः
(c) शाब्दबोधस्य (d) चाक्षुषप्रत्यक्षस्य

Ans : (b) संज्ञासंज्ञि सम्बन्ध ज्ञानमुपमितिः। तत्करणं सादृश्यज्ञानम्। संज्ञा संज्ञि इनका जो सम्बन्ध है उसका ज्ञान उपमिति है उस उपमिति के प्रति उपमेय में उपमान का सादृश्यज्ञान (दर्शन) करण है।

25. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति -

- (a) वृद्धिरेचि (b) वृद्धिरादैच्
(c) मृजेवृद्धिः (d) इकोगुणवृद्धी

Ans : (b) वृद्धिरादैच् वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र है अर्थात् आत् + ऐच् की वृद्धि संज्ञा होती है। आत् में आ तथा ऐच् में ऐ, औ आते हैं। वृद्धिरेचि वृद्धि सन्धि विधायक सूत्र है अर्थात् अ या आ के बाद ऐच् आने पर पूर्व एवं पर को वृद्धि एकादेश होता है।

26. निषेधाविकल्पयोः का सञ्ज्ञा भवति-

- (a) निषेधविकल्पः (b) विकल्पनिषेधः
(c) विभाषा (d) विकल्पः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) न वेति विभाषा सूत्र से निषेध और विकल्प की विभाषा संज्ञा होती है। विभाषा का अर्थ भी होता है- विकल्प से अर्थात् हो भी सकता है नहीं भी हो सकता।

27. एकाल् प्रत्ययस्य का संज्ञा-

- (a) नदी (b) समाहार:
(c) एकवर्णः (d) अपृक्तम्

Ans : (d) एकाल् प्रत्ययः अपृक्तम्- सूत्र से एकाल् प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा होती है। समाहार स्वरितः -उच्चारण स्थान के उच्च अंश से उच्चारित स्वर उदात्त नीचे से अनुदात्त तथा दोनों से स्वरित कहलाता है। यूस्त्राख्यौ नदी सूत्र से ईकारान्त एवं ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

28. अपादाने का विभक्तिः भवति-

- (a) प्रथमा (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

Ans : (b) 'अपादाने पञ्चमी'- जिसकी अपादान संज्ञा हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है और 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया होती है। प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

29. समीचीनां तालिकां चिनुत -

- (A) प्रगृह्यम् (1) यू स्त्राख्यौ
(B) टि (2) अदेड्
(C) गुणः (3) ईदूदेद्विवचनम्
(D) नदी (4) अचोऽन्त्यादि

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	2	1	3
(b)	2	4	3	1
(c)	1	2	3	4
(d)	3	4	2	1

Ans : (d) ईदूदेद्विवचनम् प्रगृह्यम् - ऊकारान्त/उकारान्त/तथा एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अचोऽन्त्यादि टि- अन्तिम अच् की टि संज्ञा होती है। अदेड्गुणः- अत् और एड् की गुण संज्ञा होती है। यूस्त्राख्यौ नदी- नित्य स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त और उकारान्त की नदी संज्ञा होती है।

30. अक्षणा काणः केन सूत्रेण तृतीया विभक्तिः -

- (a) कर्तृकरणयोस्तृतीया (b) येनाङ्गविकारः
(c) दिवः कर्म च (d) जनिकर्तुः प्रकृतिश्च

Ans : (b) 'अक्षणा काणः' इस वाक्य में अक्षणा में तृतीया विभक्ति येनाङ्गविकारः सूत्र से हुआ है। येनाङ्गविकारः का अर्थ- जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उस अङ्ग में तृतीया विभक्ति होती है।

31. कर्तुः क्रियया ईप्सिततमं किम् -

- (a) कर्ता -कारकम् (b) करण-कारकम्
(c) कर्म कारकम् (d) अधिकरण कारकम्

Ans : (c) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहे उसकी कर्म संज्ञा होती है। 'साधकतमं करणम्' - अपने कार्य सिद्धि में कर्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता ले वही करण है।

32. अधिहरि इत्यत्र कः समासः अस्ति-

- (a) केवल समासः (b) उपपद समासः
(c) तत्पुरुषः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) अधिहरि में अव्ययीभाव समास है क्योंकि अव्ययीभाव समास में पूर्व पद प्रधान होता है- प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः। किसी विशेष संज्ञा से मुक्त केवल समास होता है- 'विशेष संज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः'। प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः- जिस समास का उत्तर पद प्रधान हो वह तत्पुरुष होता है।

33. नित्य समासो नाम -

- (a) अस्वपदविग्रहः (b) विकल्पो न भवति
(c) स्वपद विग्रहः (d) विग्रहवान्

Ans : (a) समास नित्य होने पर लौकिक विग्रह करने की स्थिति में अस्वपद विग्रह किया जाता है जबकि वैकल्पिक समास में स्वपद विग्रह किया जाता है।

34. संयोगात्मक भाषा-

- (a) उर्दू (b) संस्कृतम्
(c) चीनी (d) हिन्दी

Ans : (b) संयोगात्मक भाषा के अन्तर्गत संस्कृत भाषा का वर्णन मिलता है। संस्कृत 'सम्' उपसर्ग पूर्वक √कृ धातु क प्रत्यय के योग से बना है हिन्दी वियोगात्मक भाषा के अन्तर्गत आती है। तथा चीनी अयोगात्मक भाषा है।

35. निर्दिष्टेषु स्पर्शः कः?

- (a) म् (b) ह्
(c) अ (d) ल्

Ans : (a) कादयोमावसानाः स्पर्शाः 'क्' से लेकर म् पर्यन्त वर्णों की स्पर्श संज्ञा होती है। ह् की ऊष्म संज्ञा तथा अ की अच् संज्ञा होती है।

36. तालव्येषु अन्तर्भवति-

- (a) अ (b) क्
(c) ष् (d) श्

Ans : (d) 'इचुयशानां तालुः' - इ, च वर्ग, य और श का उच्चारण स्थान तालु है। क् का - कण्ठ तथा अ का भी उच्चारण स्थान कण्ठ है। ष् वर्ण का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

37. "याच्छा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा" इत्यस्ति-

- (a) रघुवंशमहाकाव्ये (b) किरातार्जुनीये
(c) कादम्बर्याम् (d) मेघदूते

Ans : (d) याच्छा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा यह श्लोक कालिदास विरचित मेघदूत का है। पूर्वमेघदूत में विरही यक्ष मेघ से अपनी प्रियतमा के पास सन्देश ले जाने की याचना करता है कि श्रेष्ठ लोगों से निष्फल याचना भी दुष्ट लोगों की सफल याचना से अच्छी होती है।

38. बाणभट्ट विरचितमस्ति-

- (a) बुद्धचरितम् (b) हर्षचरितम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) दशकुमारचरितम्

Ans : (b) महाकवि बाण की पाँच रचनायें प्राप्त होती हैं- जिनमें (1) कादम्बरी (2) हर्षचरितम् (3) पार्वतीपरिणय (4) मुकुटताडितक और (5) चण्डीशतकम्। बुद्धचरितम् अश्वघोष द्वारा विरचित महाकाव्य है। नैषधीयचरितम् के रचयिता श्री हर्ष है तथा दण्डी द्वारा विरचित दशकुमारचरितम् है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

39. प्रकरणम् अस्ति-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) रत्नावली (d) वेणीसंहारम्

Ans : (b) मृच्छकटिकम् शूद्रक रचित एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 10 अङ्क हैं। रूपक के दश भेदों में से प्रकरण भी रूपक का ही एक भेद है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकविकालिदास विरचित विश्व प्रसिद्ध नाटक है। रत्नावली श्रीहर्ष द्वारा रचित नाटिका है। वेणीसंहारम् भट्टनारायण विरचित है।

40. 'मृच्छकटिकस्य' रचयिता कः अस्ति-

- (a) भासः (b) कालिदासः
(c) शूद्रकः (d) भट्टनारायणः

Ans : (c) मृच्छकटिकम् के रचयिता शूद्रक हैं यह एक प्रकरण ग्रन्थ है। मृच्छकटिकम् नाटक में 10 अङ्क हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता कालिदास हैं। नायिका शकुन्तला अप्रतिमा सुन्दरी है। दुष्यन्त धीरोदात्त कोटि के नायक हैं।

41. मुद्राराक्षसेऽङ्गीरसः वर्तते-

- (a) शृंगाररसः (b) करुणरसः
(c) हास्यरसः (d) वीररसः

Ans : (d) मुद्राराक्षस विशाखदत्त विरचित सात अङ्कों का नाटक है। इसका नायक चन्द्रगुप्त है तथा इस नाटक में नायिका का अभाव है। मुद्राराक्षस नाटक में प्रायः सभी रस मिलते हैं किन्तु वीर रस अङ्गी रस है। अतः इस नाटक में वीर रस की प्रधानता है।

42. 'ऋषीनां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' इत्यस्ति-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तले
(b) मृच्छकटिके
(c) उत्तररामचरिते
(d) मुद्राराक्षसे

Ans : (c) 'ऋषीनां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' इसका वर्णन महाकवि भवभूति द्वारा रचित उत्तररामचरितम् नाटक में मिलता है। इस नाटक में सात अङ्क हैं तथा उत्तररामचरितम् नाटक में ही छायांक का वर्णन मिलता है।

43. अधोलिखितेषु किं रूपकं नास्ति?

- (a) भाणः (b) समवकारः
(c) आख्यायिका (d) वीथी

Ans : (c) आख्यायिका रूपक के अन्तर्गत नहीं है बल्कि उपरूपक है। रूपक के 10 भेद तथा उपरूपक के 18 भेद होते हैं रूपक के 10 भेद निम्न हैं-
रूपकमथ प्रकरणं भाण व्यायोग समवकार डिमा।
ईहामृगाङ्क वीथ्यः प्रहसनम् इति रूपकाणि दश॥

44. काव्यादर्शकारः कः अस्ति-

- (a) रुद्रटः (b) वामनः
(c) दण्डी (d) राजशेखरः

Ans : (c) काव्यादर्श के रचयिता महाकवि दण्डी हैं काव्यादर्श में दश परिच्छेद हैं। रुद्रट रचित काव्यालङ्कार है जिसमें 16 अध्याय एवं 714 अध्याय हैं। वामन का काव्यालङ्कारसूत्र है जो 5 अधिकरणों में है। जबकि 18 अध्याय वाली काव्यमीमांसा राजशेखर रचित है।

45. अनलङ्कृती पुनः क्वापि इति केनोक्तम् -

- (a) विश्वनाथेन (b) मम्मटेन
(c) भामहेन (d) दण्डिना

Ans : (b) मम्मट द्वारा रचित 'काव्यप्रकाश' में अनलङ्कृती पुनः क्वापि का वर्णन मिलता है। काव्यप्रकाश में दश उल्लास हैं काव्यप्रकाश में काव्य प्रकाश की परिभाषा है। तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।

46. अद्भुत् रसस्य स्थायीभावः कः अस्ति-

- (a) इतिः (b) शोकः
(c) विस्मयः (d) जुगुप्सा

Ans : (c) अद्भुत् रस का स्थायीभाव विस्मय है। शृंगार रस का स्थायीभाव रति है। करुणरस का स्थायीभाव शोक है तथा वीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा है।

47. सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारो भवति -

- (a) व्यञ्जनाव्यापारः
(b) अभिधाय्यापारः
(c) लक्षणाव्यापारः
(d) तात्पर्याभिधोव्यापारः

Ans : (c) सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारः लक्षणाव्यापारः भवति। सान्तरार्थनिष्ठ व्यापार ही लक्षणाव्यापार कहलाता है।

48. नाटके न्यूनतः कति अङ्काः भवन्ति?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) दश (d) षट्

Ans : (a) नाटक में कम से कम पाँच अंक तथा अधिक से अधिक 10 अंक होने चाहिए इसविषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है-

**सुखदुःखसमुद्भूति नाना रसनिरन्तरम् ।
पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्का परिकीर्तिताः ॥**

49. शृंगाररसः कतिविधाः -

- (a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) त्रिविधः (d) पञ्चविधः

Ans : (a) शृंगार रस के दो भेद हैं- (1) सम्भोग शृंगार (2) विप्रलम्भ शृंगार। सम्भोग शृंगार असंख्य होता है जबकि विप्रलम्भ शृंगार के पाँच भेद होते हैं।

50. अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते?

- (a) कादम्बर्याम्
(b) रघुवंशे
(c) मेघदूते
(d) शाकुन्तले

Ans : (c) कालिदास विरचित मेघदूत में अलकापुरी का वर्णन मिलता है जो कि कैलाश पर्वत पर स्थित है तथा यक्षों (कुबेर) की नगरी है। कादम्बरी में विदिशा का वर्णन मिलता है जो कि शूद्रक की राजधानी थी, शाकुन्तलम् में हस्तिनापुर का वर्णन है जो महाराज दुष्यन्त की राजधानी थी।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2005

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. को नाम देवः द्युस्थानीयः?

- (a) इन्द्रः (b) अग्निः
(c) वायुः (d) सूर्यः

Ans : (d) यास्क ने समस्त देवताओं को तीन भागों में विभक्त किया है- (1) पृथिवीस्थानीय (2) अन्तरिक्षस्थानीय (3) द्युस्थानीय। सूर्य द्युस्थानीय देवता हैं। अग्नि पृथिवी स्थानीय है। इन्द्र और वायु अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।

2. 'जैमिनीय ब्राह्मण' केन वेदेन सम्पृक्तम्?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (c) सामवेद की सहस्र शाखाएँ बताई गयी हैं किन्तु 3 ही प्राप्त होती हैं- (1) कैथुम् (2) राणायनीय (3) जैमिनीय। अतः जैमिनीय ब्राह्मण, जैमिनीय शाखा से सम्बन्धित है।

3. वेदकालनिरूपणे कः ज्योतिषमवलम्बते?

- (a) विन्टरनित्सः (b) मैक्समूलरः
(c) वेबरः (d) बालगङ्गाधर तिलकः

Ans : (d) वेदों के समय निरूपण में श्री बालगङ्गाधर तिलक महोदय ने ज्योतिष का सहारा लिया था इनके अनुसार वेदों का समय 4000 ई.पू. से 6000 ई.पू. है।

4. मैत्रेयी याज्ञवल्क्य सम्बद्धः कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते-

- (a) कठोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) ईशोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (d) मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य से सम्बन्धित बृहदारण्यकोपनिषद् है। शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित बृहदारण्यकोपनिषद् में मैत्रेयी का वर्णन मिलता है यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं। केनोपनिषद् सामवेद से सम्बन्धित है तथा कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

5. कस्य देवस्य चाराः प्रसिद्धाः?

- (a) वरुणस्य (b) सोमस्य
(c) अग्नेः (d) इन्द्रस्य

Ans : (a) वरुण चाराः एव ध्रुवत है अर्थात् वरुण संसार को नियमों में चलाने का व्रत धारण किये हुये हैं। सोम को मौञ्जवान् एवं पवमान कहते हैं। अग्नि हविष्मान् नाम से विश्व प्रसिद्ध है।

6. यास्कमते कति पद जातानि सन्ति-

- (a) पञ्च (b) त्रीणि
(c) चत्वारि (d) सप्त

Ans : (c) यास्क ने चार पद जातो का वर्णन किया है। यास्कमते चत्वारि पदजातानि सन्ति। (नाम, आख्यात उपसर्ग और निपात)

7. कः प्रणेता वेदाङ्गज्योतिषस्य-

- (a) पाणिनिः (b) कात्यायनः
(c) भट्टहरिः (d) लगधाचार्यः

Ans : (d) लगधाचार्य ने वेदाङ्ग ज्योतिष की रचना की थी। पाणिनि अष्टाध्यायी के लिए प्रसिद्ध है। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय लिखकर विश्व में प्रसिद्धि पायी थी। वररुचि कात्यायन ने वार्तिकों की रचना की थी।

8. हरिश्चन्द्रोपाख्यानं कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते?

- (a) ऐतरेयब्राह्मण (b) गोपथब्राह्मण
(c) शतपथब्राह्मण (d) पञ्चविंश ब्राह्मण

Ans : (a) हरिश्चन्द्र उपाख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त होता है ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेदीय ब्राह्मण है। शतपथब्राह्मण यजुर्वेदीय ब्राह्मण है। जबकि गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेदीय ब्राह्मण है।

9. भूमिसूक्तं कं वेदम् विषयीकरोति ?

- (a) अथर्ववेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) यजुर्वेदम्

Ans : (a) चारो वेदों में अथर्ववेद अर्वाचीन तथा लौकिक है। अथर्ववेद से सम्बन्धित कुछ सूक्त निम्न हैं-

(1) भूमि सूक्त (2) गौसूक्त (3) पृथ्वीसूक्त इत्यादि।

10. को नाम देवः 'वृत्रहा' इत्युच्यते ?

- (a) अग्निः (b) रुद्रः
(c) बृहस्पतिः (d) इन्द्रः

Ans : (d) इन्द्र को वृत्रहा नाम से जाना जाता है इसके अलावा वह त्वष्टा, वज्रबाहु, वज्रहस्त, सोमपा आदि नामों से भी जाने जाते हैं। अग्नि को दमूनस, अंगिर, यज्ञकेतु एवं रुद्र की श्वेतवर्णी तथा बृहस्पति सप्तमुख इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

11. सामवेदस्य प्रमुखः प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति?

- (a) स्तुतिः (b) ज्ञानम्
(c) गानम् (d) याग्ययज्ञादिकम्

Ans : (c) सामवेद का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय गान है। स्तुति, मन्त्र यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है तथा याग्ययज्ञादि ऋग्वेद का विषय है।

12. कति मण्डलानि ऋग्वेदे विलसन्ति?

- (a) पञ्च (b) नव
(c) एकादश (d) दश

Ans : (d) ऋग्वेद में दश मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्र हैं। प्रत्येक मण्डल के अलग-अलग ऋषि एवं देवता है तथा प्रत्येक मण्डल में अलग-अलग देवताओं की स्तुति की गई है।

13. कारणभावाच्च इत्यनेन पुष्यते-

- (a) पुरुषबहुत्वम् (b) प्रकृतिसिद्धि
(c) सृष्टिप्रक्रिया (d) सत्कार्यवादः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) सांख्यदर्शन में परिणामवाद को ही सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है।

**असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥**

14. कार्यं भवति-

- (a) केवलं प्रकृतिस्वरूपं
- (b) केवलं विकृतिरूपम्
- (c) प्रकृतिस्वरूपमपि विकृतिरूपमपि
- (d) न प्रकृतिस्वरूपं न विकृति

Ans : (b) सांख्याचार्यों ने सांख्यदर्शन में कार्य को केवल विकृतिरूप माना है। प्रकृतिरूप कार्य का विषय नहीं बन सकता है।

15. अकर्तृत्वमस्य धर्मः -

- (a) प्रधानस्य
- (b) अहङ्कारस्य
- (c) पुरुषस्य
- (d) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

Ans : (c) अकर्तृत्व पुरुष का धर्म है। कुछ विद्वान् पुरुष को इस प्रकार बताया है-

**जनममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च ।
पुरुषं बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ॥**

16. प्रकृतिर्वस्तुतो बध्नाति?

- (a) स्वात्मानम्
- (b) पुरुषम्
- (c) अहङ्कारम्
- (d) आनन्दम्

Ans : (a) प्रकृति अपने सातों रूपों (अज्ञान, धर्म, अधर्म, वैराग्य, अवैराग्य ऐश्वर्य एवं अनैश्वर्य) से अपने द्वारा अपने को बांधती है और वही पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए ज्ञान से अपने को मुक्त करती है।

17. विहितकर्मणां विधिना परित्यागः ?

- (a) तितिक्षा
- (b) उपरतिः
- (c) दमः
- (d) श्रद्धा

Ans : (b) विहितकर्मणां विधिना परित्यागः - उपरतिः ।

शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता- तितिक्षा
गुरुपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः -श्रद्धा
बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयोभ्यो निवर्तनम् - दमः ।

18. वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्य अवयवाः सन्ति?

- (a) सप्तदश
- (b) षोडश
- (c) पञ्चविंशति
- (d) अष्टादश

Ans : (a) वेदान्त में लिङ्गशरीर के सप्तदश (17) अवयव हैं- पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) + पञ्च कर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) + पञ्च वायु (घ्राण, अपान, व्यान, उदान, समान) + और मन तथा बुद्धि।

19. अखिलशरीरवर्ती वायुः विद्यते ?

- (a) प्राणः
- (b) अपानः
- (c) व्यानः
- (d) उदानः

Ans : (c) हृदि प्राणो गुदेऽपान, समानः नाभिसंस्थितः।

उदानः कण्ठ देशे च, व्यानः सर्वशरीरगः॥

अतः सम्पूर्ण शरीर में व्यान नामक वायु रहती है।

20. शब्दस्पर्शौ अभिव्यञ्ज्येते?

- (a) पञ्चीकृताकाशे
- (b) पञ्चीकृतवायौ
- (c) पञ्चीकृततेजसि
- (d) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

Ans : (b) शब्द और स्पर्श नामक द्रव्यों से पञ्चीकृत वायु अभिव्यञ्जित होता है। यह वायु 5 प्रकार का होता है- (1) प्राण (2) अपान (3) व्यान (4) उदान (5) समान।

21. कारणं तदुच्यते यत् कार्यात् भवति?

- (a) पूर्ववर्ति
- (b) परवर्ति
- (c) नियतपूर्ववृत्ति
- (d) समकालवर्ति

Ans : (c) कार्य से पूर्व क्षण में जिसकी वर्तमानता नियत या अवश्यम्भावी रूप से हो वही उस कार्य का कारण होगा। अतः नियतपूर्ववर्ति उदाहरण सही है।

22. यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्य नियमः?

- (a) परामर्शः
- (b) पक्षधर्मता
- (c) द्वितीयधूमज्ञानम्
- (d) व्याप्तिः

Ans : (d) 'यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्य नियमः व्याप्ति। जहाँ जहाँ धुँआ है वहीं वहीं अग्नि का पाया जाना ही इस प्रकार के साहचर्य का नियम व्याप्ति होती है।

23. संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानस्य कारणम् ?

- (a) प्रत्यक्षप्रमाणम्
- (b) शब्दप्रमाणम्
- (c) अनुमानप्रमाणम्
- (d) उपमानप्रमाणम्

Ans : (d) संज्ञासंज्ञि सबन्ध ज्ञान का कारण अनुमान प्रमाण है। क्योंकि अनुमिति का जो कारण है वह अनुमान है। अनुमिति कारणमनुमानम् ॥

24. अग्निना सिञ्चति' इति उदाहरणम् अस्ति?

- (a) योग्यताविषयम्
- (b) अकांक्षाविषयम्
- (c) सन्निधिविषयम्
- (d) उपमानविषयम्

Ans : (a) अग्निना सिञ्चति (वह अग्नि से सींचता है) यहाँ सेंचन क्रिया अग्नि के द्वारा हो रही है जबकि सेंचन कार्य जल का है न कि अग्नि का अतः यह योग्यता विषय का उदाहरण है।

25. गुणसन्धि विधायकं सूत्रम् -

- (a) मिदेर्गुणः
- (b) आद्गुणः
- (c) अदेड्गुणः
- (d) गुणो यड्लुको

Ans : (b) गुणसन्धि विधायक सूत्र आद्गुणः है = यदि अ/आ के बाद कोई भी स्वर आये तो पूर्व एव पर के स्थान पर गुण एकादेश होता है। गुण कितने हैं यह अदेड्गुणः सूत्र से पता चलता है अत् +एड् = अदेड्, अर्थात् अत् और एड् को गुण कहते हैं। अत् में अ और एड् में ए, ओ आते हैं अर्थात् अ ए और ओ की गुण संज्ञा होती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

26. क्तक्तवतू प्रत्ययोः का सञ्ज्ञा-

- (a) धि (b) स्त्री
(c) निष्ठा (d) नदी

Ans : (c) क्तक्तवतू = क्त च क्तवतु च = क्तक्तवतू यहाँ पर इतरेतर द्वन्द्व समास है। क्तक्तवतू की संज्ञा निष्ठा होती है। यूस्याख्यौ नदी होता है द्वन्द्व धि से द्वन्द्व समास धि संज्ञक होता है।

27. स्वादिपञ्च प्रत्ययानां का सञ्ज्ञा-

- (a) प्रत्याहारः (b) अनुनासिकः
(c) सर्वनामस्थान (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (c) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने सूत्र से सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है। सुडनपुंसकस्य सूत्र से नपुंसकलिङ्ग को छोड़कर पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के आगे लगने वाले सुट् सर्वनामस्थान कहलाते हैं।

28. 'सम्प्रदाने' का विभक्ति :-

- (a) चतुर्थी (b) पञ्चमी
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

Ans : (a) "चतुर्थी सम्प्रदाने" सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। "अपादाने पञ्चमी" सूत्र से अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति तथा षष्ठी शेषे सूत्र से षष्ठी विभक्ति एवं सप्तम्यधिकरणे च सूत्र से अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।

29. समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) वृद्धिः	1. न वेति
(B) उपधा	2. एकाल् प्रत्ययः
(C) अपृक्तम्	3. आदैच्
(D) विभाषा	4. अलोऽन्त्यात्पूर्व

कूट :

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 3	4	2	1
(b) 1	2	4	3
(c) 3	1	4	2
(d) 2	1	3	4

Ans : (a) वृद्धिरादैच् सूत्र से आत् और ऐच् की वृद्धि संज्ञा होती है। अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा होता है। अपृक्त एकाल् प्रत्ययः तथा न वेति विभाषा होता है। विभाषा का अर्थ -विकल्प होता है।

30. पुष्पेभ्यो स्पृहयति - अत्र केन सूत्रेण विभक्ति ?

- (a) अपादाने पञ्चमी (b) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(c) कर्तृकर्मणोः कृतिः (d) स्पृहेरीप्सितः

Ans : (d) पुष्पेभ्यो स्पृहयति इस उदाहरण में स्पृहेरीप्सितः सूत्र से पुष्पेभ्यो में चतुर्थी विभक्ति हुई है। रुच्यर्थानां प्रीयमाण = रुच्यर्थक धातुओं के योग में प्रीयमाण की सम्प्रदानसंज्ञा होती है तथा चतुर्थी सम्प्रदाने से चतुर्थी विभक्ति होती है। कर्तृकर्मणोः कृति सूत्र से कृदन्त के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

31. क्रिययायमभिप्रैति सोऽपि-

- (a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) अपादानम् (d) करणम्

Ans : (b) क्रिययायमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्। अर्थात् अकर्मक क्रिया के द्वारा कर्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है वह भी सम्प्रदान सञ्ज्ञक होता है। जैसे- पत्न्ये शेते (वह पति के लिए सोती है)। कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्तृकरणयोस्तृतीया एवं ध्रुवमपायेऽपादनम् होता है।

32. 'पञ्चानां गङ्गानाम् समाहारः = पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र कः समासः?

- (a) तत्पुरुषः (b) द्विगुः
(c) कर्मधारयः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम्। नदीभिश्च सूत्र से संख्या वाचक शब्द का जब नदी वाचक शब्द के साथ समास होता है तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। नदीभिश्च सूत्र संख्यावाची द्विगुः सूत्र का बाधक सूत्र है।

33. 'उपराजम्' - अत्र समासान्तः कः ?

- (a) टच् (b) अच्
(c) अ (d) अम्

Ans : (a) राज्ञः समीपम् = उपराजम् (अव्ययीभाव समास) उपराजम् में अनश्च सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय की प्राप्ति हुई। टच् में अ बचता है। अतः उपराजम् में टच् प्रत्यय है।

34. वियोगात्मक भाषा अस्ति?

- (a) संस्कृतम् (b) प्राकृतम्
(c) हिन्दी (d) लैटिन

Ans : (c) वियोगात्मक भाषा के अन्तर्गत हिन्दी भाषा आती है जबकि संस्कृत भाषा संयोगात्मक भाषा के अन्तर्गत समाहित है। लैटिन विदेशी भाषा मानी गयी है।

35. 'च' वर्णः कुत्र अन्तर्भवति?

- (a) अनुनासिकः (b) स्पर्शः
(c) स्वरः (d) संघर्षः

Ans : (b) 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः' सूत्र से ज्ञात होता है कि क् से लेकर म् वर्ण पर्यन्त स्पर्श संज्ञक होते हैं। अतः च भी स्पर्श के अन्तर्गत आता है। मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः सूत्र से मुख और नासिका से उच्चारित वर्ण अनुनासिक होते हैं।

36. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति ?

- (a) ष् (b) य्
(c) व् (d) श्

Ans : (a) तीन प्रकार से कहे जाने वाले (ष) मूर्धा, स् (दन्त) श् (तालव्य) उच्चारण के आधार पर इनकी संज्ञा निर्धारित की गयी है। य् (तालु) होता है। व् (दन्त+ओष्ठ) होता है। अतः ष् मूर्धा होता है।

37. 'शैशवेऽभनस्तविद्यानाम्' इत्यस्ति-

- (a) किरातार्जुनीये (b) बुद्धचरिते
(c) मेघदूते (d) रघुवंशमहाकाव्ये

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का 8वाँ श्लोक है जो इस प्रकार है-
शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥

38. 'अश्वघोषविरचितम्' अस्ति?

- (a) रघुवंश महाकाव्यम् (b) दशकुमारचरितम्
 (c) बुद्धचरितम् (d) हर्षचरितम्

Ans : (c) बुद्धचरितम् अश्वघोषविरचित महाकाव्य है जो 28 सर्गों में विभक्त है। रघुवंशम् कालिदास का महाकाव्य है बाणभट्ट विरचित हर्षचरितम् तथा दशकुमारचरितम् महाकवि दण्डी द्वारा रचित है।

39. नाटिकाऽस्ति -

- (a) शाकुन्तलम् (b) मृच्छकटिकम्
 (c) रत्नावली (d) वेणीसंहारम्

Ans : (c) रत्नावली श्रीहर्ष द्वारा रचित 4 अङ्कों की नाटिका है। इसका नायक उदयन है जो धीरललित नायक है तथा नायिका रत्नावली है। मृच्छकटिकम् शूद्रक का प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें 10 अंक है। शाकुन्तलम् कालिदास का नाटक है जिसमें 7 अंक है।

40. वेणीसंहारस्य रचयिता कः?

- (a) भासः (b) कालिदासः
 (c) शूद्रकः (d) भट्टनारायणः

Ans : (d) वेणीसंहार भट्टनारायण द्वारा रचित 6 अङ्कों का नाटक है। जिसके नायक भीम हैं तथा नायिका द्रौपदी हैं। मृच्छकटिक शूद्रक की रचना है जिसमें 10 अङ्क हैं।

41. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः -

- (a) शृंगार रसः (b) करुणरसः
 (c) हास्य रसः (d) वीररसः

Ans : (b) 'एकोरसः करुण एव निमित्त भेदात्' इस श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि 'उत्तररामचरितम्' में प्रधान रस करुण ही है क्योंकि 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता महाकवि भवभूति करुण रस को ही रस मानते हैं बाकी सब निमित्त मात्र है। अतः करुण ही अंगी रस है।

42. "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" इत्यस्ति-

- (a) उत्तररामचरिते (b) रघुवंशे
 (c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मृच्छकटिके

Ans : (c) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम् । युष्मास्वपीतेषु या । यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलं के चतुर्थ अङ्क के श्लोकचतुष्टय के अन्तर्गत आता है। इस श्लोक में महर्षि कण्व सबसे शकुन्तला को आज्ञा देने के लिए कहते हैं जो कि अपने पतिगृह जा रही है।

43. चत्वारः सन्धयोः कुत्र भवन्ति -

- (a) नाटके (b) प्रकरणे
 (c) नाटिकायाम् (d) भागे

Ans : (c) नाटिका में चार सन्धियाँ होती हैं जबकि नाटक में पाँचों सन्धियाँ होती हैं। नाटक पञ्चसन्धि समन्वितं।

44. काव्यालङ्कार सूत्रवृत्तिकारः कः अस्ति -

- (a) भामह (b) वामन
 (c) दण्डी (d) रुद्रट

Ans : (b) काव्यालङ्कारसूत्र वामन का है जिसमें 5 अधिकरण है। जबकि भामह का काव्यालङ्कार है जिसमें 6 परिच्छेद है। दण्डी के काव्यादर्श में दश परिच्छेद हैं। रुद्रट के काव्यालङ्कार में 16 अध्याय तथा 714 आर्याये हैं।

45. 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली इति केनोक्तम्

- (a) भामहेन (b) वामनेन
 (c) दण्डिना (d) विश्वनाथेन

Ans : (c) 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली यह दण्डी का काव्यलक्षण है जबकि वामन ने रीति को काव्य की आत्मा कहकर लक्षण दिया है- 'रीतिरात्मा काव्यम्' । भामह का काव्य लक्षण इस प्रकार है। शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् । वाक्यं रसात्मकं काव्यम् कहकर विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।

46. वीररसस्य स्थायीभावः कः अस्ति?

- (a) क्रोधः (b) शोकः
 (c) उत्साहः (d) भयः

Ans : (c) वीररस का स्थायी भाव उत्साह है। शोक करुणरस का स्थायी भाव है। भय का भयानक तथा क्रोध का स्थायीभाव रौद्र है।

47. वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवन्ति?

- (a) अभिधा (b) लक्षणा
 (c) व्यञ्जना (d) तात्पर्या

Ans : (a) वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवति - अभिधा। अभिधा शक्ति वाच्यार्थ की प्रतिपादिका होती है।

48. प्रकरणे कति अङ्का भवन्ति ?

- (a) पञ्च (b) षट्
 (c) दश (d) सप्त

Ans : (c) रूपक के 10 प्रभेदों के अन्तर्गत प्रकरण भी रूपक का ही एक प्रभेद है। प्रकरण में 10(दश) अङ्क होते हैं तथा इसका नायक धीरललित कोटि का होता है।

49. महाकाव्ये न्यूनतः कति सर्गाः भवन्ति?

- (a) पञ्चदश (b) विंशतिः
 (c) अष्ट (d) दश

Ans : (c) महाकाव्य में न्यूनतम् 8सर्ग होने चाहिए जो निम्न श्लोक से ज्ञात होता है-

सर्गबन्धो महाकाव्यम् तत्र नायको सुरः । एकवृत्तयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः

नातिस्वल्पाः नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ॥

50. 'अच्छोद वर्णन' कुत्र प्राप्यते?

- (a) हर्षचरिते (b) कादम्बर्याम्
 (c) मेघदूते (d) रघुवंशे

Ans : (b) अच्छोद सरोवर का वर्णन बाणभट्ट रचित गद्यकाव्य "कादम्बरी" में मिलता है। कालिदास विरचित मेघदूत में रामगिरि आश्रम का वर्णन मिलता है जबकि रघुवंश महाकाव्य में सूर्यवंश के 31 राजाओं का वर्णन मिलता है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2006

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'नासत्या' इति कस्य विशेषणम् अस्ति-

- (a) अग्नेः (b) अश्विनोः
(c) वरुणस्य (d) इन्द्रस्य

Ans : (b) नासत्या अश्विनौ का विशेषण है इसी प्रकार घृतलोम अग्नि का, घृतव्रत वरुण का तथा सोमपा इन्द्र का विशेषण है।

2. देवता इन्द्रोऽस्ति -

- (a) पृथिवीस्थानीया (b) अन्तरिक्षस्थानीया
(c) द्युस्थानीया (d) पातालस्थानीया

Ans : (b) इन्द्र, वायु और रुद्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। पृथ्वी स्थानीय देवता के अन्तर्गत अग्नि है तथा द्युस्थानीय के अन्तर्गत विष्णु आते हैं।

3. 'आनन्द ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन्' वर्तते-

- (a) बृहदारण्यके (b) तैत्तिरीये
(c) केनोपषदि (d) छान्दोग्ये

Ans : (b) आनन्दः ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति' यह तैत्तिरीय में प्राप्त होता है। तैत्तिरीय यजुर्वेद के अन्तर्गत आता है।

4. 'वेदाङ्गेषु व्याकरणम्' उपमीयते-

- (a) हस्तेन (b) मुखेन
(c) पादेन (d) चक्षुषा

Ans : (b) वेदाङ्ग में व्याकरण को वेदपुरुष का मुख बताया गया है। हाथों को कल्प। ज्योतिष को चक्षु तथा छन्द को वेदपुरुष के पादों के रूप में माना जाता है।

5. 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन संपृक्ता -

- (a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (d) यजुर्वेद की दो शाखायें- (1) शुक्लयजुर्वेद तथा (2) कृष्णयजुर्वेद। श्वेताश्वतरोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है।

6. चतुर्णामेव वेदानां भाष्यकारोऽस्ति -

- (a) स्कन्दस्वामी (b) सायणाचार्यः
(c) उद्भटः (d) वेङ्कटमाधवः

Ans : (b) वेद जगत् में विख्यात आचार्य सायण ने ही चारों वेदों अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के भाष्यकार हैं।

7. 'जगतीछन्दसि' एकस्मिन् पादे अक्षराणि सन्ति-

- (a) पञ्च (b) दश
(c) षट् (d) द्वादश

Ans : (d) जगती छन्द के एक पाद अर्थात् प्रत्येक चरण में द्वादश (12) अक्षर होते हैं। इस प्रकार $12 \times 4 = 48$ वर्ण।

8. नैगमकाण्डं कुत्र वर्तते-

- (a) कल्पे (b) निरुक्ते
(c) ज्योतिषे (d) व्याकरणे

Ans : (b) निरुक्त में 12 अध्याय हैं जो कि 3 काण्डों में विभक्त हैं प्रारम्भिक 3 अध्याय नैघण्टुक काण्ड, 4-6 अध्याय तक नैगमकाण्ड तथा 7-12 अध्याय तक का भाग दैवतकाण्ड कहलाता है।

9. ऋग्वेदे अधिकतमानां सूक्तानां देवता अस्ति-

- (a) अग्निः (b) वरुणः
(c) सोमः (d) इन्द्रः

Ans : (d) ऋग्वेद में सबसे अधिक सूक्तों वाला देवता इन्द्र है इसकी 250 सूक्तों में स्तुति की गयी है इसके बाद अग्नि की 200 सूक्तों में एवं सोम की 120 सूक्तों में तथा वरुण की 12 सूक्तों में स्तुति की गयी है।

10. 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इति वर्तते-

- (a) सरमापणिसंवादे (b) यम-यमी संवादे
(c) पुरुरवा उर्वशी संवादे (d) विश्वामित्र नदी संवादे

Ans : (c) 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' यह ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुरवा- उर्वशी संवाद का है। अनेक योजनाएँ करने पर भी उर्वशी राजा का प्रेम स्वीकार नहीं करती जिस कारण पुरुरवा आत्महत्या के लिए उद्यत होता है तो उर्वशी कहती है कि हे राजन्। आप आत्महत्या मत करो क्योंकि स्त्रियों और भेड़ियों का हृदय मित्रता से हीन होता है।

11. शाकलशाखा कस्य वेदस्य अस्ति-

- (a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (a) ऋग्वेद की अनेक शाखायें हैं किन्तु वर्तमान में निम्न उपलब्ध है- (1) शाकलशाखा (2) वाष्कलशाखा (3) शांखायन शाखा (4) माण्डूकायनशाखा (5) आश्वलायनशाखा अतः शाकल शाखा ऋग्वेद की ही शाखा है।

12. याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवादा कुत्र विद्यते-

- (a) छान्दोग्ये (b) बृहदारण्यके
(c) तैत्तिरीये (d) कठोपनिषदि

Ans : (b) याज्ञवल्क्य -मैत्रेयी संवाद यजुर्वेद की शाखा कृष्णयजुर्वेद के बृहदारण्यक में प्राप्त होता है। इसमें याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी का विधिवत् संवाद है।

13. सत्कार्यवादेः उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं कीदृशम्-

- (a) व्यक्तरूपेण सत् (b) अव्यक्तरूपेण सत्
(c) उभयरूपेण सत् (d) सद्सत्

Ans : (b) सत्कार्यवाद या परिणामवाद की उत्पत्ति के पहले कार्य अव्यक्तरूप में सत् था। सत्कार्यवाद की पुष्टि के लिए पाँच हेतु माने हैं। असत्कार्यवाद को न्याय या वैशेषिक स्वीकार करते हैं।

14. सांख्यमते वायोः प्रादुर्भावः कस्मात् -

- (a) शब्दतन्मात्रात् (b) स्पर्शतन्मात्रात्
(c) गन्धतन्मात्रात् (d) रसतन्मात्रात्

Ans : (b) सांख्यमत में वायु का प्रादुर्भाव स्पर्शतन्मात्रा से हुआ है। वायु पाँच है- (1) प्राण, (2) अपान, (3) व्यान (4) उदान तथा (5) समान।

15. महत् इत्यस्य का वृत्तिः -

- (a) अभिमानः (b) सङ्कल्प
(c) अध्यवसायः (d) आलोचनम्

Ans : (c) महत् की वृत्ति अध्यवसाय है जबकि अध्यवसाय का सम्बन्ध बुद्धि से है- “अध्यवसायात्मिका बुद्धिः” कहा भी गया है।

16. तुष्टि कतिविधा-

- (a) सप्तविधा (b) अष्टविधा
(c) नवविधा (d) दशविधा

Ans : (c) तुष्टिर्नवधा अर्थात् तुष्टि के नव भेद हैं- प्रकृति, उपादान, काल और भाग इन नामों वाली चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ हैं तथा शब्दादि पाँच विषयों से वैराग्य होने पर पाँच बाह्य तुष्टियाँ दोनों मिलाकर तुष्टियों के नव भेद हैं।

17. अद्वैतवेदान्तस्य विषयः कः अस्ति।

- (a) जीवब्रह्मैक्यम् (b) ईश्वर
(c) अज्ञानम् (d) शुद्ध चैतन्यम्

Ans : (a) जीव और ब्रह्म में एकता स्थापित करना ही वेदान्त का लक्ष्य है- जीवब्रह्मैक्यं शुद्ध चैतन्यं प्रमेयं तत्र एव वेदानां तात्पर्यात्। अतः स्पष्ट है कि सर्वज्ञाता और अल्पज्ञाता में सम्बन्ध स्थापित करना ही वेदान्त सार का प्रतिपाद्य विषय है।

18. वेदान्तानुसारेण भूतानां केभ्यो अंशेभ्यो कर्मेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते-

- (a) सात्त्विकेभ्यः (b) राजसेभ्यः
(c) तामसेभ्यः (d) सर्वेभ्यः

Ans : (b) वेदान्तसार के अनुसार पञ्चभूतो के रजोगुण से क्रमशः पृथक्-पृथक् रूप में ये वाक् आदि पाँच कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं। पञ्च कर्मेन्द्रियाँ निम्न हैं- (1) वाक् (2) पाणि (3) पाद (4) पायु (5) उपस्थ।

19. पञ्चीकृते वायौ जलस्य कियान् भागः -

- (a) 50% (b) 25%
(c) 30% (d) $12\frac{1}{2}\%$

Ans : (d) पञ्चीकरण प्रक्रिया में जल का $12\frac{1}{2}\%$ भाग वायु में रहता है।

20. जीवन्मुक्तौ सत्यां कस्य कर्मण फलम् उपभोक्तव्यमेव-

- (a) सञ्चितस्य (b) क्रियमाणस्य
(c) प्रारब्धस्य (d) सर्वेषाम्

Ans : (c) कर्म तीन है- (1) सञ्चित (2) प्रारब्ध (3) क्रियमाण। जिस कर्म का फलोपभोग मिलना आरम्भ हो गया हो उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं।

21. न्यायमते कति प्रमाणानि सन्ति-

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्याय मत के अनुसार चार प्रमाण हैं-

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द। वेदान्ती 6 प्रमाण मानते हैं। सांख्य में तीन प्रमाण माना गया है।

22. समवेत समवाय सन्निकर्षेण कस्य प्रत्यक्षं भवति-

- (a) गन्धस्य (b) शब्दस्य
(c) स्पर्शस्य (d) शब्दत्वस्य

Ans : (d) समवेतसमवाय सन्निकर्ष शब्दत्व का प्रत्यक्ष जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है, उस समय श्रोत्र इन्द्रिय है क्योंकि श्रोत्र समवेत शब्द में समवाय सम्बन्ध होता है।

23. असिद्ध हेत्वाभासः कतिविधः -

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (b) लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। यह तीन प्रकार का होता है-

(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।

24. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणं कुत्र व्यापारः -

- (a) प्रत्यक्षे (b) अनुमितौ
(c) उपमितौ (d) शब्दबोधे

Ans : (c) उपमिति में अतिदेश वाक्यार्थ स्मरण व्यापार होता है। प्रत्यक्ष इसका विषय नहीं बन सकता न ही अनुमिति और शब्द बोध बन सकते हैं।

25. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत्-

- (A) संहिता (1) अचोऽन्त्यादि
(B) गुण (2) अलोऽन्त्यात् पूर्व
(C) उपधा (3) परः सन्निकर्षः
(D) टि (4) अदेङ्गुणः

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	4	2	1
(b)	1	2	4	3
(c)	1	2	3	4
(d)	4	3	2	1

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) परः सन्निकर्षः संहिता- निकटस्थ वर्णों की संहिता संज्ञा होती है और संहिता होने पर ही सन्धि होगी। अदेङ्गुणः - गुण संज्ञा करने वाला सूत्र है। अ, ए और ओ गुण हैं। अचोऽन्त्यादि टि-अचों में जो अन्तिम् अच् है उसकी टि संज्ञा होती है। अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा अन्तिम् अल् के ठीक पहले वाला वर्ण उपधा होता है।

26. क्तक्तवतु प्रत्ययोः का सञ्ज्ञा -

- (a) नदी (b) सवर्णम्
(c) निष्ठा (d) घि

Ans : (c) क्तक्तवतु प्रत्ययों की संज्ञा निष्ठा होती है अर्थात् निष्ठामात्र कह देने से क्त और क्तवतु प्रत्ययों का बोध हो जायेगा। निष्ठा प्रत्यय भूतकाल के लिये प्रयोग में आते हैं। तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् । द्वन्द्वे घि। यू स्याख्यौ नदी।

27. अर्थवदधातुरप्रत्ययः

- (a) प्रगृह्यम् (b) सुप्
(c) तद्धितः (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (d) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् अर्थवद् + अधातुः + अप्रत्ययः अर्थात् धातु और प्रत्यय के अतिरिक्त कोई भी अर्थवान् शब्द प्रातिपदिक होता है। इसके अतिरिक्त कृतद्धितसमासाश्च से कृदन्त, तद्धित और समास की भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

28. सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्ययः-

- (a) अण् (b) जस्
(c) अच् (d) सुट्

Ans : (d) सुट् अर्थात् सु, औ, जस्, अम् और औट् ये पाँच प्रत्यय सर्वनामस्थान संज्ञक होते हैं। अण् अर्थात् अ, इ, उ और ऋ, लृ ये अण् के अन्तर्गत आते हैं। अच् में सम्पूर्ण स्वर आते हैं।

29. अधोनिर्दिष्टेषु ऊष्मवर्णः -

- (a) ह् (b) य्
(c) क् (d) अ

Ans : (a) श ष स ह ऊष्मवर्णः अर्थात् श्, ष्, स् और ह वर्णों की संज्ञा ऊष्म होती है। क् स्पर्श सञ्ज्ञक है। य् अन्तस्थ है और अ अच् है।

30. ऋटुरषाणां किं स्थानम् -

- (a) तालु (b) दन्तः
(c) जिह्वा (d) मूर्धा

Ans : (d) ऋटुरषाणां मूर्धा अर्थात् ऋ, ट वर्ग ष् और र् । इन वर्णों का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।

लृतुलसानां दन्तः। इचुयशानां तालु।

31. समीचीनां तालिकां चिनुत-

- (a) लोपः (1) अयोगात्मक
(b) चीनी (2) संघर्षी
(c) हकारः (3) Geneological Classification

- (d) पारिवारिकवर्गीकरणम् (4) ध्वनिपरिवर्तन हेतुः

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	1	2	3
(b)	1	4	3	2
(c)	1	2	3	4
(d)	4	3	1	2

Ans : (a) लोप ध्वनिपरिवर्तन का हेतु होता है। चीनी भाषा अयोगात्मक है। हकार संघर्षी के अन्तर्गत आता है और पारिवारिक वर्गीकरण Genological Classification होता है।

32. 'समासे प्रथमानिर्दिष्टम् उपसर्जनम्' कुत्र प्रयोक्तव्यम् -

- (a) पूर्वम् (b) अन्ते
(c) मध्ये (d) यथेच्छम्

Ans : (a) 'प्रथमानिर्दिष्टम् समास उपसर्जनम्' इस सूत्र के आधार पर समास में जो प्रथमा विभक्ति में निर्दिष्ट है उसकी उपसर्जनसंज्ञा होती है और 'उपसर्जनम् पूर्वम्' सूत्र से जिसकी उपसर्जन संज्ञा है उसका पूर्व अर्थात् पहले प्रयोग होता है।

33. 'उपशरदम् अत्र कः समासः -

- (a) बहुव्रीहिः (b) द्विगुः
(c) अव्ययीभावः (d) द्वन्द्वः

Ans : (c) शरदः समीपम् = उपशरदम् । शरद् डस् उप। यहाँ पर उपशरदम् में अव्ययं विभक्ति समीप सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ है।

34. प्रातिपदिकार्थे का विभक्ति -

- (a) सप्तमी (b) प्रथमा
(c) द्वितीया (d) तृतीया

Ans : (b) प्रातिपदिकार्थे प्रथमा अर्थात् प्रातिपदिक में प्रथमा विभक्ति होती है इसके अतिरिक्त सम्बोधने च से भी सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। 'सप्तम्यधिकरणे च' से सप्तमी कर्मणि द्वितीया से द्वितीया एवं कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है।

35. 'हरये रोचते' अत्र सम्प्रदान सञ्ज्ञा केन सूत्रेण भवति-

- (a) स्पृहेरीप्सितः (b) चतुर्थीसम्प्रदाने
(c) कर्मणा यमभिप्रैति (d) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

Ans : (d) 'हरये रोचते' इस वाक्य में रुच्यर्थानां प्रीयमाणः इस सूत्र से हरि की सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई तथा चतुर्थी सम्प्रदाने- सूत्र से हरि में चतुर्थी विभक्ति होकर हरये बना।

36. स्वतन्त्रः -

- (a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) सम्प्रदान

Ans : (a) स्वतन्त्रः कर्ता -अर्थात् कर्ता स्वतन्त्र होता है। कर्तुरीप्सिततमं कर्म। साधकतमं करणम् एवं कर्मणायमभिप्रैति स सम्प्रदानम् होता है।

37. 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' इदं वाक्यमस्ति-

- (a) रघुवंशे (b) महाभारते
(c) शिशुपालवधे (d) रामायणे

Ans : (c) 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' यह सूक्ति महाकवि माघ विरचित शिशुपालवधम् महाकाव्य से है। शिशुपालवधं महाकाव्य में 20 सर्ग हैं इसके नायक भगवान् श्री कृष्ण एवं प्रतिनायक महाबली शिशुपाल हैं जो पूर्व जन्म में रावण है।

38. प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः इदं वाक्यमस्ति-

- (a) रघुवंशे (b) नैषधीयचरिते
(c) रामायणे (d) महाभारते

Ans : (a) "प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः" यह उक्ति महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का 70वाँ श्लोक है। इस महाकाव्य में 19 सर्ग हैं तथा 31 राजाओं का वर्णन है।

39. 'वज्रायुधस्य' वर्णनमस्ति-

- (a) कादम्बर्याम् (b) वासवदत्तायाम्
(c) हर्षचरिते (d) दशकुमार चरिते

Ans : (c) वज्रायुध का वर्णन बाण द्वारा रचित हर्षचरित नामक आख्यायिका ग्रन्थ में मिलता है। इस ग्रन्थ में महाकवि ने हर्षवर्धन के साम्राज्य एवं परिवार का विस्तार से वर्णन किया है।

40. "सतां हि प्रियवदता कुलविधा" इदं वाक्यमस्ति-

- (a) हर्षचरिते (b) कादम्बर्याम्
(c) दशकुमारचरिते (d) बुद्धचरिते

Ans : (d) "सतां हि प्रियवदता कुलविधा" यह सूक्ति अश्वघोष के बुद्धचरित नामक महाकाव्य की है। बुद्धचरित महाकाव्य में 28 सर्ग हैं तथा बुद्धचरितम् विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाकाव्य की श्रेणी में आता है।

41. 'वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः' इदं वाक्यमस्ति-

- (a) उत्तररामचरिते (b) मुद्राराक्षसे
(c) स्वनवासवदत्ते (d) मृच्छकटिके

Ans : (d) "वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः" यह वाक्य शूद्रक के मृच्छकटिकम् का है जो कि एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें कहा गया है कि वेश्याएँ श्मशान के फूल की तरह वर्जित है अर्थात् अशुद्ध है।

42. 'मृच्छकटिकम्' अस्ति-

- (a) नाटकम् (b) प्रकरणम्
(c) नाटिका (d) व्यायोगः

Ans : (b) मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है जो कि रूपक का ही एक अंग है। प्रकरण भी अङ्को में विभक्त होता है।

43. साहित्यदर्पणानुसारं लक्षणाया प्रभेदाः भवन्ति-

- (a) 16 (b) 27
(c) 36 (d) 80

Ans : (d) साहित्य दर्पणकार ने लक्षणा के सारे भेदों प्रभेदों को मिलाकर लक्षणा के 80 (अशीतिः) भेद बताये हैं।

44. विश्वनाथ मते काव्यत्वसिद्धि भवति-

- (a) शब्दार्थाभ्याम् (b) गुणालङ्काराभ्याम्
(c) रीतिवृत्तिभ्याम् (d) रसात्

Ans : (d) विश्वनाथ के अनुसार काव्य की सिद्धि रस से ही होती है। उन्होंने अपने काव्य लक्षण में कहा भी है- वाक्यं रसात्मकं काव्यम् । अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

45. 'उत्साहः' स्थायिभावोऽस्ति-

- (a) रौद्ररसस्य (b) शान्तरसस्य
(c) अद्भुतरसस्य (d) वीररसस्य

Ans : (d) उत्साह वीर रस का स्थायी भाव है। अद्भुत का विस्मय। शान्त का शम या निर्वेद तथा क्रोध रौद्र रस का स्थायी भाव है।

46. नाटके कति सन्धयः भवन्ति-

- (a) 10 (b) 8
(c) 5 (d) 3

Ans : (c) नाटकं पञ्चसन्धि समन्वितम् अर्थात् नाटक में पाँचों सन्धियों का समावेश होता है। ये निम्न हैं- मुखसन्धि, प्रतिमुखसन्धि, गर्भसन्धि, अवमर्शसन्धि तथा विमर्शसन्धि।

47. नाटके अङ्गीरसः भवति-

- (a) शान्तः (b) करुणः
(c) हास्य (d) वीरः

Ans : (d) नाटक में वीर रस की प्रधानता होती है अतः वही अङ्गीरस होता है।

48. कस्य रसस्य चत्वारः प्रभेदाः सन्ति-

- (a) शृङ्गारस्य (b) हासस्य
(c) करुणस्य (d) वीरस्य

Ans : (d) साहित्यदर्पण कार ने वीर रस के चार भेद बताये हैं-

(1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) युद्धवीर (4) दयावीर।

49. गङ्गायां घोषः इति इदं वाक्यं कस्य उदाहरणं भवति-

- (a) अभिधायाः
(b) रूढिपूर्वक लक्षणायाः
(c) रूपकालङ्कारस्य
(d) प्रयोजनवतीलक्षणायाः

Ans : (d) गङ्गायां घोषः यह प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है। इसका मतलब गङ्गा तटे घोष है अर्थात् गंगा के किनारे अहीरों की बस्ती।

50. साहित्यदर्पणकारमते काव्यगुणाः सन्ति-

- (a) 10 (b) 8
(c) 5 (d) 3

Ans : (d) माधुर्यैजप्रसादाख्यास्त्रयस्ते- (1) माधुर्य (2) ओज तथा (3) प्रसाद नामक तीन ही गुण काव्यप्रकाशकार को अभिमत हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2006

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट: इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं।

प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. शौनकशाखा केन वेदेन सम्पृक्ता?

- (a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (c) शौनकशाखा अथर्ववेदेन सम्पृक्ताऽस्ति। अर्थात् शौनकशाखा अथर्ववेद से सम्बन्धित है। पतञ्जलि ने महाभाष्य में नवधाऽथर्वणो वेदः कहकर अथर्ववेद की नौ (9) शाखाओं का उल्लेख किया है, किन्तु वर्तमान में दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं – (1) पैप्लादशाखा (2) शौनकीयशाखा।

2. गोपथब्राह्मणं कं वेदमवलम्बते?

- (a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

Ans : (d) अथर्ववेद की दो शाखाओं के अन्तर्गत गोपथब्राह्मण शौनकशाखा से सम्बन्धित है। अतः गोपथब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है।

3. त्रिष्टुप्छन्दसि कति अक्षराणि सन्ति?

- (a) द्वात्रिंशत् (b) एकादश
(c) चतुश्चत्वारिंशत् (d) षट्त्रिंशत्

Ans : (c) त्रिष्टुप् छन्द में 44 अक्षर होते हैं। कुछ प्रमुख छन्दों में अक्षरों की संख्या इस प्रकार है –

गायत्री छन्द	–	24 अक्षर
उष्णिग छन्द	–	28 अक्षर
अनुष्टुप् छन्द	–	32 अक्षर
बृहती छन्द	–	36 अक्षर
पंक्ति छन्द	–	40 अक्षर
त्रिष्टुप् छन्द	–	44 अक्षर

4. वरुणदेवः—

- (a) द्युस्थानः (b) पृथिवीस्थानः
(c) अन्तरिक्षस्थानः (d) पातालस्थानः

Ans : (a) वरुणदेवः द्युस्थानीयः अस्ति अर्थात् वरुण द्युस्थानीय देवता हैं। यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया है—

द्युस्थानीय	–	द्यौः, वरुण, मित्र, सूर्य, विष्णु
अन्तरिक्ष स्थानीय	–	इन्द्र, रुद्र, वायु
पृथिवी स्थानीय	–	पृथिवी, अग्नि, बृहस्पति, सोम।

5. वेदाङ्गेषु शिक्षा उपमीयते :

- (a) हस्तेन (b) पादेन
(c) चक्षुषा (d) घ्राणेन

Ans : (d) शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य अर्थात् वेदाङ्गों में शिक्षा को घ्राण (नाक) की सञ्ज्ञा दी गई है।

6. “मा नो नि कः पुरुषन्ना नमस्ते” वर्तते —

- (a) सरमापणिसंवाद (b) यमयमीसंवाद
(c) उर्वशीपुरुषसंवाद (d) विश्वामित्रनदीसंवाद

Ans : (d) “मा नो नि कः पुरुषन्ना नमस्ते” इसका वर्णन विश्वामित्र नदी संवाद में मिलता है। विश्वामित्र नदी संवाद ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के तैत्तिरीय (33 वें) सूक्त में प्राप्त होता है।

7. ‘जलाष’ इति विशेषणम्

- (a) वरुणस्य (b) अश्विनोः
(c) रुद्रस्य (d) सोमस्य

Ans : (c) ‘जलाषः’ रुद्रदेवस्य विशेषणमस्ति अर्थात् जलाषः यह विशेषण रुद्र देव का है। रुद्र एक अन्तरिक्ष स्थानीय देव है।

8. ऋग्वेदस्य नवम् मण्डले देवतानाम् —

- (a) अग्निः शुचिः (b) अग्निः पावकः
(c) अग्नीषोमौ (d) पवमानसोमः

Ans : (d) ऋग्वेद के नवम् मण्डल के देवता का नाम पवमान सोम है। ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्रों का उल्लेख है।

9. उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः —

- (a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (b) उव्वटो शुक्लयजुर्वेदस्य भाष्यकारोऽस्ति अर्थात् उव्वट शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकार है तथा ऋग्वेद के स्कन्दस्वामी, सामवेद के माधव और अथर्ववेद के सायण भाष्यकार माने जाते हैं

10. शुनःशेषाख्यानं वर्तते—

- (a) शतपथब्राह्मणे (b) ऐतरेयब्राह्मणे
(c) जैमिनीयब्राह्मणे (d) ताण्ड्यब्राह्मणे

Ans : (b) शुनः शेषाख्यानम् ऐतरेयब्राह्मणे वर्तते। शुनः शेषाख्यान का वर्णन ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त होता है।

11. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य ऋषिरस्ति —

- (a) वशिष्ठः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दाः (d) अगस्त्यः

Ans : (c) ऋग्वेद के प्रथममण्डल के ऋषि मधुच्छन्दा हैं। ऋग्वेद में दश मण्डल है तथा प्रत्येक मण्डल के अलग-अलग ऋषि हैं। प्रथम मण्डल में 191 सूक्त एवं 2006 मन्त्र हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

12. भैषज्यमन्त्राः लभ्यते—

- (a) अथर्ववेद (b) सामवेदे
(c) यजुर्वेदे (d) ऋग्वेदे

Ans : (a) भैषज्यमन्त्राः अथर्ववेद लभ्यते अर्थात् भैषज्यमन्त्र अथर्ववेद में प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद को लौकिक वेद की सज्जा दी गई है, क्योंकि इसमें इहलौकिक बातों का वर्णन है।

13. पुरुषस्य स्वरूपं किम् ?

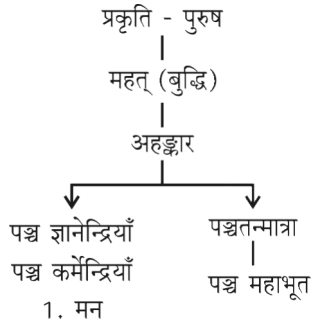
- (a) अपरिणामि (b) परिणामि
(c) त्रिगुणात्मकम् (d) सक्रियम्

Ans : (a) पुरुषस्य स्वरूपमपरिणामि। यथा –
त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।

14. पञ्चतन्मात्राणि कुतः प्रादुर्भवन्ति?

- (a) प्रधानात् (b) महतः
(c) अहङ्कारात् (d) मनसः

Ans : (c) पञ्चतन्मात्राण्यहङ्कार से उत्पन्न होते हैं। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है –



15. कैवल्यं कस्माद् भवति?

- (a) विवेकख्यातेः (b) सत्ख्यातेः
(c) अनिर्वचनीयख्यातेः (d) अख्यातेः

Ans : (a) कैवल्यं विवेकख्यातेः भवति अर्थात् कैवल्य विवेकख्याति से होता है।

16. सदसद्भयामनिर्वचनीयं किम् ?

- (a) ब्रह्म (b) जीवः
(c) ईश्वरः (d) अज्ञानम्

Ans : (d) सदसद्भयामनिर्वचनीयं अज्ञानम्। वेदान्तसार में अज्ञान को इस प्रकार बताया गया है – “अज्ञानं तु सदसद्भयामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्।

17. भूतानां केभ्योऽंशेभ्यः ज्ञानेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते?

- (a) राजसेभ्यः (b) तामसेभ्यः
(c) सात्त्विकेभ्यः (d) सर्वेभ्यः

Ans : (c) आकाशादि पञ्चमहाभूतों के सात्त्विकांश से श्रोतादि पञ्चज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है।

18. वेदान्तसारमते लिङ्गशरीर घटकानि कति ?

- (a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans : (c) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में सप्तदश (17) लिङ्गशरीर के घटकों की चर्चा की गई है। जो इस प्रकार है – पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चवायु और मन।

19. अज्ञाने कति गुणाः ?

- (a) द्वौ (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) पञ्च

Ans : (b) अज्ञाने त्रयः गुणाः सन्ति।

स्रोत-सदानन्द-वेदान्तनुसार पृष्ठ संख्या 37

20. न्यायशास्त्रे साहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते ?

- (a) व्याप्तिः (b) उपाधिः
(c) सन्निकर्षः (d) अपवर्गः

Ans : (a) न्यायशास्त्रे ‘साहचर्यनियमशब्देन’ व्याप्तिः इति उच्यते। अर्थात् न्यायशास्त्र में साहचर्यनियम शब्द से व्याप्ति को बताया गया है।

21. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः?

- (a) पञ्चविधः (b) षड्विधः
(c) सप्तविधः (d) अष्टविधः

Ans : (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः यथा – (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

22. अनुमितिः कस्माद् अनन्तरं जायते?

- (a) परामर्शात् (b) व्याप्तिज्ञानात्
(c) पदज्ञानात् (d) सादृश्यज्ञानात्

Ans : (d) अनुमितिः सादृश्यज्ञानात् अनन्तरं जायते। अर्थात् सादृश्यज्ञान से उत्पन्न होती है।

23. कारणं कतिविधं ?

- (a) एकविधं (b) द्विविधं
(c) त्रिविधं (d) चतुर्विधं

Ans : (c) कारणं त्रिविधमस्ति अर्थात् कारण तीन के प्रकार होते हैं। जैसे – (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्तकारण।

24. सादृश्यज्ञानकरणकं ज्ञानं किम् ?

- (a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमितिः
(c) शाब्दबोधः (d) उपमितिः

Ans : (d) सादृश्यज्ञानकरणकं ज्ञानम् उपमितिः।

25. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

- (a) गुणः (1) यू स्याख्यौ
(b) नदी (2) अदेइ
(c) टि (3) अलोऽन्त्यात्
(d) उपधा (4) अचोऽन्त्यादि

	a	b	c	d
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	2	1	4	3
(d)	2	1	3	4

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) समीचीन तालिका इस प्रकार है –

(a) गुणः	(1) अदेङ्
(b) नदी	(2) यू स्याख्यौ
(c) टि	(3) अचोऽन्त्यादि
(d) उपधा	(3) अलोऽन्त्यात्पूर्व

26. तुल्यास्यप्रयत्नं किं भवति?

(a) उपधा	(b) सवर्णम्
(c) अपृक्तम्	(d) वृद्धिः

Ans : (b) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णं भवति अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न समान होते हैं। उनकी सवर्ण सञ्ज्ञा होती है।

27. एकाल्प्रत्ययः –

(a) अपृक्तम्	(b) विभाषा
(c) गतिः	(d) निष्ठा

Ans : (a) एकाल्प्रत्ययः अपृक्तं अर्थात् प्रत्यय को छोड़कर एक अल् (स्वर/व्यञ्जन) मात्र को अपृक्त कहते हैं। जैसे – सु का स् ति का त् इत्यादि।

28. ईदूदेदन्तं द्विवचनं –

(a) प्रातिपदिकम्	(b) नदी
(c) सर्वणम्	(d) प्रगृह्यम्

Ans : (d) ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम् अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त नित्य द्विवचन की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। जैसे – अमी ईशा।

29. अधोनिर्दिष्टेषु स्पर्शः –

(a) म्	(b) य्
(c) इ	(d) व्

Ans : (a) दिये गए विकल्पों में से 'म्' स्पर्श सञ्ज्ञक है क्योंकि 'कादयोमावशानाः स्पर्शाः' अर्थात् क् से म् पर्यन्त वर्ण स्पर्श सञ्ज्ञक होते हैं।

30. इचुयशानां किं स्थानम् ?

(a) दन्तः	(b) मूर्धा
(c) मुखम्	(d) तालु

Ans : (d) इचुयशानां तालुः अर्थात् इ, चवर्ग, य् और श् वर्णों का उच्चारण स्थान तालु होता है।

31. समीचीनां तालिकां चिनुत ?

(a) स्पर्शः	(1) शल्
(b) स्वरः	(2) कवर्णः
(c) जिह्वामूलीयम्	(3) अच्
(d) ऊष्मा	(4) जिह्वामूलम्

	a	b	c	d
(a)	2	3	4	1
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	2	1	4

Ans : (a) सही तालिका इस प्रकार है –

(a) स्पर्शः	–	(1) कवर्णः
(b) स्वरः	–	(2) अच्
(c) जिह्वामूलीयम्	–	(3) जिह्वामूलम्
(d) उष्मवर्णः	–	(4) शल्

32. समासशास्त्रे उपसर्जनं नाम –

(a) द्वितीयानिर्दिष्टम्	(b) सप्तमीनिर्दिष्टम्
(c) प्रथमानिर्दिष्टम्	(d) तृतीयानिर्दिष्टम्

Ans : (c) समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टम् उपसर्जनं सञ्ज्ञा भवति। अर्थात् समास में जो पहले निर्दिष्ट हो उसकी उपसर्जन सञ्ज्ञा होती है तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व निपात होता है।

33. सप्तर्षयः – समासविधायकं सूत्रं किम् ?

- | |
|------------------------------|
| (a) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् |
| (b) दिक्संख्ये संज्ञायाम् |
| (c) चार्थे द्वन्द्वः |
| (d) दिङ्नामान्यन्तराले |

Ans : (b) 'सप्तर्षयः' में 'दिक्संख्ये संज्ञायाम्' सूत्र से तत्पुरुष समास हुआ है। इसका लौकिक विग्रह सप्त च ते ऋषयः एवं अलौकिक विग्रह सप्तन् जस् ऋषि जस् होगा।

34. तथायुक्तं चानीप्सितम् इति सूत्रस्योदाहरणम् ?

- | |
|--------------------------------|
| (a) ओदनं पचति |
| (b) गां पयः दोग्धि |
| (c) अग्नेर्माणवकं वारयति |
| (d) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति |

Ans : (d) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्र का उदाहरण ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति है। इस सूत्र के अनुसार जिस प्रकार ईप्सित वस्तु की कर्मसञ्ज्ञा होती है। उसी प्रकार अनीप्सित पदार्थ की भी कर्मसञ्ज्ञा होती है।

35. सम्प्रदाने का विभक्तिः प्रवर्तते?

(a) चतुर्थी	(b) पञ्चमी
(c) प्रथमा	(d) द्वितीया

Ans : (a) सम्प्रदाने चतुर्थी विभक्ति भवति अर्थात् सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' अर्थात् कर्ता दान क्रिया से जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है।

36. साधकतमं –

(a) कर्म	(b) कर्ता
(c) अधिकरणं	(d) करणं

Ans : (d) साधकतमं करणम् अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसे करण कहते हैं।

37. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्' इदं वाक्यमस्ति –

(a) शिशुपालवधे	(b) किरातार्जुनीये
(c) बुद्धचरिते	(d) मेघदूते

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्' यह वाक्य भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का है। इसमें 18 सर्ग हैं। इसके नायक अर्जुन एवं प्रतिनायक किरात वेशधारी भगवान् शङ्कर हैं।

38. "मृगयाऽघ्राय न भूभृतां हनताम्" इदं वाक्यमस्ति –
 (a) नैषधीयचरिते (b) बुद्धचरिते
 (c) किरातार्जुनीय (d) रघुवंशे

Ans : (a) 'मृगयाऽघ्राय न भूभृतां हनताम्' यह सूक्ति नैषधीयचरित्रम् के द्वितीय सर्ग का 10वाँ श्लोक है।

39. "गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति" इदं वाक्यमस्ति
 (a) दशकुमारचरिते (b) हर्षचरिते
 (c) मुद्राराक्षसे (d) कादम्बर्याम्

Ans : (d) "गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति" यह वाक्य बाणभट्ट रचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश से लिया गया है। इसमें शुकनास युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय लक्ष्मी के गुण-दोषों को बता रहा है।

40. हर्षचरितस्य कर्ता अस्ति –
 (a) अश्वघोषः (b) श्रीहर्षः
 (c) बाणः (d) दण्डी

Ans : (c) बाणभट्ट की पाँच रचनाओं में हर्षचरितं का प्रमुख स्थान है। यह एक आख्यायिका ग्रन्थ है। इसमें राजा हर्षवर्धन से सम्बन्धित विषय का वर्णन है।

41. "श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" इदं वाक्यमस्ति–
 (a) स्वप्नवासवदत्ते (b) मुद्राराक्षसे
 (c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मृच्छकटिके

Ans : (c) "श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" यह वाक्य महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलं का है। यह सात (7) अङ्कों में विभक्त विश्व प्रसिद्ध नाटक है। इसमें राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला की प्रणय गाथा का वर्णन है।

42. रत्नावली भवति –
 (a) नाटकम् (b) प्रकरणम्
 (c) नाटिका (d) प्रकरणिका

Ans : (c) रत्नावली नाटिका के अन्तर्गत आती है। इसके लेखक श्रीहर्षवर्धन हैं। यह चार (4) अङ्कों में विभक्त है। इसके नायक राजा उदयन एवं नायिका रत्नावली (सागरिका) हैं। इसमें भासकृत स्वप्नवासवदत्ता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

43. गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति?
 (a) 8 (b) 15
 (c) 24 (d) 36

Ans: (a) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य अष्टौ प्रभेदाः सन्ति अर्थात् गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ (8) प्रभेद होते हैं।

44. विश्वनाथस्य मते काव्यम्
 (a) शब्दः (b) शब्दार्थौ
 (c) वाक्यम् (d) पदावलिः

Ans : (c) विश्वनाथ के मत में रसात्मक वाक्य ही काव्य है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण करते हुए इस प्रकार कहा है –
 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'।

45. साहित्यदर्पणानुसारं शान्तरसस्य स्थायीभावोऽस्ति –
 (a) शमः (b) निर्वेदः
 (c) विवेकः (d) माया

Ans : (a) साहित्यदर्पण के अनुसार शान्त रस का स्थायिभाव शम है। नाटक में आठ (8) रस माने गये हैं लेकिन काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने 'शान्तोऽपि नवमो रसः' कहकर शान्त को नवें रस के रूप में परिगणित किया है।

46. गणिका नायिका भवति–
 (a) नाटके (b) प्रकरणे
 (c) भागे (d) समवकारे

Ans : (b) प्रकरण में नायिका गणिका (वेश्या) होती है। जैसे शूद्रकृत मृच्छकटिकम् प्रकरण की नायिका वसन्तसेना प्रसिद्ध गणिका थी।

47. नाटके नायको भवति –
 (a) धीरललितः (b) धृष्टः
 (c) शठः (d) धीरोदात्तः

Ans : (d) नाटक में नायक धीरोदात्त कोटि का होता है। जैसे – उत्तररामचरितं में राम, शाकुन्तलं में दुष्यन्त धीरोदात्त नायक के अन्तर्गत आते हैं।

48. आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः
 (a) हास्यः (b) भीभत्सः
 (c) अद्भुतः (d) भयानकः

Ans : (a) आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः – हास्यः।

49. अभिधापुच्छमिति व्यवहियते –
 (a) अभिधा (b) लक्षणा
 (c) व्यञ्जना (d) तात्पर्याख्यावृत्तिः

Ans : (b) लक्षणा अभिधापुच्छमिति व्यवहियते अर्थात् लक्षणा शब्दशक्ति अभिधापुच्छभूता होती है।

50. युग्मकं कव्यं भवति–
 (a) गद्यम् (b) चम्पूः
 (c) पद्यम् (d) नाटकम्

Ans : (b) चम्पू युग्मकं कव्यं भवति। चम्पूकाव्य युग्मक होता है क्योंकि इसमें गद्य-पद्य का समन्वय होता है। गद्य-पद्य से मिश्रित काव्य को चम्पू काव्य कहते हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2007

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति।
एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः
समाधेयाः।

1. 'नासत्यौ' इति विशेषणं भवति :?

- (a) अग्नेः (b) अश्विनोः
(c) वरुणस्य (d) सोमस्य

Ans : (b) अश्विनौ द्युस्थानीय युगल देवता हैं। इन्द्र, अग्नि तथा सोम के बाद अश्विनौ का नाम आता है। ऋग्वेद के लगभग 50 सूक्तों में तथा अन्य सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ स्तुति की गयी है, नासत्या यह अश्विनौ का विशेषण है।

2. 'यो अश्विनोर्नन्तरग्निं जजान' -अनेन मन्त्रभागेन परामृश्यते

- (a) विष्णुः (b) सविता
(c) बृहस्पतिः (d) इन्द्रः

Ans : (d) "यो अश्विनोर्नन्तरग्निं जजान" यह मन्त्रभाग इन्द्र सूक्त से सम्बद्ध है। इन्द्र का वर्णन लगभग 250 सूक्तों में किया गया है। इन्द्र के महान गुण-महान कार्यों को करने की शक्ति, अतुल पराक्रम और असुरों को युद्ध में जीतना आदि।

3. कठोपनिषदि नचिकेतसा पार्थितम्:

- (a) हिरण्यादिकम् (b) वरत्रयम्
(c) स्त्रीरत्नम् (d) पुत्रपरिजनादिकम्

Ans : (b) कठोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है। इसमें यमराज द्वारा नचिकेता को तीन वर देने का वर्णन प्राप्त होता है।

4. ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति?

- (a) सायणाचार्य (b) वेङ्कटमाधव
(c) स्कन्दस्वामी (d) रावणः

Ans : (c) ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो स्कन्दस्वामी अस्ति। सायण आचार्य के अनुसार वेद इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के अलौकिक उपाय हैं। सायण, स्कन्दस्वामी, गुणविष्णु प्राचीन वेद भाष्यकार हैं तथा अरविन्द अर्वाचीन वेद भाष्यकार हैं।

5. ज्ञानश्रुतेरुपाख्यानं वर्तते :

- (a) केनोपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (d) ज्ञानश्रुतेरुपाख्यानं बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते। बृहदारण्यक उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद में प्राप्त होने वाला सबसे बड़ा उपनिषद् है यह 6 अध्यायों में विभक्त है। इसके प्रथम अध्याय में मृत्यु द्वारा सम्पूर्ण पदार्थ ग्राह्य किये जाने का वर्णन है।

6. ऋग्वेदस्य नामान्तरम्

- (a) दशाध्यायी (b) दशतयी
(c) दशमण्डली (d) गानवेदः

Ans : (b) ऋग्वेद में दश मण्डल होने के कारण इसका नाम दशतयी है। ऋग्वेद की 21 शाखाएँ मानी गई हैं पतञ्जलि के अनुसार, इसमें 10 मण्डल 85 अनुवाक् एवं 1028 सूक्त हैं। इसमें प्रथम मण्डल के ऋषि मधुच्छन्दा (शतार्चिन) है द्वितीय के गृत्समद एवं छठे मण्डल के ऋषि भरद्वाज हैं।

7. यमयमीसंवादे यमी आसीत् यमस्य :

- (a) कन्या (b) माता
(c) भगिनी (d) जाबा

Ans : (c) यम-यमी संवादसूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का दशवाँ सूक्त (10/10) है। इसमें यमी यम की बहन है वह यम से विवाह एवं सहवास की प्रार्थना करती है लेकिन यम ऐसा करने से मना कर देता है।

8. गानस्य प्राधान्यमस्ति :

- (a) सामवेदे (b) यजुर्वेदे
(c) अथर्ववेदे (d) ऋग्वेदे

Ans : (a) गान की प्रधानता सामवेद में है इसकी तीन शाखाएँ हैं- रागायनीय, कौथुमीय, जैमिनीय। सामवेद दो भागों में विभक्त है- (1) पूर्वार्चिक (2) उत्तरार्चिक

9. गोपथब्राह्मणस्य सम्बन्धोऽस्ति :

- (a) सामवेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (b) गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद का प्राप्त होने वाला एकमात्र ब्राह्मण ग्रन्थ है इसके ऋषि गोपथ हैं। यह पूर्वगोपथ एवं उत्तर गोपथ दो भागों में विभक्त है।

10. वेदाङ्गेषु व्याकरणं भवति :

- (a) घ्राणम् (b) हस्तः
(c) श्रवणम् (d) मुखम्

Ans : (d) व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है- "व्याकरणं मुखं स्मृतम्"। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण के 5 प्रयोजन बताये हैं- रक्षा, ऊह, आगम, लघु असन्देह।

11. आख्यातस्य लक्षणं वर्तते :

- (a) शिक्षायाम् (b) ज्योतिषे
(c) छन्दसि (d) निरुक्ते

Ans : (d) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में चार प्रकार के पदों की चर्चा की गई है- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात। "भावप्रधानम् आख्यातम्" ऐसा आख्यात का लक्षण दिया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

12. बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते :

- (a) ऋग्वेदे (b) सामवेदे
(c) अथर्ववेदे (d) यजुर्वेदे

Ans : (a) ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 49वें सूक्त से 59वें सूक्त तक 11 सूक्त “खिल सूक्त” के नाम से जाने जाते हैं इसमें 80 मन्त्र हैं।

13. ‘सतः सत् जायते’ इति कस्य मतम्?

- (a) बौद्धस्य (b) नैयायिकस्य
(c) सांख्यस्य (d) वेदान्तिनः

Ans : (c) “सतः सत् जायते” इति सांख्यस्य मतम्। ‘सतः सत् जायते’ यह मत सांख्यचार्यों का है। ‘सतः असत् जायते’ यह मत नैयायिकों का है।

14. कर्तृत्वं कुत्र विद्यते?

- (a) पुरुषे (b) मनसि
(c) प्रकृतौ (d) अहङ्कारे

Ans : (c) कर्तृत्वं प्रकृतौ विद्यते। अर्थात् कर्तृत्वं गुण प्रकृति का है। चेतन पुरुष के अकर्ता तथा प्रकृति के अचेतन होने के कारण दोनों के संयोग से अचेतन बुद्धि आदि चेतन सदृश हो जाती है।

15. बुद्धिसर्गः कतिविधः भवति?

- (a) एकविधः (b) द्विविधः
(c) त्रिविधः (d) चतुर्विधः

Ans : (d) सांख्यकारिका में प्रत्यय सर्ग (बुद्धि सर्ग) के चार प्रकार बताए गये हैं।

विपर्यय	अशक्ति	तुष्टि	सिद्धि
5 भेद	28 भेद	9 भेद	8 भेद

16. कैवल्यं किमस्ति?

- (a) नित्यसुखाभिव्यक्ति
(b) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(c) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(d) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

Ans : (d) सांख्यकारिका में 25 तत्त्वों में महत् (बुद्धि) को ज्ञान का धर्म कहा गया है। इसकी उत्पत्ति प्रकृति से होती है और महत् तत्त्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है और अहंकार से पञ्च तन्मात्राएँ उत्पन्न होती हैं।

17. अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिर्भवति

- (a) एकविधा (b) द्विविधा
(c) चतुर्विधा (d) अनेकविधा

Ans : (b) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान के विषय में कहा गया कि “अज्ञानं तु सदसदभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति”।

अतः अज्ञान की आवरण एवं विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

18. जीवस्य कतिविधाः अवस्थाः भवन्ति

- (a) त्रिविधा (b) चतुर्विधाः
(c) पञ्चविधा (d) षट्विधा

Ans : (a) वेदान्तसार में जीव की तीन अवस्था बताई गई है-
जागरण अवस्था - में जीव को वैश्वानर कहा गया।
स्वप्नावस्था - में जीव को तैजस् कहा गया।
सुषुप्ति अवस्था - में जीव को प्राज्ञ कहा गया है।

19. विवर्तो नाम किं विद्यते?

- (a) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(b) कारणस्य कार्यवस्था
(c) कारणात् विषमसत्ताकोत्पत्तिः
(d) कारणगुणात्मिका कार्योत्पत्तिः

Ans : (a) विवर्तवाद एक सिद्धान्त है इस सिद्धान्त के प्रतिपादक अद्वैत वेदान्ति हैं उनके अनुसार यह संसार विवर्त है अर्थात् जो है वह सत्य नहीं है ‘ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या’ इनके अनुसार मिथ्या रूप से अन्यवस्तु के रूप में भाषित होना ही विवर्त है।

‘अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्त इत्युदाहृतः’

20. पदार्थस्य किं लक्षणम्?

- (a) सत्तावत्वम् (b) भावत्वम्
(c) अभिधेयत्वम् (d) प्रमेयत्वम्

Ans : (c) ‘पदस्यार्थः पदार्थः’ ‘अभिधेयत्वं पदार्थत्वम्’ अभिधेय अर्थात् कार्य। वैशेषिक मतानुसार सात पदार्थ हैं। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव।

21. सामान्य पदार्थः नास्तीति कस्य मतम्?

- (a) बौद्धस्य (b) नैयायिकस्य
(c) मीमांसकस्य (d) वैयाकरणस्य

Ans : (a) बौद्ध दर्शन के अनुसार जाति के स्थान पर अपोह स्वीकार किया गया है। ‘तदभिन्न भिन्नत्व ही अपोह है। न्याय, व्याकरण तथा मीमांसा तीनों सामान्य अर्थात् जाति को स्वीकार करते हैं।

22. विभुत्वं किमस्ति?

- (a) अपरिच्छिन्नपरिमाणवत्वम्
(b) परिमाणरहितत्वम्
(c) सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वम्
(d) प्रत्यक्षयोग्यद्रव्यत्वम्

Ans : (c) ‘सर्वमूर्तद्रव्य संयोगित्वं विभुत्वम्’ जिसका परिमाण मूर्त रहता है सीमित रहता है वह मूर्त होता है अर्थात् परिच्छिन्न परिमाण वाला मूर्त है अर्थात् ‘पदार्थमात्र वृत्तित्वम्’ विभुत्वं ही सत्य हैं मूर्त द्रव्य पाँच हैं- आकाश, पृथ्वी, तेज, वायु और मन।

23. प्रामाण्यमनुव्यवसायेन गृह्यते इति कस्य मतम्?

- (a) नैयायिकस्य (b) वेदान्तिनः
(c) प्रभाकरमीमांसकस्य (d) मुरारिमिश्रस्य

Ans : (a) प्रामाण्य को न्यायदर्शन में अनुव्यवसाय से ग्रहण करते हैं। जैसे घट को देखने पर घट का ज्ञान पहले हुआ था अब उसी पूर्व घट ज्ञान का पुनः ज्ञान हो गया है।

24. अव्याप्यवृत्तित्वं किमस्ति?

- (a) सावच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(b) निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(c) एकमात्रवृत्तिकत्वम्
(d) अनेकवृत्तिकत्वम्

Ans : (b) ‘अव्याप्यवृत्तित्वं निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्’ व्याप्यवृत्ति अर्थात् जो सर्वत्र रहे अव्याप्य वृत्ति अर्थात् जो व्याप्त न करे व्याप्य भी व्यापक के अन्तर्गत होता है। निरवच्छिन्नवृत्तिकत्व ही अव्याप्यवृत्तिकत्व है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

25. नदीसंज्ञाविधायकं सूत्रम् :

- (a) यूस्त्र्याख्यौ (b) अलोऽन्त्यापूर्वः
(c) इदूदेदद्विवचनम् (d) क्तक्तवतू

Ans : (a) नदी संज्ञा विधायक सूत्र “यूस्त्र्याख्यौ नदी” है अर्थात् दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है। यथा- गौरी, नदी, वधू, आदि।

26. एकाल् प्रत्ययस्य का संज्ञा?

- (a) धि (b) सर्वनामस्थानम्
(c) गतिः (d) अपृक्तः

Ans : (d) अपृक्त एकाल् प्रत्ययः- एकाल् प्रत्ययो यः सोऽपृक्तसंज्ञं स्यात् ।
यथा - सखान् + स् में स् प्रत्यय एक अल् वाला है अतः इस स् की अपृक्त संज्ञा होगी।

27. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) संहिता	(i) अदेङ्
(B) गुणः	(ii) अचोऽन्त्यादि
(C) पदम्	(iii) परः सन्निकर्षः
(D) टि	(iv) सुप्तिङन्तम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b) (iv)	(ii)	(iii)	(i)
(c) (ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d) (iii)	(i)	(iv)	(ii)

Ans : (d) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है -
संहिता - परः सन्निकर्षः
गुणः - अदेङ्
पदम् - सुप्तिङन्तम्
टि - अचोऽन्त्यादि

28. कर्मणा यमभिप्रैति स :

- (a) करणम् (b) कर्म
(c) सम्प्रदानम् (d) अपादानम्

Ans : (c) “कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्” सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र हैं अर्थात् कर्ता दान क्रिया के कर्म द्वारा जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होगी।

29. ‘अक्षणा काणः’ -अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः

- (a) सहयुक्तेऽप्रधाने (b) हेतौ
(c) स्पृहेरीप्सितः (d) येनाङ्गविकारः

Ans : (d) “येनाङ्गविकारः” जिस विकृत अङ्ग से अङ्गी का विकार लक्षित हो, तो उस विकृत वाचक शब्द से तृतीया होती है।
यथा-अक्षणा काणः, कर्णेन बधिरः, पादेन खञ्जः, पृष्ठेन कुब्जः।

30. वैषयिकाधिकरणस्य उदाहरणम् :

- (a) तिलेषु तैलम् (b) मोक्षे इच्छास्ति
(c) गङ्गायां घोषः (d) वने व्याघ्रः

Ans : (b) आधार तीन प्रकार के माने गये हैं-
उसमें औपश्लेषिक का उदाहरण - कटे आस्ते
वैषयिक का उदाहरण - मोक्षे इच्छास्ति
अभिव्यापक का उदाहरण - तिलेषु तैलम्।

31. ‘यतश्च निर्धारणम्’ -अनेन सूत्रेण विधीयते

- (a) द्वितीया तृतीया वा (b) तृतीया चतुर्थी वा
(c) प्रथमा द्वितीया वा (d) षष्ठी सप्तमी वा

Ans : (d) “यतश्च निर्धारणम्” जाति गुण क्रिया संज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः। अर्थात् जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा नाम इन चार में से किसी के द्वारा जिस समुदाय से उसके एक देश का पृथक्करण हो उस समुदाय वाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी विभक्तियाँ हों।
यथा- नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।

32. ‘अधिहरि- -अस्मिन् पदे कः समासः?

- (a) तत्पुरुषः (b) द्वन्द्वः
(c) कर्मधारयः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) ‘अधिहरि’ इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह हरौ इति और अलौकिक विग्रह “हरि डि अधि” है। यहाँ पर “अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिवृद्धयर्थाभावात्तयासम्प्रति.....
.....सम्प्रतिसाकल्यान्तवचनेषु। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

33. समाहारद्वन्द्व सदैव प्रयुज्यते :

- (a) पुल्लिङ्गे (b) स्त्रीलिङ्गे
(c) नपुंसकलिङ्गे (d) उभयलिङ्गे

Ans : (c) समाहार अर्थ में द्वन्द्व और द्विगु समास नित्य नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे - पाणिपादम्, पञ्चपात्रम् इत्यादि।

34. ‘पितरौ’- इत्यस्य पदस्य, विग्रहः

- (a) पिता च कन्या च (b) माता च पिता च
(c) भ्राता च पिता च (d) स्वसा व पिता च

Ans : (b) “पितरौ” इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह “माता च पिता च” और अलौकिक विग्रह “मातृ सु पितृ सु” होगा। यह एक शेष द्वन्द्व समास का उदाहरण है

35. कॉलिजनियमस्य उपयोगो भवति अस्मिन् :

- (a) ददौ (b) दधौ
(c) चकार (d) करोति

Ans : (b) कॉलिजनियमस्य उपयोगो दधौ भवति।
इसका वर्णन भाषा विज्ञान में किया गया है।

स्त्रोत-कविलदेव द्विवेदी पृष्ठ संख्या-247

36. बाह्यप्रयत्नास्तु :

- (a) पञ्चधा (b) दशधा
(c) एकादशधा (d) त्रयोदशधा

Ans : (c) आभ्यन्तर प्रयत्न 5 और बाह्यप्रयत्न 11 प्रकार के माने गये हैं- आभ्यन्तर प्रयत्न - (i) स्पृष्ट (ii) ईषत्स्पृष्ट (iii) ईषद्विवृत (iv) विवृत (v) संवृत
बाह्यप्रयत्न 11 माने गये हैं- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

37. ‘अमी अश्वाः, इत्यत्र प्रगृह्यसंज्ञा- विधायकं सूत्रम् :

- (a) ईदूदेदद्विवचनं प्रगृह्यम् (b) अदसो मात्
(c) निपात एकाजनाङ् (d) प्लुतप्रगृह्य अचि नित्यम्

Ans : (b) अमी अश्वाः में ‘अदसो मात्’ सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होगी तथा प्लुतप्रगृह्याऽचिनित्यम् सूत्र से प्रकृतिभाव होकर अमी अश्वाः रूप बनेगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. 'श्रेयसि केन तृप्यते' इत्यस्ति :

- (a) बुद्धचरिते (b) शिशुपालवधे
(c) किरातार्जुनीये (d) नैधधमहाकाव्ये

Ans : (b) "श्रेयसि केन तृप्यते" यह सूक्ति माघकृत शिशुपालवधम् से ली गयी है। अर्थात् कल्याण के विषय में कौन तृप्त होता है। श्रीकृष्ण जी नारद से कह रहे हैं कि आपके दर्शन से कृतकृत्य होकर भी मैं आपके सारगर्भित वचन सुनना चाहता हूँ।

39. प्रकरणे अङ्कसंख्या भवति :

- (a) सप्त (b) पञ्च
(c) चत्वारः (d) दश

Ans : (d) रूपक के दशभेदों में से प्रकरण नामक भेद में दश अङ्क होते हैं। यह इतिहास प्रसिद्ध या कल्पना प्रसूत होता है इसमें प्रायः शृंगार रस की प्रधानता होती है।

40. स्वप्नवासवदत्तस्य रचयिता कः?

- (a) कालिदासः (b) शूद्रकः
(c) भासः (d) श्रीहर्षदेवः

Ans : (c) स्वप्नवासवदत्तम् के लेखक भास हैं। यह 6 अङ्कों में विभक्त है। भास का समय 327 ई. पूर्व स्वीकार किया जाता है भास के 13 नाटकों में इसका प्रमुख स्थान है। इसमें उदयन एवं वासवदत्ता की प्रणयगाथा का वर्णन है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तले अङ्गी रसः कः?

- (a) शृंगारः (b) वीररसः
(c) शातरसः (d) करुणरसः

Ans : (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचना है यह 7 अङ्कों में विभक्त है इसमें शृंगार अङ्गीरस है इसकी कथा का आधार महाभारत को आदि पर्व माना जाता है।

42. मुद्राराक्षसस्य रचयिता कः?

- (a) शूद्रकः (b) विशाखदत्तः
(c) भट्टनारायणः (d) कालिदासः

Ans : (b) मुद्राराक्षसम् के लेखक विशाखदत्त हैं यह नाटक 7 अङ्कों में विभक्त है यह वीर रस प्रधान है इसका आधार ग्रन्थ विष्णुपुराण है विशाखदत्त का समय 400 ई.के आसपास है।

43. वीथ्यां प्रयुक्ता वृत्तिः

- (a) भारती (b) सात्वती
(c) कैशिकी (d) आरभटी

Ans : (c) रूपक के दश भेदों में वीथी में कैशिकी वृत्ति है। इनमें सन्धि, तथा अङ्क भाग के समान होते हैं अर्थात् मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती हैं।

44. रघुवंशमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?

- (a) एकोनविंशतिः (b) अष्ट
(c) द्वाविंशतिः (d) विंशतिः

Ans : (a) रघुवंश में 19 सर्ग हैं। रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास की रचना है। इसमें राजा दिलीप द्वारा नन्दिनी गाय की सेवा का वर्णन है।

45. मुख्यार्थवाधे सति भवति :

- (a) अभिधाव्यापारः
(b) लक्षणाव्यापारः
(c) व्यञ्जनाव्यापारः
(d) तात्पर्यम्

Ans : (b) शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना उसमें से लक्षणा की परिभाषा-

मुख्यार्थवाधे तद्युक्तो यथाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।

रूढे प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥

46. लोकस्थाराधनाय मुञ्चतो नास्ति में व्यथा इत्यस्ति :

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) उत्तररामचरिते
(c) मृच्छकटिके (d) महावीरचरिते

Ans : (b) स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।

आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

यह श्लोक उत्तररामचरितम् नाटक से सम्बद्ध है यह नाटक 7 अंकों में विभक्त है।

47. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये किरातः कः?

- (a) अर्जुनः (b) शिवः
(c) कृष्णः (d) धर्मराजः

Ans : (b) किरातार्जुनीयम् एक महाकाव्य है जिसमें नायक अर्जुन एवं सहनायक शिव हैं। शिव को ही किरातवेषधारी कहा गया है।

48. करुणरसस्य स्थायी भावः :

- (a) शमः (b) रतिः
(c) उत्साहः (d) शोकः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है। इसका वर्ण कपोत है और इसके देवता यम हैं।

49. व्यायोगे नायकः :

- (a) धीरोदात्तः (b) धीरप्रशान्तः
(c) धीरललितः (d) धीरोद्धतः

Ans : (d) व्यायोग की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होती है। इसमें स्त्रियों की संख्या स्वल्प होती है। इसका नायक धीरोद्धत राजर्षि या दिव्य पुरुष होता है।

50. हर्षचरितम्

- (a) कथा (b) आख्यायिका
(c) कथानिका (d) परिकथा

Ans : (b) हर्षचरितम् महाकवि बाण की प्रथम रचना है। ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित होने से यह 'आख्यायिका' है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2007

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. यास्कमते अग्निर्भवति?

- (a) अन्तरिक्षस्थानः (b) पृथ्वीस्थानः
(c) द्युस्थानः (d) गृहस्थानः

Ans : (b) आचार्य यास्क ने तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन निरुक्त में किया है-

अन्तरिक्षस्थानीय	-	इन्द्र, रुद्र, वायु
द्युस्थानीय	-	वरुण, मित्र, विष्णु, सवितृ
पृथ्वीस्थानीय	-	अग्नि, पृथ्वी, सोम

2. विष्णोस्त्रीणि पदानि पूर्णानि भवन्ति?

- (a) उदकेन (b) अमृतेन
(c) मधुना (d) घृतेन

Ans : (c) विष्णोस्त्रीणि पदानि मधुना पूर्णानि भवन्ति। विष्णु एक द्युस्थानीय देवता है। इनकी स्तुति 5 सूक्तों में की गई है। विष्णु के लिए उरुक्रम एवं उरुगाय भी कहा गया है, उरुगाय शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में 21 बार किया गया है।

3. द्युस्थानीय सूक्तस्य देवता भवन्ति?

- (a) वरुणः (b) इन्द्रः
(c) सोमः (d) अग्निः

Ans : (a) वरुण द्युस्थानीय देवता हैं ऋग्वेद में इनका 12 सूक्तों में वर्णन किया गया है। इन्हें वृणोति इति सतः ऐसा कहा गया है। इस सूक्त के देवता शुनः शेष हैं।

4. भैषज्यसूक्तानि वर्तन्ते?

- (a) सामवेदे (b) ऋग्वेदे
(c) यजुर्वेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (d) भैषज्यसूक्त का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। इसमें रोग, रोगों के लक्षण, निदान एवं जड़ी बूटियों इत्यादि का 144 सूक्तों में विवेचन किया गया है।

5. वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते?

- (a) यजुर्वेदे (b) ऋग्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (b) वंशीयमण्डलानि ऋग्वेदे उपलभ्यन्ते। अर्थात् वंशीय मण्डलय ऋग्वेद में प्राप्त होता है। ऋग्वेद के दूसरे मण्डल से लेकर सप्तम मण्डल तक को वंश मण्डल के नाम से जाना जाता है। द्वितीय- सप्तम मण्डल तक का भाग ऋग्वेद का प्राचीनतम अंश है जो वंशमण्डल के नाम से जाना जाता है।

6. वैदिककालनिर्णये ज्योतिषस्योपयोगः कृतः

- (a) बेवरेण (b) मैक्समूलरेण
(c) न केनापि (d) तिलकेन

Ans : (d) बालगङ्गाधर तिलक ने वैदिककाल का निर्धारण करते हुए 4000-2500 ई.पू. स्वीकार करते हैं। वे ज्योतिष के आधार पर वैदिककाल का निर्धारण किये हैं।

7. हैमवत्या उपाख्यानमुपलभ्यते?

- (a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) ईशोपनिषदि (d) बृहदारण्यके

Ans : (a) सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् केनोपनिषद् है इसको तवल्कारोपनिषद् भी कहा जाता है इसमें 4 खण्ड हैं इसके तृतीय व चतुर्थ खण्ड में उमा हेमवती के रोचक आख्यान द्वारा परब्रह्म की सर्व शक्तिमत्ता का वर्णन है।

8. रथरूपकं विद्यते?

- (a) छान्दोग्ये (b) बृहदारण्यके
(c) श्वेताश्वतरे (d) कठे

Ans : (d) “रथरूपकं” का वर्णन कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है।

नोट- आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रगृहमेव च॥

9. ऋग्वेदस्य पदपाठस्य कर्ता आसीत्?

- (a) सायणाचार्यः (b) स्कन्दस्वामी
(c) यास्कः (d) शाकल्यः

Ans : (a) ऋग्वेद के पदपाठ कर्ता आचार्य सायण थे। इन्होंने ऋग्वेद पर भाष्य लिखा, ऋग्वेद दो भागों-अष्टक क्रम एवं मण्डल क्रम में विभक्त है।

10. ‘न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति’ -इयमुक्तिर्भवति?

- (a) विश्वामित्रस्य (b) सरमायाः
(c) उर्वश्याः (d) यम्याः

Ans : (c) ‘न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति’ यह उर्वशी का कथन है पुरुरवा उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशम मण्डल का 95वाँ सूक्त है जिसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय गाथा का वर्णन है। इसमें कुल 18 मन्त्र हैं। ऋषि एवं देवता- पुरुरवा और उर्वशी हैं। छन्द-त्रिष्टुप् है और स्वर-धैवत् है। यम-यमी संवाद में 14 मन्त्र हैं।

11. वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति :

- (a) मुखम् (b) श्रोत्रम्
(c) घ्राणम् (d) पादः

Ans : (b) वेदाङ्गों की संख्या 6 है- शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।

इनमें से निरुक्त को वेद रूपी पुरुष का श्रोत कहा गया है- “निरुक्तं श्रोतमुच्यते”। इस निरुक्त में तीन काण्ड एवं 12 अध्याय हैं।

(1) नैघण्टुकाण्डम् (2) नैगमकाण्डम् (3) दैवतकाण्डम्

12. देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति?

- (a) व्याकरणे (b) शिक्षायाम्
(c) कल्पे (d) निरुक्ते

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

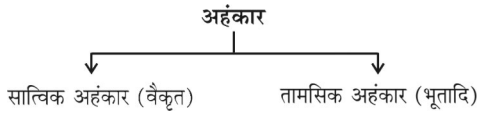
Ans : (d) देवताओं के स्थान का वर्णन निरुक्त में किया गया है।
ये तीन स्थानीय देवता हैं-

पृथ्वीस्थानीय	-	पृथ्वी, अग्नि, सोम
द्युस्थानीय	-	वरुण, मित्र, सवितृ, पूषा
अन्तरिक्ष स्थानीय	-	इन्द्र, रुद्र, वायु, (मरुत)

13. अहङ्कार कतिविधो भवति?

- (a) एकविधः (b) द्विविधः
(c) त्रिविधः (d) चतुर्विधः

Ans : (b) अहङ्कार द्विविधः भवति। अर्थात् अहंकार दो प्रकार का होता है।



14. समन्वयात् किं सिद्ध्यति?

- (a) प्रकृतिः (b) पुरुषः
(c) गुणाः (d) कैवल्यम्

Ans : (a) समन्वयात् प्रकृतिलयः सिद्ध्यति।

15. वैराग्यात् किं भवति?

- (a) प्रकृतिलयः (b) बुद्धिलयः
(c) अहङ्कारलयः (d) भूतलयः

Ans : (a) वैराग्य प्रकृतिलय होता है जो इस कारिका से स्पष्ट है।
**वैराग्यात् प्रकृतिलयः संसारो भवति राजसाद्गतात् ॥
ऐश्वर्यादविधातो विपर्ययात् तद्विपर्यासः॥**

16. ज्ञानं कस्य धर्मः?

- (a) पुरुषस्य (b) प्रकृतेः
(c) अहङ्कारस्य (d) बुद्धे

Ans : (d) ज्ञान बुद्धि का धर्म है। अर्थात् निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है। धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य इसके सात्त्विक रूप हैं इनके विपरीत अर्थात् अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य या राग तथा अनैश्वर्य इसके तामस रूप हैं।

17. केवलं शब्दादिगुणत्रयं कुत्र अभिव्यज्यते?

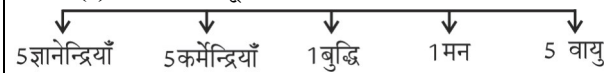
- (a) पञ्चीकृतवायौ (b) पञ्चीकृताप्सु
(c) पञ्चीकृततेजसि (d) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

Ans : (c) वेदान्तसार में वर्णित पञ्चीकरण सिद्धान्त में पञ्चीकृततेजसि में केवल शब्दादि गुणत्रय दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ तेज (अग्नि) में शब्द, स्पर्श और रूप गुण विशेषरूप से विद्यमान होते हैं।

18. लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः सन्ति?

- (a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans : (c) लिङ्ग शरीर सूक्ष्म शरीर के सत्रह अवयव निम्न हैं-



19. अद्वैतवेदान्तमते मुक्तिः?

- (a) ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः (b) ब्रह्मसादृश्यप्राप्तिः
(c) ब्रह्मसायुज्यम् (d) ब्रह्मनिष्ठः

Ans : (d) अद्वैतवेदान्त मतानुसार जीवनमुक्ति वह है जो अपने स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर अज्ञान और उसके कार्य सञ्चित कर्म, संशय, विपर्यय आदि के भी बाधित हो जाने पर सम्पूर्ण बन्धनों से रहित ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्मवेत्ता) है।

20. विशेषगुणः कुत्र द्रव्ये नास्ति?

- (a) आकाशे (b) वायौ
(c) मनसि (d) आत्मनि

Ans : (a) तर्क संग्रह के अनुसार 'विशेषास्तु अनन्ताः अर्थात् विशेष अनन्त होते हैं। तर्कसङ्ग्रहकार के अनुसार पदार्थ कुल सात है द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव। विशेष नामक पदार्थ आकाश नामक द्रव्य में नहीं होता है। जबकि वायु को मन में तथा आत्मा में विशेष नामक पदार्थ सन्निहित रहता है।

21. लौकिकसन्निकर्षः कतिविधः?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) षड्विधः (d) चतुर्विधः

Ans : (c) इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ सम्बन्ध सन्निकर्ष कहलाता है यह लौकिक सन्निकर्ष 6 प्रकार का होता है।

(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष।

22. प्रमाणं द्विविधमिति कस्य मतम् ?

- (a) वैशेषिकस्य (b) नैयायिकस्य
(c) मीमांसकस्य (d) सांख्यस्य

Ans : (a) प्रमाणं द्विविधमिति वैशेषिकस्य मतम्। अर्थात् वैशेषिक के अनुसार प्रमाण दो ही माने गये हैं-

1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
नैयायिक चार प्रकार के प्रमाण को मानते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। सांख्य तीन प्रमाण को मानते हैं- प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द (आगम)

23. परिमाण्डल्यं नाम किम् ?

- (a) परमाणुः (b) अणुपरिमाणम्
(c) ब्रह्माण्डम् (d) त्रसरेणुः

Ans : (b) "अणुपरिमाण" को ही 'परिमाण्डल्यं' नाम से भी जाना जाता है। जबकि परमाणु नित्य एवं सूक्ष्म तत्त्वज्ञान का आधारस्तम्भ मात्र है। 'ब्रह्माण्ड' जगत शक्ति ज्ञान मात्र है।

24. पीलुपाकवादिनः के सन्ति?

- (a) नैयायिकाः (b) बौद्धाः
(c) वैशेषिकाः (d) जैनाः

Ans : (c) पीलुपाकवादिनः वैशेषिकाः सन्ति। अर्थात् वैशेषिक पीलुपाकवाद सिद्धान्त के समर्थक हैं इन्होंने दो प्रमाण को स्वीकार किया है-

1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान

25. अर्थवदधातुरप्रत्ययः?

- (a) संहिता (b) प्रातिपदिकम्
(c) गतिः (d) वृद्धिः

Ans : (b) प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्। अर्थात् धातु, प्रत्यय, प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

26. तुल्यास्यप्रयत्नं किमुच्यते?

- (a) निष्ठा (b) पदम्
(c) सवर्णम् (d) सन्धिः

Ans : (c) “तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्”। कण्ठ, तालु आदि उच्चारण स्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों के समान हों वे वर्ण परस्पर सवर्ण संज्ञक होते हैं।

यथा-‘त’ तथा ‘ध’ का उच्चारण स्थान दन्त है। अतः ये सर्वर्ण हैं।

27. पदस्य किं लक्षणम्?

- (a) सन्धियुक्तम् (b) योग्यताकांक्षासतियुक्तम्
(c) समासयुक्तम् (d) सुप्तिङन्तम्

Ans : (d) पद “संज्ञा विधायक सूत्र” सुप्तिङन्तम् पदम्” सुबन्तं तिङन्तं च पदसंज्ञं स्यात्। अर्थात् सुबन्त और तिङन्त की पद संज्ञा होती है। सुप् प्रत्यय (सु, औ, जस् आदि) और तिङ् (तिप् तस्, झि) प्रत्यय जिनके अन्त में हो उनकी पद संज्ञा होती है।

यथा - भू + तिप् = भवति।

28. निष्ठापदेन उच्यते :

- (a) ल्युट्ण्वुलौ (b) क्तक्तवतू
(c) ण्वुल्-तृचौ (d) अल्पधरी

Ans : (b) निष्ठा संज्ञा विधायक सूत्र ‘क्तक्तवतू निष्ठा’ एतौ निष्ठा संज्ञौ स्तः। अर्थात् क्त और क्तवतू प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है क्त का त, क्तवतू का तवत् शेष बचता है।
जैसे -स्तुतः, स्तुतवान्।

29. ‘मुनि’ इति पदस्य का संज्ञा?

- (a) टि (b) घि
(c) गति (d) नदी

Ans : (b) ‘मुनि’ पद की घि संज्ञा होती है। घि संज्ञा विधायक सूत्र “शेषो घ्यसखि” है शेष इति स्पष्टार्थम्। अर्थात् सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा होती है।

30. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) नदी	(i) गतिश्च
(B) उपधा	(ii) ईदूदेद्विवचनम्
(C) गतिः	(iii) यू स्याख्यौ
(D) प्रगृह्यम्	(iv) अलोऽन्त्यात् पूर्व
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c) (iv)	(ii)	(iii)	(i)
(d) (i)	(iv)	(ii)	(iii)

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

नदी	-	यू स्याख्यौ
उपधा	-	अलोऽन्त्यात्पूर्व
गतिः	-	गतिश्च
प्रगृह्यम्	-	ईदूदेद्विवचनम्

31. ‘कर्तुरीप्सिततमं’ कारकं किमुच्यते?

- (a) करणम् (b) सम्प्रदानम्
(c) कर्म (d) अपादानम्

Ans : (c) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्म संज्ञं स्यात्। अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहता है तो उस कारक की कर्म संज्ञा होती है।

32. क्रुधद्गुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः - तत्र का विभक्तिः?

- (a) चतुर्थी (b) तृतीया
(c) द्वितीया (d) पञ्चमी

Ans : (a) “क्रुधद्गुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः”। अर्थात् क्रुध, दुह, ईर्ष्या, असूय धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में कोपभाजन सम्प्रदान कारक कहलाता है और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

33. ‘विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः’ - कः समासः?

- (a) बहुव्रीहिः (b) द्विगुः
(c) केवलः (d) कर्मधारयः

Ans : (c) समास पाँच प्रकार का होता है- उसमें से केवल समास ऐसा समास है जिसे किसी विशेष नाम से अभिहित न किया गया हो। विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवल समासः।
यथा- भूतपूर्वः।

34. ‘अनुरूपम्’ इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते :

- (a) रूपस्य प्रति (b) रूपस्य योग्यम्
(c) रूपस्य सादृश्यम् (d) रूपस्य पश्चात्

Ans : (b) अनुरूपम् इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह “रूपस्य योग्यम्” और अलौकिक विग्रह ‘रूपः डस् अनु’ इसमें “अव्ययं विभक्ति साकल्यान्त वचनेषु सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

35. ऋटुरषाणामुच्चारणस्थानं किम्?

- (a) तालु (b) कण्ठः
(c) ओष्ठः (d) मूर्धा

Ans : (d) ऋटुरषाणाम् मूर्धा अर्थात् ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण् र् और ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है। जबकि जिह्वामूलीय का उच्चारणस्थान जिह्वामूल होता है।

36. दन्त्येषु अन्तर्भवति :

- (a) क् (b) प्
(c) ल् (d) म्

Ans : (c) ल् का उच्चारण स्थान दन्त होता है। “लृत्तुलसानां दन्ताः” अर्थात् लृ, तृ, थृ, दृ, धृ, नृ, लृ और स् का उच्चारण स्थान दन्त होता है। जबकि “एदैतो कण्ठतालु” अर्थात् ए और ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु होता है।

37. ‘कादयो मावसानाः’ वर्णाः :

- (a) स्पर्शाः (b) अन्तःस्थाः
(c) अनुनासिकाः (d) अस्पर्शाः

Ans : (a) कादयो मावसानास्पर्शाः वर्णाः। आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार के माने गये हैं- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत, संवृतम्।

तत्रस्पृष्टं स्पर्शानाम् (अर्थात् क् से म् पर्यन्त वर्णों का प्रयत्न स्पृष्ट होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. रत्नावल्याः रचयिता कः?

- (a) श्रीहर्षः (b) हर्षवर्धनः
(c) भासः (d) बाणः

Ans : (a) हर्षवर्धन विरचित रत्नावली नाटिका 4 अंकों में विभक्त है इसके प्रथम श्लोक में भगवान् शिव की स्तुति की गई है- पादाग्रस्तुतया मुहुःस्तनभरेणानीतया नम्रतां शम्भो.....क्षिप्तान्तरे पातुवः।

39. “सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ” इति रघुवंशमहाकाव्ये अस्मिन्संदर्भे वर्णितं भवति :

- (a) दिलीपस्य गोसेवा (b) रामवनगमनम्
(c) सीताविसर्जनम् (d) इन्दुमती स्वयंवरः

Ans : (d) सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीतायपतिम्बरा सा। यह श्लोक रघुवंशमहाकाव्यम् के षष्ठम् सर्ग में वर्णित इन्दुमती स्वयंवर के सन्दर्भ में वर्णित है।

40. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः

- (a) माधव्य (b) वसन्तकः
(c) मैत्रेयः (d) शार्ङ्गरवः

Ans : (a) “अभिज्ञानशाकुन्तलम्” का विदूषक (माधव्य) माधव्य है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की रचना है। यह नाटक सात अंकों में विभक्त है। इसका आधारग्रन्थ महाभारत का आदिपर्व है।

41. ‘सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्’ इति वाक्यस्य कर्ता:

- (a) कालिदासः (b) भारविः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

Ans : (b) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्” इस वाक्य के कर्ता महाकवि भारवि हैं इनकी प्रसिद्ध रचना किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आती है तथा यह 18 सर्ग में विभक्त है।

42. रूपकाणां भेदाः

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) दश

Ans : (d) रूपक के दश भेद स्वीकार किया गया है। यथा – नाटकमथ प्रकरणं भाण व्यायोग समवकार डिमाः। ईहामृगाङ्गवीथ्यः प्रसहनमिति रूपकाणि दशः। अर्थात् – नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, अङ्क, वीथी, प्रहसन ईहामृग।

43. प्रहसनस्य उदाहरणम् :

- (a) प्रियदर्शिका (b) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(c) मतविलासः (d) मृच्छकटिकम्

Ans : (c) रूपक के दश भेदों में से प्रहसन तीन प्रकार का होता है- (1) शुद्ध प्रहसन - पाखण्डी विप्र आदि (2) वैकृत प्रहसन - कामुक आदि (3) संकीर्ण प्रहसन - वीथी के अङ्गों से मिश्रित प्रहसन का उदाहरण “मतविलास” है।

44. वीभत्सरसस्य स्थायी भावः

- (a) शोकः (b) हासः
(c) भयः (d) जुगुप्सा

Ans : (d) वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा होता है। इसका वर्ण नील है और इसके देवता महाकाल हैं। जबकि शान्त रस का स्थायी भाव शम होता है।

45. करुणरसस्य वर्णः

- (a) श्वेतः (b) श्यामः
(c) नीलः (d) कपोतः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है इसका वर्ण कपोतवर्ण एवं इसके देवता यम हैं। जबकि शृंगार रस का वर्ण श्याम एवं हास्य रस का वर्ण शुक्ल होता है।

46. वाक्यं रसात्मकं काव्यमित्युक्तम् :

- (a) कुन्तकेन (b) विश्वनाथेन
(c) दण्डिना (d) भरतेन

Ans : (b) आचार्य विश्वनाथ ने काव्य को परिभाषित करते हुए कहा है- “वाक्यं रसात्मकं काव्यं” अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

47. विश्वनाथमतानुसारेण काव्ये रसो भवति :

- (a) आत्मा (b) अवयवसंस्थानम्
(c) आभूषणम् (d) शरीरम्

Ans : (a) सन्धिविग्रहिक आचार्य विश्वनाथ ने रसात्मक वाक्य को काव्य माना है। “रस एवात्मा साररूपतया जीवन धायको यस्य” अर्थात् रस ही आत्मा है। जिसका ऐसा वाक्य जिसका प्राणभूत (आत्मा) रस है, उस वाक्य को रसात्मक कहते हैं।

48. साक्षात्सङ्केतितार्थस्य बोधिकाः

- (a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) तात्पर्यम्

Ans : (a) सन्धिविग्रहिक आचार्य विश्वनाथ कविराज ने शब्द की तीन शक्तियाँ बताई हैं-

(i) अभिधा (ii) लक्षणा (iii) व्यञ्जना
उसमें से अभिधा का लक्षण देते हैं- तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा। उसी अभिधा में इस बात को कहते हैं कि- संकेतो गृह्यते जाति गुणद्रव्यक्रियासु च। अर्थात् सङ्केत जाति, गुण द्रव्य एवं क्रिया में गृहीत होता है।

49. ‘एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्’ इति केनोक्तम् :

- (a) कालिदासेन (b) भवभूतिना
(c) भासेन (d) वाल्मीकिना

Ans : (b) “एको रसः करुण एव निमित्त भेदात्” यह तमसा के द्वारा कहा गया है। महाकवि भवभूति विरचित ‘उत्तररामचरितम्’ सात अंकों में विभक्ति है। इस श्लोक के माध्यम से भवभूति करुण रस को ही प्रधान मानते हैं, बाकी सभी रस निमित्त मात्र हैं। इसलिए इनके नाटकों में करुण रस की बहुलता देखने को मिलती है।

50. मृच्छकटिके कति अङ्काः सन्ति :

- (a) पञ्चदश (b) सप्त
(c) दश (d) पञ्च

Ans : (c) मृच्छकटिकम् रूपक के दश भेदों में से प्रकरण नामक भेद है। इसके नायक चारुदत्त एवं नायिका वसन्तसेना हैं। प्रधान रस शृंगार है, गुण प्रसाद है, वृत्ति कौशिकी है। यह 10 अंकों में विभक्त है। इसके प्रथम अङ्क का नाम -अलङ्कारन्यास दूसरे एवं तीसरे अंक का नाम- द्युतकर संवाहक एवं सन्धिच्छेद है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2008

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'ऐतरेयब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्पृक्तम्।

- (a) सामवेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (c) ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ दो हैं-

(1) ऐतरेय ब्राह्मण (2) शांखायन या कौषीतकि ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता 'महिदास ऐतरेय' हैं इसमें 40 अध्याय हैं 8 पञ्चिकायें तथा आठों पञ्चिकाओं में पाँच-पाँच अध्याय हैं।

2. सामसंज्ञा भवति

- (a) ऋचाम् (b) गानानाम्
(c) ब्रह्मणानाम् (d) उपनिषदाम्

Ans : (b) जिस वेद में गेय मन्त्रों का विशिष्ट प्रकार से संकलन किया गया है उसे सामवेद कहते हैं।

“सामसंज्ञा गानानां भवति”।

3. यास्कमतेन कति भावविकाराः?

- (a) पञ्च (b) षड्
(c) सप्त (d) अष्ट

Ans : (b) यास्क विरचित निरुक्त में वार्ष्पायण ऋषि ने क्रिया के 6 भाव विकारों की विवेचना की है-

(1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति

4. 'यम-यमीसम्वादः' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले वर्तते?

- (a) दशममण्डले (b) पञ्चममण्डले
(c) नवममण्डले (d) अष्टममण्डले

Ans : (a) यम-यमी संवाद ऋग्वेद के (10/10) दशवें मण्डल का 10वाँ सूक्त है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है। लाट्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है और माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है।

5. ऋग्वेदे कति अष्टकाः सन्ति

- (a) दश (b) सप्त
(c) नव (d) अष्टौ

Ans : (d) ऋग्वेद के अष्टक क्रम में 8 अष्टक 64 अध्याय और 2006 वर्ग हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या $10580 \frac{1}{2}$ मन्त्र हैं।

6. कौथुमशाखा अस्ति

- (a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

Ans : (a) कैथुमशाखा सामवेद की शाखा है। सामवेद संहिता में साम का अर्थ है गान। इसका ऋत्विक् उद्गाता तथा देवता सूर्य है। वर्तमान में राणायनीय, कौथुमीय, जैमिनीय ये तीन शाखाएँ उपलब्ध हैं। सामवेद दो भागों में विभक्त है-

- (1) पूर्वार्चिक
(2) उत्तरार्चिक

7. अनुष्टुप् छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि सन्ति।

- (a) पञ्च (b) अष्ट
(c) दश (d) द्वादश

Ans : (b) छन्द को वेदरूपी पुरुष के पाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इसमें निम्नलिखित छन्द एवं उसके चरण और अक्षर की विवेचना है-

छन्द	चरण	अक्षर
गायत्री	तीन चरण	24
अनुष्टुप्	चार चरण	32
उष्णिक्	तीन चरण	28
वृहती	चार चरण	36
पंक्ति	चार चरण	40

8. नित्याः खलु वेदा इति केषांयभिमतम्।

- (a) मोक्षमूलस्य
(b) जैकोबीमहोदयस्य
(c) वेबरस्य
(d) प्राचीन भारतीय परम्परायाः

Ans : (d) 'नित्याः खलु वेदा' इति प्राचीन भारतीय परम्परायाः अभिमतम्।

अर्थात् 'नित्याः खलु वेदा' यह मत प्राचीन भारतीय परम्परा को मान्य है।

9. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले सोमस्य स्तुतिः दृक्पथमुपयाति?

- (a) द्वितीयमण्डले (b) पञ्चममण्डले
(c) दशममण्डले (d) नवममण्डले

Ans : (d) ऋग्वेद के नवममण्डल में सोम की स्तुति की गई है। सोम पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। जिनकी स्तुति 144 सूक्तों में की गई है तथा अन्य मण्डलों में 6 सूक्तों में स्तुति की गई है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

10. “नाभानेदिष्टोपाख्यानम्” कस्मिन् ब्राह्मणे समुपलभ्यते।

- (a) ऐतरेयब्राह्मण (b) शतपथ ब्राह्मणे
(c) गोपथ ब्राह्मणे (d) तैत्तिरीय ब्राह्मणे

Ans : (a) “नाभानेदिष्टोपाख्यानम्” ऐतरेय ब्राह्मणे समुपलभ्यते।
ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता महिदास ऐतरेय हैं इसमें कुल 40 अध्याय हैं। ऐतरेय ब्राह्मण के 33वें अध्याय में प्राप्त होने वाला ‘शुनः शेष’ अख्यान है।

11. “स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्” इतिवचनं कस्यामुपनिषदि विराजते?

- (a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) मुण्डकोपनिषदि

Ans : (c) “स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्” अर्थात् वेदों के पढ़ने पढ़ाने में प्रमाद नहीं करना चाहिए यह तैत्तिरीय उपनिषद् के प्रथम वल्ली के एकादश अनुवाक का है।

12. को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः?

- (a) ज्ञानम् (b) उपासनादिकम्
(c) गानम् (d) स्तुतिः

Ans : (a) चतुर्धा विभाजन में आरण्यक को ‘अरण्ये भवः’ इस संज्ञा से अभिहित किया गया है इसे ज्ञान का मुख्य विषय माना गया है।

13. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि:

- (a) 20 (b) 25
(c) 15 (d) 11

Ans : (b) सांख्य में 25 तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार्य किया गया है इन 25 तत्त्वों में पुरुष, प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चमहाभूत तथा पञ्च तन्मात्राएँ शामिल हैं।

14. सांख्यैः गुणा इति वर्णिता।

- (a) सुख-दुःख-मोहात्मका (b) इष्टानिष्टोभयात्मका
(c) प्रीत्यप्रीति विषादात्मका (d) सुख-दुःख-रागात्मका

Ans : (a) सांख्य में गुण प्रीति अप्रीति विषादात्मक हैं प्रकाशन, प्रवर्तन (सञ्चालन) तथा नियमन (नियन्त्रण) इनके प्रयोजन या कार्य हैं तथा एक दूसरे के सहचारी हैं।

15. सांख्यस्वीकृतानि प्रमाणानि:

- (a) 4 (b) 5
(c) 3 (d) 2

Ans : (c) सांख्य में तीन प्रमाण माने गये हैं-
(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) शब्द (आगम)
दृष्टमनुमानमाप्तवचनम् च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात् ।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धिः ॥
इसमें से अनुमान प्रमाण-पूर्ववत् शेषवत् तथा सामान्यतो दृष्ट रूप से तीन प्रकार का होता है।

16. पुरुष-प्रकृत्योः संसर्गः वर्णितः।

- (a) जडाजडवत् (b) मूक-बधिर-वत्
(c) अन्धमालावत् (d) पङ्गवन्धवत्

Ans : (d) सांख्य में प्रकृति को अचेतन, एवं अन्धी कहा गया है लेकिन प्रधान की संज्ञा दी गई है जबकि पुरुष पङ्गुवत् एवं निष्क्रिय है। प्रकृति एवं पुरुष का पङ्गवन्धवतन्याय से सिद्ध होना बताया गया है जो इस कारिका में उद्धृत हैं-

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।

पङ्गवन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः॥

नोट - इसमें पङ्गुवद पुरुष वर्तते।

17. बुद्धिः सहिता विज्ञानमय कोशोभवति

- (a) कर्मेन्द्रियैः (b) ज्ञानेन्द्रियैः
(c) अन्तःकरणैः (d) सूक्ष्मशरीरैः

Ans : (b) वेदान्तसार में तीन कोश का विवेचन किया गया है।

बुद्धि + पञ्च ज्ञानेन्द्रिय = विज्ञानमयकोश - ज्ञानशक्तिकर्तृरूप।

मन + पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ = मनोमयकोश - इच्छाशक्तिकरणरूप।

पञ्च प्राण + पञ्च कर्मेन्द्रियाँ = प्राणमयकोश - क्रियाशक्तिकार्यरूप।

18. अध्यासः

- (a) कार्यरूपः (b) स्मृतिरूपः
(c) कारणरूपः (d) नित्यरूपः

Ans : (b) अध्यासः स्मृतिरूपः।

अर्थात् अध्यास स्मृति रूप होता है।

19. द्रव्य प्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः

- (a) समवायः (b) तादात्म्यम्
(c) संयोगः (d) संयुक्त-समवायः

Ans : (c) अन्नभट्ट के तर्कसङ्ग्रह में लौकिक सन्निकर्ष 6 प्रकार के बताए गये हैं।

(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष

इसमें से द्रव्य के प्रत्यक्ष होने पर संयोग सन्निकर्ष होता है।

20. न्याये कतिपदार्थाः स्वीकृताः

- (a) 7 (b) 4
(c) 9 (d) 16

Ans : (d) न्याये सप्त पदार्थाः स्वीकृताः अर्थात् न्याय में ‘16’ पदार्थों को स्वीकार किया गया है। जो इस प्रकार हैं-प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान आदि।

21. तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं भवति-

- (a) अययार्थ (b) यथार्थः
(c) स्मृतिः (d) विपर्ययः

Ans : (b) अनुभव दो प्रकार का होता है-

(1) यथार्थ अनुभव (2) अययार्थ अनुभव

तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं यथार्थम्।

यथा- रजत में यह चाँदी है ऐसा ज्ञान ही प्रमा है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

22. कार्यनियतपूर्व वृत्तित्वम्

- (a) कारणत्वम् (b) कार्यत्वम्
(c) करणत्वम् (d) अकारणत्वम्

Ans : (a) कारण के लक्षण में “कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वम् कारणत्वम् । अर्थात् कारण कार्य से पहले आता है। कारण को पूर्ववर्ती माना गया है परन्तु सभी पूर्ववर्तियों को कारण नहीं माना गया है। पूर्ववर्ती दो प्रकार का है- नियतपूर्ववर्ती, अनियतपूर्ववर्ती।

23. समीचीनां तालिकां चिनुतः

- (A) संयुक्त-समवेतसमवायः (i) मनस्
(B) विशेषणता (ii) गुणः
(C) समवायः (iii) तमस्
(D) संयोग (iv) घटरूपत्वम्
- | | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| (A) | (B) | (C) | (D) |
| (a) (iv) | (iii) | (ii) | (i) |
| (b) (iv) | (iii) | (i) | (ii) |
| (c) (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (d) (iii) | (ii) | (i) | (iv) |

Ans : (a) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

संयुक्त समवेतसमवायः	- घटरूपत्वम्
विशेषणता	- तमस्
समवायः	- गुणः
संयोगः	- मनस्

24. सम्यग्ज्ञानवान् शरीरं इव धारयति

- (a) मूढवत् (b) चक्रभ्रमिवत्
(c) जडवत् (d) पिशाचवत्

Ans : (b) सम्यग् ज्ञानवान् शरीरं चक्रभ्रमिवत् इव धारयति।

25. यू स्त्र्याख्यौ भवति।

- (a) धि (b) नदी
(c) समासः (d) उपधा

Ans : (b) यूस्त्र्याख्यौ नदी संज्ञा भवति
“यूस्त्र्याख्यौ नदी”= दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।
यथा- गौरी, नदी, वधू, आदि।

26. सर्वनामस्थानसंज्ञाविधायकं सूत्रम्

- (a) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (b) सुडनपुंसकस्य
(c) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ (d) सर्वादीनिसर्वनामानि

Ans : (b) सर्वनामस्थान संज्ञा विधायक सूत्र सुडनपुंसकस्य है। नपुंसकलिङ्ग को छोड़कर अर्थात् पुल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में सुट् अर्थात् सु, औ, जस्, अम्, औट् ये प्रत्ययों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

27. अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः

- (a) उपधा (b) विभाषा
(c) उपसर्गः (d) टि

Ans : (a) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः उपधा संज्ञा भवति। अर्थात् अन्तिम अल् के ठीक पहले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। ‘अलोऽन्त्यापूर्व उपधा’ सूत्र से स्पष्ट है कि अन्तिम अल् (प्रत्याहार) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

28. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

- (a) निष्ठा (i) अपृक्तम्
(b) आत् ऐच् (ii) क्तवत्
(c) ईकारान्तं द्विवचनं (iii) वृद्धिः
(d) एकाल् प्रत्ययः (iv) प्रगृह्यम्

Ans : (c) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है-

निष्ठा	-	क्तवत्
आत् ऐच्	-	वृद्धिः
ईकारान्तं द्विवचनं	-	प्रगृह्यम्
एकाल् प्रत्ययः	-	अपृक्तम्

29. स्वतन्त्रः

- (a) कर्ता (b) करणम्
(c) उत्तमः (d) कारकम्

Ans : (a) कर्तृ संज्ञा विधायक सूत्र “स्वतन्त्रः कर्ता है”। क्रियायां स्वतन्त्रेण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् । क्रिया के उत्पादन में स्वतन्त्र रूप से विवक्षित अर्थ कर्ता होता है।

30. जपमनु प्रावर्षत् अत्र द्वितीया केन सूत्रेण?

- (a) अनुर्लक्षणे (b) कर्मप्रवचनीययुक्ते
(c) कर्मणि द्वितीया (d) लक्षणेत्थंभूताख्यान

Ans : (b) ‘जपमनु प्रावर्षत्’ इस वाक्य में अनु की ‘अनुर्लक्षणे’ सूत्र से कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई और ‘कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया’ सूत्र से जपम् में द्वितीया विभक्ति हुयी है।

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

- (A) ग्रामदायाति (i) आख्यातोपयोगे
(B) पुष्पेभ्यः स्पृहयति (ii) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(C) पुत्रेण सहागतः (iii) स्पृहेरीप्सितः
(D) उपाध्यायादधीते (iv) सहयुक्तेऽप्रधाने
- | | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| (A) | (B) | (C) | (D) |
| (a) (iv) | (iii) | (ii) | (i) |
| (b) (ii) | (iii) | (iv) | (i) |
| (c) (ii) | (iii) | (i) | (iv) |
| (d) (iii) | (iv) | (i) | (ii) |

Ans : (b) सही सुमेलन इस प्रकार है-

ग्रामदायाति	-	ध्रुवमपायेऽपादानम्
पुष्पेभ्यः स्पृहयति	-	स्पृहेरीप्सितः
पुत्रेण सहागतः	-	सहयुक्तेऽप्रधाने
उपाध्यायादधीते	-	आख्यातोपयोगे

32. अधिहरि कः समासः ?

- (a) अव्ययीभावः (b) द्वन्द्वः
(c) कर्मधारयः (d) तत्पुरुषः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) अधिहरि में 'अव्ययीभाव समास' है। "अधिहरि" इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह हरौ इति तथा अलौकिक विग्रह "हरि डि अधि" होगा।

यहाँ अव्ययविभक्ति समीप साकल्यान्त वचनेषु सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

33. अधस्तनानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) कर्मधारयः	(i) पीताम्बरः
(B) अव्ययीभावः	(ii) त्रिभुवनम्
(C) द्विगुः	(iii) निर्मक्षिकम्
(D) बहुव्रीहिः	(iv) कृष्णसर्पः
(A) (B) (C) (D)	
(a) (i) (iii) (ii) (iv)	
(b) (iii) (i) (iv) (ii)	
(c) (ii) (iii) (iv) (i)	
(d) (iv) (iii) (ii) (i)	

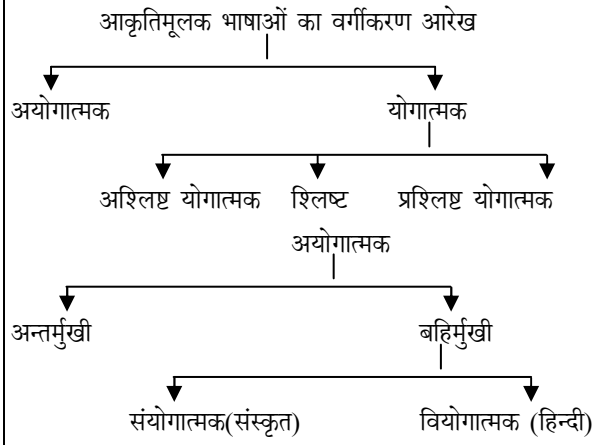
Ans : (d) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

कर्मधारयः	-	कृष्णसर्पः
अव्ययीभावः	-	निर्मक्षिकम्
द्विगुः	-	त्रिभुवनम्
बहुव्रीहिः	-	पीताम्बरः

34. अधो निर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा

(a) संस्कृतम्	(b) ग्रीक्
(c) लेटिन्	(d) हिन्दी

Ans : (d)



35. अधो निर्दिष्टेषु कण्ठ्यवर्णः

(a) ग्	(b) ट्
(c) ज्	(d) इ

Ans : (a) अधोलिखित में से ग् का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

“अकुह्विसर्जनीयानां कण्ठः” अर्थात् अ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ह और विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

36. एतेषु संवृतस्वरः कः?

(a) ए	(b) उ
(c) अ	(d) न

Ans : (c) यत्न दो प्रकार के होते हैं- (1) आभ्यन्तर (2) बाह्य। इनमें से आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार का होता है -(1) स्पृष्ट (2) ईषत्स्पृष्ट (3) ईषत्विवृत (4) विवृत (5) संवृत। इनमें से ह्रस्व 'अ' का प्रयोग दशा में संवृत प्रयत्न होता है किन्तु प्रक्रिया दशा में विवृत ही होता है।

37. 'आपरितोषाद्विदुषां नसाधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' इति वाक्यं वर्तते-

(a) भासस्य	(b) भवभूते
(c) भारवेः	(d) कालिदासस्य

Ans : (d) “ आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्”। अर्थात् जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाए तब तक मैं अपने अभिनय कौशल को सफल नहीं समझता यह अभिज्ञानशाकुन्तलं के प्रथम अंक में वर्णित सूत्रधार का कथन है।

38. 'प्रबोधचन्द्रोदयः' -

(a) चम्पूकाव्यम्	(b) गद्यकाव्यम्
(c) पद्यकाव्यम्	(d) रूपकम्

Ans : (d) प्रबोधचन्द्रोदय की रचना कृष्णमिश्र ने की थी। यह रूपक के भेद नाटक (प्रतीकात्मक) काव्यविधा के है यह 6 अंकों में विभक्त है इसमें अङ्गी रस शान्त है।

39. 'छायाङ्क' अस्मिन् नाटके निबद्धमस्ति-

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले	(b) उत्तररामचरिते
(c) मुद्राराक्षसे	(d) प्रतिमानाटके

Ans : (b) महाकवि भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक में 7 अंक हैं इसके प्रत्येक अंक के नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम अंक	-	चित्रदर्शन
द्वितीय अंक	-	पञ्चवटी प्रवेश
तृतीय अंक	-	छायाङ्क
चतुर्थ अंक	-	कौशल्यजनकयोग
पञ्चम् अंक	-	कुमारविक्रमो
षष्ठम् अंक	-	कुमार प्रत्यभिज्ञान
सप्तम अंक	-	सम्मेलन (गर्भाङ्क)

40. समीचीना तालिकां चिनुत।

(A) ऋतुसंहारम्	(i) चारित्रिकाव्यम्
(B) भजगोविन्दम्	(ii) महाकाव्यम्
(C) राजतरङ्गिणी	(iii) खण्डकाव्यम्
(D) नैषधीयचरितम्	(iv) स्तोत्रकाव्यम्
(A) (B) (C) (D)	
(a) (iv) (i) (iii) (ii)	
(b) (i) (iii) (ii) (iv)	
(c) (iii) (iv) (i) (ii)	
(d) (i) (ii) (iv) (iii)	

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

ऋतुसंहारम्	-	खण्डकाव्यम्
भजगोविन्दम्	-	स्तोत्रकाव्यम्
राजतरङ्गिणी	-	चारित्रिककाव्यम्
नैषधीयचरितम्	-	महाकाव्यम्

41. 'स्तनयुगमश्रुत्वातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥
इति श्लोकः निबद्धः वर्तते-
- (a) रघुवंशे (b) हर्षचरिते
(c) दशकुमारचरिते (d) कादम्बर्या

Ans : (d) स्तनयुगमश्रुत्वातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ।
यह श्लोक महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरिकाथा मुखम् से सम्बन्धित है।

42. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः 'इति वचनं वर्तते
- (a) वनेचरस्य (b) युधिष्ठिरस्य
(c) नारदस्य (d) दौपद्याः

Ans : (a) महाकवि भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' नामक महाकाव्य में 18 सर्ग हैं इसके प्रथम सर्ग में वनेचर द्वारा समस्त वृत्तान्त को बताने के बाद यह पंक्ति कही गयी है- परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां, प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।

43. 'शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इदं वाक्यमस्ति-
- (a) माघे (b) किरातार्जुनीये
(c) नैषधे (d) कुमारसंभवे

Ans : (a) शरीरभाजां भवदीय दर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् । यह कथन महाकवि माघ विरचित 'शिशुपालवधम्' में भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से नारदजी के दर्शन के महत्त्व के सन्दर्भ में कहा गया है।

44. 'मालतीमाधव' नाटकस्य इतिवृत्तं वर्तते-
- (a) प्रसिद्धम् (b) उत्पाद्यम्
(c) कविकल्पितम् (d) चरित्रकम्

Ans : (c) 'मालतीमाधवम्' महाकवि भवभूति का प्रकरण ग्रन्थ है जो 10 अंकों में विभक्त है तथा शृंगार रस प्रधान नाटक है इसका इतिवृत्त कविकल्पित है।

45. 'उपसंहति' नाम

- (a) अवस्थाविशेषः
(b) अर्थोपक्षेपकविशेषः
(c) रूपकविशेषः
(d) सन्धिविशेषः

Ans : (d) नाट्य में 5 सन्धियों का उल्लेख मिलता है- (1) मुख (2) प्रतिमुख (3) गर्भ (4) विमर्श (5) निर्वहण या उपसंहति उपसंहति का लक्षण-"बीजवन्तो मुखाद्यार्था निर्वहण हि तत्।

46. 'चूलिका' तावत्

- (a) अर्थोपक्षेपकः (b) सन्धि
(c) अवस्था (d) रूपकम्

Ans : (a) अर्थोपक्षेपक 5 प्रकार के माने गये हैं-
(1) विष्कम्भक (2) प्रवेशक (3) चूलिका (4) अंकास्य (5) अंकावतार
इनमें से-अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना यह चूलिका का लक्षण है।

47. अद्भुतरसस्य स्थायिभावः भवति-

- (a) हासः (b) उत्साहः
(c) विस्मयः (d) जुगुप्सा

Ans : (c) अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय है तथा वर्ण पीत है और इसके देवता गन्धर्व हैं जो इस श्लोक में निहित है-
अद्भुतो विष्मयस्थायिभावो गन्धर्वदैवतः ।
पीतवर्णो वस्तु लोकातिगानालम्बनं मतम् ॥

48. 'स्मितम्'

- (a) शृङ्गाररसभेदः (b) हास्यरसभेदः
(c) वीररसभेदः (d) शान्तिरसभेदः

Ans : (b) हास्य रस के ये 6 भेद हैं-
(1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) उपहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित
ये 6 हास्य भेद प्रहसन नामक रूपक के भेद में पाये जाते हैं।

49. संकेत कुत्र गृह्यते-

- (a) जाता (b) व्यक्तौ
(c) जातिविशिष्टव्यक्तौ (d) जातिव्यक्त्याकृतिषु

Ans : (c) सङ्केत जातिविशिष्टव्यक्तौ गृह्यते। शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं उसमें से संकेतिक अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा कहलाती है। यह संकेत चतुर्विध उपाधियों में ही मान्य है- ये 4 हैं- जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया।

50. कस्य काव्यलक्षणं खण्डितं विश्वनाथेन?

- (a) मम्मटस्य (b) भामहस्य
(c) राजशेखरस्य (d) दण्डिनः

Ans : (a) आचार्य मम्मट के काव्यलक्षण- "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" का खण्डन आचार्य विश्वनाथ ने किया।
विश्वनाथ का काव्यलक्षण- "वाक्यं रसात्मकं काव्यं" है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2008

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains fifty (50) objective-type questions carrying two (2) marks. Attempt all of them.

नोट : इस प्रश्न पत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहु-वैकल्पिक प्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते।

सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. गोपथब्राह्मणं केन वेदेन साकं सम्बद्धं वर्तते।

- (a) यजुर्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (c) गोपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है इसके कोई भी आरण्यक नहीं हैं। अन्य वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्न हैं-

शतपथ ब्राह्मण	-	शुक्लयजुर्वेद
तैत्तिरीय ब्राह्मण	-	कृष्णयजुर्वेद
ऐतरेय ब्राह्मण	-	ऋग्वेद

2. 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम्।

- (a) इन्द्रस्य (b) सवितुः
(c) अश्विनोः (d) अग्नेः

Ans : (d) अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। अग्नि के विशेषण-गृहपति, विश्वपति, दमूनस्, घृतलोम, दूत कहा गया है और इसे माता, पिता, पुत्र, भ्राता व मनुष्य का मित्र भी कहा गया है।

3. "नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्" इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते।

- (a) यमयमीसंवादे (b) सरमापणिसंवादे
(c) विश्वामित्रनदीसंवादे (d) पुरुरवा-उर्वशीसंवादे

Ans : (b) "नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्"

यह मन्त्रांश ऋग्वेद के दशम मण्डल का 108वाँ सूक्त सरमा पणि संवाद से सम्बद्ध है।

4. वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते?

- (a) हस्तेन (b) मुखेन
(c) पादेन (d) चक्षुषा

Ans : (d) ज्योतिष को वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकार किया गया है।

"ज्योतिषामयनं चक्षुः"

आजकल वेदाङ्ग ज्योतिष नामक एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है इसके दो प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं -

आर्च ज्योतिष	-	ऋग्वेद से सम्बद्ध
यजुष ज्योतिष	-	यजुर्वेद से सम्बद्ध

5. "अन्धं तमः प्रविशन्ति" इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते?

- (a) कठोपनिषदि (b) ईशोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) मुण्डकोपनिषदि

Ans : (b) अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य विद्यायां रताः॥

यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा का 40 वें अध्याय से सम्बद्ध ईशावास्योपनिषद् का है।

6. नैरुक्तमत कति देवताः ?

- (a) तिस्रः (b) पञ्च
(c) चतस्रः (d) षट्

Ans : (a) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में 12 अध्याय तथा 2 अध्याय परिशिष्ट के रूप में हैं, परिशिष्ट सहित कुल 14 अध्याय हैं। इसमें तीन काण्ड हैं- (1) नैघण्टुक (2) नैगम (3) दैवत उसमें से दैवत काण्ड में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है-

- (i) अन्तरिक्ष स्थानीय - इन्द्र, रुद्र, वायु
(ii) पृथ्वी स्थानीय - पृथ्वी, सोम, अग्नि
(iii) द्युस्थानीय - वरुण, मित्र, विष्णु, सवितृ।

7. चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कतिशाखाः?

- (a) षट् (b) सप्त
(c) नव (d) दश

Ans : (c) चरणव्यूह के अनुसार अथर्ववेद की 9 शाखा उपलब्ध थी- पिप्पलाद, तौद (स्तौद), मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श और चारणवैद्य।

अतः स्पष्ट है कि अब विलुप्त हुई मौद शाखा का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। जबकि सामवेद की शाखा कौथुमीयशाखा, राणायनीय, जैमिनीय है।

8. कस्य स्थानस्य देव इन्द्रः?

- (a) द्युस्थानस्य (b) अन्तरिक्षस्थानस्य
(c) अश्विनोः सूक्तस्य (d) अग्निसूक्तस्य

Ans : (b) इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। उसमें निरुक्त के दैवत काण्ड में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है-

- (i) अन्तरिक्ष स्थानीय - इन्द्र, रुद्र, वायु
(ii) पृथ्वी स्थानीय - पृथ्वी, सोम, अग्नि
(iii) द्युस्थानीय - वरुण मित्र, विष्णु, सवितृ

9. सामवेदसम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति-

- (a) दश (b) अष्टौ
(c) पञ्च (d) एकादश

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) सामवेद में 9 ब्राह्मण ग्रन्थ प्राप्त होते हैं लेकिन दिये गये विकल्प के अनुसार 8 ही हैं।

(1) पञ्चविंश (ताड्य)	(2) षड्विंश	(3) छान्दोग्य
(4) सामविधान	(5) आर्षेय	(6) जैमिनीय
(7) वंश	(8) देवता अध्याय	(9) संहितोपनिषद्

10. 'देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती' मंत्रांशोऽयं कुत्र प्राप्तः?

(a) इन्द्रसूक्तस्य	(b) उषस् सूक्तस्य
(c) अश्विनोः सूक्तस्य	(d) अग्निसूक्तस्य

Ans : (b) 'देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती' यह मंत्रांश उषस् सूक्त से सम्बन्धित है।

11. यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्योपयोगः?

(a) कल्पस्य	(b) ज्योतिषस्य
(c) शिक्षायाः	(d) निरुक्तस्य

Ans : (b) यज्ञकाल का निर्धारण के लिए ज्योतिष वेदाङ्ग का उपयोग किया जाता है।

ज्योतिष को वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकार किया गया है।

“ज्योतिषामयं चक्षुः”

आजकल वेदाङ्ग ज्योतिष नामक एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है इसके दो प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं -

आर्च ज्योतिष	-	ऋग्वेद से सम्बद्ध
यजुष ज्योतिष	-	यजुर्वेद से सम्बद्ध

12. अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति

(a) विंशतिः	(b) दश
(c) षट्	(d) अष्टादश

Ans : (a) अथर्ववेद में 20 काण्ड 730 सूक्त लगभग 6000 मंत्र हैं, 'आग्नीष्र' नामक ऋत्विक् ब्रह्मा की गणों में आते हैं अर्थात् अथर्ववेद के ऋत्विक् ब्रह्मा हैं।

13. अध्यासं पण्डिताः इतिमन्यन्ते।

(a) माया	(b) प्रकृतिः
(c) अविद्या	(d) ज्ञानम्

Ans : (a) अध्यासं पण्डिताः माया इति मन्यन्ते।

माया भाव रूप है सत् नहीं उसे भाव रूप कहने से तात्पर्य है कि वह अभाव रूप नहीं है।

14. वेदान्ते 'अथ' शब्दस्य अर्थो भवति-

(a) मङ्गलः	(b) अधिकारः
(c) आनन्तर्यः	(d) निरर्थकः

Ans : (c) वेदान्तसार में 'अथ' आनन्तर्य अर्थ में हुआ है अमरकोष में अथ शब्द के अर्थों को बताया गया है।

(1) मङ्गल, अनन्तर, प्रारम्भ, प्रश्न एवं कात्स्न्य अर्थात् पूर्णता।

15. सदानन्दस्य गुरोः नाम-

(a) आत्मानन्दः	(b) सदानन्दः
(c) रामानन्दः	(d) अद्वयानन्दः

Ans : (d) सदानन्द योगीन्द्र का वेदान्तसार अद्वैतवेदान्त का ग्रन्थ है। अद्वैतवेदान्त का मूलाधार मुख्यतः उपनिषद् एवं श्रुतियाँ हैं। जिन पर महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र आधृत हैं। सदानन्द के गुरु का नाम अद्वयानन्द था।

16. शब्दसाक्षात्कारे सन्निकर्षः।

(a) संयोगः	(b) समवायः
(c) विशेषणता	(d) संयुक्त-विशेषणता

Ans : (b) शब्द के साक्षात्कार होने पर समवायसन्निकर्ष होता है अर्थात् कान से शब्द का प्रत्यक्ष ही समवाय सन्निकर्ष है।

नोट- सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है।

संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय, समवेत समवाय, विशेषणविशेष्यभाव।

17. न्याये स्वीकृतागुणाः -

(a) 12	(b) 20
(c) 25	(d) 24

Ans : (d) न्याय वैशेषिक मतानुसार 24 गुणों को स्वीकार किया गया है।

वे 24 गुण इस प्रकार हैं- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।

18. प्रागभाव प्रतियोगिभवति -

(a) कारणम्	(b) कार्यम्
(c) करणम्	(d) अन्योन्याभावः

Ans : (b) प्रागभाव प्रतियोगि कार्यं भवति। अभाव 4 प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अनोन्याभाव। इसमें से प्रागभाव का प्रतियोगी कार्य होता है। अर्थात् वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का कारण में उसका अभाव। यथा- (मिट्टी में घड़े का अभाव)।

19. अनादि सान्तः भवति -

(a) प्रागभावः	(b) अन्योन्याभावः
(c) ध्वंसाभावः	(d) अव्यन्ताभावः

Ans : (a) अनादिसान्तः प्रागभावः भवति। अर्थात् अनादिसान्त प्रागभाव होता है।

अभाव 4 प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव। इसमें से प्रागभाव का प्रतियोगी कार्य होता है। अर्थात् वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का कारण में उसका अभाव। यथा- (मिट्टी में घड़े का अभाव)।

20. तन्तवः पटस्य भवति।

- | |
|--------------------|
| (a) निमित्त-कारणम् |
| (b) असमवायि-कारणम् |
| (c) समवायिकारणम् |
| (d) सहकारि-कारणम् |

Ans : (c) तर्कसङ्ग्रह में कारण के तीन प्रकार बताए गये हैं- समवायी कारण, असमवायी कारण, निमित्त कारण।

इसमें से तन्तु का पट के बीच समवायी कारण है क्योंकि तन्तु पट में समवाय सम्बन्ध से रहता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

21. सांख्यानुसारं प्रकृतिः..... इव।

- (a) माता (b) गृहिणी
(c) सुता (d) नर्तकी

Ans : (d) प्रकृति को नर्तकी कहा गया है। सांख्यकारिका में 25 तत्त्वों की विवेचना की गई है जिसमें कुछ पदार्थ प्रकृति तथा कुछ विकृति रूप में एवं कुछ दोनों रूपों में प्राप्त होते हैं, जिसमें प्रकृति को जड़ माना गया है और अन्धी की संज्ञा दी गई और जब इसका पुरुष से संयोग होता है तो वह चेतनावती हो जाती है इन दोनों के संयोग को ही 'पङ्गवन्धवत्' की संज्ञा दी गई है।

22. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) आत्मा	(i) गुणः
(B) शब्द	(ii) अभावः
(C) तमस्	(iii) द्रव्यम्
(D) परत्व	(iv) जातिः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b) (i)	(iii)	(ii)	(iv)
(c) (iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans : (c) सही तालिका इस प्रकार है-

आत्मा	-	द्रव्यम्
शब्दः	-	गुणः
तमस्	-	अभावः
परत्वम्	-	जातिः

23. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) विश्वनाथः	(i) अर्थसंग्रहः
(B) अन्नभट्टः	(ii) सांख्यकारिका
(C) ईश्वरकृष्णः	(iii) तर्कसंग्रहः
(D) लौगाक्षिभास्करः	(iv) कारिकावली
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b) (i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d) (iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (a) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

विश्वनाथः	-	कारिकावली
अन्नभट्टः	-	तर्कसङ्ग्रह
ईश्वरकृष्णः	-	सांख्यकारिका
लौगाक्षिभास्कर	-	अर्थसङ्ग्रह

24. सदानन्दमतेन ब्रह्म इति।

- (a) ज्ञानम् (b) विज्ञानम्
(c) अवस्तु (d) वस्तु

Ans : (d) सदानन्द योगीन्द्र मतानुसार ब्रह्म वस्तु है।
वस्तुः सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।
अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।

25. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संज्ञः स्यात् ।

- (a) प्रातिपदिकम् (b) नदी
(c) संहिता (d) उपसर्जनम्

Ans : (c) "परः सन्निकर्षः संहिता" अर्थात् वर्णों के अतिशय सामीप्य की संहिता सञ्ज्ञा होती है।

जैसे- सुधी + उपास्यः

इसमें सुधी के ईकार और उपास्य के उकार के अत्यधिक सामीप्य के कारण यहाँ संहिता संज्ञा हुई है। जबकि "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्" सूत्र से धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त के अतिरिक्त कोई भी शब्द जो अर्थयुक्त हो, वह प्रातिपदिक होता है। "शेषो घ्यसखि" सूत्र से घि संज्ञा "अलोऽन्त्यातपूर्व उपधा" सूत्र से उपधा संज्ञा और "क्तवतू निष्ठा" से निष्ठा संज्ञा होती है।

26. सखिभिन्नस्य इवर्णोवर्णान्तस्य संज्ञा।

- (a) नदी (b) निष्ठा
(c) कृत् (d) घि

Ans : (d) "शेषो घ्यसखि" सूत्र के अनुसार सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा हो। यथा- हरि, रवि आदि।

27. निषेधविकल्पयोः संज्ञा।

- (a) उपधा (b) विभाषा
(c) परिभाषा (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (b) विभाषा संज्ञा विधायक सूत्र "न वेति विभाषा" निषेध विकल्पयोर्विभाषा संज्ञा स्यात् । अर्थात् निषेध और विकल्प को विभाषा कहा जाता है।

28. ईदूदेदन्तं द्विवचनं

- (a) प्रकृतिभावः (b) निष्ठ
(c) प्रगृह्यम् (d) विभाषा

Ans : (c) प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र "ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्" अर्थात् ई, ऊ, ए जिनके अन्त में हो ऐसे द्विवचन पदों की संज्ञा प्रगृह्य होती है-

यथा- हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू

29. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) क्तवतू	(i) सवर्णम्
(B) तुल्यास्यप्रयत्नं	(ii) गुणः
(C) अदेड	(iii) टि
(D) अचोऽन्त्यादि	(iv) निष्ठा
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b) (iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c) (i)	(iv)	(iii)	(ii)
(d) (iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans : (b) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है-

क्तवतू	-	निष्ठा
तुल्यास्यप्रयत्नं	-	सवर्णम्
अदेड	-	गुणः
अचोऽन्त्यादि	-	टि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

30. अपादानादिविशेषैः अविवक्षितं कारकं

- (a) अपादानम् (b) कर्म
(c) करणम् (d) किमपि न

Ans : (b) 'अकथितं च' सूत्र यह विधान करता है कि "अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्म संज्ञं स्यात्" अर्थात् जब कारक की अपादान इत्यादि विशेष संज्ञा न करनी हो तो उसकी कर्म संज्ञा होती है।

31. क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं

- (a) करणम् (b) अपादानम्
(c) तादर्थ्यम् (d) उपकारकम्

Ans : (a) "साधकतमं करणम्" क्रिया सिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात् । अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसकी करण संज्ञा होती है।

32. जटाभिः तापसः - अत्र तृतीया केन सूत्रेण?

- (a) कर्तृकरणयोस्तृतीया (b) इत्थंभूतलक्षणे
(c) येनाङ्गविकारः (d) हेतौ

Ans : (b) "जटाभिः तापसः" यहाँ तृतीया विभक्ति "इत्थंभूतलक्षणे" सूत्र से हुआ है। जब कोई चिह्नविशेष से पहचाना जाता है तो उस चिह्न विशेष में तृतीया विभक्ति होती है।

33. सर्पिषः ज्ञानम् अत्र षष्ठी केन सूत्रेण?

- (a) ज्ञोऽविदर्थस्य करणे
(b) षष्ठी शेषे
(c) अधीगर्थदयेशां कर्मणि
(d) कर्तृकर्मणोः कृति

Ans : (a) "सर्पिषो ज्ञानम्" यह "ज्ञोऽविदर्थस्य करणे" का उदाहरण है। नोट - ज्ञानेतज्ञानार्थस्य करणे शेषत्वेन विवक्षिते षष्ठी स्यात् । अर्थात् ज्ञानभिन्नार्थक ज्ञा धातु के करण में षष्ठी होती है।

34. अधो निर्दिष्टेषु तालव्यवर्णः

- (a) ज् (b) ख्
(c) झ् (d) म्

Ans : (a) दिए गये विकल्पों में ज् का उच्चारण स्थान तालु है। "इचुयशानां तालुः" अर्थात् -इ च् छ् ज् झ् य् और श् का उच्चारण स्थान तालु होता है।

35. अधो निर्दिष्टेषु संयोगात्मकभाषा

- (a) अंग्रेजी (b) संस्कृतम्
(c) हिन्दी (d) बंगाल

Ans : (b) दिए गये विकल्पों में संयोगात्मक भाषा संस्कृत है। योगात्मक भाषाएं उनको कहते हैं जिनमें प्रकृति प्रत्यय सम्बन्ध तत्त्व का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है योगात्मक भाषाएँ कहलाती हैं।

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) सहरि	(i) तत्पुरुषः
(B) कण्ठेकालः	(ii) द्वन्द्वः
(C) पाणिपादम्	(iii) अव्ययीभावः
(D) अनश्वः	(iv) बहुव्रीहिः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c) (ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d) (iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (d) सहरि - अव्ययीभाव समास
कण्ठेकालः - बहुव्रीहिः
पाणिपादम् - द्वन्द्व समास
अनश्वः - नञ् तत्पुरुष समास

37. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' इति वाक्यं वर्तते-

- (a) भर्तृहरेः (b) भासस्य
(c) कालिदासस्य (d) भवभूतेः

Ans : (c) असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा, यदार्थमस्यामभिलाषि मे मनः सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणन्तःकरणप्रवृत्तयः। यह श्लोक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का है। यह महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध नाटक है, यह 7 अंकों में विभक्त है।

38. 'मथुराविजयम्' नाम काव्यं अन्तर्भवति-

- (a) लघुकाव्येषु (b) चारित्रिककाव्येषु
(c) गद्यकाव्येषु (d) तोत्रकाव्येषु

Ans : (b) "मथुराविजयम्" नामक काव्य चारित्रिककाव्येषु अन्तर्भवति।

39. वरतन्तुशिष्यस्य कुत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते-

- (a) कुमारसंभवे (b) रघुवंशे
(c) माघे (d) किराजार्जुनीये

Ans : (b) वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तं रघुवंशमहाकाव्ये निबद्धं वर्तते। अर्थात् वरतन्तु के शिष्य कौत्स का वृत्तान्त 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में वर्णित है। यह काव्य 19 सर्गों में विभक्त है।

40. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) मुरारिः	(i) मुद्राराक्षसम्
(B) शूद्रक	(ii) प्रतिमानाटकम्
(C) भास	(iii) मृच्छकटिकम्
(D) विशाखदत्तः	(iv) अनर्घराघवम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b) (iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c) (ii)	(i)	(iv)	(iii)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

मुरारि:	-	अनर्घराघवम्
शूद्रक:	-	मृच्छकटिकम्
विशाखदत्त:	-	मुद्राराक्षसम्
भास:	-	प्रतिमानाटकम्

41. अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति वाक्यं भवति-

- (a) भरतस्य (b) दुष्यन्तस्य
(c) युधिष्ठिरस्य (d) रघोः

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक में राजा द्वारा कहा गया कि पर स्त्री की ओर ध्यान से देखना उचित नहीं है "अनिर्वर्णनीयम् परकलत्रम्"

42. मुद्राराक्षसनाटकस्य कथावस्तु भवति-

- (a) प्रसिद्धम् (b) उत्पादयम्
(c) कविकल्पितम् (d) चरित्रकम्

Ans : (a) विशाखदत्त द्वारा रचित "मुद्राराक्षसम्" संस्कृत साहित्य का अद्वितीय नाटक है। यह 7 अंकों में विभक्त है। यह वीर रस प्रधान नाटक है एवं इसके नायक चाणक्य तथा प्रतिनायक राक्षस है। कृतककोपवृत्तान्त का उल्लेख इसी नाटक में है। यह इतिहास प्रसिद्ध है।

43. 'प्राप्त्याशा' नाम -

- (a) सन्धिविशेषः
(b) अवस्थाविशेषः
(c) रूपकविशेषः
(d) अनुभावविशेषः

Ans : (b) दशरूपकम् में 5 कार्यावस्थाओं का उल्लेख है- आरम्भ, यत्न, प्रप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम। इसमें से प्राप्त्याशा का लक्षण किया जा रहा है- उपायोपायशंकाभ्याम् प्राप्त्याशा प्राप्ति सम्भव अतः विकल्प B सही है। आते हैं।

44. अश्वघोषस्य कृतिरियम् -

- (a) हर्षचरितम् (b) नलचरितम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) बुद्धचरितम्

Ans : (d) अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बुद्धचरित नामक महाकाव्य की रचना की इसमें अङ्गी रस शान्त है इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है।

45. करुणरसस्य स्थायिभावः कः?

- (a) शोकः (b) शमः
(c) हासः (d) उत्साहः

Ans : (a) करुण रस का स्थायी भाव शोक है इसका वर्ण कपोतवर्ण है एवं इसके देवता यम हैं।

46. पताकाप्रकरीभेदात् द्विधा भवति-

- (a) प्राकरणिकम् (b) प्रासङ्गिकम्
(c) प्रधानम् (d) चरित्रकम्

Ans : (b) कथावस्तु दो प्रकार का होता है-

(1) आधिकारिक कथावस्तु (2) प्रासंगिक कथावस्तु
इसमें से प्रासङ्गिक कथावस्तु दो प्रकार का होता है।

(1) पताका

अनुबन्ध सहित दूर तक चलने वाली पताका है।

(2) प्रकरी

एक देश में रहने वाली प्रकरी है।

47. हास्यरसप्रभेदाः सन्ति-

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (d) हास्य रस के 6 प्रकार हैं- स्मित, हसित, विहसित, उपहसित, अपहसित, अतिहसित।

ये प्रायः प्रहसन नामक रूपक के भेद में प्राप्त होते हैं।

48. अर्थोपक्षेपकाः उपयुज्यन्ते-

- (a) रूपकेषु (b) काव्येषु
(c) प्रकरणग्रन्थेषु (d) धर्मशास्त्रेषु

Ans : (a) अर्थोपक्षेपकाः रूपकेषु उपयुज्यन्ते।

अर्थोपक्षेपक पाँच प्रकार का होता है - (1) विष्कम्भक (2) प्रवेशक (3) चूलिका (4) अङ्कस्य (5) अङ्कावतार
इन पाँचों के द्वारा सूच्य वस्तु का प्रतिपादन करना चाहिए।

49. 'गौर्वाहीकः' इत्युदाहरणं-

- (a) जहल्लक्षणायाः
(b) अजहल्लक्षणायाः
(c) सारोपालक्षणायाः
(d) साध्यससानालक्षणायाः

Ans : (c) आचार्य मम्मट ने लक्षणा के 6 भेद माने हैं लक्षणा तेन षड्विधा - पहले लक्षणा के शुद्धा और गौणी दो भेद पुनः शुद्धा लक्षणा के दो भेद- उपादानलक्षणा, लक्षणलक्षणा। गौर्वाहीकः यह सारोपा लक्षणा का उदाहरण है।

50. तात्पर्याथमङ्गीकुर्वन्ति -

- (a) अन्विताभिधानवादिनः
(b) अभिहितान्वयवादिनः
(c) नरुक्तिकाः
(d) शब्दब्रह्मवादिनः

Ans : (b) तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् अर्थात् पार्थसारथि मिश्र आदि अभिहितान्वयवादी मीमांसको के मत में तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का तात्पर्यार्थ भी होता है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2009

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्' इत्यस्ति:

- (a) अग्निकर्म (b) विष्णुकर्म
(c) रुद्रकर्म (d) इन्द्रकर्म

Ans : (a) 'आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्' यह कर्म अग्नि का है अग्नि देवताओं को बुलाता है तथा हवि को वहन करने वाला है। यह प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त अग्निसूक्त से लिया गया है।

'अग्निर्होता कविवतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवोभिरागमत् ।'

2. 'रसानुप्रदानं वृत्रवधः' इत्यस्ति :

- (a) बृहस्पतिकर्म (b) रुद्रकर्म
(c) सवितृकर्म (d) इन्द्रकर्म

Ans : (d) 'रसानुप्रदानं वृत्रवधः' कर्म इन्द्र का है- इन्द्र ने ही वृत्र या अहि को मारकर सात नदियों को प्रवाहित किया था। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वाँ सूक्त इन्द्र सूक्त है इसके तृतीय मन्त्र में यह प्राप्त होता है।

'यो हत्वाहि मरिणात्सप्त सिन्धू -योगा उदाजदपधा वलस्य।'
.....सजनास इन्द्रः 12/12/31

3. काण्वसंहिता वर्तते :

- (a) कृष्णयजुर्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) शुक्लयजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (c) काण्वसंहिताशुक्लयजुर्वेदस्य वर्तते। शुक्लयजुर्वेद की दो संहिताएँ प्रसिद्ध हैं (1) काण्वसंहिता तथा (2) वाजसनेयिसंहिता या माध्यन्दिनसंहिता। कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय, कठ, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल संहिता प्रसिद्ध हैं, सामवेद की जैमिनीय तथा राणायनीय संहिता अथर्ववेद की पैप्पलाद तथा शौनकीयसंहिता प्रसिद्ध हैं।

4. संख्यया स्वराङ्कनं भवति :

- (A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे

Ans : (b) सामवेद में संख्या के द्वारा स्वराङ्कन होता है जबकि यजुर्वेद में हाँथ के द्वारा स्वराङ्कन होता है इसी प्रकार से ऋग्वेद में भी हाँथ से ही स्वराङ्कन होता है।

5. 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' वर्तते :

- (A) ईशोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

Ans : (c) 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः', यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि, धर्मं चर, सत्यं वद इत्यादि वाक्य तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित हैं।

6. 'पुरुरवा उर्वशी' -संवादो वर्तते :

- (a) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(b) अथर्ववेदस्य नवमकाण्डे
(c) शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डे
(d) यजुर्वेदस्य पञ्चदशाध्याये

Ans : (a) पुरुरवा तथा उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त में वर्णित हैं इसमें कुल 18 मन्त्र हैं इसमें पुरुरवा तथा उर्वशी की प्रेमकथा वर्णित है, पुरुरवा एक मनुष्य है तथा उर्वशी एक अप्सरा है।

7. सरमापाणिसूक्तस्य छन्दो वर्तते :

- (a) त्रिष्टुप् (b) जगती
(c) बृहती (d) विराड्गायत्री

Ans : (a) सरमापणि संवाद सूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 108वाँ सूक्त है इसमें त्रिष्टुप् छन्द है। और स्वर दैवत है।

8. बालगङ्गाधर तिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्व वर्तते:

- (a) 6000 (b) 8000
(c) 2500 (d) 3500

Ans : (a) बालगङ्गाधर तिलक ने ज्योतिषगणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6000 ई.पू. से 4000 ई.पू. स्वीकार किया है। जैकोबी 4500 ई.पू. स्वीकार करते हैं। मैकडोनाल्ड ऋग्वेद का रचनाकाल 1300 ई.पू. मानते हैं तथा मैक्समूलर ऋग्वेद का रचनाकाल 1200ई.पू. स्वीकार करते हैं।

9. माध्यन्दिनीयसंहितायामुदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति :

- (a) अधः (b) उपरिष्ठात्
(c) तिर्यक् (d) किमपि न

Ans : (d) शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता में उदात्त स्वर अनङ्कित होता है। अनुदात्त स्वर वर्ण के नीचे प्रदर्शित रहता है तथा स्वरित स्वर वर्ण के ऊपर अंकित रहता है जैसे -

उदात्त = क

अनुदात्त = क

स्वरित = क

10. मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते :

- (a) ऋग्वेदे (b) कृष्णयजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (b) मन्त्र तथा ब्राह्मण दोनों का मिला हुआ भाग कृष्ण यजुर्वेद कहलाता है जबकि ऋग्वेद में मन्त्रों का संकलन है तथा सामवेद में उन ऋग्वेदीय संकलित मन्त्रों का गान है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

11. शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते :

- (a) 1975 (b) 2000
(c) 1852 (d) 1900

Ans : (a) शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता में 1975 मन्त्र हैं। माध्यन्दिन संहिता या वाजसनेयिसंहिता तथा काण्वसंहिता शुक्लयजुर्वेद की संहिताएँ हैं।

12. शिक्षाग्रन्थेषु प्रतिपाद्यते :

- (a) वेदार्थनिर्णयधर्मः (b) कालज्ञानम्
(c) उच्चारणधर्मः (d) शब्दसाधुत्वम्

Ans : (c) शिक्षा ग्रन्थ प्रत्येक वेदों को जानने के लिये साधन हैं इसे प्रातिसाख्य ग्रन्थ भी कहा जाता है इसमें वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान ये शिक्षा नाम से कहे जाते हैं। जैसे ऋग्वेद का ऋक् प्रातिसाख्य है।

13. सत्कार्यवादे उत्पत्तेः पूर्व कार्य भवति:

- (a) सदसत् (b) अव्यक्तरूपेण सत्
(c) उभयरूपेण सत् (d) व्यक्तरूपेण सत्

Ans : (b) सांख्यदर्शन सत्कार्यवाद को स्वीकार करता है। कार्य उत्पत्ति के पूर्व दृष्ट न होने से भी सत् है तथा उत्पत्ति के पश्चात् भी सत् हो जाता है अतः उत्पत्ति पूर्व भी कार्य सत् रहता है इसलिये इसे अव्यक्तरूपेण सत् कहा जाता है। जैसे- तिल से तेल निकलता है तो पहले से तिल में तेल विद्यमान था।

14. सांख्यदर्शने पृथिव्याः प्रादुर्भावः अस्ति:

- (a) रसतन्मात्रात् (b) गन्धतन्मात्रात्
(c) शब्दतन्मात्रात् (d) स्पर्शतन्मात्रात्

Ans : (b) सांख्यदर्शन में पृथ्वी की उत्पत्ति गन्धतन्मात्रा से होती है। पञ्चतन्मात्रों से क्रमशः पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति होती है, जैसे- शब्द तन्मात्रा से आकाश, रूपतन्मात्रा से तेज, रसतन्मात्रा से जल, स्पर्शतन्मात्रा से वायु तथा गन्धतन्मात्रा से पृथ्वी का प्रादुर्भाव होता है।

15. त्रिविधं प्रमाणं विद्यते :

- (a) न्यायदर्शने (b) वेदान्तदर्शने
(c) मीमांसादर्शने (d) सांख्यदर्शने

Ans : (d) सांख्यदर्शन में तीन प्रमाणों को स्वीकार किया गया है- प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण तथा आप्त प्रमाण।

‘त्रिविधं प्रमाणमिदं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणसिद्धिः’

न्याय में चार प्रमाणों को तथा मीमांसा एवं वेदान्त में छः प्रमाणों को स्वीकार किया गया है।

16. त्रिकालमाध्यन्तरं करणम् :

- (a) सदानन्दमते (b) केशवमिश्रमते
(c) ईश्वरकृष्णमते (d) जैमिनिमते

Ans : (c) ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारका के 33वें कारिका में ‘त्रिकालमाध्यन्तरं करणम्’ का वर्णन मिलता है।

17. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् :

- (a) जीवब्रह्मैक्यम् (b) जीव एव पुरुषः
(c) जीव एव अज्ञानम् (d) जीव एव ईश्वरः

Ans : (a) अद्वैत वेदान्त में चार अनुबन्ध बताये गये हैं (1) अधिकारी (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन। इस शास्त्र का विषय जीव तथा ब्रह्म की एकता है जो शुद्ध, बुद्ध, नित्य तथा ब्रह्मस्वरूप है एवं शुद्ध चैतन्य है।

18. अध्यारोपलक्षणमस्ति :

- (a) जीवेब्रह्मआरोपः (b) अवस्तुनिवस्त्वारोपः
(c) वस्तुनि अवस्त्वावरोप (d) न किमपि

Ans : (c) वस्तुन्यवस्त्वारोपः अध्यारोपः। अर्थात् जीव जिस प्रकार से बँधता है वह प्रक्रिया अध्यारोप है तथा जिस प्रक्रिया से मुक्त होता है वह अपवाद है। वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है जैसे रज्जु में सर्प को आरोपित करना ही अध्यारोप है तथा रज्जु में सर्प का भ्रम दूर होना अपवाद है।

19. अनुबन्धः अस्ति :

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (c) वेदान्तसार में चार प्रकार के अनुबन्ध बताये गये हैं (1) अधिकारी, (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन। साधन चतुष्टय सम्पन्न अधिकारी होता है, जीव तथा ब्रह्म का ऐक्य विषय है, बोध्यबोधक भाव सम्बन्ध है तथा अज्ञान की निवृत्ति ही प्रयोजन है।

20. सदसदभ्याम् अनिर्वचनीयमस्ति:

- (a) ज्ञानम् (b) ज्ञानाज्ञाने
(c) अज्ञानम् (d) न किमपि

Ans : (c) अज्ञान को वेदान्तसार में अनिर्वचनीय कहा गया है। अनिर्वचनीय अर्थात् कुछ कहा नहीं जा सकता। यह अज्ञान दृष्ट होने से व्यवहार में सत् है तथा जब इस अज्ञान की निवृत्ति हो जाती है तो यह असत् हो जाता है अर्थात् पारमार्थिक सत्ता में यह असत् है। इसी अज्ञान से ही सृष्टि होती है।

21. न्यायदर्शने प्रमाणानि सन्ति:

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्यायदर्शन में चार प्रमाणों को स्वीकार किया गया है। (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द प्रमाण।

‘प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदाच्चतुर्विधम्’

22. ‘गगनारविन्दं सुरभि’ अत्र कः हेत्वाभासः?

- (a) आश्रयसिद्धः (b) स्वरूपासिद्धः
(c) व्याप्यत्वासिद्धः (d) विरुद्धः

Ans : (a) न्यायदर्शन में पाँच प्रकार के हेत्वाभास कहे गये हैं ये हेतु नहीं होते अपितु हेतु की भाँति भासित होते हैं ‘हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः’।

(1) असिद्ध (2) अनैकान्तिक (3) विरुद्ध (4) प्रकरणसम् (5) कालात्ययापदिष्ट ये पाँच भेद हैं। इनमें से असिद्ध हेत्वाभास 3 प्रकार का होता है (क) आश्रयासिद्ध (ख) स्वरूपासिद्ध (ग) व्याप्यत्वासिद्ध। गगनारविन्दे सुरभि अरविंदत्वात् सरोजारविन्दवत् यह आश्रयासिद्ध का उदाहरण है।

23. न्यायानुसारं प्रमेयाः सन्ति:

- (a) दश (b) एकादश
(c) द्वादश (d) त्रयोदश

Ans : (c) न्यायमत के अनुसार प्रमेय 12 हैं। ‘आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धि मनः प्रवृत्तिदोषभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्।

(1) आत्मा (2) शरीर (3) इन्द्रिय (4) अर्थ (5) बुद्धि (6) मन (7) प्रवृत्ति (8) दोष (9) प्रत्यभाव (10) फल (11) दुःख (12) अपवर्ग।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

24. वेमादिकं पटस्य अस्ति :

- (a) समवायिकारणम् (b) असमवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) किमपि न

Ans : (c) न्याय दर्शन में तीन कारण बताये गये हैं समवायि कारण जैसे- पट का समवायि कारण तन्तु है, असमवायिकारण जैसे- तन्तु संयोग पट का असमवायिकारण है तथा तुरी वेमादि पट के प्रति निमित्त कारण होते हैं।

25. एकाल्प्रत्ययः

- (a) कृत् (b) सन्
(c) अपृक्तम् (d) तिङ्

Ans : (c) एकाल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्तसंज्ञक होता है अर्थात् उसकी अपृक्तसंज्ञा होती है। जैसे सु प्रत्यय में स् की अपृक्त संज्ञा होती है यह 'अपृक्तं एकाल् प्रत्ययः' (1/2/41) सूत्र से होता है।

26. क्तक्तवतू किमुच्यते :

- (a) गतिः (b) निष्ठा
(c) गुणः (d) सवर्णम्

Ans : (b) क्त तथा क्तवतू की निष्ठा संज्ञा होती है यह भूतकाल में सभी धातुओं से होते हैं इसका सूत्र है 'क्तक्तवतू निष्ठा' (1/1/26) जैसे कृतः, पठितः, कृतवान्, पठितवान् इत्यादि।

27. विभाषायाः किं लक्षणम्?

- (a) सुप्तिङन्तम् (b) सामर्थ्यम्
(c) परःसन्निकर्षः (d) नवेति

Ans : (d) 'नवेति विभाषा' - (1/1/44) न, तथा वा शब्द के अर्थ की विभाषा संज्ञा होती है अर्थात् विभाषा का अर्थ विकल्प से होता है। जहाँ पर विकल्प से होने और न होने दोनों की सम्भावना रहती है वहाँ पर विभाषा संज्ञा होती है।

28. नदीसंज्ञया उल्लिख्येते :

- (a) ण्वुल्तुचौ (b) स्वौ
(c) उडयो (d) यूस्त्र्याख्यौ

Ans : (d) 'यूस्त्र्याख्यौ नदी' - नित्य स्त्रीलिङ्ग दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द नदीसंज्ञक होते हैं जैसे- बहुश्रेयसी।

29. अदेङ् इत्यस्य का संज्ञा :

- (a) भ (b) टि
(c) गुणः (d) घु

Ans : (c) 'अदेङ् गुणः' सूत्र के अनुसार अत् एङ् गुण संज्ञक होते हैं। अर्थात् अ, ए, और ओ की गुण संज्ञा होती है।

30. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) प्रातिपदिकम्	(i) आदैच्
(B) वृद्धिः	(ii) सुप्तिङन्तम्
(C) पदम्	(iii) अचोऽन्त्यादि
(D) टि	(iv) अर्थवदधातुरप्रत्ययः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b) (iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c) (iv)	(i)	(ii)	(iii)
(d) (i)	(iv)	(iii)	(ii)

Ans : (c) अर्थवदधातुरप्रत्ययः - प्रातिपदिकम्
वृद्धिः - आदैच्
सुप्तिङन्तम् - पदम्
अचोऽन्त्यादि - टि

31. साधकतमं कारकं किमुच्यते :

- (a) कर्म (b) अधिकरणम्
(c) करणम् (d) अपादानम्

Ans : (c) साधकतम कारक की करण संज्ञा होती है। 'साधकतमं करणम्' = क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट रूप से उपकारक करण कहलाता है।

32. 'अन्तर्धी येनादर्शनमिच्छति' अत्र का विभक्तिः

- (a) द्वितीया (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

Ans : (b) 'अन्तर्धी येनादर्शनमिच्छति' (1/4/28) इस सूत्र के द्वारा- जब कोई अपने को किसी से छिपाता है तो जिससे छिपाता है वह अपादान होता है जैसे 'मातुर्निलीयते कृष्णः'। यहाँ पर कृष्ण अपने को माता से छिपाता है इसलिए माता में अपादान कारक हुआ है।

33. संख्यापूर्वः कः समासः?

- (a) केवलः (b) तत्पुरुषः
(c) द्विगुः (d) बहुव्रीहिः

Ans : (c) संख्यापूर्वो द्विगुः (2/1/52) इस सूत्र से तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च सूत्र में कथित त्रिविध समास में यदि संख्यावाचक शब्द पूर्व पद में हो तो ऐसे समास की द्विगु संज्ञा होती है।

34. उपकृष्णाम् इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते :

- (a) कृष्णस्य सादृश्यम् (b) कृष्णस्य पश्चात्
(c) कृष्णस्य समीपम् (d) कृष्णं प्रति

Ans : (c) उपकृष्णाम् का लौकिक विग्रह 'कृष्णस्य समीपम्' है तथा अलौकिक विग्रह कृष्ण डस् उप है। यहाँ पर समीप अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ है।

35. अकुहविसर्जनीयानाम् उच्चारणस्थानं किम्?

- (a) मूर्धा (b) ओष्ठः
(c) कण्ठः (d) तालु

Ans : (c) अकुहविसर्जनीयानाम् - कण्ठः
इचुयशानाम् - तालुः
ऋटुरषाणाम् - मूर्धा
उपूषध्मानीयानाम् - ओष्ठौ

36. मूर्धन्यो भवति :

- (a) प् (b) ङ् (c) ल् (d) ल्

Ans : (b) ङकार का उच्चारण मूर्धा से होता है। ऋ ङ् ङ् ङ् ङ् ङ् तथा ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है। 'ऋटुरषाणां मूर्धा'।

37. यरलवाः वर्णाः

- (a) स्पृष्टा (b) अन्तःस्थाः
(c) ईषत्स्पृष्टा (d) अनुनासिकाः

Ans : (b) य् व् र् ल् अन्तस्थ कहे जाते हैं।
क् से म् तक वर्ण स्पृष्ट कहे जाते हैं।
ज् म् ङ् ण् न् वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।
स् ष् श् तथा ह् वर्ण ईषत्स्पृष्ट कहे जाते हैं।

38. हितोपदेशस्य रचयिता अस्ति :

- (a) नारायणः (b) विष्णुशर्मा
(c) दण्डी (d) बाण

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) हितोपदेश के रचयिता नारायण पण्डित कहे जाते हैं। जबकि विष्णुशर्मा पञ्चतन्त्र के, दण्डी -दशकुमारचरितम् के एवं बाण कादम्बरी तथा हर्षचरितम् के रचयिता हैं।

39. नाटकस्य उदाहरणं भवति :

- (a) मृच्छकटिकम् (b) मालतीमाधवम्
(c) वेणीसंहारः (d) त्रिपुरविजयः

Ans : (c) वेणीसंहार छः अंक का नाटक है। मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ है इसमें 10 अंक हैं तथा मालतीमाधवम् भवभूति का 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है।

40. प्रतिमानाटकस्य रचयिता वर्तते :

- (a) कालिदासः (b) भवभूतिः
(c) भट्टनारायणः (d) भासः

Ans : (d) प्रतिमानाटक के रचयिता भास हैं यह 7 अंकों का नाटक ग्रन्थ है। इसकी कथा रामायण से ली गयी है। भास ने कुल 13 नाटक लिखे हैं।

41. 'अज्ञातहृदयेष्वेवं' वैरीभवति सौहृदम् इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते -

- (a) भारविः (b) कालिदासः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

Ans : (b) अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्
यह वाक्य महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् से उद्धृत है। कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध है यथा -
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।

42. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' इत्युक्तं :

- (a) कुन्तकेन (b) जगन्नाथेन
(c) आनन्दवर्धनेन (d) मम्मटेन

Ans : (b) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह उक्ति आचार्य जगन्नाथ की है रमणीय अर्थ अर्थात् मनोहर अर्थ को प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य है। इसी प्रकार मम्मट ने काव्य का लक्षण किया है- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'।

43. आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं काव्यस्यात्मा भवति:

- (a) ध्वनिः (b) रसः
(c) रीतिः (d) अलङ्कारः

Ans : (a) आचार्य आनन्दवर्धन काव्य की आत्मा के रूप में ध्वनि को स्वीकार किये हैं। विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा माना है, वामन ने रीति को काव्य की आत्मा कहा है, भामह, दण्डी आदि आचार्यों ने अलङ्कार को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है।

44. करुणरसस्य स्थायी भावः वर्तते :

- (a) भयम् (b) क्रोधः
(c) जुगुप्सा (d) शोकः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक है जबकि भयानक रस का स्थायी भाव भय है, रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है तथा वीररस रस का स्थायीभाव जुगुप्सा है।

45. 'मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः'

इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्योदाहरणं भवति :

- (a) उपमालङ्कारस्य (b) दीपकालङ्कारस्य
(c) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य (d) दृष्टान्तालङ्कारस्य

Ans : (d) 'मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः' जिस प्रकार से हाथी का मदमत्त बच्चा प्रतापी होता है उसी प्रकार प्रताप से राजा शोभित हो रहे हैं इसमें दृष्टान्त अलंकार है। 'दृष्टान्त तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बिनम्' यहाँ पर प्रताप रूप धर्म राजा में प्रतिबिम्बित हो रहा है।

46. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति प्रतिपादितम् :

- (a) रुय्यकेन (b) रुद्रटेन
(c) भामहेन (d) वामनेन

Ans : (d) आचार्य वामन रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं सौन्दर्य को अलङ्कार मानते हैं वामन इस अलङ्कार शास्त्र को सौन्दर्य शास्त्र के रूप में देखते हैं।

47. विश्वनाथः अस्ति :

- (a) रसवादी (b) अलङ्कारवादी
(c) ध्वनिवादी (d) वक्रोक्तिवादी

Ans : (a) आचार्य विश्वनाथ रसवादी कवि के रूप में जाने जाते हैं इनके अनुसार काव्य की आत्मा रस है। वाक्यं रसात्मकं काव्यम् जबकि भामह आदि अलंकारवादी हैं, आनन्दवर्धन ध्वनिवादी हैं कुन्तक वक्रोक्तिवादी हैं।

48. भरतेनोक्ताः अलङ्काराः सन्ति :

- (a) चत्वारः (b) विंशतिः
(c) पञ्च (d) सप्त

Ans : (a) आचार्य भरत ने चार प्रकार के अलङ्कारों को स्वीकार किया था। (1) उपमा (2) रूपक (3) दीपक (4) यमक

उपमा, रूपकं चैव दीपकं तथा।

अलंकारास्तु ज्ञेयाश्चत्वारो नाकाश्रयाः॥

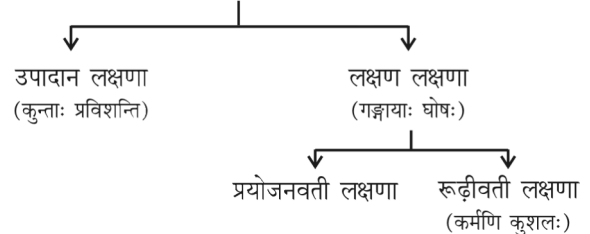
49. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र वर्तते :

- (a) उपादानलक्षणा (b) गौणी लक्षणा
(c) प्रयोजनवती लक्षणा (d) सारोपा लक्षणा

Ans : (c) 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र 'प्रयोजनवती लक्षणा' वर्तते शब्द शक्ति काव्यशास्त्रों में तीन प्रकार की कही गयी हैं

(1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना।

लक्षणा



50. व्यक्तिविवेकस्य रचयिता वर्तते :

- (a) अभिनवगुप्तः (b) भट्टनायकः
(c) भट्टतौतः (d) महिमभट्टः

Ans : (d) व्यक्ति विवेक नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के रचयिता आचार्य महिमभट्ट हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2009

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. कः द्युस्थानीयो देवः -

- (a) वायुः (b) सूर्यः
(c) इन्द्रः (d) रुद्रः

Ans : (b) सूर्य द्युस्थानीय देवता है, इन्द्र तथा रुद्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं तथा वायु पृथ्वीस्थानीय देवता के रूप में स्वीकृत किये गये हैं।

2. दशतथीशब्देन उच्यते -

- (a) ऋग्वेदः (b) यजुर्वेदः
(c) सामवेदः (d) अथर्ववेदः

Ans : (a) वेद के चार भाग हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद में 10 मण्डल होने के कारण इसे दशतथी नाम से भी जाना जाता है।

3. निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः -

- (a) चतस्रः (b) पञ्च
(c) तिस्रः (d) द्वे देवते

Ans : (c) निरुक्तकार आचार्य यास्क के अनुसार मुख्य रूप से 'तीन' प्रकार के देवता हैं- (1) पृथ्वीस्थानीय देवता (2) अन्तरिक्षस्थानीय देवता तथा (3) द्युस्थानीय देवता।

4. मैत्रायणीसंहिता वर्तते -

- (a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (b) चारों वेदों के पृथक्-पृथक् संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् हैं। मैत्रायणी संहिता, तैत्तिरीय संहिता, कठ संहिता तथा कपिष्ठल संहिता कृष्णयजुर्वेद की संहिताएँ हैं, तथा माध्यन्दिन संहिता, काण्व संहिता शुक्लयजुर्वेद की है।

5. कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति -

- (a) दश (b) द्वादश
(c) पञ्च (d) एकादश

Ans : (a) शबर स्वामी के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों में दश प्रकार से ब्राह्मण लक्षण हैं। हेतुनिर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः। पर क्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।। उपमान दर्शवैते विधयो ब्राह्मणस्यतु। एतद्वै सर्ववेदेषु नियतं विधि लक्षणम्।

(1) हेतु (2) निर्वचन (3) निन्दा (4) प्रशंसा (5) संशय (6) विधि (7) परकृति (8) पुराकल्प (9) व्यवधारणकल्पना (10) उपमान

6. विश्वामित्रनदीसंवादो वर्तते -

- (a) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(b) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले

- (c) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये
(d) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे

Ans : (b) विश्वामित्र-नदी संवाद-सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 33वाँ सूक्त है इस सूक्त में विपाशा (व्यास) तथा शुतुद्रि या सतलज नदियों का विश्वामित्र ऋषि के साथ संवाद है।

7. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति समुक्तम् -

- (a) कठोपनिषदि (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) मुण्डकोपनिषदि (d) छान्दोग्योपनिषदि

Ans : (b) 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' यह मन्त्र शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद् बृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है यह छः अध्यायों में विभक्त है तथा आकार की दृष्टि से विशाल है।

8. उपनिषदा प्रतिपाद्यते -

- (a) कर्मकाण्डम् (b) ज्ञानकाण्डम्
(c) यन्त्रज्ञानम् (d) वास्तुज्ञानम्

Ans : (b) भारतीय दर्शनों में छः आस्तिक दर्शन तथा तीन नास्तिक दर्शन प्रसिद्ध हैं। आस्तिक दर्शनों में मीमांसा दर्शन के दो भाग हैं कर्मकाण्डपरक भाग पूर्वमीमांसा तथा ज्ञानकाण्डपरक भाग उत्तर मीमांसा के नाम से जाने जाते हैं उपनिषद् तथा अद्वैतवेदान्त ज्ञानकाण्ड के अन्तर्गत स्वीकृत है।

9. वेदस्यापौरुषेयत्वं स्वीकारोति -

- (a) वेबरः (b) मोक्षमूलरः
(c) विल्सनः (d) जैमिनिः

Ans : (d) वेद अपौरुषेय हैं यह आचार्य 'जैमिनि' ने कहा है 'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः स च विधिमन्त्रनामधेयं निषेधार्थवादभेदात् पञ्चविधः यह वाक्य लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह में निहित है।

10. मैक्समूलरमतानुसारमृग्वेदस्य कालो वर्तते -

- (a) 1200 ई.पू. (b) 3000 ई.पू.
(c) 5000 ई.पू. (d) 4000 ई.पू.

Ans : (a) इंग्लैण्ड की 'सेक्रेड बुक्स आफ दी ईस्ट' नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत मैक्समूलर द्वारा सम्पादित ऋग्वेद की शाकलशाखा का प्रकाशन हुआ था यह ग्रन्थ 1859 ई. में प्रकाशित हुआ था इसमें मैक्समूलर ने ऋग्वेद का रचनाकाल 1200 ई.पू. सिद्ध करने का प्रयास किया है।

11. ऋग्वेदसंहितायामष्टकसंख्या अस्ति -

- (a) दश (b) द्वादश
(c) अष्टौ (d) चतुष्ष्टिः

Ans : (c) वेदों के चार भाग हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से मिलता है। (1) मण्डल क्रम (2) अष्टकक्रम। अष्टक क्रम में 8 अष्टक हैं प्रत्येक अष्टक 8-8 अध्यायों में विभाजित किया गया है इसलिये कुल मिलाकर 64 अध्याय हुए।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

12. वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते-

- (a) पादाभ्याम् (b) चक्षुषा
(c) मुखेन (d) श्रोत्रेण

Ans : (a) वेदाङ्गों की संख्या छः है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द तथा ज्योतिष।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथोच्यते।

ज्योतिषामायनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥

शिक्षाघाणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

इस श्लोक के अनुसार छन्द को वेद का पाद कहा गया है।

13. उपादानग्रहणात् इत्येतेन पुष्यते -

- (a) सत्कार्यवादः (b) पुरुषसिद्धिः
(c) प्रकृतिसिद्धिः (d) सृष्टिप्रक्रिया

Ans : (a) सांख्यदर्शन में सत्कार्यवाद को स्वीकार किया गया है-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।

शक्तस्त्यशक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥

उपादान ग्रहणात् से सत्कार्यवाद को कहा गया है।

14. जन्ममरणकरणानाम् इत्येतेन सिद्धम् -

- (a) प्रकृतिस्वरूपम् (b) गुणस्वरूपम्
(c) दुःखस्वरूपम् (d) पुरुषबहुत्वम्

Ans : (d) सांख्य दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष की सत्ता की बात कही गयी है पुरुष बहुल इस दर्शन की प्रमुख विशेषता है।

जननमरणकरणां प्रतिनियमादयुगपद् प्रवृत्तेश्च।

पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥

सांख्य कारिका

अर्थात् जनन मरण करणानां से पुरुषबहुत्व कहा गया है।

15. कर्तृत्वं धर्मः अस्ति

- (a) पुरुषस्य (b) अहंकारस्य
(c) मूलप्रकृतेः (d) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

Ans : (a) सांख्यदर्शन के अनुसार इस संसार के कर्ता तथा भोक्ता दोनों नित्य रूप में स्थित हैं कर्ता तथा भोक्ता दोनों पुरुष हैं तथा भोग्य प्रकृति है।

16. चैतन्यम् अस्ति

- (a) प्रकृतेः (b) पुरुषस्य
(c) गुणत्रयस्य (d) महाभूतानाम्

Ans : (b) चेतनता पुरुष का धर्म है जबकि प्रकृति जड़ है यह मत सांख्यमतानुयायियों का है पुरुष तीनों गुणों से रहित है भोक्ता है तथा कैवल्य के लिये प्रवृत्त होता है।

17. जीवन्मुक्तिः अस्ति

- (a) जैनदर्शने (b) बौद्धदर्शने
(c) चार्वाकदर्शने (d) वेदान्तदर्शने

Ans : (d) वेदान्त दर्शन में मुक्ति दो प्रकार की होती है-

(1) जीवन्मुक्ति (2) विदेहमुक्ति। जीवन्मुक्ति में शरीर रहते हुए भी जीव मुक्त हो जाता है तथा विदेह मुक्ति में शरीर के साथ जब ज्ञानी की मुक्ति होती है वह विदेह मुक्ति है।

18. व्यानः वायुर्वर्तते

- (a) हृदि (b) नाभिमण्डले

- (c) कण्ठदेशे (d) सर्वशरीरगः

Ans : (d) वेदान्तदर्शन में पञ्चवायु का वर्णन है - प्राण, आपान, व्यान, उदान तथा समान। प्राण वायु नासाग्रवर्ती होती है। आपानवायु वायु आदि स्थान में रहती है, व्यान वायु सम्पूर्ण शरीर में रहती है, उदान वायु कण्ठ स्थान में रहती है तथा समान वायु शरीर के मध्य भाग में रहती है।

19. वेदान्तसारस्य कर्ता अस्ति

- (a) ईश्वरकृष्णः (b) सदानन्दः
(c) सुरेश्वराचार्यः (d) शंकराचार्यः

Ans : (b) वेदान्तसार के कर्ता योगीन्द्र सदानन्द हैं, सांख्यकारिका के कर्ता ईश्वरकृष्ण हैं, नैष्कर्म्यसिद्धि के कर्ता सुरेशाचार्य हैं तथा ब्रह्मसूत्र पर अद्वैत वेदान्त रूप भाष्य आचार्य शङ्कर ने लिखा है।

20. अनुबन्धः अस्ति

- (a) पञ्च (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) द्वौ

Ans : (c) वेदान्तसार के अनुसार चार प्रकार के अनुबन्ध होते हैं-

(1) अधिकारी (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन।

21. प्रत्यक्षं ज्ञानमस्ति

- (a) योगार्थसन्निकर्षजम् (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षजम्
(c) पदार्थसन्निकर्षजम् (d) तत्त्वार्थसन्निकर्षजम्

Ans : (b) न्यायमत के अनुसार प्रमाणों की संख्या चार है।

इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं यहाँ पर इन्द्रियार्थ अर्थात् सभी पञ्च ज्ञानेन्द्रियों के विषयों से है।

22. तन्तुपटयोः अस्ति सम्बन्धः

- (a) समवायिसम्बन्धः (b) असमवायिसम्बन्धः
(c) निमित्तसम्बन्धः (d) न कोऽपि सम्बन्धः

Ans : (a) न्याय मतानुसार कारण तीन प्रकार के बताये गये हैं-

- (1) समवायिकारण
(2) असमवायिकारण
(3) निमित्तकारण

तन्तु का पट के साथ समवायिसम्बन्ध से रहता है तथा तन्तु पट का समवायिकारण है।

23. हेत्वाभासः कतिविधिः ?

- (a) चतुर्विधः (b) पञ्चविधः
(c) द्विविधः (d) त्रिविधः

Ans : (b) हेत्वाभास पाँच प्रकार के बताये गये हैं जो हेतु नहीं हैं केवल हेतु के जैसे लगते हैं वे हेत्वाभास कहलाते हैं। यथा - 'हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः। ये निम्न हैं-

(1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्यापदिष्ट।

24. न्यायमते प्रमाणानि सन्ति?

- (a) षट् (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) त्रीणि

Ans : (b) न्यायमत के अनुसार चार प्रकार के प्रमाण हैं

(1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द प्रमाण
सांख्य में तीन प्रमाण तथा मीमांसा में छः प्रमाण स्वीकृत हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

25. क्तक्तवतूप्रत्ययोः संज्ञा अस्ति

- (a) टि (b) धि
(c) नदी (d) निष्ठा

Ans : (d) 'क्तक्तवतू निष्ठा' अर्थात् क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। निष्ठा सञ्ज्ञक भूतकाल के अर्थ में सभी धातुओं से होते हैं।
जैसे - हसितः, हसितवान्, कृतः, कृतवान्।

26. ईदूदेद्विवचनं भवति

- (a) प्रातिपदिकम् (b) सुप्
(c) प्रगृह्यम् (d) तद्धितः

Ans : (c) ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम् (1/1/11) सूत्र के अनुसार ईकारान्त द्विवचन, ऊकारान्त द्विवचन और एकारान्त द्विवचन प्रगृह्य संज्ञक होते हैं। जैसे-हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू।

27. इचुयशानां किं स्थानम्?

- (a) दन्तः (b) मूर्धा
(c) तालु (d) ओष्ठी

Ans : (c) इचुयशानां - तालु
लतुलसानां - दन्त
ऋटुरषाणां - मूर्धा
उपूषध्मानीयानां - ओष्ठः
इ च वर्ग तथा य, श् का उच्चारण स्थान तालु है।

28. पदम् अस्ति

- (a) योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तम् (b) सुप्तिडन्तम्
(c) समासयुक्तम् (d) सन्धियुक्तम्

Ans : (b) सुप्तिडन्तम् पदम् (1/4/14) सुबन्त और तिडन्त की पद संज्ञा होती है सुप् अर्थात् सु से लेकर सुप् तक 21 प्रत्यय जिस शब्द में लगते हैं वे पद सुबन्त कहलाते हैं इसी प्रकार जिस धातु में तिप् से लेकर महिङ् तक के 18 प्रत्यय लगते हैं वे तिडन्त कहलाते हैं।

29. 'सह साकं सार्धम्' इतियोगे किं कारकम्?

- (a) कर्ता (b) कर्म
(c) करणम् (d) सम्प्रदानम्

Ans : (c) सहयुक्तेऽप्रधाने (2/3/19) सूत्र के अनुसार सह के योग में अप्रधान की करण संज्ञा होती है जैसे - 'पुत्रेण सह पिता आगतः' एवं सहसाकंसार्धसर्मयोगेऽपि। अर्थात् सह, साकं, सार्धं, समं के योग में भी तृतीया होती है।

30. एकाल्प्रत्ययः किम्?

- (a) धि (b) नदी
(c) उपधा (d) अपृक्तम्

Ans : (d) अपृक्तं एकाल् प्रत्ययः (1/2/41) सूत्र के अनुसार एक अल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्त कहलाता है अर्थात् उसकी अपृक्त संज्ञा होती है जैसे- सु में अवशिष्ट भाग स् बचता है, उसकी अपृक्त संज्ञा होती है।

31. कादयोमावसानाः सन्ति

- (a) स्पर्शाः (b) अर्धस्वराः
(c) तालव्याः (d) मूर्धन्याः

Ans : (a) क् से लेकर म् पर्यन्त वर्णों की स्पर्श संज्ञा होती है। अर्थात् क वर्ग च वर्ग ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग की स्पर्श संज्ञा होती है। इनका आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट होता है।

32. भारतीय-आर्यभाषायाः अवस्था सन्ति

- (a) चतस्रः (b) पञ्च
(c) तिस्रः (d) षट्

Ans : (c) भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाओं का वर्णन विद्वानों ने किया है-

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा - 1500 ई.पू. से 500 ई.पू.
मध्यकालीन आर्यभाषा - 500 ई.पू. से 1000 ई.
आधुनिक भारतीय आर्यभाषा - 1000 ई. से अद्यावधिपर्यन्तम्

33. परः सन्निकर्षः अस्ति

- (a) वृद्धिः (b) प्रातिपदिकम्
(c) सर्वनामस्थानम् (d) संहिता

Ans : (d) परः सन्निकर्षः संहिता (1/4/109) सूत्र के अनुसार वर्णों की अत्यन्त सन्निधि संहितासंज्ञक होती है अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं। जैसे- राम+अवतार में राम के म् के बाद जो अ आता है वह अवतार के अ के समीप है अतः दोनों की संहिता संज्ञा होती है।

34. 'पञ्चानां गङ्गानां समाहारः' इत्यत्र समासः अस्ति

- (a) द्विगुः (b) तत्पुरुषः
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहिः

Ans : (c) 'पञ्चगङ्गम्' पद का लौकिक विग्रह है पञ्चानां गङ्गानां समाहारः तथा अलौकिक विग्रह पञ्चन् आम् गङ्गा आम् होगा। इस अवस्था में नदीभिश्च (2/1/20) सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ। जब संख्यावाचक सुबन्त शब्द का नदीवाचक सुबन्त शब्दों के साथ समास होता है तो वह अव्ययीभाव कहलाता है।

35. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति

- (a) य् (b) ल्
(c) ष् (d) ह

Ans : (c) षकार का अन्तर्भाव मूर्धन्य में होता है
यकार का अन्तर्भाव - अन्तस्थ में होता है
लकार का अन्तर्भाव- दन्त में होता है
हकार का अन्तर्भाव- कण्ठ में होता है

36. उपयुक्तां तालिकां चिनुत

- (a) अपृक्तम् (i) अदेङ्
(b) वृद्धिः (ii) इग्यणः
(c) गुणः (iii) एकाल् प्रत्ययः
(d) सम्प्रसारणम् (iv) आदैच्
(a) (b) (c) (d)
(A) (iii) (iv) (i) (ii)
(B) (ii) (i) (iii) (iv)
(C) (iv) (iii) (ii) (i)
(D) (ii) (iii) (iv) (i)

Ans : (a) अपृक्तमेकाल् प्रत्ययः

वृद्धिरादैच्
अदेङ्गुणः
इग्यणः सम्प्रसारणम्।

37. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः?

- (a) कर्तृकर्मणोः कृति (b) अपादाने पञ्चमी
(c) चतुर्थी सम्प्रदाने (d) स्पृहेरीप्सितः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' अर्थात् पुष्प की स्पृहा करता है। 'स्पृहेरीप्सितः' (1/4/36) सूत्र के द्वारा स्पृह धातु के योग में इप्सित अर्थात् चाहा गया पदार्थ सम्प्रदान सञ्ज्ञक होता है तथा सम्प्रदाने चतुर्थी सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

38. हर्षचरितस्य रचयिता अस्ति -

- (a) बाणभट्टः (b) श्रीहर्षः
(c) दण्डी (d) हर्षदेवः

Ans : (a) हर्षचरित के रचयिता बाणभट्ट हैं, दण्डी दशकुमार चरितम् के रचयिता हैं, श्री हर्ष- नैषधीयचरितम् के रचयिता हैं। हर्षचरित बाणभट्ट द्वारा लिखित आख्यायिका है।

39. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' - इत्यस्ति-

- (a) शिशुपालवधे (b) बुद्धचरिते
(c) किरातार्जुनीये (d) नैषधीयचरिते

Ans : (c) 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' यह सूक्ति महाकवि भारवि द्वारा लिखित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 8वें श्लोक से ली गयी है।

40. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' - इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते-

- (a) कालिदासः (b) माघः
(c) श्रीहर्षः (d) भारविः

Ans : (a) अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।। यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक के 22वें श्लोक से लिया गया है।

41. पदलालित्याय सुप्रसिद्धः कविरस्ति-

- (a) भारविः (b) कालिदासः
(c) दण्डी (d) भवभूतिः

Ans : (c) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोऽङ्गुणाः।। इस श्लोक से स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य दण्डी का पदलालित्य प्रसिद्ध है।

42. प्रतीयमानार्थस्य प्रतिपादिका शक्तिर्भवति-

- (a) व्यञ्जना (b) लक्षणा
(c) अभिधा (d) तात्पर्या

Ans : (a) शक्ति तीन प्रकार की होती है (1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना। अभिधा शक्ति साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध कराती है जब अभिधा अर्थ छोड़ देती है तो वहाँ पर लक्षणा शक्ति द्वारा अर्थ निकलता है तथा प्रतीयमान अर्थ का प्रतिपादन व्यञ्जना शक्ति से होता है।

43. शान्तरसस्य स्थायी भावः वर्तते-

- (a) शोकः (b) शमः
(c) उत्साहः (d) भयम्

Ans : (b) शान्त रस का स्थायीभाव - शम है। करुण रस का स्थायी भाव - शोक है। वीर रस का स्थायी भाव - उत्साह है। भयानक रस का स्थायी भाव - भय है।

44. सौन्दरानन्दमहाकाव्यस्य रचयिता वर्तते-

- (a) शङ्कराचार्यः (b) कालिदासः

- (c) अश्वघोषः (d) हर्षदेवः

Ans : (c) अश्वघोष के दो महाकाव्य प्रसिद्ध हैं (1) बुद्धचरितम् यह चतुर्दश सर्गों में प्राप्त है तथा (2) सौन्दरानन्द महाकाव्य।

45. 'डिम' इति रूपके अङ्का भवन्ति-

- (a) 5 (b) 6
(c) 10 (d) 4

Ans : (d) रूपक या नाटक 10 प्रकार के होते हैं। (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) व्यायाम (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) वीथी (10) प्रहसन। डिम में चार अंक होते हैं जैसे- त्रिपुरदाह

46. प्रकरणस्य उदाहरणं भवति-

- (a) मुद्राराक्षसम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) वेणीसंहारम्

Ans : (b) शूद्रकरचित मृच्छकटिकम् - प्रकरण का उदाहरण है इसमें 10 अङ्क हैं। विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस में सात अंक तथा वेणीसंहारम् में छः अङ्क तथा हैं।

47. कादम्बरी अस्ति-

- (a) आख्यायिका (b) कथा
(c) परिकथा (d) कथानिका

Ans : (b) संस्कृत गद्य कवियों में अग्रगण्य बाणभट्ट ने कादम्बरी तथा हर्षचरित दो प्रसिद्ध गद्य काव्य लिखे हैं। कादम्बरी एक कथा है जबकि हर्षचरित आख्यायिका के अन्तर्गत आती है। कादम्बरी में चन्द्रापीड तथा वैशम्पायन के तीन जन्मों की कथा बतायी गयी है।

48. 'श्रुतेरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्' इत्यस्ति-

- (a) रामायणे (b) महाभारते
(c) रघुवंशे (d) वेणीसंहारे

Ans : (c) 'तस्याः खुरन्यासपवित्रपांशु श्रुतिरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्' यह पद्य महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का द्वितीय श्लोक है। इसमें कवि ने सुदक्षिणा को स्मृति की भाँति बताया है।

49. वाल्मीकिरामायणे प्रधानरसः अस्ति-

- (a) शान्तः (b) करुणः
(c) वीरः (d) रौद्रः

Ans : (b) वाल्मीकि रामायण का प्रधान रस करुण है क्योंकि इस काव्य का उद्गम ही शोक से हुआ है 'शोकः श्लोकत्वमागतः' शोक से ही 'मा निषाद्' श्लोक प्रस्फुटित हुआ है।

50. 'हनुमानाब्धिमतर्त्तु दुष्करं किं महात्मनाम्' - इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम्-

- (a) उपमालङ्कारस्य
(b) दृष्टान्तालङ्कारस्य
(c) दीपकालङ्कारस्य
(d) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य

Ans : (b) 'हनुमानाब्धिमतर्त्तु दुष्करं किं महात्मनाम्' यहाँ पर महात्माओं के सज्जनों के उत्साह की वृद्धि के लिये हनुमान का दृष्टान्त दिया गया है। जिस प्रकार हनुमान समुद्र को पार कर गये थे उसी प्रकार महात्माओं के लिये कुछ भी दुष्कर नहीं है। अतः यहाँ पर दृष्टान्त नामक अलङ्कार है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2010

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. दशतयीति शब्देन विधीयते:

- (a) यजुर्वेदः (b) सामवेदः
(c) ऋग्वेदः (d) सामविधानम्

उत्तर-(c) वेद के चार विभाग क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद हैं।

10 मण्डलों में विभक्त होने के कारण ही ऋग्वेद को दशतयी नाम दिया गया है। इसमें 85 अनुवाक तथा 1017, (1028) सूक्त हैं।

2. का अन्तरिक्षदेवता?

- (a) विष्णुः (b) इन्द्रः
(c) वरुणः (d) सोम

उत्तर-(b) त्रिम्बः देवता की संकल्पना निरुक्त में दी गई है-

- (1) अन्तरिक्षस्थानीय इन्द्र, रुद्र, मरुत् वायु आदि
(2) पृथ्वीस्थानीय पृथ्वी, सोम, अग्नि आदि
(3) द्युस्थानीय वरुण, मित्र, विष्णु, पूषा आदि

3. ईशोपनिषद् केन सह सम्बद्धा वर्तते?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर-(b) 'ईशावास्योपनिषद्' शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता का 40वाँ अध्याय है। इस उपनिषद् में 18 मन्त्र हैं इसका पहला मन्त्र- "ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" है।

4. पुरुरवा-उर्वशी-सम्वादः कस्मिन् मण्डले वर्तते?

- (a) सप्तममण्डले (b) दशममण्डले
(c) नवममण्डले (d) तृतीयमण्डले

उत्तर-(b) पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 95वाँ सूक्त है। इसके ऋषि पुरुरवा और उर्वशी हैं। छन्द त्रिष्टुप्, स्वर दैवत हैं। इसका प्रसिद्ध मन्त्र - न वै खैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणं हृदयान्येता।

5. वेदस्यापौरुषेयत्वं न स्वीकरोति:

- (a) विन्टरनिट्स (b) सायणः
(c) माधवः (d) दयानन्दः

उत्तर-(a) विन्टरनिट्स महोदय वेदों को अपौरुषेय की सञ्ज्ञा नहीं देते हैं। अर्थात् वेदों की उत्पत्ति किसी पुरुष के द्वारा की गई है न कि इनका प्राकट्य हुआ है। लेकिन सायण, माधव एवं दयानन्द वेदों को अपौरुषेय मानते हैं।

6. कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते?

- (a) वैशम्पायनप्रणीतत्वात्

- (b) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्
(c) दक्षिणदेश प्रसिद्धत्वात्
(d) पाठभेदात्

उत्तर-(b) मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते। अर्थात् मन्त्रों और ब्राह्मणों के साङ्कर्यात् को कृष्णयजुर्वेद के द्वारा कहा गया है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- (1) कृष्णयजुर्वेद (2) शुक्लयजुर्वेद।

7. कति विकृतयः?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) अष्ट (d) दश

उत्तर-(c) आठ प्रकार की विकृतियाँ होती हैं- जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन, अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रम पूर्वा महर्षिभिः। अर्थात् ऐसा महर्षियों ने कहा है।

8. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम्

- (a) ऐतरेय ब्राह्मणम्
(b) तैत्तिरीय ब्राह्मणम्
(c) आर्षेय ब्राह्मणम्
(d) गोपथ ब्राह्मणम्

उत्तर-(a) ऋग्वेद का ब्राह्मण 'ऐतरेय' है इसके रचयिता महिदास ऐतरेय हैं इसमें कुल 40 अध्याय हैं। मुख्य रूप से सोमयाग का वर्णन है। 1-16 अध्याय तक एक दिन में होने वाले अग्निष्टोम नामक सोमयाग का वर्णन है।

9. कः कल्पसूत्रविषयः?

- (a) यागप्रयोगक्रमप्रतिपादनम्
(b) शब्दार्थनिरूपणम्
(c) वेदार्थनिरूपणम्
(d) पाठभेदनिरूपणम्

उत्तर-(a) वेदाङ्गों में कल्पसूत्रों का मुख्य प्रतिपाद्य याग प्रयोगक्रमप्रतिपादनम् है। कल्प का अर्थ है- विधि, नियम, न्याय, कर्म और आदेश।

10. 'अहेडमानः' इति वर्तते:

- (a) वरुणसूक्ते (b) रुद्रसूक्ते
(c) विष्णुसूक्ते (d) बृहस्पतिसूक्ते

उत्तर-(a) अहेडमानः 'वरुण' का एक विशेषण है। वरुण द्युस्थानीय देवता है। इनकी स्तुति 12 सूक्तों में तथा अंशतः 24 अन्य सूक्तों में की गई है। वरुण के अन्य विशेषण असुर, मायावी, क्षत्रिय आदि हैं।

11. लोकमान्यतिलकमते वेदस्य कालः

- (a) त्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(b) सार्धत्रिसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(c) पञ्चसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्
(d) सार्धपञ्चसहस्रवर्षेभ्यः पूर्वम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर-(c) लोकमान्य तिलक ने वेदों का समय लगभग 5000 ई.पू. माना है। वेदों के काल निर्धारण में विद्वानों में मतैक्यता नहीं है। सबका अलग-अलग अपना विचार एवं तर्क है।

12. कः कोशः कारणशरीरम्?

- (a) मनोमयकोशः (b) आनन्दमयकोशः
(c) विज्ञानमयकोशः (d) प्राणमयकोशः

उत्तर-(b) आनन्दमय कोशः कारणशरीरम् वेदान्तसार में कारण शरीर के सिर्फ तीन कोश बताये गये हैं (1) मनोमयकोश (2) विज्ञानमयकोश (3) प्राणमयकोश।

13. न्यायमते कति प्रमाणानि?

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) केशवमिश्र प्रणीता तर्कभाषा में चार प्रकार के प्रमाणों की सत्ता को स्वीकार किया गया है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द। इसमें से प्रत्यक्ष का लक्षण साक्षात्कारप्रमाणकरणं प्रत्यक्षं - साक्षात्कारिणी च प्रमा सैवोच्यते या इन्द्रियजा।

14. शब्दो न प्रमाणमिति कस्य मतम्?

- (a) सांख्यस्य (b) योगस्य
(c) वैशेषिकस्य (d) जैनस्य

Ans : (d) 'जैनदर्शन' मतावलम्बी शब्द को प्रमाण नहीं मानते हैं। जबकि न्यायमतावलम्बी 4 प्रकार के प्रमाण में शब्द प्रमाण को स्वीकार करते हैं। जबकि वेदान्तदर्शन मतावलम्बी षट् प्रकार के प्रमाण की सत्ता को स्वीकार करते हैं।

15. अनिर्वचनीयशब्दार्थः कः?

- (a) सद्भिन्नत्वम् (b) असद्भिन्नत्वम्
(c) सदसद्भिन्नत्वम् (d) सन्यद् यसा किञ्चित्

Ans : (c) सदसद्भिन्नत्वम् अनिर्वचनीयत्वम्। अर्थात् सत्य और असत्य से जो शब्द भिन्न होते हैं उनकी अनिर्वचनीय संज्ञा होती है या उन्हें अनिर्वचनीय कहते हैं। अज्ञान को सदसद्भिन्नत्वम् कहा गया है।

16. वेदान्तमते लिङ्गशरीरघटकाः कति?

- (a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans : (c) सदानन्दयोगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर के सत्रह अवयवों को बताया गया है। इसमें से 17 अवयव निम्न हैं- 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 वायु, 1 बुद्धि, 1 मन है।

17. ज्ञानेन्द्रियाणां कस्माद् भूतांशादुत्पत्तिः?

- (a) राजसात् (b) सात्त्विकात्
(c) तामसात् (d) सम्मिलितात्

Ans : (b) ज्ञानेन्द्रियाणां सात्त्विकात् भूतांशादुत्पत्तिः अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति सात्त्विक भूतांशों से होती है।

18. सत्कार्यवादसाधकाः कति हेतवः?

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (c) सत्कार्यवाद के पाँच साधक हेतु हैं जैसा कि इस कारिका से स्पष्ट है।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।

शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥

19. शब्दः कस्य विशेषगुणः?

- (a) वायोः (b) आकाशस्य
(c) आत्मनः (d) कालस्य

Ans : (b) तर्कसङ्ग्रह में सप्त पदार्थों में जो द्रव्य नामक पदार्थ हैं उसके 9 भेद होते हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा एवं मन। उसमें से आकाश का लक्षण- शब्दगुणकम् आकाशम् कहा गया है।

20. संस्कारः कस्मिन् पदार्थो अन्तर्भवति?

- (a) द्रव्ये (b) गुणे
(c) कर्मणि (d) अभावे

Ans : (b) सप्तपदार्थों में जो गुण हैं उसके 24 भेद होते हैं। ये गुण निम्न हैं- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार।

21. सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था किं कथ्यते?

- (a) मूलप्रकृतिः (b) बुद्धिः
(c) अहङ्कारः (d) कैवल्यम्

Ans : (a) सांख्यदर्शन प्रकृति की व्याख्या तीन गुणों के माध्यम से करता है जो न केवल प्रकृति में बल्कि प्रकृति से उत्पन्न प्रत्येक वस्तु में भी उपस्थित होते हैं। ये तीन गुण निम्न हैं- सत्त्व, रजस् तथा तमस्। इन तीनों गुणों की समावस्था ही प्रकृति है।

22. अकुहविसर्जनीयानामुच्चारणस्थानं किम्?

- (a) मूर्धा (b) दन्ताः
(c) कण्ठः (d) तालु

Ans : (c) अकुहविसर्जनीयानाम उच्चारणस्थानम् 'कण्ठोऽस्ति'। अ, क वर्ग, ह् एवं विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। ध्वनि के प्रधान अंग उच्चारण स्थान और प्रयत्न हैं। स्थान और प्रयत्नों का उच्चारण अवयवों से विशेष सम्बन्ध होता है।

23. वृद्धिसंज्ञाविधायक सूत्रं किम्?

- (a) वृद्धिरादैच् (b) वृद्धिरेचि
(c) अदेङ्गुणः (d) एचोऽयवायावः

Ans : (a) वृद्धिसंज्ञाविधायक सूत्र 'वृद्धिरादैच्' है अर्थात् आत् (आ) और ऐच् (ऐ, औ) वृद्धि सञ्ज्ञक होते हैं जबकि वृद्धिरेचि वृद्धि सन्धि विधायक सूत्र है।

24. 'दम्पती' -अस्मिन् पदे समास-विग्रहः भवति:

- (a) पिता च भ्राता च (b) पिता च पतिश्च
(c) पिता च पुत्रश्च (d) जाया च पतिश्च

Ans : (d) दम्पती का समास विग्रह 'जाया च पतिश्च' होगा दम्पती नित्य द्विवचनान्त शब्द है। "जायाशब्दस्य जम्भावो दम्भावश्च वा निपात्यते" इस वा0 से दम्पती में समास कार्य हुआ है।

25. स्पर्शवर्णाः के?

- (a) यणः (b) स्वराः
(c) कादयोमावसानाः (d) अण्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) वर्णों के वर्ग विभाजन में - 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः'। क् से लेकर म् तक के वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इसी प्रकार से यणों को अन्तस्थ कहते हैं।

26. संहितासंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) उच्चै (b) नीचै
(c) समाहार (d) परः सन्निकर्षः

Ans : (d) संहिता संज्ञा विधायक सूत्र "परः सन्निकर्षः संहिता" है। वर्णानामतिशयितः सन्निकर्षः संहितासंज्ञः स्यात् । अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता की संहिता संज्ञा होती है।

27. 'क्तवतू' इति सूत्रेण का संज्ञा विधीयते?

- (a) गतिः (b) निष्ठा
(c) उपधा (d) सवर्णम्

Ans : (b) 'क्तवतू निष्ठा' एतौ निष्ठासंज्ञौ स्तः। क्त और क्तवतू प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है। भूतकाल में वर्तमान धातु से निष्ठा प्रत्यय हो। क्त प्रत्यय भाववाच्य और कर्मवाच्य में होता है। जबकि क्तवतू कर्तृवाच्य में होता है।

28. भीधातुप्रयोगे भयहेतौ का विभक्तिः?

- (a) तृतीया (b) षष्ठी
(c) पञ्चमी (d) सवर्णम्

Ans : (c) भी धातु के प्रयोग में भयहेतु भय का कारण अपादान कहलाता है।
"भीत्रार्थानां भयहेतुः"। भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे भय हेतुरपादानं स्यात् ।
यथा- चोरात् त्रायते। चोराद् विभेति।

29. पुष्पेभ्यः स्पृहयति-इत्यत्र चतुर्थीविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) अकथितञ्च (b) दिवः कर्म च
(c) स्पृहेरीप्सितः (d) आख्यातोपयोगे

Ans : (c) 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' इस वाक्य में 'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र से पुष्पेभ्यः में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है। स्पृहयतेः प्रयोगे इष्टः सम्प्रदानं स्यात्। स्पृह् धातु के प्रयोग में ईप्सित अर्थात् चाहा गया पदार्थ सम्प्रदानं कहलाता है।

30. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः

A. सवर्णम्	1. सुप्तिङन्तम्
B. उदात्तः	2. यू स्याख्या
C. पदम्	3. तुल्यास्यप्रयत्नम्
D. नदी	4. उच्चैः
A	B	C	D
(a) 2	1	4	3
(b) 2	3	1	4
(c) 4	2	3	1
(d) 3	4	1	2

Ans : (d) समीचीन युग्म इस प्रकार है-
सवर्णम् - तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
उदात्तः - उच्चैरुदात्तः
पदम् - सुप्तिङन्तं पदम्
नदी - यूस्याख्या नदी

31. कस्तावत् अर्धस्वर इति निर्दिश्यताम्

- (a) अ (b) ई
(c) ह (d) यू

Ans : (d) दिए गये विकल्पों में अर्धस्वर यू है। यू का उच्चारण स्थान तालु, होता है।
यू वर्ण अन्तस्थ संज्ञक होते हैं
यू, रू, लू, वू का आभ्यन्तर प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट होता है।

32. कः सन्ध्यक्षरः?

- (a) अ (b) ओ
(c) लृ (d) ई

Ans : (b) निम्न वर्णों में से 'ओ' सन्ध्यक्षर के अन्तर्गत आता है क्योंकि ओ (अ+उ) के संयोग से बनता है।

33. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इत्यस्ति :

- (a) शिशुपालवधे (b) नैषधीये
(c) माघे (d) किरातार्जुनीये

Ans : (d) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' अर्थात् कल्याणकारी एवं प्रिय वचन दुर्लभ होते हैं। यह कथन वनेचर का है। इसका किरातार्जुनीयम् महाकाव्य से सम्बद्ध है।

34. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः कः?

- (a) वीरः (b) शृङ्गारः
(c) करुणः (d) हास्यः

Ans : (c) 'उत्तररामचरितम्' नाटक में अङ्गीरस करुण है। जैसा कि इस नाटक के तृतीय अङ्क के इस सूक्ति से स्पष्ट है- एकोरसः करुण एव निमित्त भेदात् ।
यह नाटक 7 अंकों में विभक्त है।

35. कस्तावत् पदस्य मुख्यार्थः?

- (a) लक्ष्यार्थः (b) व्यंग्यार्थः
(c) वाच्यार्थः (d) तात्पर्यार्थः

Ans : (c) शब्द तीन प्रकार का होता है- वाचक, लाक्षणिक, व्यञ्जक अर्थ भी तीन प्रकार का होता है- वाच्य, लक्ष्य व्यङ्ग्य। तथा शक्ति भी तीन प्रकार की होती है- अभिधा, लक्षणा व्यञ्जना। वाच्यार्थ पद का अर्थ मुख्यार्थ होता है।

36. नाटके इतिवृत्तं किम्?

- (a) कल्पितम् (b) प्रसिद्धम्
(c) अप्रसिद्धम् (d) मिश्रम्

Ans : (b) नाटके इतिवृत्तं प्रसिद्धम् ।
यथा- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक इतिहास प्रसिद्ध है। इसका आधार महाभारत के आदि पर्व से सम्बद्ध है। इसी प्रकार रत्नावली नाटिका भी इतिहास प्रसिद्ध है।

37. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापनेत्युच्यते?

- (a) शूद्रकस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) भासस्य (d) भट्टनारायणस्य

Ans : (c) भासस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापनेत्युच्यते अर्थात् भास के नाटकों में प्रस्तावना को स्थापना कहा गया है। संस्कृत साहित्य के इतिहास में वर्तमान में भास रचित 13 नाटकों का वर्णन मिलता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. कस्मिन् सन्ति त्रयो गुणाः?

- (a) माघे (b) रघुवंशे
(c) नैषधीये (d) शिशुपालवधे

Ans : (a) महाकवि माघ में तीनों गुण समुपलब्ध हैं-
यथा- उपमाकालिदासस्य भारवैश्वर्यम्
दण्डिनः पद लालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

39. भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि दृश्यते?

- (a) कर्णपर्वणि (b) शल्यपर्वणि
(c) भीष्मपर्वणि (d) द्रोणपर्वणि

Ans : (c) श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के 'भीष्मपर्व' से उद्धृत है।
गीता में 500 सर्ग तथा 700 श्लोक हैं। महाभारत में 18 पर्व हैं
जिसमें से पहला पर्व आदि पर्व एवं अन्तिम पर्व स्वर्गरोहण है।

40. स्थायीभावाः कति?

- (a) अष्ट (b) पञ्च
(c) दश (d) सप्त

Ans : (a) स्थायीभावों की संख्या भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 'आठ'
मानी गई हैं जिसको आचार्य मम्मट ने भी अपने 'काव्यप्रकाश' में
कहा है। जबकि आचार्य विश्वनाथ कविराज ने स्थायीभावों की
संख्या 9 स्वीकार की है।

41. रत्नावली कस्मिन् काव्यप्रभेदे अन्तर्भवति?

- (a) नाटिकायाम् (b) पाणिनायाम्
(c) प्रकरणिकायाम् (d) रासके

Ans : (a) रत्नावली नाटिका 4 अंकों में विभक्त है। इस नाटिका में
स्त्री पात्रों का बाहुल्य है। नाटिका की वृत्ति कैशिकी होती है, यह नर्म
आदि चार अङ्कों की संख्या के अनुसार एवं अवमर्श सन्धि के
अत्यल्प होने के कारण होती है।

42. अभिधापुच्छभूता का?

- (a) स्थापना (b) लक्षणा
(c) तात्पर्या (d) भावना

Ans : (b) अभिधापुच्छभूता लक्षणा। शब्द तीन प्रकार का होता है-
वाचक, लाक्षणिक, व्यञ्जक। अर्थ भी तीन प्रकार का होता है- वाच्य,
लक्ष्य व्यञ्ज्य। शक्ति भी तीन प्रकार की होती है- अभिधा, लक्षणा
व्यञ्जना वाच्यार्थ पद का अर्थ मुख्यार्थ होता है।

43. भाणे नायकः कः?

- (a) चेतः (b) विदूषकः
(c) विटः (d) शकारः

Ans : (c) भाण वह रूपक है जिसमें कोई कुशल विट अपने द्वारा
धूर्त चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क का होता है। इसमें
मुख एवं निर्वहण दो सन्धियाँ होती हैं।

44. शान्तरसस्य स्थायी भावः कः?

- (a) शोकः (b) निर्वेदः
(c) भयम् (d) उत्साहः

Ans : (b) शान्त रस का स्थायीभाव शम (निर्वेद) होता है। इसका
वर्ण कुन्दपुष्पवत् एवं देवता श्रीनारायण हैं।

शान्तः शमस्थायिभावो उत्तम प्रकृतिर्मतः।

45. रसप्रस्थानस्य प्रवर्तकः कः?

- (a) भामहः (b) भरतः
(c) विश्वनाथः (d) वामनः

Ans : (b) आचार्य भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र के छठें अध्याय
में रस निरूपण किया है तथा सप्तस्वर चारवाद्य वर्ण एवं देवता का
वर्णन है। इसमें 36 अध्याय हैं इसे विश्वकोश भी कहा जाता है।

46. सन्देशकाव्यप्रस्थान केन समारब्धम्?

- (a) अश्वघोषेण (b) कालिदासेन
(c) कुन्तकेन (d) वामनेन

Ans : (b) सन्देशकाव्य का शुभारम्भ महाकवि कालिदास ने किया
है। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'मेघदूतम्' में मेघ द्वारा अपनी
प्रियतमा को सन्देश भेजकर इसका शुभारम्भ किया।

47. नाटके अर्थप्रकृतयः कति?

- (a) तिस्रः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) दश

Ans : (b) बीज बिन्दु पताका प्रकरी और कार्य ये 5 अर्थप्रकृतियाँ
हैं।

बीजबिन्दु पताकाख्य प्रकरी कार्य लक्षणाः।

अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः।।

48. स्वप्नवासवदत्ते कति अङ्काः सन्ति?

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) अष्ट

Ans : (b) भास विरचित नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक 6
अंकों में विभक्त है इसमें श्लोकों की संख्या 57 है। इनके 13
नाटकों में प्रतिमानाटक, उरुभङ्गम्, अभिषेक, कर्णभार आदि हैं।

49. का कृतिः भासविरचिता नास्ति?

- (a) प्रतिमानाटकम् (b) उरुभङ्गम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) वासवदत्ता

Ans : (d) 'वासवदत्तम्' भास विरचित नहीं है क्योंकि वासवदत्तम्
के लेखक सुबन्धु हैं। यह इनका प्रसिद्ध गद्य काव्य है।

इसमें महाराज कन्दर्पकेतु एवं वासवदत्ता की प्रणय कथा का वर्णन
है। यह गद्यत्रयी के अन्तर्गत परिगणित है। यह गद्यकाव्य गौड़ी शैली
में विरचित है जिसमें श्लेष की प्रधानता है। सुबन्धु ने स्वयं कहा है-
“प्रत्यक्षरश्लेषमय प्रबन्धविन्यासवैदग्ध्य निधिः।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः

A. नागानन्दम्	1. विष्णुशर्मा
B. गीतगोविन्दम्	2. बाणभट्टः
C. पञ्चतन्त्रम्	3. जयेदवः
D. हर्षचरितम्	4. श्रीहर्षः

A	B	C	D
(a) 3	2	4	1
(b) 4	3	1	2
(c) 1	2	3	4
(d) 1	3	2	4

Ans : (b) सही तालिका निम्न है-

नागानन्दनम्	-	श्रीहर्षः
गीतगोविन्दम्	-	जयेदवः
पञ्चतन्त्रम्	-	विष्णुशर्मा
हर्षचरितम्	-	बाणभट्ट

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2010

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. का द्युस्थानीदेवता?

- (a) सविता (b) चन्द्रमा
(c) वायुः (d) बृहस्पतिः

Ans : (a) सविता को द्युस्थानीय देवता माना गया है। द्युस्थानीय देवताओं के अन्तर्गत- उषस्, सविता, विष्णु, अश्विनौ, वरुण आदि देवताओं का स्थान सुनिश्चित किया गया है।

2. सामवेदस्य ब्राह्मणानि:

- (a) अष्टौ (b) दश
(c) चत्वारि (d) नव

Ans : (d) सामवेद के नौ ब्राह्मणों का क्रमोल्लेख मिलता है- (1) पञ्चविंश ब्राह्मण, (2) षड्विंश ब्राह्मण, (3) छान्दोग्य ब्राह्मण, (4) सामविधान ब्राह्मण, (5) आर्षेय ब्राह्मण, (6) देवताध्याय ब्राह्मण, (7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण (8) वंश ब्राह्मण, (9) जैमिनीय ब्राह्मण।

3. मैत्रायणीसंहिता कस्य वेदस्य?

- (a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (b) मैत्रायणी संहिता यजुर्वेद की संहिता है। पतञ्जलि ने 'एकशतमध्वर्युशाखा' यजुर्वेद की 100 शाखाओं की सत्ता का उल्लेख किया है।

4. छान्दोग्योपनिषद् कस्य वेदस्य?

- (a) सामवेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) यजुर्वेदस्य

Ans : (a) छान्दोग्योपनिषद् सामवेद का है। सामवेद का ही दूसरा उपनिषद् केनोपनिषद् है। केनोपनिषद् में चार खण्ड हैं। जिसके प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है। इसी प्रकार छान्दोग्योपनिषद् में आठ (8) अध्याय हैं।

5. विश्वामित्र-नदीसंवादः कस्मिन् मण्डले वर्तते?

- (a) दशममण्डले (b) अष्टमण्डले
(c) तृतीयमण्डले (d) षष्ठमण्डले

Ans : (c) विश्वामित्र नदी संवाद ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में है। यह ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है। जिसमें कुल 13 मन्त्र हैं। इस सूक्त में विश्वामित्र द्वारा शुतुद्री और विपाद् नदियों से मार्ग देने के लिए प्रार्थना की गयी है।

6. जगतीछन्दसि कत्यक्षराणि भवन्ति?

- (a) दश (b) षोडश
(c) अष्ट (d) द्वादश

Ans : (d) जगती छन्द में बारह अक्षर होते हैं। जबकि मन्दाक्रान्ता छन्द में सत्रह अक्षर होते हैं। अनुष्टुप् में चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।

7. कति भावविकाराः?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) नव (d) षट्

Ans : (d) भावविकार छः होते हैं। यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में भाव विकारों के छः प्रकार बताये हैं- जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीपते, विनश्यति, इतिमत्।

8. वाष्कलसंहिता वर्तते:

- (a) शुक्लयजुर्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) कृष्णयजुर्वेदस्य

Ans : (c) वाष्कल संहिता ऋग्वेद की है। ऋग्वेद की अन्य शाखायें हैं- शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन। ऋग्वेद में कुल 21 शाखायें प्राप्त होती हैं। लेकिन वर्तमान में मुख्यतः पाँच शाखायें ही प्राप्त हैं।

9. संहिताध्ययनानन्तरं कः पाठः विधीयते?

- (a) क्रमपाठः (b) पदपाठः
(c) जटापाठः (d) घनपाठः

Ans : (b) वेद में पाँच मुख्यपाठ होते हैं - संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ और घनपाठ। वैदिक सूक्त संग्रहानुसार जो सूक्त के मन्त्र हैं उनको संहिता पाठ कहते हैं तथा उन सूक्तों/मन्त्रों का पद निर्वचन ही पद पाठ कहलाता है। पदपाठ में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित चिह्नों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

10. वेदस्य नासिकात्वेनोपमीयते:

- (a) निरुक्तम् (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) कल्पः

Ans : (c) शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य अर्थात् घ्राण (नसिका) को शिक्षा से, 'पादौ तु छन्दः' अर्थात् पैरों को छन्द से, 'कल्पौ तु हस्तौ' अर्थात् कल्प को हस्त से तथा निरुक्त को श्रोत (कर्ण) से उपमीयमान किया गया। कारिका निम्न है-

“छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोतमुच्यते॥

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥”

11. याज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादः प्राप्यते:

- (a) बृहदारण्यकोपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) जाबालोपनिषदि (d) ऐतरेयोपनिषदि

Ans : (a) याज्ञवल्क्य मैत्रेयीसंवाद का प्रसङ्ग बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है। बृहदारण्यक शुक्लयजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद दोनों शाखाओं में प्राप्त होता है। इसमें यज्ञों के रहस्य का वर्णन किया गया है। इसमें उपनिषदों के विषय की प्रधानता होने के कारण इसे 'उपनिषद्' नाम से भी जाना जाता है।

12. अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति?

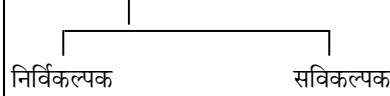
- (a) पञ्चविंशतिः (b) विंशतिः
(c) एकोनविंशतिः (d) अष्टादश

Ans : (b) अथर्ववेद में 20 काण्ड हैं। अथर्ववेद में कुल 6000 ऋचायें हैं। इसका रचनाकाल 7000-1500 ईसा पूर्व है। इसके रचनाकार अथर्वा ऋषि हैं जो अपने पूर्व जन्म में असुर हरित्य थे।
 यथा- **यस्य राज्ञो जनपदे अथर्वा शान्तिपारगः।**
निवसत्यपि तद्राष्ट्रं वधतेनिरूपद्रवम् ॥
अथर्ववेद- 1/32/3 ॥

13. निष्प्रकारकं ज्ञानं किम्?

- (a) स्मृतिः (b) अनुमितिः
 (c) प्रत्यभिज्ञा (d) निर्विकल्पकम्

Ans : (d) 'निर्विकल्पकम्' ज्ञान को निष्प्रकारक ज्ञान कहते हैं।
 ज्ञान द्विधा भवति-



14. उपमानं प्रमाणं किम्?

- (a) इन्द्रियम् (b) व्याप्तिज्ञानम्
 (c) सादृश्यज्ञानम् (d) शक्तिज्ञानम्

Ans : (c) 'सादृश्यज्ञानमुपमानम्' अर्थात् सादृश्य ज्ञान को ही उपमान प्रमाण कहते हैं। उपमान प्रमाण की सामान्य पहचान/परिभाषा है- "किसी अज्ञात वस्तु को किसी ज्ञात वस्तु की समानता के आधार पर किसी नाम से जानना उपमान कहलाता है। जैसे- नीलगाय। प्रमाण चार हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। गौतम के अनुसार इन चार प्रमाणों के अतिरिक्त मीमांसक, वेदान्ती और पौराणिक चार प्रकार के और प्रमाण मानते हैं- (1) ऐतिह्य (2) अर्थपत्ति (3) संभव (4) अभाव।

15. शब्दशक्तिः कुत्र न्यायमते?

- (a) जातौ (b) व्यक्तौ
 (c) आकृतौ (d) जात्याकृतिविशिष्टव्यक्तौ

Ans : (d) न्याय के मत में शब्दशक्ति जाति में, आकृति में, व्यक्ति में, विशिष्ट में सन्निहित रहती है। शब्द में निहित शक्ति को शब्दशक्ति कहते हैं। शब्दशक्ति को ही शब्दवृत्ति भी कहते हैं ये तीन हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।

16. वेदान्तमते कतिविधं शरीरम्?

- (a) त्रिविधम् (b) द्विविधम्
 (c) एकविधम् (d) चतुर्विधम्

Ans : (d) वेदान्तसार के मत में शरीर को चार प्रकार से बताया गया है जो इस प्रकार हैं- जरायुजाण्डजोद्भिज्जस्वेदजाख्यानि अर्थात् -जरायुज, अण्डज, उद्भिज और स्वेदज।

17. पञ्चप्राणादिवायूनां कुत उत्पत्तिः वेदान्तमते?

- (a) तामसाद् भूतांशात् (b) व्यस्ताद् राजसादंशात्
 (c) समस्ताद् राजसादंशात् (d) सात्त्विकादंशात्

Ans : (c) वेदान्तसार के मत में पञ्चप्राण वायु की उत्पत्ति समस्ताद् राजसादंशात् से हुई है। पञ्च प्राणादि वायु इस प्रकार हैं- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

18. सांख्यमते माध्यस्थ्यं कस्य स्वरूपम्?

- (a) पुरुषस्य (b) प्रधानस्य
 (c) बुद्धेः (d) अहङ्कारस्य

Ans : (a) सांख्य मत के अनुसार माध्यस्थ्य पुरुष का स्वरूप है। 'न प्रकृतिर्न विकृतिः इति पुरुषः' अर्थात् पुरुष न तो प्रकृति है और न ही विकृति। पुरुष तो त्रिगुणातीत विवेकी, विषयी, चेतन और अप्रसवधर्मी है।

19. सांख्यमते कार्यकारणसिद्धान्तः कः?

- (a) आरम्भवादः (b) परिणामवादः
 (c) संधातवादः (d) विवर्तवादः

Ans : (b) सांख्य मत में 'परिणामवाद' को कार्यकारण सिद्धान्त स्वीकार किया गया है। सांख्यशास्त्र एक यथार्थवादी दर्शन है, इसमें प्रकृति एवं पुरुष सृष्टि के विकासक्रम तथा कार्यकारणवाद का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।

20. कैवल्यं सांख्यमते कतिविधम्?

- (a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्
 (c) एकविधम् (d) बहुविधम्

Ans : (a) सांख्यमत में कैवल्य को दो प्रकार से बताया गया है। सांख्यशास्त्र में विविधदुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति को कैवल्य माना है और विवेक को उसका एकभाव साधन बतलाया है। जबकि वेदान्त में अद्वितीय ब्रह्मभाव की प्राप्ति को कैवल्य माना है और अविधा की निरोध को इसका साधन ठहराया है। न्याय में दुःख की अत्यन्त विमुक्ति को कैवल्य या अपवर्ग कहा और उसका साधन प्रमादि षोडश पदार्थों का तत्त्वज्ञान बतलाया है।

21. साध्याभावव्याप्तौ हेत्वाभासः कः?

- (a) बाधितविषयः (b) सत्प्रतिपक्षः
 (c) साधारणः (d) विरुद्धः

Ans : (d) 'साध्याभावव्याप्तौ इति सत्प्रतिपक्षः हेत्वाभासः' अर्थात् साध्याभाव व्याप्ति ही सत्प्रतिपक्ष नामक हेत्वाभास है।

22. अज्ञानं किं रूपम्?

- (a) भावरूपम् (b) अभावरूपम्
 (c) भावाऽभावरूपम् (d) अनुभावरूपम्

Ans : (a) 'अज्ञानं भावरूपम्' अर्थात् अज्ञान को भावरूप कहा गया है। अज्ञान के बारे में वेदान्त सार में कहा गया है- "अज्ञानं तु सदसदध्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात्।

23. उपधा-सञ्ज्ञा केन सूत्रेण?

- (a) परः सन्निकर्षः (b) हलोऽनन्तराः
 (c) कृतद्धितसमासाश्च (d) अलोऽन्यात् पूर्व

Ans : (d) उपधा सञ्ज्ञा विधायक सूत्र है- "अलोऽन्यात्पूर्व उपधा" अर्थात् अन्तिम 'अल्' के ठीक पहले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। जैसे- राम में र् + आ + म् + अ विच्छेद करने पर 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।

24. हलोऽनन्तराः इति सूत्रेण का सञ्ज्ञा?

- (a) संहिता (b) उपसर्गः
 (c) लघुसंज्ञा (d) संयोगः

Ans : (d) 'हलोऽनन्तराः संयोगः' इति। यह सूत्र संयोग सञ्ज्ञा का विधान करता है। जबकि संहिता सञ्ज्ञा का विधायक सूत्र है- परःसन्निकर्षःसंहिता।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

25. कर्मधारयसमासविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) सह सुपा (b) अनेकमन्यपदार्थे
(c) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् (d) अर्थं नपुसकम्

Ans : (c) कर्मधारय तत्पुरुष का ही भेद है। कर्मधारय समास का विधिसूत्र है- “विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।” अर्थात् जहाँ पर पदवाची विशेषण की विशेषता बहुलता से हो वहाँ कर्मधारय समास निहित रहता है। यथा- पीतफलम्, नीलकमलम् आदि।

26. वीरपुरुषको ग्रामः इत्यत्र कः समासः?

- (a) अव्ययीभावः (b) बहुव्रीहिः
(c) तत्पुरुषः (d) द्वन्द्वः

Ans : (c) ‘वीरपुरुषको ग्रामः’ इस सम्पूर्ण पद में षष्ठी तत्पुरुष समास होगा। जिसका विग्रह पद बनेगा- वीरपुरुषाणां ग्रामः (वीरपुरुषों का गाँव)। लेकिन यदि सिर्फ ‘वीरपुरुष’ पद में समास करें तो वहाँ बहुव्रीहि समास हो जायेगा- वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः।

27. ‘श्रीः’ इत्यत्र कस्मिन्नर्थे प्रथमा?

- (a) प्रातिपदिकार्थमात्रे (b) परिमाणमात्रे
(c) लिङ्गमात्रे (d) वचनमात्रे

Ans : (a) श्री इस पद में प्रातिपदिक मात्र में प्रथमा है। क्योंकि- “प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रेप्रथमा” सूत्र के अनुसार ‘श्रीः’ पद यहाँ प्रातिपदिक है। ‘नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः।

28. अनुक्ते कर्मणि का विभक्तिः?

- (a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) प्रथमा (d) चतुर्थी

Ans : (a) अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जबकि उक्त कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। ‘उक्ते कर्तरि प्रथमा स्यात्’ (उक्त कर्ता में प्रथमा) विभक्ति होती है। जबकि ‘अनुक्तेकर्मणि द्वितीया स्यात्’।

29. ‘आख्यातोपयोगे’ इत्यनेन किं विधीयते?

- (a) अपादानसंज्ञा (b) सम्प्रदानसंज्ञा
(c) अधिकरणसंज्ञा (d) कर्मसंज्ञा

Ans : (a) ‘आख्यातोपयोगे’ सूत्र अपादान कारक के अन्तर्गत विवक्षित है। ‘आख्यातोपयोगे’ सूत्र कहता है कि जिससे विद्या नियमपूर्वक पढ़ी जाये वे गुरु/अध्यापक आदि अपादानिक होते हैं और उनमें अपादान सञ्ज्ञा का विधान कर दिया जाता है। यथा- उपाध्यायात् अधीते। मया तीर्थात् अभिनयविद्या शिक्षिता।

30. स्वाहा-शब्दयोगे का विभक्तिः?

- (a) पञ्चमी (b) चतुर्थी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

Ans : (b) ‘स्वाहा’ शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। सूत्र है- नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्चतुर्थी जैसे- अग्नये स्वाहा (अग्नि के लिए आहुति)।

31. ‘कर्तृकर्मणोः कृति’ इति सूत्रेण किं विधीयते?

- (a) चतुर्थी (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) षष्ठी

Ans : (d) ‘कर्तृकर्मणोः कृति’ सूत्र षष्ठी विभक्ति का विधान करता है। कृदन्त शब्दों से कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- शिशोः रोदनं। राज्यस्य प्राप्तिः। राक्षसानां घातः।

32. आधारः कतिविधः?

- (a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चविधः (d) षड्विधः

Ans : (a) ‘आधारोऽधिकरणम्’ सूत्र से ‘आधार’ की अधिकरण सञ्ज्ञा होती है। आधार को तीन भागों में बाँटा गया है- (1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक (3) अभिव्यापक।

33. ‘रीतिरात्मा काव्यस्य’ इति कस्य मतम्?

- (a) रुद्रटस्य (b) भामहस्य
(c) वामनस्य (d) उद्भटस्य

Ans : (c) ‘रीतिरात्मा काव्यस्य’ ‘काव्य को रीति की आत्मा’ ऐसा वामन का मत है।

34. ‘प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता’ इति केनोक्तम्?

- (a) भट्टतौतेन (b) अभिनवगुप्तेन
(c) भट्टनायकेन (d) महिमभट्टेन

Ans : (b) ‘प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता’ यह कथन अभिनवगुप्त का है। इन्होंने कवि की प्रतिभा के सन्दर्भ में यह लक्षण दिया है। अर्थात् कवि को नवीन-नवीन बुद्धि का ज्ञान प्राप्ति ही उसकी प्रतिभा है।

35. आनन्दवर्धनः कस्य सभापण्डित आसीत्?

- (a) अशोकस्य (b) शाहजहाँनस्य
(c) अवन्तिवर्मणः (d) औसफ् अलेः

Ans : (c) आनन्दवर्धन राजा ‘अवन्तिवर्मण’ के सभापण्डित थे। आनन्दवर्धन काव्यशास्त्र में ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। इनका ग्रन्थ ‘ध्वन्यालोक’ है। आचार्य आनन्दवर्धन ‘कश्मीर’ के निवासी थे और ये तत्कालीन कश्मीर नरेश ‘अवन्तिवर्मण’ के समकालीन थे। इस सम्बन्ध में महाकवि कल्हण ‘राजतरङ्गिणी’ में लिखते हैं-

मुक्ताकणः शिवस्वामी कविरानन्दवर्धनः।

प्रथां रत्नाकराश्चागात् साम्राज्येऽवन्तिवर्मणः॥

36. कविकुलगुरुः कः?

- (a) माघः (b) कालिदासः
(c) अश्वघोषः (d) भारविः

Ans : (b) कविकुलगुरुः शिरोमणि, महाकवि आदि उपाधियाँ कालिदास के लिए हैं। महाकवि कालिदास को संस्कृत कवियों में कुलगुरु के नाम से पुकारा जाता है।

37. लोचनं कस्य ग्रन्थस्य व्याख्यानम् अस्ति?

- (a) नाट्यशास्त्रस्य (b) काव्यादर्शस्य
(c) ध्वन्यालोकस्य (d) काव्यालङ्कारस्य

Ans : (c) लोचन नाम की एक टीका है जो ‘ध्वन्यालोक’ नामक ग्रन्थ का व्याख्यान करती है। ध्वन्यालोक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो आनन्दवर्धन द्वारा विरचित है।

38. नाटके कति सन्धयः सन्ति?

- (a) द्वौ (b) त्रयः
(c) नव (d) पञ्च

Ans : (d) नाटक में पाँच सन्धियाँ हैं- मुखसन्धि, प्रतिमुखसन्धि, गर्भसन्धि, अवमर्शसन्धि, विमर्शसन्धि। नाटक में पाँच अर्थप्रकृतियाँ हैं- बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य। इसी प्रकार नाटक में पाँच अवस्थाएँ भी हैं- आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

39. माधुर्यगुणस्य कस्मिन् रसे प्रकर्षः वर्तते?

- (a) शृङ्गारे (b) करुणे
(c) हास्ये (d) वीरे

Ans : (a) माधुर्यगुण शृङ्गार रस में प्रकर्षित होता है। शृङ्गार रस का स्थायी भाव रति है जो माधुर्य गुण का वाचक है। इसी प्रकार करुण रस का स्थायी भाव शोक है, हास्य रस का स्थायी भाव हास तथा वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। साहित्य में रसों के अन्तर्गत निहित तीन गुण ही हैं- माधुर्य गुण, ओज गुण, और प्रसाद गुण।

40. वीभत्सरसस्य स्थायीभावः कः?

- (a) भयम् (b) जुगुप्सा
(c) उत्साहः (d) विस्मयः

Ans : (b) वीभत्स रस का स्थायी भाव 'जुगुप्सा' है। जबकि भयानक रस का स्थायीभाव भय है, वीर रस का स्थायीभाव उत्साह तथा अद्भुत रस का स्थायीभाव- विस्मय है।

41. 'स वाक्य एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्' इत्यत्र 'स' इत्यस्य कोऽर्थः?

- (a) निदर्शना (b) समासोक्तिः
(c) श्लेषः (d) रूपकम्

Ans : (c) 'स वाक्य एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्' यहाँ पर 'स' पद 'श्लेष' के अर्थ का अवबोधक है। श्लेष अलङ्कार शब्दालङ्कार के अन्तर्गत परिगणित है। श्लेष की परिभाषा इस प्रकार है।

“श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेषः इष्यते”।

उदाहरणम् - पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।

विलसत्क्रेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥

42. 'अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्ताम्' अत्र छन्दः किम्?

- (a) वियुन्माला (b) मन्दाक्रान्ता
(c) अनुष्टुप् (d) शिखरिणी

Ans : (b) 'अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्ताम्' यहाँ पर 'मन्दाक्रान्ता' छन्द है। मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, और दो गुरू वर्णों पर यति होती है। यथा- 'मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मौ भनौ तौ ग-युग्मम्'

43. लोके यानि कारणानि तानि काव्ये नाटके च केन नाम्ना व्यपदिश्यन्ते?

- (a) भावाः (b) अनुभावाः
(c) सञ्चारिणः (d) विभावाः

Ans : (d) 'लोके यानि कारणानि तानि काव्ये नाटके च' उपर्युक्त सूक्त्याङ्ग 'विभाव' को स्पष्ट करती है।

44. नाटके न्यूनतमाः अङ्काः कति?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) अष्ट (d) नव

Ans : (a) नाटक में न्यूनतम अङ्क पाँच होने चाहिए जबकि अधिकतम 10 अङ्क होने चाहिए। यह बात निम्न पंक्ति स्पष्ट करती है-

(1) नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम् ।

विलासद्वयार्थादिगुणवद्युक्तं नाना विभूतिभिः ॥

(2) सुखदुःखसमुद्भूति नाना रसनिरन्तरम् ।

पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्का परिकीर्तिताः ॥

45. 'सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' इत्यत्र 'सा' का?

- (a) निपुणता (b) अभ्यासः
(c) भावना (d) प्रतिभा

Ans : (d) 'सा च काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' इस पंक्ति में 'सा' प्रतिभा के लिए अर्थद्योतिक एवं साङ्केतिक है। प्रतिभा के बारे में कहा गया है।

“प्रज्ञानवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता- अभिनव गुप्त

46. काव्ये रसे येऽङ्गिनर्थमवलम्बन्ते ते के?

- (a) संघटनाः (b) गुणाः
(c) अलङ्काराः (d) भावाः

Ans : (b) काव्य रस में जो अङ्गिन के अर्थ का अवलम्बन करें, वे 'गुण' कहलाते हैं।

47. उरुभङ्गे नायकः कः?

- (a) दुर्योधनः (b) भीमः
(c) धृतराष्ट्रः (d) श्रीकृष्णः

Ans : (b) उरुभङ्ग नामक ग्रन्थ का नायक 'भीम' है। यह भास के 13 नाटकों में प्रमुख नाटक ग्रन्थ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ क्रम निम्न है-

(1) स्वप्नवासवदत्तम् (2) प्रतिज्ञायौगंधरायणम् (3) चारुदत्तम् (4) अविमारकम् (5) प्रतिमानाटक (6) अभिषेकनाटक (7) बालचरितम् (8) पञ्चरात्रम् (9) मध्यमव्यायोग (10) दूतवाक्यम् (11) दूतघटोत्कच (12) कर्णभारम् (13) उरुभङ्गम् ।

48. 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' इति कुत्र वर्तते?

- (a) रघुवंशे (b) शाकुन्तले
(c) मेघदूते (d) कुमारसम्भवे

Ans : (d) 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' यह एक प्रमुख सूक्ति है जिसका वर्णन 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में कल्पित है। जिसके रचयिता कविकुलगुरु 'कालिदास' हैं।

49. करुणरसस्य स्थायीभावः कः?

- (a) क्रोधः (b) भयम्
(c) शोकः (d) शमः

Ans : (c) करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' है। करुण रस के अश्रुपात, परिवेदना, मुखषोशना, वैवरन्य, स्वरभेद, निश्वास और स्मृतिलोप आदि इसके निर्धारक तत्त्व हैं जबकि निर्वेद, ग्लानि, उत्सुकता, आवेग, मोह आदि इसके क्षणभङ्गुर भावनायें हैं।

50. काव्यप्रकाशे कति उल्लासाः सन्ति?

- (a) सप्त (b) दश
(c) एकादश (d) पञ्च

Ans : (b) काव्य प्रकाश में दश उल्लास हैं।

काव्य प्रकाश मम्मट विरचित है। जिसमें काव्य के तत्त्वों जैसे- रस, अलङ्कार आदि पर वृहद् व्याख्या की गयी है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2011

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. विष्णुसूक्तस्य ऋषिरस्ति।

- (a) दीर्घतमा (b) हिरण्यस्तूपः
(c) गृत्समदः (d) हिरण्यगर्भः

Ans : (a) विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं इनका 5 सूक्तों में वर्णन किया गया है, विष्णु सूक्त के ऋषि दीर्घतमा हैं इसमें 6 मन्त्र हैं। विष्णु के लिए त्रिविक्रम शब्द का भी प्रयोग किया गया है।

2. “त्रेधा निदधे पदम्” इति केन सह सम्बध्यते?

- (a) इन्द्रसूक्तेन (b) रुद्रसूक्तेन
(c) विष्णुसूक्तेन (d) उषस्सूक्तेन

Ans : (c) “त्रेधा निदधे पदम्” यह विष्णु सूक्त से सम्बन्धित है- विष्णु एक द्युस्थानीय देवता है इनका 5 सूक्तों में गुणगान किया गया है, इसके देवता विष्णु एवं ऋषि दीर्घतमा हैं इसमें 6 मन्त्र हैं। विष्णु के लिए त्रिविक्रम शब्द का भी प्रयोग किया गया है।

3. “चरैवेति” इति वाक्यांशेऽस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति।

- (a) शतपथब्राह्मणे (b) गोपथब्राह्मणे
(c) तैत्तिरीयब्राह्मणे (d) ऐतरेयब्राह्मणे

Ans : (d) “चरैवेति- चरैवेति” यह वाक्यांश ऋग्वेद के ऐतरेयब्राह्मण से सम्बद्ध है।

वेद के चार भाग हैं- संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्। जिसमें से ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-

(1) ऐतरेय ब्राह्मण (2) शांखायनब्राह्मण।

4. अधोऽङ्कितानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

- (A) ब्रह्मचारीसूक्तम् 1. प्राणम्
(B) मैत्रायणी आरण्यकम् 2. अथर्ववेदः
(C) अथेदं भस्मान्तं शरीरं 3. कृष्णयजुर्वेदः
(D) शिक्षा 4. ईशावास्योपनिषद्

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 2	4	1	3
(b) 3	2	1	4
(c) 3	2	4	1
(d) 2	3	4	1

Ans : (d) समीचीन तालिका इस प्रकार है-

- (A) ब्रह्मचारीसूक्तम् - अथर्ववेदः
(B) मैत्रायणी आरण्यकम् - कृष्णयजुर्वेदः
(C) अथेदं भस्मान्तं शरीरं - ईशावास्योपनिषद्
(D) शिक्षा - प्राणम्

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां तालिकां विचिनुत।

- (A) मातृदेवो भव 1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(B) असतो मा सद् गमय 2. तैत्तिरीयोपनिषद्
(C) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाय 3. छान्दोग्योपनिषद्
(D) तत्त्वमसि 4. मुण्डकोपनिषद्
- | (A) | (B) | (C) | (D) |
|-------|-----|-----|-----|
| (a) 2 | 1 | 4 | 3 |
| (b) 1 | 2 | 4 | 3 |
| (c) 4 | 2 | 3 | 1 |
| (d) 1 | 3 | 2 | 4 |

Ans : (a) दिये गये युग्मों में सही तालिका इस प्रकार है-

- मातृदेवो भव - तैत्तिरीयोपनिषद्
असतो मा सद् गमय - बृहदारण्यकोपनिषद्
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाय- मुण्डकोपनिषद्
तत्त्वमसि - छान्दोग्योपनिषद्

6. महर्षि दयानन्दोऽस्य भाष्यकारोऽस्ति।

- (a) अथर्ववेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) शतपथब्राह्मणस्य

Ans : (c) महर्षि दयानन्द वेद को अपौरुषेय स्वीकार करते हैं उनके मतानुसार वेद किसी पुरुष द्वारा रचा नहीं गया है, जबकि मैक्समूलर ने “छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः प्रतिपादयति” यह विचार प्रतिपादित किया। ये यजुर्वेद के भाष्यकार हैं।

7. वेदस्य मुखं किमस्ति?

- (a) निरुक्तम् (b) शिक्षा
(c) व्याकरणम् (d) साहित्यम्

Ans : (c) वेदस्य मुखं व्याकरणमस्ति अर्थात् व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है। इस विषय में एक श्लोक द्रष्टव्य है -

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोकेमहीयते।।

8. किं सत्यमस्ति?

- (a) श्रीमद्भगवद्गीता अस्ति ऋग्वेदस्य आदिम सूक्तस्य व्याख्या
(b) प्रातिशाख्यस्य लेखकोऽस्ति पाणिनिः
(c) यजुर्वेदे सन्ति विंशति अध्यायाः
(d) वेदभाष्यकारोऽस्ति आचार्यः सायणः

Ans : (d) सायण आचार्य वेद के प्राचीन भाष्यकार थे उन्होंने सर्वप्रथम यजुर्वेद की व्याख्या की। इन्होंने यजुर्वेद के दो विभाग किए हैं- (i) शुक्लयजुर्वेद (ii) कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की शाखा-वाजसनेयिशाखा एवं काण्व हैं जबकि कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय, मैत्रायणी कठ और कपिष्ठल हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

9. “माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः” इति वचनमस्ति

- (a) ऋग्वेदे (b) सामवेदे
(c) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (d) अथर्ववेदे

Ans : (d) पृथ्वी सूक्त अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है इसके ऋषि ‘अथर्व’ तथा देवता भूमि या पृथ्वी हैं इसमें मन्त्रों की संख्या 63 है इसमें भूमि को माता की संज्ञा दी गई है-
“माता भूमि ! पुत्रोऽहं पृथिव्याः”

10. किं सत्यमस्ति?

- (a) शुनःशेष-आख्यानमस्ति-कौषीतकिब्राह्मणे
(b) नचिकेतसः कथा अस्ति-ऋग्वेदे
(c) कर्मकाण्डं चर्चितम्- आरण्यकेषु
(d) ऋग्वेदस्य प्रथमशब्दोऽस्ति-‘अग्निम्’

Ans : (d) दिये गये विकल्पों में से विकल्प (d) सही है क्योंकि ऋग्वेद में अग्नि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किया गया है।

11. “ऊहः खल्वपि” इति प्रयोजनमस्ति

- (a) कल्पवेदाङ्गस्य
(b) ज्योतिषवेदाङ्गस्य
(c) निरुवतवेदाङ्गस्य
(d) व्याकरणवेदाङ्गस्य

Ans : (d) पतञ्जलि के महाभाष्य में 5 प्रयोजन बताए गये हैं।
(1) रक्षा (2) ऊह (3) आगम (4) लघु (5) असन्देह (“न सर्वैलिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिता”) यह ऊह नामक प्रयोजन का लक्षण है।

12. वेदकालव्य निर्धारणं भारतीय ज्योतिष परम्परा परिपालिता

- (a) बालगङ्गाधरतिलकमहोदयेन
(b) महर्षिदयानन्देन
(c) एम.विन्टरनिट्जमहोदयेन
(d) महर्षिरमणेन

Ans : (a) वैदिक काल का निर्धारण बालगङ्गाधरतिलक ने 4000-2500 ई.पू. माना है। उन्होंने ज्योतिष के आधार पर ही वैदिक काल का निर्धारण माना है। वे नक्षत्र सम्पात गणना के आधार पर वैदिक काल का निर्धारण किये हैं।

13. किं सत्यमस्ति ?

- (a) महर्षि दयानन्दः - अथर्ववेदभाष्यकारः
(b) महर्षि रमणः - ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः
(c) यास्कः - प्रातिशाख्यकारः
(d) पिङ्गलः - छन्दशास्त्रकारः

Ans : (d) दिए गये विकल्पों में विकल्प D सही है आचार्य पिङ्गल छन्दशास्त्रकार हैं।
छन्द को वेद का पाद (पैर) स्वीकार किया गया है। “छन्दः पादौ तु वेदस्य”।

महत्त्वपूर्ण छन्द एवं अक्षर-

जगती	-	48 अक्षर
गायत्री	-	24 अक्षर
अनुष्टुप्	-	32 अक्षर

14. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत।

(A) प्रभाकरः	1. अन्यथाख्यातिः
(B) शङ्करः	2. अख्यातिः
(C) कुमारिलः	3. अनिर्वचनीयख्यातिः
(D) गौतमः	4. विपरीतख्यातिः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 1	2	3	4
(b) 2	3	4	1
(c) 3	4	2	1
(d) 4	2	3	1

Ans : (b) समीचीन तालिका इस प्रकार है-

प्रभाकरः - अख्यातिः
शङ्करः - अनिर्वचनीय ख्यातिः
कुमारिल - विपरीतख्यातिः
गौतमः - अन्यथाख्याति

15. कारणैकार्यपत्यासत्या को जनकः ?

- (a) घटं प्रति कपालः
(b) घटं प्रति दण्डः
(c) घटरूपं प्रति कपालरूपम्
(d) घटं प्रति कपालम्

Ans : (c) कारणैकार्यपत्यासत्या घटरूपं प्रति कपालरूपं जनकः।
नोट- कारण कार्य के उत्पन्न होने में उस कार्य का जनक होता है।
यथा- घट का रूप अपने कपाल के प्रति असमवायि कारण है।
(घटरूपं प्रति कपालरूपम् असमवायिकारणम्)।

16. सांख्ये सर्गः कति विधो भवति?

- (a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) अष्टविधः

Ans : (b) सांख्य में बुद्धि सर्ग चार प्रकार के बताए गये हैं।
(1) विपर्यय (5भेद) (2) अशक्ति (28भेद)
(3) तुष्टि (9 भेद) (4) सिद्धि (8 भेद)

17. ज्ञाततापदार्थ केन स्वीकृतः?

- (a) नैयायिकेन (b) वैशेषिकेन
(c) भाट्टमीमांसकेन (d) प्राभाकरमीमांसकेन

Ans : (c) सप्तपदार्थ वैशेषिक दर्शन में ये हैं-

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव जबकि पदार्थ 9 होते हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन्।
स्रोत-श्रीनिवास शास्त्री-तर्कभाषा पृष्ठ संख्या-160

18. असमवायिकारणनाशात् कस्य नाशे भवति?

- (a) द्रव्यस्य (b) गुणस्य
(c) कर्मणः (d) न कस्यापि

Ans : (a) असमवायिकारणनाशात् द्रव्यस्य नाशे भवति अर्थात् असमवायिकारण के नाश होने से द्रव्य का नाश होता है। कारण तीन माने गये हैं- समवायि, असमवायि एवं निमित्त।

19. त्रिवृत्करणं केषां भूतानां प्रतिपादितम्।

- (a) पृथ्वीजल तेजसाम् (b) आकाशवायु तेजसाम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (c) जलतेजवायूनाम (d) पृथ्वीजलवायूनाम

Ans : (a) त्रिवृत्करणं पृथ्वीजलतेजसां भूतानां प्रतिपादितम्।
अर्थात् त्रिवृत्करण में पृथ्वी, जल और तेज नामक महाभूतों का प्रतिपादन किया जाता है।

20. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत।

(A) आरम्भवादः	1. सांख्यानम्
(B) परिणामवादः	2. नैयायिकानाम्
(C) विवर्तवादः	3. अद्वैतवेदान्तिनाम्
(D) विज्ञानवादः	4. बौद्धानाम्

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 3	2	1	4
(b) 2	1	3	4
(c) 2	4	3	1
(d) 1	2	3	4

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-
आरम्भवादः - नैयायिकानाम्
परिणामवादः - सांख्यानम्
विवर्तवादः - अद्वैतवेदान्तिनाम्
विज्ञानवादः - बौद्धानाम्

21. ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं को न स्वीकरोति?

- (a) नैयायिकः (b) प्रभाकरमीमांसकः
(c) भट्टमीमांसकः (d) मुरारीमिश्रः

Ans : (a) ज्ञानस्य प्रत्यक्षत्वं नैयायिकः न स्वीकरोति अर्थात् नैयायिक (न्यायदर्शन को मानने वाले) ज्ञान के प्रत्यक्ष को स्वीकार नहीं करते वे चार प्रकार के प्रमाण को मानते हैं।

22. न्यायमते पदार्थत्वं किमस्ति?

- (a) जातिः (b) अखण्डोपाधिः
(c) सखण्डोपाधिः (d) पदार्थान्तरम्

Ans : (a) न्यायमते पदार्थत्वं जातिः।
अर्थात् न्याय दर्शन के अनुसार सप्त पदार्थों में सामान्य को ही जाति की संज्ञा दी गई है।

23. “उपरतिः” इत्यस्य कोऽर्थः

- (a) इन्द्रियाणां निग्रहः
(b) मनसोनिग्रहः
(c) निगृहीतस्य मनसः श्रवणादो स्थिरता
(d) निगृहीतानां इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः

Ans : (d) साधनचतुष्टय के सन्दर्भ में आये शमादिषट्क में उपरति का लक्षण ग्रन्थकार सदानन्द योगीन्द्र ने “निगृहीतानाम् इन्द्रियाणां विषयाकर्षणाभावः अथवा विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः” किया है। अर्थात् इन्द्रियों पर निग्रह करना ही उपरति है।

24. कः जीवन्मुक्ति न स्वीकरोति?

- (a) नैयायिकः (b) मीमांसकः
(c) सांख्यः (d) अद्वैतवेदान्ती

Ans : (b) मीमांसकः जीवन्मुक्ति न स्वीकरोति। जबकि दिए गये विकल्पों में सांख्य कैवल्य को मानता है। वेदान्त जीवन्मुक्ति या विदेहमुक्ति को मानता है न्याय भी कैवल्य या मोक्ष को मानता है।

25. अधोनिर्दिष्टेषु किमसत्यमस्ति?

- (a) जीवन्मुक्तिरेव विदेहमुक्ति
(b) इच्छाशक्तिमान् करणरूपः मनोमयकोशः
(c) सांख्यमते दशेन्द्रियाणि भवन्ति
(d) वस्तुनि अवस्तु आरोपः अध्यारोपः

Ans : (c) दिये गये विकल्पों में c असत्य है, क्योंकि सांख्य में 10 इन्द्रियाँ नहीं बल्कि 11 इन्द्रियों (5 ज्ञानेन्द्रियां + 5 कर्मेन्द्रियां + 1 मन) का समूह प्राप्त होता है।

26. कस्य प्रातिपदिकसंज्ञा भवितुमर्हति

- (a) कृष्ण + अम् + श्रित + सु
(b) भू + अ + ति
(c) हरि + डि
(d) यज्

Ans : (a) कृष्ण अम् श्रित सु” की कृतद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होगी। कृष्णश्रितः का लौकिक विग्रह कृष्णं श्रितः एवं अलौकिक विग्रह कृष्ण अम् श्रित सु होगा। यह द्वितीया तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

27. ‘अग्निचित्’ इत्यत्र उपधासंज्ञा अस्ति

- (a) ‘इत्’ समुदायस्य (b) ‘चित्’ समुदायस्य
(c) ‘त’ वर्णस्य (d) ‘इ’ वर्णस्य

Ans : (d) “अग्निचित्” इसमें ‘इ’ वर्ण की उपधा संज्ञा होगी।
नोट- “अलोन्त्यात्पूर्वं उपधा” सूत्र से अन्तिम अल् (प्रत्याहार) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

28. ‘पशुना रुद्रं यजते’ - इत्यत्र ‘पशुना’ पदे या तृतीया, सा कस्मिन् कारकेऽस्ति-

- (a) करणकारके (b) सम्प्रदानकारके
(c) कर्मकारके (d) कर्तृकारके

Ans : (a) “पशुना रुद्रं यजते” यहाँ पशुना पद में तृतीया विभक्ति एवं करण कारक का प्रयोग हुआ है। यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा (वार्तिक) से पशु शब्द कि करणसंज्ञा हुई और कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से उसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
“साधकतमं करणम्”- क्रिया सिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करण संज्ञं स्यात्।
स्रोत-राममुनि पाण्डेय, पेज. नं. 147 (कारक प्रकरण)

29. ‘पुष्पाणि स्पृहयन्ति’ - इत्यत्र ‘पुष्पाणि’ इत्यस्य कर्मसंज्ञा भवति-

- (a) ईप्सितत्वात् (b) ईप्सिततमत्वात्
(c) स्पृहधातोः प्रयोगात् (d) प्रकर्षाभावात्

Ans : (b) पुष्पाणि स्पृहयन्ति” यहाँ ‘पुष्पाणि’ की कर्म संज्ञा ईप्सिततम् होने के कारण हुई है।
‘कर्तुरीप्सिततमं कर्म के अनुसार कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है, उसकी कर्म सञ्ज्ञा होती है तथा ‘कर्मणि द्वितीया’ सूत्र से उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

30. अव्ययीभावसंज्ञायाः फलं किम्?

- (a) अव्ययसंज्ञा (b) प्रातिपदिकसंज्ञा
(c) सुपःलुक् (d) सुप्रत्ययानां प्राप्तिः

Ans : (a) अव्ययीभावसंज्ञायाः फलं अव्यय संज्ञा अस्ति। अर्थात् अव्ययीभाव संज्ञा का फल अव्यय संज्ञा होता है।

स्रोत- लघुसिद्धांत कौमुदी, भैमी व्याख्या भाग-4 पृष्ठ संख्या-110

31. 'सुमद्रम्' अत्र 'सु' अव्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते?

- (a) सुन्दरम् इत्यस्मिन् अर्थे
(b) 'सुष्ठु' इत्यस्मिन् अर्थे
(c) 'समृद्धिः' इत्यस्मिन् अर्थे
(d) 'समीपम्' इत्यस्मिन् अर्थे

Ans : (c) 'सुमद्रम्' यहाँ सु प्रत्यय समृद्धि अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसमें सु अव्यय का "मद्राणाम्" इस सुबन्त के साथ समास होकर अव्ययीभाव समास बनता है।

32. 'स नपुंसकम्' इत्यनेन सूत्रेण नपुंसकत्वं भवति

- (a) अव्ययीभावसमासे (b) बहुव्रीहिसमासे
(c) कर्मधारयसमासे (d) समाहार द्विगुसमासे

Ans : (d) "स नपुंसकम्" अर्थात् समाहार अर्थ में द्विगु और द्वन्द्व समास नपुंसकलिङ्ग में हो। इसके पूर्ववर्ती सूत्र "द्विगुरेकवचनम्" से द्विगु समास समाहार अर्थ में एकवचन में होता है। यथा-पञ्चगवम्।

33. विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः समासः नाम-

- (a) नित्यसमासः (b) केवलसमासः
(c) तत्पुरुषसमासः (d) अनित्यसमासः

Ans : (b) विशेष संज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः। अर्थात् संज्ञा विशेष से रहित समास केवल समास कहलाता है। अथवा जिस समास का कोई विशेष नाम नहीं कहा गया, उसे केवल समास कहते हैं, यह समास का पहला प्रकार है। जैसे - भूतपूर्वः

34. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां विचिनुत

(A) उपधा	1. सम्प्रदानम्
(B) रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे	2. अलोऽन्त्यात् पूर्व
(C) अक्षणा काणः	3. कर्मकारकम्
(D) अधिशीङ् योगे	4. येनाङ्गविकारः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 1	3	4	2
(b) 3	1	2	4
(c) 2	4	1	3
(d) 2	1	4	3

Ans : (d) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

उपधा-	अलोऽन्त्यात् पूर्व
रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे -	सम्प्रदानम्
अक्षणा काणः -	येनाङ्गविकारः
अधिशीङ् योगे -	कर्मकारकम्

35. कादयो मावसाना वर्णाः भवन्ति

- (a) अन्तस्थाः
(b) स्पर्शाः
(c) ऊष्माणः
(d) जिह्वामूलीयाः

Ans : (b) आभ्यन्तर प्रयत्न-स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषदविवृत, विवृत तथा संवृत के भेद से 5 प्रकार का होता है। इसमें से स्पृष्ट -'स्पृष्ट प्रयत्नं स्पर्शानाम्' क् से म् पर्यन्त वर्णों का उच्चारण, स्पृष्ट ध्वनि कहलाती है।

36. एते वर्णास्तालुस्थानीयाः सन्ति

- (a) इ उ ऋ लृ (b) अ क ह विसर्ग
(c) इ च् य् श् (d) ऋ ट र ष

Ans : (c) "इच्युशानां तालुः" अर्थात् इ, च्, छ्, ज्, झ्, ज्ञ्, य् और श् का उच्चारण स्थान तालु है।

37. अयोगात्मक भाषासु न भवन्ति-

- (a) उपसर्गाः (b) क्रियाः
(c) कारकाणि (d) लिङ्गानि

Ans : (a) विश्व की भाषाओं का दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया है- (1) आकृतिमूलक (2) पारिवारिक मूलक। इसमें से आकृतिमूलक दो प्रकार के हैं। (1) योगात्मक (2) अयोगात्मक अयोगात्मक भाषा कारक क्रिया और लिङ्ग के योग से बनते हैं उपसर्ग इसके अन्तर्गत नहीं आते।

38. रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे दिलीपस्य गोसेवा वर्णिता?

- (a) प्रथमे (b) द्वितीये
(c) तृतीये (d) चतुर्थे

Ans : (b) रघुवंशमहाकाव्यम् महाकवि कालिदास की रचना है। यह 19 सर्गों में विभक्त है। इसके द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप और सुदक्षिणा द्वारा कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा का वर्णन है।

39. रघुः किन्नामकं यज्ञं चकार?

- (a) राजसूयम् (b) विश्वजित्
(c) अश्वमेधः (d) पुत्रेष्टिः

Ans : (b) रघुवंशमहाकाव्यम् की कथा का प्रारम्भ सूर्यवंशी राजा दिलीप के वर्णन और अवसान राजा अग्निवर्ण से होता है। इस महाकाव्य के तृतीय सर्ग में रघु की उत्पत्ति तथा रघु द्वारा किये गये विश्वजित् यज्ञ का वर्णन है।

40. खण्डकाव्यमस्ति

- (a) दशकुमारचरितम् (b) नलचम्पू
(c) मेघदूतम् (d) किरातार्जुनीयम्

Ans : (c) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् एक खण्डकाव्य है यह लघुवर्गी के अन्तर्गत परिगणित है। इसमें लगभग 121 पद्यों में विरही पक्ष की मनोव्यथा का वर्णन है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

41. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदं भवति

- (a) लक्ष्मी: (b) विभु:
(c) शिव: (d) श्री:

Ans : (a) 'किरातार्जुनीयम्' महाकवि भारवि का प्रसिद्ध महाकाव्य है। जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। यह 18 सर्गों में विभक्त है। इसके प्रत्येक सर्ग के अन्तिम पद में लक्ष्मी शब्द का उल्लेख है।

42. 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'

इयमुक्तिर्वर्तते-

- (a) किरातार्जुनीये (b) शिशुपालवधे
(c) नैषधीयचरिते (d) कुमारसम्भवे

Ans : (b) 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' यह उक्ति शिशुपालवधम् की है। यह एक प्रसिद्ध महाकाव्य है जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। इसकी कथा महाभारत के सभा पर्व से उद्धृत है।

43. सत्यं किमस्ति?

- (a) हर्षचरितं कथा वर्तते
(b) हर्षचरितम् आख्यायिका वर्तते
(c) हर्षचरितं चम्पू वर्तते
(d) हर्षचरितं महाकाव्यं वर्तते

Ans : (b) बाणभट्टकृत 'हर्षचरितम्' एक आख्यायिका ग्रन्थ है। यह इतिहास प्रसिद्ध है, इसमें 8 उच्छ्वास हैं। यह वीर रस प्रधान है। इसके नायक हर्षवर्द्धन हैं। इसमें सातवीं शताब्दी के भारत का चित्रांकन है।

44. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः कः?

- (a) वसन्तकः (b) माढव्यः
(c) मैत्रेयः (d) माणवकः

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की रचना है। यह नाटक सात अङ्कों में विभक्त है। इसका आधारग्रन्थ महाभारत का आदिपर्व है इसका विदूषक माधव्य (माढव्य) है।

45. स्वप्न नाटके 'भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा' कस्य वचनमिदम्?

- (a) ब्रह्मचारिणः (b) यौगन्धरायणस्य
(c) विदूषकस्य (d) उदयनस्य

Ans : (a) भास के 13 नाटकों में स्वप्नवासवदत्तम् नाटक इतिहास प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है। इसमें 6 अङ्क एवं 57 श्लोक हैं। इसमें वर्णित "भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाऽप्यदग्धा" यह वचन ब्रह्मचारी का है।

46. शोको हि रसस्थायि भावः

- (a) श्रृङ्गारः (b) वीरः
(c) करुणः (d) भयानकः

Ans : (c) "शोको हि करुणः रसस्थायिभावः" अर्थात् करुण रस का स्थायीभाव शोक है। इसका वर्ण कपोत एवं इसके देवता यम हैं। 'महाकवि' भवभूति करुण रस प्रधान कवि हैं।

47. 'अचिरेण च तस्या स्वयं पतितैः फलैरपूर्यत शिक्षाभाजनम्' - कस्या उक्तिः

- (a) कादम्बर्याः (b) महाश्वेतायाः
(c) पत्रलेखायाः (d) मदलेखायाः

Ans : (b) अचिरेण च तस्याः स्वयं पतितैः फलैरपूर्यत शिक्षाभाजनम् यह उक्ति कादम्बरी में वर्णित महाश्वेता से सम्बन्धित है। कादम्बरी के प्रमुख पात्र निम्नलिखित हैं- चन्द्रापीड, महाश्वेता, वैशम्पायन (शुक), जाबालि, चाण्डाल कन्या आदि।

48. व्यभिचार्यञ्जतः को भवति-

- (a) भावध्वनिः (b) रसः
(c) अलंकारः (d) रसाभासः

Ans : (b) व्यभिचारी भाव का प्रयोग रस के सन्दर्भ में किया जाता है। भरतमुनि भी अपने नाट्यशास्त्र में "विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः" अर्थात् विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से रस की उत्पत्ति माना है।

49. अधो विन्यस्तानां कालानुसारिक्रमं चिनुत् -

- (a) कालिदासः - भासः - बाणभट्टः - भवभूतिः।
(b) भासः - कालिदासः - बाणभट्टः - भवभूतिः।
(c) भवभूतिः - कालिदासः - भासः - बाणभट्टः।
(d) बाणभट्टः - भासः - भवभूतिः - कालिदासः

Ans : (b) कालक्रम की दृष्टि से भास सबसे पहले आते हैं। इसके बाद कालिदास क्योंकि इन दोनों का समय ई.पू. प्रथम शताब्दी है। फिर बाणभट्ट इसके बाद भवभूति आते हैं। इन दोनों का समय क्रमशः 6ठीं 7वीं शताब्दी है।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत

(A) नाटकम्	1. निन्दनीयः पुरुषः
(B) प्रकरणम्	2. विटः
(C) भाणः	3. धीरप्रशान्तः
(D) प्रहसनम्	4. धीरोदात्तः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 4	3	1	1
(b) 1	2	4	3
(c) 3	4	2	1
(d) 1	2	3	4

Ans : (a) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

नाटक	-	धीरोदात्तः
प्रकरणम्	-	धीरप्रशान्त
भाणः	-	विटः
प्रहसनम्	-	निन्दनीयः पुरुषः

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2011

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'मघवन्' कस्या देवताया उपाधिर्वतते?

- (a) इन्द्रस्य (b) सवितुः
(c) उषसः (d) रुद्रस्य

Ans : (a) 'मघवन्' इन्द्र का विशेषण है यह अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं ऋग्वेद में इनका वर्णन 250 सूक्तों में किया गया है। "मुखादिन्द्रश्चग्निश्च" इनकी उत्पत्ति विराट पुरुष के मुख से बताई गई है।

2. यास्काचार्येण कतिविधा देवताः स्वीकृताः?

- (a) चतस्रः (b) तिस्रः
(c) द्वे (d) त्रयस्त्रिंशत्

Ans : (b) यास्काचार्य के अनुसार तीन प्रकार के देवता होते हैं- अन्तरिक्षस्थानीय, द्युस्थानीय, पृथिवीस्थानीय
अन्तरिक्षस्थानीय देवता - इन्द्र, रुद्र, वायु, अप, मरुत
द्युस्थानीय - वरुण, मित्र, विष्णु, पूषा
पृथिवीस्थानीय - अग्नि, सोम, पृथ्वी, वृहस्पति

3. याज्ञवल्क्यः कया उपनिषदा सह सम्बद्धः?

- (a) ईशावास्योपनिषदा (b) छान्दोग्योपनिषदा
(c) बृहदारण्यकोपनिषदा (d) श्वेताश्वतरोपनिषदा

Ans : (c) याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद बृहदारण्यक उपनिषद् में है। इसमें याज्ञवल्क्य के द्वारा मैत्रेयी को मोक्ष के महत्त्व को बताया गया है।

4. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(A) पुरुरवा-उर्वशीसंवादः	1. अथर्ववेद
(B) शिवसंकल्पसूक्तम्	2. ऋग्वेद
(C) त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः	3. शुक्लयजुर्वेद
(D) भूमिसूक्तम्	4. पाणिनीयशिक्षा
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 1	3	4	2
(b) 2	3	4	1
(c) 4	3	2	1
(d) 3	2	1	4

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-
पुरुरवा उर्वशी संवादः - ऋग्वेदः
शिवसंकल्पसूक्तम् - शुक्लयजुर्वेदः
त्रिषष्टिश्चतुष्षष्टिर्वा वर्णाः - पाणिनीयशिक्षा
भूमिसूक्तम् - अथर्ववेदः

5. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(A) यास्कः	1. ऋग्वेदः
(B) यम-यमी	2. सामवेद
(C) तैत्तिरीयब्राह्मण	3. निरुक्तम्
(D) तलवकार-आरण्यकम्	4. कृष्णयजुर्वेदः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 3	4	2	1
(b) 1	3	4	2
(c) 3	1	4	2
(d) 3	2	1	4

Ans : (c) सही समीचीन तालिका यह है-

यास्क - निरुक्तम्
यम-यमी - ऋग्वेदः
तैत्तिरीयब्राह्मणम् - कृष्णयजुर्वेदः
तलवकार आरण्यकम् - सामवेदः

6. यज्ञे यजुर्वेदसम्बद्धोऽस्ति-

- (a) होता (b) अध्वर्युः
(c) उद्गाता (d) ब्रह्मा

Ans : (b) यज्ञ में यजुर्वेद से सम्बन्धित ऋत्विक् अध्वर्युः है एवं मुख्य देवता वायु और वैशम्पायन है। जबकि ऋग्वेद के ऋत्विक् होता, सामवेद के उद्गाता, अथर्ववेद के ब्रह्मा हैं।

7. त्रिष्टुप् छन्दसि अक्षराणि भवन्ति।

- (a) 37 (b) 40
(c) 32 (d) 44

Ans : (d) त्रिष्टुप् छन्द में - 44 अक्षर
उष्णिक् छन्द में - 28 अक्षर
पंक्ति छन्द में - 40 अक्षर
वृहती छन्द में - 36 अक्षर

8. ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य असौ वेदानां कालनिर्धारणमकरोत्

- (a) मैक्समूलरः (b) लोकमान्यतिलकः
(c) मैकडॉनलः (d) सायणाचार्यः

Ans : (b) ज्योतिर्विज्ञानमाश्रित्य वेदानां काल-निर्धारणम् लोकमान्यतिलकः अकरोत्।
इन्होंने वेदकाल का निर्धारण - 4000 - 2500 ई.पू. माना है। जबकि जैकोबी इसे- 4500-2500 ई.पूर्व मानते हैं।

9. किं सत्यमस्ति?

- (a) कालिदासो वेद भाष्यमकरोत्
(b) दाराशिकोहः उपनिषदम् अनुवादं कृतवान्
(c) मम्मट व्याकरणग्रन्थान् विरचितवान्
(d) निरुक्तस्य प्रणेताऽस्ति पिङ्गलः

Ans : (b) दाराशिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में करवाया। उन्होंने उपनिषदों के साथ ही साथ गीता का भी फारसी भाषा में अनुवाद करवाया था।

10. "रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्" इति कथनमस्ति-

- (a) यास्काचार्यस्य (b) पाणिनेः
(c) पतञ्जलेः (d) दयानन्दस्य

Ans : (c) आचार्य पतञ्जलि ने महाभाष्य में रक्षा, ऊह, आगम, अलब्ध, असन्देह ये 5 प्रयोजन बताए हैं। उसमें से रक्षा पदार्थ कहता है कि "रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्।

11. कल्पसाहित्ये न परिगण्यते

- (a) पारस्करगृह्यसूत्रम् (b) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(c) बौधायनशुल्कसूत्रम् (d) कात्यायनप्रणीतं वार्तिकम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) कल्प साहित्य चार भागों में विभक्त है - धर्मसूत्र, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, शुल्कसूत्र इसमें कव्यायन प्रणीतं वार्तिक सम्बन्धित नहीं है।

12. किं सत्यमस्ति

(a) महर्षिः दयानन्दः	- अथर्ववेद भाष्यकारः
(b) महर्षिः रमणाः	- ताण्ड्यमहाब्राह्मणकारः
(c) यास्कः	- ऋग्वेदप्रातिशाख्यकारः
(d) पिङ्गलः	- छन्दःशास्त्रकारः

Ans : (d) दिये गये विकल्पों में आचार्य पिङ्गल छन्दशास्त्रकार है। जबकि आचार्य यास्क निरुक्तकार है। महर्षि दयानन्द यजुर्वेद के भाष्यकार हैं।

13. महर्षिपतञ्जल्यनुसारेण ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति

(a) 22	(b) 21
(c) 11	(d) 25

Ans : (b) महाभाष्यकार पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाएँ मानी है। जबकि चरणव्यूह में 5 शाखाओं का वर्णन है - शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा माण्डूकायन।

14. सांख्यमते सूक्ष्मते सूक्ष्मशरीरं कति अवयवाः सन्ति?

(a) पञ्चदश	(b) षोडश
(c) सप्तदश	(d) अष्टादश

Ans : (d) साङ्ख्यदर्शन में सूक्ष्मशरीर के अठारह भेद स्वीकार्य हैं जबकि वेदान्तदर्शन में सप्तदश सूक्ष्मशरीर को स्वीकार किया गया है।

15. अधोनिर्दिष्टेषु अवैदिक शास्त्रं किमस्ति?

(a) न्यायशास्त्रम्	(b) योगशास्त्रम्
(c) वैशेषिकम्	(d) जैनदर्शनम्

Ans : (d) जैनधर्म का प्रमुख सिद्धान्त- अनेकान्तवाद/ स्याद्वाद/ सप्तभगिनय है।

जैन दर्शन के अनुसार त्रिरत्न में- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। ये तीनों ही मोक्ष के मार्ग हैं। “सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः”।

16. तत्त्वमसीत्यत्र कीदृशी लक्षणा?

(a) जहल्लक्षणा	(b) अजहल्लक्षणा
(c) जहदजहल्लक्षणा	(d) लक्षितलक्षणा

Ans : (c) वेदान्तसार में तीन लक्षणाओं का उल्लेख है-

(i) जहल्लक्षणा	(ii) अजहल्लक्षणा	(iii) जहदजहल्लक्षणा
का उदाहरण	का उदाहरण	का उदाहरण
गङ्गायां घोषः	शोणो धावति	तत्त्वमसि

17. परमाणुविशेषयोः कः सम्बन्धः?

(a) संयोगः	(b) स्वरूपसम्बन्धः
(c) समवाय	(d) तादात्म्यम्

Ans : (c) प्रत्यक्ष ज्ञान के कारण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष 6 प्रकार का होता है। (i) संयोगः (ii) संयुक्त समवायः (iii) संयुक्त समवेत समवाय (iv) समवेत समवायः (v) समवायः (vi) विशेषण विशेष्य भाव।

उसमें से श्रोत के द्वारा शब्द का प्रत्यक्ष होने में समवाय सम्बन्ध होता है।

18. अधोनिर्दिष्टेषु अलौकिकसन्निकर्षः केन न स्वीकृतः?

(a) विश्वनाथ महाचार्येण	(b) अन्नभट्टेन
(c) केशवमिश्रेण	(d) जगदीशेन

Ans : (a) अलौकिक सन्निकर्ष तीन प्रकार का होता है-

- (1) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष
- (2) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष
- (3) योगज लक्षण प्रत्यक्ष

दिये गये विकल्पों में से आचार्य विश्वनाथ अलौकिक सन्निकर्ष को स्वीकार नहीं करते हैं।

19. केवलान्वयित्वं किमस्ति?

(a) स्वभाववदवृत्तित्वम्	(b) उभयवृत्तित्वम्
(c) अत्यन्ताभावाप्रतियोगित्वम्	(d) अवृत्तित्वम्

Ans : (c) नव्य नैयायिकों के आधार पर अनुमान के तीन भेद किए गये हैं-

- (1) केवलान्वयी अनुमान
- (2) केवल व्यतिरेकी अनुमान
- (3) अन्वय व्यतिरेकी

इसमें से “केवलान्वयित्वं उभय वृत्तित्वम् अस्ति।”

नोट- गोविन्दाचार्य-तर्कसंग्रह पृष्ठ संख्या 195

20. अधो निर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

- | |
|--|
| (a) न्यायमते अप्रामाण्यं स्वतो ग्राह्यम् |
| (b) न्यायमते शब्दो विशेषगुणः |
| (c) वैशेषिकमते प्रमाणं त्रिविधम् |
| (d) न्यायमते मनसो विभुत्वमस्ति |

Ans : (d) दिये गये विकल्पों में विकल्प (D) सही विकल्प है।

नोट- न्यायमते मनसो विभुत्वमस्ति।

अर्थात् मन विभु अर्थात् नित्य है।

सुखायद्युपलब्धि साधनमिन्द्रियं मनः।

21. सांख्यमते अहंकारः कतिविधः

(a) एकविधः	(b) द्विविधः
(c) त्रिविधः	(d) चतुर्विधः

Ans : (c) सांख्यमते अहंकारः त्रिविधः अर्थात् ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका में अहंकार के तीन भेद हैं- तामसिक अहं, राजसिक अहं, सात्त्विक अहं। सूक्ष्मतं प्रधान अहं, तामसिक अहं कहलाता है। उदाहरण- केवल स्वयं की योग्यता में विश्वास रखना। सूक्ष्म रज प्रधान अहं, राजसिक अहं कहलाता है। उदाहरणार्थ- सदैव सुख में रहने के लिए प्रयास करना। सूक्ष्म सत्त्व प्रधान अहं, अर्थात् सात्त्विक अहं है। उदाहरणार्थ- त्याग से सम्बन्धित अहं सात्त्विक का प्रकार है।

22. न्यायमते पदार्थयोः सम्बन्धनियामकः कः?

(a) योग्यता	(b) आसक्तिः
(c) आकांक्षा	(d) लक्षणा

Ans : (a) न्यायमते पदार्थयोः सम्बन्धनियामकः योग्यता अस्ति। आकाङ्क्षायोग्यता सन्निधश्च वाक्यार्थज्ञाने हेतुः।

इसमें से योग्यता- पद समूह में अर्थ को अभिव्यक्त करने की योग्यता होनी चाहिए। यथा - जलेन सिञ्चति।

23. मङ्गलं कतिविधं भवति?

(a) एकविधं	(b) द्विविधम्
(c) त्रिविधम्	(d) चतुर्विधम्

Ans : (c) ग्रन्थ के आरम्भ में मध्य में और अन्त में मङ्गलाचरण करने की परम्परा है- शास्त्रों में मङ्गलाचरण “आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक तीन प्रकार का माना गया है।

24. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) माठरवृत्ति	1. वैशेषिकसूत्रम्
(b) भारद्वाजवृत्तिः	2. न्यायसूत्रम्
(c) विश्वनाथवृत्तिः	3. सांख्यसूत्रम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

(d) भोजवृत्ति: 3. योगसूत्रम्

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

माठरवृत्ति:	- सांख्यसूत्रम्
भारद्वाजवृत्ति:	- वैशेषिकसूत्रम्
विश्वनाथवृत्ति:	- न्यायसूत्रम्
भोजवृत्ति:	- योगसूत्रम्

25. अधोनिर्दिष्टेषु किं सत्यमस्ति?

- (a) वस्तुनः तत्समसत्ताकः अन्यथाभावः विवर्तः
(b) कारणाभिन्नं कार्यं विवर्तः
(c) अतत्त्वतोऽन्यथाभावः विवर्तः
(d) उपादानसमसत्ताकं कार्यं विवर्तः

Ans : (c) दिए गये विकल्प में सही विकल्प c है। क्योंकि “अतत्त्वतोऽन्यथाभावः विवर्त इत्युदाहृतः अर्थात् मिथ्यारूप से अर्थात् ऊपर से दूसरे रूप में प्रतीत होना ही विवर्त है।

26. गुणसंज्ञाविधायकं सूत्रमिदं वर्तते

- (a) इको गुणवृद्धौ (b) अदेङ्गुणः
(c) आद्गुणः (d) स्थानेऽन्तरतमः

Ans : (b) गुण संज्ञा विधायक सूत्र “अदेङ्गुणः” है। अदेङ्गुणः = अत् + एङ् + गुणः अर्थात् अत् (अ) और एङ् (ए.ओ) गुण सञ्ज्ञक होते हैं।

27. अपृक्तसंज्ञा वर्तते-

- (a) प्रत्ययस्य (b) धातोः
(c) प्रातिपदिकस्य (d) यस्य कस्यापि

Ans : (a) अपृक्त एकाल प्रत्ययः। अर्थात् एक वर्ण रूप प्रत्यय की “अपृक्त” संज्ञा होती है।

यथा- सु का स, ति का त् आदि एक अल् वाले आदि एकाल प्रत्यय हैं अतः इनकी अपृक्त संज्ञा होगी।

28. नदी संज्ञकः शब्दः नास्ति

- (a) नदी (b) वधू
(c) सरित (d) बहुश्रेयसी

Ans : (c) नदी संज्ञक शब्द- नदी, गौरी, वधू, बहुश्रेयसी है। इनकी “यू स्त्राख्यौ नदी” सूत्र से नदी संज्ञा होगी। जबकि सरित् शब्द की नदी संज्ञा नहीं होगी।

29. ईदूदेदद्विवचनस्य शब्दस्य भवति-

- (a) प्रगृह्यसंज्ञा (b) प्रकृतिभावः
(c) प्लुतसंज्ञा (d) टिसंज्ञा

Ans : (a) प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र “ईदूदेदद्विवचनम् प्रगृह्यम्” है। अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन पदों की प्रगृह्य संज्ञा होती है- यथा- हरी एतौ। विष्णू इमौ आदि।

30. ‘गां दोग्धि पयः’ – इत्यत्र ‘गाम्’ पदे कर्मसंज्ञा केन सूत्रेण भवति?

- (a) कर्मणि द्वितीया (b) अकथितं च
(c) तथायुक्तं चानीप्सितम् (d) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

Ans : (b) “गां दोग्धि पयः” यहाँ गाम् पद में कर्म संज्ञा “अकथितं च” सूत्र से होती है। अर्थात् करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण आदि कारकों की अविशेषता में इन कारकों की कर्म संज्ञा होती है।

31. ‘कटे आस्ते’ – इत्यत्र कीदृश आधारो वर्तते?

- (a) औपश्लेषिकः (b) वैषयिकः
(c) अभिव्यापकः (d) व्यापकः

Ans : (a) औपश्लेषिको वैषयिकोऽभिव्यापकश्चेत्याधारस्त्रिधा। इसमें औपश्लेषिक आधार वहाँ होता है जिसके साथ आधेय का भौतिक संश्लेष हो- यथा-कटे आस्ते। (चटाई पर बैठता है।)

32. द्वितीया-चतुर्थ्यो भवतः

- (a) अधि-शी-धातोः प्रयोगे (b) ‘विना’ शब्दस्य योगे
(c) नमः योगे (d) गत्यर्थकर्मणि

Ans : (d) “गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थी चेष्टायामनध्वनि”।

अर्थात् शारीरिक परिस्पन्दन रूप चेष्टा होने पर गत्यर्थक धातु के कर्म अर्थात् कर्मवाचक शब्द में द्वितीया चतुर्थी विभक्ति हो।

33. ‘नीलोत्पलम्’ इत्यत्र नपुंसकत्वं केन सूत्रेण भवति?

- (a) स नपुंसकम्
(b) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः
(c) अव्ययीभावश्च
(d) ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य

Ans : (b) “नीलोत्पलम्” यहाँ नपुंसक लिङ्ग का ग्रहण परवल्लिङ्गं द्वन्द्व तत्पुरुषयोः सूत्र से हुआ है।

अर्थात् द्वन्द्व और तत्पुरुष समास में लिङ्ग पर के समान होता है।

34. ‘भूतपूर्वः’ इत्यत्र भूतशब्दस्य पूर्वप्रयोगः कस्मात् भवति?

- (a) आचार्याणाम् आचारात्
(b) उपसर्जनं पूर्वम् इति सूत्रात्
(c) केवलसमासत्वात्
(d) लोकात्

Ans : (c) “भूतपूर्वः” इसका लौकिक विग्रह “पूर्वभूतः” और अलौकिक विग्रह “पूर्व अम् भूत सु” होगा। यहाँ सुप् “अम्” और सु का लोप करके पूर्व भूत बना तत्पश्चात् “भूतपूर्व चरट्” सूत्र से भूत शब्द का पूर्व प्रयोग होकर भूतपूर्वः बना।

35. अधस्तनानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

- (A) पूर्वपदार्थप्रधानः 1. हरौ इति
(B) अस्वपदविग्रहः 2. अव्ययीभावः
(C) नदीभिश्च 3. पञ्चगङ्गम्
(D) अलौकिकविग्रहः 4. प्राप्त + सु + उदक

(A) (B) (C) (D)

- (a) 1 3 4 2
(b) 2 3 1 4
(c) 2 1 3 4
(d) 3 1 4 2

Ans : (c) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

पूर्वपदार्थप्रधानः	-	अव्ययीभावः
अस्वपदविग्रहः	-	हरौ इति
नदीभिश्च	-	पञ्चगङ्गम्
अलौकिकविग्रह	-	प्राप्त + सु + उदक

36. केन्तुम् –वर्गस्य भाषा अस्ति-

- (a) लैटिन भाषा (b) संस्कृतभाषा
(c) पारसी भाषा (d) अवेस्ता

Ans : (a) भारोपीय भाषा परिवार का दो वर्ग किया गया उसमें पहला- शतम्, दूसरा – केन्तुम्। इसमें (केन्तुम् वर्ग में) लैटिन भाषा में केन्तुम्। ग्रीक भाषा में हेक्टोन। कैल्टिक भाषा में केत् होगा।

37. संस्कृत भाषायाः घ्, ध्, भ् वर्णाः जर्मनिक भाषायां भवन्ति-

- (a) ग् द् ब् (b) क् द् प्
(c) ग् द् फ् (d) द् द् ब्

Ans : (a) संस्कृत भाषा में घ् ध् भ् वर्ण जर्मनी भाषा में ग् द् ब् हो जाता है। ऐसा ध्वनि परिवर्तन में ध्वनि नियम के सम्बन्ध में ग्रिम, ग्रासमान एवं वर्नर विषय ध्वनि में प्रतिपादित किया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. “सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ” इयमुक्तिः रघुवंशस्य अधोलिखिते कथाप्रसंगे वर्णिता अस्ति।

- (a) सीतापरित्यागे (b) इन्दुमतीस्वयंवरे
(c) ‘विश्वजित्’ यज्ञे (d) राज्याभिषेके

Ans : (b) सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिम्बरा सा ...।
यह उक्ति रघुवंश महाकाव्यम् के षष्ठम् सर्ग में इन्दुमती स्वयम्बर वर्णन की है।

39. मेघदूते यक्षः कस्य वसतिः कुत्र वर्तते?

- (a) मानसरोवरे (b) हिमालये
(c) मालवभूमौ (d) अलकायाम्

Ans : (d) मेघदूतम् महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध गीतिकाव्य है। इसके दो भाग हैं-

(1) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ
अलकापुरी के अधीश्वर कुवेर ने अपने किंकर यक्ष को किसी कार्य में प्रमाद करने के कारण एक वर्ष का शाप दिया था शापित यक्ष रामगिरि पर्वत पर निवास करता था।

40. ‘रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय’- इयमुक्तिः केन सम्बद्धा?

- (a) कुबेरेण (b) मेघेन
(c) यक्षेण (d) यक्षिण्या

Ans : (b) “रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय” यह उक्ति मेघ से सम्बन्धित है। यक्ष मेघ से कहता है कि जो लघु है वह सर्वत्र खाली होता है तथा पूर्णता गौरव (भारीपन) को लिये रहता है।

41. किरातार्जुनीये ‘किरात’ इति कस्य बोधकः?

- (a) वनेचरस्य (b) किरातधारिणः
(c) शङ्करस्य (d) कार्तिकेयस्य

Ans : (c) किरातार्जुनीयम् में ‘किरात’ शंकर का बोधक है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त है। इसके प्रथम सर्ग का प्रारम्भ द्वैतवन में युधिष्ठिर और वनेचर के वार्तालाप से होती है।

42. रैवतकपर्वतस्य वर्णनं कस्मिन् काव्ये वर्तते?

- (a) उत्तररामचरिते (b) कुमारसम्भवे
(c) शिशुपालवधे (d) कादम्बर्याम्

Ans : (c) महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवधम् में 20 सर्ग और 1650 श्लोक हैं। इसके चतुर्थ सर्ग में ‘रैवतक पर्वत’ का अलंकृत वर्णन है।

43. सत्यं किमस्ति-

- (a) दशकुमारचरिते पञ्चोच्छ्वासाः सन्ति
(b) दशकुमारचरिते सप्तोच्छ्वासाः सन्ति
(c) दशकुमारचरिते अष्टोच्छ्वासाः सन्ति
(d) दशकुमारचरिते द्वादशोच्छ्वासाः सन्ति

Ans : (c) दिए गये विकल्पों में C विकल्प सही है- दशकुमारचरितम् दण्डी की प्रसिद्ध रचना है यह कथा के अन्तर्गत परिगणित है। इसमें 10 राजकुमारों का इतिवृत्त वर्णित है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं।

44. “आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः”- इयमुक्तिः कस्य ग्रन्थस्य?

- (a) नैषधीयचरितस्य (b) शिशुपालवधस्य
(c) किरातार्जुनीयस्य (d) कुमारसम्भवस्य

Ans : (a) “आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः” यह उक्ति नैषधीयचरितम् महाकाव्य का है। जिसमें 22 सर्ग हैं। इसके प्रथम सर्ग में नल वन विहार का वर्णन है और हंस की मार्मिक व्यथा का वर्णन है।

45. ‘तस्य अशेषत्रिभुवनसुन्दरं अतिशयितनलकुबरं रूपमासीत्’ -कस्य?

- (a) पुण्डरीकस्य (b) कपिञ्जलस्य
(c) श्वेतकेतोः (d) चन्द्रापीडस्य

Ans : (a) “तस्य अशेषत्रिभुवनसुन्दरं अति शयितनलकुबरं रूपमासीत् पुण्डरीकस्य। यह गद्य कादम्बरी कथामुखम् से सम्बद्ध है इसमें महाश्वेता और पुण्डरीक एवं कादम्बरी और चन्द्रापीड के तीन जन्मों के कथा का वर्णन है।

46. कस्य रूपकेषु ‘आमुख’ स्थापनेत्युच्यते?

- (a) शूद्रकस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) विशाखदत्तस्य (d) भासस्य

Ans : (d) महाकवि भास स्वप्नवासवदत्तम् के लेखक हैं यह 6 अंकों का नाटक है, इनके रूपक में आमुख को स्थापना कहा जाता है।

47. अभिधा पुच्छभूता का भवति?

- (a) लक्षणा (b) व्यञ्जना
(c) तात्पर्यम् (d) अर्थापत्ति

Ans : (a) लक्षणा, अभिधा की पुच्छभूता होती है।
शब्द की तीन शक्तियाँ हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना
वाच्य अर्थ से - अभिधा
लक्ष्य अर्थ से - लक्षणा
व्यङ्ग्य अर्थ से - व्यञ्जना

लक्षणा के उदाहरण- कलिङ्ग साहसिक : , गङ्गायांघोषः ।

48. श्रीशङ्कुकमते कीदृशः स्थायी रसे भवति?

- (a) भावितः (b) अनुमितिः
(c) उत्पन्नः (d) अभिव्यक्तिः

Ans : (b) “विभावानुभावसंचारिभाव संयोगाद्रस निष्पत्तिः” इसमें जो ‘निष्पत्ति’ शब्द आया है उसके भी चार अर्थ हैं-

भट्टलोल्लट के मत में - उत्पत्ति
शंकुक के मत में - अनुमिति
भट्टनायक के मत में - भुक्ति
अभिनवगुप्त के मत में - अभिव्यक्ति

49. कालक्रमानुसृता तालिकां चिनुत

- (a) भामहः। दण्डी। वामनः। विश्वनाथः।
(b) वामनः। भामहः। विश्वनाथः। दण्डी।
(c) भामहः। विश्वनाथः। दण्डी। वामनः।
(d) भामहः। वामनः। दण्डी। विश्वनाथः।

Ans : (a) कालानुक्रम की दृष्टि से सही क्रम इस प्रकार है- भामहः। दण्डी। वामनः। विश्वनाथः।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

- (A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1. भाणः
(B) त्रिपुरदाहः 2. प्रहसनम्
(C) कन्दर्पकेलिः 3. डिमः
(D) लीलामधुकरम् 4. नाटकम्

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 1	2	3	4
(b) 3	4	2	1
(c) 4	3	2	1
(d) 1	2	4	3

Ans : (c) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है-

अभिज्ञानशाकुन्तलम् - नाटकम्
त्रिपुरदाहः - डिमः
कन्दर्पकेलिः - प्रहसनम्
लीलामधुकरम् - भाणः

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2012

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिक प्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्ते कः स्तूयते?

- (a) अग्निः (b) यमः
(c) विष्णुः (d) वरुणः

Ans : (a) अग्निसूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है इसके देवता अग्नि एवं ऋषि मधुच्छन्दा हैं, छन्द गायत्री है, गायत्री छन्द में 24 अक्षर होते हैं। इसका प्रथम मन्त्र निम्न है-
**अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
 होतारं रत्नधातमम्।**

2. पवमानः क उच्यते?

- (a) इन्द्रः (b) बृहस्पतिः
(c) विष्णुः (d) सोमः

Ans : (d) ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं। इसमें से नवम् मण्डल में 114 सूक्त तथा 1108 ऋक् संख्या है, इसके ऋषि पवमान (सोम) हैं।

3. शांखायनशाखा कस्य वेदस्य?

- (a) कृष्णयजुर्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (c) ऋग्वेद में सर्वप्रथम 21 शाखाएँ थी परन्तु वर्तमान में 5 शाखाएँ हैं - (1) शाकल (2) वाष्कल (3) आश्वलायन (4) शांखायन (5) माण्डूकायन।

4. छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः कः प्रतिपादयति?

- (a) मैक्समूलरः (b) वेबरः
(c) बालगङ्गाधरतिलकः (d) विन्टरनिट्सः

Ans : (a) छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः मैक्समूलरः प्रतिपादयति। वे वेद का समय 1200-1000 ई.पूर्व स्वीकार करते हैं।

5. नैघण्टुक काण्ड वर्तते?

- (A) निघण्टुग्रन्थे (B) शुल्बसूत्रे
(C) छन्दः सूत्रे (D) निरुक्ते

Ans : (a) निघण्टु 5 अध्यायों का वैदिक शब्द संग्रह है, यह तीन काण्डों में विभक्त है।

1. नैघण्टुक काण्डम्
2. नैगम काण्डम्
3. दैवत काण्डम्

6. वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते?

- (a) पादत्वेन (b) हस्तत्वेन
(c) घ्राणत्वेन (d) नेत्रत्वेन

Ans : (a) वेदाङ्गों में छन्द का प्रमुख स्थान है, इसे वेदपुरुष के चरण के रूप में स्वीकार किया गया है। छन्द दो प्रकार के माने गये हैं (i) वैदिक छन्द (ii) लौकिक छन्द।

7. अर्थप्रधानम् वर्तते?

- (a) निरुक्तम् (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) कल्पः

Ans : (a) निरुक्त, आचार्य यास्क की रचना है। इसमें निरुक्त के अध्ययन का प्रयोजन बताया गया है। अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्थं प्रत्ययो न विद्यते।

8. विश्वामित्रनदीसंवादः कस्मिन् मण्डले वर्तते?

- (a) प्रथममण्डले (b) तृतीयमण्डले
(c) दशममण्डले (d) पञ्चममण्डले

Ans : (b) विश्वामित्रनदी संवाद ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है।

नोट- इसका महत्वपूर्ण मन्त्र- एनां वयं पयसा पिन्वमाना, अनुयोनं देवकृतं चरन्ति॥

9. मैत्रायणीसंहिता केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते?

- (a) सामवेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (d) “उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत” यह मन्त्र कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध कठोपनिषद् का है। इसमें दो अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभक्त है। इसके प्रथम वल्ली में 29 मन्त्र हैं।

नोट- मैत्रायणी शाखा का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है।

10. आरण्यक केनाश्रमेण सम्बद्धम्?

- (a) गृहस्थाश्रमेण (b) वानप्रस्थाश्रमेण
(c) ब्रह्मचर्याश्रमेण (d) लोकाश्रमेण

Ans : (b) वेदों में 4 आश्रमों का विशद विवेचन है।

- (1) ब्रह्मचर्य आश्रम
(2) गृहस्थ आश्रम
(3) वानप्रस्थ आश्रम
(4) संन्यास आश्रम।

इसमें से आरण्यक वानप्रस्थ आश्रम से सम्बन्धित है।

11. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुतः

- (A) पूर्णमदः पूर्णमिदम् 1. निरुक्तम्
(B) मा गृधः कस्य स्विद्धनम् 2. अथर्ववेदीया
(C) सामान्याः सामान्नातः 3. ईशावास्योपनिषद्
(D) पैप्पलादसंहिता 4. बृहदारण्यकम्

(A) (B) (C) (D)

- (a) 4 3 1 2
(b) 3 2 1 4
(c) 2 3 4 1
(d) 1 2 3 4

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) सही सुमेलित उत्तर इस प्रकार है-
पूर्णमदः पूर्णमिदम् - बृहदारण्यकोपनिषद्
मा गृधः कस्यस्विद्धनम् - ईशावास्योपनिषद्
समाम्नायः सामानातः - निरुक्तम्
पैप्पलाद संहिता - अथर्ववेदीया

12. “मध्या कर्तोर्विततं सज्जभार” इति पठ्यते
(a) अग्निसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) सूर्यसूक्ते (d) उषस्सूक्ते

Ans : (c) “मध्या कर्तोर्विततं सज्जभार” यह सूर्यसूक्त से सम्बद्ध है। सूर्य “द्युस्थानीय देवता हैं। ऋग्वेद (1.115) के 6 सूक्तों में इनका वर्णन किया गया है।

13. कतिलक्षणयुक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः?
(a) नव (b) दश
(c) द्वादश (d) पञ्चदश

Ans : (b) ब्राह्मणेषु प्रतिपाद्यः विषयः त्रिषु भागेषु विभक्तः। विधि, अर्थवाद, उपनिषद्। इसमें से सबसे मुख्य विषय ‘विधि’ है। ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषय दश प्रकार के होते हैं।

14. अर्थापत्तेः कस्मिन् प्रमाणेऽन्तर्भावः भवितुमर्हति?
(a) प्रत्यक्षे (b) अनुमाने
(c) शब्दे (d) उपमितौ

Ans : (b) अर्थापत्ति का अनुमान प्रमाण में अन्तर्भाव हुआ। नैयायिक तीन प्रमाणों को स्वीकार करते हैं इनके अलावा जितने भी प्रमाण हैं इन्हीं तीनों प्रमाणों में नैयायिक उनका अन्तर्भाव समझते हैं।

15. सादृश्यज्ञानकरणं ज्ञानं किमस्ति?
(a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमितिः
(c) शब्दबोधः (d) उपमितिः

Ans : (c) उपमिति के करण को उपमान प्रमाण कहते हैं। उपमिति है- संज्ञा (नामपद) और संज्ञी (नामी) अर्थात् पदार्थ के सम्बन्ध का ज्ञान। इस उपमिति का करण सादृश्य ज्ञान ही उपमान प्रमाण है।

16. विवर्तो विद्यते?
(a) कारणस्य कार्यावस्था
(b) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(c) कारणगुणात्मिका कार्योत्पत्तिः
(d) अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा

Ans : (d) विवर्त (अपवाद) मिथ्या रूप से अर्थात् ऊपर से (तत्त्वतः नहीं) दूसरे रूप में प्रतीत होना विवर्त कहलाता है।
“अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः”

17. “सतः सत् जायते” इति कस्य मतम्?
(a) सांख्यस्य (b) बौद्धस्य
(c) वेदान्तिनः (d) नैयायिकस्य

Ans : (a) “सतः सत् जायते” अर्थात् सत (कारण) से सत (कार्य) की उत्पत्ति होती है ऐसा सांख्य आचार्यों का मत है।
जो इस कारिका से स्पष्ट है-

असदकारणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावच्च सत्कार्यम् ॥

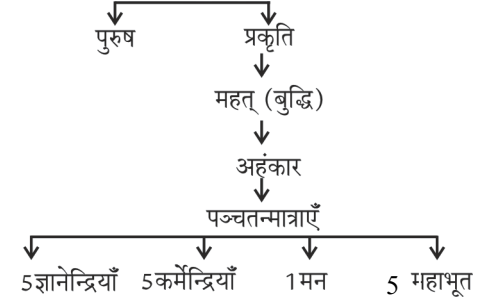
18. कतिविधः बुद्धिसर्गः?
(a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चधा (d) सप्तधा

Ans : (b) प्रत्यय सर्ग (बुद्धि सर्ग) चार प्रकार की होती है-
प्रत्ययसर्गबोधकचक्र
विपर्यय(5) अशक्ति (28) तुष्टि(9) सिद्धि(8)

19. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि कति?

- (a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) विंशति (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (d) सांख्य में 25 तत्त्वों का विवेचन किया गया है।



20. तदभावयति तत्प्रकारकं ज्ञानं कीदृशम्?

- (a) प्रमा (b) अप्रमा
(c) स्मृतिः (d) विपर्ययः

Ans : (b) “तदभावयति तत्प्रकारकं ज्ञानं अप्रमा” जिसमें जो नहीं है उसमें उसका ज्ञान ही अप्रमा है।
यथा- सीपी में रजत है यह ज्ञान अप्रमा है।

21. कार्यानियतपूर्ववृत्तित्वं भवति?

- (a) कारणत्वम् (b) करणत्वम्
(c) कार्यत्वम् (d) अकारणत्वम्

Ans : (a) असाधारण कारण को करण कहते हैं- तत्पश्चात् कारण का लक्षण कर रहे हैं कि -
“कार्यानियतपूर्ववृत्तित्वं कारणत्वम्” अर्थात् कार्य से निश्चित रूप से पूर्ववर्ती पदार्थ को कारण कहते हैं।

22. वेदान्तो नाम वर्तते?

- (a) उपनिषत्प्रमाणम् (b) अनुमानगम्यम्
(c) आप्तोपदेशः (d) उपासनादिकम्

Ans : (a) “वेदान्तो नाम उपनिषदप्रमाणम्”
अर्थात् वेदान्त नाम उन उपनिषदों का है जो ब्रह्म ज्ञान रूप प्रमा का मुख्य साधन हैं। अर्थात् उपनिषद् ही इस वेदान्त के प्रमाण हैं।

23. अज्ञानस्य शक्तिः.....उच्यते?

- (a) आवरणावस्था
(b) विशेषरूपाः
(c) आवरणविक्षेपनामकः शक्तिद्वयम्
(d) शून्यरूपा

Ans : (c) अज्ञानं तु सदसद्भामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञान विरोधिभावरूपं वदन्त्यहंयज्ञः इत्याद्यनुभवात् ।
इस अज्ञान की आवरण एवं विक्षेप दो शक्तियाँ हैं।

24. विशेषः नित्यद्रव्यवृत्तिः।

- (a) अनित्यः (b) नित्यः
(c) कारणात्मकः (d) स्मृतिरूपः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) सप्त पदार्थ – द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव हैं। इसमें से विशेष नामक पदार्थ नित्य द्रव्य में रहने वाले अनन्त हैं।

“नित्यद्रव्यवृत्तयोः विशेषास्वनन्ता एव” ।

25. बुद्धेः का प्रकृतिः?

- (a) अहङ्कारः (b) पुरुषः
(c) मूलप्रकृतिः (d) तन्मात्राणि

Ans : (c) बुद्धि कारण (उत्पन्न भी होती है) और कार्य (उत्पन्न भी करती है अहङ्कार आदि को) दोनों है। अर्थात् यह कार्य और कारण दोनों है बुद्धि प्रकृति की कार्य है क्योंकि यह प्रकृति से उत्पन्न होती है।

26. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) वृद्धिरेचि (b) वृद्धिरादैच्
(c) इको यणचि (d) आद्गुणः

Ans : (b) वृद्धि संज्ञाविधायक सूत्र “वृद्धिरादैच्” है ‘आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात्’ ।
अर्थात् ‘आत्’ और ऐच्- (आ, ‘ऐ, औ’) की वृद्धि संज्ञा होती है।

27. धि-संज्ञा केन सूत्रेण भवति?

- (a) यूस्त्र्याख्यौ नदी (b) अचोऽन्त्यादि टि
(c) परः सन्निकर्षः संहिता (d) शेषो घ्यसखि

Ans : (d) धि संज्ञा विधायक सूत्र- शेषो घ्यसखि है। सखि शब्द को छोड़कर ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्दों की धि संज्ञा होती है। सामान्यतः धि संज्ञा पुल्लिङ्ग शब्दों की होती है।

28. हेत्वर्थे का विभक्तिः?

- (a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

Ans : (b) “हेत्वर्थे तृतीया स्यात्” अर्थात् हेतु अर्थ के वाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। सूत्र है- “हेतौ” ।

“फलमपीह हेतुः”

उदाहरण - अध्ययनेन वसति।

29. ‘पाणिपादम्’ -अस्मिन् पदे समासविग्रहः भवतिः?

- (a) पाणी च पादौ च (b) पाणिः च पादम् च
(c) पाणिना च पादेन च (d) पाणि च पादौ च

Ans : (a) पाणिपादम् - इसका विग्रह- “पाणी च पादौ च” ।
द्वन्द्वश्च प्राणि तूर्य-सेनाऽङ्गानाम् सूत्र से प्राणी तूर्य (बाजे) और सेना इनके अङ्गों के वाचक शब्दों का द्वन्द्व समास होता है।

30. ध्रुवमपाये इत्यत्र किं कारकम्?

- (a) करणम् (b) अपादानम्
(c) सम्प्रदानम् (d) कर्म

Ans : (b) ध्रुवमपायेऽपादानम्” यहाँ पर अपाय का अर्थ विश्लेष अर्थात् अलगाव से है। जिससे अपाय हो रहा हो उसकी अपादान संज्ञा होती है तथा उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।

यथा- धावतोऽश्वात् पतति।

31. ‘कुक्कुटमयूरी’ - इत्यस्य पदस्य लौकिकविग्रहः भवतिः?

- (a) कुक्कुटश्च मयूरी च
(b) कुक्कुटञ्च च मयूरञ्च
(c) कुक्कुटस्य च मयूरीश्च
(d) कुक्कुटौ च मयूरी च

Ans : (a) “कुक्कुट च मयूरी च” इसका लौकिक विग्रह है और अलौकिक विग्रह” कुक्कुट सु मयूरी सु” इसका समस्त पद कुक्कुटमयूरी बनता है इसमें द्वन्द्व समास है।

32. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुतः?

- (A) अभिनिविशश्च 1. तुल्यास्यप्रयत्नम्
(B) अपृक्त 2. बहुव्रीहिः
(C) चित्रगुः 3. कर्म संज्ञा
(D) सवर्णम् 4. एकाल् प्रत्ययः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	1	3	4
(b)	1	2	4	3
(c)	3	4	2	1
(d)	4	3	1	2

Ans : (c) समीचीन तालिका इस प्रकार है-

अभिनिविशश्च	-	कर्मसंज्ञा
अपृक्तम्	-	एकाल् प्रत्ययः
चित्रगुः	-	बहुव्रीहिः
सवर्णम्	-	तुल्यास्यप्रयत्नम्

33. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः किं संज्ञकः स्यात्?

- (a) उदात्तः (b) अनुदात्तः
(c) स्वरितः (d) संहिता

Ans : (d) “वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहिता संज्ञा स्यात्” अर्थात् वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की संहिता संज्ञा होती है।

34. ‘चोराद् बिभेति’ इत्यत्र अपादानं केन सूत्रेण विधीयते?

- (a) पराजेरसोदः (b) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(c) वारणार्थानामीप्सितः (d) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

Ans : (b) ‘चोराद् बिभेति’ यहाँ “भीत्रार्थानां भय हेतुः सूत्र से अपादान संज्ञा होती है। भयार्थक एवं त्राणार्थक धातुओं एवं शब्दों के प्रयोग में भय का कारण “अपादान” होता है
यथा- चोरात् त्रायते।

35. ‘चर्मणि द्वीपिनं हन्ति’- इत्युदाहरणं कस्य भवति?

- (a) निमित्तात् कर्मयोगे (b) साध्वसाधु प्रयोगे च
(c) षष्ठी चानादरे (d) यतश्च निर्धारणम्

Ans : (a) ‘निमित्तात् कर्मयोगे’ इसमें योग शब्द का अर्थ है निमित्त या फल यदि उस क्रिया के कर्म से युक्त अथवा समवेत हो तो उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे- “चर्मणि द्वीपिनं व हन्ति।

36. भाषापरिवर्तनस्य कति बाह्यकारणानि?

- (a) चत्वारि (b) षट्
(c) अष्टौ (d) दश

Ans : (b) भाषा विज्ञान की दृष्टि से छः बाह्य कारण हैं-

(1) भौगोलिक (2) ऐतिहासिक (3) सांस्कृतिक (4) साहित्यिक (5) वैज्ञानिक तथा (6) वैयक्तिक।

(कपिल देव द्विवेदी, भाषा विज्ञान-पेज नं. 96 से 102)

37. भारोपीयभाषापरिवारे केन्तुमवर्गस्य कति प्रमुखभेदाः?

- (a) चत्वारः (b) सप्त
(c) नव (d) एकादश

Ans : (a) भारोपीय परिवार में दश शाखाएँ थी उसमें से शतम् वर्ग में 4 वर्ग आते हैं-

(1) भारत-ईरानी (2) बाल्टो-स्लाविक (3) आर्मीनी (4) अल्बानी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. नायिकारहितं नाटकमिदम्?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) रत्नावली
(c) मुद्राराक्षसम् (d) वेणीसंहारम्

Ans : (c) विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षसम् नायिका रहित नाटक है। इसमें 7 अंक हैं तथा वीर रस प्रधान नाटक है इसका नायक चाणक्य है। गुण-प्रसाद है।

नोट-कहीं-कहीं चन्द्रगुप्त को इसका नायक माना जाता है।

39. “व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्” इति कस्मिन् काव्ये उक्तम् -

- (a) शिशुपालवधे (b) किरातार्जुनीये
(c) भट्टिकाव्ये (d) कुमारसम्भवे

Ans : (b) ‘व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्’ यह पङ्क्ति किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की है। भारविवरित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त है तथा बृहत्तरी के अन्तर्गत परिगणित है।

40. विश्रुतस्य वृत्तान्तमत्रोपवर्णितम्

- (a) कादम्बरी (b) दशकुमारचरितम्
(c) हर्षचरितम् (d) चम्पूरामायणम्

Ans : (b) दशकुमारचरितम् आचार्य दण्डी की रचना है। इसमें कथा नामक काव्यविधा है। इसमें तीन खण्ड हैं, प्रधान रस शृंगार है तथा इसमें विश्रुत का वृत्तान्त वर्णित है।

41. “सुभाषितं हारि विशत्यधोगलान् दुर्जनस्यैरिपोरिवामृतम्” इति केन कविनोक्तम्?

- (a) वेदव्यासेन (b) कालिदासेन
(c) बाणमहाकविना (d) भासेन

Ans : (c) सुभाषितं हारि विशत्यधोगलान् दुर्जनस्यैरिपोरिवामृतम् यह उक्ति बाणभट्ट से सम्बन्धित है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिका चिनुत-

(A) मृच्छकटिकम्	1. अश्वघोषः
(B) वेणीसंहारम्	2. शूद्रकः
(C) बालचरितम्	3. भट्टनारायणः
(D) बुद्धचरितम्	4. भासः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 4	3	2	1
(b) 3	2	4	1
(c) 2	3	4	1
(d) 2	4	1	3

Ans : (c) सही तालिका इस प्रकार है-

मृच्छकटिकम्	-	शूद्रकः
वेणीसंहारम्	-	भट्टनारायणः
बालचरितम्	-	भासः
बुद्धचरितम्	-	अश्वघोषः

43. ‘तत्र श्लोकचतुष्टयमिति दृश्यकाव्यमुद्दिश्योद्धौषितम्?’

- (a) विक्रमोर्वशीयम् (b) शाकुन्तलम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) मृच्छकटिकम्

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास का द्वितीय नाटक है। यह 7 अंकों में विभक्त है। इसके चतुर्थ अंक में 4 श्लोक महत्वपूर्ण माने गये हैं।

काव्येषु नाटकं रम्यम् श्लोकचतुष्टयम् ।

44. रघुवंशे कति सर्गेषु श्रीरामकथा वर्णिता कालिदासेन :?

- (a) अष्टसु (b) चतुर्दशसु
(c) षट्सु (d) अष्टादशसु

Ans : (c) रघुवंश महाकाव्यम् महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचना है। इसमें मनु के परवर्ती राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम आदि का वर्णन है, इसमें 19 सर्ग हैं। इसमें से श्रीरामकथा का वर्णन 6 सर्गों में किया गया है।

45. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायक भवति :

- (a) राजहंसः (b) मानसारः
(c) राजवाहनः (d) पुष्पोद्भवः

Ans : (b) दशकुमारचरितम् दण्डी की प्रसिद्ध रचना है। इसमें इसके तीन खण्ड हैं, प्रधान रस शृंगार है, एवं नायक राजवाहन तथा प्रतिनायक मानसार है।

46. रसनिष्पत्तिविषये: साधारणीकरणं प्रथमतया केन प्रतिपादितम्?

- (a) शङ्कुकेन (b) भट्टलोल्लटेन
(c) भट्टनायकेन (d) भरतेन

Ans : (b) “निष्पत्ति” शब्द के चार अर्थ हैं-

भट्टलोल्लट के मत में	-	उत्पत्ति
शङ्कुके के मत में	-	अनुमिति
भट्टनायक के मत में	-	भुक्ति
अभिनवगुप्त के मत में	-	अभिव्यक्ति

47. नाटके इतिवृत्तं कीदृशम्?

- (a) प्रसिद्धम् (b) कल्पितम्
(c) अप्रसिद्धम् (d) मिश्रम्

Ans : (a) रूपक के दश भेद में से नाटक की कथावस्तु इतिहास पुराणादि में प्रसिद्ध होनी चाहिए। वह 5 सन्धियों से युक्त होना चाहिए तथा 5-10 अंक तक होना चाहिए।

48. कस्य रूपकेषु प्रस्तावना स्थापनेत्युच्यते?

- (a) कालिदासस्य (b) भवभूतेः
(c) श्रीहर्षस्य (d) भासस्य

Ans : (d) “भासस्य रूपकेषु प्रस्तावना ‘स्थापना’ इत्युच्यते” अर्थात् भास के नाटकों में प्रस्तावना के स्थान पर स्थापना शब्द का प्रयोग किया गया है। संस्कृतजगत् में भास के 13 नाटक प्राप्त होते हैं।

49. आनन्दवर्धनमते मधुरतमं रसः कः?

- (a) करुणरसः (b) विप्रलम्भशृङ्गारः
(c) सम्भोगशृङ्गार (d) हास्य

Ans : (a) ध्वनिकार आनन्दवर्धन करुण रस को स्वीकार करते हैं। करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है एवं इसका वर्ण कपोतवर्ण तथा इसके देवता यम हैं। भवभूति ने भी करुण रस को प्रधान माना है।

50. करुणरसस्य वर्णः कः?

- (a) श्यामः (b) रक्तः
(c) कपोतः (d) कृष्णः

Ans : (c) करुण रस का स्थायीभाव शोक होता है। इसका वर्ण कपोतवर्ण होता है एवं इसके देवता यम हैं। उत्तररामचरितम् नाटक करुण रस प्रधान नाटक ग्रन्थ है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2012

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. राजन्तमध्वराणाम् इति पठ्यते -

- (a) पृथिवीसूक्ते (b) अग्निसूक्ते
(c) विष्णुसूक्ते (d) वाक्सूक्ते

उत्तर-(b) प्रभाव और विस्तार की दृष्टि से अग्नि को ऋग्वेद में दूसरा स्थान प्राप्त है। 200 सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गयी है। राजन्तमध्वराणाम् यह अग्नि सूक्त में ही पढ़ा गया है।

2. कतिलक्षण युक्तो ग्रन्थवाचको ब्राह्मणशब्दः?

- (a) द्वादश (b) पञ्चदश
(c) दश (d) अष्ट

उत्तर-(c) ग्रन्थवाचक ब्राह्मण शब्द दश लक्षणों से युक्त होता है। ब्राह्मण की परिभाषा उपनिषदकार इस प्रकार बताये हैं- जो समस्त दोषों से रहित, अद्वितीय, आत्मतत्त्व से सम्पृक्त है, वह ब्राह्मण है। यथा-

“विद्या तपश्च योनिश्च एतद् ब्राह्मणकारकम् ।
विद्यातपोभ्यां यो हीनो जातिब्राह्मण एव सः ॥- पतञ्जलिभाष्य।

3. पौर्णमासेष्टौ कति प्रयाजाः भवन्ति?

- (a) सप्त (b) दश
(c) अष्ट (d) पञ्च

उत्तर-(d) पौर्णमासेष्टौ पञ्च प्रयाजाः भवन्ति? इसी तरह गृहस्थाश्रमियों के लिए पञ्चमहायज्ञों का विधान है, वे हैं-

- (1) ऋषियज्ञ (शास्त्र अध्ययन)
(2) देवयज्ञ (पूजा, होम आदि अन्य इसी प्रकार की उपासनायें)
(3) नृत्यज्ञ (अतिथि-सत्कार)
(4) पितृयज्ञ (माता-पिता की सेवा)
(5) भूतयज्ञ (पशु-पक्षियों की देखभाल)।

4. पञ्चमहायज्ञाः किमर्थम् अनुष्ठीयन्ते?

- (a) ज्वरशान्तये (b) वास्तुदोषनिवृत्तये
(c) पञ्चसूनाद्वेषनाशाय (d) धनलाभाय

उत्तर-(c) पञ्चमहायज्ञाः पञ्चसूनाद्वेषनाशाय अनुष्ठीयन्ते- ये पाँच महायज्ञ हैं- (1) ब्रह्मयज्ञ (2) पितृयज्ञ (3) देवयज्ञ (4) भूतयज्ञ और (5) नृत्यज्ञ।

5. शुनः शोपाख्यानं प्राधान्येन स्तुतः देवः कः?

- (a) कुबेरः (b) इन्द्रः
(c) विष्णुः (d) वरुणः

उत्तर-(d) कठोपनिषद् के शुनः शोपाख्यान नामक आख्यान में मुख्य रूप से वरुण देवता की स्तुति की गयी है।

6. मन्त्रेषु अनुदात्तस्वराङ्कनं क्रियते-

- (a) मध्ये (b) उपरिष्ठात्
(c) अधः (d) वामतः

उत्तर-(c) मन्त्रों में अनुदात्त का स्वराङ्कन अधः (नीचे) किया जाता है।

7. यज्ञविधिमधिकृत्य मन्त्रव्याख्यानं क्रियते-

- (a) अरविन्देन (b) विन्तर नित्सेन
(c) दयानन्देन (d) सायणेन

उत्तर-(d) यज्ञविधि को आधार मानकर मन्त्रों का व्याख्यान सायण महोदय ने किया था। आचार्य सायण को चौदहवीं सदी का माना जाता है। सायण ही वेदों के सर्वमान्य भाष्यकर्ता थे। इन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया- यथा

(1) सुभाषित सुधानिधि (2) प्रायश्चित्त सुधानिधि (3) अलङ्कार सुधानिधि (4) पुरुषार्थ सुधानिधि (5) आयुर्वेद सुधानिधि (6) यज्ञतन्त्र सुधानिधि (7) धातुवृत्ति (8) वेदभाष्य।

विशेष- सायण ने अपने भाष्यों को “माधवीय वेदार्थ प्रकाश” के नाम से अभिहित किया। यथा उल्लेखित है-

“तेन मायणपुत्रेण सायणेन मनीषिणा।

आख्यया माधवीयेयं धातुवृत्तिर्विरच्यते ॥”

8. एषु अर्वाचीनो वेदभाष्यकारो न वर्तते-

- (a) मैक्समूलरः (b) वेबरः
(c) अरविन्दः (d) सायणः

उत्तर-(d) एषु अर्वाचीन वेदभाष्यकारो सायणः न वर्तते। इनमें सबसे पहले अरविन्द, वेबर, मैक्समूलर तथा बाद में सायण आते हैं।

9. ईशावास्योपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धः?

- (a) ऋग्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर-(c) ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। यजुर्वेद की दो शाखायें - (1) कृष्णयजुर्वेद तथा (2) शुक्लयजुर्वेद।

10. कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः कुत्रेममुक्तिः?

- (a) श्रीभगवद्गीतायाम् (b) ईशावास्योपनिषद्
(c) कठोपनिषदि (d) श्रीमद्भागवते

उत्तर-(b) कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः यह उक्ति ईशोपनिषद् या ईशावास्योपनिषद् से सम्बन्धित है। ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। इस उपनिषद् के विषय- ज्ञानयोग, द्वैत, अद्वैत सिद्धान्त हैं।

11. एतेषु सारिथिः कः उच्यते?

- (a) आत्मा (b) शरीरम्
(c) मनः (d) बुद्धिः

उत्तर-(d) गीता में बुद्धि को सारिथि कहा गया है तथा आत्मा को पुत्र बताया गया है।

12. अश्वस्य मेध्यस्य लोमानि कानि उच्यन्ते?

- (a) ऋतवः
(b) दिशः
(c) नक्षत्राणि
(d) ओषधयश्च वनस्पतयश्च

उत्तर-(d) अश्वस्य मेध्यस्य लोमानि ओषधयश्च वनस्पतयश्च उच्यन्ते।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

13. 'विद्यया विन्दतेऽमृतम्' इति कुत्रोपदिष्टम्?

- (a) ईशावास्योपनिषद् (b) केनोपनिषद्
(c) तैत्तिरीयोपनिषद् (d) कठोपनिषद्

उत्तर-(b) 'विद्यया विन्दतेऽमृतम्' इसका वर्णन केनोपनिषद् में प्राप्त होता है। केनोपनिषद् सामवेद का उपनिषद् है।

14. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधयत्' इति कुत्रोपदिश्यते?

- (a) श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (b) श्रीमद्भागवते
(c) कठोपनिषद् (d) बृहदारण्यकोपनिषद्

उत्तर-(c) 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधयत्' यह कठोपनिषद् में उपदिष्ट है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद का उपनिषद् है।

15. 'युवा स्यात् साधु युवा' इति कुत्रोपदिश्यते?

- (a) तैत्तिरीयोपनिषद् (b) बृहदारण्यकोपनिषद्
(c) कठोपनिषद् (d) केनोपनिषद्

उत्तर-(a) 'युवा स्यात् साधु युवा' वर्णन कठोपनिषद् में प्राप्त होता है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। कृष्णयजुर्वेद की कुछ उपनिषदे निम्न हैं- तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणीयोपनिषद्।

16. सन्ध्यक्षराणि कति सन्ति?

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) अष्टौ (d) द्वादश

उत्तर-(b) चत्वारि सन्ध्यक्षराणि सन्ति-

(1) क्ष (2) त्र (3) ज्ञ (4) श्र

17. ह्रस्वास्वरभक्तेः उच्चारणकालो भवति-

- (a) त्रिमात्राकालः (b) द्विमात्राकालः
(c) अर्धमात्राकालः (d) अर्धमात्राकालः

उत्तर-(c) ह्रस्व स्वर का उच्चारण काल अर्धमात्रा से भी कम का होता है। दीर्घस्वर का समय द्विमात्रा के समान तथा प्लुत् त्रिमात्रा काल होता है।

18. राष्ट्रियवर्धनसूक्तं कस्यां शाखायां विद्यते?

- (a) शाकलशाखायाम् (b) काण्वशाखायाम्
(c) जैमिनीयशाखायाम् (d) शौनकशाखायाम्

उत्तर-(d) राष्ट्रियवर्धन सूक्त शौनकशाखा में स्थित है। अथर्ववेद की नव शाखाओं में से शौनक शाखा भी एक है।

19. अग्निष्टोमयागो वर्तते-

- (a) वाक्यज्ञः (b) हविर्यज्ञः
(c) सोमयज्ञः (d) स्मार्तयज्ञः

उत्तर-(c) अग्निष्टोमयज्ञ के अन्तर्गत सोमयज्ञ आता है। अग्निष्टोम यज्ञ पाँच दिनों तक मनाया जाता है। सोमयाग के अन्तर्गत प्रवग्य विधि का उल्लेख भी मिलता है।

20. गायत्रीछन्दसि कियन्तो वर्णाः भवन्ति?

- (a) 20 (b) 24
(c) 28 (d) 32

उत्तर-(b) गायत्री छन्द में 24 वर्ण होते हैं। जबकि अनुष्टुप् में 32 वर्ण, उष्णिग में 28 वर्ण तथा बृहती छन्द में 36 अक्षर होते हैं।

21. निरुक्तानुसारं पञ्चमो भावविकारः कः?

- (a) जायते (b) अपक्षीयते
(c) वर्धते (d) विनश्यति

उत्तर-(b) भावविकार षट् है- (1) जायते, (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति। अतः पाँचवों भावविकार अपक्षीयते है।

22. 'समुद्रवन्त्यस्मादापः इत्यनेन को निर्दिश्यते?

- (a) मेघः (b) ह्रदः
(c) समुद्रः (d) नदी

उत्तर-(c) समुद्रवन्त्यस्मादापः इत्यनेन समुद्रः निर्दिश्यते। यह समुद्र को निर्दिशित करता है।

23. 'चित्' इति निपातो वर्तते-

- (a) निषेधार्थे (b) उपमार्थे
(c) शब्दार्थे (d) प्रयोगार्थे

उत्तर-(b) 'चित्' निपात् का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है जैसे- पूजार्थे, उपमाऽथे, निन्दाऽर्थे इत्यादि। निषेधार्थ में तो 'न' निपात का प्रयोग होता है।

24. माङ्गलिक आचार्यो महतो शास्त्रौधस्य मङ्गलार्थमादितः किं प्रयुङ्क्ते?

- (a) काश्चम् (b) नित्यशब्दम्
(c) अनित्यशब्दम् (d) सिद्धशब्दम्

उत्तर-(d) माङ्गलिक आचार्यो महतो शास्त्रौधस्य मङ्गलार्थमादितः सिद्धशब्दं प्रयुङ्क्ते।

25. 'इलादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?

- (a) आम् (b) इद्
(c) वृद्धिः (d) गुणः

उत्तर-(a) इलादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः यह सूत्र, आम् संज्ञा का विधान करता है। जबकि वृद्धिरादैच् एवं वृद्धिरेचि क्रमशः संज्ञा एवं सन्धि का विधान करते हैं।

26. अधोऽङ्कितानं युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) प्राचांष्फ	1. क्रियातिपत्तौ
(B) लिङ्निमित्ते लृङ्	2. तृतीयान्यतरस्याम्
(C) प्रेष्यबुवोर्हविषो	3. तद्धितः
(D) तुल्यार्थैस्तुलोपमाभ्याम्	4. देवतासम्प्रदाने
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 2	3	1	4
(b) 3	2	4	1
(c) 3	1	4	2
(d) 4	2	3	1

उत्तर-(c)

प्राचांष्फ - तद्धितः ।
लिङ्निमित्ते लृङ् - क्रियातिपत्तौ
प्रेष्यबुवोर्हविषो - देवता सम्प्रदाने
तुल्यार्थैस्तुलोपमाभ्याम् - तृतीयान्यतरस्याम्
नोट- तुला और उपमा को छोड़कर तुल्यार्थ वाली शब्दों के योग में विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है पक्ष में षष्ठी।

27. "आख्यातोपयोगे" इति सूत्रस्य उदाहरणं किम्?

- (a) मातुर्निर्लीयते कृष्णः (b) नटस्यगाथां शृणोति
(c) उपाध्यायादधीते (d) हितवतो गङ्गा प्रभवति

उत्तर-(c) उपाध्यायादधीते (वह उपाध्याय से पढ़ता है) इस वाक्य में आख्यातोपयोगे सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हुई है। 'हिमवतो गङ्गा प्रभवति' में 'भुवःप्रभवश्च' सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हुई है।

28. 'केशवः' इत्यत्र 'कन्' केन सूत्रेण विधीयते?

- (a) विमुक्तादिभ्योऽण् (b) स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते
(c) कुल्माषादज् (d) पूर्वोदिनिः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर-(b) केशवः पद में स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते इस सूत्र से कन् प्रत्यय हुआ है।

29. पाणिनीयशिक्षानुसारं लिखितपाठकः कः भवति?

- (a) उत्तमः (b) उत्तमोत्तमः
(c) अधमः (d) श्रेष्ठः

उत्तर-(c) पाणिनीयशिक्षा के अनुसार लिखित पाठक अधम होता है तथा महर्षि पाणिनि ने अपने शिक्षा ग्रन्थ पाणिनीय शिक्षा में भाषा प्रक्रिया को बहुत ही सुस्पष्ट ढंग से प्रस्तुत किया है।

30. पारिवारिकवर्गीकरणस्य कति प्रमुखभेदाः ?

- (a) चतुर्दश (b) षोडश
(c) अष्टादश (d) विंशतिः

उत्तर-(c) पारिवारिक वर्गीकरण का अभिप्राय है विश्व की भाषाओं को परिवारों में विभक्त करना, जिस प्रकार एक माता पिता से उत्पन्न व्यक्ति एक परिवार के कहे जाते हैं उसी प्रकार एक भाषा से निकली हुयी भाषायें भी एक परिवार की कहलाती हैं। पारिवारिक वर्गीकरण के कुल 18 भेद किये गये हैं।

31. भारोपीय परिवारे भारत ईरानी वर्गः कस्मिन् वर्गे?

- (a) केन्दुम्वर्गः (b) शतम्वर्गः
(c) चीनीपरिवारः (d) आमीनीपरिवारः

उत्तर-(b) भारोपीय परिवार विश्व की भाषाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवार हैं इस परिवार की दो मुख्य शाखायें हैं-

(i) भारोपियन शाखा (ii) भारत ईरानी शाखा। इसमें भारत ईरानी शाखा को शतम्वर्ग में रखा गया है।

32. रुद्रदामनः 'गिरनारशिलालेखे' सुदर्शनतडागस्य कःपुनर्निर्माता?

- (a) पुष्यगुप्तः (b) तुषारस्फः
(c) चक्रपालितः (d) सुविशाखः

उत्तर-(d) रुद्रदामन के गिरनारशिलालेख में सुदर्शन तालाब का पुनर्निर्माण करने वाला सुविशाख को बताया गया है।

33. 'शोणो धावति' इत्यत्र का लक्षणा-

- (a) भागलक्षणा (b) जहल्लक्षणा
(c) अजहल्लक्षणा (d) जहदजहल्लक्षणा

उत्तर-(c) शोणो धावति यह अजहल्लक्षणा का उदाहरण है। क्योंकि शोणो धावति का मुख्यार्थ लाल रंग दौड़ रहा है। किन्तु लाल वर्ण तो अमूर्त गुण है अतः उसका दौड़ना सम्भव नहीं है इसलिए मुख्यार्थ बाधित हो गया।

34. वेदान्तानुसारं कतिविधः समाधिः?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर-(a) ध्येय में चित्त की निश्चल स्थिति को समाधिः कहते हैं। यह समाधि दो प्रकार की होती है- (1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक।

35. 'वेदान्त' शब्दस्य पर्यायः कः?

- (a) न्यायदर्शनम् (b) पूर्वमीमांसा
(c) उत्तरमीमांसा (d) सांख्यदर्शनम्

उत्तर-(c) सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त- इन षड्दर्शनों में से वेदान्त एक प्रमुख दर्शन है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहते हैं।

36. सांख्यदर्शने कति प्रमाणानि स्वीकृतानि?

- (a) एकः (b) द्वौ
(c) त्रीणि (d) चत्वारि

उत्तर-(c) सांख्यदर्शन में सांख्याचार्यों को तीन प्रमाण ही अभीष्ट हैं- (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) शब्द।

37. सांख्यदर्शने सूक्ष्मशरीरं कति तत्त्वात्मकम्?

- (a) एकादश (b) द्वादश
(c) अष्टादश (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर-(c) सांख्य में सूक्ष्म शरीर को 18 तत्वों से निर्मित माना गया है- जिनमें पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रायें महत्तत्त्व अहंकार तथा मन।

$$5+5+5+3 = 18$$

38. पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम् उच्यते-

- (a) विधिः (b) मन्त्रः
(c) निषेधः (d) अर्थवादः

उत्तर-(c) पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम् निषेधः उच्यते। अर्थात् पुरुष के निवर्तक वाक्य को निषेध कहा गया है।

39. अर्थसंग्रहस्य कः प्रणेता?

- (a) लौगाक्षिभास्करः (b) कुमारिलभट्ट
(c) शम्भुभट्ट (d) आपदेवः

उत्तर-(a) अर्थसंग्रह के प्रणेता लौगाक्षिभास्कर हैं। जबकि कुमारिल भट्ट ने "श्लोक वार्तिक" नामक टीका लिखी है।

40. विनियोगविधेः सहकारिभूतानि प्रमाणानि कति?

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) दश (d) एकादश

उत्तर-(b) विनियोग विधे सहकारिभूतानि षट् प्रमाणानि सन्ति। विनियोग विधि में सहकारिभूत प्रमाण छः माने गये हैं।

41. सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥
श्लोकममुं रावणसुरम्प्रति कः उक्तवान्?

- (a) कुम्भकर्णः (b) सुग्रीवः
(c) रावणः (d) मारीचः

उत्तर-(d) यह श्लोक रामायण में रावण को मारीच के द्वारा कहा गया है वह रावण से कहता है कि हे राजन्! निरन्तर प्रिय बोलने वाले लोग तो सुलभ हैं लेकिन अप्रिय और पथ्य श्रोता और वक्ता दोनों दुर्लभ होते हैं।

42. लोके अतिप्रसिद्धा 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि उपनिबद्धा?

- (a) अरण्यपर्वणि (b) भीष्मपर्वणि
(c) शान्तिपर्वणि (d) विराटपर्वणि

उत्तर-(b) श्रीमद्भगवद्गीता का महाभारत के भीष्मपर्व में 700 श्लोकों में वर्णन मिलता है जो कि भगवान् श्री कृष्ण द्वारा कही गयी है।

43. रावणासुरात् सीतायाः विमुक्तिः कथा स्वप्नेन दृष्टा-

- (a) मन्दोदर्या (b) तारया
(c) त्रिजट्या (d) कैकेय्या

उत्तर-(c) त्रिजटा ने स्वप्न में देखा कि असुर सम्राट रावण सीता को अपने बन्धन से मुक्त कर दिया।

44. कीचकस्य वधं महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि उपवर्णितम्?

- (a) उद्योगपर्वणि (b) विराटपर्वणि
(c) शल्यपर्वणि (d) द्रोणपर्वणि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर-(b) महाभारत 18 पर्वों में विभक्त एक विशाल भारतीय ग्रन्थ हैं महाभारत के विराटपर्व में कीचकवध का वर्णन मिलता है।

45. कस्मिन् पुराणे काव्यशास्त्रसम्बन्धितविषयाः सर्व उद्घुङ्किताः वर्तन्ते?
 (a) ब्रह्मपुराणे (b) ब्रह्माण्डपुराणे
 (c) नारदपुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर-(d) अग्निपुराण में तात्कालिक विधाओं का संकलन है। अतः इस पुराण में काव्यशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, आयुर्वेद कोश, नाट्यविद्या आदि विषयों का वर्णन है।

46. मौर्यवंशराजानां चरितं कस्मिन् पुराणे वर्णितम्-
 (a) वायु पुराणे (b) वराहपुराणे
 (c) वामनपुराणे (d) विष्णुपुराणे

उत्तर-(d) विष्णुपुराण सर्वप्राचीन पुराण है इसमें सभी प्राचीन लक्षण घटित हैं। विष्णु पुराण में मौर्य राजाओं की वंशावली दी गयी है।

47. ऋष्यशृङ्गमुनेः वृत्तान्तं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितम्?
 (a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
 (c) सुन्दरकाण्डे (d) बालकाण्डे

उत्तर-(d) ऋष्यशृङ्ग मुनि का आख्यान महाभारत के बालकाण्ड में 10-15 सर्ग के मध्य आता है। ऋष्यशृङ्ग अङ्ग देश के राजा रोमपाद के जामाता थे।

48. अर्थशास्त्रस्य द्वितीयाधिकरणं वर्तते-
 (a) विनयाधिकारिकम् (b) धर्मस्थलीयम्
 (c) अध्यक्षप्रचारः (d) कण्टकशोधनम्

उत्तर-(c) कौटिल्य का अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों में विभक्त है अध्यक्ष प्रचार दूसरे अधिकरण में है। पहले अधिकरण में राजा की शिक्षा तथा उसके कर्तव्यों का वर्णन है।

49. अमात्योत्पत्तिः कुत्र उपदिष्टा?
 (a) कण्टकशोधने (b) धर्मस्थीये
 (c) षाड्गुण्ये (d) विनयाधिकारिके

उत्तर-(d) अर्थशास्त्र में “अमात्य की उत्पत्ति का विषय” विनयाधिकारिक में बताया गया है। दूसरे अधिकरण में सेना सम्बन्धी उल्लेख मिलता है।

50. कृतयुगस्य कालावधिः उक्तः -
 (a) 1000 वर्षात्मकः (b) 2000 वर्षात्मकः
 (c) 3000 वर्षात्मकः (d) 4000 वर्षात्मकः

उत्तर-(d) कृतयुगस्य कालावधिः 4000 वर्षात्मकः उक्तवान्।

51. निष्क्रमण संस्कारः कर्तव्यः -
 (a) प्रथमे मासि (b) द्वितीये मासि
 (c) तृतीये मासि (d) चतुर्थे मासि

उत्तर-(d) भारतीय संस्कृति में 16(सोलह) संस्कारों की व्यवस्था की गई है। जिनमें पहला संस्कार गर्भाधान तथा अन्तिम अन्त्येष्टि है। निष्क्रमण नामक संस्कार चतुर्थ मास में किया जाता है।

52. मृगया गण्यते-
 (a) कामजगणे (b) क्रोधजगणे
 (c) लोभजगणे (d) मोहजगणे

उत्तर-(a) मृगया कामजगणे गण्यते। अर्थात् मृगया (शिकार) को कामज गण के अन्तर्गत गिना जाता है।

53. विवादेशु उपदर्शितो व्यवहारो वर्तते-
 (a) एकपाद् (b) द्विपाद्
 (c) त्रिपाद् (d) चतुष्पाद्

उत्तर-(d) विवादेशु उपदर्शितो चतुष्पाद् व्यवहारो वर्तते।

54. स्मृत्योर्विरोधे कः बलवान्?
 (a) व्यवहारः (b) न्यायः
 (c) राजा (d) न्यायाधीशः

उत्तर-(b) स्मृत्योर्विरोधे न्यायः बलवान् अस्ति। स्मृति के विरोध में न्याय बलवान् होता है।

55. 'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः' कस्मैयमुक्तिः?
 (a) कामधेनोः (b) नन्दिन्याः
 (c) दिलीपस्य (d) वसिष्ठस्य

उत्तर-(d) प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः यह श्लोक कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का है यह ऋषि वसिष्ठ के द्वारा कहा गया है।

56. 'नमुचिद्विषा' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?
 (a) नारदेन (b) इन्द्रेण
 (c) रावणेन (d) माधेन

उत्तर-(b) 'नमुचिद्विषा' इन्द्र के लिए इन्द्र का विशेषणार्थक है। इन्द्र को 'मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च' भी माना जाता है अर्थात् इन्द्र की उत्पत्ति विराट पुरुष के मुख से बतलाई गई है।

57. सर्वथा न कञ्चन् स्पृशन्ति शरीरधर्माणुमुपतापाः कस्मात् ग्रन्थादेतत् वाक्यमुद्धमतम् -
 (a) दशकुमारचरितम् (b) हर्षचरितम्
 (c) नैषधीयचरितम् (d) कादम्बरी

उत्तर-(d) महाकवि बाण द्वारा रचित प्रसिद्ध गद्य काव्य ग्रन्थ कादम्बरी में यह सूक्ति प्राप्य है। महाकवि बाण कहते हैं कि- ऐसा कभी हो ही नहीं सकता कि किसी भी शरीरधारी को पीड़ाये बिल्कुल स्पर्श ही न करे।

58. श्री कृष्णस्य सम्मुखं गौरवर्णः नारदः कस्यर्गं भ्रामताम् भचोरयत?
 (a) सूर्यस्य (b) कृष्णस्य
 (c) चन्द्रमसः (d) बलदेवस्य

उत्तर-(c) श्री कृष्ण के सम्मुख गौरवर्ण वाले महर्षि नारद चन्द्रमा के समान सुशोभित हो रहे हैं।

59. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' इति कस्य मतम्?
 (a) जगन्नाथस्य (b) हेमचन्द्रस्य
 (c) बाणभट्टस्य (d) मम्मटस्य

उत्तर-(d) काव्य के हेतु बताते समय मम्मट का यह कथन है- शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञ शिक्षयाभ्यासः इति हेतुस्तदुद्भवे ॥

60. उपमानोपमेययोः बिम्बप्रतिबिम्बत्वं चेत् कः तत्रालङ्कारः?
 (a) निर्दशनालङ्कारः (b) दीपकालङ्कारः
 (c) व्यतिरेकालङ्कारः (d) दृष्टान्तालङ्कारः

उत्तर-(d) इन उपमान उपमेय उनके विशेषण और साधारण धर्म आदि सबका (भिन्न होते हुये भी औपम्य के प्रतिपादनार्थ उपमान वाक्य तथा उपमेयवाक्य में पृथगुपादानस्वरूप) बिम्ब प्रतिबिम्बभाव होने पर दृष्टान्तालङ्कार होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

61. ध्वनि प्रभेदेषु उत्कृष्टः कः?

- (a) अहङ्कारध्वनिः (b) भावध्वनिः
(c) रसध्वनिः (d) वस्तुध्वनिः

उत्तर-(c) आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में ध्वनि के समस्त भेदों और उपभेदों में रसध्वनि को उत्कृष्ट माना है।

62. हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः" इति कुत्र वर्तते?

- (a) उरुभङ्गे (b) दूतकाव्ये
(c) कर्णभारे (d) मध्यमव्यायोगे

उत्तर-(c) कर्णभार भास का एकांकी नाटक है। कर्ण के सारथि शल्य के द्वारा यह श्लोक तब कहा गया जब युद्ध भूमि में जाते समय कर्ण का मन विचलित हो रहा था तब उसने कहा-यदि मारे जाओगे तो स्वर्ग प्राप्त करेंगे और जीतने पर यश की प्राप्ति होगी।

63. यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठयां कस्य वचनमिदम्?

- (a) दुष्यन्तस्य (b) कण्वस्य
(c) शरद्वतस्य (d) गौतम्याः

उत्तर-(b) यह श्लोक कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक का है तथा श्लोक चतुष्टय में आता है। शकुन्तला के विदाई के अवसर पर महर्षि कण्व इस श्लोक को कहते हैं।

64. "वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे" इत्युक्ति कस्मिन् नाटके आपाति?

- (a) महावीरचरिते (b) मालतीमाधवे
(c) मालविकाग्निमित्रे (d) उत्तररामचरिते

उत्तर-(d) यह श्लोक भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक के द्वितीय अंक का चतुर्थ श्लोक है। यह श्लोक वनदेवता के पूछने पर आत्रेयी कहती है कि -वितरति गुरु प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे। न तु फलं प्रति तद्यथा।।

65. मुखसन्धेः अङ्गानि कति?

- (a) द्वादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) एकादश

उत्तर-(a) मुख सन्धि के 12 अङ्ग हैं- (1) उपक्षेप (2) परिकर (3) परिन्यास (4) विलोभन (5) मुक्ति (6) प्राप्ति (7) समाधान (8) विधान (9) परिभावना (10) उद्भेद (11) भेद और (12) करण।

66. "मुद्राराक्षस नाटके" मुद्रा केन सम्बद्धा भवति?

- (a) मलयकेतुना (b) चाणक्येन
(c) चन्द्रगुप्तेन (d) राक्षसेन

उत्तर-(d) विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षस नामक नाटक में 7 अङ्क हैं। इसका नायक चाणक्य तथा प्रतिनायक राक्षस है। मुद्रा (अंगुलीयकम्) राक्षस से सम्बन्धित है।

67. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' इति व्याख्याः कर्ता कः?

- (a) आनन्दवर्धनः (b) भरतः
(c) अभिनवगुप्तः (d) धनञ्जयः

उत्तर-(c) नाट्यशास्त्र की अभिनवभारती नामक व्याख्या करने वाले श्री अभिनवगुप्त जी हैं। आनन्दवर्धन का ध्वन्यालोक विश्व प्रसिद्ध काव्य है। भरत का नाट्यशास्त्र एवं धनञ्जय की दशरूपक ये कृतियाँ हैं।

68. सात्त्विकभावनां संख्या भवति-

- (a) त्रयत्रिंशत् (b) नव
(c) अष्टौ (d) अष्टादश

उत्तर-(c) सात्त्विक भावों की संख्या आठ प्राप्त होती है। मन की भागीदारी में स्प्रिंग्स जो भाव है उसे सात्त्विक भाव कहते हैं। अष्ट सात्त्विक भाव इसप्रकार हैं- (1) स्तंभ (2) स्वेद (3) रोमाञ्च (4) अश्रुपात (5) कम्प (6) विवर्णता (7) प्रलय और (8) स्वर भङ्ग।

69. पण्डितराजजगन्नाथानुसारं सामान्यवस्तुध्वनिः गुणीभूतव्यंग्यप्रकाराश्च कश्चिन् काव्य प्रभेदेऽन्तर्भवन्ति?

- (a) उत्तमोत्तमकाव्ये (b) उत्तमकाव्ये
(c) मध्यमकाव्ये (d) अधमकाव्ये

उत्तर-(b) पण्डितराजजगन्नाथ के अनुसार सामान्यवस्तु ध्वनि गुणीभूत व्यंग्य प्रकारों के उत्तमकाव्य के भेदों एवं प्रभेदों के अन्तर्गत इसका अन्तर्भाव होता है।

70. तर्कसंग्रहे कति द्रव्याणि?

- (a) चत्वारि (b) सप्त
(c) नव (d) षट्

उत्तर-(c) तर्क संग्रह के अनुसार द्रव्य नव हैं- (1) पृथ्वी (2) जल (3) तेज (4) वायु (5) आकाश (6) काल (7) दिक् (8) आत्मा और (9) मन।

71. तर्कसंग्रहे अभावस्य कति भेदाः ?

- (a) द्वौ (b) चत्वारः
(c) षट् (d) अष्टौ

उत्तर-(b) अभावः चतुर्विधः - प्राग्भाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव।

72. न्यायस्य अनुमानप्रमाणे कति अवयवाः सन्ति?

- (a) त्रयः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) नव

उत्तर-(b) न्याय सूत्र के अनुसार अनुमान प्रमाण के पाँच अवयव हैं- (1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण (4) उपनयन (5) निगमन।

73. तर्कसंग्रहे गुणाः सन्ति -

- (a) द्वादश (b) पञ्चदश
(c) अष्टादश (d) चतुर्विंशति

उत्तर-(d) चतुर्विंशति गुणाः सन्ति यथा- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार।

74. कतिविधः रसः तर्कसंग्रहानुसारम्-

- (a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षट्विधः (d) अष्टविधः

उत्तर-(c) रसनाग्राह्यो गुणो रसः। स च मधुराम्ललवणकटुकषाय तिक्तभेदात् षट्विधः। मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय, तथा तिक्त के भेदों से रस छः प्रकार का होता है।

75. कति सन्ति हेत्वाभासाः?

- (a) त्रयः (b) पञ्च
(c) नव (d) द्वादश

उत्तर-(b) असद् हेतु को हेत्वाभास कहते हैं। यह हेत्वाभास पाँच प्रकार का होता है- (1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम् और (5) कालात्ययापदिष्ट।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2012

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

सूचना : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. नासत्यौ इति कस्य नाम?

- (a) द्यावपृथिव्योः (b) इन्द्रावरुणयोः
(c) अश्विनोः (d) इन्द्राग्न्योः

Ans : (c) नासत्यौ अश्विनोः नाम। अश्विन द्युस्थानीय युगल देवता हैं। इन्द्र, अग्नि, सोम के बाद अश्विन का नाम आता है। ऋग्वेद के 50 सूक्तों में इसका उल्लेख है, इसके अन्य नाम अश्विनौ, दंस्त्रा, नासत्यौ हैं।

2. चन्द्ररथा का वर्तते?

- (a) नदी (b) उर्वशी
(c) उषाः (d) यमी

Ans : (c) उषस् द्युस्थानीय देवता है 20 सूक्तों में इसका वर्णन है। इसके ऋषि वशिष्ठ हैं। इसके अन्य विशेषण- चन्द्ररथा, रेवती, दुहिता विश्ववारा, दुहितादिवः ऋतावरी हैं।

3. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति?

- (a) नव (b) विंशतिः
(c) दश (d) द्वादश

Ans : (c) ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं, 1028 सूक्त है। इसके प्रत्येक मण्डल के अलग अलग ऋषि हैं-

प्रथम मण्डल	-	मधुच्छन्दा, शतार्चिन
द्वितीय मण्डल	-	गृत्समद
तृतीय मण्डल	-	विश्वामित्र
चतुर्थ मण्डल	-	वामदेव
पञ्चम मण्डल	-	अत्रि
षष्ठ मण्डल	-	भरद्वाज
सप्तम मण्डल	-	वशिष्ठ
अष्टम मण्डल	-	कण्व, भृगु, अङ्गीरस्
नवम मण्डल	-	सोम पवमान
दशम मण्डल	-	त्रित, विमद।

4. कपर्दी देवः कः ?

- (a) अग्निः (b) वरुणः
(c) रुद्रः (d) बृहस्पतिः

Ans : (c) कपर्दी देवः रुद्रः। ऋग्वेद में रुद्र की 33 सूक्तों में स्तुति की गई है। इसके देवता रुद्र एवं ऋषि गृत्समद हैं। छन्द त्रिष्टुप् (44 अक्षर) है। यास्क ने इसे सम्पूर्ण जगत का पिता माना है।

5. जैमिनीयशाखा कस्य वेदस्य?

- (A) ऋग्वेदस्य (B) यजुर्वेदस्य
(C) सामवेदस्य (D) अथर्ववेदस्य

Ans : (c) जैमिनीय, कौथुमीय, राणायनीय शाखा का सम्बन्ध सामवेद से है, जबकि शाकल का सम्बन्ध ऋग्वेद से, पिप्पलाद एवं शौनक शाखा का सम्बन्ध अथर्ववेद से एवं माध्यन्दिन एवं काण्व शाखा का सम्बन्ध यजुर्वेद से है।

6. नक्षत्रसम्पातगणनया केन वेदकालो निर्धार्यते?

- (a) मैक्समूलरः (b) वेबरः
(c) बालगंगाधरतिलकः (d) जैकोबी

Ans : (c) वैदिक काल के विभिन्न सिद्धान्तों के प्रवर्तक एवं प्रसिद्ध विद्वान् बालगंगाधर तिलक ने इसे 4000-2500 ई.पू. स्वीकार किया है ये ज्योतिष के आधार पर वेद काल के निर्धारण को मानते हैं।

7. निरुक्तग्रन्थे काण्डसंख्या वर्तते

- (a) चतुर्दश (b) द्वादश
(c) पंच (d) त्रीणि

Ans : (d) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में तीन काण्ड एवं 12 अध्याय हैं तीनों काण्ड निम्न हैं-

- (1) नैघण्टुक
(2) नैगम
(3) दैवत

8. “आ घा ता गच्छा” इति पठ्यते-

- (a) इन्द्रसूक्ते (b) वरुणसूक्ते
(c) विश्वामित्रनदी संवाद (d) यमयमीसंवाद

Ans : (d) यम-यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का दशवाँ सूक्त है। इसमें 14 मन्त्र हैं इसके ऋषि यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत है, एवं छन्द त्रिष्टुप् है।

“आ घा ता गच्छानुत्तरायुगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि। यह इसी संवाद से सम्बद्ध है।

9. “तमसो मा ज्योतिर्गमय” इति कुत्र विद्यते?

- (a) ऋग्वेदे (b) बृहदारण्यके
(c) अथर्ववेदे (d) सामविधाने

Ans : (b) असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। यह बृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त होता है यह शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है इसमें 6 अध्याय हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

10. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत-

(A) सरमा-पणि सम्वादः	1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(B) स्वाध्यायान्मा प्रमदः	2. ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(C) कल्पः	3. तैत्तिरीयोपनिषद्
(D) आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति	4. हस्तः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	3	2	4
(b)	4	2	3	1
(c)	2	3	4	1
(d)	3	2	1	4

Ans : (c) सही सुमेलन इस प्रकार है-

सरमा पणि सम्वादः	- ऋग्वेदस्य दशम मण्डले
स्वाध्यायान्मा प्रमदः	- तैत्तिरीयोपनिषद्
कल्पः	- हस्तः
आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति	- बृहदारण्यकोपनिषद्

11. श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण स्तूयते

(a) गंगा	(b) गोदावरी
(c) विष्णुः	(d) वरुणः

Ans : (c) श्रुतौ यज्ञस्वरूपेण विष्णुः स्तूयते।

विष्णातेर्विशतेर्वास्याद् । विष्णु एक द्युस्थानीय देवता है इसके ऋषि दीर्घतमा है विष्णु सूक्त में 6 मन्त्र हैं। विष्णु की 5 सूक्तों में स्तुति की गई है।

12. अथर्ववेदस्य ब्राह्मणम् विद्यते

(a) शतपथब्राह्मणम्	(b) गोपथब्राह्मणम्
(c) ताड्यब्राह्मणम्	(d) ऐतरेयब्राह्मणम्

Ans : (b) अथर्ववेद का ब्राह्मण - गोपथ
सामवेद का ब्राह्मण - ताड्यब्राह्मण
ऋग्वेद का ब्राह्मण - ऐतरेय
यजुर्वेद का ब्राह्मण - शतपथ

13. कृष्णयजुर्वेदेन सम्बद्धास्ति

(a) छान्दोग्योपनिषद्	(b) कठोपनिषद्
(c) ऐतरेयोपनिषद्	(d) ईशावास्योपनिषद्

Ans : (b) छान्दोग्योपनिषद् - सामवेद
कठोपनिषद् - कृष्णयजुर्वेद
ऐतरेयोपनिषद् - ऋग्वेद
ईशावास्योपनिषद् - शुक्लयजुर्वेद
प्रश्नोपनिषद् - अथर्ववेद

14. तर्कभाषानुसारं कारणं त्रिविधम्

- | |
|---|
| (a) समवायि- असमवायि- निमित्तभेदात् |
| (b) समवायि - संयुक्तसमवायि - निमित्तभेदात् |
| (c) संयोग - संयुक्ततादात्म्य- निमित्तभेदात् |
| (d) सहकारि - तादात्म्य- समवायिभेदात् |

Ans : (a) तर्कभाषा के अनुसार कारण समवायि, असमवायि निमित्तभेद से तीन प्रकार का होता है।

समवायिकारण- जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है जैसे- तन्तु-पट का समवायि कारण है।

असमवायिकारण- जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न होता है। जैसे तन्तु संयोग पट का असमवायिकारण है।

निमित्त कारण- जो दोनों (समवायि, एवं असमवायि) कारण नहीं फिर भी कारण है। वह निमित्त कारण है।

जैसे-तन्तु का रूप, पट के रूप का निमित्त कारण है।

15. वाक्यम् भवति-

(a) ध्वनिसमूहः	(b) साकांक्षापद समूहः
(c) शब्दसमूहः	(d) वर्णसमूहः

Ans : (b) साकांक्षापद समूहः वाक्यं भवति।

आकांक्षा, योग्यता तथा सन्निधि वाले पदों का समूह वाक्य होता है। उदाहरण- गौ, अश्व, पुरुष हस्ती ये चार पद समूह वाक्य नहीं हैं। क्योंकि इनमें परस्पर आकाङ्क्षा नहीं है।

16. कीदृशः तर्कभाषासम्मतः अपवर्गः?

- | |
|--------------------------------|
| (a) दुःखयात्यन्तिकी निवृत्तिः |
| (b) दुःखस्यैकान्तिकी निवृत्तिः |
| (c) ब्रह्मसायुज्यम् |
| (d) स्वर्गात्मकः |

Ans : (a) केशवमिश्र प्रणीता तर्कभाषा में अपवर्ग दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति को माना गया है। आत्यन्तिक का अर्थ है- नष्ट हुए दुःख का पुनः उत्पन्न न होना।

17. उपमितिज्ञानं कथं जायते?

(a) व्याप्तिज्ञानात्	(b) इन्द्रियसन्निकर्षात्
(c) सादृश्यात्	(d) पदज्ञानात्

Ans : (c) उपमिति के करण को उपमान प्रमाण कहते हैं। उपमिति है- संज्ञा (नामपद) और संज्ञी (नामी) अर्थात् पदार्थ के सम्बन्ध का ज्ञान। इस उपमिति का करण सादृश्य ज्ञान ही उपमान प्रमाण है।

18. तर्कभाषानुसारं किमस्ति नवं द्रव्यम्?

(a) जीव	(b) जगत्
(c) दिक्	(d) आत्मा

Ans : (d) तर्कभाषा के अनुसार नवां द्रव्य, आत्मा होगा जबकि इसका सही उत्तर मन होना चाहिए।

19. तर्कभाषायां कति प्रमाणानि?

(a) द्वौ	(b) त्रीणि
(c) चत्वारि	(d) सप्त

Ans : (c) न्यायदर्शन के अनुसार चार प्रमाण बताए गये हैं-

(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) उपमान (iv) शब्द
'अर्थापत्ति' प्रमाण अनुमान प्रमाण में ही अन्तर्भूत है, अतः यह स्पष्ट है कि यह प्रमाण नहीं है। लिङ्ग परामर्शानुमानम् ।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

20. सांख्यकारिकायां कीदृशा गुणाः?

- (a) इष्टानिष्टोभयात्मकाः (b) प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः
(c) सुख-दुःख - रागात्मकाः (d) विषादात्मकाः

Ans : (b) ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका के अनुसार मूल प्रकृति के तीन गुण बताये गये हैं जो इस कारिका के माध्यम से स्पष्ट हैं-

सत्त्वं लघु प्रकाशमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।

गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥

सांख्यकारिका के अनुसार तीनों गुणों के कार्य हैं-

1. प्रकाश 2. प्रवृत्ति 3. नियमार्थ

21. सांख्यकारिकायां कीदृशं कैवल्यम्?

- (a) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(b) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(c) सुखाभिव्यक्तिः
(d) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

Ans : (d) ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका में कैवल्य दो दुःखों की निवृत्ति के बाद बताया गया है।

- (1) एकात्मिक - उत्पन्न हुए दुःख का नाश
(2) आत्यन्तिक - नाश हुए दुःख का पुनः उत्पन्न न होना

22. सांख्यकारिकायां ज्ञानं कस्य धर्मः?

- (a) अहङ्कारस्य (b) प्रकृतेः
(c) पुरुषस्य (d) बुद्धेः

Ans : (d) सांख्यकारिका में 25 तत्त्वों में (बुद्धि) को ज्ञान का धर्म कहा गया है। इसकी उत्पत्ति प्रकृति से होती है। महत्तत्त्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है और अहंकार से पञ्च तन्मात्राएँ उत्पन्न होती हैं।

23. वेदान्तसारे अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिः?

- (a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्था (d) पञ्चधा

Ans : (a) सदानन्द के वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान की दो शक्तियाँ मानी गई हैं-

(i) आवरण शक्ति

(ii) विक्षेप शक्ति

आवरण शक्ति का उदाहरण-

जिस प्रकार छोटा बादल, देखने वाले की दृष्टिपथ को ढक लेने के कारण योजन विस्तीर्ण सूर्य मण्डल को ढक सा लेता है ऐसा प्रतीत होता है।

24. वेदान्तसारे अनिर्वचनीयं किम्?

- (a) ईश्वरः (b) जीवः
(c) जगत् (d) ब्रह्म

Ans : (d) वेदान्तसार में अनिर्वचनीयं ब्रह्म के लिए कहा गया है अर्थात् जिसे वाणी से कहना सम्भव नहीं है।

अर्थात् जो वाणी का विषय नहीं है।

25. वेदान्तसारे लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः?

- (a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) सप्तदश (d) एकोनविंशतिः

Ans : (c) वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर (लिङ्ग शरीर) के सत्रह अवयव हैं। ये अवयव हैं- 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 वायु, 1 बुद्धि, और 1 मन। वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ- ये 5 कर्मेन्द्रियाँ हैं।

26. कर्मणा यमभिप्रैति इत्यत्र किम् कारकम्?

- (a) कर्म (b) करणम्
(c) सम्प्रदानम् (d) अधिकरणम्

Ans : (c) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्।

अर्थात् कर्ता दान क्रिया के कर्म के द्वारा जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

27. 'निर्मक्षिकम्' -अस्य पदस्य लौकिकविग्रह भवति-

- (a) निर् + मक्षिका + अम्
(b) मक्षिका + टा + निर्
(c) मक्षिक + सुँ + निर्
(d) मक्षिका + आम् + निर्

Ans : (d) 'निर्मक्षिकम्' इसका अलौकिक विग्रह 'मक्षिका +आम् + निर्' और लौकिक विग्रह "मक्षिकाणाम् अभावो। अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि साकल्यान्त वचनेषु "इस सूत्र से अभाव अर्थ में अव्ययीभाव समास होकर "निर्मक्षिकम्" रूप सिद्ध होगा।

28. पाणिनिमते मुनिशब्दस्य का संज्ञा भवति?

- (a) नदी (b) घि
(c) टि (d) अपृक्त

Ans : (b) पाणिनिमुनि के मत में मुनि शब्द की घि संज्ञा होती है। "शेषो घ्यसखि। नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकार उकार की घि संज्ञा होती है। सखि शब्द को छोड़कर।

29. समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं किं भवति?

- (a) उपसर्गः
(b) अव्ययम्
(c) उपसर्जनम्
(d) प्रातिपदिकम्

Ans : (c) समासशास्त्रे - "प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम् भवति"। अर्थात् समास में उपसर्जन संज्ञा का पहले प्रयोग होता है। जो पद प्रथमा में हो उसके द्वारा विग्रह वाक्य में स्थित पद का बोध हो वह उपसर्जनसंज्ञक कहलाता है।

30. गुण संज्ञा विधायकं सूत्रं किम्?

- (a) वृद्धिरेचि (b) अकः सवर्णे दीर्घः
(c) आदगुणः (d) अदेङ् गुणः

Ans : (d) गुण संज्ञा विधायक सूत्र "अदेङ्गुणः है। अत् (अ) और एङ् (ए, ओ) गुण संज्ञा वाले हो अर्थात् इनकी गुण संज्ञा हो। यथा - उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (विष्णु)।

31. ग्रामं गच्छन्स्त्रुणं स्पृशति' - इत्यत्र द्वितीयाविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) अकथितञ्च (b) स्पृहेरीप्सितः
(c) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (d) तथायुक्तं चानीप्सितम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) “ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति” यह उदाहरण द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त सूत्र “तथायुक्तं चानीप्सितम्” का है अर्थात् ईप्सिततम् के सदृश क्रिया जन्य फल से युक्त अनीप्सित् पदार्थ की भी कर्म संज्ञा हो ।

32. ‘द्वियमुनम्’ इत्यत्र कः समासः?

- (a) द्विगुः (b) द्वन्द्वः
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुषः

Ans : (c) द्वियमुनम् अव्ययीभाव समास का उदाहरण है।

नदीभिश्च – यदि नदी विशेष के वाचक के साथ संख्या वाचक का समास होता है। तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।

यथा - पञ्चगङ्गम्।

द्वियमुनम्।

33. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

(A) हलोऽनन्तराः	1. केवलसमासः
(B) विशेषसंज्ञा विनिर्मुक्तः	2. संयोगः
(C) प्रायेणान्यपदार्थः प्रधानः	3. इत्थंभूतलक्षणे
(D) जटाभिस्तापसः	4. बहुव्रीहिः

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 3	4	2	1
(b) 1	2	3	4
(c) 2	1	4	3
(d) 4	3	1	2

Ans : (c) अधोलिखित युग्मों में सही तालिका इस प्रकार है-

हलोऽनन्तराः - संयोगः
विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः - केवलसमासः
प्रायेणान्यपदार्थप्रधानः - बहुव्रीहिः
जटाभिस्तापसः - इत्थंभूतलक्षणे।

34. ‘भूतबलिः’ इत्यत्र समासः केन सूत्रेण विधीयते?

- (a) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(b) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः
(c) पञ्चमी भयेन
(d) सप्तमी शोण्डैः

Ans : (b) ‘भूतेभ्यो बलिः’ - भूत-बलिः यह तत्पुरुष समास है। “चतुर्थी तदर्थार्थ-बलिहितसुखरक्षितैः” अर्थात् चतुर्थ्यन्त के अर्थ के निमित्त जो वस्तु हो, उसके वाचक पद के साथ तथा बलि, हित, सुख और रक्षित इन पदों के साथ चतुर्थ्यन्त का समास होता है।

35. क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कः स्यात्?

- (a) कर्म (b) करणम्
(c) कर्ता (d) अधिकरणम्

Ans : (c) क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् अर्थात् क्रिया के उत्पादन में स्वतन्त्र रूप से विवक्षित अर्थ कि कर्ता संज्ञा होती है। स्वतन्त्रः कर्ताः अर्थात् कर्ता किसी कार्य को करने में स्वतन्त्र होता है।

36. भाषाविज्ञानं बलाघातस्य भेदाः सन्ति-

- (a) चत्वारः (b) सप्त
(c) दश (d) द्वादश

Ans : (a) भाषा विज्ञान में बलाघात के मुख्यरूप से चार भेद बताए गये हैं। कभी-कभी किसी बात पर जोर देकर कहने पर भी उसके स्वरूप में अन्तर आ जाता है।

37. अर्थबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि

- (a) सप्त (b) आठ
(c) एकादश (d) त्रयोदश

Ans : (b) भाषा विज्ञान में अर्थज्ञान के 8 प्रकार माने गये हैं- (1) व्याकरण (2) उपमान (3) कोश (4) आप्तवाक्य (5) व्यवहार (6) वाक्यशेष (7) विवृति (8) प्रसिद्ध पद का सानिद्ध।

38. अतादृशिगुणीभूतव्यङ्ग्ये किं काव्यम्?

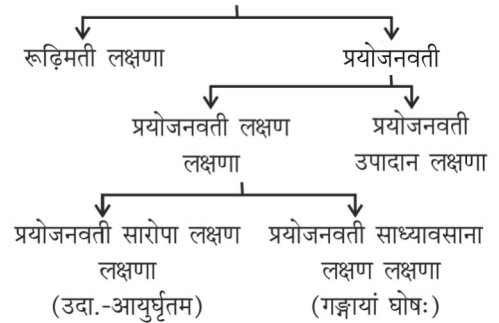
- (a) उत्तमोत्तमम् (b) उत्तमम्
(c) मध्यमम् (d) अधमम्

Ans : (c) आचार्य मम्मट ने काव्य के तीन भेद किए हैं। (i) उत्तम (ii) मध्यम (iii) अधम। उसमें से मध्यम काव्य का लक्षण- अतादृशि गुणीभूत व्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

39. अधोनिर्दिष्टेषु साध्यवसानालक्षणायाः उदाहरणं किं भवति?

- (a) गङ्गायां घोषः (b) कुन्ताः प्रविशन्ति
(c) गौरैवायम् (d) गौराहीकः

Ans : (a) आचार्य विश्वनाथ ने काव्यशास्त्र साहित्यदर्पण में लक्षणा के 80 भेद किए हैं। साध्यावसाना लक्षणा का उदाहरण- गङ्गायां घोषः है। लक्षणा के भेद एवं उदाहरण



40. व्यायोगे नायकः कीदृशः?

- (a) धीरोदात्तः (b) धीरशान्तः
(c) धीरोद्धतः (d) धीरललितः

Ans : (c) रूपक के दश भेद हैं- नाटक, प्रकरण, भाण व्यायोग, समवकार, डिम, वीथी, अंक, प्रहसन एवं ईहामृग। इसमें से व्यायोग की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध है। इसका नायक-धीरोद्धत होता है इसका उदाहरण- “सौगन्धिकाहरणम्” है।

41. मृच्छकटिकं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

- (a) नाटकस्य (b) प्रकरणस्य
(c) डिमस्य (d) वीथ्याः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) मृच्छकटिकम् प्रकरण नामक रूपक का उदाहरण है। प्रकरण की कथावस्तु कविकल्पित होती है। यह शृंगार रस प्रधान होता है इसमें 10 अंक होते हैं, नायक ब्राह्मण वैश्य या मन्त्री होता है।

42. रौद्ररसस्य स्थायिभावः कः?

- (a) उत्साहः (b) भयम्
(c) जुगुप्सा (d) क्रोधः

Ans : (d) रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध होता है इसका वर्ण लाल होता है क्योंकि क्रोध रजोगुण से उत्पन्न होता है, इसके देवता रुद्र हैं।

43. भट्टनायकस्य भुक्तिवादः कस्य मतस्यानुकूलम्?

- (a) मीमांसमतस्य
(b) सांख्यमतस्य
(c) न्यायमतस्य
(d) वेदान्तमतस्य

Ans : (b) भट्टनायक का भुक्तिवाद साङ्ख्य मत के अनुकूल है। नोट- नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में विभावनुभावव्यभिचारीभावसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः में जो निष्पत्ति शब्द आया है उसका अर्थ भट्टनायक भुक्ति मानते हैं।

44. मल्लिनाथेन काव्यस्यास्याष्टमसर्गपर्यन्तमेव व्याख्यानं रचितम् -

- (a) रघुवंशस्य
(b) किरातार्जुनीयस्य
(c) कुमारसम्भवस्य
(d) नैषधस्य

Ans : (c) मल्लिनाथ संस्कृत के प्रसिद्ध टीकाकार थे इनका पूरा नाम कोलाचल मल्लिनाथ था। इन्होंने पञ्चमहाकाव्यों (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम्, शिशुपालवधम् किरातार्जुनीयम् नैषधीयचरितम् आदि ग्रन्थों पर टीकाएँ लिखी इन्होंने कुमारसम्भवम् की भी आठ सर्गों तक व्याख्या किया।

45. लक्ष्मीचाञ्चल्यमस्मिन्पवर्णितमस्ति-

- (a) शाकुन्तले (b) कादम्बर्याम्
(c) हर्षचरिते (d) रघुवंशे

Ans : (b) लक्ष्मी चाञ्चल्य कादम्बर्यां वर्णितम् अस्ति। अर्थात् लक्ष्मी की चञ्चलता का वर्णन कादम्बरी में वर्णित है। श्री बाणभट्ट विरचित कादम्बरी कथामुखं का आधारग्रन्थ बृहत्कथा (गुणाढ्य) है यह शृंगार रस प्रधान है।

46. वीररसप्रधानं नाटकमिदम् -

- (a) स्वप्नवासवदत्तम्
(b) वेणीसंहारम्
(c) मालतीमाधवम्
(d) नागानन्दम्

Ans : (b) वेणीसंहार भट्टनारायण की रचना है यह वीर रस प्रधान है इसमें 6 अंक हैं इसका आधार महाभारत है इसके नायक- भीम एवं नायिका द्रोपदी है।

47. एनं “कवीनामिह चक्रवर्ती” इति वदन्ति विपश्चित-

- (a) कालिदासः (b) श्रीहर्षः
(c) वाल्मीकिः (d) बाणः

Ans : (d) ‘कवीनामिह चक्रवर्ती’ यह बाण को कहा गया है और सोढुल ने कहा था। बाणभट्ट सातवीं शताब्दी के संस्कृत गद्य साहित्य के अप्रतिम सम्राट थे। इन्होंने दो प्रमुख ग्रन्थ- हर्षचरितम्, कादम्बरी लिखा है।

48. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

(A) द्वाविंशतिसर्गात्मकम्	1. शिशुपालवधम्
(B) विंशतिसर्गात्मकम्	2. रघुवंशमहाकाव्यम्
(C) एकोनविंशति सर्गात्मकम्	3. किरातार्जुनीयम्
(D) अष्टादशसर्गात्मकम्	4. नैषधमहाकाव्यम्
(A) (B) (C) (D)	
(a) 3 1 4 2	
(b) 2 3 1 4	
(c) 1 4 3 2	
(d) 4 1 2 3	

Ans : (d) सही सुमेलित उत्तर इस प्रकार है।

द्वाविंशतिसर्गात्मकम्	-	नैषधमहाकाव्यम्
विंशति सर्गात्मकम्	-	शिशुपालवधम्
एकोनविंशतिसर्गात्मकम्	-	रघुवंशमहाकाव्यम्
अष्टादशसर्गात्मकम्	-	किरातार्जुनीयम्

49. भवभूतिमहाकवेरिमां “निर्गलततरङ्गिणी” इति वदन्ति-

- (a) स्रग्धरा
(b) मन्दाक्रान्ता
(c) शिखरिणी
(d) वसन्ततिलका

Ans : (c) भवभूतिमहाकवेः ‘शिखरिणी निर्गलततरङ्गिणी’ इति वदन्ति। भवभूति संस्कृत के महान् कवि एवं सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे। उनके तीन प्रसिद्ध रचनाएँ- मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम् हैं।

50. ‘सरस्वती श्रुति महतां महीयताम्’ मिति केनोक्तम्

- (a) वाल्मीकिना
(b) भवभूतिना
(c) कालिदासेन
(d) श्रीहर्षेण

Ans:(c) “सरस्वतीश्रुतिमहतांमहीयताम्” यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् का भरत वाक्य है। इसका अर्थ - ज्ञानगरिष्ठ कवियों की वाणी (कृति का पूर्ण सत्कार हो। ‘सर्व शक्तिमान स्वयंभू’ शिव मेरे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2012

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'हिरण्यगर्भ' इति पदेनाभिधीयते-

- (a) रुद्रः (b) वरुणः
(c) इन्द्रः (d) प्रजापतिः

Ans : (d) हिरण्यगर्भसूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 121वाँ सूक्त है इसके देवता प्रजापति एवं ऋषि हिरण्यगर्भ हैं, छन्द त्रिष्टुप् (44 अक्षर) है। इस सूक्त के प्रायः प्रत्येक मन्त्र के अन्त में "कस्मै देवाय हविषा विधेम" कहा गया है।

2. विधिभागरूपेण स्वीक्रियते-

- (a) ब्राह्मणग्रन्थ (b) उपनिषद्ग्रन्थः
(c) धर्मशास्त्रम् (d) आरण्यकम्

Ans : (a) विधिभागरूपेण ब्राह्मणग्रन्थः स्वीक्रियते। "मन्त्र-ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण दोनों का नाम वेद है। ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ- ऐतरेय एवं शांखायन हैं जबकि अथर्ववेद के गोपथ हैं।

3. दर्शयागः कदानुष्ठीयते?

- (a) चतुर्दश्याम् (b) प्रतिपदि
(c) अष्टम्याम् (d) पूर्णिमायाम्

Ans : (b) दर्शयागः प्रतिपदि (अमावस्या) अनुष्ठीयते। अर्थात् दर्श याग अमावास्या के दिन किया जाता है। यहाँ दर्श का अर्थ - अमावस्या है।

विशेष- हविर्यज्ञ सात प्रकार के होते थे-

1. अग्न्याध्वेय, 2. अग्निहोत्र, 3. दर्शपौर्णमास, 4. अग्रहायन, 5. चतुर्मास 6. निरूपशबन्ध, 7. सौत्रामणि।

4. कस्याहुतिः मनसा दीयते?

- (A) विष्णोः (B) इन्द्रस्य
(C) प्रजापतये (D) रुद्रस्य

Ans : (c) प्रजापति को आहुति मन से दी जाती है क्योंकि ये सर्व प्रथम उत्पन्न हुए। यथा-

हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

5. संहितापाठानन्तरं क्रियते-

- (A) सन्धिपाठः (B) समासपाठः
(C) पदपाठः (D) यमपाठः

Ans : (c) संहितापाठानन्तरं पदपाठ क्रियते।

यथा- त्वामने मानुषीरकते विशो- यह संहिता पाठ है। त्वाम्। अग्ने। मानुषीः ईकतेविशः यह पद पाठ है।

6. 'देवासः' इति प्रयोगः-

- (a) तान्त्रिकः (b) वार्तिकः
(c) छान्दस (d) ऐतिहासिकः

Ans : (c) देवासः इति छान्दस प्रयोगः अर्थात् देव शब्द में छान्दस दीर्घ का प्रयोग किया गया है।

7. एषु प्राचीन वेदभाष्यकारो न वर्तते-

- (a) सायणः (b) स्कन्दस्वामी
(c) अरविन्द (d) गुणविष्णुः

Ans : (c) प्राचीन वेद भाष्यकार - आचार्य सायणः, स्कन्दस्वामी, गुणविष्णु हैं।

जबकि अरविन्द अर्वाचीन (नये) वेद भाष्यकार हैं।

8. यास्केन कतिविधः व्याख्याविधिः स्वीकृतः?

- (a) त्रिविधः (b) पञ्चविधः
(c) चतुर्विधः (d) अष्टविधः

Ans : (a) निरुक्तकार यास्क के मतानुसार प्राचीन काल में मानव मस्तिष्क जितना विकसित रहा उतना परवर्ती काल में नहीं रहा है। अतः वेद जैसे गूढ़ विषयों की अर्थबोधकता परवर्ती लोगों के लिए क्लिष्टतर होता गया। व्याख्या विधि को इन्होंने तीन भागों में विभाजित किया। मन्त्रों के क्रम में परिवर्तन नहीं किया परन्तु अपने व्याकरण में निपातों को पूर्ण स्थान दिया?

9. 'पर्जन्यः पिता' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते?

- (a) पृथिवीसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) हिरण्यगर्भसूक्ते (d) पुरुषसूक्ते

Ans : (c) पर्जन्यः पिता इति हिरण्यगर्भ सूक्ते प्रतिपाद्यते। हिरण्यगर्भसूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 121वाँ सूक्त है इसके देवता प्रजापति एवं ऋषि हिरण्यगर्भ हैं, छन्द त्रिष्टुप् ((44 अक्षर) है। इस सूक्त के प्रायः प्रत्येक मन्त्र के अन्त में "कस्मै देवाय हविषा विधेम" कहा गया है।

10. कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

- (a) ऋग्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (b) कठोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। इसमें 2 अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं। इसमें यमराज और नचिकेता के बीच आत्मा सम्बन्धी संवाद है।

11. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' कुत्रेययुक्तिः?

- (a) भगवद्गीतायाम् (b) श्रीमद्भागवते
(c) ईशावास्योपनिषदि (d) कठोपनिषदि

Ans : (c) तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।

तदन्तरस्य सर्वस्य, तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।

यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा से सम्बद्ध ईशावास्योपनिषद् से है।

12. कस्मिन् वरे यमस्त्रिणाचिकेतसमग्निम् अदात्?

- (a) प्रथमवरे (b) द्वितीयवरे
(c) तृतीयवरे (d) चतुर्थवरे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) कठोपनिषद् के अनुसार यमराज के घर बिना भोजन किए तीन रात्रि बिताने के बदले यमराज ने नचिकेता से तीन वर मांगने के लिए कहा उसमें से दूसरे वर को यमराज ने 'त्रिणाचिकेतसमग्निम्' कहा।

13. अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि कानि उच्यन्ते?

- (a) ऋतवः (b) अहोरात्राणि
(c) नक्षत्राणि (d) मासाश्चार्धमासाश्च

Ans : (d) अश्वस्य मेध्यस्य पर्वाणि मासाश्चार्धमासाश्च उच्यन्ते। अर्थात् अश्वमेध यज्ञ एक मास अथवा अर्धमास (15 दिन) का होता है, इसमें जिस व्यक्ति द्वारा घोड़ा पकड़ा जाता है उसे राजा से युद्ध करना पड़ता है।

14. 'असद् वा इदमग्र आसीत्' अयं विचारः कुत्र निर्दिष्टः?

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (b) तैत्तिरीयोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है। इसमें 12 अनुवाक हैं।
नोट- असद्वा इदमग्र आसीत्। अर्थात् प्रकट होने से पहले यह जड़ जगत् अव्यक्त रूप में था।

15. 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' इति कुत्रस्था उक्तिरियम् -

- (a) कठोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

Ans : (a) इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः।।
यह उक्ति कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के तृतीय वल्ली की है। इसमें आत्मतत्त्व का विशद विवेचन किया गया है।

16. उमा हैमवती कस्यामुपनिषदि निर्दिष्टा?

- (a) कठोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) ईशावास्योपनिषदि

Ans : (c) उमा हैमवती केनोपनिषदि निर्दिष्टा सामवेद के तलवकार ब्राह्मण (जैमिनीय उपनिषद्) का 9वाँ अध्याय है। यह 4 खण्डों में विभक्त है।
इसमें 9 मन्त्र हैं एवं चौथे खण्ड का नाम उमा हैमवती आख्यान वर्णित है।

17. शिक्षाङ्गस्य विषयाः कियन्तः उपदिष्टाः

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (d) नोट- वेदाङ्ग छः माने गये हैं, उसमें से शिक्षा को वेद पुरुष का प्राण कहा गया है।
तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है कि शिक्षा के छः अङ्ग हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

18. समानाक्षराणि कियन्ति

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) षट् (d) अष्टौ

Ans : (d) ऋग्वेद प्रातिशाख्य में समान अक्षर आठ प्रकार के माने गये हैं- अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ हैं।
जबकि ङ्, ञ्, ण्, न्, म् ये रक्तसंज्ञक वर्ण माने गये हैं।

19. सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः कः?

- (a) क् (b) ख्
(c) ग् (d) झ्

Ans : (b) ऋग्वेद प्रातिशाख्य में सोष्मसञ्ज्ञो वर्णः ख् अस्ति। युगमौ सोष्मावणौ- द्वितीय चतुर्थो वर्णौ। अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ वर्ण ऊष्म संज्ञक होते हैं- जैसे- ख् घ् छ् झ् ढ् ढ् थ् फ् भ्।

20. शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायामुपदिष्टम्?

- (a) शाकलशाखायाम् (b) माध्यन्दिनीयशाखायाम्
(c) शौनकशाखायाम् (d) राणायनीयशाखायाम्

Ans : (b) शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा का 34वाँ अध्याय शिवसङ्कल्प सूक्त है। इसमें 6 मन्त्र हैं, प्रत्येक मन्त्र की अन्तिम पंक्ति में "तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" उल्लिखित है।

21. अग्निहोत्रम् अनुष्ठीयते -

- (a) प्रतिमासम् (b) प्रतिवर्षम्
(c) प्रतिदिनम् (d) प्रतिपक्षम्

Ans : (c) अग्निहोत्र एक वैदिक यज्ञ है। इस यज्ञ का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है। वैदिककाल में अग्निहोत्र यज्ञ का बड़ा महत्त्व था। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं अग्निहोत्र यज्ञ करने का विधान था।

22. निरुक्तानुसारं तृतीयो भावविकारः कः?

- (a) अस्ति (b) वर्धते
(c) विनश्यति (d) विपरिणमते

Ans : (d) "षड् भावविकाराः भवन्ति इति वाच्यार्थः" (1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति। इसमें से तीसरा विपरिणमते तत्त्व का नाश हुए बिना उसमें होने वाले परिवर्तन को कहता है।

23. अक्नोपः कः भवति?

- (a) आदित्यः (b) अश्वः
(c) अग्निः (d) आचार्यः

Ans : (c) अक्नोपः अग्निः भवति अर्थात् अग्नि को अक्नोपः कहा जाता है। निरुक्त में शब्दों की व्युत्पत्तियों को बताया गया है।
अग्नि - अक्नोपः, अग्रणीर्भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते।

24. 'चित् इति निपातो वर्तते

- (a) कत्सार्थे (b) निषेधार्थे
(c) अभावार्थे (d) विकल्पार्थे

Ans : (b) निपात तीन माने गये हैं- (1) उपमार्थक (2) कर्मोपसङ्ग्रह (3) पादपूरण।
इसमें से चित् निपात उपमार्थक निपात है यह निषेध अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह अनेकार्थक है जैसे- आचार्यश्चिदिदं ब्रूयात्।

25. वृत्तिसमवायार्थः अनुबन्धकरणार्थः इष्टबुध्यर्थश्च केषां उपदेशः भवति?

- (a) प्रत्ययानाम् (b) धातूनाम्
(c) सन्धीनाम् (d) वर्णानाम्

Ans : (d) वृत्ति के लिए समवाय, अथवा जिसका फल वृत्ति है वह समवाय, अथवा जिसका प्रयोजन वृत्ति है वह समवाय ही "वृत्ति समवाय" है। इसमें समवाय का अर्थ है वर्णों को किसी विशेष क्रम में रखना और वृत्ति शब्द का अर्थ शास्त्र की प्रवृत्ति है।

26. अनुदात्तेत उपदेशे यो डित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने किं स्यात्?

- (a) परस्मैपदम् (b) आत्मनेपदम्
(c) प्रातिपदिकम् (d) आर्धधातुकम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) अनुदात्ते उपदेशे योडित् तदन्ताच्च धातोः लस्य स्थाने आत्मनेपदम् स्यात्।

सूत्र-‘अनुदात्तित आत्मनेपदम्’ अर्थात् जिसका अनुदात्त इत् हो और डित धातुओं से हो तो आत्मनेपद में शानच् और कानच् प्रत्यय हो।

27. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) दूरान्तिकार्थः	1. डारौरसः
(B) वयसि	2. षष्ठ्यन्यतरस्याम्
(C) लुटः प्रथमस्य	3. लिटि
(D) कुञ्चानुप्रयुज्यते	4. प्रथमे
(A) (B) (C) (D)	
(a) 3 4 1 2	
(b) 2 4 1 3	
(c) 2 3 4 1	
(d) 4 3 2 1	

Ans : (b) सही युग्म इस प्रकार है।

दूरान्तिकार्थः	-	षष्ठ्यन्यतरस्याम्
वयसि	-	प्रथमे
लुटः प्रथमस्य	-	डारौरसः
कुञ्चानुप्रयुज्यते	-	लिटि।

28. “कृत्यल्युटो बहुलम्” इति सूत्रस्योदाहरणं किम्?

- (a) प्रयाणीयम् (b) स्थानीयं चूर्णम्
(c) प्रभवम् (d) प्रयाम्यम्

Ans : (b) कृदन्त प्रकरण में “कृत्यल्युटविधिसूत्रम्” “कृत्य-ल्युटो बहुलम्” अर्थात् कृत्य और ल्युट प्रत्यय बहुल से होते हैं।
उदाहरण - ‘स्नान्ति अनेन’ इति ‘स्नानीयं चूर्णम्’।

29. “प्राङ्मुखी” इत्यत्र डीप् केन सूत्रेण विधीयते?

- (a) नखमुखात्संज्ञायाम् (b) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(c) क्रीतात्करणपूर्वात् (d) दिक्पूर्वपदान्डीप्

Ans : (d) स्त्री प्रत्यय में निर्दिष्ट सूत्र दिक्पूर्वपदान्डीप् से डीप् प्रत्यय होगा- प्राङ्मुखी = प्रा उपसर्ग पूर्वक आङ् धातु+डीप्।

30. शब्दस्याभिव्यक्तेः उर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते, तैः कः न भिद्यते?

- (a) जीवात्मा (b) स्फोटात्मा
(c) परमात्मा (d) काव्यात्मा

Ans : (b) शब्दस्याभिव्यक्तेः उर्ध्वं वृत्तिभेदे तु वैकृताः ध्वनयः समुपोहन्ते तैः स्फोटात्मा न विद्यते। अर्थात् शब्द के अभिव्यक्ति में ऊपर वृत्ति भेद से विकृत ध्वनि स्फोटात्मा नहीं कहा जाता है।

31. प्रयागे समुद्रगुप्तस्य स्तम्भ-अभिलेख रचयिता कः ?

- (a) तिलकभट्टकः (b) हरिषेणः
(c) ध्रुवभूतिः (d) रविकीर्तिः

Ans : (b) “प्रयाग प्रशस्ति स्तम्भलेख” ‘समुद्रगुप्त’ के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रची गई थी। यह इलाहाबाद के किले में स्थित है। इसमें- समतटरू ढवाकः कामरूपः का उल्लेख है। चीन देश के नाम का उल्लेख इस शिलालेख में नहीं है।

32. अध्यारोपः उच्यते?

- (a) वस्तुनि अवस्वारोपः (b) स्मृतिरूपः
(c) लोकानुभवः (d) अवस्तुनि वस्वारोपः

Ans : (a) “वस्तुनि अवस्वारोपाऽध्यारोपः उच्यते। सर्प भाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।

33. स्थूलशरीराणि कतिविधानि वेदान्तमते

- (a) द्विविधानि (b) चतुर्विधानि
(c) पञ्चविधानि (d) विविधानि

Ans : (b) सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में चार प्रकार के स्थूल शरीर की विवेचना की गई है-

- (1) जरायुज (2) अण्डज
(3) स्वेदज (4) उद्भिज्ज।

34. ‘व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्’ इत्यत्र ‘ज्ञ’ शब्देन कः बोद्धव्यः?

- (a) प्रकृतिः (b) सूक्ष्मशरीरम्
(c) अहङ्कारः (d) पुरुषः

Ans : (d) दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।

तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञ विज्ञानात् ।।

इसमें व्यक्त का अर्थ है- कार्य (16 पदार्थ) अव्यक्त का अर्थ है- (कारण-रूप प्रकृति) और ज्ञ शब्द से पुरुष का बोध कराया गया है।

35. एकादशेन्द्रियाणि कस्मात् समुद्भूतानि सांख्यमते?

- (a) अहङ्कारात् (b) आकाशात्
(c) पुरुषात् (d) पञ्चमहाभूतात्

Ans : (a) 11 इन्द्रियाँ अहंकार से उत्पन्न होती हैं और अहंकार महत्तत्त्व से और महत्तत्त्व (बुद्धि तत्त्व) मूल प्रकृति से उत्पन्न होते हैं और पुरुष न कारण ही है और न कार्य न प्रकृतिः न विकृतिः।

36. पूर्वमीमांसामते धर्मः कः?

- (a) सदाचारः (b) यामादिः
(c) अपवर्गः (d) अभ्युदयप्राप्ति

Ans : (b) लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह में धर्म का लक्षण करते हुए कहा है कि -यागादिरेव धर्मः अर्थात् याग आदि क्रियाएँ ही धर्म हैं उसका लक्षण वेद प्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः। जो वेद द्वारा प्रतिपादित हो प्रयोजन वाला हो और सार्थक हो वह धर्म है।

37. अर्थसंग्रहमते वेदभागः कतिविधः?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (d) वेद के 5 विभाग हैं- विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद।

इसमें से विधि चार प्रकार की होती है।

- (1) उत्पत्ति विधिः (2) विनियोग विधिः
(3) अधिकार विधिः (4) प्रयोग विधिः

38. कीदृशी भवति प्रयोगविधिः ?

- (a) अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधकः
(b) कर्मस्वरूपमात्रबोधकः
(c) प्रयोगप्राशुभावबोधकः
(d) कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) विधि चार प्रकार की होती है-

- (i) उत्पत्ति विधि
- (ii) विनियोग विधि
- (iii) अधिकार विधि
- (iv) प्रयोग विधि

इसमें से प्रयोग विधि का लक्षण- **प्रयोगप्राशुभाव बोधको विधि: प्रयोगविधि:।**

प्रयोगविधि के छः प्रमाण हैं-श्रुति, अर्थ, पाठ, स्थान, कर्म और प्रवृत्ति।

39. परिसंख्याविधेरुदाहरणं किम्?

- (a) यजेत् स्वर्गकामः (b) दध्ना जुहोति
- (c) व्रीहीन् अवहन्ति (d) पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः

Ans : (d) “तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ” यह परिसंख्या विधि का लक्षण है इसका समस्त लक्षण- उभयोश्चयुगपत्प्रावितर व्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्या विधिः।

यथा- **पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः ब्रह्मक्षत्रेण राघव।**

शल्यकः श्वाविधो गोधा शशः कूर्चश्च पञ्चमः॥

40. श्रीरामचन्द्रः एनं व्याकरणशास्त्रज्ञ इति प्रशंसति-

- (a) सुग्रीवम् (b) भरतम्
- (c) लक्ष्मणम् (d) हनूमन्तम्

Ans : (d) वाल्मीकिरामायण में श्रीरामचन्द्र ने व्याकरणशास्त्र का ज्ञाता होने के कारण हनुमान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। रामायण को “इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृहयेत्” (महाभारत) में कहा गया है।

41. एनं ‘शतसाहस्रीसंहिता’ इति बुवन्ति विपश्चितः-

- (a) श्रीमद्रामायणम् (b) महाभारतम्
- (c) विष्णुपुराणम् (d) श्रीमद्भागवतम्

Ans : (b) जय, महाभारत का ही एक नाम है। पहले जय पश्चात् भारत उसके बाद महाभारत नाम रखा गया। इसके रचयिता वेदव्यास हैं यह 18 पर्वों में विभक्त है इसमें एक लाख श्लोक होने के कारण इसको “शतसाहस्री संहिता” भी कहा गया है।

42. “अहल्याशापविमोचनम् कस्मिन् काण्डे वर्णितम् -

- (a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
- (c) बालकाण्डे (d) सुन्दरकाण्डे

Ans : (c) रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है इसमें सात काण्ड हैं। बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। इसमें से अहल्याशापविमोचनम् बालकाण्डे वर्णितम्।

43. अश्वद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान् कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते इत्यस्मिन् श्लोके प्रस्तुतीकृतः ‘कार्ष्णः वेदः’ कः?

- (a) भगवद्गीता (b) जानकीहरणम्
- (c) श्रीमद्रामायणम् (d) महाभारतम्

Ans : (d) अश्वद्रान् दानशीलांश्च सत्यशीलाननास्तिकान्। कार्ष्णं वेदमिमं विद्वान् श्रावयित्वार्थमश्नुते। यहाँ कार्ष्णः वेदः महाभारत को कहा गया है इसे “शतसाहस्री संहिता” भी कहते हैं।

44. भगवतः श्रीकृष्णस्य बृहच्चरित्रं कस्मिन् पुराणे वर्णितम्?

- (a) विष्णुपुराणे (b) भागवतपुराणे
- (c) वामनपुराणे (d) देवीभागवते

Ans : (b) भगवान् श्रीकृष्ण के बृहच्चरित्र का वर्णन भागवत पुराण में है। भागवत पुराण के 12 स्कन्ध में 18 हजार श्लोक हैं इसके दशम स्कन्ध में कृष्ण की रासलीला तथा क्रीडाओं का विस्तृत विवेचन है।

45. पुराणमिदमष्टादशमहापुराणेष्वन्यतमं न भवति-

- (a) भागवतमहापुराणम् (b) विष्णुपुराणम्
- (c) नृसिंहपुराणम् (d) ब्रह्माण्डपुराणम्

Ans : (c) 18 पुराणों में नृसिंह पुराण की चर्चा नहीं है। 18 पुराण ये हैं- मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म, वामन, वराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्मपुराण, लिङ्गपुराण, गरुण, कूर्म, स्कन्ध पुराण है।

46. महाभारतस्याष्टादशसु पर्वसु इदं द्वादशतमं भवति-

- (a) आनुशासनिक पर्व (b) सौप्तिकपर्व
- (c) शान्तिपर्व (d) स्त्रीपर्व

Ans : (c) महाभारत के 18 पर्वों में 12वाँ पर्व शान्ति पर्व है। 18 पर्व- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्णपर्व, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहण है।

47. अर्थशास्त्रस्य तृतीयाधिकरणं वर्तते-

- (a) विनयाधिकारिकम् (b) अध्यक्षप्रचारः
- (c) योगवृत्तम् (d) धर्मस्थीयम्

Ans : (d) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण 150 अध्याय हैं। इसमें से तृतीय अधिकरण का नाम न्यायवृत्त या धर्मस्थीयम् है। इसमें व्यवहार की स्थापना, विवाद पक्षों का विचार वर्णित है।

48. दुर्गविनिवेशः कुत्र उपदिष्टः?

- (a) विनयाधिकारिके (b) धर्मस्थीये
- (c) अध्यक्षप्रचारेः (d) कण्टकशोधने

Ans : (c) अर्थशास्त्र के द्वितीय अधिकरण (अध्यक्ष प्रचार) में जनपदों की स्थापना, दुर्गों का निर्माण, दुर्ग निवेश, सन्निधाता के कार्य, कोष्ठागार का अध्यक्ष आदि का वर्णन है।

49. यजुर्वेदः सम्प्राप्तः

- (a) अग्नेः (b) वायोः
- (c) इन्द्रात् (d) वरुणात्

Ans : (b) मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में इस श्लोक में-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।

दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम् ॥

प्रजापति ने यज्ञ क्रिया की सिद्धि के निमित्त प्राप्त किये-

- अग्नि से - ऋग्वेद
- वायु से - यजुर्वेदः
- सूर्य से - सामवेदः

50. उपनयनसंस्कारे राज्ञः दण्डो भवति-

- (a) केशान्तिकः (b) ललाट सम्मितः
- (c) नासान्तिकः (d) कर्णान्तिकः

Ans : (b) उपनयन संस्कार में राजा का दण्ड ललाटसम्मित होता है जबकि ब्राह्मण केशान्तिक एवं वैश्व नासान्तिक (अर्थात् नासिका) के बराबर दण्ड धारण करना चाहिए।

51. अर्थदूषणं वर्तते-

- (a) कामजगणे (b) क्रोधजगणे
- (c) लोभजगणे (d) मोहजगणे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) मनुस्मृति के सप्तम् अध्याय में क्रोध के आठ प्रकार बताए गये हैं-

**पैशुन्यं साहसं मोह ईर्ष्याऽसूयार्थं दूषणम् ।
वाग्दण्डजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपिगणोऽष्टकः ॥**

52. मिथ्याभियोगी कतिगुणं धर्मं दद्यात्?

- (a) द्विगुणम् (b) त्रिगुणम्
(c) चतुर्गुणम् (d) पञ्चगुणम्

Ans : (a) निधनवे भाविता दद्याद्धनं राज्ञे च तत्समम्
मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत् ॥

मिथ्या अभियोग लगाने वाला उस धन के दूना धन दण्डस्वरूप वहन करें अर्थात् राजा को दें।

53. रसस्य वृद्धिः उक्ता -

- (a) द्विगुणा (b) चतुर्गुणा
(c) षड्गुणा (d) अष्टगुणा

Ans : (d) रसस्याष्टगुणा परा, वस्त्र धान्य हिरण्यानां चतुस्त्रिगुणा परा व ।

रस (तेल, घृत) आदि की वृद्धि से आठ गुनी हो सकती है। वस्त्र, धान्य, हिरण्य (स्वर्ण) की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, तिगुनी, दुगुनी हो सकती है।

54. 'मणौ वज्रसमुत्कीर्णं सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' -

इत्यत्र कः अलङ्कारः?

- (a) निदर्शना (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) दृष्टान्तः

Ans : (-b) मणौ वज्रसमुत्कीर्णं सूत्रस्येवास्ति मे गतिः। अर्थात् इस (रघुवंशमहाकाव्यम्) में यन्त्र से विद्ध मणि में सूत्र के समान मेरी गति है।

इसमें 'इव' शब्द से उपमालंकार है।

55. नारदमुनेः स्वागतार्थं को जवेन पीठादुदतिष्ठत्?

- (a) बलदेवः (b) शिशुपालः
(c) हिरण्यकशिपुः (d) अच्युतः

Ans : (d) 'शिशुपालवधम्' में शिष्टाचार का पालन करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण जी ने नारद जी के भूमि पर आने के पूर्व अपने आसन से उठकर उनका स्वागत किया था। यथा- गिरेस्तडित्वानिवतावदुच्चकैर्जवेन पीठादुदतिदच्युतः ॥

56. 'त्यजन्त्यसूक्ष्मं च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्' इत्यमुक्तिः कस्माद् ग्रन्थादुद्धृता?

- (a) शिशुपालवधात् (b) किरातार्जुनीयात्
(c) नैषधीयचरितात् (d) रघुवंशात्

Ans : (c) "त्यजन्त्यसूक्ष्मं च मानिनोवरम् ।
त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम् ॥

यह पंक्ति नैषधीयचरितम् से सम्बन्धित महाभारत के वन पर्व से अवतरित है।

57. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत-

(A) पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्	1. रघुवंशः
(B) अथवा श्रेयसि केन तृप्यते	2. कादम्बरी
(C) सहस्रगुणमुत्सृष्टुमादते हि रसं रविः	3. शिशुपालवधम्
(D) न हि क्षुद्रनिघतिपाताभिहता चलति वसुधा	4. किरातार्जुनीयम्

(A) (B) (C) (D)

(a) 3	1	2	4
(b) 4	3	1	2
(c) 2	4	3	1
(d) 1	2	4	3

Ans : (b) समीचीन तालिका इस प्रकार है-

पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्	- किरातार्जुनीयम्
अथवा श्रेयसि केन तृप्यते	- शिशुपालवधम्
सहस्रगुणमुत्सृष्टुमादते हि रसं रविः	- रघुवंशः
न हि क्षुद्रनिघति पाताभिहता चलति वसुधा	- कादम्बरी

58. वाच्यवाचकचारुत्त्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः कस्य?

- (a) रीतेः (b) रसवदलङ्कारस्य
(c) गुणीभूतव्यंग्यस्य (d) ध्वनिः

Ans : (d) वाच्यवाचकचारुत्त्वहेतूनां विविधात्मनां रसादिपरता यत्र सः विषयः ध्वनिः। वाच्य और वाचक के चमत्कारी होने पर रस आदि जो विषय है वह ध्वनि है।

59. मम्मटानुसरम् अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः कतिविधः?

- (a) द्विविधः (b) पञ्चविधः
(c) चतुर्विधः (d) दशविधः

Ans : (b) अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैप प्रस्तुताश्रया।

यह 5 प्रकार का होता है।

(1) कार्य (2) कारण (3) सामान्य (4) विशेष (5) तुल्य के प्रस्तुत होने पर उससे भिन्न कथन करना।

60. शान्तरसस्य स्थायिभावः कः?

- (a) उत्साहः (b) शमः
(c) हासः (d) शोकः

Ans : (b) साहित्यदर्पण आचार्य विश्वनाथ की कृति है इसमें 10 परिच्छेद हैं, तृतीय परिच्छेद में रस निरूपण है। इसमें से शम स्थायी भाव वाला रस शान्त होता है; इसके देवता श्री नारायण हैं।

61. "चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं न वेदिम् विद्यासु चतुर्दशस्वयम्" - कः सः?

- (a) दुष्यन्तः (b) अर्जुनः
(c) नलः (d) कृष्णः

Ans : (c) नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग के दूसरे श्लोक में नल को गुणाद्भुत कहा गया है- नल ने स्वयं अध्ययन, अर्थज्ञान, आचरण तथा अध्यापन ये चार अवस्थाएं निर्मित करते हुए चौदह विद्याओं में चतुर्दशत्व कैसे किया यह मैं नहीं जानता।

62. "बुद्ध्वा मां शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति" अत्र कः शशाप?

- (a) कर्णः (b) जमदग्निः
(c) शल्यः (d) शक्रः

Ans : (b) बुद्ध्वा मां शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्त्विति" यह पंक्ति भास कृत 'कर्णभार' की है। इसमें कर्ण को दिया गया शाप वर्णित है, यह शाप परशुराम (जामदग्नि) द्वारा दिया गया।

63. उत्तररामचरितनाटकस्य कः अङ्कः छाया इति अभिधीयते?

- (a) प्रथमोङ्कः (b) द्वितीयोङ्कः
(c) तृतीयोङ्कः (d) चतुर्थोङ्कः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् करुण रस प्रधान नाटक हैं इसमें 7 अंक हैं। इसके तृतीय अङ्क का नाम छायाङ्क है एवं चौथे अंक का नाम कौशल्याजनकयोग है।

64. उन्मत्तराघवं कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

- (a) अङ्कस्य (b) वीथे:
(c) डिमस्य (d) समवकारस्य

Ans : (a) उन्मत्तराघवम् यह रूपक के दश भेदों में से अङ्कस्य का उदाहरण है। इसमें करुण रस अङ्गी होता है। इसमें साधारण जन नायक होते हैं।

65. ब्रह्मा कस्माद् वेदात् अभिनयं स्वीकृतवान् -

- (a) यजुर्वेदात् (b) ऋग्वेदात्
(c) सामवेदात् (d) अथर्ववेदात्

Ans : (d) ब्रह्मा अथर्ववेद का ऋत्विक् है जबकि सामवेद का उद्गाता, ऋग्वेद का होता एवं यजुर्वेद का अध्वर्यु।

66. 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' इत्यत्र किं छन्दः?

- (a) अनुष्टुप् (b) वसन्ततिलका
(c) शिखरिणी (d) पुष्पिताग्रा

Ans : (a) वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हसि।।
यह श्लोक 'उत्तररामचरितम्' का है और इसमें अनुष्टुप् छन्द है।

67. कः प्रेक्षागृहाणां प्रमाणं लक्षणञ्च निर्दिशति?

- (a) आदित्यः (b) रुद्रः
(c) विश्वकर्मा (d) यमः

Ans : (c) नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं उसमें से द्वितीय अध्याय में नाट्यशाला एवं प्रेक्षागृह का वर्णन है और प्रेक्षागृह के लक्षण का निर्देश विश्वकर्मा करता है।

68. रत्नावली कस्य उपरूपकप्रभेदस्य उदाहरणं भवति?

- (a) त्रोटकस्य (b) नाटिकायाः
(c) भाणिकायाः (d) संवृकस्य

Ans : (b) रत्नावली नाटिका 4 अङ्कों में विभक्त है। इसके लेखक हर्षवर्धन हैं। इसके प्रथम अङ्क का नाम मदन महोत्सव है और दूसरे अङ्क का नाम कदलीगृह है। जबकि गीतगोविन्द के रचयिता जयदेव तथा स्वप्नवासवदत्तम् के लेखक भास एवं अभिज्ञानशाकुन्तलम् के लेखक कालिदास हैं। अतः सही विकल्प (b) है।

69. कुन्तकानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति?

- (a) अष्टौ (b) सप्त
(c) षट् (d) पञ्च

Ans : (c) आचार्य कुन्तक कृत "वक्रोक्तिजीवितं" नामक लक्षण ग्रन्थ में कवि व्यापार वक्रता के 6 प्रकार प्रदर्शित किए हैं।

- (1) वर्णविन्यासवक्रता (4) वाक्य वक्रता
(2) पदपूर्वाद्धवक्रता (5) प्रबन्ध वक्रता
(3) पद पराद्धवक्रता (6) प्रकरण वक्रता

70. यथार्थानुभवः कतिविधः?

- (a) चतुर्विधः (b) पञ्चविधः
(c) सप्तविधः (d) नवधा

Ans : (a) यथार्थानुभवः चतुर्विधः - प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्द।

इसका लक्षण- तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः।

जैसे-रजत में यह चाँदी है इस प्रकार का ज्ञान ही यथार्थ अनुभव है।

71. द्रव्यप्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः भवति-

- (a) समवायः (b) तादात्म्यम्
(c) संयोगः (d) संयुक्तसमवायः

Ans : (c) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः। उसमें से संयोग सन्निकर्षः चक्षु के द्वारा घट के प्रत्यक्ष होने पर होता है। जबकि घट रूप के प्रत्यक्ष होने पर संयुक्त समवाय सन्निकर्ष होता है।

72. सन्निकर्षः कतिविधः?

- (a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) अष्टविधः

Ans : (c) सन्निकर्ष छः माने गये हैं- (i) संयोग सन्निकर्ष (ii) संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष (iii) संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष (iv) समवाय सन्निकर्ष (v) समवेतसमवाय सन्निकर्ष (vi) विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष।

इनमें से अभाव के प्रत्यक्ष होने पर विशेषण विशेष्य भाव सन्निकर्ष होता है।

जैसे- "घटाभाववद् भूतलम्"

73. अनुमापकस्य हेतवः कृति सन्ति?

- (a) त्रयः (b) पञ्च
(c) अष्टौ (d) एकादश

Ans : (b) तीन प्रकार के हेतुओं में जो अन्वय व्यतिरेकी है वह 5 रूपों से युक्त होकर ही अपने साध्य को सिद्ध कर सकता है। परार्थानुमान 5 प्रकार का होता है- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन, निगमन।

74. तर्कसंग्रहे कर्माणि कति सन्ति?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) नव (d) द्वादश

Ans : (a) तर्कसङ्ग्रह में कर्म के 5 भेद बताए गये हैं, जो इस प्रकार हैं-

- (1) उत्क्षेपणम् (2) अपक्षेपणम् (3) आकुञ्चन (सिकोड़ना)
(4) प्रसारणम् (5) गमनम्।

75. तर्कसंग्रहेसाहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते?

- (a) उपाधिः (b) सन्निकर्षः
(c) अपवर्गः (d) व्याप्तिः

Ans : (d) तर्कसङ्ग्रह में व्याप्ति का लक्षण इस प्रकार है- यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः इति साहचर्य नियमो व्याप्तिः। अर्थात् जहाँ-जहाँ धुआ होता है वहाँ-वहाँ अग्नि होती है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2013

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत्-परिमिताः (50) बहुवैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. “उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तार्धिया वयम्” अस्य मन्त्रस्य ऋषिर्वर्तते

- (a) अग्निः (b) कण्वः
(c) दीर्घतमाः (d) मधुच्छन्दाः

Ans : (d) – उपर्युक्त मन्त्र अग्नि सूक्त का है और इस मन्त्र के ऋषि मधुच्छन्दा हैं। अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का पहला सूक्त है। अग्नि पृथ्वी स्थानीय है।

- (a) अग्नि को अग्नि सूक्त का देवता माना गया है।
(b) सोमसूक्त के ऋषि कण्व हैं। तथा पृथ्वी स्थानीय है।
(c) विष्णु सूक्त के ऋषि दीर्घतमा हैं तथा द्यु-स्थानीय है।

2. “दस्योर्हन्ता” को देवः?

- (a) इन्द्रः (b) विष्णुः
(c) वरुणः (d) कोऽपि न

Ans : (a) – दस्योर्हन्ता इन्द्र देव को कहा गया है।

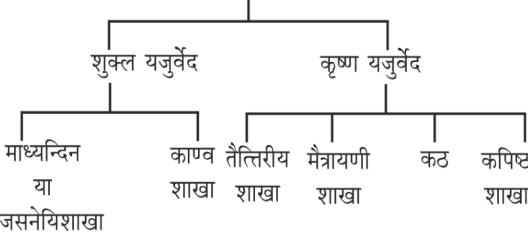
- (a) दस्युओं को मारने वाला अर्थात् इन्द्र। इन्द्र ने ही दस्युओं को मारा था इसी कारण इनको दस्योर्हन्ता कहा गया है।
(b) विष्णु को उरुक्रम, उरुगाय, त्रिविक्रम, भीम, कुचर आदि नामों से जाना जाता है।
(c) वरुण - उरुवंस, क्षत्रिय, धृतव्रत, आदित्य, दिवः, कविः आदि नाम हैं।

3. “काण्व शाखा” कस्य वेदस्य?

- (a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

Ans : (b) – काण्व शाखा यजुर्वेद की शाखा है।

यजुर्वेद के दो भाग हुये हैं



- (a) सामवेद की 1000 शाखाएँ हैं जिनमें से तीन ही उपलब्ध हैं- 1. कौथुमीय, 2. राणायनीय, 3. जैमिनीय शाखा
(c) अथर्ववेद की 9 शाखाएँ हैं। जिनमें 2 शाखाएँ ही उपलब्ध हैं 1. पिप्पलाद शाखा, 2. शौनक शाखा
(d) ऋग्वेद में 21 शाखाएँ हैं। जिनमें 5 शाखाएँ वर्तमान में उपलब्ध हैं- 1. शाकल शाखा, 2. वाष्कल शाखा, 3. आश्वलायन शाखा, 4. शांखायन शाखा, 5. माण्डूकायनी शाखा

4. “तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः” मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते?

- (a) रुद्रसूक्तस्य (b) विश्वामित्रनदीसूक्तस्य
(c) सरमा-पणि-सूक्तस्य (d) यमयमीसूक्तस्य

Ans : (b) – “तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः” मन्त्रांशोऽयं विश्वामित्रनदीसूक्तस्य।

विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है। जिसमें कुल 13 मन्त्र हैं।

- (a) रुद्रसूक्त ऋग्वेद के दूसरे मण्डल का 33वाँ सूक्त है ऋषि - गृत्समद मन्त्र -15
(c) सरमा-पणि संवाद सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 108वाँ सूक्त है। इसमें 11 मन्त्र हैं। ऋषि - पणि-सरमा।
(d) यम यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 10वाँ सूक्त है। ऋषि - यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत मन्त्र -14 हैं।

5. “श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त” मन्त्रांशोऽयं वर्तते

- (a) विश्वामित्र-नदी सूक्ते (b) यम-यमी सूक्ते
(c) पुरुरवा-उर्वशी सूक्ते (d) सरमा-पणि सूक्ते

Ans : (c) – श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्तः मन्त्रांशोऽयं पुरुरवा-उर्वशी सूक्ते। पुरुरवा-उर्वशी संवादसूक्त ऋग्वेद के 10 मण्डल का 95वाँ सूक्त है।

ऋषि - पुरुरवा ऐल और उर्वशी संवाद सूक्त 10/95 मन्त्र -18

- (a) विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त ऋग्वेद 3/33 सूक्त ऋषि - विश्वामित्र मन्त्र -13
(b) यम-यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद 10/10 सूक्त ऋषि - यमी वैवस्वती यम वैवस्वत मन्त्र -14
(d) सरमा - पणि संवाद सूक्त ऋग्वेद 10/108 सूक्त ऋषि - पणि-सरमा मन्त्र - 11

नोट:- ऋग्वेद में 20 संवाद सूक्त माने गये हैं।

6. वेदा अपौरुषेयाः सन्ति-इति मतमस्ति

- (a) मैक्समूलरस्य (b) महर्षि दयानन्दस्य
(c) विन्टरनिट्सस्य (d) सर्वेषामेव

Ans : (b) – महर्षि दयानन्द ने वेदों को अपौरुषेय कहा है। “अपौरुषेय वाक्यं वेदः”।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

7. आर्षेयब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धम्?

- (a) सामवेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (a) – आर्षेय ब्राह्मण सामवेद से सम्बन्धित है। सामवेद में 9 ब्राह्मण प्राप्त होते हैं।

ऋग्वेद ब्राह्मण:- 1. ऐतरेय ब्राह्मण, 2. शांखायन या कौषितिक ब्राह्मण।

यजुर्वेद ब्राह्मण:- 1. कृष्णयजुर्वेद, 2. शुक्लयजुर्वेद।

1. कृष्णयजुर्वेद-

1. शतपथ ब्राह्मण

2. शुक्लयजुर्वेद-

1. तैत्तिरीय ब्राह्मण 2. मैत्रायणी ब्राह्मण
3. कठ ब्राह्मण 4. कपिष्ठल ब्राह्मण।

सामवेद ब्राह्मण:- 1. पञ्चविंश, 2. षड्विंश, 3. छान्दोग्य, 4. सामविधान, 5. आर्षेय, 6. देवताध्याय, 7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण, 8. वंश ब्राह्मण, 9. जैमिनीय ब्राह्मण।

अथर्ववेद ब्राह्मण:- 1. गोपथ

1. गोपथ-

1. पूर्वगोपथ
2. उत्तरगोपथ।

8. कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

- (a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) कृष्णयजुर्वेदेन (d) शुक्लयजुर्वेदेन

Ans : (c) – कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। चारों वेदों के उपनिषद् -

वेद:- 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद।

1. ऋग्वेद-

1. ऐतरेयोपनिषद्।
2. कौषितिक उपनिषद्।
3. वाष्कलोपनिषद्।

2. यजुर्वेद:-

1. शुक्लयजुर्वेद।
2. कृष्णयजुर्वेद।

1. शुक्ल यजुर्वेद-

1. ईशावास्योपनिषद्।
2. बृहदारण्यकोपनिषद्।

2. कृष्ण यजुर्वेद-

1. कठोपनिषद्।
2. तैत्तिरीयोपनिषद्।
3. श्वेताश्वतरोपनिषद्।
4. मैत्रायणीयोपनिषद्।

3. सामवेद-

1. केनोपनिषद्।
2. छान्दोग्योपनिषद्।

4. अथर्ववेद-

1. प्रश्नोपनिषद्।
2. माण्डूक्योपनिषद्।
3. मुण्डकोपनिषद्।

9. शिक्षावेदाङ्गस्य को विषयः?

- (a) यज्ञः (b) उपासना
(c) मोक्षः (d) उच्चारणम्

Ans : (d) – वेदाङ्ग शिक्षा का प्रमुख विषय उच्चारण करना है। वेदाङ्ग शिक्षा की सहायता से वेदों के उच्चारण का ज्ञान भली-भाँति होता है।

• वेदाङ्ग ज्योतिष को जो जानता है वही यज्ञों को जानता है। “तस्माच्छिदं काल विधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्।”

10. “व्याकरणस्य कात्स्न्यम्” किमस्ति

- (a) छन्दःशास्त्रम् (b) निरुक्तम्
(c) ज्योतिषम् (d) कल्पसाहित्यम्

Ans : (b) – “व्याकरणस्य कात्स्न्यम् निरुक्तम्” अर्थात् निरुक्त व्याकरण का पूरक है। निरुक्त के रचयिता आचार्य यास्क हैं। निरुक्त को वेद पुरुष का कान कहा गया है। निरुक्त और व्याकरण दोनों का विषय शब्द ज्ञान और शब्द व्युत्पत्ति है। अतः दोनों का विषय समान होने के कारण यास्क ने निरुक्त को व्याकरण का पूरक माना है।

(a) छन्दःशास्त्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं। छन्द वेदाङ्ग को वेद पुरुष के पाद के रूप में माना है।

• सभी वैदिक छन्द वर्णिक हैं। वेद में प्रमुखतः 7 छन्द माने गये हैं।

(c) ज्योतिष वेदाङ्ग के कर्ता लगधाचार्य हैं। ज्योतिष को वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकारा गया है। ज्योतिष के दो प्रतिनिधि ग्रंथ -

1. आर्ष ज्योतिष - ऋग्वेद से सम्बन्धित 36 मन्त्र
2. यजुष् ज्योतिष - यजुर्वेद से सम्बन्धित 43 मन्त्र

(d) कल्पशास्त्र को वेद पुरुष का हाथ स्वीकार किया गया है। कल्प सूत्रों को चार भागों में बाँटा गया है।

1. श्रौतसूत्र, 2. गृह्यसूत्र, 3. धर्मसूत्र, 4. शुल्बसूत्र

11. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत :

- (A) पुरुषाविद्याऽनित्यत्वात् 1. ईशोपनिषद्
कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे
(B) ओऽम् क्रतो स्मर 2. ऋग्वेदः
(C) कौषीतकिब्राह्मणम् 3. अथर्ववेद
(D) शौनकसंहिता 4. निरुक्तम्

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	1	2	3
(b)	1	4	3	2
(c)	3	4	2	1
(d)	1	2	4	3

Ans : (a)

- (a) पुरुषाविद्याऽनित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रोवेदे - निरुक्त
(b) ओऽम् क्रतो स्मर - ईशावास्योपनिषद्
(c) कौषीतकिब्राह्मणम् - ऋग्वेद
(d) शौनक संहिता - अथर्ववेद

12. कल्पग्रन्थेषु न गण्यते

- (a) आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (b) कात्यायनश्रौतसूत्रम्
(c) बौधायनधर्मसूत्रम् (d) उणादिसूत्रम्

Ans : (d) – कल्पशास्त्र में आपस्तम्बश्रौत सूत्र, कात्यायनश्रौत सूत्र और बौधायनश्रौत सूत्रों का विवेचन मिलता है। लेकिन उणादिसूत्र का नहीं। उणादि सूत्रों का विवेचन व्याकरण शास्त्र में मिलता है। यह व्याकरण का विषय है कल्पशास्त्र का नहीं।

13. वेदकालविषये भारतीयपरम्परागतविचारं परिपोषयति

- (a) मैक्समूलर: (b) वेबर:
 (c) विण्टरनिट्स: (d) सायण:

Ans : (d) वेदकाल के विषय में भारतीय परम्परागत विचार आचार्य सायण ने दिया है।

आचार्य सायण ने चारों वेदों पर भाष्य लिखे थे। और इनके भाष्य का नाम माधवीयम् था।

14. सांख्य्यभिमतं प्रमाणत्रयं वर्तते

- (a) प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, उपमानम्
 (b) प्रत्यक्षम्, उपमानम्, अर्थापत्ति:
 (c) प्रत्यक्षम्, शब्दः, अनुपलब्धि:
 (d) प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, शब्दः

Ans : (d)

- सांख्य दर्शन तीन प्रमाण मानता है -
 1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. शब्द
- नैयायिक 4 प्रमाण मानते हैं -
 1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. उपमान, 4. शब्द
- मीमांसक 5 प्रमाण मानते हैं -
 1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. उपमान, 4. शब्द, 5. अर्थापत्ति
 वेदान्त 6 प्रमाण मानते हैं -
 1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. उपमान, 4. शब्द, 5. अर्थापत्ति, 6. अनुपलब्धि।

15. सांख्य्ये सत्कार्यवादस्वरूपमेवमस्ति

- (a) सतो विज्ञानादसज्जायते इति
 (b) सतो विवर्तभूतं कार्यजातं मिथ्यात्मकं जायते इति
 (c) पूर्वमसत् कार्यं सदेव कारणात् सदात्मकं जायते इति
 (d) पूर्व सदेव कार्यं कारणात्मना पश्चाज्जायते इति

Ans : (d) सांख्य दर्शन सत्कार्यवाद को मानता है अर्थात् - कार्यसत् से कारण व्यापार की उत्पत्ति होती है। कार्य कारण व्यापार से पहले भी सत् होता है अर्थात् कार्य कारण में पूर्व से ही विद्यमान रहता है।

“असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।”

अर्थात् सत् से ही सत् की उत्पत्ति होती है।

बौद्ध- असत् से सत् की उत्पत्ति मानते हैं।

न्याय वैशेषिक = सत् से असत् की उत्पत्ति मानते हैं।

वेदान्ती= अद्वैत ब्रह्म से विवर्त रूप कार्य जगत की उत्पत्ति मानते हैं।

16. सांख्य्यमते सत्त्वगुणस्य स्वभावो विद्यते

- (a) सुखात्मक (b) मोहात्मक:
 (c) दुःखात्मक: (d) अभावात्मक:

Ans : (a) – सांख्य दर्शन के अनुसार -

सत्त्व गुण - सुखात्मक

रजो गुण - दुःखात्मक

तमो गुण - मोहात्मक

17. सांख्य्ये पंग्वन्धन्याये पङ्गुवद् वर्तते

- (a) प्रधानम् (b) पुरुषः
 (c) गुणत्रयम् (d) प्रलयः

Ans : (b) – सांख्य दर्शन में पंग्वन्धन्याये में पङ्गुवद् पुरुष को माना गया तथा अन्धवद् प्रकृति को माना गया है।
 प्रकृति-प्रधान तथा त्रिगुणात्मक होती है। जबकि पुरुष अप्रधान तथा त्रिगुणातीत होता है।

18. सांख्यानुसारं नर्तकीव वर्तते

- (a) प्रकृति: (b) माया
 (c) सर्गः (d) मनः

Ans : (a) – सांख्य दर्शन में प्रकृति को नर्तकी की भाँति कहा गया है। जैसे नर्तकी रंग मंच से अभिनय करके लौट जाती है उसी प्रकार प्रकृति अपने आपको पुरुष के समक्ष प्रकाशित करके लौट जाती है।

- सांख्य में बुद्धि सर्ग को ही प्रत्यय सर्ग कहा गया है यह भेदोपभेदों सहित 50 प्रकार का होता है।
- मन उभयात्मक इन्द्रिय है।

19. षष्ठितन्त्रं किम्?

- (a) न्यायः (b) वैशेषिकम्
 (c) सांख्यम् (d) वेदान्तः

Ans : (c) ‘षष्ठितन्त्र’ सांख्य दर्शन को कहा गया है। इसका नाम सांख्य दर्शन क्यों पड़ा? इस पर विचार किया जाना चाहिए। चूँकि यह षष्ठितन्त्र की व्याख्या करता है, यह दर्शन संख्या सम्बन्धी विश्लेषण करता है। इस दर्शन में ‘षष्टि’ कारिकांश भाग अति महत्वपूर्ण है। सांख्य दर्शन 25 तत्त्वों की वृहद् व्याख्या करता है जो हैं - आत्मा (पुरुष), 4 अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार), 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 तन्त्रमात्रायाँ, 5 महाभूत।

20. दम उच्यते

- (a) अन्तरिन्द्रियनिग्रहः
 (b) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
 (c) बाह्येन्द्रियनिग्रहः
 (d) वेदान्तवाक्येषु विश्वासः

Ans : (c) वेदान्तसार में साधनचतुष्टय के अन्तर्गत शमदमादिषट्क को माना गया है।

‘बाह्येन्द्रियनिग्रहः’ = अर्थात् बाह्येन्द्रियों को श्रवणादि के अतिरिक्त बाह्य विषयों से मन को हटा लेना ही दम है।

- ‘अन्तरिन्द्रियनिग्रहः’ शमः अर्थात् अन्तरिन्द्रिय मन को विषयों से बल पूर्वक हटा लेना ही शम है।
- ‘विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः उपरतिः’- विहित कर्मों का विधि से परित्याग कर देना ही उपरति है।
- ‘गुरुपदिष्ट वेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा’ – वेदान्त वाक्यों में विश्वास करना श्रद्धा है।

21. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि वर्णितानि

- (a) षोडशावयवानि
 (b) पञ्चदशावयवानि
 (c) एकादशावयवानि
 (d) सप्तदशावयवानि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) वेदान्तसार में 17 अवयव से युक्त लिङ्गशरीर को माना गया है।

लिङ्ग शरीर:- 1. पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, 2. बुद्धि+मन, 3. पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, 4. पञ्चवायु।

ज्ञानेन्द्रियाँ- 1. श्रोत, 2. त्वक्, 3. चक्षु, 4. जिह्वा, 5. घ्राण।

बुद्धि+मन- 1. निश्चयात्मिका बुद्धि, मन संशयात्मिका।

कर्मेन्द्रियाँ- 1. वाक्, 2. पाणि, 3. पाद, 4. पायु, 5. उपस्थ।

वायु- 1. प्राण, 2. अपान, 3. व्यान, 4. उदान, 5. समान।

$$5 + 2 + 5 + 5 = 17$$

22. विज्ञानमयकोश भवति

- (a) ज्ञानशक्तिमान् कर्तृरूपः
- (b) इच्छाशक्तिमान् कर्तृरूपः
- (c) क्रियाशक्तिमान् कार्यरूपः
- (d) क्रियात्मकत्वेन कार्यरूपः

Ans : (a) – विज्ञानमयकोश $\Rightarrow$ ज्ञानशक्तिमान् कर्तृरूपः
मनोमयकोश $\Rightarrow$ इच्छाशक्तिमान् करणरूपः
प्राणमयकोश $\Rightarrow$ क्रियाशक्तिमान् कार्यरूपः

23. निर्विकल्पकविषये कति विघ्नाः सम्भवन्ति वेदान्तमते

- (a) त्रयः
- (b) चत्वारः
- (c) द्वौ
- (d) पञ्च

Ans : (b) – वेदान्तसार के अनुसार निर्विकल्पक समाधि के 4 प्रकार के विघ्न माने हैं- 1. लय, 2. विक्षेप, 3. कषाय, 4. रसास्वाद

24. 'वह्निरनुष्णः' इति स्थले हेत्वाभासो वर्तते

- (a) सव्यभिचारः
- (b) सोपाधिकः
- (c) बाधितः
- (d) आश्रयासिद्धः

Ans : (c) – “वह्निरनुष्णः” में बाधित हेत्वाभास है। हेत्वाभासों को पाँच भागों में बाँटा गया है- (i) सव्यभिचार, (ii) विरूद्ध, (iii) सत्प्रतिपक्ष, (iv) असिद्ध, (v) बाधित।

इन पाँचों हेत्वाभासों को उदाहरण स्वरूप इस प्रकार समझा जा सकता है-

- (i) सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः - यथा = सर्वमनित्यं प्रमेयत्वस्य बह्वप्रभाववतिहृदे विद्यमानत्वात्।।
- (ii) साध्याऽभावव्याप्तिरहेतुविरूद्धः - यथा - शब्दो नित्यः
- (iii) यस्यसाध्याऽभावसाधक हेतुवन्तरविधत्ते स सत्प्रतिपक्षः - यथा - शब्दो नित्यः श्रवणत्वात्, शब्दत्ववत्। शब्दोऽनित्य कार्यत्वाद् घटवत्।
- (iv) व्याप्यत्वाऽसिद्धश्चेति। यथा - गगनाऽरविन्दं सुरभि।
- (v) साध्याऽभावः प्रमाणान्तरेण पक्षे निश्चितः सा बाधितः। यथा - वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वादिति।

25. परार्थानुमाने अवयवा भवन्ति

- (a) त्रयः
- (b) पञ्च
- (c) षट्
- (d) द्वौ

Ans : (b) अनुमान दो प्रकार का होता है-

- 1. स्वार्थानुमान
 - 2. परार्थानुमान:- 1. प्रतिज्ञा, 2. हेतु, 3. उदाहरण, 4. उपनय, 5. निगमन
- अतः परार्थानुमान 5 प्रकार का होता है।

26. अस्य प्रातिपदिकसंज्ञा नास्ति

- (a) भवति
- (b) पठितुम्
- (c) पाणिपादम्
- (d) दाशरथिः

Ans : (a) पठितुम् (पठ् धातु + तुमुन् प्रत्यय), पाणिपादम् (पाणि च पादौ च इति), और दाशरथिः इन पदों की प्रातिपदिकसंज्ञा होती है। जबकि 'भवति' इस पद की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती। क्योंकि प्रातिपदिक संज्ञा सुबन्त की होती है, तिङन्त नहीं।

27. सर्वनामस्थानसंज्ञा कस्य भवति?

- (a) 'शी' प्रत्ययस्य
- (b) 'शि' प्रत्ययस्य
- (c) सर्वनाम शब्दस्य
- (d) सर्वशब्दस्य

Ans : (b) “शि सर्वनामस्थानसंज्ञा इति” अर्थात् ‘शि’ प्रत्यय की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है।

28. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदम् शुद्धम वर्तते

- (a) नृपात् गाम् याचते
- (b) देवदत्ताय अभिक्रुध्यति
- (c) देवदत्तम् अभिक्रुध्यति
- (d) पुष्पम् स्पृहयति

Ans : (c) – “देवदत्तम् अभिक्रुध्यति” यह वाक्य कारक की दृष्टि से शुद्ध है क्योंकि क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म इस कारक सूत्र के अनुसार -उपसर्ग से युक्त क्रुध् एवं द्रुह् धातुओं के योग, जिस पर क्रोध एवं द्रोह किया जाए उसकी कर्म संज्ञा होती है। जैसे -क्रूरम् अभिक्रुध्यति अभिद्रुहयति वा।

29. अनीप्सितस्य का संज्ञा?

- (a) करणसंज्ञा
- (b) सम्प्रदानसंज्ञा
- (c) कर्मसंज्ञा
- (d) अपादानसंज्ञा

Ans : (c) – अनीप्सित की कर्म संज्ञा होती है। ‘तथायुक्तं चानीप्सितम्’ अर्थात् कर्ता का अनीप्सित पदार्थ भी ईप्सित पदार्थ के समान कर्म संज्ञक होता है। यथा - (i) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।

30. अकथितञ्च ! - इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम् अस्ति-

- (a) माणवकं धर्मम् ब्रूते
- (b) धर्मं जानाति वेदेन
- (c) वनम् गच्छति रथेन
- (d) माणवकाय दीक्षाम् ददाति

Ans : (a) – ‘अकथितं च’ सूत्र के अनुसार अपादानादि अर्थात् करण, सम्प्रदान, और अधिकरण कारकों से अविवक्षित कारकों की कर्मसंज्ञा होती है यथा -

“दुह्याचपचदण्डरूध् प्रच्छिचिब्रुशास्।” इन सोलह धातुओं से युक्त पद द्वितीया विभक्ति के वाचक हो जाते हैं। “माणवकम् धर्मं ब्रूते” उदाहरण में ब्रु धातु अकथितं च के अन्तर्गत आती है।

31. अयम् उपपदविभक्तेः प्रयोगः वर्तते

- (a) ग्रामाद् आयाति
- (b) हरिः सेव्यते
- (c) लक्ष्म्या सहितः
- (d) रामात् पृथक्

Ans : (d) – ‘रामात् पृथक्’ इस पद में उपपदविभक्ति का प्रयोग किया गया है। विभक्तियाँ सामान्य रूप से दो प्रकार की होती हैं- 1. कारक विभक्ति (उदाहरण- यज्ञदत्तः वेदं पठति), 2. उपपदविभक्ति (उदाहरण- नगरम् उभयतः वनमस्ति)

विशेष- “उपपद” शब्द का अर्थ है - जो पद के समीप हो।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

32. 'अधिगोपम्' इत्यत्र कः समासः?

- (a) उपपदतत्पुरुषः (b) कर्मधारयः
(c) तत्पुरुषः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) – 'अधिगोपम्' (गोपि इति) (गोपा डि अधि) पद में अव्ययीभाव समास है। "प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः" अर्थात् अव्ययीभाव समास प्रायः पूर्वपद प्रधान होता है। जैसे- अधिगोपम्, अधिहरि, उपगङ्गम् आदि।

33. लघुसिद्धान्तकौमुदीकारमते समासः कतिविधा वर्तते?

- (a) पञ्चधा (b) षोढा
(c) सप्तधा (d) चतुर्धा

Ans : (a) लघुसिद्धान्त कौमुदी में समास के मुख्यतः पाँच प्रकार बताये गये हैं-

- विशेषसञ्ज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः - प्रथमः।
- प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः - द्वितीयः।
- प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानो तत्पुरुषः - तृतीयः।
- प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः - चतुर्थः।
- प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः - पञ्चमः।

34. 'अक्षशौण्डः' - अस्य अलौकिकम् विग्रह वाक्यम् भवति

- (a) अक्ष + सु शौण्ड + सु (b) अक्ष + सुप् शौण्ड + सु
(c) अक्षेष्ु शौण्डः (d) अक्ष + डि शौण्ड + डि

Ans : (b) अक्षशौण्डः का अलौकिक विग्रह - अक्ष + सुप् + शौण्ड + सु होगा। जबकि लौकिक विग्रह-अक्षेष्ु शौण्डः होगा। अक्षशौण्डः में सप्तमी तत्पुरुष समास है।

35. अल्पाक्षरम् इत्यस्य सूत्रस्य उदाहरणम् -

- (a) शिवकेशवौ (b) ईशकृष्णौ
(c) मातापितरौ (d) हरिहरौ

Ans : (a) – 'अल्पाक्षरम्' सूत्र से 'शिवकेशवौ' पद की सिद्धि होती है। क्योंकि द्वन्द्व समास में कम स्वर वालों का पूर्वनिपात होता है।

36. भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति

- (a) उ (b) अं
(c) व् (d) ए

Ans : (c) – भाषा विज्ञान की दृष्टि से अर्धस्वर 'व्' है। जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का न तो सम्पूर्ण भाग ही स्पर्श होता है और न ही स्वरों के उच्चारण के समान 'पार्थक्य' होता है। वो अर्धस्वर कहलाते हैं। जैसे- य्, व्।

37. निम्नाङ्कितेषु ध्वनिनियमस्य प्रवर्तको न वर्तते

- (a) ग्रिम (b) ग्रासमान
(c) वेबर (d) वर्नर

Ans : (c) – संस्कृतभाषा विज्ञान में 'त्रि' ध्वनि परिवर्तनाचार्य हुये हैं। जिन्होंने ध्वनि में होने वाली परिवर्तन प्रणाली का आविष्कार किया है जिनके नाम थे-

- 'ग्रिम' का नियम
- 'ग्रासमान' का नियम
- 'वर्नर' का नियम।

जबकि ध्वनि नियम के प्रवर्तकों में वेबर का नाम नहीं आता।

38. शकुन्तलायाः अङ्गुलीयकं कुत्र प्रभ्रष्टम्?

- (a) गङ्गातीर्थसलिले (b) मालिनीनदीतीरे
(c) शचीतीर्थसलिले (d) कण्वाश्रमे

Ans : (c) – शकुन्तला को पहचान स्वरूप राजा दुष्यन्त अङ्गुलीयक देते हैं। फलस्वरूप हस्तिनापुर में राजसङ्कट उत्पन्न होने पर वह शकुन्तला को छोड़कर वापस चले जाते हैं। समय बीतने पर जब शकुन्तला को विदाई दी जाती है तो रास्ते में एक शचीतार्थ नामक सरोवर मिलता है जिसमें शकुन्तला नदी के जल में मुख प्रक्षालित करती है। इसी सरोवर के जल में उसके हाथ की ऊँगली से अँगूठी गिर जाती है।

39. प्रकरणस्योदाहरणं भवति

- (a) मुद्राराक्षसम् (b) वेणीसंहारम्
(c) मृच्छकटिकम् (d) प्रतिमानाटकम्

Ans : (c) – प्रकरण रूपक का ही एक भेद होता है। इनमें से मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ है। जिसमें कुल दश अङ्क हैं। विशाखादत्त कृत् 'मुद्राराक्षसम्' नाटक ग्रन्थ में 7 अङ्क हैं। भट्टनारायण का वेणीसंहार नाटक ग्रन्थ में 6 अङ्क हैं।

40. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' - कस्येयमुक्तिः?

- (a) युधिष्ठिरस्य (b) द्रौपद्याः
(c) वनेचरस्य (d) अर्जुनस्य

Ans : (c) "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" वनेचरस्योक्तिः। दुर्योधन के प्रजाविषयक वृत्तान्त को जान करके वनेचर द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से कहता है कि - "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" अर्थात् कल्याणकारी और मनोहारी वचन अति दुर्लभ होते हैं।

41. वीररसः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये

- (a) नैषधीयचरिते (b) शिशुपालवधे
(c) मेघदूते (d) रघुवंशे

Ans : (b) – 'माघ' विरचितम् 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में वीर रस को अङ्गी माना गया है। 'श्रीहर्ष' का 'नैषधीयचरितम्' शृङ्गार रस प्रधान महाकाव्य है। 'मेघदूतम्' कालिदासकृत 'लघुत्रयी' ग्रन्थ है। तथा 'रघुवंशम्' भी शृङ्गार रस युक्त 19 सर्गों का महाकाव्य है।

42. करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी - इदं वर्णनं कस्मिन् काव्येऽस्ति?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) मुद्राराक्षसम् (d) रत्नावली

Ans : (a) – 'भवभूति' रचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक में सीता को करुणा की मूर्ति के रूप में बताया गया है। 'उत्तररामचरितम्' नाटक में 7 अङ्क हैं। इसका आधार 'रामायण' को मानते हैं। 'उत्तररामचरितम्' करुण रस प्रधान नाटक है।

43. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?

- (a) अष्टादश (b) एकोनविंशतिः
(c) विंशतिः (d) द्वाविंशतिः

Ans : (d) – श्रीहर्ष 'कृत्' नैषधीयचरितम् नामक काव्य में कुल 22 सर्ग हैं। नैषधीयचरितम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है। नैषधकाव्य को विद्वानों के लिए औषधि माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

44. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(A) किरातार्जुनीयम्	1. भासः
(B) दशकुमारचरितम्	2. दण्डी
(C) स्वप्नवासवदत्तम्	3. भारविः
(D) बुद्धचरितम्	4. अश्वघोषः

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	3	2	1
(b)	2	1	3	4
(c)	3	2	1	4
(d)	1	4	3	2

Ans : (c) – तालिका का सही क्रम मिलान इस प्रकार होगा -

- (a) किरातार्जुनीयम् - भारविः
 (b) दशकुमारचरितम् - दण्डी
 (c) स्वप्नवासवदत्तम् - भासः
 (d) बुद्धचरितम् - अश्वघोषः।

45. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य नृपः आसीत्?

- (a) वत्सदेशस्य
 (b) उज्जयिन्याः
 (c) वाराणस्याः
 (d) विदर्भदेशस्य

Ans : (d) – ‘पुण्यवर्मा’ विदर्भ देश का राजा था। पुण्यवर्मा भोजवंशीय राजा अनन्तवर्मन के पिता थे। ‘पुण्यवर्मा’ ‘अश्मकेन्द्र’ के ‘बसन्तभानु’ के सहयोगी वनवासी राजा भी कहलाये।

46. ‘चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि’ -

कस्येयमुक्तिः?

- (a) मम्मटस्य
 (b) विश्वनाथस्य
 (c) वामनस्य
 (d) दण्डिनः

Ans : (b) – साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को चतुर्वर्गफलप्राप्ति का साधन बताया है। कहा गया है कि जीवन के उद्देश्य रूपी चतुर्वर्गफलप्राप्ति भी काव्य द्वारा सम्भव है-

“चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि
 काव्यादेवयतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥”

मम्मट ने भी काव्यशास्त्र की उपादेयता बतायी है -

“काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
 सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥”

47. संस्कृतनाटकेषु विदूषकस्य को वर्गः?

- (a) ब्राह्मणवर्गः
 (b) क्षत्रियवर्गः
 (c) वैश्यवर्गः
 (d) शूद्रवर्गः

Ans : (a) – संस्कृत नाटकों में विदूषक को ‘ब्राह्मण वर्ग’ की कोटि में रखा जाता है। विदूषक एक हास्य पात्र होता है। विदूषक को ‘मसखरा’ भी कहा जाता है। क्षत्रियवर्ग में राजा का चरित काव्यों में कटिबद्ध रहता है। जैसे - दुष्यन्त, अनन्तवर्मा, पुण्यवर्मा आदि। वैश्यवर्ग में भी कई पात्र काव्यों में मिलते हैं। तथा शूद्रवर्ग की श्रेणी में ‘चाण्डाल्य कन्या’ का वर्णन हमें प्राप्त ही होता है।

48. ‘लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्’ श्लोकपादोऽयं कस्मिन् शास्त्रग्रन्थे वर्तते?

- (a) धर्मशास्त्रे
 (b) अर्थशास्त्रे
 (c) नाट्यशास्त्रे
 (d) शिल्पशास्त्रे

Ans : (c) – “लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्” यह श्लोकांश भरतमुनि प्रतिपादित ग्रन्थ नाट्यशास्त्र से है। नाट्यशास्त्र में “प्रत्यभिज्ञा दर्शन” की छाप है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में 36 मूल तत्त्वों के प्रतीक स्वरूप नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं। ‘नाट्यशास्त्र’ के वाक्यों को ‘भरतसूत्र’ कहा जाता है। इस ग्रन्थ को ‘द्वादशसाहस्री संहिता’ भी कहा जाता है। इसे ‘षट्साहस्री’ भी कहा जाता है। इसीलिए आचार्य भरतमुनि को - ‘द्वादश साहस्रीकार’ तथा ‘षट्साहस्रीकार’ की उपाधि से विभूषित किया गया।

49. मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते.....सा शक्तिः का

- (a) अभिधा
 (b) लक्षणा
 (c) व्यञ्जना
 (d) तात्पर्या

Ans : (b) – काव्यप्रकाशकार ‘मम्मट’ ने शक्तियों के मुख्यतः तीन भेद किए हैं- (1) अभिधा, (2) लक्षणा, (3) व्यञ्जना। इन तीनों शक्तियों को इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

- (क) “तत्र संज्ञेतिार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा” - अभिधाशक्ति
 (ख) “मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणा शक्ति आरोपिता” - लक्षणा शक्ति
 (ग) “विरतास्वभिधाद्यासु ययार्थो बोध्यतेऽपरः सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च” - व्यञ्जना शक्ति।

50. रसनिष्पत्तिविषये अनुमितिवादं कः प्रस्तौति?

- (a) भट्टलोल्लटः
 (b) अभिनवगुप्तः
 (c) भट्टनायकः
 (d) श्रीशङ्कुकः

Ans : (d) – ‘अनुमितिवाद’ के प्रवर्तक शङ्कुक हैं। इन्होंने रसनिष्पत्ति के विषय में अनुमितिवाद का सिद्धान्त दिया। उत्पत्तिवाद ‘भट्टलोल्लट’। भुक्तिवादी ‘भट्ट नायक’ हैं तथा अभिव्यक्तिवादी ‘अभिनवगुप्त’ जी हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2013

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में पचहत्तर (75) बहुविकल्पीय प्रश्न हैं।

प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सूचना : अत्र प्रश्नपत्रे पञ्चसप्ततिः (75) बहुवैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयम् वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. सृष्टयुत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते :

- (a) पुरुषसूक्ते (b) अग्निसूक्ते
(c) इन्द्रसूक्ते (d) पृथ्वीसूक्ते

Ans : (a) – सृष्टि उत्पत्ति के विषय की विवेचना ‘पुरुष सूक्त’ में मिलती है। पुरुष सूक्त ऋग्वेद संहिता के दसवें मण्डल का एक प्रमुख सूक्त है, जिसमें एक विराट पुरुष की चर्चा हुयी है और उसके अङ्गों का वर्णन है।

विशेष- ध्यान देने की बात यह है कि वेद और सांख्य शास्त्र में पुरुष शब्द का अर्थ जीवात्मा या परमात्मा आया है।

2. “ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः.... अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति :

- (a) मधुच्छन्दाः (b) अजीर्तः
(c) कण्वः (d) नारायणः

Ans : (d) – “ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः”.....। यह पुरुष सूक्त का मंत्र है। इस मन्त्र के ऋषि नारायण हैं। जबकि ‘मधुच्छन्दा ऋषि’ अग्नि सूक्त के हैं। जो पृथ्वी स्थानीय हैं। ‘कण्व’ सोम सूक्त के ऋषि हैं जो पृथ्वी स्थानीय हैं।

3. वाक् सूक्तस्य [ऋग्वेदे 10.125] का देवता?

- (a) वाक् (b) आत्मा
(c) वेनो भार्गवः (d) वागाम्भृणी

Ans : (a) – ऋग्वेद के ‘वाक् सूक्त’ के देवता वाक् हैं। इसमें कुल 8 मन्त्र हैं। “वाक् सूक्त” ऋग्वेद के दशम मण्डल का 125 वाँ सूक्त है। इसे ‘आत्मासूक्त’ भी कहते हैं। इसमें अम्भृण ऋषि की पुत्री वाक् उसे ब्रह्मसाक्षात्कार से आत्म ज्ञान प्राप्त होने के कारण सर्वात्मदृष्टि को अभिव्यक्त कर रही हैं।

विशेष- इस सूक्त में प्रतिपाद्य-प्रतिपादक का एकात्म्य सम्बन्ध दर्शाया गया है।

4. “यज्ञस्य देवम्” इत्यत्र “देवम्” पदस्य स्वरोऽस्ति :

- (a) देवम् (b) देवम्
(c) दे वम् (d) देवम्

Ans : (d) – “यज्ञस्य देवम्” इसमें से ‘देवम्’ पद में स्वर होगा- स्वर निरूपण → देवम्

स्वर निरूपण मुख्यतः तीन विभाजक चिन्हों सहित नाम हैं-

1. उदात्त, 2. अनुदात्त, 3. स्वरित

‘देवम्’ पद के ‘दे’ में स्वरित चिन्ह है।

5. “अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् मन्त्रांशोऽयं वर्तते” :

- (a) पृथ्वीसूक्ते (b) वाक्सूक्ते
(c) पुरुषसूक्ते (d) हिरण्यगर्भसूक्ते

Ans : (a) – “अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्” यह अंश अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त या भूमिसूक्त का है। ‘माता भूमिः पुत्रोऽहम्’ यह वाक्यांश पृथ्वीसूक्त का प्रसिद्ध वाक्य है।

i. अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्टां पृथिवीमहम्।।

ii. विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां...।।

iii. ता नः प्रजाः सं दुष्टतां समग्रा वाचो मधु...।।

6. शुनः शेष - आख्याने उल्लेखो नास्ति :

- (a) वरुणस्य (b) वसिष्ठस्य
(c) बादरायणस्य (d) अजीर्तस्य

Ans : (c) – शुनः शेष आख्यान में वरुण, वसिष्ठ, अजीर्त आदि का उल्लेख मिलता है। लेकिन बादरायण का नहीं।

‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’ इत्यादि को बादरायण ने ही अपने ब्रह्मसूत्र में बताया है। बादरायण दर्शनशास्त्र से सम्बन्धित हैं न कि वेद से।

विशेष- इन्होंने वेदों का वर्गीकरण किया है इसलिए इन्हें “वेदव्यास” भी कहते हैं।

7. आध्यात्मिकव्याख्यापद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य अग्नि शब्दस्य अयमर्थः :

- (a) श्रौताग्निः (b) विद्युत्
(c) परमात्मा (d) स्मार्ताग्नि

Ans : (c) – “आध्यात्मिक व्याख्या पद्धतौ वेदे प्रयुक्तस्य अग्नि शब्दस्यार्थः परमात्मास्ति।” यह अंश परमात्मा के लिए वर्णित है।

विशेष- परमात्मा शब्द ‘परम’ तथा आत्मा के मेल से बना है। परम का अर्थ सर्वोच्च और आत्मा का अर्थ चेतना से है।

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत :

- (A) अग्निः सूर्य आपो विश्वे 1. शतपथब्राह्मणम्
देवाश्च सं इदुः
(B) सो अङ्ग वेद यदि वा 2. अथर्ववेदः
न वेद
(C) सा यन्मम त्वं 3. ऐतरेयब्राह्मणम्
कृतानुकराऽनु वर्त्मासि
(D) भीम एव सौर्यवसिः 4. ऋग्वेदे
शासेन विशिशसिषुः

कूट :

- (A) (B) (C) (D)
(a) 2 4 3 1
(b) 2 4 1 3
(c) 3 1 4 2
(d) 3 1 2 4

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b)

- i. अग्निः सूर्य आपो विश्वे देवाश्च सं इदुः - अथर्ववेद
- ii. सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद - ऋग्वेद
- iii. सा यन्म त्वं कृतानुकराऽनु वर्त्मासि - शतपथ ब्राह्मणम्
- iv. भीम एव सौर्यवसिः शासेन विशिशासिषुः - ऐतरेय ब्राह्मणम्

9. 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' इत्यस्य कुत्रोपदेशः?

- (a) ईशोपनिषदि
- (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
- (c) श्रीमद्भागवते
- (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (a) - "तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः" यह वाक्यांश का उपदेश ईशोपनिषद् में मिलता है।

ईशोपनिषद् शुक्लयजुर्वेदीय शाखा के अन्तर्गत एक उपनिषद् है। इस उपनिषद् में विद्या एवं अविद्या दोनों की बात की गयी है, साथ ही उनके अलग-अलग गुणों को बताया गया है।

विशेष- इस उपनिषद् का विषय ज्ञान - योग, द्वैत, अद्वैत सिद्धान्त है।

कुछ प्रमुख वाक्यांश -

- i. ईशावास्यमिदं सर्वयत्किञ्चित् जगत्यां-जगत.....।
- ii. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विध्वानि देव वयुनानि विद्वान् ..।

10. 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' कुत्रेयमुक्तिः ?

- (a) ईशोपनिषदि
- (b) केनोपनिषदि
- (c) कठोपनिषदि
- (d) भगवद्गीतायाम्

Ans : (b) - "यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्" यह उक्ति केनोपनिषद् से है। यह उपनिषद् सामवेदीय शाखा से सम्बन्धित है। केनोपनिषद् के कुछ अन्य पंक्तियाँ -

- i. ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः.....।
- ii. यदि मन्यसे सुवेदेति दहरमेवापि.....।
- iii. ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये.....।
- iv. सा ब्रह्मेति होवाच ब्रह्मणो वा.....।

11. 'अत्राद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' - इयमुक्तिः कुत्रास्ति?

- (a) कठोपनिषदि
- (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
- (c) केनोपनिषदि
- (d) तैत्तिरीयोपनिषदि

Ans : (d) - 'अत्राद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते' यह उक्ति 'तैत्तिरीयोपनिषद्' से अवतरित है। उपनिषदों के रचनाकार वेदव्यास ने कृष्णयजुर्वेद शाखा के अन्तर्गत तैत्तिरीयोपनिषद् का क्रमस्थान रखा है। यह अत्यन्त प्राचीनतम् है।

विशेष- यह उपनिषद् तीन खण्डों में विभक्त है-

- i. शिक्षावल्ली - साहिती उपनिषद्
- ii. ब्रह्मानन्दवल्ली - वारुणी उपनिषद्
- iii. भृगुवल्ली - वारुणी उपनिषद्

12. 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा'-इयमुक्तिः कुत्रास्ति ?

- (a) ईशोपनिषदि
- (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
- (c) कठोपनिषदि
- (d) केनोपनिषदि

Ans : (c) - 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा' यह उक्ति कठोपनिषद् में मिलती है। कठोपनिषद् मुख्यतः कृष्णयजुर्वेद शाखा का एक महत्वपूर्ण उपनिषद् है। इसमें यम और नचिकेता का संवाद मिलता है। इस उपनिषद् के प्रमुख कथनांश -

- i. वैश्वानरः प्रविशत्यति त्रिब्राह्मणो गृहान्।
- ii. वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो...
- iii. पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः।
- iv. तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्।

विशेष- यह उपनिषद् ज्ञानयोग, द्वैत, अद्वैत सिद्धान्त की व्याख्या करता है।

13. 'न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति'-कस्येयमुक्तिः ?

- (a) कात्यायन्याः
- (b) मैत्रेय्याः
- (c) याज्ञवल्क्यस्य
- (d) गार्ग्यस्य

Ans : (c) - "न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति" यह उक्ति याज्ञवल्क्य की है। याज्ञवल्क्य वैदिक साहित्य में 'शुक्लयजुर्वेद' की वाजसनेयी शाखा के द्रष्टा हैं। यह वैदिक काल के ऋषि और दार्शनिक थे।

विशेष- 'याज्ञवल्क्य स्मृति' धर्मशास्त्र परम्परा का ग्रन्थ है। इस पर 'मिताक्षरा' नामक टीका अत्यन्त प्रसिद्ध एवं प्रामाणिक है।

14. 'वाचं धेनुमुपासीत' - इति कुत्र उपदिश्यते ?

- (a) श्रीमद्भागवते
- (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
- (c) तैत्तिरीयोपनिषदि
- (d) ईशोपनिषदि

Ans : (b) - 'वाचं धेनुमुपासीत'। ऐसा 'बृहदारण्यकोपनिषद्' में प्राप्त होता है। यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का है। इसका मुख्य विषय-आत्म और 'स्व' है। यह उपनिषद् सबसे बड़ा उपनिषद् है। **विशेष-** बृहदारण्यक उपनिषद् में छः ब्राह्मण हैं।

15. अधस्तनानां समीचीनमुत्तरं चिनुत :

(A) सामवेदः	1. कठोपनिषद्
(B) कृष्णयजुर्वेदः	2. बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) शुक्लयजुर्वेदः	3. तैत्तिरीयोपनिषद्
(D) एष आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद्	4. केनोपनिषद्

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	1	3
(c)	1	2	3	4
(d)	3	2	1	3

Ans : (a) - तालिका का क्रमवार सही उत्तर होगा -

- (A) सामवेदः → केनोपनिषद्
 - (B) कृष्णयजुर्वेदः → कठोपनिषद्
 - (C) शुक्लयजुर्वेदः → बृहदारण्यकोपनिषद्
 - (D) एष आदेशः, एष उपदेशः, एषा वेदोपनिषद् → तैत्तिरीयोपनिषद्
- विशेष-** उपनिषद् हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण श्रुति ग्रन्थ हैं।

16. बृहती-छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

- (a) 44
- (b) 40
- (c) 36
- (d) 38

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (c) – बृहती छन्द में 36 (षट्त्रिंशत्) वर्ण होते हैं। 44 वर्ण क्रमशः इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, रथोद्धता, मालिनी, स्वागता, में होते हैं। इसी तरह पंक्ति, प्रस्तार पंक्ति और विराट इन वैदिक छन्दों में 40 वर्ण होते हैं।

विशेष- छन्द क्रियान्वयन सारणी निम्न है-

गण	उदा.	प्रभाव
यगण (य)	नहाना	शुभ्
मगण (मा)	आजादी	शुभ्
तगण (ता)	चालाक	अशुभ्
रगण (रा)	पालना	अशुभ्
जगण (ज)	करील	अशुभ्
भगण (भ)	बादल	शुभ्
नगण (न)	कमल	शुभ्
सगण (स)	कमला	अशुभ्

17. चातुर्मास्ययागे वर्तते :

- (a) अग्निहोत्रम् (b) आग्रयणम्
(c) सौत्रामणी (d) साकमेधीयम्

Ans : (d) – चतुर्मास याग 'साकमेधीयम्' में होने का कार्य होता है। इसका वर्णन लौगाक्षिभास्कर द्वारा विरचित अर्थसंग्रह में मिलता है। अर्थसंग्रह में मुख्यतः निम्न विषयों का विवेचन हुआ है -

- धर्म तथा उसका लक्षण
- भावना का लक्षण तथा उसके दो भेद
- वेद का लक्षण तथा उसके विभाग
- विधि का लक्षण तथा उसके प्रकार

अग्निहोत्रम्, आग्रयणम्, सौत्रामणी ये तीनों यज्ञविधानान्तर्गत ही हैं न कि चतुर्मासयाग के अन्तर्गत।

विशेष- अर्थसंग्रह पूर्वमीमांसा का एक लघुकाय प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें "शाबरभाष्य" में प्रतिपादित बहुत से विषयों का अतिसंक्षेप में निरूपण है।

18. नारदीयशिक्षा सम्बद्धा वर्तते :

- (a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) कृष्णयजुर्वेदेन (d) शुक्लयजुर्वेदेन

Ans : (a) – नारदीयशिक्षा का सम्बन्ध सामवेद से है। अन्य विकल्पों में शिक्षाग्रन्थ निम्नवत् संयोजित हैं-

वेद एवं वेद विभाग शिक्षाग्रन्थ/प्रातिशाख्य

- (i) ऋग्वेद पाणिनीय शिक्षा
(ii) कृष्णयजुर्वेद वाशिष्ठीय शिक्षा
(iii) शुक्लयजुर्वेद याज्ञवल्क्यीय शिक्षा

विशेष- सामवेद में तीन शिक्षा ग्रन्थ मिलते हैं।

- (i) नारदीय शिक्षा
(ii) ऋक्तन्त्र शिक्षा
(iii) पुष्यसूत्र प्रातिशाख्य

19. समानाक्षराणि कति?

- (a) 9 (b) 12
(c) 8 (d) 10

Ans : (c) – समानाक्षराणि मुख्यतः आठ (8) ही बताये गये हैं। 'समानाक्षराणि' पद में बहुव्रीहि समास है।

विशेष- भाषा विज्ञान में 'अक्षर' 'ध्वनियों' की संगठित ईकाई को कहते हैं। अक्षर शब्द का प्रयोग पहले 'वाणी' (वाक्) के लिए किया जाता था।

20. अन्तरिक्षस्थानी देवता अस्ति :

- (a) अश्विनौ (b) सोमः
(c) सूर्यः (d) वायु

Ans : (d) – अन्तरिक्ष स्थानीय देवता 'वायु' हैं। अन्य विकल्पों में देवता स्थान क्रम होगा -

देवता	स्थान
सूर्य	द्युस्थानीय
सोम	पृथ्वी स्थानीय
अश्विनौ	द्युस्थानीय

विशेष- ऋग्वेद के अनुसार कुल 33 देवता हैं। विशेष बात यह है कि पुराणों में जो 33 कोटि देवता निर्दिष्ट हैं, उसका अभिप्राय 33 प्रकार के देवता से है।

21. यास्कीयनिरुक्तानुसारम् अस्य पदत्वेन स्वीकारः नास्ति :

- (a) नाम्नः (b) उपसर्गस्य
(c) आख्यातस्य (d) प्रत्ययस्य

Ans : (d) – निरुक्तकार यास्क के अनुसार प्रत्यय को पद के भेद के द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता। जबकि नाम्नः, उपसर्गस्य और आख्यात स्वीकृत हैं। निरुक्त वैदिक साहित्य के शब्द व्युत्पत्ति का विवेचन कर्ता ग्रन्थ है। जो छः वेदाङ्गों में से एक है।

सायण का कथन है -

“अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्।” - ऋग्वेद भाष्य भूमिका।

विशेष- काशिका वृत्ति के अनुसार निरुक्त पाँच प्रकार का होता है-

- (i) वर्णागम (अक्षर बढ़ाना)
(ii) वर्णविपर्यय (अक्षरों को आगे पीछे करना)
(iii) वर्णाधिकार (अक्षरों को बदलना)
(iv) नाश (अक्षरों को छोड़ना)
(v) धातु (किसी एक अर्थ को सिद्ध करना)

22. आचिनोत्यर्थान् इति आचार्यपदनिर्वचने कः धातुः ?

- (a) चिञ् (b) आ + चिन्
(c) चिन् (d) आ + चि

Ans : (d) आचिनोत्यर्थान् इति आचार्यपद निर्वचने आ +चि धातुरस्ति। आचार्य शब्द के कई अर्थ हैं-

- (i) अध्यापक या गुरु
(ii) आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराता है तथा वेद की शिक्षा देता है।)
(iii) किसी विद्वान् व्यक्ति को सम्मान देने के लिए उसके नाम के पूर्व लगने वाला सम्मान सूचक शब्द।
(iv) पुरोहित या पारम्परिक पण्डित
(v) संगीतज्ञ, वंश या धर्म का प्रधान, बड़ा, बूढ़ा।
(vi) पाण्डवों के गुरु द्रोण का उपनाम।

YCT

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

30. वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनम् केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति, न तु संयुक्तध्वनिषु। - इति अपवादनियमः केन प्रदत्तः ?

- (a) त्रिमहोदयेन (b) ग्रासमानमहोदयेन
(c) बर्नरमहोदयेन (d) आचार्येण भोलाशङ्करेण

Ans : (a) - वर्गस्य प्रथमवर्णस्य परिवर्तनम् केवलम् असंयुक्तध्वनिषु एव भवति, न तु संयुक्तध्वनिषु यह कथनांश अपवाद नियम के रूप में "त्रिम महोदय" द्वारा प्रदत्त किया गया है।

विशेष- (i) पाणिनी से पूर्ण प्रभावित होकर ब्लूमफीड (अमरीका) ने सन् 1932 ई. में "लैंग्वेज" नामक ग्रन्थ प्रकाशित करवाकर वर्णात्मक भाषा विज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

31. उत्तपते। वितपते। - इत्यनयोः क्रियापदयोः कोऽर्थः ?

- (a) विलापयतीत्यर्थः (b) संतापयतीत्यर्थः
(c) 'दीप्यते' - इत्यर्थः (d) उष्णम् करोतीत्यर्थः

Ans : (c) - उत्तपते। वितपते। इन दोनों क्रिया पदों का अर्थ 'दीप्यते' है।

32. समुद्रगुप्तस्य प्रयागप्रशस्तेः कः रचयिता?

- (a) वासुलः (b) वत्सभट्टिः
(c) हरिषेणः (d) वीरसेनः

Ans : (c) - समुद्रगुप्त के प्रयागप्रशस्ति के रचयिता 'हरिषेण' थे। 'प्रयागप्रशस्ति' के रचयिता हरिषेण गुप्तराजवंश के सम्राट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि थे। इस प्रशस्ति की एक पंक्ति उल्लिखित है। "अनेक भ्रष्टराज्योत्सन्न-राजवंश प्रतिष्ठापनोद्भूत-निखिल भुवन विचरण - शान्त यशसः।।" अतः प्रयाग प्रशस्ति के कवि हरिषेण हैं।

विशेष-

इस लेख को समुद्रगुप्त द्वारा 200 ई. में कौशाम्बी से लाये गये 'अशोक स्तम्भ' पर खुदवाया।

33. ब्रह्मसूत्राणां भगवत्पादशङ्कराचार्यस्य व्याख्यायाः केन नाम्ना व्यवहारः ?

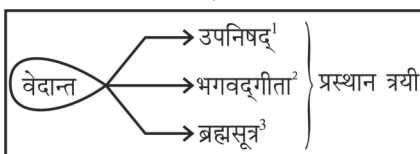
- (a) श्रीभाष्यम् (b) जयः
(c) शारीरकमीमांसाभाष्यम् (d) द्वादशलक्षणी

Ans : (c) - ब्रह्मसूत्रों में 'भगवत्पाद' शङ्कराचार्य की व्याख्या 'शारीरकमीमांसाभाष्य' नाम से व्यवहृत है। ब्रह्मसूत्र को 'अध्यासभाष्य' भी कहा जाता है। आदि शङ्कराचार्य ने "वेदान्तसूत्र" के भाष्य की जो भूमिका लिखी, उसे अध्यासभाष्य कहा जाता है। यह उनकी स्वतन्त्र रचना भी कहलाती है।

विशेष-

- (i) ब्रह्मसूत्र हिन्दुओं के छः दर्शनों में से एक हैं।
(ii) इसे वेदान्त सूत्र, उत्तरमीमांसा सूत्र, शारीरिक सूत्र, और भिक्षु सूत्र आदि के नाम से भी जाना जाता है।

अन्य विशेष तथ्य



इनके दूसरे नाम भी हैं- 1. श्रुति स्थान, 2. स्मृति स्थान, 3. न्याय स्थान

34. 'तत्त्वमसि' इति वाक्यसमन्वये वेदान्ताभिमत लक्षणा वर्तते :

- (a) जहल्लक्षणा (b) जहदजहल्लक्षणा
(c) अजहल्लक्षणा (d) उपादानलक्षणा

Ans : (b) - 'तत्त्वमसि' इस महावाक्य में वेदान्तसार के मतानुसार लक्षणाभेदों में मुख्यतः पर्यवसित आधार रूप से "जहदजहल्लक्षणा" है।

वेदान्तसार के महावाक्य की सारणी-

- (i) तत्त्वमसि - छान्दोग्योपनिषद्।
(ii) अहं ब्रह्मास्मि - बृहदारण्यकोपनिषद्।
(iii) प्रज्ञानं ब्रह्म - ऐतरेयोपनिषद्।
(iv) अयमात्मा ब्रह्म - माण्डूक्योपनिषद्।

विशेष- वेदों के महावाक्य भी प्राप्त होते हैं-

- (i) नेति नेति (यह भी नहीं, यह भी नहीं)
(ii) अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ)
(iii) अयम् आत्मा ब्रह्म (यह आत्मा ही ब्रह्म है।)
(iv) यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे (जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है)

35. षड्विधलिङ्गैः समुपेतं किम्?

- (a) श्रवणम् (b) मननम्
(c) निदिध्यासनम् (d) अध्यासः

Ans : (a) - षड्विधलिङ्गैः समुपेतं श्रवणम्। अर्थात् छः प्रकार के लिङ्ग का समुपेत श्रवण से कार्य सिद्ध है। इसका वर्णन वेदान्त सार (सदानन्दकृत) में है। उपनिषदों के अन्तिम भाग को ही वेदान्त सार कहा जाता है।

विशेष-

- (i) इसकी रचना 16 वीं शताब्दी में हुयी थी।
(ii) वेदान्तसार के ऊपर "सुबोधिनी" नामक टीका लिखी गयी।

36. सांख्ये अन्तःकरणं कतिविधं भवति?

- (a) त्रिविधम् (b) चतुर्विधम्
(c) षड्विधम् (d) दशविधम्

Ans : (a) - 'अन्तःकरणं त्रिविधं' अर्थात् सांख्य में अन्तःकरण को तीन प्रकार से बताया गया है-

1. बुद्धि 2. अहंकार 3. मन

विशेष- अन्तःकरण को आभ्यन्तरणकरण भी कहा जाता है।

37. सांख्याभिमतख्यातिः का?

- (a) अनिर्वचनीयख्यातिः (b) अन्यथाख्यातिः
(c) विवेकख्यातिः (d) असत्ख्यातिः

Ans : (c) - सांख्यदर्शन में विवेकख्याति उपलब्ध होती है।

विशेष- सांख्य सम्प्रदाय के दो ही मौलिक ग्रन्थ आज उपलब्ध हैं -

- (i) "सांख्य प्रवचन सूत्र" - 6 अध्याय
(ii) "सांख्यकारिका" - 72 कारिकायें
एक अत्यन्त लघुकाय "सूत्रग्रन्थ" भी उपलब्ध है जो 'तत्त्व समास' के नाम से प्रसिद्ध है।

38. सांख्यानुसारं पुरुषबहुत्वप्रस्थापने कारणं भवति :

- (a) जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्
(b) शरीराकारभेदात्
(c) इन्द्रियसंख्याभेदात्
(d) प्रतिपुरुषं ज्ञानभेदात्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) – ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका में पुरुषबहुत्व के स्थापनत्व का कारण “जननमरणकरणानां प्रतिनियमात्” बताया गया है। जो कि सांख्य शास्त्र की इस कारिका से स्पष्ट होता है।

“जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेऽच।

पुरुष-बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।।”

विशेष- महाभारत में भी सांख्यशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है-

“ज्ञानं च लोके यदिहास्ति किञ्चित् सांख्यागतं तच्च महन्महात्मन्। - शान्तिपर्व [301.109]

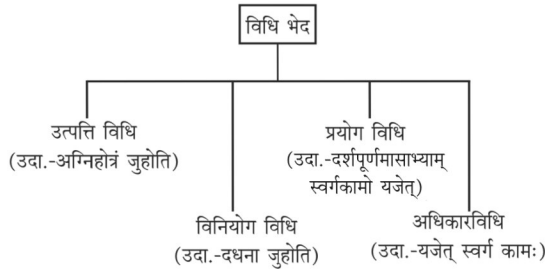
39. अङ्गानां क्रमबोधको विधिर्वर्तते :

(a) विनियोगविधि:	(b) नियमविधि:
(c) परिसंख्याविधि:	(d) प्रयोगविधि:

Ans : (d) – लौगाक्षिभास्करकृत अर्थसंग्रह में प्रयोग विधि का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

“अङ्गानां क्रमबोधको विधिः”।

अर्थसंग्रह में चार प्रकार की विधियों का स्वरूप किया गया है -



नोट:- जहाँ एक काल में दो सम्मुख प्राप्त हों और उनमें एक की व्यावृत्ति करना ही जिसका फल हो उसे “परिसंख्या विधि” कहते हैं। उदाहरणार्थ-“पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः” परिसंख्या विधि मूलतः विनियोग विधि में ही समाविष्ट है।

40. अधोनिर्दिष्टेषु कुत्र गुणवादो दृश्यते :

(a) अग्निर्हिमस्य भेषजम्	(b) आदित्यो यूपः
(c) इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्	(d) बर्हिषि रजतं न देयम्

Ans : (b) – “आदित्यो यूपः” उदाहरण में गुणवाद दिखायी देता है। जबकि अग्निर्हिमस्य भेषजम्, इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत् में भूतार्थवाद और बर्हिषि रजतं न देयम् में निषेधशेष दिखायी देता है।

विशेष- अर्थसंग्रह में जैमिनिप्रणीत मीमांसदर्शन के मुख्य प्रतिपाद्यविषयों का निरूपण में प्रस्तुत किया गया है।

41. रामायणमाश्रित्य यस्य कथास्ति :

(a) कुन्दमाला	(b) रत्नावली
(c) मालविकाग्निमित्रम्	(d) पञ्चरात्रम्

Ans : (a) – दिङ्नाडकृत ‘कुन्दमाला’ रामायण पर आश्रित है।

विशेष-

कुन्दमाला	- 6 अङ्क (दिङ्नाडकृत)
रत्नावली	- 4 अङ्क (हर्षवर्द्धनकृत)
मालविकाग्निमित्रम्	- 5 अङ्क (कालिदासकृत)
पञ्चरात्रम्	- 3 अङ्क (भासकृत) (समवकार)

42. यं ग्रन्थमधिकृत्य शङ्कराचार्येण भाष्यं न रचितम् :

(a) ब्रह्मसूत्रम्	(b) श्रीमद्भागवतम्
(c) ईशावास्योपनिषद्	(d) श्रीमद्भगवद्गीता

Ans : (b) – आदिगुरु शङ्कराचार्य ने अनेक ग्रन्थों पर भाष्य लिखे हैं जैसे-ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता तथा ईशावास्योपनिषद्। लेकिन ‘श्रीमद्भागवत्’ पर शङ्कराचार्य का कोई भाष्य नहीं है।

विशेष-

- (i) आदिशङ्कराचार्य “अद्वैत वेदान्त” के प्रणेता थे।
(ii) इनके भाष्याधारित ग्रन्थ हैं-
(क) केनोपनिषद्, (ख) कठोपनिषद्, (ग) प्रश्नोपनिषद्, (घ) मुण्डकोपनिषद्, (ङ) माण्डूक्योपनिषद्, (च) ऐतरेयोपनिषद्, (छ) तैत्तिरीयोपनिषद्, (ज) बृहदारण्यकोपनिषद्, (झ) छान्दोग्योपनिषद्।।

43. जटायुरावणयुद्धं रामायणस्य कस्मिन् काण्डे?

(a) अरण्यकाण्डे	(b) सुन्दरकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे	(d) बालकाण्डे

Ans : (a) – जटायुरावण युद्ध का वर्णन रामायण के अरण्यकाण्ड में मिलता है। रामायण में 7 काण्ड हैं जो निम्न हैं-

- (i) बालकाण्ड - दशरथकृत अश्वमेधीय यज्ञ पुत्रेष्टियज्ञ इत्यादि।
(ii) अयोध्याकाण्ड - राम राज्याभिषेक की तैयारी।
(iii) अरण्यकाण्ड - रावण तथा जटायु युद्ध, राम का पञ्चवटी में निवास
(iv) किष्किन्धाकाण्ड - राम सुग्रीव का मिलन
(v) सुन्दरकाण्ड - हनुमान और सीता की भेंट
(vi) युद्धकाण्ड - सेतु निर्माण, राम, रावण युद्ध आदि।
(vii) उत्तरकाण्ड - रामराज्याभिषेक

44. रामायणे हुनमतः अङ्गुलीयकप्रदानवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे वर्तते?

(a) सुन्दरकाण्डे	(b) युद्धकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे	(d) उत्तरकाण्डे

Ans : (a) – रामायणमहाकाव्य में “अङ्गुलीयक प्रदान” वृत्तान्त ‘सुन्दर काण्ड’ में है। रामायण सात काण्डों में विभक्त है।

सुन्दरकाण्ड के कुछ प्रसङ्ग निम्न हैं-

- (i) हनुमान का लङ्का प्रस्थान
(ii) लङ्का दहन
(iii) विभीषण से भेंट
(iv) सीता से भेंट
(v) अक्षय कुमार का वध

45. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति :

(a) वंशः	(b) सर्गः
(c) उत्सर्गः	(d) प्रतिसर्गः

Ans : (c) पञ्च पुराणों में उत्सर्ग का वर्णन नहीं है। पुराण का लक्षण इस प्रकार है -

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च।
वंशानुचितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।

46. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते?

(a) मत्स्यपुराणे	(b) शिवपुराणे
(c) विष्णु धर्मोत्तर पुराणे	(d) अग्निपुराणे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) – अग्निपुराण के सम्बन्ध में कहा गया है-
“आग्नेये हि पुराणेऽस्मिन् सर्वाः विद्याः प्रदर्शिताः।” अर्थात् पुराण के इस सङ्कलित ग्रन्थ में काव्यशास्त्र, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, कोशग्रन्थ, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, नाट्यशास्त्र, स्थापत्यकला आदि विषयों को समाविष्ट किया गया है।

विशेष-

- (i) अग्निपुराण में त्रिदेवों की उपासना का वर्णन है।
- (ii) इस पुराण के वक्ता अग्निदेव हैं।
- (iii) अग्निपुराण को भगवान् विष्णु का बाँया चरण कहा गया है।

47. बालिवधस्य वर्णनमस्ति रामायणस्य :

- (a) सुन्दरकाण्डे
- (b) किष्किन्धाकाण्डे
- (c) अरण्यकाण्डे
- (d) बालकाण्डे

Ans : (b) बालिवध का वर्णन रामायण के किष्किन्धाकाण्ड में प्राप्त होता है। किष्किन्धाकाण्ड में निम्न वर्णन प्राप्त होते हैं –

- (1) राम-सुग्रीव मित्रता, बालिवध का वर्णन
- (2) तारा विलाप।
- (3) सुग्रीव का राज्याभिषेक तथा अङ्गद को युवराज पद।
- (4) वर्षा ऋतु वर्णन।
- (5) शरद ऋतु वर्णन।
- (6) सुग्रीव-राम संवाद, सीता खोज के लिए बन्दरों का प्रस्थान।

48. अमात्यानां शौचाशौचज्ञानार्थं कौटिल्येन उपधासु या न निर्दिष्टा :

- (a) कामोपधा
- (b) अर्थोपधा
- (c) मोक्षोपधा
- (d) धर्मोपधा

Ans : (c) – आचार्य कौटिल्य ने अमात्यों की परीक्षा के लिए चार उपधाओं को बताये हैं –



लेकिन प्रश्नानुसार मोक्षोपधा का उल्लेख ‘कौटिल्य’ द्वारा नहीं किया गया।

49. ‘मन्त्रिपरिषद् द्वादशामात्यान्कुर्वीत’ इति कस्य मान्यता?

- (a) बार्हस्पत्यानाम्
- (b) कौटिल्यस्य
- (c) औशनसाम्
- (d) मानवानाम्

Ans : (d) – “मन्त्रिपरिषद् को 12 अमात्यों से युक्त करना चाहिए।” ऐसी मान्यता मानवानाम् के अनुसार है। कौटिल्य, औशनसाम्, मानवानाम् इत्यादि इस 12 अमात्यों का मन्त्रिपरिषद् में निर्माण कार्य से विरक्त हैं।

कौटिल्य ने ‘अर्थशास्त्र’ नामक ग्रन्थ लिखा है।

50. देवानां दिनं भवति :

- (a) कृष्णपक्षः
- (b) शुक्लपक्षः
- (c) उत्तरायणम्
- (d) दक्षिणायनम्

Ans : (c) – देवताओं के दिन को उत्तरायण के नाम से जाना जाता है। मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के 67 वें श्लोक में उल्लेख मिलता है कि उत्तरायण देवों का दिन तथा दक्षिणायण देवों की रात होती है। अर्थात् दिन और रात दोनों क्रमशः देवताओं के लिए उत्तरायण एवं दक्षिणायण कहलाते हैं।

51. अङ्गुलिमूले किं तीर्थं भवति?

- (a) ब्राह्मम्
- (b) कायम्
- (c) दैवम्
- (d) पित्र्यम्

Ans : (b) अङ्गुलिमूले कायं तीर्थं भवति। मनुस्मृति में मानव-धर्म-शास्त्र की चर्चा की गयी है। इसे ‘मनुसंहिता’ के नाम से भी जाना जाता है। इसमें निम्न बातें उल्लेखित हैं-

- (i) चारों वर्णों
- (ii) चारों आश्रमों
- (iii) सोलह संस्कारों
- (iv) सृष्टि उत्पत्ति
- (v) राज्य की व्यवस्था
- (vi) राजा के कर्तव्य
- (vii) भाँति-भाँति के विवाद
- (viii) सेना का प्रबन्ध

52. मनुना राजा स्वराष्ट्रे कीदृशोऽभिज्ञेतः?

- (a) भृशदण्डः
- (b) अजिह्नः
- (c) क्षमान्वितः
- (d) न्यायवृत्तः

Ans : (d) – मनुस्मृति के सप्तम् अध्याय में राजा को निर्देश है कि शास्त्रसम्मत रूप से वेदों से प्राप्त उपनयन संस्कार युक्त क्षत्रिय को न्यायोचित सभी प्रजागणों की रक्षा करनी चाहिए। - मनुस्मृति

53. श्रुतार्थस्योत्तरं कुत्र लेख्यम्?

- (a) नृपसन्निधौ
- (b) पूर्वावेदकसन्निधौ
- (c) सभासदसन्निधौ
- (d) ब्रह्मणसन्निधौ

Ans : (b) श्रुति अर्थ के उत्तर भाग को ‘पूर्वावेदकसन्निधौ’ के नाम से जाना जाता है। श्रुति में चार वेद आते हैं- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। हर वेद के चार भाग होते हैं- संहिता, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक और उपनिषद्।

54. अभियोगस्यापह्नवे कियद् धनं राज्ञे दद्यात्?

- (a) द्विगुणम्
- (b) त्रिगुणम्
- (c) चतुर्गुणम्
- (d) अभियोगसमम्

Ans : (d) – याज्ञवल्क्य के व्यवहाराध्याय के 11वें श्लोक में उल्लेख है कि वादी के द्वारा आरोपित किये जाने वाले ‘अभियोग’ को छिपाये जाने पर प्रतिवादी द्वारा उस वाद के मूल्य के समान धन राजा को दण्डस्वरूप दिया जाये।

55. ‘तवाभिधानाद्व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः’ - इत्यत्र नताननः कः ?

- (a) सुयोधनः
- (b) धर्मराजः
- (c) वनेचरः
- (d) भीमसेनः

Ans : (a) ‘तवाभिधानात् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः’ इस पंक्ति में नताननः का सम्बन्ध दुर्योधन (सुयोधन) से है। वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हे महाराज! आपके नाम के स्मरण मात्र से सुयोधन उसी प्रकार मुख नीचे कर लेता है जैसे - सर्प, गरुण पक्षी के पादन्यास को स्मरण करके अपना फण नीचे कर लेता है।

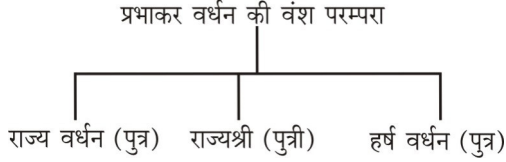
56. रुग्णः प्रभाकरवर्धनः उपचारहेताः कुत्र गतः?

- (a) उद्याने
- (b) वने
- (c) धवलगृहे
- (d) स्नानगृहे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) – रुग्णः प्रभाकरवर्धन उपचार के लिए धवलगृह में गया। प्रभाकरवर्धन के पुत्र का नाम हर्षवर्धन था। राज्यवर्धन, प्रभाकरवर्धन के बड़े भाई थे तथा राज्यश्री उसकी बड़ी बहन।



57. रत्नावलीनाटिकायाः प्रथमाङ्कस्य नाम किम्?

- (a) संकेतः (b) मदन-महोत्सवः
(c) कदलीगृहः (d) ऐन्द्रजालिकः

Ans : (b) – श्रीहर्ष विरचित रत्नावली नाटिका चार अंको में निबद्ध है। इसके प्रथम अंक का नाम 'मदन महोत्सव' है। दूसरे अंक का नाम 'कदलीगृह', तीसरे का नाम 'संकेत' तथा चौथे अंक का नाम 'ऐन्द्रजालिक' है।

58. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं	1. किरातार्जुनीयम्
हविर्भुजः	
(B) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
निन्दिष्यति ध्रुवम्	
(C) अहो	3. शिशुपालवधम्
दुरन्ता	बलवद्विरोधिता
(D) किमिव हि मधुराणां	4. रत्नावली
मण्डनं नाकृतीनाम्	

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	2	3	4	1
(b)	4	2	1	3
(c)	3	4	1	2
(d)	1	3	2	4

Ans : (c) – तालिका को क्रमानुसार इस प्रकार रखेंगे -

- (a) प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः - शिशुपालवधम्
(b) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम् - रत्नावली
(c) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता - किरातार्जुनीयम्
(d) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् - अभिज्ञानशाकुन्तलम्

59. 'अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति'-इति कस्य लक्षणम्?

- (a) मुखस्य (b) निर्वहणस्य
(c) बीजस्य (d) पताकायाः

Ans : (c) – नाट्य सन्धियों के निरूपण के लिए उनके घटक तत्वों में अर्थ प्रकृति का पूर्ण योगदान है। अर्थ प्रकृतियाँ पाँच हैं -

1. बीज, 2. बिन्दु, 3. पताका, 4. प्रकरी और 5. कार्य।

उनमें जो अल्पमात्र में कथन किया हुआ अनेक प्रकार से विस्तार को प्राप्त करता है, वह प्रधान फल का आदि कारण बीज कहलाता है।

60. "आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।" कोऽत्रालङ्कारः?

- (a) उपमा (b) दृष्टान्तः
(c) निदर्शना (d) अर्थान्तरन्यासः

Ans : (d) आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां.....। इस पंक्ति में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। जहाँ पर सामान्य का विशेष के द्वारा या विशेष का सामान्य के द्वारा समर्थन होता है। वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

61. फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यावस्थाः कति सन्ति?

- (a) षट् (b) पञ्च
(c) सप्त (d) दश

Ans : (b) – फल की इच्छा वाले पुरुषों के द्वारा आरम्भ किये हुए कार्य के पाँच अंक कहे गये हैं।- 1. आरम्भ, 2. यत्न, 3. प्राप्त्याशा, 4. नियताप्ति, 5. फलागम।

62. 'न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति' - इति कुत्र वर्तते?

- (a) वेणीसंहारे (b) रत्नावल्याम्
(c) मध्यमव्यायोगे (d) मुद्राराक्षसे

Ans : (d) 'न हि खलु सर्वः सर्वं जानाति' यह पंक्ति विशाखदत्त के मुद्राराक्षसम् नामक नाटक के प्रथम अङ्क की है। मुद्राराक्षस सात अङ्कों में विभक्त है। इसमें बताया गया है कि सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।

63. वासवदत्ताया कुसुमायुधस्य पूजा कुत्र संपादिता?

- (a) बकुलपादपतले
(b) रक्ताशोकपादपतले
(c) सहकारवृक्षतले
(d) दाडिमवृक्षतले

Ans : (b) – वासवदत्ता के द्वारा 'कुसुमायुध' की पूजा रक्ताशोक के नीचे सम्पादित की जाती है। वासवदत्ता के रचयिता सुबन्धु हैं, जबकि स्वप्नवासवदत्तम् महाकवि भास का प्रसिद्ध नाटक है। इसमें कुल छः अङ्क हैं।

64. वचो भारवेः

- (a) कदलीफलसम्मितम्
(b) द्राक्षाफलसम्मितम्
(c) दाडिमफलसम्मितम्
(d) नारिकेलफलसम्मितम्

Ans : (d) वचो भारवेः नारिकेलफलसम्मितम्, अर्थात् भारवि की वाणी नारिकेलफल के समान है। भारवि के अर्थ में गाम्भीर्यता है उसकी वाणी नारियल के फल के समान ऊपर से कठोर और अन्दर से सरल एवं रुचिकर है।

65. 'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च' -कस्य विषये आयाति?

- (a) रसस्वरूपविषये
(b) वस्तुस्वरूपविषये

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (c) ध्वनिविषये
(d) अलङ्कार विषये

Ans : (a) – आचार्य मम्मट ने रस स्वरूप के सम्बद्ध में लिखा है- लोक में रति आदि स्थायी भाव के जो कारण कार्य व सहकारी होते हैं वे रस निष्पत्ति कहलाते हैं।

66. अश्वघोषः कस्य धर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि अलिखत्?

- (a) जैनधर्मस्य (b) बौद्धधर्मस्य
(c) सिखधर्मस्य (d) ख्रिष्टधर्मस्य

Ans : (b) – अश्वघोष कनिष्क की राजसभा में राजकवि थे। संस्कृत के बौद्ध कवियों में अश्वघोष का स्थान सबसे ऊँचा है। अश्वघोष ने अपनी रचना ‘बुद्धचरितम्’ बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। गूढ दार्शनिक तत्त्वों को भी यत्र-तत्र काव्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।

67. विश्वनाथानुसारं शाब्दी व्यञ्जना कतिविधा?

- (a) चतुर्धा (b) द्विधा
(c) त्रिधा (d) पञ्चधा

Ans : (b) – आचार्य विश्वनाथ ने शाब्दी व्यञ्जना के दो भेद किये हैं -

“अभिधा मूला और लक्षणामूला। इनमें से जो शब्द की अभिधा शक्ति पर आश्रित होती है, वह अभिधामूला व्यञ्जना और जो शब्द की लक्षणा शक्ति पर आश्रित होती है, वह लक्षणामूला व्यञ्जना होती है।

68. ‘वत्से। सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीया संवृत्ता’ - कस्येयमुक्तिः?

- (a) दुष्यन्तस्य (b) गौतम्याः
(c) कण्वस्य (d) शकुन्तलायाः

Ans : (c) यह उक्ति महर्षि कण्व की है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में प्रियंवदा महर्षि कण्व के द्वारा शकुन्तला के विषय में कही गयी बात को अनसूया से बता रही है। हे पुत्रि! योग्य शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम अशोचनीया हो गई हो। आज ही ऋषियों से सुरक्षित तुझे पति के पास भेज रहा हूँ।

69. ‘रसो मुख्यतया अनुकार्ये रामादावेव भवति’ - इति कस्य मतम्?

- (a) भट्टलोल्लटस्य (b) शङ्कुकस्य
(c) भट्टनाथकस्य (d) अभिनवगुप्तस्य

Ans : (a) – उत्पत्तिवाद नामक रस सिद्धान्त के प्रतिपादक भट्टलोल्लट ने रस की स्थिति मुख्य रूप से अनुकार्य रामादि में और उनके स्वरूप का अनुकरण करने से गौण रूप से नट में मानी है।

70. ‘प्रमाणकरणं प्रमाणम्’ - इति कस्य लक्षणम्?

- (a) प्रमायाः (b) प्रत्यक्षस्य
(c) प्रमाणस्य (d) लक्षणस्य

Ans : (c) – केशव मिश्र की तर्क भाषा के अनुसार प्रमा के कारण को प्रमाण कहा गया है। ‘प्रमाणकरणम् प्रमाणम्’।

71. ‘गौरश्वः पुरुषो हस्तीति’ कस्माद् हेतोर्न प्रमाणम्?

- (a) पदत्वात्
(b) सन्निधेरभावात्
(c) परस्परकाङ्क्षाविरहात्
(d) योग्यताविरहात्

Ans : (c) – “गौरश्वः पुरुषो हस्तीति” इस उदाहरण में परस्पर आकाङ्क्षा का अभाव है। इसलिए ‘परस्परकाङ्क्षाविरहात्’ हेतु (कारण) से प्रमाण नहीं सिद्ध होता है। प्रमाण में तीन हेतुओं का होना आवश्यक होता है- योग्यता, आकाङ्क्षा, सन्निधि।

72. ‘पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्’ इत्यत्र दोषो वर्तते?

- (a) साध्याभाववद्वृत्तिः
(b) दृष्टान्तरहितत्वम्
(c) साध्याभावव्याप्तिः
(d) आश्रयासिद्धित्वम्

Ans : (a) – “पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्” यहाँ पर उदाहरण में ‘साध्याभाववद्वृत्तिः’ दोष है। क्योंकि यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र अग्निः, यह तो साहचर्य नियम है। यहाँ धूम और अग्नि में साध्य का अभाव नहीं वरन् साध्य की उपलब्धि नियत है। लेकिन “पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्” में तो सर्वथा साध्य का अभाव है। साध्य धूम है।

73. तर्कसङ्ग्रहदिशा परिमाणं कतिविधम्?

- (a) द्विविधम् (b) पञ्चविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) षड्विधम्

Ans : (c) – “तर्कसङ्ग्रहानुसारेण परिमाणं चतुर्विधम्” - अत्रंभट्टकृत तर्कसंग्रह में दिशा परिमाण को मुख्यतः चार भागों में बाँटा गया है। निम्न विभाग हैं -

(i) अणु (ii) महत् (iii) दीर्घम् (iv) ह्रस्वम्

74. पटं प्रति तुरीवेमादिकं कीदृशं कारणं भवति?

- (a) समवायिकारणम्
(b) असमवायिकारणम्
(c) स्वरूपकारणम्
(d) निमित्तकारणम्

Ans : (d) – समवायि और असमवायि कारण से भिन्न कारण निमित्त कारण होता है। जैसे-तन्तु संयोग से भिन्न होने वाली तुरीवेमा आदि पट के प्रति निमित्त कारण है।

75. ‘पृथिवी इतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात्’-अत्र साध्यः कः?

- (a) पृथिवी (b) गन्धवत्त्वम्
(c) इतरभेदः (d) गन्धत्वम्

Ans : (c) – “पृथ्वी इतरेभ्योभिद्यते गन्धवत्त्वात्” प्रस्तुत वाक्यांश में ‘इतर भेद’ मूलतः साध्य है। तर्कसङ्ग्रह में पृथ्वी का मूल लक्षण इस प्रकार दिया गया है-‘तत्र गन्धवती पृथ्वी’ सा द्विधा नित्या अनित्या च।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2013

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् परिमिताः (50) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. “स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव” अस्य मन्त्रस्य ऋषिर्वर्तते :

- (a) वसिष्ठः (b) मधुच्छन्दाः
(c) कण्वः (d) अङ्गिरा

Ans : (b) “स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव” इस मन्त्र के ऋषि मधुच्छन्दा हैं। मधुच्छन्दा अग्नि सूक्त के ऋषि हैं जबकि वसिष्ठ ऋषि उषस् सूक्त के तथा कण्व सोम सूक्त के ऋषि हैं। अङ्गिरा ऋषि एक तपस्वी तथा तेजस्वी ऋषि थे।

2. “वज्रहस्त” इति विशेषणं कस्य देवस्य?

- (a) उषसः (b) विष्णोः
(c) अग्नेः (d) इन्द्रस्य

Ans : (d) ‘वज्रहस्त’ का तात्पर्य है वज्र को हाथ में धारण करने वाला। वज्रहस्त में ‘बहुव्रीहि समास’ है। अर्थात् वज्र है हाथ में जिसके (इन्द्र)। अतः ‘वज्रहस्त’ इन्द्र का विशेषण है। इसके अतिरिक्त इन्द्र को वृत्रहा, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्रबाहु आदि विशेषणों से भी पुकारा जाता है।

3. “माध्यान्दिनशाखा” कस्य वेदस्य?

- (a) यजुर्वेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) कस्यापि न

Ans : (a) माध्यन्दिन शाखा शुक्लयजुर्वेद की शाखा है। माध्यन्दिन शाखा को काण्वशाखा भी कहते हैं। यजुर्वेद के दो विभाग हैं- (क) शुक्लयजुर्वेद (ख) कृष्णयजुर्वेद

4. आ वो वृणे सुमति यज्ञियानाम्” मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते?

- (a) पुरुरवा-उर्वशी सूक्तस्य (b) यमयमी-सूक्तस्य
(c) सरमा-पणि सूक्तस्य (d) विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य

Ans : (d) “आ वो वृणे सुमति यज्ञियानाम्” यह मन्त्र विश्वामित्र नदी सूक्त से अवतरित है। विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त के कुछ महत्वपूर्ण कारिकांश -

- (1) प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्चे इव विषिते हासमाने।
(2) इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे, अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
(3) रमध्वं मे वचसे सोम्याय, ऋतावरीरूप मुहूर्तमेवैः।
(4) अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
(5) उद्र ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।

5. “कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्” मन्त्रांशोऽयं वर्तते :

- (a) विश्वामित्र-नदी-सूक्ते (b) यम-यमी-सूक्ते
(c) पुरुरवा-उर्वशी-सूक्ते (d) सरमा-पणि-सूक्ते

Ans : (c) “कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्” यह मन्त्रांश पुरुरवा उर्वशी सूक्त से है। पुरुरवा उर्वशी, ऋग्वेद के दशम् मण्डल का 95वाँ सूक्त है जिसमें कुल 18 मन्त्र हैं। इस सूक्त के कुछ मन्त्रांश निम्न हैं-
(1) पुरुरवसि राजवर्षावप्सरास्तुवर्षी पुरा।
(2) अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः।

6. नक्षत्रसम्पातादिना वेदकालं कः प्रतिपादयति?

- (a) बालगङ्गाधरतिलकः (b) महर्षि दयानन्दः
(c) सायणः (d) मैक्समूलरः

Ans : (a) ‘नक्षत्रसम्पातादिना’ अर्थात् नक्षत्र के आधार पर वेदकाल का निर्धारण ‘बालगङ्गाधर तिलक’ ने किया था। वैदिक काल का निर्धारण क्रम ये है -

मैक्समूलर	- 1200-1000 ई.पू.
तिलक	- 4000-2500 ई.पू.
विण्टरनिट्ज	- 2500-1200 ई.पू.
वेबर	- 1500-1200 ई.पू. लगभग
जैकोबी	- 4500-2500 ई.पू.

7. गोपथ ब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (c) ‘गोपथ ब्राह्मण’ अथर्ववेद से सम्बन्धित है। ऋग्वेद के ब्राह्मण - ऐतरेय और शांखायन हैं। यजुर्वेद के ब्राह्मण ‘शतपथ ब्राह्मण’ (शुक्लयजुर्वेद) तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण (कृष्णयजुर्वेद) है। सामवेद का ब्राह्मण ‘वंश ब्राह्मण’ है।

8. ईशावास्योपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

- (a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) कृष्णयजुर्वेदेन (d) शुक्लयजुर्वेदेन

Ans : (d) ‘ईशोपनिषद्’ का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद से है। वाष्कलोपनिषद् ऋग्वेद से, कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से, केनोपनिषद् तथा छान्दोग्योपनिषद् सामवेद से तथा प्रश्न, माण्डूक्य और मुण्डक उपनिषदें अथर्ववेद से सम्बन्धित हैं।

9. माण्डूकी शिक्षा कस्य वेदस्य?

- (a) अथर्ववेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) 'माण्डूकीय शिक्षा' अथर्ववेद से सम्बन्धित है। 'शौनकीयप्रातिशाख्य' भी अथर्ववेद का शिक्षा ग्रन्थ है। सामवेद के शिक्षाग्रन्थ-नारदीय शिक्षा, ऋक्तन्त्रशिक्षा तथा पुष्यसूत्र प्रातिशाख्य है। इसी तरह वाजसनेयिप्रातिशाख्य शिक्षा ग्रन्थ यजुर्वेद (कृष्णयजुर्वेद) का है।

10. वेदाङ्गेषु श्रोत्रत्वेन उपमीयते :

- (a) ज्योतिषम् (b) छन्दःशास्त्रम्
(c) निरुक्तम् (d) शिक्षा

Ans : (c) वेदाङ्ग अर्थात् वेद के छः अङ्ग हैं— शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, और ज्योतिष। 'श्रोत' निरुक्त के अन्तर्गत परिगणित है। इसी तरह छन्दशास्त्र को पैर (छन्दः तु पादौ)। ज्योतिष को नेत्र तथा शिक्षा को घ्राण (शिक्षा तु घ्राणौ) बताया गया है।

11. अधोऽङ्कितानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत :

(a) प्रश्नोपनिषद्	1. निरुक्तम्
(b) पञ्चविंशब्राह्मणम्	2. अथर्ववेदः
(c) अथेदं भस्मान्तं शरीरम्	3. सामवेदः
(d) व्याप्तिमत्त्वात् शब्दस्य	4. ईशावास्योपनिषद्
(a)	(b)	(c)	(d)
(A) 4	1	2	3
(B) 1	3	4	2
(C) 2	3	4	1
(D) 3	4	1	2

Ans : (c) निम्नाङ्कित सन्दर्भों का सही मिलान इस प्रकार है—

(a) प्रश्नोपनिषद्	- अथर्ववेदः
(b) पञ्चविंशब्राह्मणम्	- सामवेदः
(c) अथेदं भस्मान्तं शरीरम्	- ईशावास्योपनिषद्
(d) व्याप्तिमत्त्वात् शब्दस्य	- निरुक्तम्

12. कल्पग्रन्थेषु गण्यते :

- (a) कात्यायन श्रौतसूत्रम् (b) उणादिसूत्रम्
(c) जैमिनीयसूत्रम् (d) सांख्यसूत्रम्

Ans : (a) कल्पग्रन्थों में कात्यायन श्रौतसूत्रों की गणना की जाती है। उणादिसूत्रों का कर्ता 'शाकटायन' को माना जाता है। जबकि स्व. प्राध्यापक का(0)बा(0)पाठक के अनुसार, उणादि सूत्रों के रचयिता शाकटायन नहीं बल्कि स्वयं "पाणिनि" ही थे। उणादि का प्रारम्भिक सूत्र — "कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूष्य उण्" है।

13. विकृतिपाठाः कियन्तः?

- (a) 9 (b) 10
(c) 6 (d) 8

Ans : (d) विकृति पाठ कुल आठ (8) हैं। इनको सहजता से याद रखने के लिए, छन्द में परिगणित किया गया है —
"जटामाला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
इत्यस्तौ-विकृतयः प्रोक्तः क्रमपूर्व महर्षिभिः॥

14. अनिर्वचनीयवाहिनः के?

- (a) वैशेषिकाः (b) पूर्वमीमांसकाः
(c) बौद्धाः (d) अद्वैतवेदान्तिनः

Ans : (d) अद्वैतवेदान्तियों को 'अनिर्वचनीयवाहिनः' कहा जाता है। अद्वैत विचारधारा के संस्थापक शङ्कराचार्य हैं। जिन्हें शाङ्कराद्वैत या केवलाद्वैत भी कहा जाता है। अद्वैतवेदान्त में कई विचारधारायें हैं जिसमें — द्वैत, अद्वैत (केवलाद्वैत), विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत जैसी कई सैद्धान्तिक विचारधाराएँ हैं।

15. केवलविकृतिरूपात्मकानि तत्त्वानि कति?

- (a) षोडश (b) नव
(c) पञ्च (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (a) केवल विकृतियाँ सोलह (16) हैं। सांख्यकारिका में पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चमहाभूत तथा मन को मिलाकर कुल सोलह विकृतियाँ हैं।

16. अव्यक्तं कीदृशं तत्त्वं निरूपितम् ?

- (a) चेतनम् (b) उदासीनम्
(c) जडम् (d) अभावरूपम्

Ans : (c) अव्यक्त को जड़त्व के रूप में बताया गया है। प्रकृति अव्यक्त तत्त्व है तथा पुरुष चेतन तत्त्व है। 'अव्यक्त' का शाब्दिक अर्थ है जो व्यक्त न हो अर्थात् अचेतन या जड़। 'अव्यक्त' पद में नञ् तत्पुरुष समास है — न व्यक्तः इति अव्यक्तः।

17. प्रत्ययसर्गः कतिविधिः?

- (a) पञ्चाशद्विधिः (b) नवविधिः
(c) शतविधिः (d) सप्तविधिः

Ans : (a) प्रत्ययसर्ग को 50 प्रकारों में बताया गया है। विपर्यय (5), अशक्ति (28), तुष्टि (9), सिद्धि (8), इन्हें मिलाकर प्रत्ययसर्ग के 50 भेद माने गये हैं।

18. शाण्डिल्यविद्याविषयः कुत्र निर्दिष्टः?

- (a) माण्डूक्योपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) बृहदारण्यके (d) कठोपनिषदि

Ans : (b) 'शाण्डिल्यविद्या' का वर्णन 'छान्दोग्योपनिषद्' में है। छान्दोग्योपनिषद् में आठ अध्याय हैं। "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" महावाक्य इसी उपनिषद् में मिलता है।

19. काम्यकर्माणि एवं विधानित निरूपितानि :

- (a) अकरणे पापसाधनानि
(b) निमित्तवशात् कृतानि
(c) पापविनाशसाधनानि
(d) फलोद्देश्येन विधीयमानानि

Ans : (d) वेदान्तसार में कर्म को छः प्रकार से बताया गया है — काम्यकर्म, निषिद्धकर्म, नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म, प्रायश्चित्तकर्म तथा उपासनाकर्म। इन कर्मों के अन्तर्गत निम्न विधान बताये गये हैं —

(1) काम्यकर्म	- स्वर्गादीष्टसाधनानि, ज्योतिष्टोमादीनि
(2) निषिद्धकर्म	- नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्रह्मननादीनि
(3) नित्यकर्म	- अकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि

20. वेदान्तसारानुसारम् अज्ञानं किंरूपं भवति?

- (a) भावरूपम् (b) अभावरूपम्
(c) शून्यरूपम् (d) निष्क्रियरूपम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान को 'भावरूप' में स्वीकार किया गया है। अर्थात् 'अज्ञानं तु भावरूपं'। वेदान्तसार में अज्ञान को इस प्रकार भी बताया गया है –

“अज्ञानं तु सदसद्भ्याम् अनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधिभावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् ।

21. निर्वातदीपवदचलं भवति

- (a) सविकल्पकसमाधिः (b) सगुणब्रह्मस्वरूपम्
(c) समष्टिजीवस्वरूपम् (d) निर्विकल्पकसमाधिः

Ans : (d) 'निर्विकल्पकसमाधि' निर्वातदीपवद् की भाँति गम्यमान रहती है। 'निर्विकल्पक' समाधि के बारे में वेदान्तसार कहता है—

निर्विकल्पकस्तु ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरतितरामेकाकी-भावेनावस्थानम् ।।

समाधि को दो प्रकार से बताया गया है –

- (1) सविकल्पकसमाधि (2) निर्विकल्पकसमाधि। सविकल्पक समाधि को इस प्रकार से बताया गया है—

“तत्र सविकल्पको नाम ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयानपेक्षयाद्वितीय वस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरवस्थानम् ।।”

22. गन्धं प्रति पृथिवी भवति :

- (a) समवायिकारणम् (b) असमवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) उपादानकारणम्

Ans : (a) 'गन्ध' के प्रति पृथिवी समवायिकारण है। तर्कभाषा के अनुसार कारण तीन प्रकार के हैं –

- (1) समवायी कारण (2) असमवायि कारण (3) निमित्त कारण न्याय उपादान कारण को नहीं मानते हैं जबकि वेदान्तवादी उपादान कारण की सत्ता स्वीकार करते हैं। कहीं-कहीं पर उपादान कारण को 'समवायि कारण भी कहते हैं। जैसे –तर्कसंग्रहकार आदि।

23. सपक्षस्योदाहरणं विद्यते :

- (a) महाह्रदः (b) पर्वतः
(c) महानसः (d) आकाशः

Ans : (c) सपक्ष का उदाहरण 'महानस' है। जैसे कि व्याप्ति है— “यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः” यथा— महानसः।

24. प्रागभावस्य लक्षणं भवति :

- (a) सादिरनन्तः (b) ऐकालिकसंसर्गाभावः
(c) अनादिः सान्तः (d) तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावः

Ans : (c) 'अनादि सान्तः प्रागभावः'। अभाव का अर्थ है किसी स्थान विशेष और काल विशेष में किसी वस्तु की अनुपस्थिति। अभाव चार प्रकार का होता है – (1) प्रागभाव (2) प्रध्वंसाभाव (3) अत्यन्ताभाव (4) अन्योन्याभाव।

25. अधोनिर्दिष्टानां समीचीनां तालिकां विचिनुत :

- (a) आप्तवाक्यम् 1. आप्तः
(b) अर्थाबाधः 2. सन्निधिः

- (c) पदानाम-विलम्बेनोच्चारणम् 3. शब्दः
(d) यथार्थवक्ता 4. योग्यता

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	1	2	3	4

Ans : (c) उपयुक्त तालिका का सही क्रम मिलासन है –

- (a) आप्तवाक्यम् शब्दः
(b) अर्थाबाधः योग्यता
(c) पदानाम-विलम्बेनोच्चारणम् सन्निधिः
(d) यथार्थवक्ता आप्तः

26. 'ग्रामणी + सु > स्' इत्यत्र अपृक्तसंज्ञा कस्य भवति?

- (a) 'सु' इत्यस्य (b) 'स्' इत्यस्य
(c) 'ग्रामणी' इत्यस्य (d) 'ग्रामणी + सु' इत्यस्य

Ans : (b) 'ग्रामणी + सु > स्' यहाँ पर स् की अपृक्तसंज्ञा होगी। 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' सूत्र के अनुसार एक अल् (स्वर/व्यञ्जन) मात्र शेष प्रत्यय को अपृक्त कहते हैं। जैसे – सु का स् ति का त् ।

27. अस्य शब्दस्य नदीसंज्ञा नासि :

- (a) नदी (b) साध्वी
(c) स्त्रीः (d) ग्रामणीः

Ans : (d) 'नदी संज्ञा' विधायक सूत्र- 'यू स्याख्यौ नदी' है। इस सूत्र के अनुसार 'नदी' 'साध्वी' एवं 'स्त्री' शब्द की नदी संज्ञा होगी। जबकि ग्रामणी शब्द की नदी संज्ञा नहीं होगी।

28. कारकप्रयोगदृष्ट्या वाक्यमिदम् शुद्धम् अस्ति।

- (a) भक्तः रोचते भक्तिः (b) देवदत्तम् श्लाघते
(c) वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः (d) वैकुण्ठे अध्यास्ते हरिः

Ans : (c) कारक की दृष्टि से “वैकुण्ठम् अध्यास्ते हरिः” वाक्य शुद्ध है। प्रस्तुत उदाहरण में— “अधिशीङ्स्थासां कर्म” सूत्र से कर्म संज्ञा करके कर्मणि द्वितीया सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर 'वैकुण्ठम्' बना।

29. 'पुष्पाणि स्पृहति।' इत्यत्र 'पुष्पाणि' इति पदम् अस्ति :

- (a) ईप्सिततमम् (b) ईप्सितम्
(c) अनीप्सितम् (d) अनीप्सिततमम्

Ans : (a) “पुष्पाणि स्पृहति” पद में 'पुष्पाणि' 'ईप्सिततमम्' है। 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म सूत्र से ईप्सित 'पुष्प' की कर्म संज्ञा हुयी तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होकर 'पुष्पाणि' बना।

30. परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ।- इति सूत्रेण अन्यतरस्याम् का संज्ञा भवति?

- (a) अपादानसंज्ञा (b) करणसंज्ञा
(c) कर्मसंज्ञा (d) अधिकरणसंज्ञा

Ans : (b) यहाँ पर 'परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्' सूत्र से 'अन्यतरस्याम्' पद की करण संज्ञा होगी। क्योंकि परिक्रमण में जो करण होता है वह विकल्प से सम्प्रदान होता है। जैसे – शतेन शताय वा परिक्रीतः।।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

31. उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिः बलीयसी' इत्यस्य उदाहरणम् अस्ति :

- (a) रामं नमामि (b) नमस्करोति देवान्
(c) गुरुणा सह शिष्यः गच्छति (d) यागाय याति

Ans : (b) “उपपदविभक्तेः कारक विभक्तिर्बलीयसी” सूत्र का तात्पर्य है- पद सम्बन्धी विभक्ति से क्रिया सम्बन्धी विभक्ति बलवती होती है। इस नियम के अनुसार ‘नमस्करोति देवान्’ में द्वितीया विभक्ति का विधान किया गया है। अतः ‘नमस्करोति देवान्’ उदाहरण ‘उपपदविभक्ते कारक विभक्तिर्बलीयसी’ का है।

32. ‘सुमद्रम्’ इत्यत्र ‘सु’ अव्ययस्यार्थः

- (a) समीपम् (b) शोभनम्
(c) समृद्धिः (d) युगपत्

Ans : (c) ‘सुमद्रम्’ पद में सु अव्यय है। जो ‘समृद्धिः’ के अर्थ का द्योतक है। सुमद्रम् का विग्रह पद होगा- ‘मद्राणां समृद्धिः’ (मद्र देश की समृद्धिः)।

33. तत्पुरुषे समासे कस्य पदार्थस्य प्रधानता भवति?

- (a) पूर्वपदार्थस्य (b) उत्तरपदार्थस्य
(c) अन्यपदार्थस्य (d) उभयपदार्थस्य

Ans : (b) तत्पुरुष समास में ‘उत्तर पद’ की प्रधानता होती है। तत्पुरुष समास की परिभाषा इस प्रकार है - “प्रायेण उत्तरपदप्रधानो तत्पुरुषः”। तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद हैं - (1) व्यधिकरण तत्पुरुष (2) समानाधिकरण तत्पुरुष। व्यधिकरण तत्पुरुष समास के मुख्यतः छः भेद हैं - (1) द्वितीया तत्पुरुष (2) तृतीया तत्पुरुष (3) चतुर्थी तत्पुरुष (4) पञ्चमी तत्पुरुष (5) षष्ठी तत्पुरुष (6) सप्तमी तत्पुरुष

34. ‘राजदन्तः’ अस्य लौकिक विग्रहवाक्यम् भवति :

- (a) राज्ञाम् दन्ताः (b) दन्तानाम् राजानः
(c) दन्तानाम् राजा (d) दन्त + आम् राजन् + जस्

Ans : (b) ‘राजदन्तः’ पद का लौकिक विग्रह होगा - ‘दन्तानां राजानः’। इस पद का अलौकिक विग्रह इस प्रकार होगा - ‘दन्त आम् राजन् सु’। इस पद में षष्ठी तत्पुरुष समास है।

35. कर्मधारयसंज्ञा भवति :

- (a) अव्ययीभावस्य
(b) समानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य
(c) असमानाधिकरणस्य तत्पुरुषस्य
(d) समानाधिकरणस्य बहुव्रीहेः

Ans : (b) ‘समानाधिकरण तत्पुरुष’ की कर्मधारय संज्ञा होती है। ‘समानाधिकरण तत्पुरुष समास’ में बताया गया है कि जिन पदों की दोनों विभक्तियाँ समान अधिकरण वाली हों वहीं पर समानाधिकरण तत्पुरुष समास होगा। इसे कर्मधारय समास भी कहा जाता है। जैसे- ‘कृष्णः सर्पः सर्पति’ इस वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ-साथ उसकी विशेषता भी बताई गयी है।

36. भाषाविज्ञानदृशा अर्धस्वरो भवति :

- (a) अ (b) य्
(c) ई (d) अः

Ans : (b) ‘भाषाविज्ञान’ की दृष्टि से ‘य्’ अर्धस्वर माना गया है। इसी प्रकार ‘व्’ को भी भाषा विज्ञान में अर्धस्वर माना गया है। भाषा विज्ञान में स्वर के निम्न भेद बताये गये हैं - (1) संवृत (2) अर्द्ध संवृत (3) अर्द्ध विवृत (4) विवृत।

37. आर्यभाषापरिवारस्य भाषा न मन्यन्ते :

- (a) प्राकृतम् (b) पालि
(c) संस्कृतम् (d) तमिल

Ans : (d) ‘तमिल’ को आर्य भाषा परिवार नहीं माना गया है। आर्य भाषा परिवार में पालि, मध्यकालीन प्राकृत अपभ्रंश आदि को रखा गया है। पालि का समय (500 ई.पू. से ई. प्रारंभ तक = 500 वर्ष)। इसी प्रकार मध्यकालीन प्राकृत का समय (1 ई. से 500 ई. तक = 500वर्ष)। अपभ्रंश का समय (500 ई. से 1000 ई. तक = 500 वर्ष)।

38. अधस्तनेषु एकाङ्कि रूपकमस्ति :

- (a) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (b) चारुदत्तम्
(c) कर्णभारम् (d) अविमारकम्

Ans : (c) कर्णभारम् (भासकृत) एक एकाङ्की रूपक है यह एक अङ्क का व्यायोग है। इसमें देवराज इन्द्र सेनापति कर्ण के पास ब्राह्मण के रूप में जाते हैं और उससे भिक्षा के रूप में सूर्य द्वारा प्रदत्त कवच तथा कुण्डल माँग लेते हैं। कानों के भारभूत कुण्डलों का दान बताकर यहाँ कर्ण को दानशीलता का वर्णन किया गया है।

39. ‘श्रुतेरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्’ -इत्यस्ति :

- (a) रामायणे (b) महाभारते
(c) रघुवंशे (d) वेणीसंहारे

Ans : (c) महाकवि कालिदास विरचित ‘रघुवंशम्’ महाकाव्य है। इस महाकाव्य में राजा दिलीप और उसकी पत्नी सुदक्षिणा को चित्रित एवं परिकल्पित किया गया है। प्रस्तुत सूक्ति - ‘श्रुतेरिवार्थ स्मृतिरन्वगच्छत्’ का वर्णन ‘रघुवंशम्’ महाकाव्य में है।

40. शाल्मलीवृक्षवर्णन कस्मिन् काव्ये दृश्यते?

- (a) नलचम्पूः (b) कादम्बरी
(c) हर्षचरितम् (d) वादवदत्ता

Ans : (b) शाल्मलीवृक्ष का वर्णन कादम्बरी नामक कथा काव्य में मिलता है। कादम्बरी एक कथा है जिसमें राजा शूद्रक सहित अन्य पात्रों की तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।

41. संस्कृतवाङ्मये करुणरसस्य वर्णने कः विशिष्यते?

- (a) कालिदासः (b) बाणभट्टः
(c) अश्वघोषः (d) भवभूतिः

Ans : (d) संस्कृत वाङ्मय में करुण रस का प्रयोग ‘भवभूति’ ने किया। इन्होंने ‘उत्तररामचरितम्’ नामक सात अङ्कों का नाटक लिखा। ‘भवभूति’ के बारे में यह उक्ति दृष्ट्य है -

“एको रसः करुण एव निमित्त भेदात्”। अर्थात् करुण ही एकमात्र रस है बाकी सम्पूर्ण रस निमित्त भेद से करुण रस में ही समाहित हो जाते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

42. बृहत्त्रय्यामस्य ग्रन्थस्य गणना न भवति :

- (a) किरातार्जुनीयस्य (b) शिशुपालवधस्य
(c) कुमारसम्भवस्य (d) नैषधीयचरितस्य

Ans : (c) संस्कृत साहित्य ग्रन्थों में बृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी ये दो विभाग बताये गये हैं जो निम्न है -

बृहत्त्रयी ग्रन्थ

- (1) किरातार्जुनीयम्
(2) शिशुपालवधम्
(3) नैषधीयचरितम्

लघुत्रयी ग्रन्थ

- (1) कुमारसम्भवम्
(2) मेघदूतम्
(3) रघुवंशम्

43. अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते-इति केन कविनोक्तम् ?

- (a) कालिदासेन (b) भारविणा
(c) श्रीहर्षेण (d) बाणभट्टेन

Ans : (d) महाकवि बाणभट्ट ने 'कादम्बरी' में कहा है - 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते'। अर्थात् बिना कारण ही वैर रखने वाले दुष्टों से किसे भय नहीं होता है अर्थात् सबको होता है। यह पद्य कादम्बरी मुखम् के दुर्जन निन्दा का है।

44. "अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा घृणा क्व तच्छयच्छायलवोऽपि पल्लवे।" अस्मिन् पद्यांशे कस्य सौन्दर्य वर्णितम् ?

- (a) दमयन्त्याः (b) नलस्य
(c) रामस्य (d) सीतायाः

Ans : (b) "अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा क्व तच्छयच्छायलवोऽपि पल्लवे।" यह पद्यांश 'नल' के सौन्दर्य पर वर्णित है। प्रस्तुत पद्यांश 'श्रीहर्ष' विरचित "नैषधीयचरितम्" से उद्धृत है। यह महाकाव्य है, जो बृहत्त्रयी में परिगणित है। यह 22 सर्गों का शृङ्गार प्रधान महाकाव्य है।

45. अधस्तनयुग्मानां समीचीनं तालिकां चिन्तु :

- (a) हर्षः 1. मुद्राराक्षसम्
(b) भवभूतिः 2. स्वप्नवासवदत्तम्
(c) विशाखदत्त 3. उत्तररामचरितम्
(d) भासः 4. रत्नावली
- | | | | |
|-------|-----|-----|-----|
| (a) | (b) | (c) | (d) |
| (A) 3 | 2 | 4 | 1 |
| (B) 4 | 3 | 1 | 2 |
| (C) 2 | 1 | 3 | 4 |
| (D) 1 | 4 | 2 | 3 |

Ans : (b) तालिका का सही क्रम मिलान इस प्रकार होगा -

- (a) हर्षः - रत्नावली
(b) भवभूतिः - उत्तररामचरितम्
(c) विशाखदत्तः - मुद्राराक्षसम्
(d) भासः - स्वप्नवासवदत्तम्

46. मम्मटस्य व्यङ्ग्यमूलाव्यञ्जनायाः उदाहरणं वर्तते :

- (a) निःशेषच्युतचन्दनम्
(b) पश्य निश्चलनिष्पन्दा
(c) ग्रामतरुणम् तरुण्या
(d) माता गृहोपकरणम् अस्ति

Ans : (b) 'मम्मट' ने व्यङ्ग्यमूलाव्यञ्जना का उदाहरण - पश्य निश्चलनिष्पन्दा दिया है।

'पश्य निश्चलनिष्पन्दा विसिनीपत्रे राजते बलाका।
निर्मलमरकतभाजनपरिस्थिता शङ्खशुक्तिरिव।'

47. रसः इति कः पदार्थः ?

- (a) आस्वाद्यमानः (b) श्रवणपेयः
(c) भोज्यमानः (d) दृश्यमानः

Ans : (a) 'रसः इति आस्वाद्यमानः' रस को आस्वादन किया जाता है। 'रस्यते इति रसः'। आचार्य भरतमुनि को रसाचार्य कहा जाता है। आचार्य भरतमुनि का 'रस' युक्त ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' अति प्रसिद्ध है।

48. नाट्यशास्त्रानुसारं कति स्थायिभावाः ?

- (a) नव (b) अष्टौ
(c) दश (d) सप्त

Ans : (b) नाट्यशास्त्र के अनुसार आठ स्थायिभाव हैं। आठ स्थायिभाव इस प्रकार हैं -

शृङ्गार रस का स्थायिभाव - रति, हास्य रस का स्थायिभाव हास, करुण रस का स्थायिभाव शोक, वीर रस का स्थायिभाव उत्साह, रौद्र रस का स्थायिभाव क्रोध, वीभत्स रस का स्थायिभाव- भयानक, जुगुप्सा रस का स्थायिभाव- घृणा, अद्भुत रस का स्थायिभाव -विस्मय।

49. संग्रहकारिका-निरुक्तानां वर्णनं नाट्यशास्त्रस्य कस्मिन्नध्याये वर्तते?

- (a) द्वितीये (b) तृतीये
(c) चतुर्थे (d) न कोऽपि एतेषु

Ans : (d) दिये गये विकल्प द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ इन सभी में संग्रहकारिका - निरुक्त का वर्णन नाट्यशास्त्र में नहीं है।

50. 'प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं' चेत् तदा कोऽलङ्कारः?

- (a) उपमा (b) भ्रान्तिमान्
(c) श्लेषः (d) अपहृतिः

Ans : (d) 'प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं' चेत्। इस वाक्यांश में अपहृति अलङ्कार है। अपहृति का लक्षण इस प्रकार है -

"उपमेयमसत्यं कृत्वा उपमानं सत्यतया
यत्स्थाप्यते सा तु अपहृतिः।।"

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2013

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

निर्देश : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं।

प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सूचना : अत्र प्रश्नपत्रे पञ्चसप्ततिः (75) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयम् वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते :

- (a) अग्निसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) नासदीयसूक्ते (d) पृथिवीसूक्ते

Ans : (c) – वैदिक साहित्य को सुविधा की दृष्टि से चार भागों में विभाजित किया गया है।

1. वेदों की संहिताएँ 2. ब्राह्मण ग्रन्थ
3. आरण्यक ग्रन्थ 4. उपनिषद्।

संहिता भागों में मंत्रों का शुद्ध रूप रहता है। जो देव स्तुति एवं विभिन्न यज्ञों के समय पढ़ा जाता है। संहिताओं को संग्रह भी कहा जाता है। इन संहिताओं के अन्तर्गत अनेक सूक्त हैं जिनमें अग्नि सूक्त, इन्द्र सूक्त, पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, नासदीय सूक्त, वाक् सूक्त, पृथ्वी सूक्त आदि प्रमुख हैं।

नासदीय सूक्त एक महत्वपूर्ण दार्शनिक सूक्त है। जो मूलतः सृष्टि की उत्पत्ति की कथा का निदर्शन करता है। इसलिए विद्वत् समुदाय में इस सूक्त को सृष्टि-उत्पत्ति सूक्त, के नाम से भी जाना जाता है। इसमें सात मंत्र हैं जो त्रिष्टुप् छन्द में आबद्ध हैं। इसके ऋषि प्रजापति परमेष्ठी हैं।

2. “सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः अस्य मन्त्रस्य ऋषिरस्ति :

- (a) नारायणः (b) कण्वः
(c) मेधातिथिः (d) अंगिराः

Ans : (a) – यह पुरुष सूक्त का पन्द्रहवाँ मंत्र है। इसके ऋषि नारायण हैं। अतएव सम्पूर्ण सूक्त का प्रयोग वैष्णव जन भगवान नारायण के षोडशोपचार अर्चन में करते हैं।

जब देवताओं ने मानस यज्ञ रूप का सम्पादन करते हुए विराट् पुरुष रूपी पशु को बांधा तो इस यज्ञ की सात परिधियाँ और इक्कीस समिधाएँ बनाई गई।

3. हिरण्यगर्भ सूक्तस्य किं छन्दः?

- (a) आर्षी निचृद् (b) आसुरी गायत्री
(c) त्रिष्टुप् (d) पङ्क्तिः

Ans : (c) – ऋग्वेद के दशम मण्डल में हिरण्यगर्भ सूक्त का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रमुख दार्शनिक सूक्तों में से इस हिरण्यगर्भ सूक्त में दस मंत्र हैं जो त्रिष्टुप् छन्द में निबद्ध हैं। इसके प्रत्येक पद में ग्यारह वर्ण होते हैं।

4. अग्निमीले इत्यत्र “अग्निम्” पदस्य स्वरो भवति :

- (a) उदात्त (b) स्वरित
(c) अनुदात्त (d) कण्ठ

Ans : (b) – जिन वर्णों (अक्षरों) के नीचे पड़ी रेखाएँ हैं, वे अनुदात्त हैं, तथा जिनके ऊपर खड़ी रेखाएँ हैं, वे स्वरित हैं। उदात्त एवं प्रचय के लिए कोई अंकन नहीं है। यहाँ अग्निम् के ऊपर खड़ी रेखा होने से स्वरित स्वर है।

5. “संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्” मन्त्रांशोऽयं वर्तते :

- (a) वाक्सूक्ते (b) हिरण्यगर्भसूक्ते
(c) पृथिवीसूक्ते (d) पुरुषसूक्ते

Ans : (c) – पृथ्वीसूक्त अथर्ववेद के शौनक संहिता के बारहवें काण्ड का प्रथम सूक्त है। प्रस्तुत मन्त्र पृथ्वी सूक्त का 63वाँ मन्त्र है। इस मंत्र के माध्यम से मङ्गलमय प्रतिष्ठा में रखने तथा लक्ष्मी और विभूति में स्थित रखते हुए स्वर्ग-प्राप्ति की कामना की गयी है। इस सूक्त का देवता पृथ्वी और ऋषि अथर्वा है।

6. दर्शपूर्णमासयज्ञे “दर्श” - शब्दस्य अर्थोऽस्ति :

- (a) पयस्या (b) दर्विः
(c) शूर्पम् (d) अमावस्या

Ans : (d) – ‘दर्श’ अमावस्या में करने योग्य तीन यागों का समूह कहलाता है। गृह्य सूत्रकारों ने गृह्य या पाक यज्ञों के सात प्रकार माने हैं। उनमें से पार्वण यज्ञ पूर्णिमा और अमावस्या को सम्पन्न किया है। इसलिए अमावस्या में सम्पन्न किये जाने वाले यागों के समूह को ‘दर्श’ तथा पूर्णिमा को सम्पन्न किये जाने वाले यागों के समूह को ‘पूर्णमास’ कहा गया है।

7. वेदमन्त्राणां त्रिविधा प्राचीनतमा व्याख्या भवति :

- (a) याज्ञिक-वैज्ञानिक-आधिदैविकरूपेण
(b) आध्यात्मिक-आधिभौतिक-आधिदैविकरूपेण
(c) याज्ञिक-ऐतिहासिक-आधिदैविकरूपेण
(d) आध्यात्मिक-याज्ञिक-भाषावैज्ञानिकरूपेण

Ans : (b) – तदनुसार वेद मंत्रों की आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक रूप से व्याख्या की गयी है। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आने वाले ब्राह्मणों आरण्यकों व उपनिषदों के रूप में वेदों के मंत्रों की व्याख्या सम्पन्न की गई।

8. अधोऽङ्कितानां समीचीनमुत्तरं चिनुत :

- (A) ये के च भ्रातरः स्थ 1. शतपथ-ब्राह्मणम्
नास्मै ज्येष्ठाय
कल्पध्वमिति।
(B) श्रेयसो वै पापीयान् कृता- 2. ऋग्वेदः
नुकरः वर्त्मा भवति
(C) यो वा दिवं सत्यधर्मा 3. अथर्ववेदः
जजान
(D) ये संग्रामाः समितयस्तेषु 4. ऐतरेय ब्राह्मणम्
चारुवदेम

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	2	1	3
(b)	3	4	2	1
(c)	3	2	1	4
(d)	4	1	2	3

Ans : (d) (a) ये के च भ्रातरः स्थ का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है, (b) श्रेयसो वै पापीयान् का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में, (c) यो वा दिवं का उल्लेख ऋग्वेद में तथा (d) ये संग्रामाः समितयस्तेषु ... का उल्लेख अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में मिलता है।

9. योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि-इत्यस्य कुत्रोपदेशः?

- (a) ईशावास्योपनिषद् (b) तैत्तिरीयोपनिषद्
(c) केनोपनिषद् (d) श्रीमद्भागवते

Ans : (a) इस उपदेश का उल्लेख ईशावास्योपनिषद् के सोलहवें मंत्र में मिलता है। भारतीय वाङ्मय में उपनिषदों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सभी दार्शनिक एवं धार्मिक सम्प्रदायों की जन्म-भूमि ये उपनिषद् ही हैं। उपनिषदों की प्रमाणिक संख्या ग्यारह मानी गई हैं। ईशावास्योपनिषद् सर्वाधिक लघुकाय यजुर्वेद का 40वाँ अध्याय है। इस उपनिषद् में कर्म, ज्ञान समुच्चयवाद का बीज पाया जाता है।

10. 'अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति'-कुत्रेयमुक्तिः?

- (a) ईशोपनिषद् (b) केनोपनिषद्
(c) भगवद्गीतायाम् (d) कठोपनिषद्

Ans : (b) यह उक्ति केनोपनिषद् में मिलती है। केनोपनिषद् सामवेद की तवलकार शाखा से सम्बद्ध है। इसे ब्रह्मणोपनिषद् भी कहते हैं। केनोपनिषद् में ब्रह्म का निरूपण विस्तार पूर्वक किया गया है।

- केनोपनिषद् के प्रथम खण्ड के द्वितीय मंत्र में शिष्य के पूछने पर गुरु ने कहा कि धीर पुरुष इस लोक में जाते हुए जीवन्मुक्त होते हैं और अमर हो जाते हैं।

11. 'यतो वाचो निर्वर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह'-कुत्रेयमुक्तिः?

- (a) कठोपनिषद् (b) केनोपनिषद्
(c) तैत्तिरीयोपनिषद् (d) बृहदारण्यकोपनिषद्

Ans : (c) - यह उक्ति तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्द बल्ली के चतुर्थ अनुवाक में मिलती है।

कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयाख्यक के प्रपाठक 7, 8 और 9 का नाम तैत्तिरीयोपनिषद् है। अष्टम् प्रपाठक इस उपनिषद् की ब्रह्मानन्द बल्ली ही वारुणी उपनिषद् कहलाती है।

12. 'अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः'-इयमुक्तिः कुत्रास्ति?

- (a) बृहदारण्यकोपनिषद् (b) ईशावास्योपनिषद्
(c) तैत्तिरीयोपनिषद् (d) कठोपनिषद्

Ans : (d) - कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा का एक भाग है। इसमें कुल दो अध्याय और प्रत्येक अध्याय में 3-3 बल्लियाँ हैं।

13. 'येनाहं नामृता स्याम किमहं तेन कुर्याम्'-कथेदमुच्यते?

- (a) मैत्रेय्या (b) कात्यायन्या
(c) गायत्र्या (d) उमया

Ans : (a) - मैत्रेयी का यह कथन है- "येनाहं नामृता स्याम किमहं तेन कुर्याम्।"

याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थी-

- (i) कात्यायनी - भरद्वाज ऋषि की पुत्री
(ii) मैत्रेयी - मित्र ऋषि की पुत्री

'बृहदारण्यक' में याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद मिलता है। मैत्रेयी को याज्ञवल्क्य आत्मा को पहचानने का मार्ग प्रसस्त करते हैं। वे कहते हैं - "शरीर नश्वर है, पर आत्मा अजर-अमर है।"

14. 'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः'-इति कुत्रोक्तम्?

- (a) कठोपनिषद् (b) तैत्तिरीयोपनिषद्
(c) बृहदारण्यकोपनिषद् (d) केनोपनिषद्

Ans : (c) - "आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः," यह पंक्ति मुख्य रूप से बृहदारण्यकोपनिषद् से उद्धृत है। यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद् है। इस उपनिषद् का मुख्य विषय-ज्ञान योग, द्वैत अद्वैत सिद्धान्त है। यह शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ का एक खण्ड भी है।

15. अधस्तनानां समीचीनमुत्तरं चिनुत :

(A) माध्यन्दिन शाखा	1. बृहदारण्यकोपनिषद्
(B) शतपथ ब्राह्मणम्	2. मैत्रेयी
(C) वाजश्रवा	3. ईशावास्योपनिषद्
(D) याज्ञवल्क्यः	4. नचिकेता

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	4	2	3
(b)	3	4	2	1
(c)	3	1	4	2
(d)	2	1	3	4

Ans : (c) - शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा का 40वाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् है। शुक्लयजुर्वेद का शतपथ ब्राह्मण तथा बृहदारण्यकोपनिषद् है। कठोपनिषद् में वाजश्रवा और नचिकेता का संवाद है। बृहदारण्यकोपनिषद् में तत्त्वज्ञानी याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी का संवाद उल्लिखित है।

16. उष्णिक् छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

- (a) 27 (b) 28
(c) 32 (d) 29

Ans : (b) - वैदिक छन्दों के अनेक भेद हैं। उनमें से गायत्री उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती शक्वरी, आदि प्रमुख छन्द हैं। वैदिक छन्द अक्षर प्रधान होते हैं। उष्णिक् छन्द में 28 अक्षर होते हैं।

17. चातुर्मास्ययागे वर्तते :

- (a) शुनासीरीयम् (b) अग्निहोत्रम्
(c) आग्रयणम् (d) सौत्रामणी

Ans : (b) - चातुर्मास याग 'अग्निहोत्र' में प्रवर्तित/सम्पादित होता है। अग्निहोत्र एक वैदिक यज्ञ है जिसका वर्णन यजुर्वेद में मिलता है। इसको नित्य वैदिक यज्ञ भी कहते हैं। अग्निष्टोम आदि सोमयाग में तो 16 ऋत्विज् होते हैं।

18. याज्ञवल्क्यशिक्षा सम्बद्धा वर्तते :

- (a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) शुक्लयजुर्वेदेन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) – 'याज्ञवल्क्य शिक्षा' यजुर्वेदीय शिक्षा ग्रन्थों के अन्तर्गत प्राप्त होती है। शिक्षा एक स्वतंत्र शास्त्र है जिस प्रकार वैदिक मंत्रों की विधियों को सिद्ध करने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थों की उपयोगिता है, उसी प्रकार वेद और वैदिक साहित्य की अध्ययन अध्यापन सम्बन्धी उच्चारण विधियाँ शिक्षा शास्त्र में वर्णित हैं।

19. ऋग्वेदीयप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञः कः?

- (a) स्पर्शः (b) अनुनासिकः
(c) संयोगः (d) विसर्गः

Ans : (b) – ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार अनुनासिक वर्णों की रक्त संज्ञा होती है। अनुनासिक वर्णों का उच्चारण "नासिका" से होता है। ये वर्ण हैं- ज्, म्, ङ्, ण्, न्, म्।
स्पर्श व्यञ्जन- कु, चु, टु, तु, पु हैं।
संयोग - हलोऽनन्तरा संयोगः।

20. अन्तरिक्षस्थानी देवता अस्ति :

- (a) अश्विनौ (b) अग्निः
(c) इन्द्रः (d) सूर्यः

Ans : (c) – इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता है। इन्द्र की स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है।

21. समुचितम् सम्बन्धम् प्रस्थापयत :

(A) सत्त्व प्रधानानि	1. निघण्टवः
(B) निगमा इमे भवन्ति	2. तद्यथा-पाचकः पक्तिः।
(C) संविज्ञातानि तानि	3. नामानि।
(D) तद्यत्र उभे	4. भावप्रधाने भवतः।

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	1	2	4	3
(b)	2	1	3	4
(c)	3	1	2	4
(d)	4	3	2	1

Ans : (c) – उक्ति कथन एवं शास्त्र सम्बन्ध सारणी क्रम हैं-

- (i) सत्त्व प्रधानानि - नामानि।
(ii) निगमा इमे भवन्ति - निघण्टवः।
(iii) संविज्ञातानि तानि - तद्यथा-पाचकः पक्तिः।
(iv) तद्यत्र उभे - भावप्रधाने भवतः।

22. 'आचार्यश्चिद् इदम् ब्रूयात्'-इत्यत्र चित् निपातस्य अर्थः कः?

- (a) पदपूरणः (b) उपमा
(c) पूजा (d) धनम्

Ans : (c) – यहाँ 'चित्' निपात पूजा अर्थ का द्योतक है। वैसे चित् निपात का प्रयोग पूजा या आदर अर्थ में निन्दा अर्थ में तथा उपमा अर्थ में होता है। जैसे आचार्यश्चिद् इदं ब्रूयात्-केवल आचार्य ही इस अभिप्राय को बता सकते हैं। यहाँ चित् का प्रयोग आदर अर्थ में हुआ है।

23. 'हस्तः' इत्यत्र कः धातुः स्वीकृतः यास्केन?

- (a) टन् (b) हन्
(c) हस् (d) हस्

Ans : (b) – 'हस्तः' इस पद में यास्क (निरुक्तकार) के मतानुसार 'हन्' धातु का प्रयोग विहित है। हन् धातु 'मारने' के अर्थ का द्योतक है।

24. स्थूला चासौ पृषती च = स्थूलपृषती। - इति विग्रहे कीदृशी स्वरव्यवस्था प्रवर्तते?

- (a) पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(b) उत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्
(c) समासान्तानुदात्तत्वम्
(d) समासान्तोदात्तत्वम्

Ans : (d) – स्थूला चासौ पृषती = स्थूलपृषती। इस विग्रह पद में 'समासान्तोदात्तत्वम्' नियम परिग्रहीत है। क्योंकि 'स्थूलपृषती' में समास का विधान कार्य विहित है। व्याकरण के सामान्य नियमानुसार यहाँ पर समास च के अर्थ से द्वन्द्व होना चाहिए लेकिन उदात्त, अनुदात्त और स्वरित से यहाँ पर विशेष कार्य 'उदात्तत्त्व' विहित है।

25. अथ गौरित्यत्र कः शब्दः?

- (a) सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर-विषाण्यर्थरूपम् स शब्दः।
(b) इङ्गितम् चेष्टितम् निमिषितम् स शब्दः।
(c) भिन्नेष्वभिन्नम् छिन्नेष्वछिन्नम् सामान्य भूतम् स शब्दः।
(d) येनोच्चारितेन सास्ना-लाङ्गूल-ककुद-खुर-विषाणिनाम् सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः।

Ans : (d) – शब्द वह है जिसके उच्चारण से सास्ना आदि से युक्त वस्तु का ज्ञान होता है। भाष्कर ने स्वयं शब्द के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है - येनोच्चारितेन साह्यं संप्रत्ययो भवति सः शब्दः अर्थात् जिन उच्चरित ध्वनियों की अभिव्यक्ति से गलकम्बल पूँछ, ककुद (डील या तिल), खुर तथा सींगयुक्त पशु-व्यक्ति का ज्ञान होता है, वही शब्द कहलाता है।

26. 'भू + लिट् > ल् > तिप् > ण्वुल् > अ = भू + अ'-इति स्थिते किम् कार्यम् भवति?

- (a) इको यणचि-इति यणादेशः
(b) लिटि धातोरनभ्यासस्य-इति द्विवत्
(c) भुवो वुग्लुङ्लिटोः-इति वुगागमः
(d) सार्वधातुकार्धधातुकयोः-इति गुणः

Ans : (c) – 'भू + लिट् > ल् > तिप् > ण्वुल् > अ = भू + अ'-इति स्थिते 'भुवो वुग्लुङ्लिटोः-इति वुगागमः' कार्यम् भवति।

27. 'स्नात्यनेन स्नानीयम् चूर्णम्।' इत्यत्र स्ना धातोः विधीयमानः अनीय-प्रत्ययः कस्मिन् अर्थे वर्तते?

- (a) कर्तरि (b) कर्मणि
(c) भावे (d) करणे

Ans : (d) – प्रस्तुत वाक्य 'स्नात्यनेन स्नानीयम् चूर्णम्' में 'स्नानीयम्' पद $\sqrt{\text{स्ना}}$ धातु + अनीय् प्रत्यय से बनता है। यहाँ पर अनीय् प्रत्यय का विधान करण अर्थ में हुआ है।

28. चतुरश्रयतावाद्यक्षरलोपश्च। (वा-3158)-इत्यस्य किमुदाहरणम्?

- (a) चतुर्थः (b) चतुरः
(c) तुरीयः (d) तृतीयः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) – “चतुरश्रयतावाद्यक्षरलोपश्च” प्रस्तुत वार्तिक ‘तुरीय’ का उदाहरण है। तुरीय का शाब्दिक अर्थ चौथा है। इसका प्रथम प्रयोग ‘माण्डूक्य कारिका’ में ‘गौडापादाचार्य’ (7वीं सदी) ने किया है। तुरीय का उल्लेख गीता, भागवत में भी शङ्कराचार्य द्वारा किया गया है।

विशेष- आत्मा के चार पाद हैं- जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।

29. पच् + शप् > अ + शत् > अत् = पचत्-इत्यत्र स्त्रियाम् केन सूत्रेण कः प्रत्ययः भवति?

- (a) उगितश्च-इति डीप् (b) उगितश्च-इति डीष्
(c) अजाद्यतष्टाप्-इति टाप् (d) ऋन्नेभ्यो डीप्-इति डीप्

Ans : (a) – जिनमें उक् प्रत्याहार (उ, ऋ, लृ) का लोप हुआ है ऐसे प्रत्ययों के योग से बने हुये शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए डीप् प्रत्यय जुड़ता है। उगितश्च नियम के अन्तर्गत उन सभी शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिये डीप् प्रत्यय जोड़ा जा सकता है। जिनमें मतुप्, क्तवत्, ईयसुन् अथवा शत् प्रत्यय जुड़ा हो क्योंकि इन प्रत्ययों में ‘उ’ या ऋ लुप्त होता है।

30. पाणिनीय शिक्षानुसारम् वर्णानाम् उच्चारण-स्थानानि कति सन्ति?

- (a) एकादश (b) दश
(c) अष्टौ (d) द्वादश

Ans : (c) – वर्णों के उच्चारण में शरीर के आठ अवयवों की मुख्य भूमिका रहती है। इन्हीं को वर्णों के उच्चारण स्थान कहते हैं। वे हैं – 1. उरस्, 2. कण्ठ, 3. शिरस्, 4. जिह्वामूल, 5. दन्त, 6. नासिका, 7. ओष्ठ तथा 8. तालु।

31. ‘शतम्’ वर्गस्य कति शाखाः सन्ति?

- (a) तिस्रः (b) चतस्रः
(c) पञ्च (d) सप्त

Ans : (b) – भारोपीय परिवार की दस शाखाएँ हैं जिन्हें ध्वनि विषयक साम्य - वैषम्य के आधार पर दो वर्गों (शतम् और केण्टुम् वर्ग) में विभक्त किया गया है शतम् वर्ग में चार शाखाओं की गणना की गई है। (1) अल्बेनियन या अल्बेनी या इलीरियन शाखा (2) बाल्टिक या लैटिन शाखा (3) स्लैवोनिक शाखा (4) अर्मेनियन शाखा।

32. सुदर्शनतडाकस्य कः निर्माता?

- (a) चक्रपालितः (b) सुविशाखः
(c) तुषास्कः (d) पुष्यगुप्तः

Ans : (d) – सुदर्शन नामक तालाब के निर्माता पुष्यगुप्त थे।

33. सांख्यानुसारं कैवल्यं भवति :

- (a) ज्ञानैकस्वरूपत्वम्
(b) उपकारापकारशक्तिराहित्यम्
(c) इच्छाद्वेषप्रयत्नादिशून्यत्वम्
(d) आत्यन्तिकदुःखशून्यत्वम्

Ans : (d) – दुःखों की ऐकान्तिक या आत्यन्तिक निवृत्ति ही सांख्य का लक्ष्य है। प्रकृति की सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति हो जाने पर प्रकृति विरत हो जाती है और पुरुष कैवल्य को प्राप्त हो जाता है।

34. आधिभौतिकदुःखं सांख्यमतेनोदाह्रियते :

- (a) ज्वरातिसारादुत्पन्नं दुःखम्

- (b) स्वजनवियोगाप्रियजनसंयोगजन्यं दुःखम्
(c) सर्पादिसमुद्भवं दुःखम्
(d) भूतप्रेतादिवशाज्जायमानं दुःखम्

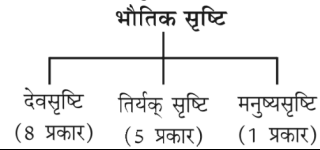
Ans : (c) – सांख्य दर्शन में तीन प्रकार के दुःख को बताया गया है–

1. आध्यात्मिक 2. भौतिक 3. आधिदैविक
अर्थात् सर्प आदि से उत्पन्न हुआ दुःख भौतिक दुःख कहलाता है। अन्य उदाहरण-मनुष्य, पशु

35. भौतिकः सर्गः कतिविधो भवति?

- (a) चतुर्दशविधः (b) पञ्चविधः
(c) अष्टविधः (d) एकविधः

Ans : (a) – भौतिकः सर्गः चतुर्दशविधः भवति।



36. स्थूलप्रपञ्चोत्पत्तिः केभ्यः सम्भवति?

- (a) अपञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः (b) ईश्वरादिभ्यः
(c) मानवशरीरेभ्यः (d) पञ्चीकृतपञ्चभूतेभ्यः

Ans : (d) – स्थूल प्रपञ्च की उत्पत्ति पञ्चीकृत पञ्च भूतों से होती है। आकाश, वायु, अग्नि तथा पृथ्वी इन पाँचों को पञ्च महाभूत की सज्जा दी गयी है।

37. वेदान्तसारे प्रयोजनं निरूपितम् :

- (a) दुःखनिवृत्तिः
(b) अभ्युदयलाभः
(c) अज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च
(d) पाण्डित्यसम्पादनम्

Ans : (c) – “प्रयोजनमनुदिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते” अतः इस ग्रन्थ का भी कोई प्रयोजन है। सदानन्द की मान्यता है कि जीव एवं ब्रह्म की एकता विषयक अज्ञान की निवृत्ति और स्वस्वरूपानन्द की प्राप्ति इस वेदान्तसार का प्रयोजन मानना चाहिए।

38. शाब्दी भावना निरूपिता भवति :

- (a) आख्यातत्वांशेन (b) लिङ्त्वांशेन
(c) ज्ञापकांशेन (d) सामान्यांशेन

Ans : (b) – व्यक्ति की प्रवृत्ति का जनक या सहायक प्रयोजन का व्यापार विशेष शाब्दी भावना है। वह लिङ्ग अंश से व्यक्त होती है।

39. अर्थसङ्ग्रहमनुसृत्य यागो नाम :

- (a) देवतोद्देशेन द्रव्यत्यागः
(b) देवतोद्देशेन द्रव्यस्य प्रक्षेपः
(c) स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकं परस्वत्वापादनम्
(d) मन्त्रपठनम्

Ans : (a) – याग आदि ही धर्म हैं और उस याग आदि का “यजेत् स्वर्गकामः”-स्वर्ग के इच्छुक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए।

40. परिसंख्याविधेः दोषाः के?

- (a) श्रुतहानिः, अश्रुतप्रकल्पनम्, प्राप्तबाधः
(b) श्रुतहानिः प्राप्तबाधः वाक्यभेदः
(c) अप्रामाण्यस्वीकारः, प्रामाण्यपरित्यागः
(d) वचनबलाद् विकल्पः, एकार्थत्वाद् विकल्पः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) – परिसंख्या विधि के मूल रूप श्रुतहानि, अश्रुतप्रकल्पनम् तथा प्राप्तबाध से सभी दोष की श्रेणी में गिने जाते हैं।

41. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति :

- (a) महावीरचरितम् (b) अभिषेकनाटकम्
(c) मृच्छकटिकम् (d) उत्तररामचरितम्

Ans : (c) – मृच्छकटिकम् दस अंकों में प्रकरण के रूप में निबद्ध किया गया है। भास का 'दरिद्रचारुदत्त' ही मृच्छकटिकम् का मूल आधार ग्रन्थ है। यह प्रकरण ग्रन्थ रामायण पर आश्रित नहीं है।

42. 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः'-इत्युक्तिः गीतायाः कतमेऽध्याये वर्तते?

- (a) द्वितीये (b) तृतीये
(c) पञ्चमे (d) चतुर्थे

Ans : (b) – यह सूक्ति गीता के तीसरे अध्याय में प्राप्त होता है। इसका अर्थ अपने धर्म में मृत्यु श्रेष्ठ है।

43. रामायणे शबरीवृत्तान्तः कस्मिन् काण्डे अस्ति?

- (a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे (d) सुन्दरकाण्डे

Ans : (b) – वाल्मीकिरामायण में शबरी का वृत्तान्त अरण्यकाण्ड में है। वाल्मीकिरामायण में सात काण्ड क्रमशः हैं—

1. बालकाण्ड,
2. अयोध्याकाण्ड
3. अरण्यकाण्ड
4. किष्किन्धाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड
6. युद्धकाण्ड
7. उत्तरकाण्ड

44. महाभारते नलोपाख्यानं कस्मिन् पर्वणि?

- (a) आदिपर्वणि (b) वनपर्वणि
(c) कर्णपर्वणि (d) अनुशासनपर्वणि

Ans : (b) – नलोपाख्यान महाभारत के वनपर्व के अन्तर्गत आता है। महाभारत में पशु-पक्षियों के आख्यान भी हैं जिनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण मूल्यों को अत्यन्त कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना है।

45. तीर्थानाम् सविस्तरम् वर्णनमुपलभ्यते :

- (a) मत्स्यपुराणे (b) वायुपुराणे
(c) स्कन्दपुराणे (d) शिवपुराणे

Ans : (c) – स्कन्दपुराण में 81 हजार श्लोक हैं। इसमें भारत के सभी तीर्थों का वर्णन होने से इसका भौगोलिक महत्व अधिक है।

46. रासपञ्चाध्यायी वर्तते :

- (a) विष्णुपुराणे (b) ब्रह्मपुराणे
(c) श्रीमद्भागवतपुराणे (d) ब्रह्मवैवर्तपुराणे

Ans : (c) – भागवत पुराण में भगवान् विष्णु के प्रसिद्ध अवतार श्रीकृष्ण की रास-लीलाओं तथा क्रीड़ाओं को दशम स्कन्ध में वर्णित किया गया है।

47. महाभारते शिशुपालवधवृत्तान्तः कस्मिन् पर्वणि वर्तते?

- (a) सभापर्वणि (b) भीष्मपर्वणि
(c) वनपर्वणि (d) विराटपर्वणि

Ans : (a) – शिशुपालवधम् महाकाव्य महाकवि माघ द्वारा विरचित 20 सर्गों की रचना है। माघ ने जिस कथानक को आधार मानकर अपने महाकाव्य शिशुपालवधम् की रचना की है। वह कथा महाभारत के सभापर्व (33-45 अध्याय तक) में वर्णित है।

48. कौटिल्येन यो गूढपुरुषेषु न निर्दिष्टः :

- (a) कार्मिकः (b) कापटिकः
(c) तापसः (d) रसदः

Ans : (a) – कौटिल्य ने स्थायी अर्थात् एक स्थान पर रहने वाले गूढ़ पुरुषों में कापटिक, उदास्थित, ग्रहपतिक, वैदेहक एवं तामस गुणचरों का उल्लेख किया है। कार्मिक गुणचर नहीं होता है।

49. शुल्कमादाय यो विवाह :

- (a) प्राजापत्यः (b) आसुरः
(c) दैवः (d) ब्रह्मः

Ans : (b) – मनु ने विवाह को समस्त संस्कारों में गौरवशाली एवं महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार विवाह के आठ प्रकार हैं—

1. ब्रह्मविवाह
2. दैवविवाह
3. आर्षविवाह
4. प्राजापत्यविवाह
5. आसुरविवाह
6. गान्धर्वविवाह
7. राक्षसविवाह तथा
8. पैशाचविवाह। - आसुर विवाह में कन्यादाता वर को शुल्क देकर कन्यादान करता है।

50. पितृणां रात्रिर्भवति :

- (a) कृष्णपक्षः (b) शुक्लपक्षः
(c) शरदृतुः (d) संवत्सरः

Ans : (b) – मनुष्यों का एक माह पितरों का एक रात-दिन होता है। उसमें दो पक्षों का विभाग है। उन दोनों पक्षों में कृष्णपक्ष दिन तथा शुक्लपक्ष रात है अर्थात् पितरों की रात्रि शुक्लपक्ष होता है।

51. मनुना चूडाकर्मणः कालः उक्तः :

- (a) पञ्चमे वर्षे (b) चतुर्थे वर्षे
(c) द्वितीये वर्षे (d) प्रथमे वर्षे

Ans : (d) – संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य को अभ्युदय तथा मोक्ष के लिए पूर्ण समर्थ बनाना है। संस्कार मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्ण बनाते हैं। मनु ने सोलह संस्कारों का उल्लेख किया है। जिनमें से चूडाकर्म संस्कार प्रथम या तृतीय वर्ष में सम्पन्न कराना उचित बताया है। मनु 02/35

52. मनुना क्रोधजानि व्यसनानि कियन्ति अभिहितानि?

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) अष्टौ

Ans : (d) – मनु ने राजा को निर्देश दिया है कि कामजन्य (दस) तथा क्रोधजन्य (आठ) व्यसनों का अन्त में प्रयत्नपूर्वक त्याग कर देना चाहिए।

कामजन्य व्यसन - 1. चुगलखोरी, 2. जुआ खेलना, 3. दिन में सोना, 4. पराये की निन्दा करना, 5. स्त्री सेवन, 6. नशा करना, 7. नाचना-गाना, 8. बजाना, 9. आध्यासक्ति और 10. व्यर्थ भ्रमण।

क्रोधजन्य व्यसन - 1. चुगली खोरी, 2. दुस्साहस, 3. द्रोह, 4. ईर्ष्या, 5. असूया, 6. अर्थ दोष, 7. कठोर वचन, 8. कठोर दण्ड।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

53. स्मृत्यपेतकारिणः सभ्याः कतिगुणेन दमेन दण्डयाः?

- (a) पञ्चगुणेन (b) चतुर्गुणेन
(c) त्रिगुणेन (d) द्विगुणेन

Ans : (d) – याज्ञवल्क्यस्मृति-व्यवहाराध्याय के चतुर्थ श्लोक में निर्देश है कि काम, क्रोध, लोभ, भय से भी किसी के प्रति वशीभूत होने से, व्यवहार में धर्म विरुद्ध आचरण करने वाले सभासदों में उस विवाद के पराजय निमित्त जितना द्रव्य हो, उससे दुगुना द्रव्य अलग-अलग दण्डस्वरूप लेना चाहिए।

54. मिथ्याभियोगी कतिगुणं धनं राज्ञे दद्यात्?

- (a) द्विगुणम् (b) त्रिगुणम्
(c) चतुर्गुणम् (d) पञ्चगुणम्

Ans : (a) – याज्ञवल्क्यस्मृति-व्यवहाराध्याय के 11वें श्लोक में उल्लेख है कि वादी के द्वारा लगाये जाने वाले अभियोग को छिपाये जाने पर प्रतिवादी, उस वाद के मूल्य के समान धन राजा को दण्ड स्वरूप दिया करे तथा झूठा अभियोग चलाने वाला अभियोग मूल्य से दोगुना धन प्रदान करें।

55. 'प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार' कुत्रेयमुक्तिः?

- (a) मेघदूते (b) कुमारसम्भवे
(c) ऋतुसंहारे (d) रघुवंशे

Ans : (a) – महाकवि कालिदास विरचित मेघदूत के पूर्व मेघ के चौथे श्लोक में यक्ष ने मेघ को प्रसन्नता पूर्वक वचनों से स्वागत वचन कहा है।

56. 'कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखान्तर्णेषुपि तन्व्या नलनामनि श्रुते।' अत्र 'नल' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

- (a) नलः (b) कामः
(c) तृणम् (d) स्तुतिपाठकः

Ans : (c) – बृहत्सयी के अन्तर्गत परिगणित श्रीहर्ष विरचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य 22 सर्गों में निबद्ध है। प्रथम सर्ग के 35वें श्लोक में श्रीहर्ष नल के प्रति दमयन्ती के अतिशय अनुराग का वर्णन कर रहे हैं। सखियों के मुख से घास के तिनके के अर्थ वाले नल शब्द के सुनने पर भी दमयन्ती सभी कार्य त्यागकर प्रसन्नतापूर्वक राजा नल के विषय में सुनने हेतु प्रस्तुत कानों वाली हो गयी।

57. 'सतीव योषित्प्रकृतिः' सुनिश्चला पुमांसम्भ्येति भवान्तरेष्वपि।...इति पद्यांशानुसारं भवान्तरेषु पुमांसं किम् अभ्येति?

- (a) जातिः (b) सती
(c) योषित् (d) स्वभावः

Ans : (d) – प्रश्नानुसार 'सतीव योषित्प्रकृतिः' सुनिश्चला "पुमांसम्भ्येति भवान्तरेष्वपि।" पद्यांश में भवान्तरेषु पुमांसं स्वभावः अभ्येति।

58. एकदा प्रत्युषसि हर्षः स्वप्ने अग्निना दह्यमानं कमपश्यत्?

- (a) गजम् (b) अश्वम्
(c) केसरिणम् (d) सर्पम्

Ans : (c) – 'हर्षचरित' महाकवि बाण की प्रथम रचना है। बाण ने हर्षवर्द्धन के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं का आठ उच्छ्वासों में रोचक वर्णन किया है। हर्षचरितम् के पञ्चम उच्छ्वास के एक अंश में हर्षवर्द्धन ने स्वप्न में एक सिंह को जलते हुए देखा।

59. 'शोकस्थायितया भिन्नो विप्रलम्भादयं रसः।' कः सः रसः?

- (a) शृङ्गारः (b) वीरः
(c) हास्यः (d) करुणः

Ans : (a) – "शोकस्थायितया भिन्नो विप्रलम्भादयं रसः" सा इति शृङ्गार रसः वर्तते। अर्थात् विप्रलम्भादि में जो शोक रस के स्थायी भाव से भिन्न रस है वह शृङ्गार कहलाता है।

60. रङ्गमञ्चस्य देवपूजनं केन तुल्यं भवति?

- (a) यज्ञेन तुल्यम् (b) तपसा तुल्यम्
(c) दानेन तुल्यम् (d) धर्मेण तुल्यम्

Ans : (a) – रङ्गमञ्च एक यज्ञ के समान होता है। इसके प्रारम्भ में देवस्तुति यज्ञ के समान की जाती है।

61. 'माधुर्योजः प्रसादारव्याख्यस्ते न पुनर्दश' के ते?

- (a) काव्यदोषाः (b) काव्यभेदाः
(c) काव्यगुणाः (d) काव्यलक्षणम्

Ans : (c) – आचार्य मम्मट ने भामह तथा आनन्दवर्धन से प्रेरणा ग्रहण करके कुल तीन गुणों को मान्यता प्रदान की हैं। जिसे परवर्ती विश्वनाथादि साहित्य शास्त्रियों ने स्वीकार किया है- माधुर्योजः प्रसादाख्याख्यस्ते न पुनर्दश। इस तरह माधुर्य, ओज तथा प्रसाद नामक तीन ही काव्य गुण हैं न कि वामन-अभिप्रेत 10 गुण।

62. 'आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्त्तुमनागसि' अभिज्ञानशाकुन्तले कस्य वचनमिदम्?

- (a) वैखानसस्य (b) दुष्यन्तस्य
(c) कण्वस्य (d) अनसूयायाः

Ans : (a) – कालिदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पहले अंक में तापस विशेष वैखानस राजा को उपदेश देता है कि हे राजन्! आप जैसे लोगों का अस्त्र पीड़ितों, दुःखितों तथा अनाथों की रक्षा के लिए है, निरपराध लोगों पर प्रहार करने के लिए नहीं है।

63. "गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्।" अत्र राजनीतौ कोऽयमंशः परामर्शितः?

- (a) दण्डनीतिः (b) युद्धनीतिः
(c) समाजनीतिः (d) धार्मिकनीतिः

Ans : (a) – प्रश्नानुसार-"गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्।" इस वाक्यांश में राजनीति के विभाग दण्डनीति का वर्णन है। यह पंक्ति किरातार्जुनीयम् से ली गई है।

64. 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे' त्वदधीना हि सिद्धयः।' इति कः कं प्रति आह?

- (a) वसिष्ठः दिलीपं प्रति (b) दिलीपः वसिष्ठं प्रति
(c) वसिष्ठः सुदक्षिणां प्रति (d) सुदक्षिणा दिलीपं प्रति

Ans : (b) – यहाँ दिलीप वसिष्ठ से कह रहे हैं। कि हे प्रभो! अब कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे मेरे पुत्र-रत्न हो और मैं अपने पितृ-ऋण से मुक्त हो जाऊँ क्योंकि इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की सभी कठिनाइयाँ आपकी कृपा से सदा दूर होती रही हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

65. यस्यां लक्षणायां मुख्यार्थस्यापि ग्रहणं भवति सा लक्षणा भवति?

- (a) उपादान-लक्षणा (b) लक्षण-लक्षणा
(c) जहत्स्वार्थ (d) रूढिमूला लक्षण-लक्षणा

Ans : (a) – मुख्य रूप से अर्थ में रहने के कारण शब्द में आरोपित व्यापार लक्षण कहलाता है। जहाँ पर पद अपने सम्बन्ध की सिद्धि के लिए अपने अर्थ का आक्षेप कर लेता है, वहाँ उपादान लक्षणा होती है। जैसे- कुन्ताः प्रविशन्ति।

66. समवकारे पात्राणि के भवन्ति?

- (a) मानवाः (b) दैत्याः
(c) देवाः (d) सर्वे

Ans : (c) – समवकार रूपकों के दस भेदों में से एक भेद है। इसमें देव, मानव और असुरों से सम्बन्धित पुराण एवं ऐतिहासिक कथानक होना चाहिए।

67. 'वज्रादपि कठोरानि मृदूनि कुसुमादपि.... पद्यांशोऽयं कस्मिन् नाटके आयाति?

- (a) मालतीमाधवे
(b) महावीरचरिते
(c) उत्तररामचरिते
(d) अभिज्ञानशाकुन्तले

Ans : (c) – 'उत्तररामचरितम्' भवभूति के तीन नाटकों में सात अंकों वाला नाटक है। प्रस्तुत नाटक के द्वितीय अंक के सातवें श्लोक में वासन्ती राम के बारे में कहती है कि वज्र से कठोर पुष्प से भी कोमल लोकश्रेष्ठ महापुरुषों के चित्त को कोई नहीं जान सकता।

68. वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथाशानां निदर्शकः संक्षिप्तार्थस्तु.... आदावङ्कस्य दर्शितः॥ कः?

- (a) प्रवेशकः
(b) विष्कम्भकः
(c) सूत्रधारः
(d) अङ्कावतारः

Ans : (b) – विष्कम्भक अर्थोपक्षेपकों में से एक है इसमें नाटक का वह भाग विष्कम्भक कहलाता है जिसमें एक या अधिक मध्यम पात्र आकर भूत या भविष्य की घटना का वर्णन करते हैं।

69. गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्।
अलिकुलकोकिलललिते नैष्यति सखि
सुरभिसमयेऽसौ॥.... अत्र को नामालङ्कारः?

- (a) उपमा (b) रूपकः
(c) श्लेषवक्रोक्तिः (d) काकुवक्रोक्तिः

Ans : (d) – जहाँ वक्ता के द्वारा अन्य अभिप्राय से कहा गया जो वाक्य मान्य के द्वारा 'काकु' अन्य अर्थ (वक्ता के अभिप्रायः से भिन्न अर्थ) में लगा लिया जाता है वह काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है। कोई नायिका अपनी सखी से कहती है कि हे सखि! गुरुजनों माता-पिता आदि मान्य जनों के परतन्त्र होने के कारण विदेश जाने के लिए उद्यत वे मेरे प्रियतम इन भौरों और कोकिलों की मधुर ध्वनि से गुञ्जायमान रमणीय वसन्त समय में नहीं आयेंगे? सखि दूसरे ढंग (काकु ध्वनि) से कहती है कि अवश्य आयेंगे।

70. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः?

- (a) पञ्चविधः (b) षड्विधः
(c) नवविधः (d) त्रिविधः

Ans : (b) – प्रमा इन्द्रिय से उत्पन्न होती है। इन्द्रियाँ ही प्रत्यक्ष प्रभाव हैं। इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छह प्रकार का होता है-

1. संयोग सन्निकर्ष
2. संयुक्त समवाय सन्निकर्ष
3. संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष
4. समवायसन्निकर्ष
5. समवेतसमवाय सन्निकर्ष
6. विशेषण-विशेष्यभाव सन्निकर्ष

71. गुणगुणिनोः कः सम्बन्धः?

- (a) समवायः (b) आधारधेयः
(c) व्याप्यत्वसम्बन्धः (d) स्वस्वामिसम्बन्धः

Ans : (a) – गुणगुणिनो सम्बन्धः समवायः इति। अर्थात् गुण और गुणी के सम्बन्ध को समवाय सम्बन्ध कहते हैं। जबकि समवाय "अयुतसिद्धयोः सम्बन्धः इति समवायः" यदि एक गुण है और दूसरा गुणी है तो इन दोनों का सम्बन्ध समवाय सम्बन्ध कहलायेगा। जैसे-तन्तु और पट का सम्बन्ध समवाय सम्बन्ध है।

72. रजते इदं रजतमिति ज्ञानं वर्तते :

- (a) तर्कः (b) भ्रमः
(c) सन्देहः (d) प्रमा

Ans : (d) – रजते इदं रजतमिति ज्ञानं वर्तते इति प्रमा कथ्यते। साक्षात्कारिणी प्रमा अर्थात् साक्षात्कार ज्ञान ही प्रमा है। प्रमा दो प्रकार की होती है- 1. सविकल्पक, 2. निर्विकल्पक।

73. तन्तूनां पटं प्रति किं कारणं भवति?

- (a) समवायिकारणम्
(b) निमित्तकारणम्
(c) असमवायिकारणम्
(d) मिथ्याकारणम्

Ans : (a) – जिसमें कार्य समवाय सम्बन्ध से उत्पन्न होता है, उसे समवायि कारण कहते हैं; जैसे- तन्तु पट के प्रति समवायि कारण है।

74. अनुमानं नाम :

- (a) व्याप्तिः (b) पक्षः
(c) हेतुः (d) लिङ्गपरामर्शः

Ans : (d) – तर्कभाषाकार ने लिखा है कि लिङ्ग परामर्श ही अनुमान है।- लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्।

75. लक्षितस्यैतत् लक्षणमुपपद्यते न वेति विचार उच्यते :

- (a) परीक्षा (b) लक्षणम्
(c) उद्देश्यः (d) विमर्शः

Ans : (a) – "लक्षितस्यैतत् लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः" यहाँ पर परीक्षा का लक्षण दिया गया है। अर्थात् "किसी पदार्थ के असाधारण धर्म का कथन उसका लक्षण कहलाता है तथा लक्षित पदार्थ में लक्षण ठीक-ठीक बैठता है अथवा नहीं इस प्रकार का विचार करना परीक्षा कहलाती है।"

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2014

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. का अन्तरिक्षस्थानीय देवता ?

- (a) सूर्यः (b) अग्निः
(c) समुद्रः (d) इन्द्रः

उत्तर (d) इन्द्र, रुद्र अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं। सूर्य, सवितृ विष्णु, अश्विनौ, वरुण तथा उषस् इत्यादि द्युस्थानीय देवता हैं। अग्नि, सोम तथा समुद्र पृथ्वी स्थानीय देवता हैं।

2. कस्य वेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते ?

- (a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर (d) अथर्ववेदस्यारण्यकं नोपलभ्यते। अर्थात् अथर्ववेद का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं होता है। जबकि ऋग्वेद का ऐतरेय तथा शांखायन आरण्यक है, यजुर्वेद का बृहदारण्यक, तैत्तिरीय तथा मैत्रायणीय एवं सामवेद का तवलकार तथा छन्दोग्यारण्यक है।

3. काण्वसंहितासम्बद्धब्राह्मणम्

- (a) कठब्राह्मणम् (b) कपिष्ठलब्राह्मणम्
(c) शतपथब्राह्मणम् (d) तांड्यब्राह्मणम्

उत्तर (c) काण्व संहिता से सम्बद्ध ब्राह्मण शतपथ है, कठ संहिता से सम्बद्ध ब्राह्मण कठ है, कपिष्ठल ब्राह्मण कपिष्ठल संहिता से सम्बद्ध है तथा ताण्ड्य ब्राह्मण सामवेद से सम्बद्ध है।

4. तैत्तिरीयशाखा केन वेदेन सम्बद्धा ?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b) तैत्तिरीयशाखा कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है। जबकि ऋग्वेद से ऐतरेय शाखा, सामवेद से कौथुमीय, राणायनीय तथा जैमिनीय एवं अथर्ववेद से दोनों पैप्पलाद तथा शौनकशाखा सम्बन्धित हैं।

5. जगतीछन्दसि कत्यक्षराणि भवन्ति प्रतिपादम् ?

- (a) दश (b) द्वादश
(c) षोडश (d) अष्ट

उत्तर (b) जगती में कुल 48 अक्षर होते हैं तथा प्रत्येक पाद में 12 अक्षर होते हैं जबकि गायत्री में 24, पंक्ति में 40, त्रिष्टुप् में 44 तथा अनुष्टुप् में 32 मात्राएँ होती हैं।

6. भावप्रधानम् भवति

- (a) व्याख्यानम् (b) आख्यातम्
(c) कारकम् (d) क्रियापदम्

उत्तर (b) भावप्रधानं आख्यातं भवति अर्थात् आख्यात भावप्रधान होता है। सत्त्वप्रधान नाम को कहा जाता है। क्रिया में जिसकी प्रधानता हो वह आख्यात कहा जाता है, नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपात से चारों पद के विभाग हैं।

7. निरुक्ते एकस्य पदस्य बह्वर्थमादाय किं काण्डं प्रवर्तते ?

- (a) नैघण्टुकम् (b) दैवतम्
(c) नैगमम् (d) उत्तरषट्कम्

उत्तर (c) नैगमकाण्ड में अनेक अर्थों का एक शब्द होता है 'अनेकार्थानि एकशब्दानि' जबकि नैघण्टुक काण्ड में एक अर्थ को लेकर अनेक शब्द कहे गये हैं 'एकार्थमनेकशब्दम्' निघण्टु का तीसरा काण्ड दैवत काण्ड है इसमें ऋग्वेद के देवताओं का सङ्ग्रह किया गया है। उत्तरषट्कम् ही दैवतकाण्ड के नाम से जाना जाता है।

8. हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यते

- (a) पैप्पलादसंहितायाम् (b) अथर्ववेदे
(c) कृष्णयजुर्वेदे (d) माध्यन्दिनसंहितायाम्

उत्तर (d) "हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यते" अर्थात् हाथ के द्वारा तीनों स्वरों उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित का प्रयोग दिखाया गया है। यजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा माध्यन्दिन संहिता में किया गया है।

9. "किं भ्रातासद्यनाथ" मिति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते ?

- (a) नासदीयसूक्ते (b) विश्वामित्रनदीसम्वादसूक्ते
(c) यम-यमीसम्वादसूक्ते (d) पृथिवीसूक्ते

उत्तर (c) 'किं भ्रातासद्यनाथं भवति किमु स्वसा यन्निर्ऋत्यतिनिर्गच्छात्' यह उक्ति ऋग्वेद के 10/10 यमयमी संवाद से ली गयी है। इसके ऋषि वैवश्वत एवं देवता यम तथा छन्द त्रिष्टुप् है।

10. अधोडङ्कितातानां समीचीनमुत्तरं चिनुत

- (A) नचिकेतोपाख्यानम् 1. पुत्रोऽहं पृथिव्याः
(B) सत्यं वद धर्मं चर 2. कठोपनिषद्
(C) माता भूमिः 3. तैत्तिरीयोपनिषद्
(D) शुल्बसूत्रम् 4. कल्पान्तर्गतम्

A	B	C	D
(a) 1	3	4	2
(b) 4	2	3	1
(c) 3	1	4	2
(d) 2	3	1	4

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d) नचिकेतोपाख्यान – कठोपनिषद् में है
सत्यं वद धर्मं चर – तैत्तिरीयोपनिषद् में है
माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः – यह अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का है।
शुल्बसूत्र – कल्प के अन्तर्गत आते हैं। कल्प चार प्रकार के होते हैं – श्रौत धर्म, गृह्य तथा शुल्बसूत्र।

11. निघण्टुशब्देनोच्यते

- (a) वैदिकशब्दकोशः (b) निरुक्तम्
(c) निधानम् (d) कारकम्

उत्तर (a) निघण्टु वेद के शब्दों का एक कोश है जो पाँच अध्यायों में विभाजित है। इस पर यास्क ने निरुक्त लिखा है जो तीन काण्डों में विभाजित है- 1. नैघण्टुक काण्ड 2. नैगम काण्ड 3. दैवतकाण्ड

12. आपस्तम्बश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धम् ?

- (a) शुक्लयजुर्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है, आश्वलायन तथा कौषीतकि ऋग्वेद से, लाट्यायन, द्राह्यायण, मशकसूत्र, खादिर तथा जैमिनीय समावेद से, वैतानश्रौतसूत्र अथर्ववेद से तथा कत्यायन तथा बौधायन शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध है।

13. “निषसाद धृतव्रत” इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते ?

- (a) वाक्सूक्ते (b) वरुणसूक्ते
(c) सूर्यसूक्ते (d) नदीसूक्ते

उत्तर (b) ‘निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्याऽस्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।’ यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के पच्चीसवें सूक्त (वरुण सूक्त) का 10 वाँ मन्त्र है।

14. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पदार्थाः

- (a) षोडश (b) सप्त
(c) षट् (d) दश

उत्तर (b) तर्कसङ्ग्रह के अनुसार सात पदार्थ हैं ‘द्रव्यगुणकर्मसामान्य विशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः’ अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय तथा अभाव ये सात पदार्थ हैं।

15. तर्कसङ्ग्रहानुसारं विशेषाः

- (a) नित्यद्रव्यवृत्तयः (b) अनित्यद्रव्यवृत्तयः
(c) द्रव्यवृत्तयः (d) गुणवृत्तयः

उत्तर (a) अन्नभट्ट कृत तर्कसङ्ग्रह के अनुसार विशेष का लक्षण इस प्रकार है – ‘नित्यद्रव्यवृत्त्यो विशेषास्त्वनन्ता एव’ अर्थात् नित्यद्रव्यो में रहने वाले विशेष तो असंख्य या अनेक होते हैं।

16. तर्कसङ्ग्रहानुसारं गुणाः

- (a) सप्तदश (b) अष्टचत्वारिंशत्
(c) चतुर्विंशतिः (d) दश

उत्तर (c) तर्कसङ्ग्रह के अनुसार चौबीस गुण हैं – 1. रूप 2. रस 3. गंध 4. स्पर्श 5. संख्या 6. परिमाण 7. पृथक्त्व 8. संयोग 9. विभाग 10. परत्व 11. अपरत्व 12. गुरुत्व 13. द्रवत्व 14. स्नेह 15. शब्द 16. बुद्धि 17. सुख 18. दुःख 19. इच्छा 20. द्वेष 21. प्रयत्न 22. धर्म 23. अधर्म और 24. संस्कार।

17. उत्क्षेपणं प्रकारः ।

- (a) गमनस्य (b) भ्रमणस्य
(c) कर्मणः (d) करणस्य

उत्तर (c) ‘उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चन प्रसारण गमनानि पञ्च कर्माणि’ अर्थात् उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण तथा गमन ये पाँच प्रकार के कर्म कह गये हैं यह अन्नभट्ट के तर्कसंग्रह के अनुसार विभाग किया गया है।

18. गन्धवत्त्वं लक्षणम्

- (a) पृथिव्याः (b) दिशः
(c) जलस्य (d) वायोः

उत्तर (a) गन्धवती होना यह पृथ्वी का लक्षण है ‘तत्र गन्धवती पृथ्वी’ यह नित्य तथा अनित्य से दो प्रकार की होती है। जबकि जल शीत तथा स्पर्शवान् होता है, रूप से रहित स्पर्श से युक्त वायु होती है, पूर्व, पश्चिम आदि के व्यवहार के कारण को दिक् कहते हैं।

19. उपमितिकरणं किम् ?

- (a) इन्द्रियम् (b) पदज्ञानम्
(c) व्याप्तिज्ञानम् (d) सादृश्यज्ञानम्

उत्तर (d) उपमिति के कारण को उपमान कहते हैं इस उपमान का करण सादृश्यज्ञान कहलाता है ‘तत्करणं सादृश्यज्ञानम्’। संज्ञासंज्ञि सम्बन्धज्ञानमुपमितिः।

20. सांख्यमते मूलप्रकृतिर्वर्तते।

- (a) विकृतिः (b) अविकृतिः
(c) प्रकृतिविकृतिः (d) नप्रकृतिर्नविकृतिः

उत्तर (b) सांख्यदर्शन में मूल प्रकृति को विकार रहित कहा गया है महत् अहंकार तथा पाँच तन्मात्राये प्रकृतिविकृति दोनों हैं, सोलह तत्त्वों का समुदाय केवल कार्य है तथा पुरुष न तो कार्य है न ही कारण है।

‘मूलप्रकृतिरविकृतिः’ सांख्यकारिका 13।

21. सांख्यमते प्रमाणमिष्टम्

- (a) चतुर्विधम् (b) पञ्चविधम्
(c) त्रिविधम् (d) षड्विधम्

उत्तर (c) सांख्य के मत में तीन प्रमाण स्वीकृत हैं 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द या आप्त प्रमाण।

‘त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिं प्रमाणाद्धि। सा का0 4।

22. सांख्यकारिकायाः कर्ता वर्तते

- (a) सदानन्दः (b) ईश्वरकृष्णः
(c) कपिलमुनिः (d) गौतमः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (b) ईश्वरकृष्ण को सांख्यकारिका का कर्ता कहा गया है, सदानन्द को वेदान्तसार का कर्ता, गौतम को न्यायसूत्र का तथा कपिलमुनि को सांख्य का आदिप्रवर्तक स्वीकार किया गया है।

23. वेदान्तसारग्रन्थस्य कर्ता वर्तते

- (a) ईश्वरकृष्णः (b) सदानन्दः
(c) सुरेश्वरः (d) शङ्कराचार्यः

उत्तर (b) सदानन्द को वेदान्तसार का कर्ता कहा गया है। ईश्वरकृष्ण को सांख्यकारिका का कर्ता, बादरायण को ब्रह्मसूत्र का तथा सुरेश्वराचार्य को नैष्कर्म्य सिद्धि का कर्ता कहा जाता है। जबकि योगदर्शन के कर्ता पतञ्जलि हैं।

24. अनुबन्धाः सन्ति

- (a) द्वौ (b) चत्वार
(c) त्रयः (d) पञ्च

उत्तर (b) वेदान्त के अनुसार ग्रन्थ के चार अनुबन्ध होते हैं 1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध तथा 4. प्रयोजन। 'तत्र अनुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।

25. जीवन्मुक्तिः कस्मिन् दर्शने स्वीक्रियते ?

- (a) जैनदर्शने (b) बौद्धदर्शने
(c) चार्वाकदर्शने (d) वेदान्तदर्शने

उत्तर (d) जीवन्मुक्ति का सम्बन्ध वेदान्त से है वेदान्त में दो प्रकार की मुक्ति कही गयी है जीवन्मुक्ति तथा विदेह मुक्ति। जीवन्मुक्त पुरुष समस्त राग, द्वेष से रहित संसार में रहते हुए कल्याण करता हुआ अनाशक्त रहता है तथा विदेह मुक्त पुरुष शरीर पात होने पर मुक्त होता है।

26. व्याकरणशास्त्रानुसारं पद-संज्ञकं भवति

- (a) योग्यताकांक्षासन्धियुक्तम् (b) सुप्तिङन्तम्
(c) तुल्यास्यप्रयत्नम् (d) सर्वनामस्थानम्

उत्तर (b) व्याकरण शास्त्र के अनुसार सुबन्त तथा तिङन्त (सुप्तिङन्तम् पदम्) को पद कहा जाता है जबकि 'योग्यताकांक्षासन्धियुक्तं पदम्' न्याय में है, तुल्यास्यप्रयत्नम् - सवर्ण तथा शि की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

27. 'अधिहरि' इत्यस्य अलौकिक-विग्रहः भवति

- (a) अधि + हरि + सु
(b) हरि + अधि + डि
(c) हरि + डि + अधि
(d) हरौ + इति + डि

उत्तर (c) अधिहरि अव्ययीभाव समास का उदाहरण है इसका लौकिक विग्रह हरौ इति तथा अलौकिक विग्रह हरि डि अधि होगा। इसलिये यहाँ पर अव्ययं विभक्ति आदि सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ है।

28. 'विष्णू इमौ' अत्र का संज्ञा प्रवर्तते ?

- (a) घि (b) संयोगः
(c) नदी (d) प्रगृह्यम्

उत्तर (d) विष्णू इमौ इसमें ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम् (1/1/11) सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हुई है। जबकि 'शेषो घ्यसंघि' से घी संज्ञा होती है। 'हलोऽत्र संयोगः' से संयोग संज्ञा तथा 'यूस्त्राख्यो नदी' से नदी संज्ञा होती है।

29. 'वषट्' योगे का विभक्तिर्भवति ?

- (a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

उत्तर (c) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा अलं तथा वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है वषट् का अर्थ है तर्पण जैसे इन्द्र को तर्पण, 'इन्द्राय वषट्' यह अनुवाद बनेगा।

30. 'कृतद्धितसमासश्च' - इत्यनेन का संज्ञा विधीयते ?

- (a) नदी-संज्ञा (b) प्रातिपदिक-संज्ञा
(c) गति-संज्ञा (d) सर्वनाम-संज्ञा

उत्तर (b) कृतद्धितसमासाश्च सूत्र से कृत्, तद्धित तथा समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः' सूत्र से भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

अर्थात् धातु प्रत्यय प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

31. 'नदीमन्ववसिता सेना' इत्यत्र कस्मिन्नर्थे कर्म-प्रवचनीयसंज्ञा भवति ?

- (a) प्रथमार्थे (b) पञ्चम्यर्थे
(c) तृतीयार्थे (d) सप्तम्यर्थे

उत्तर (c) नदीमन्ववसिता सेना यहाँ पर 'तृतीयार्थे' सूत्र से (तृतीया के अर्थ में) अनु की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होकर नदी में तृतीया विभक्ति हुई है। यहाँ पर 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से सह शब्द लक्षित होता है कि नदी के साथ सेना सम्बद्ध है।

32. 'हरिहरौ' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं किम् ?

- (a) द्वन्द्वे घि (b) अजाद्यदन्तम्
(c) अल्पाचतरम् (d) निष्ठा

उत्तर (a) द्वन्द्व समास में घिसंज्ञक शब्द पूर्व में प्रयुक्त होता है हरिहरौ का लौकिक विग्रह हरिश्च हरश्च तथा अलौकिक विग्रह हरि सु + हर सु होगा। यहाँ 'चार्थे द्वन्द्वः' से समास हुआ। यहाँ पर पूर्व प्रयोग में समस्या है कि हरि का पूर्व प्रयोग हो या हर का पूर्व प्रयोग हो इसीलिये 'द्वन्द्वे घि' से हरि का पूर्व प्रयोग हुआ है।

33. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासस्य उदाहरणं किम् ?

- (a) प्राप्नोदको ग्रामः (b) पीताम्बरो हरिः
(c) कण्ठेकालः (d) वीरपुरुषको ग्रामः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (c) व्यधिकरण बहुव्रीहि समास का उदाहरण कण्ठेकालः है। कण्ठेकालः का लौकिक विग्रह 'कण्ठे कालो यस्य सः' तथा अलौकिक विग्रह 'कण्ठ डि काल सु' होगा। इसमें कण्ठे में सप्तमी विभक्ति है तथा कालः प्रथमा विभक्ति का है इन दोनों में अलग-अलग विभक्ति होने से यह व्यधिकरण समास है।

34. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' अत्र चर्मशब्दे आदौ कतमा विभक्तिः प्राप्ता भवति ?

- (a) हेतौ तृतीया (b) अपादाने पञ्चमी
(c) कर्मणि द्वितीया (d) सम्प्रदाने चतुर्थी

उत्तर (a) 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' इस वाक्य में चर्म शब्द में वर्तमान में सप्तमी है। सर्वप्रथम इसमें हेतौ (2/3/23) सूत्र से तृतीया प्राप्ति थी क्योंकि चर्म के लिये हनन व्यापार करता है अतः हेतौ को बाध करके 'निमित्तात्कर्मयोगे' वार्तिक का प्रयोग हुआ है।

35. अव्ययीभावसमासे सहस्य सः केन सूत्रेण विधीयते ?

- (a) अव्ययीभावश्च (b) अनश्च
(c) अव्ययीभावे चाकाले (d) नस्तद्धिते

उत्तर (c) अव्ययीभाव समास में सह के स्थान पर स आदेश 'अव्ययीभावेचाकाले' सूत्र से होता है। यदि काल का वाचक शब्द उत्तरपद में न हो जैसे सहरि। सहरि का लौकिक विग्रह हरेः सादृश्यम् एवं अलौकिक विग्रह हरि डस् सह होगा।

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत

(A) अलोऽन्त्यात्पूर्व	1. अध्ययनात्
(B) माणवकं पन्थानं पृच्छति	2. नीलोत्पलम्
(C) पराजेरसोढः	3. अकथितञ्च
(D) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्	4. उपधा
A	B	C	D
(a) 3	2	4	1
(b) 2	1	3	4
(c) 4	3	1	2
(d) 1	4	2	3

उत्तर (c) 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' होता है। माणवकं पन्थानं पृच्छति यहाँ अकथितञ्च सूत्र से माणवकं की अपादान होने पर भी अविश्वसा होने पर कर्म संज्ञा हुई। 'पराजेरसोढः' इस सूत्र से परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु यदि असह्य अर्थ में हो तो उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी इसलिये यहाँ पर अध्ययनात् पराजयते बना। 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' का उदाहरण नीलोत्पलम् है।

37. ध्वनिनियमेषु द्वितीयः को गण्यते ?

- (a) ग्रासमाननियमः (b) वर्नरनियमः
(c) ग्रिमनियमः (d) कालित्जनियमः

उत्तर (a) ध्वनि नियमों में प्रथम नियम ग्रिमनियम है इनके बनाये गये अपवादों का परिमार्जन ग्रासमान द्वारा किया गया। यही द्वितीय ध्वनि नियम है तथा तृतीय परिमार्जन ध्वनि के नियमों में वर्नर है।

38. 'ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि' इत्युक्तिः कुत्रास्ति ?

- (a) नैषधीयचरिते (b) रघुवंशे
(c) माघकाव्ये (d) भट्टिकाव्ये

उत्तर (c) ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्य वस्तुनि यह उक्ति माघविरचित 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य की है। शिशुपालवध महाकाव्य बृहत्तरी के अन्तर्गत परिगणित तथा 20 सर्गों में विभक्त है।

39. वैशम्पायन-वृत्तान्तः कुत्रोपवर्णितः ?

- (a) दशकुमारचरिते (b) मृच्छकटिके
(c) कादम्बर्याम् (d) हर्षचरिते

उत्तर (c) वैशम्पायन वृत्तान्त बाणभट्ट रचित कादम्बरी में वर्णित है। कादम्बरी में वैशम्पायन तथा राजा शूद्रक के तीन जन्मों की कथा का वर्णन है। दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है तथा मृच्छकटिकम् शूद्रक की एवं हर्षचरितम् बाणभट्ट ने लिखा है।

40. 'एको रसः करुणरेव निमित्त भेदाद् भिन्नः' इत्युक्तिः कुत्रोपलभ्यते ?

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) वेणीसंहारे
(c) मुद्राराक्षसे (d) उत्तररामचरिते

उत्तर (d) एको रसः करुण एव निमित्तभेदात् भिन्नः पृथक्पृथग्विवाश्रयते विवर्तान् । आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारान् अम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम् ॥ उत्तररामचरितम् 3/47। यह उत्तररामचरित से लिया गया है।

41. मेघदूते यक्षः कुत्र वसतिं चके ?

- (a) रामगिरौ (b) हिमालये
(c) अलकायाम् (d) मानसरोवरे

उत्तर (a) मेघदूतम् के अनुसार यक्ष रामगिरि आश्रम में निवास करता था। पूर्वमेघ में रामगिरि का वर्णन है। कुबेर द्वारा शापित यक्ष एक वर्ष के लिये निष्कासित किया गया है। यहीं से यक्ष अपनी पत्नी के लिए मेघ से सन्देश भेजता है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत

(A) मुद्राराक्षसम्	1. भासः
(B) वेणीसंहारः	2. विशाखदत्तः
(C) रत्नावली	3. श्रीहर्षः
(D) स्वप्नवासवदत्तम्	4. भट्टनारायणः

A	B	C	D
(a) 4	2	1	3
(b) 2	4	3	1
(c) 1	2	3	4
(d) 3	1	2	4

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (b) मुद्राराक्षस – विशाखदत्त-यह सात अङ्कों का नाटक है।

वेणीसंहार – भट्टनारायण - यह छः अङ्कों का नाटक है।

रत्नावली – श्री हर्ष - यह चार अङ्कों की नाटिका है

स्वप्नवासवदत्तम् – भास - यह सात अङ्कों का नाटक है।

43. किरातार्जुनीये किरातः कः ?

- (a) युधिष्ठिरः (b) वनेचरः
(c) अर्जुनः (d) शिवः

उत्तर (d) भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में किरातवेशधारी भगवान् शिव थे इसमें अर्जुन का शिव से युद्ध का वर्णन है। अर्जुन से प्रसन्न होकर शिव ने अर्जुन को पाशुपतास्त्र प्रदान किया था।

44. 'गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्थितं चेतः' – कस्य उक्तिरियम् ?

- (a) कण्वस्य (b) गौतम्याः
(c) दुष्यन्तस्य (d) शाङ्गरवस्य

उत्तर (c) गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्थितं चेतः।

चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य ॥ अभि. (1/34) यह उक्ति दुष्यन्त की है।

45. त्रयमेतत् बृहत्त्रय्यां गण्यते

- (a) किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, शिशुपालवधम्
(b) किरातार्जुनीयम्, रघुवंशः, नैषधीयचरितम्
(c) नैषधीयचरितम्, कुमारसम्भवम्, किरातार्जुनीयम्
(d) शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्, रघुवंशः

उत्तर (a) दो त्रयी संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं बृहत्त्रयी तथा लघुत्रयी। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत – तीन ग्रन्थ आते हैं

भारविकृत – किरातार्जुनीयम्

हर्षकृत – नैषधीयचरितम्

माघकृत – शिशुपालवधम्

लघुत्रयी में कालिदास के तीन ग्रन्थ – रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, तथा मेघदूतम् हैं।

46. 'मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय इति कस्य वर्णनम् ?

- (a) पाटलिपुत्र
(b) शुद्धोदनपुत्रस्य
(c) उद्यानस्य
(d) देवदत्तस्य

उत्तर (b) मग्नस्य दुःखे जगतो हिताय' यह पद शुद्धोदन के पुत्र गौतमबुद्ध के लिये अश्वघोष द्वारा रचित बुद्धचरितम् में किया गया है।

47. 'बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती' इत्युक्तम्

- (a) कालिदासेन (b) माघेन
(c) सोढलेन (d) श्रीहर्षेण

उत्तर (c) 'बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती' यह उक्ति सोढल के द्वारा बाणभट्ट के प्रशंसा में कही गयी है। बाण 7वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के कवि थे, इनकी प्रसिद्ध रचना कादम्बरी एवं हर्षचरितम् आख्यायिका है।

48. किरातार्जुनीये प्रतिसर्गस्यान्तिमं पदमस्ति

- (a) श्रीः (b) लक्ष्मीः
(c) शिवः (d) कश्चित्

उत्तर (b) किरातार्जुनीयं के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद लक्ष्मी है जबकि सर्ग के प्रारम्भ में श्री शब्द का प्रयोग किया गया है। उदाहरण स्वरूप – किरातार्जुनीयं के प्रथम सर्ग का 46 वाँ श्लोक दृष्टव्य है—

विधिसमयनियोगादीप्तिस्ंहाराजिह्वं

शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।

रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ

दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः॥ (1/46)

49. रिक्तस्थानं पूरयत –

अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः ।

आस्वादाडकुरन्दोऽसौ भावः इति सम्मतः ॥

- (a) सात्त्विकः
(b) सञ्चारी
(c) स्थायी
(d) अनुभावः

उत्तर (c) अविरुद्ध विरुद्ध वा यं तिरोधातुमक्षमाः।

आस्वादाडकुरन्दोऽसौ भावः स्थायीति सम्मतः। सा0द0 3/72

साहित्य दर्पण आचार्य विश्वनाथ की प्रसिद्ध रचना है इसमें स्थायी रस के लक्षण के प्रसङ्ग में कहा गया है।

50. 'स्वीया' नायिकायाः कति भेदाः ?

- (a) एकादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) अष्टादश

उत्तर (b) स्वीया या स्वकीया नायिका 13 प्रकार की होती है

मुग्धा – 1

= 1

मध्या – (धीरा, अधीरा, धीराधीरा) × (ज्येष्ठ, कनिष्ठा) = 6

प्रगल्भा – (धीरा, अधीरा, धीराधीरा) × (ज्येष्ठ, कनिष्ठा) = 6

13

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2014

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains seventy five (75) objective type questions of two(2) marks each. All questions are compulsory.

सूचना: अत्र प्रश्नपत्रे पञ्चसप्ततिः (75) बहुवैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयम् वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

- (a) सप्तदश (b) षोडश
(c) द्वाविंशतिः (d) अष्टादश

Ans : (b) ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त पुरुष सूक्त के नाम से जाना जाता है इसमें 16 मन्त्र हैं। इस सूक्त का देवता पुरुष तथा ऋषि नारायण हैं।

2. सामवेदस्यारण्यकमस्ति

- (a) तवलकारः (b) जैमिनीयम्
(c) नारदीयम् (d) प्रौष्ठपदीयम्

Ans : (a) तवलकार आरण्यक सामवेद का है जबकि जैमिनीय सामवेद का ब्राह्मण है तथा नारदीय शिक्षा सामवेद का प्रातिशाख्य है। जबकि ऋग्वेद का पाणिनीय शिक्षा ग्रन्थ है।

3. कत्यङ्गुलखातावेदिर्भवति?

- (a) षडङ्गुला (b) सप्ताङ्गुला
(c) द्वादशाङ्गुला (d) त्र्यङ्गुला

Ans : (d) खातावेदि त्र्यङ्गुला भवति। अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान में यज्ञ की वेदी बनाने के लिए खाता तैयार किया जाता है उसको चारों ओर से तीन अङ्गुल के बाद बनाया जाता है।

4. ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते

- (a) अधः (b) उपरिष्यत्
(c) तिर्यक् (d) परितः

Ans : (b) स्वर तीन प्रकार के होते हैं- ऋग्वेद में प्रत्येक स्वर के लिये चिह्न बनाये गये हैं

जैसे- (1) उदात्त - कोई चिह्न नहीं
(2) अनुदात्त - अक्षर के नीचे पड़ी रेखा (-)
(3) स्वरित - अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा (।)

5. 'देवासः' इति प्रयोगः

- (a) लौकिकः (b) कार्मिकः
(c) वैदिकः (d) यादच्छिकः

Ans : (c) देवासः यह वैदिक प्रयोग है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का 19वाँ सूक्त (अग्निमारुत) के तृतीय मन्त्र में देवास पद आया है।

ये ओ रजसो विदुर्विश्वे देवासो अदुहः।
मरुद्भिर्गन् आ महि।

6. दर्शपूर्णमासयागस्य का दक्षिणा?

- (a) पूर्णपात्रम् (b) गौः
(c) अन्वाहार्यम् (d) सुवर्णम्

Ans : (c) दर्शपूर्णमास याग विशेष यज्ञों में है, दर्श अर्थात् अमावस्या, पूर्णमा अर्थात् पूर्णिमा। पूर्णिमा वाले यज्ञ में पुरोडास की आहुति तथा अमावस्या वाले यज्ञ में अग्नि हेतु पुरोडाश तथा इन्द्र के लिये दही तथा दूध से बने द्रव्य का हवन होता है तथा दक्षिणा में 'अन्वाहार्यम्' दिया जाता है- अन्वाहार्य एक प्रकार का ओदन है जो उबला हुआ होता है।

7. कालसूक्तं युज्यते

- (a) मूलवेदे (b) तूलवेदे
(c) अथर्ववेदे (d) कुत्रापि न हि

Ans : (c) अथर्ववेद में दो सूक्त 11.53 तथा 54 के 15 मन्त्रों में काल के महत्त्व पर विचार किया गया है। काल अर्थात् समय। सूर्य काल का प्रतिनिधि है। 'कालो सर्वस्येश्वरः'।

8. शुक्लयजुर्वेदीये शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

- (a) षट् (b) सप्त
(c) अष्ट (d) दश

Ans : (a) शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्प सूक्त में छः मन्त्र हैं। इसके देवता 'मनस्' हैं ऋषि- 'याज्ञवल्क्य' हैं तथा छन्द 'त्रिष्टुप्' है। यह शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिन वाजसनेयिसंहिता के 34वें अध्याय का सूक्त है।

9. केनोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

- (a) कृष्णयजुर्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (b) केन उपनिषद् तथा छान्दोग्य उपनिषद् सामवेद से सम्बन्धित है जबकि कठ तथा तैत्तिरीय उपनिषदें कृष्णयजुर्वेद से, ऋग्वेद से ऐतरेय तथा अथर्ववेद से प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य सम्बन्धित हैं।

10. कठोपनिषदनुसारं महतः परं किमस्ति?

- (a) मनः (b) अव्यक्तम्
(c) पुरुषः (d) आत्मा

Ans : (b) कठोपनिषद् के अनुसार महत् से परे को अव्यक्त कहा गया है। यह कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के तृतीय वल्ली का 11वाँ मन्त्र है।

‘महतः परमव्यक्तात्पुरुषः परः।

पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः। कठो01/3/11

11. ईशावास्यदिशा कथममृतमश्नुते

- (a) एकत्वेन (b) सम्भवात्
(c) सम्भूत्या (d) सत्येन

Ans : (c) ईशावास्योपनिषद् के 14वें मन्त्र के अनुसार सम्भूति से अक्ष को जानकर अमृत की प्राप्ति की जाती है।

‘विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते। ईशा. 14।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

12. 'तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा'-अयं विचारः कुत्रोपदिश्यते?

- (a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) बृहदारण्यके

Ans : (a) 'तस्यै तपो क्षमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्' यह उक्ति केनोपनिषद् के खण्ड चार से लिया गया है।

13. 'योगो हि प्रभवाप्ययौ' - कुत्रेयमुक्तिः?

- (a) बृहदारण्यके (b) केनोपनिषदि
(c) भगवद्गीतायाम् (d) कठोपनिषदि

Ans : (d) 'अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ' यह कथन कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय के तृतीय वल्ली का 11वाँ मन्त्र है।

14. 'उत्तब्धं वागेव गीथोत्त्वगीथा चेति उद्गीथः' - कुत्रेयमुक्तिः?

- (a) केनोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (d) उत्तब्धं वागेव गीथोत्त्वगीथा चेति उद्गीथः यह उक्ति बृहदारण्यक उपनिषद् का है यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद में प्राप्त होने वाला सबसे बड़ा उपनिषद् है, इसमें 6 अध्याय हैं।

15. विज्ञानमयस्य शिरः किमुच्यते?

- (a) श्रद्धा (b) सत्यम्
(c) ऋतम् (d) महः

Ans : (a) विज्ञानमयस्य शिरः श्रद्धा उच्यते। अर्थात् इस विज्ञानमय आत्मा का श्रद्धा ही शिर है ऐसा कहा जाता है। विज्ञान ही यज्ञों का विस्तार करता है और कर्मों का भी विस्तार करता है।

16. 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवा जायते पुनः' - इति केनोक्तम्?

- (a) नचिकेतसा (b) वाजश्रवसा
(c) यमेन (d) अग्निना

Ans : (a) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे। सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवजायते पुनः॥कठो. 6। यह उक्ति कठोपनिषद् में नचिकेता अपने पिता वाजश्रवस के प्रति कह रहा है।

17. ऋक्संप्रातिशाख्यानुसारं सोष्मवर्णः कः?

- (a) थ् (b) द्
(c) प् (d) ब्

Ans : (a) ऋक्संप्रातिशाख्य के अनुसार वर्णों के द्वितीय -तथा चतुर्थ वर्ण सोष्म कहलाते हैं 'युग्मौ सोष्माणौ'। अर्थात् ख्, घ्, छ्, झ्, ट्, ड्, थ्, ध्, फ्, भ् ये अक्षर आते हैं।

18. ऋक्संप्रातिशाख्यानुसारमघोषवर्णः कः?

- (a) त (b) द
(c) ध् (d) ब

Ans : (a) ऋक्संप्रातिशाख्य के अनुसार 'अन्त्याः सप्त तेषामघोषा' अर्थात् 'वर्गे वर्गे च प्रथमौ अघोषौ' अर्थात् वर्गों के प्रथम वर्ण अघोष संज्ञक होते हैं- क्-ख्, च्-छ्, ट्-ट् त्-थ् प्-फ्। अर्थात् त् यहाँ पर अघोषवर्ण है।

19. आमन्त्रितज ओकारो भवति

- (a) रक्तः (b) प्रगृह्यः
(c) रिफितः (d) यमः

Ans : (b) ओकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है। ऋक् प्रातिशाख्य के अनुसार 'ओकार आमन्त्रितजः प्रगृह्यः' अर्थात् सम्बोधन के अन्त में विद्यमान ओकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

20. आश्वलायनगृह्यसूत्रं केन सम्बद्धम्?

- (a) अथर्ववेदेन (b) सामवेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (d) आश्वलायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद से सम्बद्ध है। कात्यायनादि यजुर्वेद से सम्बद्ध हैं, खादिर आदि सामवेद से सम्बद्ध हैं तथा कौशिकगृह्यसूत्र अथर्ववेद से सम्बद्ध है।

21. त्रिष्टुप् छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

- (a) 28 (b) 36
(c) 44 (d) 48

Ans : (c) त्रिष्टुप् छन्द में 44 वर्ण हैं जबकि उष्णिक छन्द में 28 वर्ण, वृहती में 36 वर्ण होते हैं तथा जगती छन्द में 48 वर्ण होते हैं।

22. निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः कः?

- (a) अस्ति (b) विपरिणमते
(c) अपक्षीयते (d) विनश्यति

Ans : (a) निरुक्तानुसारं द्वितीयो भावविकारः 'अस्ति' इति। आचार्य यास्क के द्वारा लिखित निरुक्त में वार्ष्वायाणि ने छः भाव विकार बताये हैं- (1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति।

23. अग्रणीर्भवतीति निरुक्त्या क उच्यते?

- (a) वीरः (b) आदित्यः
(c) अश्वः (d) अग्निः

Ans : (d) आचार्य यास्क ने अग्नि की व्युत्पत्ति बताते हुए कहा है - 'अग्रणी भवति, अंग यज्ञेषु प्रणीयते। अङ्ग नयति सन्ममानः। अक्नोपनो भवतीति स्थौलाष्टीवि। कोपयति न स्नेहयति, विरुक्षी करोतीत्यर्थः।

24. 'वा' इति निपातो वर्तते

- (a) उपमार्थे (b) शब्दार्थे
(c) निषेधार्थे (d) समुच्चयार्थे

Ans : (d) यास्काचार्य ने चार प्रकार का पद विभाग किया है। (1) नाम (2) आख्यात (3) उपसर्ग तथा (4) निपात। पुनः निपात तीन प्रकार का होता है (1) उपमार्थ में (2) कर्मोपसंग्रहार्थक या समुच्चयार्थक तथा (3) पादपूरणार्थक। इस प्रकार वा, आ, अह, किल, हि, ननु, खलु, नूनम्, शाश्वतम् नूनमादि कर्मोपसंग्रहार्थक होते हैं।

25. महाभाष्ये 'कूपरवानकवत्' इत्युदाहरणं कस्मिन् प्रसङ्गे उक्तम्?

- (a) शब्दस्य ज्ञान धर्मः (b) गौरित्यत्र कः शब्दः
(c) किमर्थं वर्णानामुपदेशः (d) सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे

Ans : (a) पतञ्जलि विरचित महाभाष्य में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध में कहा गया कि "सिद्धे शब्दार्थ सम्बन्धसिद्धं तु नित्य शब्दत्वात्"। तत्पश्चात् "कूपरवानकवत् यह उदाहरण शब्दस्य ज्ञान धर्मः के प्रसंग में कहा गया है।

26. 'तुन्नवत्' इति किमुच्यते?

- (a) सक्तुः (b) परिपवनम्
(c) टङ्कारध्वनिः (d) तन्तुशाटिका

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) तुन्वत् इति परिपवनम् उच्यते। यह वाक्यपदीय से सम्बद्ध है यह संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहा जाता है।

27. 'भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते' इत्यत्रात्मनेपद विधायकं किम्?

- (a) अकर्मकाच्च
- (b) वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्
- (c) उपान्मन्त्रकरणे
- (d) समप्रविभ्यः स्थः

Ans : (b) 'वा लिप्सायामिति वक्तव्यम्' सूत्र से 'भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते' अतः यहाँ पर इसी सूत्र से भिक्षुः प्रभुमुपतिष्ठते वाक्य बनता है।

28. 'वीरपत्नी' इति कस्य सूत्रस्योदाहरणे वर्तते

- (a) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे
- (b) नित्य सपत्न्योदिषु
- (c) अन्तर्वत्पतिवतोनुक्
- (d) विभाषा सपूर्वस्य

Ans : (b) नित्य सपत्न्योदिषु (4/1/35) सूत्र के द्वारा वीरपत्नी पद बनता है। वीरः पतिः यस्याः सा वीरपत्नी।

29. तत्पुरुषसमासे देवब्राह्मण इत्युदाहरणे ब्राह्मणो वर्ततेऽभिप्रेतः

- (a) देवरूपः
- (b) देवप्रियः
- (c) देवपूजकः
- (d) देवाधानीः

Ans : (c) तत्पुरुषसमास में 'शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोप स्योपसङ्ख्यानम्' वार्तिक से उत्तरपद का लोप हो जाता है जैसे- देवपूजकः में देवपूजको ब्राह्मणः -लौकिक विग्रह तथा देवपूजक सु ब्राह्मण सु अलौकिक विग्रह हो गया, दोनों पदों का समास करने पर पूजक का लोप होने पर देवब्राह्मण रूप बनता है।

30. 'अलं कुमार्यै' इत्यस्य समस्तं रूपं किम्?

- (a) अलङ्कुमारी
- (b) कुमार्यै अलम्
- (c) अलङ्कुमारिः
- (d) अलङ्कुमारिन्

Ans : (c) अलङ्कुमारिः अर्थात् कुमारी के लिये योग्य वर। यहाँ पर द्विगुप्राप्तापन्नालपूर्वगति समासेषु प्रतिषेधो वाच्यः से अलङ्कुमारी बना तथा गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य सूत्र से कुमारि बना तथा अनुबन्ध लोप करके अलङ्कुमारिः बना।

31. द्विभाषाशिलालेखः केन सम्बद्धः?

- (a) कान्धारः
- (b) मार्सिक
- (c) गुजरा
- (d) रुमिनदेई

Ans : (a) कान्धारः का लेख दो भाषाओं में है यह अशोक द्वारा लिखाया गया था इसकी भाषा-यूनानी तथा अरामाई है यह इस समय अफगानिस्तान में है।

32. अद्वैतमते जगतः अस्ति

- (a) नित्यत्वम्
- (b) मिथ्यात्वम्
- (c) पारमार्थिकत्वम्
- (d) ब्रह्मपरिणामौत्सुक्यम्

Ans : (b) अद्वैतमत में जगत् को मिथ्या कहा गया है। यह व्यावहारिक सत्ता में सत्य है परन्तु पारमार्थिक सत्ता में यह जगत् मिथ्या है शङ्काचार्य ने कहा भी है-

'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या'। अर्थात् ब्रह्म सत्य है एवं जगत् मिथ्या।

33. विवर्तस्य उदाहरणमस्ति

- (a) गगनकुसुमम्
- (b) बन्ध्यासुतः
- (c) सुविकारजतम्
- (d) रवपुष्पम्

Ans : (c) अद्वैत मत में विकार दो प्रकार का होता है

- 1. परिणाम- जैसे दूध से दही बनना
- 2. विवर्त- जैसे सुक्ति को चाँदी समझना अर्थात् पूर्व वस्तु का कोई परिणाम नहीं है फिर भी हम उसे समझ लेते हैं जैसे रस्सी में सर्प को देखना। यही विवर्त का उदाहरण है।

34. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्त्वानि सन्ति

- (a) षोडश
- (b) सप्तदश
- (c) पञ्चविंशति
- (d) दश

Ans : (c) सांख्यदर्शन में 25 तत्त्व स्वीकृत हैं।

पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चतन्मात्रायें, पञ्चमहाभूत, अहंकार, महत्, प्रकृति तथा पुरुष ये पच्चीस तत्त्व हैं।

35. पुरुषप्रकृत्योः संसर्गो वर्णितः

- (a) जडाजडवत्
- (b) पङ्गवन्धवत्
- (c) मूकबधिरवत्
- (d) अन्धमालावत्

Ans : (b) सांख्य के अनुसार पुरुष तथा प्रकृति के संयोग से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है। तथा पुरुष और प्रकृति का संसर्ग पङ्गवन्धवत् होता है अर्थात् पङ्गु की भाँति पुरुष है तथा अन्धे की भाँति प्रकृति है दोनों स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं कर सकते हैं जब दोनों एक दूसरे से मिल जाते हैं तो सृष्टि हो जाती है।

36. अर्थसङ्ग्रहे विशिष्टविधेः उदाहरणमस्ति

- (a) दध्ना जुहोति
- (b) अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः
- (c) सोमेन यजेत्
- (d) राजा राजसूयेन स्वर्गराज्यकामो यजेत

Ans : (c) अर्थसङ्ग्रह के अनुसार विशिष्टविधि का उदाहरण सोमेन यजेत् है जबकि 'दध्ना जुहोति' गुणविधि का उदाहरण है। 'राजा राजसूयेन स्वर्गराज्यकामो यजेत्' यह अधिकारविधि का उदाहरण है। तथा अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः यह उत्पत्तिविधि का उदाहरण है।

37. विनियोगविधेः सहकारिप्रमाणानि सन्ति

- (a) त्रीणि
- (b) सप्त
- (c) पञ्च
- (d) षट्

Ans : (d) विनियोग विधि के छः सहकारिप्रमाण हैं-

(1) श्रुति, (2) लिंग (3) वाक्य (4) प्रकरण (5) स्थान (6) तथा समाख्या। यह अङ्गप्रधान सम्बन्ध की बोधक होती है।

38. अर्थसङ्ग्रहानुसारम् आख्यातेन किमुच्यते?

- (a) कर्ता
- (b) भावना
- (c) कर्म
- (d) करणम्

Ans : (b) अर्थसङ्ग्रह के अनुसार आख्यात् (अंश तथा लिङ्ग) से भावना कही जाती है। जैसे 'यजेत् स्वर्गकामः' वाक्य में आख्यात् है यज् धातु तथा लिङ्ग है लेट् लकार का तिप् ।

39. अर्थवादस्य लक्षणं किम्?

- (a) स्तुति-निन्दान्यतरपरं वाक्यम्
- (b) समभिव्याहारो वाक्यम्
- (c) अपौरुषेयं वाक्यम्
- (d) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध बोधकं वाक्यम्

Ans : (a) प्राशस्त्य निन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः । यह अर्थवाद का लक्षण है "समभि व्यवहारो वाक्यम्" यह वाक्य का लक्षण है अपौरुषेयं वाक्यम् - वेदः "अङ्गप्रधान सम्बन्ध बोधको विधिः"- विनियोग विधि।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

40. 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' का उच्यते?

- (a) रामायणम् (b) महाभारतम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) श्रीमद्भागवतम्

Ans : (a) चतुर्विंशति साहस्री संहिता के नाम से वाल्मीकि कृत रामायण को कहा जाता है। चतुर्विंशति साहस्री अर्थात् 24000 श्लोकों वाला काव्य। इसी प्रकार से शतसाहस्री संहिता महाभारत को कहा जाता है।

41. 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' कुत्र वर्तते?

- (a) श्रीमद्भागवते (b) रामायणे
(c) ब्रह्माण्डपुराणे (d) महाभारते

Ans : (d) विष्णु सहस्रनाम स्रोत महाभारत में उपलब्ध होता है। अनुशासन पर्व के 149वें अध्याय के अनुसार कुरुक्षेत्र में बाणों की शय्या पर लेटे पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया था इसके तीन भाग हैं।

42. महाभारतस्य द्वितीयं पर्व किम्?

- (a) वनपर्व (b) सभापर्व
(c) भीष्मपर्व (d) विराटपर्व

Ans : (b) महाभारत में 18 पर्व हैं। सम्पूर्ण पर्व इस प्रकार हैं – (1) आदिपर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराटपर्व (5) उद्योगपर्व (6) भीष्मपर्व (7) द्रोणपर्व (8) कर्णपर्व (9) शल्यपर्व (10) सौप्तिकपर्व (11) स्त्रीपर्व (12) शान्तिपर्व (13) अनुशासनपर्व (14) अश्वमेधपर्व (15) आश्रमवासीपर्व (16) मौसलपर्व (17) महाप्रस्थानिकपर्व (18) स्वर्गरोहणपर्व।

43. ब्रह्मवैवर्तपुराणं निबद्धं वर्तते

- (a) खण्डेषु (b) पर्वसु
(c) काण्डेषु (d) स्कन्धेषु

Ans : (a) ब्रह्मवैवर्तपुराण चार खण्डों में विभाजित है। (1) ब्रह्मखण्ड (2) प्रकृतिखण्ड (3) श्री कृष्ण जन्म खण्ड (4) गणेश खण्ड। जिनमें से गणेशखण्ड 18000 श्लोकों वाला है।

44. महापुराणेषु न गण्यते

- (a) कालिकापुराणम् (b) स्कन्दपुराणम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) अग्निपुराणम्

Ans : (a) पुराणों की संख्या 18 है तथा उपपुराणों की संख्या भी 18 है। कालिकापुराण उपपुराण के अन्तर्गत आता है जबकि स्कन्धपुराण, विष्णु पुराण तथा अग्निपुराण की गणना महापुराणों में की जाती है।

45. श्रीमद्भागवते श्रीकृष्णस्य ज्येष्ठपुत्रस्य किं नाम?

- (a) साम्बः (b) प्रद्युम्नः
(c) सङ्कर्षणः (d) अनिरुद्धः

Ans : (b) श्रीमद्भागवत के अनुसार श्री कृष्ण की आठ पत्नियाँ थीं आठों के दश-दश पुत्र थे रुक्मिणी के 10 पुत्र थे- प्रद्युम्न, चारुदेवल, सुदेवल, चारुदेह, सुचारू, विचारू, चारू, चरुगुप्त, भट्टचारू तथा चारुचंद्रा। अतः श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र का नाम प्रद्युम्न था।

46. 'रासपञ्चाध्यायीः' कुत्र वर्तते?

- (a) महाभारते (b) रामायणे
(c) अग्निपुराणे (d) श्रीमद्भागवते

Ans : (d) रासपञ्चाध्यायी श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में है यह उन्तीसवें अध्याय से तैंतीसवें अध्याय तक के पाँच अध्यायों का नाम रासपञ्चाध्यायी है।

47. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थाधिकरणं वर्तते

- (a) कण्टकशोधनम् (b) षाड्गुण्यम्
(c) धर्मस्थीयम् (d) विनयाधिकारिकम्

Ans : (a) अर्थशास्त्र आचार्य कौटिल्य की कृति है यह राजनीति विज्ञान का विश्वकोश कहा जाता है यह 15 अधिकरणों 150 अध्यायों तथा 180 प्रकरणों में विभाजित है इसके चतुर्थ अधिकरण का नाम कण्टकशोधन है, प्रथम अधिकरण का नाम विनयाधिकरण, तृतीय अधिकरण का नाम धर्मस्थीय तथा सप्तम अधिकरण का नाम षाड्गुण्य अधिकरण है।

48. सन्धिकर्म कुत्रोपरिष्ठम् ?

- (a) धर्मस्थीये (b) अध्यक्षप्रचारे
(c) योगवृत्ते (d) षाड्गुण्ये

Ans : (d) सन्धि आदि छः गुणों का प्रतिपादन षाड्गुण्य नामक सप्तम अधिकरण में किया गया है इसका पहला सूत्र है 'षाड्गुण्यसमुद्देशः'।

49. सामवेदः सम्प्राप्तः

- (a) रवेः (b) अग्नेः
(c) वायोः (d) वरुणात्

Ans : (a) सामवेद को सूर्य से ऋषियों ने प्राप्त किया है इसके प्राप्तकर्ता जैमिनि हैं। इसी प्रकार अग्नि से ऋग्वेद प्राप्त हुआ है, वायु से यजुर्वेद प्राप्त हुआ है तथा वरुण से अथर्ववेद प्राप्त हुआ है।

50. मनुना अन्नप्राशनस्य काल उक्तः

- (a) द्वितीये मासे (b) चतुर्थे मासे
(c) षष्ठे मासे (d) अष्टमे मासे

Ans : (c) मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित 16 संस्कार होते हैं मनु ने मनुस्मृति में प्रत्येक संस्कारों का काल बताया है कि किस समय कौन सा संस्कार करना चाहिए मनु के अनुसार बालक का अन्नप्राशन संस्कार जन्म के छठे मास में करना चाहिए।

51. याज्ञवल्क्यशिक्षा वस्त्रस्य वृद्धिरुक्ता

- (a) द्विगुणा (b) त्रिगुणा
(c) चतुर्गुणा (d) पञ्चगुणा

Ans : (c) याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार व्यवहार अध्याय के 39 श्लोक ऋणदान प्रकरण में वस्त्र, धान्य तथा स्वर्ण की अधिकतम वृद्धि क्रमशः चौगुनी, तिगुनी तथा दुगुनी कही गयी है। 'वस्त्र, धान्य, हिरण्यानां, चतुर्गुणा परा'।

52. राजा निधि लब्ध्वा ततः कियन्ते गृहणीयात्?

- (a) अर्धम् (b) षष्ठांशम्
(c) दशांशम् (d) सर्वम्

Ans : (a) याज्ञवल्क्य स्मृति की व्यवहाराध्याय के 34 श्लोक के अनुसार राजा ऋणी से धन लेकर ऋणदाता को दिलाये तथा उससे दशांश स्वयं वसूले। राजा लब्ध्वा निधिं दद्याद्द्विजेष्वर्धं द्विजः पुनः।

53. ईर्ष्यां गण्यते

- (a) कामजगणे (b) लोभजगणे
(c) मोहजगणे (d) क्रोधजगणे

Ans : (d) काम से उत्पन्न 10 दोष होते हैं तथा क्रोध से उत्पन्न आठ दोष होते हैं, ईर्ष्या की गणना क्रोधजगण में की जाती है (1) चुगली करना (2) दुस्साहस (3) ईर्ष्या (4) द्रोह (5) असूया (6) अर्थदोष (7) कठोर वचन (8) कठोर दण्ड

54. 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामुषित्विषः संवलित विरेजिरे' - इत्यत्र रथाङ्गपाणिः कः?

- (a) नारदः (b) रावणः
(c) कृष्णः (d) शिशुपालः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिता विरेजिरे' में रथाङ्गपाणि शब्द श्री कृष्ण हेतु आया है। रथाङ्गपाणि का अर्थ है हाथ में चक्र धारण करने वाले श्रीकृष्ण।

55. 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।' -कम्प्रति कस्येयमुक्तिः?
- (a) हंसं प्रति नलस्य (b) नलं प्रति हंसस्य
(c) दमयन्तीं प्रति नलस्य (d) नलंप्रति दमयन्त्याः

Ans : (b) नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का 133वाँ श्लोक 'फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः' यह हंस कह रहा है राजा नल के प्रति। कमलो के फल तथा मूल से ही मेरी जीविका मुनि की वृत्ति की भाँति है।

56. लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः । मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव॥ -इयमुक्तिः कामुदिदृश्य कथिता?
- (a) शकुन्तलाम् (b) द्रौपदीम्
(c) महाश्वेताम् (d) सागरिकाम्

Ans : (d) लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः । मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव॥ यह उक्ति रत्नावली में उदयन के द्वारा सागरिका के प्रति कही गयी है। रत्नावली नाटिका चार अंकों में विभक्त है इसके प्रथम अंक का नाम मदन महोत्सव है।

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत
- (A) विचित्रा खलु चित्तवृत्तयः 1. उत्तररामचरितम्
(B) पतत्यधी धाम विसारि 2. हर्षचरितम्
सर्वतः
(C) तीर्थोदकं च वह्निश्च 3. किरातार्जुनीयम्
नान्यतः शुद्धिमर्हतः
(D) लोके हि लोहेभ्यः 4. शिशुपालवधम्
कठिनतरा खलु स्नेहमया
बन्धनपाशाः
- | | A | B | C | D |
|-----|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 2 | 3 | 1 |
| (b) | 1 | 3 | 4 | 2 |
| (c) | 2 | 1 | 3 | 4 |
| (d) | 3 | 4 | 1 | 2 |

Ans : (d) विचित्रा खलुचित्तवृत्तयः - किरातार्जुनीयम्
पतत्यधी धाम विसारिसर्वतः - शिशुपालवधम्
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः - उत्तररामचरितम्
लोके हि लोहेभ्यः कठिनतरा खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः - हर्षचरितम्

58. अवान्तरार्थविच्छेदे किमच्छेदकारणम् ?
- (a) बीजम् (b) बिन्दु
(c) पताका (d) प्रकरी

Ans : (b) दशरूपक के प्रथम उद्योत में धनञ्जय ने अर्थ प्रकृतियों को बताया है। ये पाँच होती हैं- बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु में विच्छेद होने पर उसके अविच्छेद का कारण जो होता है उसे बिन्दु कहते हैं। 'अवान्तरार्थ विच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्' दशरूपक 1/26।

59. अभवन्वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पक-
- (a) उपमा (b) अपह्नुति
(c) निदर्शना (d) उत्प्रेक्षा

Ans : (c) 'अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः निदर्शना' आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के 10वें उल्लास में इसका वर्णन किया है।

60. वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षेपार्थः मध्यपात्रप्रयोजितः -कः?
- (a) अङ्कास्यम् (b) अङ्कावतारः
(c) प्रवेशकः (d) विष्कम्भकः

Ans : (d) वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भक मध्यपात्र प्रयोजितः यह लक्षण विष्कम्भक का है। विष्कम्भक का प्रयोग नाटक में कथा का निर्देश देने के लिये किया जाता है।

61. हर्षचरिते रसायनः कः?
- (a) व्याधिः (b) औषधिः
(c) वैद्यकुमारकः (d) राजसूनुः

Ans : (c) हर्षचरित नामक अख्यायिका बाणभट्ट द्वारा रचित है। राजाहर्ष को राजवैद्य का पुत्र रसायन था यह अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में था। जिसकी उम्र 18 वर्ष की थी राजा हर्ष उससे अपने पिता के विषय में पूछते हैं पिता जी का स्वास्थ्य ठीक होगा या नहीं।

62. रावणभयात् हेमाद्रिगुहागृहान्तरं कः दिवसानि निनाय?
- (a) कृष्णः (b) कौशिकः
(c) नारदः (d) वसुदेवः

Ans : (b) रावण के भय से हेमाद्रि की गुफा के अन्दर कुशिक ऋषि के वंश में उत्पन्न कौशिक या विश्वामित्र अपना समय बिताते थे राक्षसों से रक्षा के लिये ही दशरथ से राम तथा लक्ष्मण की याचना की थी।

63. विबुधसद्धानि अप्सरसां कति कुलानि कादम्बर्याम् उक्तानि?
- (a) द्वादश (b) त्रयोदश
(c) चतुर्दश (d) पञ्चदश

Ans : (c) कादम्बरी के महाश्वेता वृत्तान्त में देवलोक में अप्सरा नाम की जो कन्याएँ हैं उनके 14 कुल बताये गये हैं। 'यथा विबुध सदमनि अप्सरसो नाम कन्यकाः सन्ति इति ताषां चतुर्दश कुलानि, एकं भगवतः कमलयोनेर्मनसः समुत्पन्नम्।

64. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करण प्रवृत्तयः।' इत्यत्र कोऽलङ्कारः।
- (a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) सन्देहः (d) अर्थान्तरन्यासः

Ans : (d) यह 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के प्रथम अंक का 22वाँ श्लोक है इसमें दुष्यन्त शकुन्तला के प्रति अपने मन में चिन्तन करता है यहाँ पर-
असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु
प्रमाणमन्तः करण प्रवृत्तयः ॥ अभि. 1/22 ।
इस श्लोक में पूर्वार्ध विशेष का उत्तरार्ध सामान्य के द्वारा समर्थन किया गया है।

65. 'अन्यदेवसहृदयलोचनामृतं तत्त्वान्तरे तद्वदेव सोऽर्थः' - ध्वन्यार्थः कः आशयः ?
- (a) अभिधेयार्थः (b) प्रतीयमानार्थः
(c) लक्ष्यार्थः (d) सर्वार्थः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) अन्यदेव सहृदयलोचनामृतं तत्त्वान्तरे तद्वदेव सोऽर्थः = प्रतीयमानधिः। आचार्य आनन्दवर्धन ने काव्य के दो भेद माने हैं (1) वाच्यभेद (2) प्रतीयमान।

66. अङ्गिनो रसस्य अचलस्थितयो धर्मा के।

- (a) गुणाः (b) रीतयः
(c) अलङ्काराः (d) रसाः

Ans : (a) आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश के अष्टम उल्लास में काव्यगुण के स्वरूप के सन्दर्भ में इस इस श्लोक को कहा गया है- ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादयः इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः ।।

67. मण्डपसन्निवेशेषु नाट्यशास्त्रे न गण्यते?

- (a) चतुरस्रः (b) त्रयस्रः
(c) वर्तुलः (d) विकृष्टः

Ans : (c) मण्डप सन्निवेश के विषय में भरत कृत नाट्यशास्त्र में बताया गया है कि

देवताओं के लिये - विकृष्ट - 108 हस्त
मनुष्यों के लिये- चतुरस्रः - 32×64
शूद्रों के लिये- त्रयस्र - 32 हस्त

68. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः

शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः

इत्युक्ता कः प्रेरितः?

- (a) अर्जुनः (b) युधिष्ठिरः
(c) वनेचरः (d) सुयोधनः

Ans : (b) कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः। इन पंक्तियों में द्रौपदी युधिष्ठिर के प्रति कह रही हैं। जैसे उठती हुई लपट शुष्क शमी वृक्ष को जला देती है उसी प्रकार से उद्दीप्त क्रोध आपको क्यों नहीं जला रहा है। यह उक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के 32वें श्लोक से ली गयी है।

69. 'यत्किञ्चित्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं नाट्यशास्त्रे तत् केनोपमीयते?

- (a) हास्येन
(b) शृङ्गारेण
(c) शान्तेन
(d) वीरेण

Ans : (b) यत्किञ्चित्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं यह नाट्य शास्त्र में शृङ्गार को बताया गया है।

नोट - नाट्यशास्त्र भरतमुनि द्वारा प्रणीत है। इसमें 36 अध्याय है।

70. तर्कसंग्रहानुसारं शीतस्पर्शवत्त्वं कस्य लक्षणम्?

- (a) पृथिव्योः (b) जलस्य
(c) वायोः (d) परदुःखस्य

Ans : (b) तर्कसंग्रह के अनुसार नौ द्रव्यों में से जल का लक्षण दिया जा रहा है-

“शीतस्पर्शवत् आपः”। सा द्विविधाः नित्या अनित्या च। नित्या परमाणुरूपा अनित्या कार्यरूपा।

71. तर्कसंग्रहानुसारं तेजसविनयः कतिविधिः ?

- (a) विविधः (b) द्विविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (c) तर्कसंग्रह के नौ द्रव्यों में तेज के लक्षण को प्रस्तुत किया जा रहा है- “उष्णस्पर्शवत्तेजः” पुनः उस तेज के तीन प्रकार हैं-शरीर, इन्द्रिय, विषय। उसमें से विषय के चार प्रकार हैं-भौमदिव्यौदर्याकरजभेदात् ।

1. भौम तेज 2. दिव्य तेज 3. औदर्य तेज
4. आकरज तेज

72. तर्कसंग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम् -

- (a) चतुर्विधम् (b) त्रिविधम्
(c) पञ्चविधम् (d) सप्तविधम्

Ans : (d) तर्कसंग्रह में पृथ्वी का लक्षण- “तत्र गन्धवती पृथ्वी”। पृथ्वी के रूप का लक्षण -चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम् । ‘पृथिव्यां सप्तविधम्’ ऐसा कहा गया है।

73. शुक्ती इदं रजतम् इति ज्ञानम् अस्ति-

- (a) प्रमा (b) उपमितिः
(c) यथार्थानुभवः (d) अप्रमा

Ans : (d) “तद भावयति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः”। यथा - शुक्ती “इदं रजतम्” यह ज्ञान। अर्थात् जिसमें जो नहीं है उसमें उसका अनुभव अयथार्थ अनुभव है। जैसे- सीपी में रजत का ज्ञान ही अप्रमा है।

74. पञ्चावयवप्रयोग एव

- (a) स्वार्थानुमानम् (b) निगमनम्
(c) उदाहरणम् (d) परार्थानुमानम्

Ans : (d) न्यायमत में अनुमान दो प्रकार का होता है। (1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान। स्वार्थानुमान हेतु परामर्श की आवश्यकता होती है तथा परार्थानुमान हेतु पञ्चावयव की आवश्यकता होती है।

(1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण (4) उपनय तथा (5) निगमन

75. अधोलिखितयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(A) अर्थाबाधो	1. अप्रमाणम्
(B) गौरश्वः पुरुष इति	2. योग्यता
(C) प्रहरे प्रहरे	3. योग्यताभाववत्
(D) अग्निना सिञ्चति	4. सन्निधि-अभाववन्ति

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	3	2	4
(c)	3	2	4	1
(d)	2	3	4	1

Ans : (a) प्रस्तुत स्थल पर न्याय के द्वारा दिया गया शब्द प्रमाण के विषय में विचार स्थापित किया गया है।

अर्थाबाधो - योग्यता

गौरश्वः पुरुष इति -अप्रमाणम्।

प्रहरे प्रहरे उच्चरितपदानि - सन्निधि अभाववन्ति।

अग्निना सिञ्चति - योग्यताभाववत् ।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2014

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains seventy five (75) objective type questions of two(2) marks each. All questions are compulsory.

सूचना: इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् परिमिताः (50) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' इति सूक्ति केन वेदेन सम्बद्धा ?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b) 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' यह सूक्ति शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा से सम्बन्धित 'ईशावास्योपनिषद्' की है। इसमें 18 मन्त्र हैं। जबकि इसी शाखा का 34 वाँ अध्याय शिवसङ्कल्प सूक्त है।

2. नासत्यौ इति कयोः नाम ?

- (a) द्यावापृथिव्योः (b) इन्द्रावरुणयोः
(c) अग्नीषोमयोः (d) अश्विनोः

उत्तर (d) नासत्यौ यह अश्विन देवता का विशेषण है। यह द्युस्थानीय देवता है ऋग्वेद के लगभग 50 सूक्तों में इसका उल्लेख है।

इनके अन्य विशेषण - दस्त्रा (अद्भुत) हिरण्यावर्तन (स्वर्णिम मार्ग वाले) इनको सूर्यपुत्री (सूर्या) का पति बतलाया गया है।

3. काण्वशाखा कस्य वेदस्य ?

- (a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

उत्तर (b) यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है -

- (i) कृष्णयजुर्वेद की शाखा - तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल
(ii) शुक्लयजुर्वेद की शाखा - माध्यन्दिन तथा काण्व जबकि
(iii) ऋग्वेद की शाखा - शाकल, वाष्कल इत्यादि
(iv) सामवेद की शाखा - जैमिनीय, राणायनीय, कौथुमीय
(v) अथर्ववेद की शाखा - पैप्पलाद, शौनक

अतः उत्तर (b) सही है।

4. समीचीनम् उत्तरं चिनुतः

- (A) प्रश्नोपनिषद् 1. शुक्लयजुर्वेद
(B) शिक्षावल्ली 2. अथर्ववेदस्य पैप्पलादशाखा
(C) ईशावास्योपनिषद् 3. कृष्णयजुर्वेदः
(D) श्वेताश्वतरोपनिषद् 4. तैत्तिरीयोपनिषद्

A B C D

- (a) 1 2 4 3
(b) 2 4 1 3
(c) 2 4 3 1
(d) 1 4 2 3

उत्तर (b) दिए गये विकल्पों में सही सुमेलित उत्तर इस प्रकार हैं-

प्रश्नोपनिषद्	-	अथर्ववेदस्य पैप्पलादशाखा
शिक्षावल्ली	-	तैत्तिरीयोपनिषद्
ईशावास्योपनिषद्	-	शुक्लयजुर्वेदः
श्वेताश्वतरोपनिषद्	-	कृष्णयजुर्वेदः

5. सामवेदेन सम्बद्धा अस्ति

- (a) छान्दोग्योपनिषद् (b) कठोपनिषद्
(c) ईशावास्योपनिषद् (d) ऐतरेयोपनिषद्

उत्तर (a) छान्दोग्योपनिषद् का सम्बन्ध सामवेद से है। प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् एवं माण्डुक्योपनिषद् का सम्बन्ध अथर्ववेद से है जबकि कठोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से एवं ईशावास्योपनिषद् का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद से है।

6. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इति कुत्र विद्यते ?

- (a) ऋग्वेदे (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) अथर्ववेदे (d) ऐतरेयोपनिषदि

उत्तर (b) - 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' यह बृहदारण्यकोपनिषद् से सम्बन्धित है। यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। यह सबसे बड़ा उपनिषद् है जिसमें 6 अध्याय हैं। इससे भिन्न ऐतरेय उपनिषद् का सम्बन्ध ऋग्वेद से है एवं प्रश्नोपनिषद् का सम्बन्ध अथर्ववेद से है।

7. वरुणस्य विशेषणम् अस्ति

- (a) उरुचक्षा (b) वज्रहस्तः
(c) गोपाः (d) बलदाः

उत्तर (a) उरुचक्षा वरुण का विशेषण है इनका निवास स्थान द्युलोक है इसका 12 सूक्तों में वर्णन किया गया है। इसके ऋषि कक्षीवान हैं। इसके अन्य विशेषण इस प्रकार हैं - ऋतगोपा, असुर, मायावी उरुशंस आदि।

8. 'ज्योतिषम्' इति वैदिककालनिर्धारणस्य आधारः केन प्रतिपादितः ?

- (a) मैक्समूलरेण (b) कीथमहोदयेन
(c) बालगङ्गाधरतिलकेन (d) विण्टरनिज़महोदयेन

उत्तर (c) वैदिक काल का निर्धारण बालगङ्गाधरतिलक ने 4000-2500 ई0 पूर्व0 माना है। उन्होंने ज्योतिष के आधार पर ही वैदिक काल का निर्धारण किया है वे नक्षत्र सम्पात गणना के आधार पर वैदिक काल का निर्धारण किया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

9. याज्ञवल्कीयशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा ?

- (a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (c) याज्ञवल्कीय शिक्षा का सम्बन्ध यजुर्वेद से है इस वेद के अन्य शिक्षाग्रन्थ वशिष्ठीय भारद्वाजीय शिक्षा है जबकि ऋग्वेद के शिक्षाग्रन्थ-पाणिनीय शिक्षा एवं सामवेद के शिक्षाग्रन्थ नारदीय, शाकटायनीय एवं अथर्ववेद का शिक्षाग्रन्थ माण्डूकी शिक्षा हैं।

10. भाव-काल-कारक-साङ्ख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः भवन्ति

- (a) नाम्नः (b) निपातस्य
(c) उपसर्गस्य (d) आख्यातस्य

उत्तर (d) भाव-काल-कारण साङ्ख्याश्च इति चत्वारः अर्थाः आख्यातस्य भवन्ति। यास्क ने चार प्रकार के पदों को माना है – नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात। इसमें से आख्यात का लक्षण – ‘भावप्रधानम् आख्यातम्’ कहा गया है।

11. वैदिकशब्दानां सविस्तारं विवेचनं कुत्र उपलभ्यते ?

- (a) व्याकरणे (b) कल्पे
(c) निरुक्ते (d) शिक्षायाम्

उत्तर (c) वैदिक शब्दों का सविस्तार विवेचन निरुक्त में किया गया है इसमें गौ शब्द से लेकर अग्नि तक के वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति का वर्णन है।

वैश्वानर – विश्वान् नरान् नयति।
अग्नि – अग्रणी भवति। अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते।
उदक – उन्न्तीति उदकम्।

12. अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत्

- (a) निरुक्तम् (b) व्याकरणम्
(c) छन्दस् (d) ज्योतिषम्

उत्तर (a) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में ‘अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तत्’ ऐसा कहा गया है। इसमें चार प्रकार के पदों को बताया गया है। उसमें से ‘भावप्रधानम् आख्यातम्’ ऐसा आख्यात के लिए कहा गया है।

13. वैदिकमन्त्रोच्चारणप्रयोजनार्थं कस्य वेदाङ्गस्य अध्ययनम् अनिवार्यम् ?

- (a) छन्दसः (b) कल्पस्य
(c) ज्योतिषस्य (d) निरुक्तस्य

उत्तर (a) वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के लिए वेदाङ्गों में ज्योतिष के अध्ययन को अनिवार्य बताया गया है। इसे वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकार किया गया है।

14. ‘छन्दः सूत्रम्’ इत्यस्य रचयिता कः ?

- (a) दुर्गाचार्यः (b) यास्काचार्यः
(c) पिङ्गलाचार्यः (d) माधवाचार्यः

उत्तर (c) ‘‘छन्दः पादौ तु वेदस्य’’।

छन्द को वेद रूपी पुरुष के पाद (पैर) के रूप में स्वीकार्य किया गया है।

Note– ‘छन्दशास्त्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं। जबकि यास्काचार्यः निरुक्त के रचयिता हैं।

15. प्रत्ययसर्गः कतिविधः ?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर (c) ईश्वरकृष्ण की साङ्ख्यकारिका में प्रत्यय सर्ग के चार भेद बताए गये हैं।

विपर्यय अशक्ति तुष्टि सिद्धि

5 प्रकार अशक्ति 28 तुष्टि 9 सिद्धि 8

ये चार बुद्धि के परिणाम हैं और पारस्परिक अभिभव के कारण इसके 50 भेद होते हैं।

16. साङ्ख्यानुसारं सृष्टिकारणं किम् ?

- (a) पुरुषः (b) प्रकृतिः
(c) ब्रह्म (d) प्रकृति-पुरुषसंयोगः

उत्तर (d) साङ्ख्य में सृष्टि का कारण प्रकृति एवं पुरुष का संयोग बताया गया है। इसमें प्रकृति एवं पुरुष के बीच पङ्ग्वन्धवतन्याय सम्बन्ध को बताया गया है। इन दोनों के संयोग के पश्चात् ही सृष्टि की उत्पत्ति बताई गई है।

17. साङ्ख्यै कति तत्त्वानि स्वीकृतानि ?

- (a) त्रयोदश (b) पञ्चदश
(c) चतुर्विंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

उत्तर (d) साङ्ख्य में 25 तत्वों की विवेचना की गई है।

प्रकृति-महतत्त्व-अहङ्कार { पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ बुद्धि और मन
पञ्चतन्मात्राएँ – पञ्चमहाभूत

18. उपमितिः नाम

- (a) संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्धज्ञानम् (b) संज्ञा-ज्ञानम्
(c) संज्ञिज्ञानम् (d) सादृश्यज्ञानम्

उत्तर (a) तर्कसङ्ग्रह में चार प्रमाणों की विवेचना की गई है। उसमें से उपमान प्रमाण को बताया जा रहा है। उपमितिकरणमुपमानम्। संज्ञा-संज्ञि सम्बन्ध ज्ञानमुपमितिः तत्करणं सादृश्यज्ञानं।

19. शब्दज्ञानं नाम

- (a) अक्षरज्ञानम् (b) शब्दज्ञानम्
(c) शक्तिज्ञानम् (d) वाक्यार्थज्ञानम्

उत्तर (d) चारों प्रमाणों में शब्द प्रमाण को बताया जा रहा है – ‘‘आप्तवाक्यं शब्दः’’ अर्थात् आप्त पुरुष के वाक्य को शब्द प्रमाण कहते हैं।

Note– आकांक्षा योग्यता एवं सन्निधि ये तीन वाक्यार्थ ज्ञान के हेतु अर्थात् सहकारी कारण हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

20. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः ?

- (a) पञ्चविधः (b) चतुर्विधः
(c) षड्विधः (d) त्रिविधः

उत्तर (c) – इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छ प्रकार का होता है।

1. संयोग 2. संयुक्तसमवाय 3. संयुक्तसमवेत समवाय 4. समवाय 5. समवेतसमवाय 6. विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष।

21. नित्यद्रव्यवृत्तिः विशेषास्तु एव।

- (a) अनन्ता (b) पञ्च
(c) षट् (d) चत्वारः

उत्तर (a) – सप्तपदार्थो- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय, अभाव में से विशेष का लक्षण- नित्यद्रव्यवृत्तयोः विशेषास्त्वनन्ता एव। अर्थात् नित्य द्रव्य में रहने वाले विशेष तो अनन्त होते हैं।

22. वेदान्तसारानुसारम् अधिकारी भवति

- (a) ब्रह्मचारी (b) गृहस्थः
(c) साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता (d) अज्ञः

उत्तर (c) वेदान्तानुसारं साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता अधिकारी। अर्थात् अनुबन्धचतुष्टय में अधिकारी का लक्षण बताया गया है। जिसमें इस जन्म में या जन्मान्तर में काम्य एवं निषिद्ध कर्मों का त्याग कर, नित्य नैमित्तिक कर्मों को करने वाला साधनचतुष्टय से सम्पन्न प्रमाता ही अधिकारी होता है।

23. वेदान्तसारानुसारं कर्माणि

- (a) त्रिविधानि (b) पञ्चविधानि
(c) षड्विधानि (d) चतुर्विधानि

उत्तर (c) – वेदान्तसार में 6 प्रकार के कर्मों को बताया गया है। 1. काम्यकर्म 2. निषिद्धकर्म 3. नित्यकर्म 4. नैमित्तिककर्म 5. प्रायश्चित्तकर्म तथा 6. उपासनाकर्म।

24. वेदान्तसारानुसारं शरीराणि

- (a) चतुर्विधानि (b) पञ्चविधानि
(c) त्रिविधानि (d) षड्विधानि

उत्तर (a) वेदान्तसार के अनुसार 4 प्रकार के स्थूलशरीरों को बताया गया है। जरायुज, अण्डज, स्वेदज एवं उद्भिज्ज। अर्थात् गर्भाशय से उत्पन्न, अण्डे से उत्पन्न, पसीने से उत्पन्न, तथा धरती को भेद कर उत्पन्न होने वाले।

25. वेदान्तसारे लिङ्गाशरीराणि वर्णितानि

- (a) षोडशावयवानि (b) सप्तदशावयवानि
(c) एकादशावयवानि (d) द्वादशावयवानि

उत्तर (b) वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर सत्रह (17) अवयवों वाले लिङ्ग शरीर है – ये अवयव हैं- 5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 कर्मेन्द्रिय 5 वायु बुद्धि तथा मन। इसमें से अन्तःकरण की निश्चयात्मिका बुद्धि है।

26. विभाषा-संज्ञाविधायकं सूत्रं किम् ?

- (a) विभाषा चेः (b) विभाषा डिश्योः
(c) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ (d) न वेति विभाषा

उत्तर (d) विभाषा संज्ञासूत्र – ने वेति विभाषा अर्थात् निषेध और विकल्प को विभाषा कहा जाता है।

Note- कहीं पर कार्य का होना और कहीं पर कार्य का न होना इसी वैकल्पिक अवस्था की विभाषा संज्ञा होती है।

27. 'अपृक्त एकाल् प्रत्ययः' इति सूत्रे 'अल्' इत्यनेन किं गृह्यते ?

- (a) वर्णाः (b) धातवः
(c) स्वराः (d) प्रातिपदिकम्

उत्तर (a) अपृक्तसंज्ञा सूत्र – अपृक्त एकाल् प्रत्ययः। यहाँ अल् से वर्णों का ग्रहण किया गया है अल् प्रत्याहार के अन्तर्गत स्वर और व्यञ्जन् दोनों आते हैं।

यथा – सखान् + स् में स् प्रत्यय एक अल् वाला है।

28. भावलक्षणविषये का विभक्तिः ?

- (a) सप्तमी (b) षष्ठी
(c) पञ्चमी (d) चतुर्थी

उत्तर (a) “यस्य च भावेनभावलक्षणम्” अर्थात् जिसकी क्रिया से किसी दूसरे की क्रिया लक्षित हो (उसमें सप्तमी विभक्ति होती है)।

उदाहरणार्थ – “गोषु दुह्यमानासु गतः”।

गायों के दुहे जाते समय गया।

29. कारकप्रकरणे ण्यन्ताण्यन्तविचारः अधस्तनेषु कस्मिन् सूत्रे कृतः ?

- (a) गतिबुद्धिप्रत्ययवसानार्थं शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ
(b) अणुदित् सवर्णस्य
(c) णेरनिटि
(d) णो नः

उत्तर (a) – कारक प्रकरण के सन्दर्भ में ण्यन्ताण्यन्त का विचार गतिबुद्धिप्रत्ययवसानार्थं शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ। सूत्र से किया जाता है।

30. पञ्चमी विना सार्वविभक्तिकः 'अम्' भावः कस्मिन् समासे विधीयते ?

- (a) तत्पुरुषे (b) बहुव्रीहौ
(c) द्वन्द्वे (d) अव्ययीभावे

उत्तर (d) – अव्ययीभाव समास में सूत्र – “नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः” अर्थात् अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का लोप न हो, उसके स्थान पर अम् आदेश हो पञ्चमी विभक्ति को छोड़कर।

31. 'द्वयङ्गुलम्' इत्यत्र को लौकिकविग्रहः ?

- (a) द्वयोः अङ्गुल्यो समाहारः
(b) द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य
(c) द्वे अङ्गुली यस्य
(d) द्वि च अङ्गुलिश्च

उत्तर (b) – 'द्वयङ्गुलम्' इसका लौकिक विग्रह द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य और अलौकिक विग्रह द्वि औ अङ्गुलि औ होगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

32. अधस्तनयुग्मानां तालिकां चिनुत

(A) रात्राह्वाहाः पुंसि	1. उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्
(B) अक्ष्णोऽदर्शनात्	2. अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः
(C) नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः	3. अहोरात्रः
(D) अपवर्गे तृतीया	4. गवाक्षः
A	B	C	D
(a) 4	3	2	1
(b) 3	4	1	2
(c) 2	1	4	3
(d) 1	4	3	2

उत्तर (b) – सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

रात्राह्वाहाः पुंसि	–	अहोरात्रः
अक्ष्णोऽदर्शनात्	–	गवाक्षः
नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः	–	उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्
अपवर्गे तृतीया	–	अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः

33. सामान्यतया 'धि' इति संज्ञा कस्य भवति ?

(a) पुल्लिङ्ग-शब्दस्य	(b) स्त्रीलिङ्ग-शब्दस्य
(c) नपुंसकलिङ्ग-शब्दस्य	(d) अलिङ्ग-शब्दस्य

उत्तर (a) धि संज्ञा विधायक सूत्र – शेषो घ्यसखि है। सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्दों की धि संज्ञा होती है। सामान्यतः धि संज्ञा पुल्लिङ्ग शब्दों की होती है।

34. निर्धारणविषये कीदृशी विभक्तिव्यवस्था ?

(a) तृतीया-पञ्चम्यौ	(b) चतुर्थी-पञ्चम्यौ
(c) पञ्चमी-षष्ठीयौ	(d) षष्ठी-सप्तम्यौ

उत्तर (d) कारक प्रकरण में निर्धारण के सन्दर्भ में सूत्र आता है – “यतश्च निर्धारणम्” अर्थात् जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा (इन चारों में से किसी एक के द्वारा जिस समुदाय से उसके एक देश का पृथक्करण हो उस समुदाय शब्द में षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती है।

यथा – नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।

35. 'चोराद् भयम् चोरभयम्' इत्यत्र पञ्चमीविभक्तिः केन सूत्रेण ?

(a) पराजेरसोढः	(b) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(c) रुच्यर्थानां प्रियमाणः	(d) हेतौ

उत्तर (b) “चोराद् भयम् चोरभयम्” यहाँ पञ्चमी विभक्ति – “भीत्रार्थानां भयहेतुः” सूत्र से हुयी है। भयार्थक एवं त्राणार्थक धातुओं के प्रयोग में भय का कारण अपादान होता है – यथा – चोराद् विभेति, चोरात् त्रायते।

36. अधोषध्वनिः अस्ति

(a) ज्	(b) ध्
(c) त्	(d) अ

उत्तर (c) भाषा विज्ञान में ध्वनि के सन्दर्भ में अधोष ध्वनि – प्रथम एवं तृतीय वर्ण को कहा जाता है – जैसे – श्, ष्, स्, क्, च्, ट्, त्, प् है। जबकि द्वितीय एवं चतुर्थ वर्ण ऊष्म संज्ञक है।

37. समीचीनम् उत्तरं चिनुत

(A) यणः	1. स्पर्शाः
(B) शलः	2. प्रातिपदिकम्
(C) कादयोमावसानाः	3. अन्तस्थाः
(D) अर्थवदधातुरप्रत्ययः	4. ऊष्माणः

A	B	C	D
(a) 4	3	1	2
(b) 3	4	1	2
(c) 2	3	1	4
(d) 1	3	4	2

उत्तर (b) समीचीन उत्तर इस प्रकार है।

यणः	–	अन्तस्थाः
शलः	–	ऊष्माणः
कादयोमावसानाः	–	स्पर्शाः
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	–	प्रातिपदिकम्

38. “निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां

तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।” इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?

(a) दुष्यन्तस्य	(b) नलस्य
(c) रघोः	(d) रामचन्द्रस्य

उत्तर (b) – निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि। नलः सितच्छतितकीर्तिमण्डलः स राशिरासीन्महसां महाज्ज्वलः। यह श्लोक नैषधीयचरितम् के प्रथम सर्ग का प्रथम श्लोक है इसमें नल की कथा एवं उनके पराक्रम की व्याख्या की गई है।

39. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी कः ?

(a) विनयन्धरः	(b) जयन्धरः
(c) रुधिरप्रियः	(d) सुन्दरकः

उत्तर (a) – वेणीसंहार आचार्य भट्टनारायण का अद्वितीय नाटक है यह 6 अंकों में विभक्त है। इसमें वीर रस की प्रधानता है इसका आधार ग्रन्थ महाभारत है। इसमें दुर्योधन के कञ्चुकी का नाम विनयन्धर है।

40. ‘मनोरथा नाम तटप्रपाताः’ इयम् उक्तिः उपलभ्यते

(a) रत्नावल्याम्	(b) वेणीसंहारे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले	(d) कादम्बर्याम्

उत्तर (c) – ‘मनोरथा नाम तटप्रपाताः’ यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् की है। यह नाटक 7 अंकों में विभक्त है इसका आधार ग्रन्थ महाभारत का पद्मपुराण है। नायक एवं नायिका दुष्यन्त एवं शकुन्तला हैं।

41. ‘लक्ष्मीचाञ्चल्यम्’ अस्मिन्नुपवर्णितमस्ति

(a) नैषधचरिते	(b) रघुवंशे
(c) दशकुमारचरिते	(d) कादम्बर्याम्

उत्तर (d) – श्री बाणभट्ट विरचित कादम्बरीकथामुखम् का आधार ग्रन्थ (गुणाढ्य) की बृहत्कथा है यह शृंगार रस प्रधान है एवं मूलतः एक खण्ड में विभक्त है। इसी के अन्तर्गत लक्ष्मी के गुण-दोषों का वर्णन किया गया है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां विचिनुत

(A) रत्नावली	1. अश्वघोषः
(B) वेणीसंहारम्	2. हर्षः
(C) बालचरितम्	3. भट्टनारायणः
(D) बुद्धचरितम्	4. भासः

A	B	C	D
(a) 4	3	2	1
(b) 3	2	4	1
(c) 2	3	4	1
(d) 2	4	1	3

उत्तर (c) – सही सुमेलित विकल्प इस प्रकार है–

रत्नावली	–	हर्षः
वेणीसंहारम्	–	भट्टनारायणः
बालचरितम्	–	भासः
बुद्धचरितम्	–	अश्वघोषः

43. दशकुमारचरिते अयं प्रतिनायको भवति

(a) राजहंसः	(b) मानसारः
(c) राजवाहनः	(d) पुष्पोद्भावः

उत्तर (b) – दशकुमारचरितम् दण्डी की प्रसिद्ध रचना है यह रचना कथा के अन्तर्गत आती है इसमें तीन खण्ड हैं। प्रधान रस शृंगार है एवं नायक राजवाहन हैं एवं प्रतिनायक मानसार हैं।

44. रत्नावल्यां द्वितीयाङ्कस्य नाम

(a) मदनमहोत्सवः	(b) कदलीगृहम्
(c) सङ्केतः	(d) ऐन्द्रजालिकम्

उत्तर (b) – रत्नावली हर्ष की प्रसिद्ध नाटिका है। इसके द्वितीय अंक का नाम कदलीगृह है एवं प्रथम अंक का नाम मदनमहोत्सव तथा तृतीय अंक का नाम संकेत, और चतुर्थ अंक का नाम ऐन्द्रजालिक है।

45. कस्य काव्यं नारिकेलफलसम्मितम् ?

(a) भारवेः	(b) कालिदासस्य
(c) माघस्य	(d) बाणस्य

उत्तर (a) – भारवि के काव्य को नारियल के फल के समान बताया गया है। अर्थात् जैसे– नारियल ऊपर से कठोर एवं अन्दर से कोमल होता है। उसी प्रकार ये अपनी रचनाओं में अपने अर्थ गौरव से गागर में सागर भर देते हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना किरातार्जुनीयम् है इसमें 18 सर्ग हैं यह वीर रस प्रधान काव्य है।

46. “सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला

पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥”

कुत्र अस्ति अयं पद्यांशः ?

(a) नैषधचरिते	(b) रघुवंशे
(c) शिशुपालवधे	(d) मेघदूते

उत्तर (c) – सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला।

पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥

यह पद्यांश शिशुपालवधम् महाकाव्य से सम्बद्ध है। इसमें कवि शिशुपाल के द्वारा जगत के उत्पीड़न का वर्णन किया गया है कि अत्यन्त स्थिर स्वभाव, पतिव्रता नारी की तरह दूसरे जन्मों में भी पुरुष को प्राप्त होता है।

47. ‘वाक्यं रसात्मकं काव्यम्’ इत्यत्र रसमध्ये ग्रहणं कृतम्

(a) केवलं रसस्य	(b) केवलं भावस्य
(c) केवलं रसाभासस्य	(d) रस-भाव-तदाभासादीनाम्

उत्तर (d) – आचार्य विश्वनाथ विरचित साहित्यदर्पण में – काव्य का लक्षण करते हुए वे कहते हैं कि – “वाक्यं रसात्मकं काव्यं” अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। यहाँ रस से तात्पर्य – ‘रस-भाव तदाभासादीनाम्’ है, अर्थात् रस के मध्य इन सभी का ग्रहण किया गया है।

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः ?

(a) षोडश	(b) चतुर्विंशतिः
(c) अशीतिः	(d) द्वादश

उत्तर (c) – साहित्यदर्पण में साकल्य के मतानुसार लक्षणा के अस्सी (80) भेद स्वीकार किए गये हैं। शब्द की तीन शक्तियाँ हैं– **अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना**। लक्षणा के मुख्य रूप से रूढ़ि एवं प्रयोजन दो भेद हैं।

लक्षणा का उदाहरण – कलिङ्ग साहसिकः, गङ्गायां घोषः इत्यादि।

49. उत्साहः कस्य रसस्य स्थायिभावः ?

(a) रौद्रस्य	(b) करुणस्य
(c) वीरस्य	(d) वीभत्सस्य

उत्तर (c) – आचार्य विश्वनाथ ने 9 प्रमुख रसों की सत्ता को स्वीकार किया है। उसमें से शृंगार रस का स्थायी भाव रति है। इसका वर्ण श्याम है एवं देवता विष्णु हैं। वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है।

50. विश्वनाथमते काव्यशरीरे रसस्य का स्थितिर्वर्तते ?

(a) अलङ्कारवत्	(b) आत्मवत्
(c) गुणवत्	(d) रीतिवत्

उत्तर (b) – आचार्य विश्वनाथ कविराज ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ में काव्य का लक्षण – “वाक्यं रसात्मकं काव्यं” अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य होता है। इन्होंने काव्य रूपी शरीर में रस की स्थिति आत्मवत् माना है। और **रस्यते इति रसः** भी कहा है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2014

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains seventy five (75) objective type questions of two(2) marks each. All questions are compulsory.

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चसप्ततिः (75) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. ऋक्सामच्छन्दोजूषि कस्मात् समुत्पन्नानि ?

- (a) पुरुषविशेषात् (b) यज्ञ-विशेषात्
(c) वाचः (d) पृथिव्याः

उत्तर (b) ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त पुरुष सूक्त है इसके 9 वें मन्त्र में यह बताया गया है कि ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद यज्ञ से उत्पन्न हुए हैं।
'तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।' (10/90/9/पु0सू0)।

2. ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्त्र' इति पदस्य कोऽर्थः ?

- (a) प्रतिदिनम् (b) रात्रिन्दिवा
(c) अन्धकारः (d) अन्धकारनाशकः

उत्तर (d) ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे, 'दोषावस्त्र' इतिपदस्यार्थः अन्धकारनाशकोऽस्ति। अर्थात् ऋग्वैदिकसूक्त विशेष में दोषावस्त्र पद का अर्थ अन्धकार नाशक बताया गया है।

3. पापाचारिणो दस्योर्नाशकः वैदिकदेवः ?

- (a) इन्द्रः (b) अग्निः
(c) पूषन् (d) वरुणः

उत्तर (a) ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के 12 वें सूक्त के 10 वें मन्त्र में इन्द्र को दस्युहन्ता कहा गया है।
'दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः।' (ऋग्वेद 2/12/10)।

4. ऋग्वैदिकहिरण्यगर्भसूक्तस्य का देवता ?

- (a) अग्निः (b) इन्द्रः
(c) प्रजापतिः (d) वरुणः

उत्तर (c) हिरण्यगर्भ सूक्त के देवता प्रजापति हैं, अग्नि सूक्त के देवता अग्नि हैं, इन्द्र सूक्त के देवता इन्द्र हैं तथा वरुण सूक्त के देवता वरुण हैं।

5. छान्दोग्यब्राह्मणं केन सम्बद्धम् ?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (c) छान्दोग्यब्राह्मण सामवेद से सम्बद्ध है जबकि ऋग्वेद का ब्राह्मण – ऐतरेय तथा शांखायन है, यजुर्वेद का प्रसिद्ध ब्राह्मण-शतपथ है तथा अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।

6. 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते

- (a) नासदीयसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) पृथिवीसूक्ते (d) कालसूक्ते

उत्तर (a) सृष्टिस्थिति तथा प्रलय के विषय में ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के 129 वें सूक्त में कहा गया है। इसका देवता सृष्टि-स्थिति तथा प्रलयकर्ता परमात्मा है तथा ऋषि 'परमेष्ठी प्रजापति' हैं।

7. कठोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा ?

- (a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) शुक्लयजुर्वेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर (d) कठोपनिषद् – कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है जबकि ऋग्वेद से ऐतरेय तथा कौषीतकि उपनिषद्, शुक्ल यजुर्वेद से ईशावास्योपनिषद् तथा बृहदारण्यकोपनिषद् एवं अथर्ववेद से प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य सम्बन्धित हैं।

8. कृष्णयजुर्वेदस्य आरण्यकम् अस्ति

- (a) छान्दोग्यारण्यकम् (b) ऐतरेयारण्यकम्
(c) शांखायनारण्यकम् (d) तैत्तिरीयारण्यकम्

उत्तर (d) कृष्णयजुर्वेद के दो आरण्यक हैं तैत्तिरीय तथा मैत्रायणीय आरण्यक। छान्दोग्यारण्यकम् सामवेद से, ऐतरेयारण्यक ऋग्वेद से तथा शांखायनारण्यक भी ऋग्वेद से ही सम्बन्धित हैं।

9. कः वेदानां भाष्यकारः न अस्ति ?

- (a) माधवाचार्यः (b) सायणाचार्यः
(c) मल्लिनाथः (d) यास्काचार्यः

उत्तर (c) मल्लिनाथः वेदानां भाष्यकारोनास्ति। मल्लिनाथ ने अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्, तथा अमरकोषादि पर टीकाएँ लिखी हैं।

10. ऋक्समितिशाख्यानुसारेण स्वराणां सन्ति।

- (a) त्रिविधभेदाः (b) चतुर्विधभेदाः
(c) पञ्चविधभेदाः (d) नवविधभेदाः

उत्तर (a) ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार तीन प्रकार के स्वर होते हैं ये तीनों – आयाम - विश्रम्भ तथा आक्षेप के समान उदात्त अनुदात्त तथा स्वरित हाते हैं।

उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च त्रयः स्वराः ।
आयाम-विश्रम्भाक्षेपैस्त उच्यन्ते स्वरास्त्रयः ॥

11. "आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्" इति उक्तिः अस्ति

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर (b) 'आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्' यह केनोपनिषद् के दूसरे खण्ड के चतुर्थ मन्त्र से लिया गया है।

12. नैरुक्चं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।

प्रतिष्ठानं विधिश्चैव तदिहोच्यते॥ इति पूरयत

- (a) आरण्यकम् (b) पुराणम्
(c) ब्राह्मणम् (d) सूक्तम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (c) नैरुक्तं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणम् तदिहोच्यते ॥

-वाचस्पति मिश्र भामती टीका।

13. आरण्यकानि सम्बद्धानि सन्ति

(a) ब्रह्मचार्याश्रमेण	(b) गृहस्थाश्रमेण
(c) वानप्रस्थाश्रमेण	(d) संन्यासाश्रमेण

उत्तर (c) आरण्यक - वानप्रस्थाश्रय से सम्बद्ध है जबकि संहिता-ब्रह्मचर्य आश्रम से, ब्राह्मण गृहस्थ आश्रम से तथा उपनिषद्-संन्यास आश्रम से सम्बद्ध है।

14. “उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः” इति सूत्राणां सूत्रकारः कः ?

(a) पतञ्जलिः	(b) पाणिनिः
(c) सायणः	(d) यास्कः

उत्तर (b) “उच्चैरुदात्तः - (1-2-29), ‘नीचैरनुदात्तः’ (1-2-30), तथा समाहारस्वरितः - (1-2-31) ये तीनों सूत्र पाणिनि कृत अष्टाध्यायी से लिये गये हैं।

15. कः पाठः अष्टविधः ?

(a) क्रमपाठः	(b) पदपाठः
(c) विकृतिपाठः	(d) संहितापाठः

उत्तर (c) विकृतिपाठ आठ प्रकार का होता है -

1. जटा, 2. माला, 3. शिखा, 4. रेखा, 5. ध्वज, 6. दण्ड, 7. रथ तथा 8. धन।

16. पाणिनीयशिक्षानुसारं ‘वेदस्य श्रोत्रम्’ अस्ति

(a) छन्दः	(b) निरुक्तम्
(c) शिक्षा	(d) व्याकरणम्

उत्तर (b) निरुक्तं श्रोतमुच्यते पाणिनीय शिक्षा में निरुक्त को श्रौत्र कहा गया है जबकि छन्द को पाद, शिक्षा को घ्राण तथा व्याकरण को मुख कहा गया है।

17. ‘कल्पसूत्रम्’ इति पारिभाषिकी संज्ञा अस्ति

(a) श्रौतसूत्राणाम्	(b) गृह्यसूत्राणाम्
(c) धर्मसूत्राणाम्	(d) श्रौत-गृह्य-धर्मसूत्राणाम्

उत्तर (d) श्रौत, गृह्य, धर्म तथा शुल्ब सूत्र कल्प नाम से कहे जाते हैं अर्थात् कल्प के चार भेद हैं, शेष तीनों भी इसी में समाहित हो जाते हैं।

18. ‘छन्द’ इति वेदाङ्गस्य प्रतिनिधिग्रन्थः ‘छन्दःसूत्रम्’ केन रचितः ?

(a) पाणिनिना	(b) पतञ्जलिना
(c) व्याडिमुनिना	(d) पिङ्गलेन

उत्तर (d) पिङ्गल ने छन्दसूत्र, पतञ्जलि ने योगसूत्र, पाणिनि ने अष्टाध्यायी तथा व्याडि ने रसायनसूत्र लिखा एवं निरुक्त के रचयिता यास्काचार्य हैं।

19. ‘निघण्टु’ इति वैदिककोशस्य भाष्यरूपेण अस्ति

(a) छन्दःसूत्रम्	(b) महाभाष्यम्
(c) निरुक्तम्	(d) शिक्षासूत्राणि

उत्तर (c) ‘निरुक्त’ वैदिक कोश निघण्टु का भाष्य है यह आचार्य यास्क द्वारा किया गया है।

20. समीचीनम् उत्तरं चिनुत

(A) रक्तसंज्ञः	1. व्यञ्जनसन्निपातः
(B) ईदूदेदद्विवचनम्	2. समानाक्षराण्यादितः
(C) संयोगस्तु	3. अनुनासिकः
(D) अष्टौ	4. प्रगृह्यम्

	A	B	C	D
(a) 4	2	3	1	
(b) 3	4	1	2	
(c) 1	2	3	4	
(d) 3	2	4	1	

उत्तर (b) ‘रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः’, “ईदूदेदद्विवचनम् प्रगृह्यम्”, ‘संयोगस्तु व्यञ्जनसन्निपातः’, अष्टौ समानाक्षराणि ।
उष्मारेफी पञ्चमो नामिपूर्वः । युग्मौ सौष्माणौ ।

21. ‘गौतमधर्मसूत्रम्’ केन सम्बद्धम् ?

(a) ऋग्वेदेन	(b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन	(d) अथर्ववेदेन

उत्तर (c) गौतमधर्मसूत्र सामवेद से सम्बद्ध है, अथर्ववेद का कोई धर्मसूत्र नहीं है, ऋग्वेद का वशिष्ठ धर्मसूत्र है तथा यजुर्वेद के हारीत आदि अनेक धर्मसूत्र हैं।

22. ‘उन्नत्तीति’ निरुक्त्या अभिधीयते

(a) उदक्	(b) उषस्
(c) आदित्यः	(d) अग्निः

उत्तर (a) आचार्य यास्क ने उदक् शब्द की व्युत्पत्ति-उन्नत्तीति उदक्। तद्धि यत्र गच्छति, तन्न उन्नति क्लेदयति बताया है।
अग्नि के लिए अग्रणी होता है।

23. कति भावविकाराः ?

(a) पञ्च	(b) षड्
(c) सप्त	(d) नव

उत्तर (b) आचार्य वार्ष्पायणि ने छः प्रकार के भाव विकारों को बताया है- 1. जायते 2. अस्ति 3. विपरिणयते 4. वर्धते 5. अपक्षीयते 6. विनश्यति।

24. वर्णलोपस्य उदाहरणम् अस्ति

(a) आस्थात्	(b) ज्योतिः
(c) गतम्	(d) द्वारः

उत्तर (c) ‘गतम्’ यह वर्णलोप का उदाहरण है जैसे-
गम + क्त = गतम् । क्त के क् वर्ण का लशक्वतद्धिते सूत्र से इति सञ्ज्ञा तथा तस्यलोपः सूत्र से लोप हो गया है।

25. “अथ गौरित्यत्र कः शब्दः” इत्यनेन किं प्रतिपाद्यते ?

(a) ध्वनिः	(b) स्फोटः
(c) मात्रा	(d) स्वरः

उत्तर (a) महाभाष्यकार ने कहा है ‘प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्दः इत्युच्यते’ तस्माद् ध्वनिः शब्दः। अर्थात् ध्वनि ही शब्द है।

26. ‘आनि लोट्’ इत्यनेन किं विधीयते ?

(a) णत्वम्	(b) षत्वम्
(c) कुत्वम्	(d) मत्वम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (a) आनिलोट् (8/4/16।) इस सूत्र से णत्व आदेश होता है जैसे भू धातु से लोट् लकार में उत्तमपुरुष में मिप् लगाकर मेर्नि से भवानि बनता है पुनः उपसर्ग लगाने पर प्रभवाणि बनता है।

27. अधोऽङ्कितानां युग्मानां शुद्धां तालिकां चिनुत

- (A) टिड्ढाणञ्द्वयसज्जधन्वमात्रचयपृष्ठकृष्णञ्चवरपः 1. ईदयति
(B) लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः 2. ऐधिषत्
(C) आत्मनेपदेष्वनतः 3. यादृशी
(D) ग्लेयम् 4. पृच्छिलः

A	B	C	D
(a) 4	2	1	3
(b) 1	3	4	2
(c) 4	3	2	1
(d) 3	4	2	1

उत्तर (d) आत्मनेपदेष्वनतः से एध + झ् में झ् के स्थान पर अत् आदेश होकर – एधिषत् बनता है। टिड्ढाणञ्द्वयसज्जधन्वमात्रचयपृष्ठकृष्णञ्चवरपः 4/1/15। से डीप् प्रत्यय लगाकर यादृशी बनता है। ईदयति से ग्लेयम् बनता है। लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः से लच् प्रत्यय लगकर पृच्छिलः बनता है।

28. 'धर्ममुच्चरते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम् ?

- (a) उदश्चरः सकर्मकात् (b) अकर्मकाच्च
(c) पूर्ववत्सनः (d) समस्तृतीयायुक्तात्

उत्तर (a) 'उदश्चरः सकर्मकात्' (9/3/53) सूत्र से उत् उपसर्ग पूर्वक सकर्मक चर् धातु से आत्मने पद होता है धर्मम् + उत् + चरते अतः यहाँ धर्ममुच्चरते पद बनता है।

29. 'अनुकरोति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम् ?

- (a) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः (b) अनुपराभ्यां कृजः
(c) परेर्मृषः (d) व्याङ्परिभ्यो रमः

उत्तर (b) अनुकरोति अर्थात् अनुकरण करता है यहाँ पर अनुपराभ्यां कृतः (9/3/79।।) सूत्र से क्रियाकाल के कर्तृगामी होने पर गन्धन आदि अर्थ होने पर अनु अथवा परा उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से परस्मैपद होता है।

30. वाक्यपदीयकारेण स्फोटग्रहणाय कीदृशो ध्वनिनिर्दिष्टः ?

- (a) नित्यः (b) अनित्यः
(c) प्राकृतः (d) वैकृतः

उत्तर (c) वाक्यपदीय आचार्य भर्तृहरि की रचना है। इन्हें त्रिकाण्डी भी कहा जाता है। अस्य वाक्यपदीयकारेण स्फोटग्रहणाय प्राकृतः ध्वनिनिर्दिष्टः।

31. रङ्गवर्णे कति मात्रा निर्दिष्टाः ?

- (a) एका मात्रा (b) द्वे मात्रे
(c) तिस्रो मात्राः (d) बह्व्यो मात्राः

उत्तर (b) रङ्गवर्णे द्वे मात्रा निर्दिष्टाः। अर्थात् रङ्ग वर्ण में दो मात्राएँ हैं – जैसे र् अ ङ् ग् अ इस प्रकार से सिद्ध है।

32. 'ग्रासमन-नियमः' केन सम्बद्धः अस्ति ?

- (a) अर्थतत्त्वेन (b) ध्वनितत्त्वेन
(c) वाक्यतत्त्वेन (d) साहित्येन

उत्तर (b) ग्रासमान – नियम ध्वनि तत्त्व से सम्बन्धित है। ग्रिम नियम, ग्रासमान नियम तथा वर्नर नियम प्रसिद्ध हैं। ग्रासमान नियम में ग्रिम द्वारा दिये गये नियमों में कुछ अपवाद थे उनका परिमार्जन किया गया है एक साथ दो महाप्राण ध्वनियाँ नहीं रह सकती हैं, उन दोनों में एक अल्पप्राण हो जाती है, जैसे धधाति = दधाति।

33. का भारोपीया भाषा अस्ति ?

- (a) ग्रीक (b) कन्नड
(c) तेलगू (d) मलयालम

उत्तर (a) ग्रीक भाषा भारोपीय भाषा परिवार की केन्टुम वर्ग की भाषा है संस्कृत शतम् वर्ग की भाषा है तथा तेलुगू कन्नड एवं मलयालम द्रविड़ भाषा परिवार के अन्तर्गत आती हैं।

34. समुद्रगुप्तस्य भारतदिग्विजयः कस्मिन् शिलालेखे अस्ति ?

- (a) मन्दसोरशिलालेखे (b) इलाहाबादशिलालेखे
(c) गिरनारशिलालेखे (d) एहोलशिलालेखे

उत्तर (b) समुद्रगुप्त का भारतदिग्विजय इलाहाबाद शिलालेख में किया गया है जो हरिषेण द्वारा लिखित है। इसका नाम प्रयाग प्रशस्ति भी है।

35. पृथिव्यां कतिविधं रूपमस्ति ?

- (a) द्विविधम् (b) सप्तविधम्
(c) षड्विधम् (d) पञ्चविधम्

उत्तर (b) पृथ्वी में सात रूप पाये जाते हैं। ये 24 गुणों के अन्तर्गत आते हैं, चक्षुर्मात्र ग्राह्यो गुणो रूपम्। शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश तथा चित्र ये सातों रूप पृथ्वी में पाये जाते हैं 'तत्र पृथिव्यां सप्तविधम्'।

36. गुणविधेः उदाहरणमस्ति

- (a) सोमेन यजेन
(b) दध्ना जुहोति
(c) राजा राजसूयेन
(d) दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत्

उत्तर (b) जिस विधि में क्रिया के अङ्ग का विधान किया जाता है वह गुण विधि कहलाती है जैसे– दध्ना जुहोति, यहाँ सोमेन यजेत् विशिष्ट विधि का, राजा राजसूयेन यह अधिकार विधि का, दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत् यह प्रयोग विधि का उदाहरण है।

37. प्रयोगविधेः सहकारिकारणानि भवन्ति

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) नव

उत्तर (b) प्रयोगविधि के छः सहकारिकारण होते हैं – 1. श्रुति 2. अर्थ 3. पाठ 4. स्थान 5. मुख्य 6. प्रकृति।

Note–अङ्गानाम् क्रम बोधको प्रयोग विधि ऐसा लक्षण किया गया है।

38. वेदान्तशास्त्रे प्रमेयं किं भवति ?

- (a) ईश्वरः (b) जीवः
(c) विराट् (d) तुरीयचैतन्यम्

उत्तर (d) वेदान्तशास्त्र में तुरीय चैतन्य को ही प्रमेय स्वीकार किया गया है 'शुद्ध चैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्'।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

39. तत्त्वसाक्षात्कारोपायेष्वन्यतमः

- (a) उपक्रमः (b) उपसंहारः
(c) अभ्यासः (d) निदिध्यासनम्

उत्तर (d) निदिध्यासन को तत्त्वसाक्षात्कार का प्रमुख उपाय बताया गया है साक्षात्कारोपाय के तीन प्रमुख साधन हैं श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन। उपक्रम, उपसंहार तथा अभ्यास श्रवण के छः लिङ्गों में से हैं।

40. प्रकृतिः कतिभिः रूपैरात्मानं बध्नाति ?

- (a) सप्तभिः (b) अष्टभिः
(c) पञ्चभिः (d) चतुर्भिः

उत्तर (a) सांख्य के अनुसार प्रकृति अपने को 7 रूपों (धर्म, अधर्म, अज्ञान, वैराग्य, अवैराग्य, ऐश्वर्य तथा अनैश्वर्य) से बाँधती है तथा ज्ञान के एक रूप द्वारा अपने को मुक्त करती है। रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नाति आत्मानमात्मना प्रकृतिः ।

41. सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनं ।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

श्लोकममुं रावणासुरम्प्रति कः उक्तवान् ?

- (a) कुम्भकर्णः (b) सुग्रीवः
(c) विभीषणः (d) मारीचः

उत्तर (d) यह श्लोक वाल्मीकि रामायण का है यह मरीच के द्वारा रावण के लिए कहा गया है।

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनं ।

अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

42. रामायणे कस्मिन् काण्डे अहल्याशाप-विमोचन-वृत्तान्तोऽस्ति

- (a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) बालकाण्डे (d) सुन्दरकाण्डे

उत्तर (c) रामायण के बालकाण्ड में अहल्या शापविमोचन का वर्णन है। गौतम मुनि के शाप से पत्थर बनी अहल्या का भी रामचन्द्र उद्धार करते हैं।

43. भगवद्गीतायां तृतीयाध्यायस्य नाम

- (a) ज्ञानयोगः (b) कर्मयोगः
(c) साङ्ख्योः (d) भक्तियोगः

उत्तर (b) भगवद्गीता के तृतीयाध्याय का नाम कर्मयोग है “श्री कृष्णार्जुन संवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः।” द्वितीय अध्याय – सांख्ययोग तथा बारहवाँ अध्याय भक्तियोग के नाम से जाना जाता है।

44. कस्मिन् पुराणे विविधशास्त्रसम्बन्धिनो विषयाः वर्तन्ते ?

- (a) मत्स्यपुराणे (b) शिवपुराणे
(c) विष्णुधर्मोत्तरपुराणे (d) अग्निपुराणे

उत्तर (d) पुराणों की संख्या 18 है उसमें से अग्निपुराण उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण पुराण है। इसे विश्वकोष भी कहा जाता है। इसमें विविधशास्त्र सम्बन्धी विषयों का वर्णन है।

45. शतसाहस्री इति कस्याभिधानमस्ति ?

- (a) शब्दकल्पद्रुमस्य (b) रामायणस्य
(c) महाभारतस्य (d) वराहपुराणस्य

उत्तर (c) महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक होने के कारण इसको ‘शतसाहस्री संहिता’ कहा जाता है जबकि रामायण को ‘चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता’ कहा जाता है।

46. पुराणमिदमष्टादश-महापुराणेषु न गण्यते ।

- (a) नृसिंहपुराणम् (b) विष्णुपुराणम्
(c) ब्रह्मपुराणम् (d) कूर्मपुराणम्

उत्तर (a) पुराणों की संख्या 18 है तथा उपपुराणों की संख्या भी 18 है। नृसिंहपुराण उपपुराण है जबकि विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण तथा कूर्मपुराण पुराणों में परिगणित हैं।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।

अनापलिङ्गं कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ॥

47. ‘जय’ इति कस्य नामान्तरम् ?

- (a) रामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) रघुवंशस्य (d) किरातार्जुनीयस्य

उत्तर (b) महाभारत का सर्वप्रथम नाम जय था जो 8000 श्लोकों में था दूसरा नाम – भारत पड़ा यह 24000 श्लोकों वाला था जब इसमें अनेक आख्यानों तथा उपाख्यानों का समिश्रण हो गया तो यह संग्रह एक लाख श्लोकों वाला महाकाव्य बना।

48. “ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषां सह” इति कुतः उद्धृतः ?

- (a) ऋग्वेदात् (b) अथर्ववेदात्
(c) रामायणात् (d) महाभारतात्

उत्तर (b) – “ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषां सह” यह अथर्ववेद से उद्धृत है।

Note – पृथ्वी सूक्त अथर्ववेद के 12 वे अध्याय का पहला सूक्त है। इसके देवता भूमि एवं ऋषि अथर्वा हैं।

49. धर्मशास्त्रीय-व्यवहारस्य को विषयः ?

- (a) स्मृत्याचारनिन्दा
(b) स्मृत्याचारविरुद्ध-परपीडा
(c) स्मृत्याचारप्रयुक्ता रूग्णता
(d) स्मृत्याचारप्रयुक्ता निर्धनता

उत्तर (b) धर्मशास्त्रीय व्यवहारस्य स्मृत्याचार विरुद्ध परपीडा विषयः अस्ति।

Note – याज्ञवल्क्यस्मृति ऋषि याज्ञवल्क्य द्वारा रचित है यह तीन भागों में विभक्त है इसके दूसरे भाग को व्यवहार अध्याय कहते हैं।

50. मनुस्मृत्यनुसारं सर्वव्यसनमूलं किम् ?

- (a) कामः (b) क्रोधः
(c) लोभः (d) मोहः

उत्तर (c) मनुस्मृति के अनुसार सभी व्यसनों का मूल लोभ को बताया गया है कामज व्यसन 10 होते हैं क्रोधज व्यसन 8 होते हैं।

‘तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ॥ मनु 7/49।

51. मनुमते साक्षाद्धर्मस्य लक्षणं कतिविधम् ?

- (a) एकविधम् (b) द्विविधम्
(c) त्रिविधम् (d) चतुर्विधम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d) मनु ने धर्म का लक्षण चार प्रकार का बताया है 'एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्'। मनु/2/12 ।

52. अमात्यपरीक्षोपायेषु नास्ति

- (a) धर्मोपधा (b) अर्थोपधा
(c) कामोपधा (d) मोक्षोपधा

उत्तर (d) अर्थशास्त्र में अमात्य परीक्षण के चार उपाय बताये गये हैं

1. धर्मोपधा 2. अर्थोपधा 3. कामोपधा 4. भयोपधा
इन चारों में मोक्षोपधा का कथन नहीं है।

53. अधोलिखितेषु को गूढपुरुषो न भवति ?

- (a) मन्त्री (b) स्त्री
(c) तीक्ष्णः (d) रसदः

उत्तर (a) अर्थशास्त्र में पाँच प्रकार के गूढ पुरुष की संस्थाएँ हैं। तथा चार प्रकार के गूढपुरुष हैं।

पाँच संस्थाएँ – कापटिक, उदास्थित, गृहपटिक, वैदेहिक तथा तापस
चार गूढपुरुष – स्त्री, तीक्ष्ण, रसद तथा भिक्षुकी।

54. अमात्यपरीक्षायाः कतिविधः उपायः ?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

उत्तर (c) अमात्यपरीक्षा के चार उपाय अर्थशास्त्र में कहे गये हैं।

1. धर्मोपधा 2. अर्थोपधा 3. कामोपधा 4. भयोपधा

55. 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते' इति उक्तिः कुत्र ?

- (a) उत्तररामचरिते (b) मालतीमाधवे
(c) मुद्राराक्षसे (d) अभिज्ञानशाकुन्तले

उत्तर (d) 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु सन्दृश्यते' यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पाँचवें अंक के 22 वें श्लोक से लिया गया है। इस सूक्ति का अर्थ है "मानवेतर जाति की स्त्रियों में भी शिक्षा के बिना ही चातुर्यता देखी जाती है तो ज्ञान सम्पन्न मानवीय नारियों का क्या कहना? अर्थात् मानवीय नारियों में शिक्षा के बिना चातुर्य होना स्वाभाविक है।"

56. रत्नावल्यां प्रधानरसः कः ?

- (a) वीररसः (b) रौद्ररसः
(c) शान्तरसः (d) शृङ्गाररसः

उत्तर (d) रत्नावली का प्रधान रस शृङ्गार है। यह चार अंकों की नाटिका है इसमें उदयन तथा रत्नावली के प्रेम सम्बन्धों की कथा है। इसके तीसरे अंक का नाम सङ्केत एवं चौथे अंक का नाम ऐन्द्रजालिक है।

57. अधस्तनयुग्मानां समीचीनं तालिकां चिनुत

- (A) चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि 1. किरातार्जुनीयम्
बहुशो वेपथुमतीम्
(B) गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(C) क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि 3. शिशुपालवधम्
(D) पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः 4. रत्नावली

A	B	C	D
(a) 1	2	3	4
(b) 2	1	4	3
(c) 3	2	1	4
(d) 4	3	2	1

उत्तर (b) 'चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम्' यह अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक से लिया गया है।

'गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया' यह किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के 12 वें श्लोक की सूक्ति है।

'क्षणमिह मम कण्ठे बाहुपाशं विधेहि' यह रत्नावली के तृतीय अंक की उक्ति है।

'पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः' यह शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग के 33 वें श्लोक की उक्ति है।

58. 'वियति विसारिणी शष्पपङ्क्तिमिव आरचयन्तः' इत्यत्र कः अलङ्कारः ?

- (a) उपमा (b) अर्थान्तरन्यासः
(c) उत्प्रेक्षा (d) विरोधाभासः

उत्तर (c) यहाँ पर उपमा अलौकिक होने के कारण उत्प्रेक्षा अलङ्कार है। इसका लक्षण – सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।

59. 'कादम्बरी' इति शब्दस्य कोऽर्थः ?

- (a) भीरुस्त्री (b) अप्सरा
(c) मदिरा (d) परिचारिका

उत्तर (c) कादम्बरी शब्द का अर्थ मदिरा है
अमरकोश में कहा गया है- कादम्बरी स्त्री। सुरा समानार्थकः सुरा, हलिप्रिया, हाला, पिरस्तुत् (2/10/39/2/4।)

60. शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य। अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥ अत्र कोऽलङ्कारः ?

- (a) उपमा (b) अर्थान्तरन्यासः
(c) रूपकम् (d) विभावना

उत्तर (b) इन पंक्तियों में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। अर्थान्तरन्यास अलङ्कार में सामान्य का विशेष से या विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाता है यहाँ पर भी सामान्य का विशेष के द्वारा समर्थन किया गया है।

61. कति अर्थप्रकृतयः ?

- (a) षट् (b) पञ्च
(c) सप्त (d) दश

उत्तर (b) पाँच प्रकार की अर्थ प्रकृतियाँ होती हैं।

1. बीज, 2. बिन्दु, 3. पताका, 4. प्रकरी तथा 5. कार्य
"बीज बिन्दु पताका प्रकरी कार्य लक्षणा"।

62. दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति

- (a) प्रतिमुखसन्धिः (b) मुखसन्धिः
(c) निर्वहणसन्धिः (d) गर्भसन्धिः

उत्तर (d) इसमें दिखाई देना, पुनः नष्ट होना इसी बीज का अन्वेषण होता है जैसे – रत्नावली नाटिका के तृतीय अंक में उदयन के मन में जो सागरिका वासवदत्ता का वेष धारण की है पुनः सागरिका तथा विदूषक के वार्ता से विच्छेद हो जाता है पुनः प्राप्ति हुई यह गर्भसन्धि है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

63. 'इति हेतुस्तदुद्भवे' काव्यनिर्माणविषये कस्य मतमेतत् ?

- (a) जगन्नाथस्य (b) हेमचन्द्रस्य
(c) मम्मटस्य (d) वाग्भटस्य

उत्तर (c) शक्तिरिपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यनवेक्षणात् ।

काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ।। यह उक्ति मम्मट कृत काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास से उद्धृत है।

64. क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः ।

- (a) विशेषोक्तिः (b) समासोक्तिः
(c) विभावना (d) निदर्शना

उत्तर (c) क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना' यह मम्मट के काव्यप्रकाश से लिया गया है।

65. 'धन्यालोकः' इत्यस्मिन् ग्रन्थे कति उद्योताः सन्ति ?

- (a) चत्वारः (b) पञ्च
(c) षट् (d) सप्त

उत्तर (a) धन्यालोक में चार उद्योत हैं इसके प्रथम उद्योत में ध्वनि का स्वरूप बताया गया है। ध्वनि के दो भेद किए गये हैं -

1. वाच्य 2. प्रतीयमान।

66. नाट्यशास्त्रस्य 'अभिनवभारती' व्याख्यायाः कर्ता कः ?

- (a) आनन्दवर्धन (b) अभिनवगुप्तः
(c) धनञ्जयः (d) भरतः

उत्तर (b) अभिनवभारती अभिनवगुप्त की टीका है जो भरत के नाट्यशास्त्र पर लिखी गयी है जबकि - भरत ने नाट्यशास्त्र, आनन्दवर्धन ने धन्यालोक तथा धनञ्जय ने दशरूपक लिखा है।

67. कालानुसारेण कस्तावत् अर्वाचीनः ?

- (a) भरतः (b) जगन्नाथः
(c) विश्वनाथः (d) भामहः

उत्तर (b) कालक्रम में -

1. भरत - ई.पू. तृतीय शताब्दी
2. विश्वनाथ बारहवीं - तेरहवीं शताब्दी
3. भामह - छठी शताब्दी
4. जगन्नाथ - 17 वीं शताब्दी

68. काव्यप्रकाशस्य मङ्गलश्लोके कस्याः प्रशंसा कृता ?

- (a) सरस्वत्याः (b) पार्वत्याः
(c) कविभारत्याः (d) दुर्गायाः

उत्तर (c) काव्यप्रकाश के मङ्गलश्लोक में कविभारती की प्रशंसा की गयी है-

नियतिकृत नियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम् ।

नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।। काव्यप्रकाश

69. यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो व्यङ्क्तः

काव्यविशेषो भवति

- (a) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (b) ध्वनिः
(c) अलङ्कारध्वनिः (d) चित्रकाव्यम्

उत्तर (b) आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वनि के दो भेद किए हैं एक वाच्य दूसरा प्रतीयमान। उसमें से प्रतीयमान ध्वनि को बता रहे हैं- यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो व्यङ्क्त काव्य विशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः ।।

70. तर्कसङ्ग्रहानुसारं कति द्रव्याणि ?

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) नव (d) एकादश

उत्तर (c) तर्क संग्रह के अनुसार नव द्रव्य होते हैं 'पृथिव्यपतेजोवायवाकाशकालदिगात्मा मनांसि नवैव' अर्थात् नव ही द्रव्य होते हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, तथा मन।

71. वाक्यार्थज्ञाने हेतुः अस्ति

- (a) निगमनम् (b) प्रतिज्ञा
(c) हेतुः (d) सन्निधिः

उत्तर (d) न्याय मत में शब्द प्रमाण का वर्णन करते हुए अन्नभट्ट ने कहा है- 'आकाक्षायोग्यता सन्निधि वाक्यार्थज्ञाने हेतुः'। अर्थात् आकाक्षा, योग्यता तथा सन्निधि वाक्यार्थ ज्ञान में हेतु हैं।

72. 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः' इति

- (a) गुणाः (b) अपवादाः
(c) पदार्थाः (d) स्पर्शाः

उत्तर (c) 'द्रव्यगुणकर्म सामान्यविशेषसमवायाभावाः पदार्थाः'। ये सात पदार्थ अन्नभट्ट ने अपने तर्क संग्रह में बताया है।

73. तर्कसङ्ग्रहानुसारं प्रमाणानि सन्ति

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर (b) तर्क सङ्ग्रह के अनुसार चार प्रमाण बताये गये हैं 'प्रमायाः करणं प्रमाणम्' प्रमा के करण को प्रमाण कहते हैं 'तत्करणमपि चतुर्विधं प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदात् ।

74. 'प्रमा' इत्युच्यमाने अधोलिखितेषु कस्य निरसनं भवति ?

- (a) प्रमितिः (b) अनुमितिः
(c) स्मृतिः (d) उपमितिः

उत्तर (a) प्रमा के कहने पर प्रमिति का ज्ञान होता है जबकि - संस्कार मात्र से उत्पन्न ज्ञान स्मृति है, परामर्शजन्यं ज्ञानम् अनुमितिः परामर्श से उत्पन्न ज्ञान अनुमिति है तथा संज्ञा और संज्ञी के सम्बन्ध का ज्ञान उपमिति है।

75. प्रमायाः करणं किम् ?

- (a) प्रमाता (b) प्रमेयः
(c) प्रमाणम् (d) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

उत्तर (c) 'प्रमायाः करणं प्रमाणं' अर्थात् प्रमा के करण को प्रमाण कहते हैं ये करण भी चार प्रकार के होते हैं।

1. प्रत्यक्ष
2. अनुमान
3. उपमान
4. शब्द

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2015

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. श्वेताश्वतरोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धा?

- (a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (c) श्वेताश्वतरोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है। इस वेद के अन्य उपनिषद्- कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद् हैं।

शुक्लयजुर्वेद के उपनिषद् - ईशावास्योपनिषद् एवं बृहदारण्यकोपनिषद्

ऋग्वेद के उपनिषद् - ऐतरेयोपनिषद्

सामवेद के उपनिषद् - केनोपनिषद् एवं छान्दोग्य उपनिषद्।

अथर्ववेद के उपनिषद् - प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् हैं।

2. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत' इति कुत्र उपदिष्टम् ?

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) आपस्तम्बधर्मसूत्रे (d) माण्डूक्योपनिषदि

उत्तर (b) "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत" यह मन्त्र कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध कठोपनिषद् का है। यह दो अध्याय एवं प्रत्येक अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभक्त है। इसके प्रथम वल्ली में 29 मन्त्र हैं।

3. 'मण्डलक्रमः' केन वेदेन सम्बद्धः?

- (a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (b) मण्डल क्रम का सम्बन्ध ऋग्वेद से है क्योंकि इसमें 10 मण्डल एवं 85 अनुवाक हैं। प्रत्येक मण्डल के ऋषि भिन्न-भिन्न हैं। इसमें से महत्त्वपूर्ण मण्डल के ऋषि निम्न हैं-

प्रथम मण्डल के ऋषि - मधुच्छन्दा

द्वितीय मण्डल के ऋषि - गृत्समद

सप्तम मण्डल के ऋषि - वशिष्ठ

4. अथर्ववेदीयं ब्राह्मणं किम्?

- (a) शतपथब्राह्मणम् (b) गोपथब्राह्मणम्
(c) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (d) ऐतरेयब्राह्मणम्

उत्तर (b) गोपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है इसके कोई भी आरण्यक नहीं हैं। अन्य वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्न हैं-

शतपथ ब्राह्मण - शुक्लयजुर्वेद

तैत्तिरीय ब्राह्मण - कृष्णयजुर्वेद

सामवेद के ब्राह्मण - पञ्चविंश (ताड्य) षड्विंश, वंश ब्राह्मण

ऋग्वेद के ब्राह्मण - ऐतरेय, शांखायन ब्राह्मण हैं।

5. "स्वसारं त्वा कृण्वै मा पुनर्गा,

अप ते गवां सुभगे भजाम।"

इतिमन्त्रांशः कुतः उद्धृतः?

- (a) पुरुरवा - उर्वशी-संवादात् (b) यम-यमी-संवादात्
(c) सरमा-पणि-संवादात् (d) विश्वामित्र-नदी-संवादात्

उत्तर (c) 'स्वसारं त्वा कृण्वै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम'। यह मन्त्रांश सरमा पणि संवाद सूक्त से सम्बद्ध है। सरमा पणि ऋग्वेद के दशम मण्डल का 108वाँ सूक्त है, इसके ऋषि-पणि एवं देवता सरमा हैं।

6. अन्तरिक्षस्थानीया देवता का?

- (a) रुद्रः (b) सोमः
(c) अग्निः (d) बृहस्पतिः

उत्तर (a) यास्क विरचित निरुक्त में तीन प्रकार के देवता बताए गये हैं- पृथ्वी स्थानीय देवता - पृथ्वी, अग्नि, सोम
अन्तरिक्ष स्थानीय देवता - इन्द्र, रुद्र, वायु
द्युस्थानीय देवता - वरुण, मित्र, ऊषा।

7. 'प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु' किम्?

- (a) कल्पः (b) छन्दः
(c) शिक्षा (d) व्याकरणम्

उत्तर (d) प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्।

अर्थात् वेदाङ्ग 6 बताए गये हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। इन छः में से व्याकरण को वेद रूपी पुरुष का मुख कहा गया है- 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।

8. सर्वलघु' इति को गणः?

- (a) जगणः (b) मगणः
(c) नगणः (d) समणः

उत्तर (c) वेदाङ्गों में छन्द का प्रमुख स्थान है, इसे वेद पुरुष के चरण के रूप में स्वीकार किया गया है छन्द दो प्रकार के माने गये हैं। (i) वैदिक छन्द (ii) लौकिक छन्द। लौकिक छन्द में नगण समूह में सभी मात्राएँ लघु होती हैं।

9. 'व्' वर्णः अस्ति-

- (a) ओष्ठ्यः (b) ऊष्मः
(c) अन्तःस्थः (d) दन्त्यः

उत्तर (c) भाषा विज्ञान में अन्तस्थ वर्णों की संख्या 4 बताई गई है- य् व् र् ल्। इन्हें अर्द्ध स्वर की श्रेणी में भी रखा जाता है जबकि ऊष्म वर्ण- श्, ष्, स्, ह् हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

10. 'शुल्वसूत्राणि' केन वेदाङ्गेन सम्बद्धानि?

- (a) व्याकरणेन (b) कल्पेन
(c) छन्दसा (d) निरुक्तेन

उत्तर (b) वेदाङ्ग छः हैं उनमें से कल्प को वेद पुरुष का हाथ स्वीकार किया गया है- “हस्तौ कल्पोऽथपठ्यते”। इसके चार भाग हैं उन चारों में से शुल्वसूत्र का सम्बन्ध यजुर्वेद से है क्योंकि ये केवल यजुर्वेद पर ही प्राप्त होते हैं- जैसे- कात्यायन, वाधूल, बौधायन शुल्वसूत्र।

11. 'सत्त्वप्रधानम्' इति मन्यते-

- (a) उपसर्गः (b) नाम
(c) आख्यातम् (d) निपातः

उत्तर (b) यास्क विरचित निरुक्त में चार प्रकार के पदों को बताया गया है- नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात। इसमें से 'सत्त्व प्रधानानि' नाम का लक्षण है। “भावप्रधानमाख्यातम्” आख्यात का लक्षण है।

12. 'पदपाठ' इत्यस्य परमं प्रयोजनम् अस्ति-

- (a) पदनिर्माणम् (b) शब्दनिर्माणम्
(c) वेदपाठरक्षणम् (d) मन्त्रगानम्

उत्तर (c) 'पदपाठ' इसका प्रयोजन वेद पाठ का रक्षा करना है। वैदिक मन्त्रों के दो प्रकार के मुख्य पाठ उपलब्ध हैं- संहिता पाठ और पद पाठ। संहिता पाठ को पवित्र और प्रामाणिक माना गया है पद पाठ का प्रवर्तन संहिता पाठ के बाद हुआ है।

13. प्रायश्चित्तकर्माणि भवन्ति-

- (a) हननादीनि (b) सन्ध्यावन्दनादीनि
(c) ज्योतिष्टोमादीनि (d) चान्द्रायणादीनि

उत्तर (d) वेदान्तसार के अनुसार अधिकारी का लक्षण करते समय ग्रन्थकार ने काम्यकर्म एवं निषिद्ध कर्मों की बात कही थी उसी की यहाँ विवेचना की है। “प्रायश्चित्तानि पापक्षय साधनानि चान्द्रायणादीनि अर्थात् पाप के क्षय के साधनभूत चान्द्रायण आदि व्रत प्रायश्चित्त कर्म हैं।

14. अधोलिखितेषु अनिर्वचनीयं भवति-

- (a) जीवस्वरूपम् (b) अज्ञानम्
(c) जगत्स्वरूपम् (d) ईश्वरस्वरूपम्

उत्तर (b) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान के विषय में कहा गया कि “अज्ञानं तु सदसदभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञान विरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति”। अज्ञान की आवरण एवं विक्षेप दो शक्तियाँ हैं।

15. वेदान्तसारे अज्ञानस्य शक्तिः-

- (a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

उत्तर (a) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान के विषय में कहा गया कि “अज्ञानं तु सदसदभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञान विरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति”। अज्ञान की आवरण एवं विक्षेप दो शक्तियाँ हैं।

16. वेदान्तसारे लिङ्गशरीराणि-

- (a) षोडशावयवानि (b) पञ्चदशावयवानि
(c) सप्तदशावयवानि (d) एकादशावयवानि

उत्तर (c) वेदान्तसार में सूक्ष्म शरीर सत्रह अवयवों वाला लिङ्ग कहा गया है। ये अवयव हैं- 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ 5 वायु, 1 बुद्धि, 1 मन ये 17 अवयव हैं। वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ- ये 5 कर्मेन्द्रियाँ हैं।

17. साङ्ख्यमतानुसारं सत्त्वगुणः -

- (a) सुखात्मकः (b) दुःखात्मकः
(c) अभावात्मकः (d) मोहात्मकः

उत्तर (a) ईश्वरकृष्ण की साङ्ख्यकारिका के अनुसार मूल प्रकृति के तीन गुण बताये गये हैं। जो इस कारिका के माध्यम से स्पष्ट किए रहे हैं-

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।

गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥

अतः स्पष्ट है कि सत्त्वगुण सुखात्मक होता है।

18. साङ्ख्यमते पङ्गुवद् वर्तते -

- (a) प्रधानम् (b) पुरुषः
(c) गुणत्रयम् (d) अन्तःकरणम्

उत्तर (b) साङ्ख्यमत में सृष्टि की उत्पत्ति प्रकृति और पुरुष के संयोग से बताई गई है क्योंकि प्रकृति को जड़ प्रधान की संज्ञा दी गई है जबकि पुरुष निष्क्रिय। प्रकृति एवं पुरुष का पङ्ग्वन्धवत्न्याय से सिद्ध होते बताया गया है जो इस कारिका में उद्धृत है-

पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।

पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।

Note- इसमें पङ्गुवद् पुरुषः अर्थात् पङ्गुवद् पुरुष को बताया गया है।

19. त्रैगुण्यविपर्ययात् किं सिद्धम्?

- (a) प्रधानम् (b) पुरुषैकत्वम्
(c) पुरुषबहुत्वम् (d) अज्ञानम्

उत्तर (c) सांख्यकारिका में पुरुष बहुत्व सिद्ध करने के सन्दर्भ में इस कारिका को प्रस्तुत किया जा रहा है-

जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।

पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्य विपर्ययाच्चैव॥

नोट- त्रैगुण्य विपर्ययात् पुरुषबहुत्वम् सिद्धम् ।

20. साङ्ख्यकारिकायां सर्गस्य कारणम् -

- (a) पुरुषः (b) ईश्वरः
(c) प्रधानम् (d) पुरुष-प्रकृति-संयोगः

उत्तर (d) ईश्वरकृष्ण कृत् सांख्यकारिका में पुरुष एवं प्रकृति के संयोग से सर्ग की उत्पत्ति बतायी गयी है।

21. न्यायवैशेषिकमतानुसारं पदार्थाः -

- (a) षट् (b) षोडश
(c) नव (d) सप्त

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

उत्तर (d) अन्नभट्ट विरचित तर्कसंग्रह में सप्त पदार्थों की संकल्पना को प्रस्तुत किया गया है वे इस प्रकार हैं- तत्र द्रव्यगुणकर्मसामान्य विशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थः। अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ हैं। इसमें से द्रव्य के नव भेद बताये गये हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा एवं मन।

22. तर्कसङ्ग्रहानुसारं पृथिव्यां रूपम् -

- (a) षड्विधम् (b) सप्तविधम्
(c) अष्टविधम् (d) नवविधम्

उत्तर (b) तर्कसंग्रह में सात पदार्थ तथा नव द्रव्यों की विवेचना की गयी है। उसमें से पृथ्वी नामक द्रव्य का लक्षण देते हैं कि तत्र गन्धवती पृथ्वी। सा द्विविधा नित्या अनित्या च। नित्या परमाणु रूपा, अनित्या कार्यरूपा। उसके पश्चात् पृथ्वी के रूप के लक्षण को कहते हैं कि- पृथिव्यां सप्तविधम्।

23. तर्कसङ्ग्रहानुसारं 'न्यूनदेशवृत्ति' इति लक्षणम् -

- (a) अभावस्य (b) परसामान्यस्य
(c) अपरसामान्यस्य (d) विशेषस्य

उत्तर (c) तर्कसङ्ग्रह के अनुसार सामान्य का लक्षण इस प्रकार है- परमपरं च द्विविधं सामान्यम्। अर्थात् सामान्य दो प्रकार का होता है परसामान्य एवं अपर सामान्य। 'पर' वह है जो अधिक देश में रहे एवं अपर वह है जो न्यून देश में रहे। "परत्वमधिकदेश वृत्तित्वम्, अपरत्वं च न्यूनदेशवृत्तित्वम्"।

24. तर्कसङ्ग्रहानुसारं अनुमानं नाम -

- (a) लिङ्गज्ञानम् (b) व्याप्तिः
(c) उदाहरणम् (d) लिङ्गपरामर्शः

उत्तर (d) तर्कसङ्ग्रह के अनुसार 'लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्' अनुमान का नाम लिङ्ग परामर्श है अर्थात् परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं और व्याप्ति साधन (हेतु) या लिङ्ग की पक्ष धर्मता का ज्ञान है वह परामर्श है। यह अनुमान दो प्रकार का होता है (i) स्वार्थानुमान (ii) परार्थानुमान

25. सर्वनामस्थानसंज्ञकं सूत्रं किम्?

- (a) सर्वादीनि सर्वनामानि (b) सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ
(c) सुडनपुंसकस्य (d) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

उत्तर (c) सर्वनामस्थान संज्ञक सूत्र सुडनपुंसकस्य है। सुडनपुंसकस्य = नपुंसक लिङ्ग को छोड़कर सुट् अर्थात् सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनाम संज्ञा होती है।

26. 'सुप्तिङन्तं पदम्' इति सूत्रम् अतिरिक्त पदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) पदस्य (b) पदात्
(c) पदान्तस्य (d) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

उत्तर (d) "सुप्तिङन्तं पदम्" सूत्र के अतिरिक्त संज्ञा विधायक सूत्र "स्वादिष्वसर्वनाम स्थाने" है। अर्थात् सर्वनाम स्थान संज्ञक प्रत्ययों को छोड़कर सुप् से लेकर 'कप्' पर्यन्त प्रत्ययों के परे रहते पूर्व की पद संज्ञा हो।

27. वीप्सार्थे द्योत्ये का विभक्तिर्गम्यते?

- (a) तृतीया (b) पञ्चमी
(c) द्वितीया (d) सप्तमी

उत्तर (c) वीप्सा अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है। इसका सूत्र है- "लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः" अर्थात् प्रति, परि और अनु शब्दों से लक्षण, इत्थम्भूताख्यान (इस प्रकार का है) भाग (अंश) तथा व्याप्ति (वीप्सा) द्योतित होने पर, ये कर्मप्रवचनीय कहलाते हैं। जैसे- वृक्षं-वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति।

28. उपपदसंज्ञाविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) कमण्यण् (b) उपपदमतिङ्
(c) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (d) कुगतिप्रादयः

उत्तर (c) उपपदसंज्ञा विधायक सूत्र-तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् है।

29. 'शोभनो राजा' इत्यस्य समस्तपदं किम्?

- (a) सुराजः (b) सुराजा
(c) सुराजी (d) सुराज्ञी

उत्तर (b) 'शोभनो राजा' का समस्तपद सुराजा होगा। यह समासान्तनिषेधनियमवार्तिक के अनुसार- (वा.) 'स्वतिभ्यामेव'- अर्थात् सु और अति इन दो प्रशंसार्थको से पर होने पर ही शब्दों को समासान्त प्रत्ययों का निषेध हो।

जैसे- सु राजा, अति राजा

30. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीनां तालिका चेतव्या-

(A) कृजः प्रतियत्ने	(i) योजनं योजने वा
(B) अभाषितपुंस्काच्च	(ii) गङ्गका, गङ्गिका
(C) कालात् सप्तमी च वक्तव्या	(iii) कुम्भकारः
(D) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्	(iv) एधोदकस्योपस्करणम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(b) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d) (ii)	(i)	(iii)	(iv)

उत्तर (a)- दिए गए युग्मों में सही सुमेलन इस प्रकार है-

कृजः प्रतियत्ने - एधोदकस्योपस्करणम्
अभाषितपुंस्काच्च - गङ्गका, गङ्गिका
कालात् सप्तमी च वक्तव्या - योजनं योजने वा
तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् - कुम्भकारः

31. गुणवाचकास्त्रीलिङ्गे का विभक्तिव्यवस्थाः?

- (a) तृतीया-पञ्चम्यौ (b) द्वितीया-तृतीया-पञ्चम्यः
(c) षष्ठी-सप्तम्यौ (d) द्वितीया-चतुर्थ्यौ

उत्तर (a)- गुणवाचक स्त्रीलिङ्ग में तृतीया एवं पञ्चमी दोनों विभक्ति होती है। इसका सूत्र है "विभाषागुणेऽस्त्रियाम्" अर्थात् गुण के वाचक स्त्रीलिङ्ग से भिन्न हेतु में पञ्चमी विकल्प से हो। जैसे- जाड्येन जाड्याद्वा बद्धः।

32. अधस्तनेषु निष्ठा-संज्ञा कस्य भवति?

- (a) तव्यत् इत्यस्त (b) तव्य इत्यस्य
(c) क्तवत् इत्यस्य (d) अनीयर इत्यस्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (c)- निष्ठा संज्ञा विधायक सूत्र 'क्तक्तवतू निष्ठा' एतौ निष्ठा संज्ञौ स्तः। अर्थात् क्त और क्तक्तवतू प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है, इनमें त, और तवत् शेष बचता है।

जैसे- स्तुतः, स्नातः गतः, गतवान् इत्यादि।

33. संज्ञार्थप्रयुक्ते 'मामकी' इति पदे "डीप्" इत्यस्य -

- (a) नित्यविधिः (b) निषेधः
(c) वैकल्पिक प्रवृत्तिः (d) अशुद्ध प्रयोगः

उत्तर (c)- संज्ञार्थप्रयुक्ते "मामकी इति पदे डीप् इत्यस्य वैकल्पिक प्रवृत्तिः। 'उगितश्च' सूत्र भी डीप् प्रत्यय का विधान करता है, - उगित् अर्थात् उक् - उ, ऋ, लृ जिसके इत् हो ऐसे प्रत्यय जिस प्रातिपदिक के अन्त में हो उससे स्त्रीत्व बोधन के लिए डीप् प्रत्यय हो- लघुसिद्धान्तकौमुदी भैमीव्याख्या भाग 6

34. किं तत्त्वं वियोगात्मक-भाषा-प्रकृति-लक्षणम्?

- (a) सङ्ख्या (b) अर्थः
(c) सन्धिः (d) प्रकृति-प्रत्यय-पार्थक्यम्

उत्तर (d)- प्रकृति प्रत्यय पार्थक्यम् वियोगात्मक भाषा प्रकृति लक्षणम्। पहले भाषा को दो भागों में विभाजित करते हैं। अयोगात्मक एवं योगात्मक। पुनः योगात्मक भाषा को अश्लिष्ट, श्लिष्ट एवं प्रश्लिष्ट तीन भागों में विभाजित करते हैं। उसमें से श्लिष्ट दो प्रकार की होती है अन्तर्मुखी श्लिष्ट, बहिर्मुखी श्लिष्ट। पुनः अन्तर्मुखी श्लिष्ट दो प्रकार की है-

- (i) संयोगात्मक अन्तर्मुखी- जैसे अरबी
(ii) वियोगात्मक अन्तर्मुखी जैसे- हिब्रू

35. का भाषा 'केन्टुम्-वर्गेण' असम्बद्धा?

- (a) ग्रीक-भाषा (b) इताली
(c) लैटिन-भाषा (d) संस्कृत-भाषा

उत्तर (d)- केन्टुम् वर्गेण असम्बद्धा भाषा संस्कृतमस्ति। संस्कृत भाषा शतम् वर्ग में आती है। जबकि केन्टुम् वर्ग के अन्तर्गत - लैटिन, ग्रीक, इताली, तोखारी, जर्मनिक, आयरिश है।

36. तुलनात्मक-भाषाशास्त्रस्य अध्ययनस्य आरम्भकाले कयोः भाषयोः मध्ये ध्वनिसाम्यं प्रत्यक्षीकृतम्?

- (a) संस्कृत-हिन्दी-मध्ये
(b) संस्कृत-लैटिन-मध्ये
(c) संस्कृत-फारसी-मध्ये
(d) संस्कृत-फ्रांसीसी-मध्ये

उत्तर (b)- तुलनात्मक भाषाशास्त्र अध्ययनस्य आरम्भकाले संस्कृत लैटिन भाषयोः मध्ये ध्वनि साम्यं प्रत्यक्षीकृतम्। अर्थात् संस्कृत और लैटिन भाषा के मध्य ध्वनि की साम्यता पायी जाती है क्योंकि संस्कृत एक संयोगात्मक भाषा है।

37. "निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।

प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥"
कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यतेऽयं श्लोकः?

- (a) हर्षचरिते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) रघुवंशे (d) कादम्बर्याम्

उत्तर (a)- निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।

प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

यह सूक्ति बाणरचित हर्षचरितम् की है। बाण के दो गद्यकाव्य मिलते हैं- (1) कादम्बरी (2) हर्षचरितम्।

38. "अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनानाम् कस्य भयं न जायते।"

इत्यादि-श्लोकः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति?

- (a) रत्नावल्याम् (b) शिशुपालवधे
(c) कुमारसम्भवे (d) कादम्बर्याम्

उत्तर (d)- अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनानाम् कस्य भयं न जायते। यह श्लोक बाणभट्ट विरचित कादम्बरी कथामुखं का है यह दो खण्डों में (मूलतः) विभक्त है। यह शृंगार रस प्रधान है इसमें चन्द्रापीड एवं वैशम्पायन के तीन जन्मों की कथा का विशद विवेचन किया गया है।

39. 'मृच्छकटिकम्' इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

- (a) समवकारस्य (b) नाटकस्य
(c) प्रकरणस्य (d) भाणस्य

उत्तर (c)- मृच्छकटिकं रूपक के दश भेदों में से प्रकरण नामक प्रभेद है। इसके नायक चारुदत्त एवं नायिका वसन्तसेना है। इसमें प्रधान रस शृंगार, गुण प्रसाद तथा वृत्ति कौशिकी है। यह 10 अंकों में विभक्त है। इसके प्रथम अङ्क का नाम - अलङ्कारन्यास दूसरे एवं तीसरे अंक का नाम- द्यूतकर संवाहक, एवं सन्धिच्छेद है।

40. दशकुमारचरितस्य कस्मिन् चरितेसुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति?

- (a) अपहारवर्माचरिते (b) उपहारवर्मचरिते
(c) राजवाहनचरिते (d) पुष्पोद्भवचरिते

उत्तर (c)- 'दशकुमारचरितम्' दण्डी की प्रसिद्ध गद्य रचना है इसमें आठ उच्छ्वास हैं। इसका आधार ग्रन्थ गुणाढ्य की बृहत्कथा है। इसमें शृंगार रस का वर्णन है। इसमें राजवाहन के चरित्र का वर्णन है।

41. कृतककोपवृत्तान्तः कस्मिन् दृश्यकाव्ये वर्तते?

- (a) मुद्राराक्षसे (b) मृच्छकटिके
(c) उत्तररामचरिते (d) वेणीसंहारे

उत्तर (a)- विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षसम्' संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक नाटक है। यह 7 अंकों में विभक्त है। यह वीर रस प्रधान नाटक है एवं इसके नायक चाणक्य तथा प्रतिनायक राक्षस है। कृतककोपवृत्तान्त का उल्लेख इसी नाटक में है।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत :

- (A) उत्तररामचरितम् (i) भासः
(B) बुद्धचरितम् (ii) भवभूतिः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

(C) वेणीसंहारम्	(iii) भट्टनारायणः
(D) स्वप्नवासवदत्तम्	(iv) अश्वघोषः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b) (i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c) (iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d) (ii)	(iii)	(iv)	(i)

उत्तर (a) - सही सुमेलित विकल्प इस प्रकार है।

उत्तररामचरितम् - भवभूतिः

बुद्धचरितम् - अश्वघोषः

वेणीसंहारम् - भट्टनारायणः

स्वप्नवासवदत्तम् - भासः

43. दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(a) भरतः	(b) दौष्यन्तिः
(c) सर्वदमनः	(d) गौतमः

उत्तर (c)- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचना है यह 7 अङ्कों में विभक्त है यह शृंगार रस प्रधान नाटक है। इसके नायक दुष्यन्त एवं नायिका शकुन्तला हैं। इसमें दुष्यन्त के पुत्र भरत का वर्णन है इन्हीं का प्रथम नाम 'सर्वदमन' भी था।

44. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम्?

- | |
|------------------------|
| (a) कृष्णनारदसम्भाषणम् |
| (b) नारदावतरणम् |
| (c) नारदगुणकीर्तनम् |
| (d) कृष्णगुणकीर्तनम् |

उत्तर (a)- महाकवि माघ विरचित शिशुपालवधम् एक ऐतिहासिक महाकाव्य है यह 20 सर्गों में विभक्त है। श्लोकों की संख्या 1650 है यह महाभारत के सभा पर्व से लिया गया है। इसके प्रथम सर्ग का नाम "कृष्णनारदसम्भाषणम्" है।

45. किं नाम अभिधापुच्छभूता भवति?

(a) व्यञ्जना	(b) लक्षणा
(c) तात्पर्यम्	(d) अर्थापत्तिः

उत्तर (b)- लक्षणा अभिधा की पुच्छभूता होती है।

शब्द की तीन शक्तियाँ हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना

वाच्य अर्थ से - अभिधा

लक्ष्य अर्थ से - लक्षणा

व्यङ्ग्य अर्थ से - व्यञ्जना

लक्षणा के उदाहरण- कलिङ्ग साहसिक :, गङ्गायांघोषः ।

46. विश्वनाथमते सङ्केतः गृह्यते

- | |
|--------------------------------------|
| (a) जातौ, गुणे, द्रव्ये, क्रियायाञ्ज |
| (b) केवलं जातिगुणयोः |
| (c) केवलं द्रव्ये |
| (d) केवलं क्रियायाम् |

उत्तर (a)- सन्धि विग्राहक आचार्य विश्वनाथ कविराज ने शब्द की तीन शक्तियाँ बताई हैं-

(i) अभिधा (ii) लक्षणा (iii) व्यञ्जना

उसमें से अभिधा का लक्षण देते हैं- तत्र संकेतिततात्पर्यस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा। उसी अभिधा में इस बात को कहते हैं कि- संकेतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च। अर्थात् सङ्केत जाति, गुण, द्रव्य एवं क्रिया में गृहीत होता है।

47. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

(a) चतुर्विधम्	(b) त्रिविधम्
(c) द्विविधम्	(d) षड्विधम्

उत्तर (d)- आचार्य विश्वनाथ कविराज ने हास्य के 6 प्रकार माने हैं- (i) स्मित (ii) हसित (iii) विहसित (iv) उपहसित (v) अपहसित (vi) अतिहसित। हास्य रस का स्थायी भाव हास है इसका वर्ण शुक्ल एवं देवता 'प्रमथ' हैं।

48. शृङ्गाररसो भवति :

(a) प्रमथदैवतः	(b) विष्णुदैवतः
(c) गन्धर्वदैवतः	(d) नारायणदैवतः

उत्तर (b)- आचार्य विश्वनाथ ने 9 प्रमुख रसों की सत्ता को स्वीकार किया है। उसमें से शृंगार रस का स्थायी भाव रति है। इसका वर्ण श्याम है एवं देवता विष्णु है।

49. काव्यलक्षणखण्डनविचारे कस्य मतं 'स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्' इति विश्वनाथेन कथितम्?

- | |
|-----------------------|
| (a) आनन्दवर्धनस्य |
| (b) वामनस्य |
| (c) मम्मटस्य |
| (d) व्यक्तिविवेकारस्य |

उत्तर (a)- ध्वनिकार आनन्दवर्धन ने अपने ग्रन्थ "ध्वन्यालोक" में ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है- "काव्यस्यात्मा ध्वनिः"। काव्यलक्षण खण्डन विचारे आनन्दवर्धनस्य मतं "स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्" इति विश्वनाथेन कथितम्।

50. "श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं।" इति पद्यांशः कस्मिन् ग्रन्थे उपलभ्यते?

(a) रघुवंशे	(b) नैघधीयचरिते
(c) मेघदूते	(d) बुद्धचरिते

उत्तर (c)- श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं, यह पद्यांश मेघदूतम् नामक खण्डकाव्य से उद्धृत है। इस खण्डकाव्य की कथा ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी प्राप्त होती है। यह वियोग शृंगार प्रधान है इसमें यक्ष तथा यक्षिणी के प्रेम प्रसङ्ग की चर्चा की गयी है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2015

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'यस्यामापः परिचराः समानी-
रहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।'
मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः?

- (a) अग्निसूक्तेन (b) नासदीयसूक्तेन
(c) पृथ्वीसूक्तेन (d) हिरण्यगर्भसूक्तेन

उत्तर (c) 'पृथ्वीसूक्त' अथर्ववेद के 12वें अध्याय का पहला सूक्त है। इसके देवता भूमि या पृथ्वी है एवं ऋषि अथर्व है।

“यस्यामापः परिचराः समानी -
रहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।”

यह मन्त्रांश पृथ्वीसूक्त से सम्बद्ध है।

2. पुरुषसूक्तेन सम्बद्धा उक्तिः अस्ति-

- (a) 'राजन्तमध्वराणं गोपामृतस्य दीदिविम्'
(b) 'यः पर्वतान् प्रकुपितां अरम्णात्'
(c) 'सः भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्'
(d) 'न मृत्युरासीदमृतं नहि'

उत्तर (c) पुरुष सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त है, इसके देवता-पुरुष एवं ऋषि नारायण हैं, छन्द अनुष्टुप् एवं त्रिष्टुप् हैं। यह मन्त्र-

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

सः भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

यह मन्त्र पुरुषसूक्त से सम्बन्धित है।

3. कः अग्निसूक्तस्य ऋषिः ?

- (a) मधुच्छन्दाः (b) प्रजापतिः
(c) हिरण्यगर्भः (d) विश्वामित्रः

उत्तर (a) अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। इसके देवता अग्नि एवं ऋषि मधुच्छन्दा हैं, छन्द गायत्री है। गायत्री में 24 अक्षर होते हैं। इसका प्रथम मन्त्र निम्न है-

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमत्विजम् ।

होतारं रत्नधातमम् ।

4. ब्राह्मणग्रन्थानां प्रतिपाद्यविषयस्य कति प्रकाराः?

- (a) द्वादश (b) षोडश
(c) चत्वारः (d) दश

उत्तर (d)- ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषय दश प्रकार के होते हैं।

ब्राह्मणेषु प्रतिपाद्य विषयः दश। त्रिषु भागेषु विभक्तः -

विधि, अर्थवाद, उपनिषद्। इसमें से सबसे मुख्य विषय विधि है।

5. “आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा।” इति उक्तम् -

- (a) सायणेन (b) कृष्णद्वैपायनेन
(c) यास्केन (d) मनुना

उत्तर (b)- आरण्यकञ्च वेदेभ्यः औषधिभ्योऽमृतं यथा अर्थात् जिस प्रकार औषधियों में अमृत है उसी प्रकार वेदों में आरण्यक का महत्त्व है। आरण्यक ग्रन्थ उपनिषदों के पूर्व रूप हैं।

6. 'त्रयः स्वराः' इत्यन्तर्गते न गण्यते -

- (a) उदात्तः (b) आगमः
(c) स्वरितः (d) अनुदात्तः

उत्तर (b)- तीन प्रकार के स्वर माने गये हैं- उदात्त अनुदात्त, स्वरित। उदात्त का कोई चिह्न नहीं होता है अनुदात्त में अक्षर के नीचे पड़ी रेखा होती है जबकि स्वरित में अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा होती है। अतः स्पष्ट है कि आगम की गणना तीन स्वरों में नहीं की जाती।

7. प्रायः वेदेषु एव लभ्यते

- (a) लटलकारः (b) लृटलकारः
(c) लिटलकारः (d) लेटलकारः

उत्तर (d)- प्रायः वेदों में लेट लकार का प्रयोग होता है लोक में नहीं। इसका प्रयोग 'शर्त लगाना' एवं 'आशंका करने' के अर्थ में होता है एवं इसका प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। यथा-सविता धर्म। साविष्ट ।

8. अस्ति बाह्यप्रयत्नः -

- (a) नादः (b) ईषत्स्पृष्टम्
(c) स्पृष्टम् (d) विवृतम्

उत्तर (a) प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- (1) आभ्यन्तर प्रयत्न (2) बाह्य प्रयत्न।

आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार का होता है- (i) स्पृष्ट (ii) ईषत्स्पृष्ट (iii) ईषत्तद्विवृत (iv) विवृत (v) संवृत

जबकि बाह्य प्रयत्न 11 माने गये हैं- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अधोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त अनुदात्त तथा स्वरित।

9. तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्नर्यम्” इत्यनेन लक्षितम्-

- (a) कल्पः (b) छन्दस्
(c) निरुक्तम् (d) ज्योतिष्

उत्तर (c)- यास्काचार्य विरचित निरुक्त में इस ग्रन्थ के प्रयोजन को बतलाया गया है। पहला प्रयोजन अथापीदमन्तरेण मन्त्रेष्वर्धप्रत्ययो न विद्यते। अर्थात् इस निरुक्त के बिना मन्त्रों के अर्थों का ज्ञान नहीं हो सकता है दूसरा प्रयोजन तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्नर्यं स्वाथसाधकं च।

10. द्वात्रिंशत् अक्षराणि भवन्ति -

- (a) बृहतीच्छन्दसि (b) पंक्तिच्छन्दसि
(c) जगतीच्छन्दसि (d) अनुष्टुप्

उत्तर (d)- छन्द को वेदरूपी पुरुष के पाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इसमें निम्नलिखित छन्द एवं उसके चरण और अक्षर की विवेचना है-

छन्द	चरण	अक्षर
गायत्री	तीन चरण	24
अनुष्टुप्	चार चरण	32
उष्णिक्	तीन चरण	28
बृहती	चार चरण	36
पंक्ति	चार चरण	40

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

11. पदपूरणार्थकः निपातः अस्ति-

- (a) इत् (b) च
(c) ननु (d) इव

उत्तर (a)- निरुक्त में मुख्य रूप से तीन प्रकार के निपातों की चर्चा की गई है- (1) उपमार्थक निपात (2) कर्मोपसंग्रह निपात (3) पदपूरणार्थक निपात। इन तीनों निपातों से भिन्न पदपूरक अनर्थक निपात भी चार माने गये हैं- (1) कम् (2) ईम् (3) इत् (4) उ ये चारों मुख्य रूप से पदपूरक अर्थ में आते हैं।

12. 'व्यञ्जनसन्निपातः इति कल्प्यते-

- (a) प्रगृह्यः (b) अघोषः
(c) संयोगः (d) यमः

उत्तर (c)- 'व्यञ्जनसन्निपातः संयोगः' अर्थात् अचों के व्यवधान से रहित हलों की संयोग संज्ञा हो। इसका सूत्र है- "हलोऽनन्तराः संयोगः" जिन दो व्यञ्जनों के बीच में स्वर न हो उन दोनों की मिलकर संयोग संज्ञा होती है।

13. यक्षरूपधारिणः परब्रह्मणः आख्यायिका उपलभ्यते-

- (a) ईशावास्योपनिषद् (b) केनोपनिषद्
(c) कठोपनिषद् (d) तैत्तिरीयोपनिषद्

उत्तर (b)- केनोपनिषद् सामवेद के तवलकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। तवलकार को जैमिनीय उपनिषद् भी कहा जाता है। यह 4 खण्डों में विभक्त है। इसके तृतीय खण्ड में परब्रह्म परमेश्वर ने यक्ष का रूप धारण करके अग्नि वायु आदि देवताओं के अहंकार को नष्ट करने का विवेचन है।

14. "मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं " इति उक्तम्-

- (a) मनसा (b) वाचा
(c) नचिकेतसा (d) प्रजापतिना

उत्तर (d)- "मन एव त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं" यह उक्ति प्रजापति की है। इसमें एक बार अपनी श्रेष्ठता के लिए मन और वाणी दोनों प्रजापति के पास पहुँचते हैं। तत्पश्चात् प्रजापति (ब्रह्मा) ने इस उक्ति को कहा।

15. 'यद् दूरङ्गता भवति' इति निरुक्त्या किम् उपलक्ष्यते?

- (a) गौः (b) समुद्रः
(c) नदी (d) मेघः

उत्तर (a)- निरुक्त में शब्दों की व्युत्पत्तियों का भी उल्लेख किया गया है- जैसे-
वीर- वीरयति अमित्राम्
वाक्- वक्तीति वाक्
गौः - गौरिति पृथिव्या नामधेयम्, यदुरङ्गता भवति।

16. 'अथ शिक्षां व्याख्यास्यामः' इत्युक्तिः कुतः उद्धृता-

- (a) कठोपनिषद् (b) तैत्तिरीयोपनिषद्
(c) पाणिनीयशिक्षातः (d) याज्ञवल्क्यशिक्षातः

उत्तर (b)- तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय आरण्यक का अङ्ग है। इसमें तीन वल्ली हैं-

- (1) शिक्षावल्ली - 12 अनुवाक्
(2) ब्रह्मानन्द वल्ली - 9 अनुवाक्
(3) भृगुवल्ली - 10 अनुवाक्

नोट- अतः स्पष्ट है शिक्षा का वर्णन इसी उपनिषद् में है। ये छः हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

17. अधोलिखितेषु नित्यकर्म भवति-

- (a) ज्योतिष्टोमादि (b) सन्ध्यावन्दनादि
(c) चान्द्रायणादि (d) जातेष्ट्यादि

उत्तर (b)- योगीन्द्र सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अधिकारी का लक्षण करते समय काम्य एवं निषिद्ध कर्म का विवेचन किया है। उसी में नित्य कर्म को बताते हैं कि "नित्यानि अकरणे प्रत्यवाय साधनानि सन्ध्या वन्दनादीनि।"

18. अजहल्लक्षणायाः उदाहरणं भवति-

- (a) शोणो धावति (b) तत्त्वमसि
(c) गङ्गायां घोषः (d) सोऽयं देवदत्तः

उत्तर (a)- वेदान्तसार में तीन लक्षणाओं का उल्लेख है-

(i) जहल्लक्षणा	(ii) अजहल्लक्षणा	(iii) जहतजहल्लक्षणा
का उदाहरण	का उदाहरण	का उदाहरण
गङ्गायां घोषः	शोणो धावति	तत्त्वमसि

19. अधोलिखितेषु साक्षात्कारोपयोगि भवति-

- (a) उपक्रमः (b) अपूर्वता
(c) निदिध्यासनम् (d) फलम्

उत्तर (c)- दिये गये विकल्पों में साक्षात्कारोपयोगि निदिध्यासनम् भवति। इसमें निदिध्यासनम् का लक्षण वेदान्तसार में इस प्रकार है- विजातीयदेहादिप्रत्ययरहिताद्वितीयवस्तुसजातीय प्रत्यय प्रवाहो निदिध्यासनम्।

20. अधस्तनेषु साधनचतुष्टये अन्तर्भवति -

- (a) शमदमादिषट्कसम्पत्तिः (b) चन्दनम्
(c) उपक्रमः (d) उपसंहारः

उत्तर (a)- वेदान्तसार में साधनचतुष्टय बताए गये हैं- नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रार्थफलभोगविरागः, शमादिषट्कसम्पत्तिः और मुमुक्षुत्व।

इनमें से शम आदि 6 हैं- शम, दम, उपरति, तितिक्षा समाधान और श्रद्धा।

21. वेदः कः ?

- (a) अपौरुषेयं वाक्यम्
(b) अङ्ग-प्रधान-सम्बन्ध-बोधकं वाक्यम्
(c) कर्मबोधकं वाक्यम्
(d) समभिव्याहारः वाक्यम्

उत्तर (a)- लौगाक्षिभास्कर विरचित अर्थसङ्ग्रह में वेद को अपौरुषेय कहा गया है- "अपौरुषेयं वाक्यं वेदः" इसके पाँच प्रकार हैं- विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद। उसमें से विधि भी चार प्रकार की होती है।

22. प्रयोगविधेः सहकारिप्रमाणानि-

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) चत्वारि

उत्तर (b)- विधि चार प्रकार की होती है-

- (i) उत्पत्ति विधि (ii) विनियोग विधि
(iii) अधिकारी विधि (iv) प्रयोग विधि

इसमें से प्रयोग विधि का लक्षण- प्रयोगप्राशुभाव बोधको विधिः प्रयोग विधिः।

इस प्रयोग विधि के छः प्रमाण हैं- श्रुति, अर्थ, पाठ, स्थान, कर्म, प्रवृत्ति।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

23. 'तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ' इति कस्य लक्षणं भवति?

- (a) अपूर्वविधे: (b) नियमविधे:
(c) अधिकारविधे: (d) परिसङ्ख्यायाः

उत्तर (d)- "तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ" यह परिसंख्या विधि का लक्षण है। इसका समस्त लक्षण। उभयोश्चयुगपत्प्रावितर व्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्या विधिः।

यथा- पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः ब्रह्मक्षत्रेण राघवः।
शल्यकः श्वाविधो गोधा शशः कूर्मश्च पञ्चमः।।

24. 'विरोधे गुणवादः स्यात्' इति लक्षणम् -

- (a) नामधेयस्य (b) गुणविधेः
(c) अर्थवादस्य (d) मन्त्रस्य

उत्तर (c)- वेद के पाँच विभाग हैं-

विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद।

इनमें से अर्थवाद का लक्षण- प्राशस्त्यनिन्दान्य तत् परं वाक्य मर्थवादः। यह अर्थवाद पहले विधि, शेष एवं निषेध शेष दो प्रकार का होता है। पुनः उसके तीन भेद होते हैं-

लक्षण	उदाहरण
विरोधे गुणवादः	आदित्यो यूषः
अनुवादोऽवधारिते	अग्निर्हिमस्य भेषजम्
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थ	इन्द्रो वृत्राय वज्रमुद यच्छदि

25. समीचीनतालिकां चिनुत-

(A) घटः पटः न	(i) प्रागभावः
(B) इह घटो भविष्यति	(ii) अन्योन्याभावः
(C) भूतले घटः न	(iii) प्रध्वंसः
(D) घटो ध्वस्तः	(iv) अत्यन्ताभावः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b) (iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(d) (ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर (d)- दिये गये विकल्पों का सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

घटः पटः न - अन्योन्याभावः

इह घटो भविष्यति- प्रागभावः

भूतले घटः न- अत्यन्ताभावः

घटो ध्वस्तः - प्रध्वंसः

ये चारों अभाव की श्रेणी में आते हैं।

26. अभावस्य प्रत्यक्षं भवति-

- (a) संयोगसम्बन्धेन
(b) समवायसम्बन्धेन
(c) संयुक्त-समवाय-सन्निकर्षेण
(d) विशेषण-विशेष्य-भावसन्निकर्षेण

उत्तर (d)- सन्निकर्ष छः माने गये हैं- (i) संयोग (ii) संयुक्त समवाय (iii) संयुक्तसमवेत समवाय (iv) समवाय (v) समवेत समवाय (vi) विशेषण विशेष्यभाव सन्निकर्ष।

इनमें से अभाव के प्रत्यक्ष होने पर विशेषण विशेष्य भाव सन्निकर्ष होता है। जैसे- "घटाभाववद् भूतलम्"

27. 'आप्तवाक्यं शब्दः' इति लक्षणम् -

- (a) पदस्य (b) वाक्यस्य
(c) शब्दप्रमाणस्य (d) महावाक्यस्य

उत्तर (c)- न्याय एवं वैशेषिक दोनों में चार प्रकार के प्रमाणों की चर्चा की गई है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। शब्द को आप्त वाक्य माना गया है। इसीलिए "आप्तवाक्यं शब्दः" कहा गया है। यह योग्यता आकांक्षा और आसक्ति से युक्त पद को वाक्य कहते हैं।

28. 'एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्' इति लक्षणं भवति-

- (a) अज्ञानस्य (b) समूहालम्बनज्ञानस्य
(c) संशयस्य (d) शाब्दज्ञानस्य

उत्तर (c)- तर्कसङ्ग्रह में अयथार्थ अनुभव तीन प्रकार के बताये गये हैं- संशय, विपर्यय, तर्क। उसमें से "एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम् संशयः" यथा "स्थाणुर्वा पुरुषो वा"। जबकि विपर्यय मिथ्याज्ञानं विपर्ययः यथा- "शुक्तो रजतम्" तर्क का लक्षण- व्याप्यारोपेण व्यापकोपस्तर्कः।

29. 'प्रतिविषयाध्यवसायः' इत्यस्य सम्बन्धनः केन?

- (a) अनुमानेन (b) आप्तवचनेन
(c) प्रत्यक्षेण (d) उपमानेन

उत्तर (c)- साङ्ख्यकारिका में तीन प्रमाणों के सत्ता की बात कही गई है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द (आप्त) इसमें से प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण- "प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टः"। अर्थात् विषय से सम्बद्ध (सन्निकृष्ट) इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

30. 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः' कस्य?

- (a) प्रकृतेः (b) गुणत्रयस्य
(c) जलस्य (d) तेजसः

उत्तर (b)- साङ्ख्यकारिका में प्रकृति के तीन गुणों की चर्चा हुई है। वे हैं- सत्त्व, रज, तम। सत्त्व हल्का अतएव प्रकाशक, रजस, प्रवृत्तिशील चञ्चल अतएव उत्तेजक एवं तमस भारी अतएव अवरोधक माना गया है एक ही प्रयोजन की सिद्ध के लिए तीनों ही प्रदीप के समान मिलकर कार्य करते हैं।

31. 'ततोऽहङ्कारः' इति अहङ्कारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति?

- (a) प्रकृतेः (b) महतः
(c) षोडशगणात् (d) पञ्चभूतेभ्यः

उत्तर (b)- साङ्ख्य में 25 तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार्य किया गया है उसमें से प्रकृति से सात पदार्थों की उत्पत्ति मानी गई है अर्थात् प्रकृति से महत्तत्त्व (बुद्धि) महत् से अहंकार, अहंकार से पञ्च तन्मात्रों की उत्पत्ति हुई है। अतः स्पष्ट है कि अहंकार की उत्पत्ति महत्तत्त्व से हुई है।

32. साङ्ख्यदर्शनानुसारं अध्यवसायात्मकं तत्त्वं किम्?

- (a) बुद्धिः (b) चक्षुः
(c) त्वक् (d) कर्णः

उत्तर (a)- साङ्ख्यकारिका में तीन प्रमाणों की सत्ता की बात कही गई है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द (आप्त) इसमें से प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण- "प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टः"। अर्थात् विषय से सम्बद्ध (सन्निकृष्ट) इन्द्रिय पर आश्रित बुद्धि व्यापार या ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

33. 'स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति' इत्यनेन महाभाष्ये किमभिप्रेतम्?

- (a) शब्दशुद्धिः (b) चित्तशुद्धिः
(c) कायशुद्धिः (d) व्यवहारशुद्धिः

उत्तर (a)

व्याख्या- पतञ्जलि ने लिखा कि- मन्त्रहीनो स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतो पराधात् ।। इसमें शब्द शुद्धि दोष है। क्योंकि इसमें दोष होने के कारण 'इन्द्र का शत्रु जो है उसकी मृत्यु हो जाय'।

34. 'यागात् स्वर्गो भवति' इत्यत्र भू-धातोः कः अर्थः?

- (a) सत्ता (b) यागः
(c) स्वर्गः (d) उत्पत्तिः

उत्तर (d)

व्याख्या- 'यागात् स्वर्गो भवति' यह भू धातु का अर्थ उत्पत्ति से है अर्थात् यज्ञ करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है यहाँ जो स्वर्ग की प्राप्ति है वह उत्पत्ति रूप है।

35. अधोऽङ्कितानां युग्मानां समीचीनां तालिका चेतव्या -

- (A) झयः (i) भृत्यः
(B) मनोरौवा (ii) शताद् बद्धः
(C) भृजोऽसंज्ञायाम् (iii) विद्युत्वान्
(D) अकर्तर्यृणे पञ्चमी (iv) मनुः

- (A) (B) (C) (D)
(a) (ii) (iv) (iii) (i)
(b) (iii) (iv) (i) (ii)
(c) (i) (iii) (ii) (iv)
(d) (iii) (iv) (ii) (i)

उत्तर (b)

व्याख्या- सही सुमेलन इस प्रकार है-

झयः	-	विद्युत्वान्
मनोरौवा	-	मनुः
भृजोऽसंज्ञायाम्	-	भृत्यः
अकर्तर्यृणे पञ्चमी	-	शताद् बद्धः

36. 'सर्पिषो जानीते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) तडाऽऽनावाऽऽत्मनेपदम्
(b) कर्तरि कर्मव्यतिहारे
(c) अनुदात्तङित आत्मनेपदम्
(d) अकर्मकाच्च

उत्तर (d)- "अकर्मकाच्च" सूत्र यह कहता है कि अकर्मक ज्ञा धातु से आत्मनेपद हो। और परगामी क्रियाफल में भी आत्मनेपद का नियम किया गया है।

उदा.- 'सर्पिषो जानीते'

37. 'उपरमति' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) व्याङ्परिभ्यो रमः (b) अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः
(c) अनुपराभ्यां कृञः (d) उपाच्च

उत्तर (d)- परस्मैपद नियम सूत्र उपाच्च यह कहता है कि- उप उपसर्ग से पर 'रम्' धातु को परस्मैपद हो।

यथा-यज्ञदत्तमुपरमति - यहाँ उप उपसर्ग पूर्व होने से रम् धातु से परस्मैपद हुआ।

अन्य उदाहरण- उपरमति।

38. ध्वनिस्फोटयोर्मध्ये कः सम्बन्धः?

- (a) कार्यकारणभावः (b) शक्तिशक्तिमद्भावः
(c) गुणगुणीभावः (d) क्रियाक्रियावद्भावः

उत्तर (a)- ध्वनिस्फोटयोर्मध्ये कार्यकारणभावः सम्बन्धः। अर्थात् ध्वनि और स्फोट के बीच कार्य कारण भाव सम्बन्ध है। स्फोट भारतीय व्याकरण की परम्परा एवं पाणिनि दर्शन का महत्वपूर्ण विषय है स्फोट (नित्यशब्द) को संसार का कारण मानते हैं।

39. स्वीकृतं भर्तृहरिमते वाचः -

- (a) चातुर्विध्यम् (b) त्रैविध्यम्
(c) द्वैविध्यम् (d) एकविध्यम्

उत्तर (b)- भर्तृहरि के अनुसार वाचः को त्रैविध्यम् कहा गया। भर्तृहरि संस्कृत साहित्य के एक नीतिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं इनके शतकत्रय (नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्यशतक) है प्रत्येक शतक में लगभग सौ-सौ श्लोक हैं।

40. तृतीये सवने कीदृशः स्वरः प्रयोज्यः ?

- (a) गम्भीरः (b) मध्यमः
(c) तारः (d) कम्पः

उत्तर (b)- तृतीय सवने मध्यमः स्वरः प्रयोज्यः । अर्थात् तृतीय सवन में मध्यम स्वर का प्रयोग होता है तथा क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं अन्य सवन में गम्भीर, मध्यम और कम्पः स्वर का प्रयोग होता है।

41. 'वज्रं पतति मस्तके' इति पद्यांश कुत्रोक्तः?

- (a) महाभाष्ये (b) अष्टाध्याय्याम्
(c) वाक्यपदीये (d) पाणिनिशिक्षायाम्

उत्तर (d)- 'वज्रं पतति मस्तके' यह पद्यांश पाणिनिशिक्षा का है। पाणिनीयशिक्षा यह आचार्य पाणिनि के अनुज आचार्य पिङ्गल का है। इसमें पाठक के 6 गुणों की चर्चा की गई है।

42. प्रसिद्धध्वनिनियमेषु अर्वाचीनतमः कः?

- (a) वर्नरनियमः (b) ग्रासमाननियमः
(c) ग्रिमनियमः (d) विण्टरनिट्जिनियमः

उत्तर (a) - ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी नियमों के लिए ग्रिम, ग्रासमान, एवं वर्नर ने अपना मत प्रस्तुत किया है। इसमें से अर्वाचीन (नया) नियम वर्नर महोदय का है।

43. जिह्वाभागविशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यस्वरोऽस्ति-

- (a) अकारः (b) इकारः
(c) उकारः (d) एकारः

उत्तर (a)- जिह्वाभाग विशेषोच्चारणदृष्ट्या मध्यम स्वर अकारः अस्ति। अर्थात् जिह्वा के भाग विशेष से उच्चारण की दृष्टि से अकार मध्यम स्वर है।

44. आकृतिमूलकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् -

- (a) प्रकृतिः (b) प्रत्ययः
(c) उपसर्गः (d) व्यापारः

उत्तर (d)- आकृतिमूलक वर्गीकरण को दो मुख्य वर्गों में बाँटा गया है-

(1) अयोगात्मक (2) योगात्मक
इसमें से अयोगात्मक भाषा में प्रकृति और प्रत्यय अर्थतत्त्व या सम्बन्धतत्त्व का संयोग नहीं होता है।
अतः स्पष्ट है कि व्यापार का सम्बन्ध इससे नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

45. पारिवारिकवर्गीकरणेन असम्बद्धम् -

(a) फलसाम्यम्	(b) ध्वनिसाम्यम्
(c) पदसाम्यम्	(d) अर्थसाम्यम्

उत्तर (a)- भाषाविज्ञान में विश्व की भाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है। (i) आकृतिमूलक और (ii) परिवारमूलक। आकृतिमूलक के दो भेद- **योगात्मक और अयोगात्मक**। पारिवारिक वर्गीकरण में रचना तत्त्व के साथ ही अर्थतत्त्व पर भी ध्यान दिया जाता है। इसके अन्तर्गत ध्वनिसाम्य, पदसाम्य, अर्थसाम्य का उल्लेख है जबकि फलसाम्य का उल्लेख नहीं है।

46. संस्कृतभाषायाः 'शतम्' इति पदं गौथिकभाषायाम् 'हुन्द' भवति; इति कस्य मतम्?

(a) ग्रिममहोदयस्य	(b) वर्नरमहोदयस्य
(c) ग्रासमानमहोदयस्य	(d) थॉप्पसनमहोदयस्य

उत्तर (b)- कार्ल वर्नर जर्मन भाषाशास्त्री थे इन्होंने ग्रिम नियम को संशोधित किया। इन्होंने ने संस्कृत भाषा में 'शतम्' इस पद को गौथिक भाषा में हुन्द होता है ऐसा मत दिया।

47. अर्थपरिवर्तनकारणेष्वन्यतमम् -

(a) सादृश्यम्	(b) आगमः
(c) लोपः	(d) स्वरभक्तिः

उत्तर (a)- अर्थपरिवर्तन के तीन कारण माने गये हैं- (i) अर्थ विस्तार (ii) अर्थसंकोच (iii) अर्थदिश।

Note- दिए गये विकल्पों में सादृश्यम् अर्थ परिवर्तन में लाक्षणिक प्रयोग के रूप में निहित है- शेष-आगम लोप और स्वरभक्ति का उल्लेख नहीं है।

48. "हृतेऽपि भारे महत्स्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः।; कस्य वर्णना इयम्?

(a) कुबेरस्य	(b) यमवाहनमहिषस्य
(c) इन्द्रस्य	(d) वरुणस्य

उत्तर (b)- प्रस्तुत श्लोक माघ प्रणीत शिशुपालवधम् महाकाव्य से उद्धृत है। इस श्लोक में रावण द्वारा यमराज पर विजय वर्णित है। परेतर्भर्तुर्महिषोऽमुना धनुर्विधातुमुत्खातविषाणमण्डलः। हृतेऽपि भारे महत्स्त्रपाभरा दुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः। इसमें यमराज के भैंसे का उल्लेख है।

49. "मदेकपुत्रा जननी जरातुरा " कस्येयमुक्तिः?

(a) दमयन्त्याः	(b) हंसस्य
(c) भीमस्य	(d) नलस्य

उत्तर (b)- मदेकपुत्राजननी जरातुरा, नवप्रसूतिर्वरटातपस्विनी। गतिस्तयोरेष जनस्यमर्दयन्नहो विधेत्वां करुणां रुणद्धि न। यह कथन श्री हर्ष विरचित नैषधीय चरितम् में राजा नल के द्वारा हंस को पकड़ लिए जाने के बाद हंस का है।

50. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत -

(A) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः	(i) मृच्छकटिकम्
(B) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः	(ii) कर्णभारम्
(C) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्	(iii) रघुवंशम्
(D) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति	(iv) मुद्राराक्षसम्

(A) (B) (C) (D)

(a) (iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b) (iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c) (ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d) (iv)	(iii)	(i)	(ii)

उत्तर (d)-

(1) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः	- मुद्राराक्षस
(2) आसीत् स दोलाचल चित्तवृत्तिः	- रघुवंशम्
(3) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्	- मृच्छकटिकम्
(4) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति	- कर्णभारम्

51. "न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।" केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकः?

(a) मन्दाक्रान्ता	(b) हरिणी
(c) शिखरिणी	(d) स्रग्धरा

उत्तर (c)- प्रस्तुत श्लोक-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै,
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादित रसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥

इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है। इसका छन्द का लक्षण- रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

52. "वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे-" इत्यत्र कस्तावत् वैदेहिबन्धुः?

(a) रामः	(b) लक्ष्मणः
(c) रावणः	(d) भरतः

उत्तर (a)- महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्यम् में 19 सर्ग है इसके चतुर्दश सर्ग में "वैदेहिबन्धोर्हृदयं विदद्रे" अर्थात् ऐसा सुनकर वैदेही के पति (राम) का हृदय वैसे ही फट गया जैसे घन की चोट से तपाया गया लोहा फट जाता है यहाँ वैदेही के बन्धु राम को कहा गया है।

53. रत्नावल्यां उदयनस्य कञ्चुकी कः?

(a) बाभ्रव्यः	(b) यौगन्धरायणः
(c) वसन्तकः	(d) विक्रमबाहुः

उत्तर (a)- महाकवि श्रीहर्ष की रत्नावली नाटिका 4 अंकों में विभक्त है। इस नाटिका के नायक उदयन नायिका सागरिका है एवं कञ्चुकी बाभ्रव्य एवं विदूषक वसन्तक है। उदयन की प्रतिहारी का नाम वसुन्धरा है।

54. कुरङ्गकेनहर्षचरिते किं कर्म कृतम्?

(a) चिकित्साकर्म	(b) पूजाकर्म
(c) वार्ताप्रदानम्	(d) भाग्यगणनम्

उत्तर (c)- हर्षचरितम् बाणभट्ट की इतिहास प्रसिद्ध आख्यायिका ग्रन्थ है। इसमें 8 उच्छ्वास है इसमें प्रधान रस वीर है। इस ग्रन्थ में कुरङ्गकेन कर्म वार्ताप्रदानम् कृतम्।

55. "सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।" इत्यादि-श्लोकः कस्य उदाहरणरूपेण ध्वन्यालोके उल्लिखितः?

(a) अक्षेपालङ्कारस्य	(b) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य
(c) अविवक्षितवाच्यस्य	(d) विवक्षितान्यपरवाच्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (c) ध्वन्यालोककार आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वनि के दो मुख्य भेद किए-

(i) अविवक्षितवाच्य (लक्षणा मूला)

(ii) विवक्षित वाच्य (अभिधामूला)

इसमें से लक्षणा मूलध्वनि का उदाहरण-

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।

शूरश्च येन तवाधरपाटलं दशति बिम्बफलम् शुकशावकः। है।

56. “नृत्तं _____।” शून्यं स्थानं पूरयत

- (a) भावाश्रयम् (b) केवलं लयाश्रयम्
(c) केवलं तालाश्रयम् (d) ताललयाश्रयम्

उत्तर (d)- ‘नृत्तं ताललयाश्रयम् भवति’ अर्थात् नृत्त, ताल और लय पर आश्रित होता है। चञ्चुपुट (हाथ की ताली) इत्यादि ताल है। द्रुत (मध्यम विलम्बित) इत्यादि लय है, केवल उन्हीं (ताल, लय) पर आश्रित होने वाला अङ्ग विक्षेप नृत्त कहलाता है।

57. प्राप्त्याशा भवति-

- (a) फललाभाय औत्सुक्यमात्रम्
(b) उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्तिर्भवः
(c) अप्राप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः
(d) अपायाभावतः प्राप्तिः

उत्तर (b)- दशरूपकम् में 5 कार्यावस्थाओं का उल्लेख है- आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम। इसमें से प्राप्त्याशा का लक्षण किया जा रहा है- उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिर्भवः : है अतः विकल्प B सही है।

58. “निः शेषच्युतचन्दनं” इत्यादि-श्लोके ‘अत्र तदन्तिकमेव रन्तुं गतासि’ इति व्यङ्ग्यं चं मम्मटेन कथं निर्धारितम्?

- (a) प्राधान्येन ‘अधम’ पदेन
(b) प्राधान्येन ‘मिथ्यावादिनि’ पदेन
(c) ‘निःशेष’ शब्देन
(d) ‘निर्मृष्टरागोऽधरः’ इति पदेन

उत्तर (a)- काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मट ने काव्य के तीन भेद किये हैं- उत्तमकाव्य, मध्यमकाव्य एवं अधमकाव्य। उसमें से उत्तमकाव्य का लक्षण- इदमुत्तममतिशायिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद ध्वनिर्बुधेः कथितः। इसकाव्य का उदाहरण- निः शेषच्युतचन्दनं स्तन तटं...स्यन्तिमकम्। यहाँ अधम पद से उत्तम काव्य सिद्ध होता है।

59. “किञ्चित् पृष्ठमपृष्ठं वा कथितं यत् प्रकल्प्यते तादृगन्यव्यपोहाय _____ तु सा स्मृता।” रिक्तस्थानं पूरयत

- (a) उपमा (b) व्याजस्तुतिः
(c) अपहृतिः (d) परिसंख्या

उत्तर (d)- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के नवम एवं दशम, उल्लास में अलंकारों का विवेचन किया है उसमें परिसंख्या अलंकार का लक्षण-

किञ्चित् पृष्ठमपृष्ठं वा कथितं यत् प्रकल्प्यते।

तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता।

अर्थात् किसी पूछी गई या बिना पूछी गई बात जो उसी प्रकार की अन्य वस्तु के निषेध में पर्यवसित होती है परिसंख्या कहलाती है।

60. दशरूपकमते नाटकस्य अङ्कसंख्या भवति-

- (a) 5-7 (b) 5-8
(c) 5-10 (d) 7-10

उत्तर (c)- दशरूपककार धनञ्जय के अनुसार नाटकों में कम से कम 5 अङ्क एवं अधिकतम 10 अङ्क होने चाहिए।

61. रिक्तं स्थानं पूरयत-

“नाट्याख्यं _____ वेदं सेतिहासं करोम्यहम्।”

- (a) उत्तमम् (b) अपूर्वम्
(c) द्वितीयम् (d) पञ्चमम्

उत्तर (d)- “नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्” भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र को पाँचवाँ वेद कहा गया है इसमें 36 अध्याय हैं इसके मंगलाचरण में ब्रह्मा तथा शिव दोनों देवताओं की स्तुति की गई है।

62. सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।”

काव्यप्रकाशकारमते कोऽयम् अलङ्कारः?

- (a) निदर्शना (b) प्रतिवस्तूपमा
(c) दृष्टान्तः (d) विशेषोक्तिः

उत्तर (b)- प्रतिवस्तूपमा तु सा। सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः। अर्थात् जहाँ एक ही साधारण धर्म को दो वाक्यों में दो बार (भिन्न शब्दों) से कहा जाय वह प्रतिवस्तूपमा अलङ्कार होता है।

63. “सतप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः इति शिशुपालवधस्य श्लोकांशे ‘कार्तस्वर’ - पदस्य कोऽर्थः?

- (a) रजतम् (b) ताम्रम्
(c) सुवर्णम् (d) स्फटिकम्

उत्तर (c)- शिशुपालवधम् माघ की प्रसिद्ध रचना है। इस श्लोक- “सतप्तकार्तस्वरभास्वराम्बरः कठोरताराधिपलाछनछविः इवाम्भसां निधिः। में कृष्ण की समुद्र से समता प्रदर्शित की गई है यहाँ कार्तस्वर पद का अर्थ सुवर्ण (सोना) किया गया है।

64. कस्य काव्यं ‘विद्वदौषधं’ कथ्यते?

- (a) माघस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) कालिदासस्य (d) अश्वघोषस्य

उत्तर (b)- श्रीहर्ष के काव्य को विद्वानों के लिए औषधि कहा है। नैषधीयचरितम् महाकाव्य 22 सर्गों में विभक्त है यह बृहत्त्रयी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके विषय में कहा गया है कि “नैषधं विद्वदौषधम्”।

65. “सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।”

इत्याद्युक्तिः केन सम्बद्धा?

- (a) वेदलक्षणेन
(b) ज्योतिषलक्षणेन
(c) महाकाव्यलक्षणेन
(d) पुराणलक्षणेन

उत्तर (d)- पुराण का लक्षण इस प्रकार है -

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

ये पाँचों ही लक्षण विष्णु पुराण पर घटित होते हैं। पुराणों की संख्या 18 है उपपुराण भी 18 माने गये हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

66. एषु कस्य देशस्य नाम हरिषेणस्य इलाहाबाद-शिलालेखे नास्ति?

- (a) समतटः (b) उवाकः
(c) कामरूपः (d) चीनः

उत्तर (d)- प्रयाग प्रशस्ति समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रची गई थी। यह इलाहाबाद के किले में स्थित है। इसमें- **समतटः उवाकः कामरूपः** का उल्लेख है। **चीन का उल्लेख इस शिलालेख में नहीं है।**

67. अर्थशास्त्रकारमते विद्या कतिविधा?

- (a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

उत्तर (c)- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चार प्रकार की विद्याओं का उल्लेख है- **आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीतिश्चेति विद्याः।** आन्वीक्षिकी नाम तर्क विद्या। साम, ऋक, यजुः इन तीनों का समन्वित नाम ही त्रयी है।

68. अर्थशास्त्रतः रिक्तं स्थानं पूरयत-

“कृषिपशुपाल्ये वणिज्या च _____।”

- (a) वार्ता (b) आन्वीक्षिकी
(c) त्रयी (d) दण्डनीतिः

उत्तर (a)- कृषि पशुपाल्ये वणिज्या च वार्ता।

अर्थात् चारों विद्याओं में वार्ता, विद्या, कृषि पशुपालन और व्यापार के विषय हैं यह विद्या धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्र आदि खनिज पदार्थ और नौकर चाकर आदि को देने वाली परम उपकारिणी है।

69. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति-

- (a) रघुवंशस्य
(b) भट्टिकाव्यस्य
(c) जानकीहरणस्य
(d) किरातार्जुनीयस्य

उत्तर (d)- रघुवंशस्य, भट्टिकाव्यस्य, जानकीहरणस्य इन तीनों की कथा रामायण पर आश्रित है जबकि किरातार्जुनीयम् का आधार ग्रन्थ महाभारत का वन पर्व है। यह बृहत्तयी का महाकाव्य है इसमें 18 सर्ग हैं तथा वीर रस प्रधान महाकाव्य है।

70. ‘जय’ इति कस्य महाकाव्यस्य नामान्तरम्?

- (a) रामायणस्य
(b) महाभारतस्य
(c) रघुवंशस्य
(d) शिशुपालवधस्य

उत्तर (b)- जय महाभारत का ही एक नाम है। पहले जय पश्चात् भारत उसके बाद महाभारत नाम रखा गया। इसके रचयिता वेदव्यास हैं 18 पर्वों में विभक्त है। इसमें एक लाख श्लोक होने से इसको ‘शतसाहस्री संहिता भी कहा जाता है।

71. मनुसंहितायां कस्य दुर्गस्य समाश्रयणं बहुधा प्रशंसितम्?

- (a) धन्वदुर्गस्य (b) अब्दुर्गस्य

(c) महीदुर्गस्य

(d) गिरिदुर्गस्य

उत्तर (d)- मनुस्मृति में 12 अध्याय हैं इसके सातवें अध्याय में 6 प्रकार के दुर्गों की चर्चा हुई है। वह इस श्लोक से स्पष्ट किया जा रहा है-

धनुदुर्गं महीदुर्गमब्दुर्गं वार्क्षमेव वा।

गिरिदुर्गं नृदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरमा॥

इन दुर्गों में से गिरिदुर्ग अर्थात् पर्वत के आकार का दुर्ग (किला) सबसे अधिक सुरक्षित होता है। राजा को इसी किले में रहना चाहिए।

72. मनुसंहितायां कतिक्रोधजानि व्यसनानि?

- (a) अष्टौ (b) नव
(c) दश (d) सप्त

उत्तर (a)- मनुस्मृति में आठ प्रकार के क्रोध को बताया गया है ये व्यसन हैं- (1) चुगुली करना (2) साहस (3) द्रोह (4) ईर्ष्या (5) दूसरों में दोष देखना (6) दूसरों के धन को छीन लेना (7) गालियाँ देना (8) दूसरों से बुरा व्यवहार करना है।

73. “श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रतु वै स्मृतिः।” इति

मनुसंहितायां कस्मिन्नध्याये उपलभ्यते

- (a) प्रथमाध्याये
(b) द्वितीयाध्याये
(c) तृतीयाध्याये
(d) सप्तमाध्याये

उत्तर (b)- मनुस्मृति में 12 अध्याय हैं इसके दूसरे अध्याय में यह श्लोक वर्णित है। श्लोक इस प्रकार है-

“श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रतु वै स्मृतिः।

ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ॥

अर्थात् श्रुति शब्द से ‘वेद’ और स्मृति शब्द से ‘धर्मशास्त्र’ समझना चाहिए।

74. अभियोगे साक्ष्ये च दोषत्वेन न गण्यते-

- (a) धनविकृतिः (b) कर्मविकृतिः
(c) मनोविकृतिः (d) वाग्विकृतिः

उत्तर (a)- याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय में दुष्ट के लक्षण को प्रदर्शित किया गया है। अभियोग और साक्ष्य में दुष्ट (अविश्वसनीय) वह होता है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है। अभियोग साक्षी में दुष्ट “**मनोवाक्कार्यकर्मभिर्यः**” अर्थात् ये मन, वाणी और कर्म की विकृतियाँ जिसके स्वभाव में हो वही साक्ष्य और अभियोग में दुष्ट है।

75. साक्षिगुणान्यतमो नास्ति-

- (a) तपस्विता (b) सत्यवादिता
(c) कूटसाक्षिता (d) धनान्विता

उत्तर (c)- कूटसाक्षी साक्षिगुणों से भिन्न नहीं है अर्थात् जो (धन के द्वारा) साक्षियों को नियुक्त करे वह कूटकृत होता है ऐसा कूटकृत तथा कूटसाक्षी ये दोनों विवाद के धन से दुगुना दण्ड पाते हैं यदि इनमें ब्राह्मण है तो उसे राज्य से निकाल दें।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2015

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'रोदसी' - पदस्य कोऽर्थः ?

- (a) अन्तरिक्षम् (b) अहोरात्रे
(c) द्यावापृथिवी (d) रुद्रः

उत्तर (c) मरुत सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 85वाँ सूक्त है इसमें 12 मन्त्र हैं इसके ऋषि गौतम एवं देवता- मरुत हैं। इस सूक्त के प्रथम मन्त्र में प्रयुक्त 'रोदसी' पद का अर्थ द्यावापृथिवी-अर्थात् द्युलोक और पृथ्वीलोक हैं।

2. अधस्तादन्तेषु कः वंशमण्डलेन सम्बद्धः नास्ति?

- (a) अत्रिः (b) गौतमः
(c) वामदेवः (d) विश्वामित्रः

उत्तर (b)- ऋग्वेद में दश मण्डल है, 85 अनुवाक 1017 सूक्त और 10580 मन्त्र हैं महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएँ हैं। इसके प्रत्येक मण्डल के अलग अलग ऋषि हैं-

प्रथम मण्डल के ऋषि - मधुच्छन्दा

द्वितीय मण्डल के ऋषि - गृत्समद

तृतीय मण्डल के ऋषि - विश्वामित्र

चतुर्थ मण्डल के ऋषि - वामदेव

पञ्चम मण्डल के ऋषि - अत्रि। जबकि वंशमण्डल में गौतम ऋषि का उल्लेख नहीं है।

3. पतञ्जलिमहाभाष्यानुसारम् अथर्ववेदस्य शाखाः सन्ति-

- (a) 5 (b) 100
(c) 21 (d) 9

उत्तर (d)- वेदों में चौथा वेद अथर्ववेद है अथर्वन् ऋषि के आधार पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। इस वेद के देवता-सोम एवं आचार्य -सुमन्तु हैं इसमें पतञ्जलि के मतानुसार 9 शाखा, 20 काण्ड, 730 सूक्त एवं 5987 मन्त्र हैं। इस समय 9 में से 2 शाखा प्रचलित हैं- पिप्पलाद, एवं शौनक।

4. 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' - इति वाक्यं कुत्र वर्तते?

- (a) ऋग्वेदे (b) अथर्ववेदे
(c) यजुर्वेदे (d) सामवेदे

उत्तर (c)- 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्' यह वाक्य यजुर्वेद से सम्बन्धित है। यह वेद दो भागों में विभक्त है- कृष्णयजुर्वेद और शुक्लयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय 'ईशावास्योपनिषद्' है।

5. सायणाचार्यः सर्वतः प्रथमं कं वेदं व्याख्यातवान् ?

- (a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

उत्तर (a)- सायण आचार्य वेद के प्राचीन भाष्यकार थे उन्होंने सर्वप्रथम यजुर्वेद की व्याख्या की। इन्होंने यजुर्वेद के दो विभाग किए हैं- (i) शुक्लयजुर्वेद (ii) कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की शाखा- वाजसनेयिशाखा एवं काण्व और कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल शाखाएँ हैं।

6. द्युस्थानदेवता विद्यते -

- (a) इन्द्रः (b) सूर्यः
(c) विष्णुः (d) वायुः

उत्तर (c)- यास्काचार्य विरचित निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं की चर्चा है। विष्णु द्युस्थानीय देवता है, जबकि इन्द्र, वायु, रुद्र- ये अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। जबकि पृथ्वी, सोम, अग्नि पृथ्वी स्थानीय देवता हैं।

7. 'त्रिष्टुप्' छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति?

- (a) 28 (b) 36
(c) 44 (d) 48

उत्तर (c)- त्रिष्टुप् छन्द में - 44 अक्षर होते हैं।

गायत्री में - 24 अक्षर होते हैं

पंक्ति में - 40 अक्षर होते हैं

अनुष्टुप् - 32 अक्षर होते हैं

उष्णिक् - 28 अक्षर होते हैं

वृहती छन्द में - 36 अक्षर होते हैं

जगती में - 48 अक्षर होते हैं

8. आश्वलायनगृह्यसूत्रम् केन वेदेन सम्बद्धम् विद्यते?

- (a) अथर्ववेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (c)- कल्प के चार भाग हैं, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र है।

आश्वलायन, शांखायन, कौषीतकि- ये ऋग्वेद के गृह्यसूत्र

बौधायन, मानव, पारस्कर- ये यजुर्वेद के गृह्यसूत्र

खादिर, गोभिल, जैमिनीय- ये सामवेद के गृह्यसूत्र

कौशिक - ये अथर्ववेद से सम्बन्धित गृह्यसूत्र हैं।

9. बाधूलश्रौतसूत्रम् कस्य वेदस्य वर्तते?

- (a) सामवेदस्य
(b) कृष्णयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य
(d) अथर्ववेदस्य

उत्तर (b)- बाधूल, आपस्तम्ब, मानव-ये कृष्णयजुर्वेद के श्रौतसूत्र हैं कात्यायन, पारस्कर - ये शुक्लयजुर्वेद के हैं आश्वलायन, शांखायन- ये ऋग्वेद के श्रौतसूत्र हैं जैमिनीय, खादिर, आर्षेय- ये सामवेद के श्रौतसूत्र हैं वैतान श्रौतसूत्र- ये अथर्ववेद के हैं।

10. श्रोत्रस्थानीयं वेदाङ्गं निरूपितमस्ति-

- (a) निरुक्तम् (b) शिक्षा
(c) कल्पः (d) छन्दः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (a)- वेदाङ्गों की संख्या 6 है- शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

इनमें से निरुक्तम् को वेद रूपी पुरुष का श्रोत कहा गया है- “निरुक्तं श्रोतमुच्यते”। निरुक्त में तीन काण्ड एवं 12 अध्याय हैं।

(1) नैघण्टुककाण्डम् (2) नैगमकाण्डम् (3) दैवतकाण्डम्

11. कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता कं यागमनुष्ठितवान्?

- (a) अश्वमेधयागम् (b) सर्वमेधयागम्
(c) सर्वजिघागम् (d) पितृमेधयागम्

उत्तर (b)- कठोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है। इसमें 2 अध्याय हैं एवं प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां हैं। इसके प्रथम अध्याय में नचिकेता के पिता ने सर्वमेधयाग (यज्ञ) का अनुष्ठान करते हैं जिसमें सब कुछ दान कर दिया जाता है।

12. माध्यन्दिनीयसंहितायां ‘शतरुद्रीय होममन्त्राः’ कस्मिन् अध्याये समुक्ताः?

- (a) अष्टादशे (b) सप्तदशे
(c) पञ्चदशे (d) षोडशे

उत्तर (d)- शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता में “शतरुद्रीय होममन्त्राः” षोडशे अध्याये समुक्ताः अर्थात् इस शतरुद्रीय होममन्त्र का उल्लेख 16वें अध्याय में वर्णित है।

13. ‘शतपथब्राह्मणस्य’ आङ्ग्लानुवादः कृतो वर्तते-

- (a) जी. थीबोमहोदयेन (b) जे. एग्लिंगमहोदयेन
(c) एम. विलियम्समहोदयेन (d) डब्लू. कैलेण्डमहोदयेन

उत्तर (b) शतपथ ब्राह्मण का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद ‘जे एग्लिंगमहोदय ने किया। यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है (i) शुक्लयजुर्वेद (ii) कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण ‘शतपथ ब्राह्मण’ है।

14. विलुप्ता ‘मौद’ शाखा कस्य वेदस्य वर्तते?

- (a) सामवेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) शुक्लयजुर्वेदस्य

उत्तर (c)- अथर्ववेद की 9 शाखा उपलब्ध थी- पिप्पलाद, स्तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श चारणवैद्य। अतः स्पष्ट है कि विलुप्त हुई मौद शाखा का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। जबकि सामवेद की शाखा कौथुमीयशाखा, राणायनीय एवं जैमिनीय है।

15. निर्वचनसिद्धान्त-प्रतिपादकं वेदाङ्गं विद्यते-

- (a) कल्पशास्त्रम् (b) छन्दःशास्त्रम्
(c) शिक्षा (d) निरुक्तम्

उत्तर (d)-यास्काचार्य विरचित निरुक्त में 3 काण्ड हैं एवं अध्यायों की संख्या 12 है। इसमें 5 प्रकार के निर्वचन सिद्धान्त का वर्णन किया गया है-

(i) वर्णागम (ii) वर्णविपर्यय (iii) वर्णविकार (iv) वर्णलोप (v) धात्वर्थातिशय।

16. सांख्यदर्शनानुसारं पुरुषस्वरूपेण सम्बद्धा उक्तिः अस्ति-

- (a) रूपैः सप्तभिरेव तु बध्नात्यात्मानमात्मना
(b) पुरुषस्य दर्शनार्थं, कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य
(c) तद्विपरीतस्तथा च पुमान्
(d) संसरति बद्ध्यते मुच्यते च

उत्तर (c)- सांख्यदर्शन के अनुसार मुख्यतः दो तत्व (i) प्रकृति (ii) पुरुष हैं। इसमें पुरुष के स्वरूप का वर्णन इस कारिका में किया जा रहा है-

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मी।

व्यक्तं तथा प्रधानं, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्॥

अर्थात् पुरुष उन दोनों (व्यक्त एवं अव्यक्त) से विपरीत भी है और सदृश भी।

17. अहंकारस्य उत्पत्तिः कुतः भवति?

- (a) महतः (b) प्रकृतेः
(c) पञ्चभूतेभ्यः (d) इन्द्रियेभ्यः

उत्तर (a)- मूलप्रकृति किसी का विकृति अथवा विकार नहीं है क्योंकि यह महत् इत्यादि को उत्पन्न करती है लेकिन किसी से उत्पन्न नहीं होती है। जबकि महत्तत्त्व (बुद्धि) की प्रकृति से एवं महत् तत्त्व से अहंकार की और अहंकार से पञ्च तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है। अतः स्पष्ट है कि अहंकार की उत्पत्ति महत्तत्त्व से होती है।

18. सांख्यदर्शनानुसारं प्रमाणानां संख्या अस्ति-

- (a) द्वौ (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) षड्

उत्तर (b)- सांख्य दर्शन के अनुसार तीन प्रकार के प्रमाणों की चर्चा की गई है।

(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) शब्द (आगम) दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।

त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धिः॥

इसमें से अनुमान प्रमाण -पूर्ववत्, शेषवत् तथा सामान्यतो दृष्ट रूप से तीन प्रकार का होता है।

19. सांख्यमते ‘सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था’ भवति-

- (a) पुरुषस्य (b) सृष्टेः
(c) प्रकृतेः (d) बुद्धेः

उत्तर (c)- पूर्वोक्त 23 अवान्तर तत्त्वों के रूप में परिणत होने वाली सांख्य की यह प्रकृति अजा, अनादि और अनन्त है। इसमें सत्त्व, रजस, एवं तमस तीन गुण हैं इसीलिए इसे त्रिगुणात्मिका कहा जाता है।

20. अनुबन्धचतुष्टये न गण्यते-

- (a) सम्बन्धः (b) विषयः
(c) चेतन्यम् (d) प्रयोजनम्

उत्तर (c)- सदानन्दप्रणीत वेदान्तसार में 4 प्रकार के “अनुबन्ध चतुष्टय” की चर्चा है जो इस प्रकार है-

(i) अधिकारी (ii) विषय (iii) सम्बन्ध (iv) प्रयोजन चैतन्यम् का उल्लेख इसमें नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

21. वेदान्तसारानुसारम् 'अग्नेः' किम् उत्पद्यते?

- (a) आपः (b) पृथिवी
(c) वायुः (d) आकाशः

उत्तर (a) वेदान्तसार में वर्णित पञ्चीकरण सिद्धान्त के अनुसार- पृथ्वी की उत्पत्ति जल से, जल की उत्पत्ति अग्नि से, अग्नि की उत्पत्ति वायु से, वायु की उत्पत्ति आकाश से होती है।
अतः स्पष्ट है कि आपः सही विकल्प है।

22. 'गुरुपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः' किं कथ्यते?

- (a) मुमुक्षुत्वम् (b) उपरतिः
(c) श्रद्धा (d) शमः

उत्तर (c)- वेदान्तसार में साधनचतुष्टय की चर्चा की गई है उसमें से "शमदमादिषट्कसम्पत्तिः" इन छः में से जो श्रद्धा है उसे इस रूप में प्रतिपादित किया जा रहा है- गुरुपदिष्टवेदान्त वाक्येषु विश्वासः श्रद्धा।

23. 'अज्ञानादिसकलजडसमूहः' इति उच्यते-

- (a) वस्तु (b) अवस्तु
(c) अध्यारोपः (d) समष्टि

उत्तर (b)- ग्रन्थकार सदानन्द जी अध्यारोप की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है। उसमें वस्तु तो त्रिकालातीत सच्चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्म, और अवस्तु अज्ञान मूलक समस्त जड़ पदार्थों का समूह है।

24. न्यादर्शनानुसारं किं प्रमाणरूपेण न स्वीक्रियते?

- (a) अनुमानम् (b) अर्थापत्तिः
(c) उपमानम् (d) शब्दः

उत्तर (b)- न्यायदर्शन के अनुसार चार प्रमाण बताए गये हैं-
(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) उपमान (iv) शब्द
अर्थापत्ति अनुमान प्रमाण में ही अन्तर्भूत है, अतः यह स्पष्ट है कि यह प्रमाण नहीं है।

25. 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं' किम्?

- (a) रसना (b) घ्राणम्
(c) मनः (d) चक्षुः

उत्तर (c)- श्री अन्नभट्ट विरचित तर्कसंग्रह में द्रव्य के नव भेदों की व्याख्या की गई है- तत्र द्रव्याणि- पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाश - काल दिगात्मा -मनांसि नवैव।
इसमें से मन का लक्षण- सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रिय मनः।

26. 'शक' इत्यत्र टिसंज्ञा कस्यशिस्य भवति?

- (a) 'क' इत्यस्य
(b) 'श' इत्यस्य
(c) ककारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(d) शकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

उत्तर (c)- 'शक' शब्द में 'ककारोत्तरवर्तिनः अकारस्य' टि संज्ञा भवति। टि संज्ञा विधायक सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि' है अर्थात् "अचां मध्ये योऽन्तः स आदिर्यस्य तद् टिसंज्ञा स्यात् ।

27. 'सखन्' इत्यत्र उपधासंज्ञा कस्य भवति?

- (a) खकारोत्तरवर्तिनः 'अन्' इत्यस्य
(b) सकारस्य
(c) खकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य
(d) सकारोत्तरवर्तिनः अकारस्य

उत्तर (c)- सखन् शब्द में खकारोत्तरवर्ती अकार की उपधा संज्ञा होती है। यहाँ 'अलोऽन्त्यात्पूर्वं उपधा' सूत्र से स्पष्ट है कि अन्तिम अल् (प्रत्याहार) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

28. 'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां जः' इत्यनेन किं विधीयते?

- (a) टच् -प्रत्ययः (b) ज -प्रत्ययः
(c) पुंवद्भावः (d) एकवद्भावः

उत्तर (b)- दिक्-पूर्वपदादसंज्ञायां जः इस सूत्र से ज् प्रत्यय का विधान होता है अर्थात् जिसके पूर्व दिशावाचक शब्द हो उससे भव (होने वाले) अर्थ में ज् प्रत्यय हो, पर संज्ञा में नहीं।

29. 'रूपवती भार्या यस्य सः' इत्यस्य समस्तपदं भवति-

- (a) रूपवतीभार्यः (b) रूपवतीभार्याम्
(c) रूपवद्भार्यः (d) रूपवद्भार्या

उत्तर (c)- रूपवती भार्या यस्य सः इस लौकिक विग्रह और रूपवद् सु भार्या सु इस अलौकिक पद से निष्पन्न समस्त पद रूपवद्भार्यः यह सामासिक पद बना इसमें बहुव्रीहि समास है।

30. 'महांश्च असौ राजा' इत्यस्य समस्तपदं भवति-

- (a) महाराजः (b) महाराजम्
(c) महाराजा (d) महद्राजः

उत्तर (a)- महान् च असौ राजा इस लौकिक विग्रह एवं 'महत् सु राजन् सु' इस अलौकिक विग्रह का सामासिक पद महाराज, बनता है। यहाँ तत्पुरुष (कर्मधारय) समास होगा।

31. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति-

- (a) गवाक्षी (b) गवाक्षा
(c) गवाक्षम् (d) गवाक्षः

उत्तर (d)- गवाम् अक्षि का समस्त पद गवाक्षः होगा। गवाक्षः का लौकिक विग्रह गवाम् अक्षि तथा अलौकिक विग्रह गो आम् अक्षि सु बनेगा।

32. उपकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नर्थे द्योत्येऽस्ति?

- (a) हीने (b) अधिके
(c) वीप्सायाम् (d) स्वस्वामिभावे

उत्तर (b)- "उपोऽधिके च" सूत्र से अधिक तथा हीन अर्थ के द्योतक होने पर 'उप' भी कर्मप्रवचनीय कहलाता है। किन्तु जब वह हीन अर्थ का द्योतक होता है तब द्वितीया होती है जैसे- "उप हरिं सुराः" और जब वह 'अधिक' अर्थ का द्योतक होता है तब उसके योग में सप्तमी होती है' जैसे "उप परार्धे हरेर्गुणाः"

33. अधिकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी कस्मिन्नर्थे द्योत्येऽस्ति?

- (a) हीने (b) अधिके
(c) वीप्सायाम् (d) स्वस्वामिभावे

उत्तर (d)- “उपोऽधिके च” सूत्र से अधिक अर्थ के द्योतक होने पर ‘उप’ भी कर्मप्रवचनीय कहलाता है। किन्तु जब वह हीन अर्थ का द्योतक होता है तब द्वितीया होती है जैसे- “उप हरिं सुराः” और जब वह ‘अधिक’ अर्थ का द्योतक होता है तब उसके योग में सप्तमी होती है जैसे “उप परार्धे हरेर्गुणाः”
 अतः अधिकर्मप्रवचनीययोगे सप्तमी ‘स्वस्वामिभावे’ अर्थे द्योत्येऽस्ति।

34. अधस्तनयुग्मेभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या-

(A) कर्तृकर्मणोः कृतिः	(i) युक्तयोगः
(B) निष्ठा	(ii) शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति
(C) विभाषोपसर्गे	(iii) वीरपुरुषको ग्रामः
(D) अनेकमन्यपदार्थे	(iv) जगतः कर्ता कृष्णः

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b) (i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c) (ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d) (ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर (a)- सूत्र	प्रयोग
कर्तृकर्मणोः कृतिः	- जगतः कर्ता कृष्णः
निष्ठा	- युक्त योगः
विभाषोपसर्गे	- शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति
अनेकमन्यपदार्थे	- वीरपुरुषको ग्रामः

35. भाषाविज्ञानदृष्ट्या अर्धस्वरः कः ?

- (a) य् (b) श
(c) च (d) ढ

उत्तर (a)- भाषा विज्ञान की दृष्टि से ‘य्’ अर्धस्वर है। यह अन्तस्थ के अन्तर्गत आते हैं इसमें तीन स्वर और हैं- य् र ल् । जबकि श ष् स् ये उष्म वर्ण हैं।

36. भाषाविज्ञानदृष्ट्या संघर्षी ध्वनिः कः?

- (a) ल (b) र
(c) श (d) ट

उत्तर (c)- भाषा विज्ञान की दृष्टि से संघर्षी ध्वनि श्, ष् स् है। यह ऊष्म संज्ञक है जबकि र् ध्वनि अन्तस्थ है, ट् स्पर्श एवं ल् भी अन्तस्थ की श्रेणी में आते हैं।

37. धा- धातोः ‘दधाति’ इति रूपं केन भाषावैज्ञानिक-नियमेन प्रतिपाद्यते?

- (a) ग्रासमैन-नियमेन (b) ग्रिम-नियमेन
(c) वर्नर-नियमेन (d) तालव्य-नियमेन

उत्तर (a)- भाषा विज्ञान की दृष्टि से तीन प्रकार की ध्वनि होती है- (i) ग्रिम (ii) ग्रासमान (iii) वर्नर
 इसमें से क त प को → ख थ फ → ग द ब → को क त प हो जाता है।
 अतः धा धातु का दधाति यह रूप ग्रासमैन नियम में होता है।

38. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) हर्षः	(i) मुद्राराक्षसम्
(B) भवभूतिः	(ii) कर्णभारम्
(C) विशाखदत्तः	(iii) उत्तररामचरितम्
(D) भासः	(iv) रत्नावली

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(ii)	(iv)	(i)
(b) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c) (ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d) (i)	(iv)	(ii)	(iii)

उत्तर (b)-

हर्षः - रत्नावली
 भवभूतिः - उत्तररामचरितम्
 विशाखदत्तः - मुद्राराक्षसम्
 भासः - कर्णभारम्

39. “अणिवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ” इत्यादिसङ्गीतं भवति-

- (a) हंसपरिकायाः (b) शकुन्तलायाः
(c) अनसूयायाः (d) प्रियंवदायाः

उत्तर (a)- ‘अणिवमहुलोलुवो तुमं तह परिचुम्बि अ’ इसका संस्कृत में व्याख्या- “अभिनव मधुलोलपुस्त्वं तथा परिचुम्बि चूतमञ्जरीम्” अर्थात् हे भ्रमर नवीन मधु के इच्छुक तुम आम की मंजरी का रसास्वादन करो । यह संगीत हंसपदिका (रानी) का है।

40. “सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते-” कस्येयमुक्तिः?

- (a) दुष्यन्तस्य (b) शारद्वतस्य
(c) शाङ्गरवस्य (d) कण्वस्य

उत्तर (c)- “सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते” यह उक्ति कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक में वर्णित शाङ्गरव की है। इसका अर्थ-साध्वी स्त्री भी यदि निरन्तर अपने पिता के घर में रहती है तो सती साध्वी होने पर भी लोग उसके विषय में संशय करते हैं।

41. विप्रलम्भशृङ्गारः अङ्गीरसः भवति अस्मिन् काव्ये-

- (a) रघुवंशे (b) मेघदूते
(c) शिशुपालवधे (d) नैषधीयचरिते

उत्तर (b)- महाकवि कालिदास के 7 (सात) रचनाओं में मेघदूतम् का अद्वितीय स्थान है। यह दो खण्ड में विभक्त है- (i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ
 इस ग्रन्थ का आधार ब्रह्मवैवर्तपुराण से लिया गया है इसमें विप्रलम्भ शृङ्गार अङ्गीरस है। इसके प्रमुख नायक यक्ष और नायिका- यक्षिणी हैं।

42. “कुमुदवनमपश्रि श्रीमदम्भोजखण्डम्” -इत्यादि- पद्यं केन सम्बद्धम्?

- (a) माघेन (b) कालिदासेन
(c) श्रीहर्षेण (d) भासेन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (a)- “कुमुदवनमपश्रि, श्रीमदम्भोजखण्डम्” यह पद माघ के प्रसिद्ध महाकाव्य ‘शिशुपालवधम्’ का है। शिशुपालवध महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है। यह महाभारत के सभापर्व से लिया गया है। इसमें 20 सर्ग हैं प्रथम सर्ग का नाम “कृष्णनारदसम्भाषणम्” है।

43. “व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः”- इत्याद्युक्ति किरातार्जुनीये भवति-
- (a) अर्जुनस्य (b) युधिष्ठिरस्य
(c) द्रौपद्याः (d) वनेचरस्य

उत्तर (c)- महाकवि भारविविचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य एक बृहत्त्रयी रचना है यह महाभारत के वनपर्व से ली गयी है। इसमें 18 सर्ग हैं वीर रस प्रधान काव्य है। इसमें “व्रजन्ति ते मूढ धियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः” यह उक्ति द्रौपदी की है।

44. ‘श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञः’ इति केन सम्बद्धम्?
- (a) भासेन (b) भवभूतिना
(c) श्रीहर्षेण (d) अश्वघोषेण

उत्तर (b)- ‘श्री कण्ठपद लाञ्छनः पदवाक्य प्रमाणज्ञः’ यह भवभूति के लिए कहा गया है। जनश्रुति के आधार पर भवभूति का मूल नाम श्रीकण्ठ है भवभूति उनकी उपाधि है, भवभूति ने अपने आप को “पदवाक्य प्रमाणज्ञः” तीनों नाटकों की प्रस्तावना में कहा।

45. “अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः” -इत्युक्तिः कं लक्षयति?
- (a) भासम् (b) बाणभट्टम्
(c) शूद्रकम् (d) कालिदासम्

उत्तर (d)- “अमृतेनेव संसिक्ताः चन्दनेनेव चर्चिताः” यह उक्ति कालिदास को अभिप्रेरित है। कालिदास की तीन रचनाओं को लघुत्रयी के श्रेणी में रखा गया है- रघुवंशमहाकाव्यम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्।

46. लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते। ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥- उत्तरराचरिते कस्येयमुक्तिः?
- (a) अष्टावक्रस्य (b) लक्ष्मणस्य
(c) शम्भूकस्य (d) रामस्य

उत्तर (d)- उत्तररामचरिते रामस्येयमुक्तिरस्ति। महाकवि भवभूति विरचित ‘उत्तररामचरितम्’ में सात अंक हैं यह नाटक विदूषक रहित है, इस श्लोक में लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते नुधावति।

इसका अर्थ- लौकिक सज्जनों की वाणी तो अर्थ का अनुसरण करती है परन्तु प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ (स्वयं) चलता है।

47. “वाक्यं रसात्मकं काव्यम्” इत्यत्र रसमध्ये कस्य ग्रहणं कृतम्-
- (a) केवल रसस्य
(b) केवलं भावस्य
(c) केवलं रसाभासस्य
(d) रस-भाव तदाभासादिनाम्

उत्तर (d)- आचार्य विश्वनाथ विरचित साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण करते हुए वे कहते हैं कि- “वाक्यं रसात्मकं काव्यं” अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है, यह रस से तात्पर्य - ‘रस-भाव तदाभासादिनाम्’ है, अर्थात् रस के मध्य इन सभी का ग्रहण किया गया है।

48. साहित्यदर्पणे साकल्येन लक्षणायाः कति भेदाः स्वीकृताः?
- (a) षोडश
(b) चतुर्विंशतिः
(c) अशीतिः
(d) अष्टचत्वारिंशत्

उत्तर (c)- साहित्यदर्पण में शाकल्य के मतानुसार लक्षणा के अस्सी (80) भेद स्वीकार किए गये हैं। शब्द की तीन शक्तियाँ हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना लक्षणा के मुख्य रूप से रूढ़ि एवं प्रयोजन के दो भेद हैं।

लक्षणा का उदाहरण-कलिङ्ग साहसिकः, गङ्गायां घोषः

49. “श्रवणादर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः दशाविशेषो योऽप्राप्तौ _____ स उच्यते॥ रिक्तस्थानं साहित्यदर्पणतः पूरयत।
- (a) पूर्वरागः (b) मानः
(c) प्रवासः (d) करुण-विप्रलम्भः

उत्तर (a) श्रवणादर्शनाद्वापि मिथः संरूढरागयोः दशाविशेषो योऽप्राप्तौ पूर्वरागः स उच्यते। यह साहित्यदर्पण के अनुसार पूर्वराग का लक्षण है।

50. साहित्यदर्पणानुसारं फलावाप्तौ अतित्वरान्वितः व्यापारः भवति-
- (a) आरम्भः (b) नियतापिः
(c) प्राप्त्याशा (d) प्रयत्नः

उत्तर (d)-आचार्य विश्वनाथकृत साहित्यदर्पण के अनुसार- ‘प्रयत्नस्तु तद् प्राप्तौ व्यापारोत्तित्वरान्वितः’ अर्थात् फल के प्राप्त न होने पर वेगपूर्वक उद्योग करना ही प्रयत्न कहलाता है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2015

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति-

- (a) काण्वसंहितायाम् (b) तैत्तिरीयसंहितायाम्
(c) ऋग्वेदसंहितायाम् (d) माध्यन्दिनसंहितायाम्

उत्तर (c)- महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास ने वेद को चार संहिताओं के रूप में संकलन किया- ऋग्वेदसंहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता, अथर्ववेदसंहिता। इसमें से दानस्तुति सूक्तों का संकलन ऋग्वेदसंहिता में है।

2. ऋग्वेदीयषष्ठमण्डलस्य ऋषिः वर्तते -

- (a) भरद्वाजः (b) वामदेवः
(c) वसिष्ठः (d) विश्वामित्रः

उत्तर (a)- ऋग्वेद की 21 शाखाएँ मानी गई हैं पतञ्जलि के अनुसार, इसमें 10 मण्डल, 85 अनुवाक एवं 1028 सूक्त हैं। इसके प्रथम मण्डल के ऋषि- मधुच्छन्दा (शतार्चिन) द्वितीय के गृत्समद एवं छठे मण्डल के ऋषि भरद्वाज हैं।

3. 'बृहदारण्यकम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

- (a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

उत्तर (b) - यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है- शुक्लयजुर्वेद और कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की 2 शाखाएँ हैं- (i) वाजसनेयि (माध्यन्दिन) (ii) काण्वशाखा। बृहदारण्यक उपनिषद् का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद से है जबकि अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं है।

4. 'आग्नीध्र' - नामा ऋत्विक् कस्य गणस्य वर्तते?

- (a) ब्रह्मगणस्य (b) अध्वर्युगणस्य
(c) होतृगणस्य (d) उद्गातृगणस्य

उत्तर (a)- अथर्ववेद में 20 काण्ड 730 सूक्त 6000 मन्त्र हैं, 'आग्नीध्र' नामक ऋत्विक् ब्रह्मा की गणों में आते हैं। अथर्ववेद के ऋत्विक् ब्रह्मा हैं।

5. 'सुमन्तु' ऋषये व्यासः कं वेदं प्रोक्तवान्?

- (a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) अथर्ववेदम् (d) सामवेदम्

उत्तर (c) 'सुमन्तु' ऋषये व्यासः अथर्ववेदं प्रोक्तवान्। अथर्ववेद के देवता सोम और आचार्य सुमन्तु हैं, जबकि यजुर्वेद के आचार्य वैशम्पायन एवं ऋग्वेद के कृष्णद्वैपायन के शिष्य आचार्य पैल हैं एवं सामवेद के जैमिनी हैं।

6. दर्शपौर्णमासेष्टियागे प्रयाजानां संख्या विद्यते -

- (a) एकादश (b) पञ्च
(c) त्रयः (d) नव

उत्तर (b)- दर्शपौर्णमास यज्ञ में प्रयाजों की संख्या 5 बताई गई है। यहाँ दर्श शब्द का अर्थ अमावस्या है। यह यज्ञ मुख्यतः अमावस्या तथा पूर्णिमा तिथि पर होता है। इसका उल्लेख माध्यन्दिनशाखा से सम्बद्ध शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ड में है।

7. याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं कति विवृत्यः ?

- (a) चतस्रः (b) तिस्रः
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर (a)- याज्ञवल्क्यशिक्षानुसारं चतस्रः विवृत्यः। शिक्षा को वेदरूपी पुरुष की नासिका माना गया है, प्रत्येक वेद के अलग-अलग शिक्षा ग्रन्थ हैं।

ऋग्वेदीय शिक्षाग्रन्थ - पाणिनीय शिक्षा
यजुर्वेदीय शिक्षाग्रन्थ - याज्ञवल्क्य शिक्षा,
सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ - नारद, शाकटायनीय शिक्षा
अथर्ववेद शिक्षाग्रन्थ - माण्डूकीय शिक्षा

8. ऋक्संहितायाः समुपलब्धेषु प्रथमो भाष्यकारः वर्तते -

- (a) आनन्दतीर्थः (b) सायणः
(c) स्कन्दस्वामी (d) वेङ्कटमाधवः

उत्तर (c)- ऋग्वेद संहिता पर सर्वप्रथम भाष्य सायण ने लिखा है लेकिन यह विवादास्पद है। कहीं-कहीं पर स्कन्दस्वामी का नाम मिलता है। UGC की तरफ से C विकल्प को माना गया है।

9. वैदिकस्वरप्रक्रियायाः वृत्तिकारः कः?

- (a) भट्टोजिदीक्षितः (b) पाणिनिः
(c) पतञ्जलिः (d) कात्यायनः

उत्तर (a)- सिद्धान्त कौमुदी के लेखक भट्टोजिदीक्षित वैदिक स्वर प्रक्रिया के वृत्तिकार हैं, उन्होंने तीन स्वर को स्वीकार किया है- (i) उदात्त (ii) अनुदात्त (iii) स्वरित

10. 'ब्राह्मणसर्वस्व' नामकं वेदभाष्यं केन विरचितम्?

- (a) हरिस्वामिना (b) हलायुधेन
(c) गुणविष्णुना (d) उद्भट्टेन

उत्तर (b)- ब्राह्मणसर्वस्व नामकं वेदभाष्यं हलायुधेन विरचितम्। जबकि सायण, स्कन्दस्वामी, गुणविष्णु प्राचीन वेदभाष्यकार हैं, अरविन्द अर्वाचीन वेदभाष्यकार हैं।

11. 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते?

- (a) दशमे (b) पञ्चमे
(c) अष्टमे (d) सप्तमे

उत्तर (a)- वाक्सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 125वाँ सूक्त है इसके देवता परमात्मा एवं ऋषि वाक् हैं। इसमें छन्द जगती एवं त्रिष्टुप् हैं।

12. ऋग्वेदसंहितायाः आंग्लपद्यानुवादकः वैदेशिकः विद्वान् वर्तते -

- (a) एच विल्सनः
(b) ए.ए. मैकडॉनलः
(c) आर.टी.एच. ग्रीफिथः
(d) विलियम कैलेण्डः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (c)- ऋग्वेदसंहिता का अंग्रेजी भाषा में पद्यगत अनुवाद वैदेशिक विद्वान् आर.टी.एच. ग्रीफिथ द्वारा किया गया। इन्होंने क्रमशः सम्पूर्ण ऋक्संहिता को अंग्रेजी पद्यमय कर दिया। एच. विल्सन, ए.ए. मैकडॉनल तथा विलियम कैलेण्ड ये सभी ऋग्वेद संहिता पर कोई भी अंग्रेजी पद्यानुवाद नहीं किये हैं। फिर भी एच. विल्सन तथा ए.ए. मैकडॉनल का कुछ योगदान यत्किञ्चित् देखने को मिलता है।

13. समविकाराः परिगणिताः, सन्ति-

- (a) सप्त (b) चत्वारः
(c) त्रयः (d) षट्

उत्तर (d)- समविकार कुल छः होते हैं। क्योंकि 'षट् समविकाराः भवन्ति' का उल्लेख निरुक्त में मिलता है। यास्करचित निरुक्त में वैदिक शब्दों का निर्वचन किया गया है। अन्य विकल्पों के अनुसार-सप्त पदार्थ होते हैं तथा विद्यायें तीन होती हैं तथा प्रमाण चार होते हैं।

14. 'पदक्रमसदन' - नामकं भाष्यं कस्य प्रातिशाख्यस्य विद्यते?

- (a) वाजसनेयिप्रातिशाख्यस्य
(b) ऋक्संहिताप्रातिशाख्यस्य
(c) अथर्वप्रातिशाख्यस्य
(d) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य

उत्तर (d)- 'पदक्रमसदन' नामक भाष्य तैत्तिरीयप्रातिशाख्य में निहित है। जबकि ऋग्वेदप्रातिशाख्य शौनक आचार्य द्वारा रचित है। जबकि कात्यायनाचार्य कृत वाजसनेयिप्रातिशाख्य यजुर्वेद से सम्बद्ध है।

15. पाणिनीयशिक्षायाम् कति श्लोकाः सन्ति?

- (a) चतुःषष्टिः (b) त्रिषष्टिः
(c) षष्टिः (d) सप्ततिः

उत्तर (c)- पाणिनीयशिक्षा में मुख्यतः कुल 60 श्लोक हैं। 60 को संस्कृत भाषा में षष्टिः लिखते हैं। चतुःषष्टी को 64, त्रिषष्टिः को 63, सप्ततिः को 70 लिखा जाता है।

16. 'मघवा' देव कः?

- (a) इन्द्रः (b) विष्णुः
(c) वरुणः (d) हिरण्यगर्भः

उत्तर (a)- मघवा इन्द्र देवता को कहा जाता है। 'मघवा इन्द्रः' उक्ति वैदिक ऋक्सूक्त संग्रह नामक, ग्रन्थिका में मिलती है। वृत्रहा, मघोनी इत्यादि इन्द्र की उपाधियाँ हैं।

17. 'यः पृथ्वीं व्यथमानामर्दुहृद्यः पर्वतान्प्रकुपितौ अरम्णात्' - अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

- (a) विश्वामित्रः (b) मधुच्छन्दा
(c) गृत्समदः (d) इन्द्रः

उत्तर (c)- "यः पृथिवीं व्यथमानामर्दुहृद्यः पर्वतान्प्रकुपितौ अरम्णात्" इस मन्त्र के द्रष्टा ऋषि गृत्समद हैं एवं देवता इन्द्र हैं।
Note- यह मन्त्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वाँ सूक्त है इसमें प्रयुक्त छन्द त्रिष्टुप् है इसमें 44 अक्षर होते हैं।

18. ऋग्वेदस्य शाकलसंहितायां कति सन्ध्यक्षराणि स्वीकृतानि?

- (a) एकम् (b) द्वे
(c) चत्वारि (d) त्रीणि

उत्तर (c)- ऋग्वेद के शाकलसंहिता के अनुसार सन्ध्यक्षरों की संख्या चार है। भाष्यकार पतञ्जलि ने ऋग्वेद की 21 शाखाओं को स्वीकृत किया है, इसमें से चरणव्यूह के अनुसार 5 शाखाएँ मानी गई हैं- शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन। इसमें से प्रचलित संहिता शाकल शाखा है।

19. 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः' - इति लक्षणं कस्य?

- (a) महीधरस्य (b) लौगाक्षिभास्करस्य
(c) सायणस्य (d) पारस्करस्य

उत्तर (c)- "इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः" यह लक्षण सायणाचार्य का है। अर्थात् वेद इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के अलौकिक उपाय को बताने वाले होते हैं।
नोट- वेद शब्द विद् ज्ञाने धातु में घञ् प्रत्यय के योग से बना है।

20. 'वाधूलशुल्बसूत्रम्' केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

- (a) अथर्ववेदेन (b) सामवेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) यजुर्वेदेन

उत्तर (d)- कल्प के चार भाग बताए गए हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र। इसमें शुल्बसूत्र केवल यजुर्वेद पर ही प्राप्त होते हैं। शुक्लयजुर्वेद का शुल्बसूत्र- कात्यायन है। तथा कृष्णयजुर्वेद का शुल्बसूत्र- बौधायन, आपस्तम्ब, वाराह, वाधूल हैं।

21. 'विलोहितः' इति कस्याः देवतायाः विशेषणम् अस्ति?

- (a) विष्णोः (b) वायोः
(c) रुद्रस्य (d) इन्द्रस्य

उत्तर (c)- रुद्रसूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का तीसरा सूक्त है इसके देवता रुद्र एवं ऋषि गृत्समद हैं, छन्द त्रिष्टुप् है तथा ये अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। रुद्रों को मरुतो का पिता एवं स्वामी कहा गया है, इनके विशेषण निम्न हैं- द्रुतगामी, नीलोदर, नीलकंठ, विलोहित आदि।

22. 'छन्दः सूत्रम्' इति वेदाङ्गग्रन्थस्य प्रणेता विद्यते -

- (a) हलायुधः (b) पिङ्गलः
(c) लगधः (d) भरतः

उत्तर (b)- "छन्दः पादौ तु वेदस्य" अर्थात् छन्द को वेद पुरुष का पाद (पैर) स्वीकार किया गया है, कुछ लोग उसे "छन्दयति आवृणोति रोचते इति छन्दः" जिस वाणी को सुनने से मन आह्लादित हो उठता है उसे छन्द कहते हैं। 'छन्दसूत्रम्' इस वेदाङ्ग ग्रन्थ के प्रणेता पिङ्गल हैं- मुख्य छन्द- गायत्री, अनुष्टुप्, वृहती।

23. यास्कीय निरुक्तग्रन्थे काण्डानि विद्यन्ते -

- (a) पञ्च (b) त्रीणि
(c) सप्त (d) नव

उत्तर (b)- निरुक्तकार यास्काचार्य ने इसके प्रतिपाद्य विषय पाँच माने हैं- वर्णांगम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश और धातु का अतिशय। यह तीन काण्डों में विभक्त है एवं 12 अध्याय हैं। 1-3 तक नैघण्टुकाण्डम्, 4-6 तक नैगमकाण्डम् 7-12 तक दैवतकाण्डम्।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

24. 'भद्रैषां लक्ष्मीनिहिताधिवाचि' इति पंक्तिः कस्मिन् प्रसङ्गे महाभाष्ये उद्धृता?

- (a) शब्दपरिभाषाप्रसङ्गे
(b) व्याकरणाध्ययनप्रयोजनप्रसङ्गे
(c) शब्दार्थसम्बन्धप्रसङ्गे
(d) व्याकरणलक्षणप्रसङ्गे

उत्तर (b)- 'भद्रैषां लक्ष्मीनिहिताधिवाचि' यह पंक्ति पतञ्जलि कृत महाभाष्य से अवतरित है यह कथन महाभाष्य में व्याकरण अध्ययन के प्रयोजन के प्रसङ्ग में कही गयी है।

Note- महाभाष्य में गौरश्व पुरुषो हस्ती शकुनिमृगो ब्राह्मणः इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

25. 'लोटो लङ्वत्' इति सूत्रेण अधोलिखितविकल्पमात्रेण किमभिप्रेतम्?

- (a) अडागमः (b) आडागमः
(c) ह्यादेशः (d) सलोपः

उत्तर (d)- 'लोटो लङ्वत्' लोटस्तामादयः सलोपश्च। अर्थात् लोट के स्थान में लङ् के समान 'ताम्' आदि आदेश और उसके सकार का लोप होता है।

उदाहरण- भवताम्- भू धातु के लोट के द्विवचन में 'भव तस्' हुआ। इस दशा में लङ्वत् अतिदेश के बल से प्रकृत सूत्र से तस् के स्थान में ताम् आदेश होकर भवताम् रूप सिद्ध हुआ।

26. 'इलाऽऽदेशच गुरुमतोऽनृच्छः' इति सूत्रेण किं विधीयते?

- (a) आम्प्रत्ययः (b) लुक्
(c) सलोपः (d) क्राद्यनुप्रयोगः

उत्तर (a)- "इलाऽऽदेशच गुरुमतोऽनृच्छः" 'ऋच्छ' धातु से भिन्न गुरुवर्ण वाले इलादि धातु से आम् हो लिट् परे रहते।

नोट- एध् धातु का 'ए' एच् आदि है और वह गुरुत्मान् भी है अतः इससे 'आम्' होता है। आम् होने पर 'आमः' सूत्र से लिट् का लोप हो जाता है।

27. अधोऽङ्कितयुग्मभ्यः समीचीना तालिका चेतव्या -

(A) कृत्यानां कर्तरि वा	(i) दण्डिकः
(B) उगितश्च	(ii) मम मया वा सेव्यो हरिः
(C) ईच् खनः	(iii) भवती
(D) अत् इनि-ठनौ	(iv) खेयम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (ii)	(iii)	(iv)	(i)
(b) (ii)	(iv)	(iii)	(i)
(c) (i)	(iii)	(iv)	(ii)
(d) (ii)	(i)	(iii)	(iv)

उत्तर (a)- अधोलिखित युग्मों में समीचीन तालिका इस प्रकार है-
कृत्यानां कर्तरि वा - मम मया वा सेव्यो हरिः
उगितश्च - भवती
ईच् खनः - खेयम्
अत् इनि ठनौ - दण्डिकः

28. 'दन्तुरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः ?

- (a) र (b) अच्
(c) इरच् (d) उरच्

उत्तर (d)- दन्तुरः इत्यत्र उरच् प्रत्ययोऽस्ति।

'दन्तोन्नत उरच्' इस सूत्र से प्रथमान्त दन्त शब्द से मत्वर्थ में उरच् प्रत्यय हो यदि दाँत ऊँचे हो तो। जैसे -दन्तुरः।

29. 'सुमुखा शाला', इत्यत्र स्वाङ्गलक्षणडीष् कथं न?

- (a) अप्राणिस्थत्वात् (b) अमूर्तत्वात्
(c) विकारजत्वात् (d) द्रवत्वात्

उत्तर (a)- 'सुमुखा शाला' यहाँ स्वाङ्गलक्षणडीष् अप्राणिस्थत्वात् न भवति। विकार जनत्वात्, अमूर्तत्वात्, द्रव्यत्वात् इन तीनों में डीष् होता है।

30. 'शत्रुमधिकुरुते' इत्यत्र क्रियापदे आत्मनेपदविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) वेः शब्दकर्मणः (b) अकर्मकाच्च
(c) अधेः प्रहसने (d) उपपराभ्याम्

उत्तर (c)- 'शत्रुमधिकुरुते' क्रियापद में आत्मनेपद विधायक सूत्र 'अधेः प्रहसने' है।

नोट- कर्तरि कर्म व्यतिहारे सूत्र से क्रिया का विनिमय (अदला- बदली) बताने में आत्मनेपद होता है।

31. 'अध्यापयति वेदम्' इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायकं सूत्रं किम्?

- (a) विभाषाऽकर्मकात्
(b) निगणचलनार्थेभ्यश्च
(c) परेर्मुषः
(d) बुधयुधनशजनेङ् प्रदुस्तुभ्यो णेः

उत्तर (d)- परस्मैपद विधायक सूत्र "बुधयुधनशजनेङ् प्रदुस्तुभ्यो णेः" - एभ्यो व्यन्तेभ्यः परस्मैपदम् स्यात्।

उदाहरण- अध्यापयति वेदम्, प्रावयति, द्रावयति, स्त्रावयति इत्यादि क्रिया पद हैं।

32. 'एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' इति पंक्ति कुत्र ग्रन्थ उपलभ्यते?

- (a) महाभाष्ये (b) वाक्यपदीये
(c) पाणिनिशिक्षायाम् (d) अष्टाध्याय्याम्

उत्तर (b)- 'एको निमित्तं शब्दानामपरोऽर्थे प्रयुज्यते' यह पंक्ति वाक्यपदीय से सम्बन्धित है। यह भर्तृहरि की प्रसिद्ध रचना है इसमें कुल 3 काण्ड हैं- (i) ब्रह्म काण्ड (आगम काण्ड) (ii) वाक्य काण्ड (iii) प्रकीर्ण काण्ड (पद काण्ड)। इसके लगभग 2000 श्लोकों में भाषा के विभिन्न पक्षों ध्वनि, पद, वाक्य अर्थ स्फोट आदि की वृहद् वार्ता है।

33. 'शास्त्रानुपूर्व तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः' इति पंक्ति कुत्र ग्रन्थ उपलभ्यते?

- (a) पाणिनिशिक्षायाम् (b) अष्टाध्याय्याम्
(c) वाक्यपदीये (d) महाभाष्ये

उत्तर (a)- शास्त्रानुपूर्व तद्विद्यात् यथोक्तं लोकवेदयोः यह पंक्ति पाणिनिशिक्षा के अनुसार- माधुर्यमक्षरव्यक्तिः, पदक्षेदस्तु, सुस्वरः, धैर्यं, लयसमर्धस्य, इत्यादि 6 पाठक के गुण बताए गये हैं। यह आचार्य पाणिनि के अनुज आचार्य पिङ्गल की रचना है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

34. संस्कृतभाषाध्वनिसन्दर्भेऽधोलिखितेषु 'अर्धस्वरः' कः?

- (a) क् (b) ष्
(c) म् (d) य्

उत्तर (d)- संस्कृत भाषा ध्वनि के सन्दर्भ में अर्धस्वर चार हैं- य् व् र् ल्। जबकि क् से म् तक स्पर्श संज्ञक होते हैं, श्, ष्, स्, ह् ये ऊष्म संज्ञक हैं।

नोट- अतः स्पष्ट है कि दिए गये विकल्पों में से य् अर्द्ध स्वर है।

35. अर्थविस्तारोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति -

- (a) तैलम् (b) मुग्धः
(c) गौः (d) सभ्यः

उत्तर (c)- भाषा विज्ञान में अर्थ परिवर्तन के तीन कारण माने गये हैं- अर्थदेश, अर्थसंकोच, अर्थविस्तार।

अर्थदेश के उदाहरण- असुर, वर, मौन, देवानां प्रियः

अर्थसंकोच के उदाहरण- गौः, अश्व, मृग, सर्प, वर

अर्थविस्तार के उदाहरण- कुशल, प्रवीण, तैलम्, गोशाला

नोट- UGC के अनुसार विकल्प C सही है।

36. अर्थसङ्कोचोदाहरणेष्वन्यतमो नास्ति -

- (a) जलदः (b) सभ्यः
(c) मनुष्यः (d) पङ्कजम्

उत्तर (b) सभ्यः शब्द अर्थसङ्कोच का उदाहरण नहीं है बल्कि यह अर्थविस्तार का उदाहरण है। जलदः, मनुष्यः, पङ्कजम् इत्यादि अर्थसङ्कोच के उदाहरण के अन्तर्गत आते हैं। भाषा वैयाकरणिक विद्वानों के द्वारा भाषा अर्थ के दो मूल भाग बताये हैं- प्रथम- अर्थविस्तार, द्वितीय-अर्थ सङ्कोच। ये दोनों विभाग भाषा के अर्थज्ञान को बताते हैं।

नोट- सही विकल्प UGC ने C को माना है जबकि चारों विकल्प अर्थसंकोच के उदाहरण हैं।

37. ध्वनिवैज्ञानिकैः करणत्वेन किं स्वीक्रियते?

- (a) मृदुतालु (b) वर्त्सः
(c) ऊर्ध्वैष्ठिः (d) नासिकाविवरः

उत्तर (a)- ध्वनि वैज्ञानिक करणत्वेन मृदुतालु स्वीक्रियते अर्थात् ध्वनिवैज्ञानिक करण से मृदुतालु को स्वीकार करते हैं।

38. "सा च त्रिविधा-विधात्री, अभिधात्री विनियोक्त्री च" इत्यत्र 'सा' का?

- (a) वैदिकी सामाख्या (b) श्रुतिः
(c) लौकिकी सामाख्या (d) शब्दशक्तिः

उत्तर (b)- लौगाक्षिभास्कर विरचित अर्थसंग्रह में विनियोग विधि के छः सहकारी प्रमाण बताये गये हैं। (i) श्रुति (ii) लिङ्ग (iii) वाक्य (iv) प्रकरण (v) स्थान (vi) समाख्या।

उसमें से "तत्र निरपेक्षे रवः श्रुतिः" सा च त्रिविधा-विधात्री अभिधात्री विनियोक्त्री च -अर्थात् ये श्रुति तीन प्रकार की है।

39. अर्थसङ्ग्रहानुसारं 'शाब्दीभावना' इत्यनेन कः अभिप्रायः?

- (a) अपौरुषेयवाक्यम्
(b) समभिव्यवहारः
(c) पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
(d) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः

उत्तर (c)- अर्थसंग्रह में भावना दो प्रकार की मानी गयी है (i) शाब्दीभावना (ii) आर्थीभावना

शाब्दी भावना को लिङ्ग अंश कहा जाता है जबकि आर्थी भावना को आख्यातांश कहा जाता है। उसमें से "पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दी भावना" है।

40. अर्थसङ्ग्रहानुसारं विधिश्चतुर्विधः - उत्पत्तिविधिः, विनियोगविधिः, अधिकारविधिः, _____ च।

- (a) नियमविधिः (b) प्रयोगविधिः
(c) यज्ञविधिः (d) परिसङ्ख्याविधिः

उत्तर (b)- इसमें विधि चार प्रकार की मानी गयी है-

उत्पत्तिविधिः विनियोगविधिः, अधिकारविधिः, प्रयोगविधिः

अतः स्पष्ट है कि रिक्त स्थान की पूर्ति में प्रयोगविधिः होगा जबकि नियमविधि का लक्षण- यद्वोऽप्राप्तस्य प्रापको विधिः

नियमविधिः"- उदाहरण- यजेत् स्वर्गकामः ब्राह्मणं वहन्ति।

41. योगदर्शनानुसारं कः 'योगाङ्गैः' सह सम्बद्धः न अस्ति?

- (a) विकल्पः (b) नियमः
(c) प्रत्याहारः (d) प्राणायामः

उत्तर (a)- पतञ्जलि के योगसूत्रम् में योग के आठ अंग की चर्चा की गई है।

(1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि
इसमें "विकल्प" का उल्लेख नहीं है।

42. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इत्यत्र 'अथ' शब्दः कस्मिन् अर्थे अस्ति?

- (a) हेत्वर्थे (b) अधिकारार्थे
(c) अन्वयार्थे (d) आनन्तर्यार्थे

उत्तर (d)- बादरायण विरचित "ब्रह्मसूत्रम्" में ब्रह्म जिज्ञासा के लिए प्रतिपादित सूत्र "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" में अथ शब्द आनन्तर्यार्थे अस्ति। अमरकोष में 'अथ' शब्द का अर्थ- "मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्येधोऽथ" है।

43. "व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः" इति किम्?

- (a) परामर्शः (b) अनुमितिः
(c) पक्षता (d) प्रतिज्ञा

उत्तर (a)- 'व्याप्यस्य पक्षधर्मत्वधीः' इति परामर्शः। व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान को परामर्श कहते हैं।

44. जैनदर्शनानुसारं 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि

- (a) जीवः (b) मोक्षमार्गः
(c) मनःपर्याय (d) मोक्षः

उत्तर (b)- जैनधर्म का प्रमुख सिद्धान्त- अनेकान्तवाद/ स्याद्वादः/सप्तभंगिनय है।

जैन दर्शन के अनुसार त्रिरत्न में- 'सम्यक् दर्शन', सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र ये तीनों ही मोक्ष के मार्ग हैं।
"सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः"।

45. 'सर्वं शून्यम्' इति केन बौद्धसम्प्रदायेन स्वीकृतम्?

- (a) माध्यमिकेन (b) सौत्रान्तिकेन
(c) योगाचारेण (d) वैभाषिकेन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (a)- बौद्धदर्शन के प्रणेता भगवान् बुद्ध ने बौद्ध सम्प्रदाय को चार भागों में विभक्त किया है-
(i) माध्यमिक
(ii) योगाचार
(iii) सौत्रान्तिक
(iv) वैभाषिक
उसमें से माध्यमिक बौद्धों के मत में “सर्व शून्य” को मानते हैं।

46. तर्कभाषानुसारं ‘संस्कारमात्रजनकं ज्ञानम्’ अस्ति -

- (a) अनुभवः (b) यथार्थः
(c) स्मृतिः (d) प्रमाणम्

उत्तर (c)- तर्कसंग्रह में बुद्धि दो प्रकार की मानी गयी है-
सा द्विविधा- ‘स्मृतिरनुभवश्च’ उसमें से ‘संस्कारमात्र जन्य ज्ञानम् स्मृतिः’ अर्थात् संस्कार मात्र से उत्पन्न ज्ञान को स्मृति कहते हैं। अन्य अर्थ में इसे-“अनुभवजन्यः संस्कारस्तज्जन्याः स्मृतिः”।

47. तर्कसङ्ग्रहानुसारं शब्दसाक्षात्कारे कः सन्निकर्षः?

- (a) समवायः (b) संयोगः
(c) समवेतसमवायः (d) विशेषण-विशेष्यभाव

उत्तर (a)- प्रत्यक्ष ज्ञान के कारण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष 6 प्रकार का होता है। (i) संयोग सन्निकर्ष (ii) संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष (iii) संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष (iv) समवाय सन्निकर्ष (v) समवेतसमवाय सन्निकर्ष (vi) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष।

48. “श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियवयं मामल्लदेवी च यम्” - इति वार्ता केन सम्बद्धा?

- (a) माघेन (b) भारविणा
(c) श्रीहर्षेण (d) भासेन

उत्तर (c)- ‘नैषधीयचरितम्’ श्रीहर्ष रचित प्रसिद्ध महाकाव्य है इसमें 22 सर्ग हैं। उसके प्रथम सर्ग का अन्तिम श्लोक इस प्रकार है-
श्रीहर्ष कविराजराजमुकुटालंकारहीरः सुतम्।
श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्ल देवी चयम् ॥
इसमें श्रीहर्ष के पिता श्रीहीर और माता मामल्ल देवी की चर्चा की गई है।

49. ‘नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम’ - मुद्राराक्षसे कस्येयमुक्तिः?

- (a) चन्द्रगुप्तस्य (b) चाणक्यस्य
(c) राक्षसस्य (d) चन्दनदासस्य

उत्तर (b)- “नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम” प्रस्तुत सूक्ति चाणक्य के मुद्राराक्षस नामक नाटक से अवतरित है। यह सूक्ति चाणक्य द्वारा कही गयी है।

नोट- यह नाटक सात अङ्कों में विभक्त तथा वीर रस प्रधान है।

50. समीचीनां तालिकां चिनुत -

- (A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (i) उत्तररामचरितम्
(B) तीर्थोदकञ्च वहिश्च (ii) श्रीहर्षो निपुणः कविः
नान्यतः शुद्धिमर्हतः
(C) रत्नावली (iii) हर्षचरितम्
(D) परिवर्तमानः एकः कालः (iv) श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति
शैलानिवानन्तः त्रितयं तत् समागतम्

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b) (iii)	(i)	(ii)	(iv)
(c) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर (a)- सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-
अभिज्ञानशाकुन्तलम् - श्रद्धावित्तं विधिश्चेति त्रितयं तत् समागतम्।

तीर्थोदकञ्च वहिश्च नान्यतः - उत्तररामचरितम्
शुद्धिमर्हतः
रत्नावली - श्रीहर्षो निपुणः कविः
परिवर्तमानः एकः कालः
शैलानिवानन्तः - हर्षचरितम्

51. अभिज्ञानशाकुन्तले षष्ठाङ्कगतः धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणं भवति?

- (a) प्रवेशकस्य (b) विष्कम्भकस्य
(c) अङ्कावतारस्य (d) प्रस्तावनायाः

उत्तर (a)- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अंक में धीवरवृत्तान्त प्रवेशक का उदाहरण है। इस अङ्क में एक पुरुष धीवर को पकड़कर राजा के समीप उपस्थित करता है और धीवर के द्वारा अँगूठी के मिलने सम्बन्धी वृत्तान्त को कहता है।

52. “तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः” - केन छन्दसा विनिर्मितोऽयं श्लोकपादः?

- (a) हरिणी (b) शिखरिणी
(c) मन्दाक्रान्ता (d) मालिनी

उत्तर (c)- “तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः ।
पादाकृष्टव्रततिवलयसङ्गसंजातपाशः ॥

यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् का है। इसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है इसका लक्षण है-
“मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ ग-युगमम्”। क्योंकि अम्बुधि (सागर) 4 हैं, रस 6 हैं और नग (पर्वत) 7 हैं, अतः इस क्रम से यति होगी और मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्ण होंगे।

53. “शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्” - शिशुपालवधे कस्य प्रशंसेयम्?

- (a) नारदस्य (b) श्रीकृष्णस्य
(c) वसुदेवस्य (d) बलरामस्य

उत्तर (a)- यह श्लोक माघ विरचित शिशुपालवधम् महाकाव्य से उद्धृत है, इसमें भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से नारद जी के दर्शन का महत्त्व बतलाया गया है।

सम्पूर्ण श्लोक इस प्रकार है -

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्॥

54. “ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।

गुणागुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इवा॥”

कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?

- (a) रघोः (b) समस्य
(c) अजस्य (d) दिलीपस्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d)- महाकवि कालिदास विरचित 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में 19 सर्ग हैं। उसमें से प्रथम सर्ग में मनुवंश में उत्पन्न अतिशय पवित्र दिलीप नामक राजा हुए उन्हीं के गुणों की प्रशंसा उक्त श्लोकों में की गई है-

**ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणागुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव॥**

**55. "पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः"-
उत्तररामचरिते उक्तिरियं भवति -**
(a) सीतायाः (b) मुरलायाः
(c) तमसायाः (d) वासन्त्याः

उत्तर (b)- भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक में 7 अङ्क हैं उनमें से तृतीय अङ्क के प्रथम श्लोक में यह कथन मुरला का है कि गंभीरता के कारण अन्दर छिपी हुई घोर वेदना से युक्त राम का करुण रस (शोक) पुटपाक के तुल्य है यथा -
**अनिर्भिन्नो गम्भीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः ॥**

56. रत्नावल्याः मङ्गलाचरणस्य प्रथमे श्लोके कस्य स्तुतिः प्राप्यते?
(a) विष्णोः (b) ब्राह्मणः
(c) शिवस्य (d) गणेशस्य

उत्तर (c)- श्रीहर्ष विरचित रत्नावली नाटिका 4 अङ्कों में विभक्त है इसके प्रथम श्लोक में भगवान् शिव की स्तुति की गई है-
**पादाग्रस्ततया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां शम्भो
.....क्षिप्तान्तरे पातु वः।**

57. पुण्यवर्मा कस्य देशस्य राजा आसीत् दशकुमारचरिते?
(a) विदर्भस्य (b) वाराणस्याः
(c) गौडस्य (d) मगधस्य

उत्तर (a)- दण्डीकृत दशकुमारचरितम् कथा काव्यविद्या है इसका आधारग्रन्थ - गुणाढ्यकृत बृहत्कथा है इसमें तीन खण्ड हैं- पूर्वपीठिका, दशकुमारचरित, उत्तरपीठिका इसमें वर्णित पुण्यवर्मा विदर्भ देश का राजा था।

58. मम्मटमते कति काव्यगुणाः?

- (a) दश (b) पञ्च
(c) त्रयः (d) अष्टौ

उत्तर (c)- 'काव्यप्रकाश' के लेखक आचार्य मम्मट ने अपने काव्य लक्षण 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणानलङ्कृती पुनः क्वापि' में आये हुये सगुणौ पद का विवेचन अष्टम् उल्लास में किया है-
"माधुर्योऽजः प्रसादास्त्रयस्ते न पुनर्दश" उन्होंने तीन गुण माने हैं न कि वामनादि की तरह दश गुण।

59. ध्वन्यालोकतः रिक्तं स्थानं पूरयत - "यत्नतः _____ तौ शब्दार्थौ महाकवेः।"
(a) अवगन्तव्यौ (b) प्रत्यभिज्ञेयौ
(c) परिहर्तव्यौ (d) संस्मरणीयौ

उत्तर (b)- 'ध्वन्यालोक' के लेखक आनन्दवर्द्धन ने काव्य के दो भेद किए हैं (i) वाच्य (ii) प्रतीयमान। उसमें से रिक्त स्थान में -
यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः अर्थात् वह (प्रतीयमान अर्थ और उसकी अभिव्यक्ति में समर्थ विशेष शब्द, इन दोनों को भली प्रकार पहचानने का प्रयत्न महाकवि को करना चाहिए।

60. दशरूपकानुसारं फलस्याप्राप्तावुपाययोजनादिरूपचेष्टाविशेषः भवति-

- (a) आरम्भः (b) प्रयत्नः
(c) प्राप्त्याशा (d) नियताप्तिः

उत्तर (b)- आचार्य धनञ्जय ने अपने लक्षणग्रन्थ दश-रूपकम् में पाँच प्रकार की कार्यावस्था का उल्लेख किया है- **आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्ताशा, नियताप्ति फलागमः ये पांच हैं-** उनमें से प्रयत्न की व्याख्या करते हैं कि फल की प्राप्ति न होने पर उसके लिए वेग पूर्वक उद्योग करना ही प्रयत्न नामक कार्यावस्था कहलाता है।

**61. शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् _____ इति हेतस्तदुद्भवे॥
काव्यप्रकाशतः रिक्तस्थानं पूरयत।**
(a) काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः
(b) लोकतत्त्वानुशीलनम्
(c) रसभावयोजिचिन्तनम्
(d) भावाभासस्य चिन्तनम्

उत्तर (a)- आचार्य मम्मट ने अपने काव्य में काव्य के हेतु को बताते हैं-
**शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञ शिक्षयाभ्यासः इति हेतुस्तदुद्भवे॥**
अतः रिक्त स्थान में काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासः लिखा जायेगा।

62. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः विपर्यासे कोऽलङ्कारः?
(a) अनन्वयः (b) विभावना
(c) विशेषोक्तिः (d) उपमेयोपमा

उत्तर (d)- काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने नवम् एवं दशम् उल्लास में अलंकारों की विशद् विवेचना की है- उसमें सादृश्यमूलक उपमेयोपमा अलंकार का लक्षण दिया जा रहा है- **विपर्यास उपमेयोपमा तयोः** अर्थात् उपमान और उपमेय का परिवर्तन हो जाना उपमेयोपमा अलंकार कहलाता है।

63. कालक्रमानुसारेण तालिकां चिनुत -

- (A) अप्पयदीक्षितः (B) भरतः
(C) आनन्दवर्धनः (D) दण्डी
(a) A B C D
(b) B C A D
(c) C A B D
(d) B D C A

उत्तर (d) कालक्रमानुसार प्रथम भरत हैं जिनका समय 200ई.पू. है इनके बाद आचार्य दण्डी का समय 600ई0 के लगभग है तथा आनन्दवर्द्धन का समय 9वीं शदी ई. है और सबसे अन्तिम में अप्पयदीक्षित का समय 1650 के लगभग है।

64. "दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मदवं हि तत्-दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः?"
(a) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (b) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे
(c) सन्धिभेदप्रसङ्गे (d) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

उत्तर (a)- दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने अपने ग्रन्थ के तृतीय प्रकाश में दश रूपकों की चर्चा की है- नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, प्रहसन, डिम, समवकार, वीथी, ईहामृग, अंक। इसमें से वीथी के 13 अंग बताए गये हैं- उसमें से 13वाँ मृदव के लक्षण को बताते हैं- **दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मदवं हि तत् ।**

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

65. “न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।” -
इत्यादि श्लोकः भवति-
- (a) काव्यप्रशंसा (b) गुणप्रशंसा
(c) नाट्यप्रशंसा (d) अलङ्कारप्रशंसा

उत्तर (c)- आचार्य भरतमुनि प्रणीत “नाट्यशास्त्र” में 36 अध्याय हैं और श्लोकों की संख्या 6000 है इसीलिए इसे “षट्साहस्री संहिता” भी कहते हैं। इसमें नाट्य प्रशंसा करते हुए यह सूक्ति कही गई है- न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

66. “तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।
अन्तः संज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥”
इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?
- (a) अण्डजेन प्राणिनां (b) उद्भिदा
(c) स्वेदजेन प्राणिना (d) जरायुजेन प्राणिना

उत्तर (b)- मनु प्रणीत मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में प्राणियों के कर्मों का क्रम बताया गया है वे चार हैं- जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज। इनमें से यह श्लोक उद्भिज से सम्बद्ध है- तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्म हेतुना समन्विताः ।

67. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत-
“नृपतौ कोषराष्ट्रे च _____ सन्धिविपर्ययौ।”
- (a) अमात्ये (b) दूते
(c) सेनापतौ (d) मन्त्रिणि

उत्तर (b)- “नृपतौ कोषराष्ट्रे च दूते सन्धिविपर्ययौ।”
यह मनुस्मृति से सम्बद्ध है इसमें राजा के धर्म, राज्य शासन, शुद्ध आदि का वर्णन है। जिसके सन्दर्भ में यह श्लोक युक्ति संगत है- स राजा पुरुषो दण्डः स नेताशासिता च सः। चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः ॥

68. कस्मिन् पुराणे ‘काशी-खण्डः’ समुपलभ्यते?
- (a) लिङ्ग पुराणे (b) शिवपुराणे
(c) ब्रह्माण्डपुराणे (d) स्कन्दपुराणे

उत्तर (d)- पुराणों की संख्या 18 मानी गयी है, जो इस प्रसिद्ध श्लोक में प्रथम अक्षर लेकर उसकी गणना की गयी है।
मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयम् व चतुष्टयम् ।
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥
इसमें से स्कन्दपुराण में “काशीखण्ड” प्राप्त होता है।

69. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्तस्थानं पूरयत-
“स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः ।
अर्थशास्त्रात् बलवद् _____ इति स्थितिः ॥
- (a) धर्मशास्त्रम् (b) राजादेशः
(c) नृपस्येच्छा (d) नीतिशास्त्रम्

उत्तर (a)- याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय में यह बताया गया है कि दो स्मृतियों में विरोध होने पर व्यवहार से किया गया न्याय बलवान् होता है और अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है- स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः, अर्थशास्त्रात् बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥

70. याज्ञवल्क्यानुसारेण सबन्धके ऋणे मासि-मासि वृद्धिः भवति-
- (a) पञ्चाशद्भागः (b) अशीतिभागः
(c) त्रिंशद्भागः (d) विंशोभागः

उत्तर (b)- याज्ञवल्क्य स्मृति में ही यह भी बताया गया कि- अशीतिभागो वृद्धिः रूयान्मासि मासि सबन्धके।
अर्थात् बन्धक रखे जाने पर प्रत्येक मास में उसका अस्सीवां भाग व्याज होता है। अन्य स्थिति में वर्ण क्रम (ब्राह्मण आदि) से दो, तीन, चार, प्रतिशत की वृद्धि होती है।

71. श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति -
- (a) दशमेऽध्याये
(b) एकादशेऽध्याये
(c) प्रथमाध्याये
(d) त्रयोदशाध्याये

उत्तर (b)- श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गयी है इसमें 700 श्लोक हैं। इसमें 18 अध्याय हैं। इसके 11 वें अध्याय का नाम विश्वरूपदर्शनयोग है।

72. ‘शतसाहस्रीसंहिता’ इति कस्य अपरं नाम?
- (a) रामायणस्य (b) भविष्यपुराणस्य
(c) स्कन्दपुराणस्य (d) महाभारतस्य

उत्तर (d)- महाभारत के रचयिता वेदव्यास (कृष्णद्वैपायन) हैं महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है। महाभारत को “शतशाहस्री संहिता” कहा गया है, महाभारत की शैली-पाञ्चाली है, रस- वीर, अद्भुत और शान्त रस प्रमुख हैं तथा छन्द अनुष्टुप् है।

73. रामायणस्य श्लोकसंख्या भवति-
- (a) 31000 - 40000 (b) 22000 - 25000
(c) 11000 - 15000 (d) 5000 - 10000

उत्तर (b)- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है इसमें सात काण्ड हैं और लगभग 24 हजार श्लोक हैं अतः इसे “चतुर्विंशति शाहस्री संहिता” भी कहते हैं, अतः दिए गये विकल्पों में विकल्प b (22000-25000) सही उत्तर है।

74. हरिषेणविरचिते इलाहाबादशिलालेखे ‘कविराज’ इत्युपाधिः भवति -
- (a) चन्द्रगुप्तस्य (b) अशोकस्य
(c) समुद्रगुप्तस्य (d) स्कन्दगुप्तस्य

उत्तर (c)- समुद्रगुप्त का दरबारी हरिषेण था जिसने इलाहाबाद प्रशस्ति लेख की रचना की और इसी शिलालेख में समुद्रगुप्त ने विक्रमांक की उपाधि धारण की थी इसे कविराज भी कहा जाता है।

75. अर्थशास्त्रे आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो भवति -
- (a) साम (b) दानम्
(c) भेदः (d) दण्डः

उत्तर (d)- अर्थशास्त्र कौटिल्य की प्रसिद्ध रचना है इस ग्रन्थ में धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, चिकित्साशास्त्र का वर्णन है। इसमें आन्वीक्षिकीत्रयी वार्ता के योग क्षेम का साधन दण्ड है। दण्ड शासन को प्रतिपादित करने वाली है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2016

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता सम्बन्धिता अस्ति-

- (a) कृष्णयजुर्वेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b)- वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहिता शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है। यजुर्वेद की दो शाखायें प्राप्त होती हैं- 1. शुक्लयजुर्वेद 2. कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व संहिता प्राप्त होती है जबकि कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय, कठ, मैत्रायणी एवं कपिष्ठल शाखायें प्राप्त होती हैं।

2. वेदा अपौरुषेयाः सन्तीति मतमस्ति-

- (a) महर्षिदयानन्दस्य (b) ए. वेबरस्य
(c) मैक्समूलरस्य (d) विन्टरनिट्जस्य

उत्तर (a)- महर्षिदयानन्द वेद को अपौरुषेय स्वीकार करते हैं उनके मतानुसार वेद किसी पुरुष द्वारा नहीं रचा गया है, जबकि मैक्समूलर ने “छन्दः कालादिनामभिः वेदकालं प्रथमतः प्रतिपादयति” यह विचार प्रतिपादित किया।

3. वैतानश्रौतसूत्रं केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?

- (a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

उत्तर (c)- वैतानश्रौतसूत्र का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। आश्वलायन श्रौतसूत्र का ऋग्वेद से, लाट्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से और कात्यायन तथा आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का सम्बन्ध यजुर्वेद से है।

4. ‘स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।

सचस्वा नः स्वस्तये॥’ अस्य मन्त्रस्य का देवता अस्ति?

- (a) रुद्रः (b) अग्निः
(c) सोमः (d) सविता

उत्तर (b)- यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है, इस मन्त्र के देवता अग्नि तथा ऋषि मधुच्छन्दा है और छन्द गायत्री है। इनका वर्णन 200 सूक्तों में है।

5. मुण्डकोपनिषत्केन वेदेन सह सम्बद्धा अस्ति?

- (a) यजुर्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (b)- मुण्डकोपनिषद् का सम्बन्ध अथर्ववेद के शौनकशाखा से है इस वेद के दो और उपनिषद् क्रमशः प्रश्नोपनिषद् और माण्डूक्योपनिषद् है। जबकि सामवेद के उपनिषद् केनोपनिषद् और छान्दोग्योपनिषद् है, यजुर्वेद के -ईशावास्योपनिषद् और कठोपनिषद् है और ऋग्वेद का उपनिषद्, ऐतरेय उपनिषद् है।

6. ‘षड्विंशब्राह्मणम्’ इति ग्रन्थः केन वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति?

- (a) यजुर्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (d)- षड्विंश ब्राह्मण का सम्बन्ध सामवेद से है इस वेद के पञ्चविंश (ताड्य) इत्यादि 9 ब्राह्मण प्राप्त होते हैं। जबकि गोपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से और शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध यजुर्वेद से तथा ऐतरेय एवं शांखायन ब्राह्मण का सम्बन्ध ऋग्वेद से है।

7. ‘तलवकार-आरण्यकम्’ केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) सामवेदेन

उत्तर (d)- तलवकार (तलवकार) आरण्यक का सम्बन्ध सामवेद से है जबकि ऐतरेय तथा शांखायन आरण्यक का सम्बन्ध ऋग्वेद से और बृहदारण्यक का सम्बन्ध यजुर्वेद से है। अथर्ववेद का कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं होता है।

8. ‘विश्वामित्र-नदी’ सूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?

- (a) वसिष्ठः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दाः (d) दीर्घतमाः

उत्तर (b)- ऋग्वेद में दश मण्डल है जिसमें से तृतीय मण्डल में विश्वामित्र-नदी सूक्त के ऋषि विश्वामित्र हैं। प्रथम मण्डल के ऋषि मधुच्छन्दा और सातवें मण्डल के ऋषि वसिष्ठ हैं। जबकि दीर्घतमा, विष्णुसूक्त के ऋषि हैं।

9. ‘पुरुरवा-उर्वशी’ सूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

- (a) 17 (b) 18
(c) 19 (d) 20

उत्तर (b)- “पुरुरवा उर्वशी” ऋग्वेद के दशममण्डल का 96वाँ सूक्त है जिसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा का वर्णन है। जिसमें कुल 18 मन्त्र हैं। ऋषि एवं देवता -पुरुरवा और उर्वशी हैं। छन्द-त्रिष्टुप् है और स्वर धैवत है। जबकि यम-यमी संवाद में 14 मन्त्र हैं।

10. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुतः

- (a) यम-यमी संवादसूक्तम् (i) यजुर्वेदः
(b) कठोपनिषद् (ii) सामवेदः
(c) लाट्यायनश्रौतसूत्रम् (iii) ऋग्वेदः
(d) माण्डूक्योपनिषद् (iv) अथर्ववेदः

उत्तर (d)- यम-यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद के (10/10) दशवें मण्डल का 10वाँ सूक्त है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है। लाट्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है और माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है।

11. अधस्तनेषु को ग्रन्थः कल्पवेदाङ्गान्तर्गतोऽस्ति?

- (a) पारस्करगृह्यसूत्रम् (b) काशकृत्स्नव्याकरणम्
(c) ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् (d) पाणिनीयशिक्षा

उत्तर (a)- वेदाङ्गों में कल्प का स्थान महत्त्वपूर्ण है इसके चार भाग हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र है उसमें से पारस्कर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद से है जबकि कृष्णयजुर्वेद का आपस्तम्ब, बौधायन है।

12. अधोऽङ्कितेषु वेदाङ्गमस्ति-

- (a) ईशोपनिषद् (b) ऐतरेयारण्यकम्
(c) मानवशुल्बसूत्रम् (d) शतपथब्राह्मणम्

उत्तर (c)- चारों कल्पों में जो शुल्बसूत्र है वह केवल यजुर्वेद पर ही प्राप्त होते हैं। उसमें से बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, वाधूल कृष्ण यजुर्वेद के और कात्यायन शुल्बसूत्र शुक्लयजुर्वेद पर प्राप्त होते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

13. 'अधिवसति वैकुण्ठं हरिः' इत्यत्र कर्मसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

- (a) उपान्वध्याङ्वसः (b) अधि-शीङ्स्थाऽऽसां कर्म
(c) अधिरीश्वरे (d) अधिपरी अनर्थको

उत्तर (a)- उपान्वध्याङ्वसः सूत्र के अनुसार उप, अनु, अधि और आङ् उपसर्ग पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। इस उदाहरण में आधार वैकुण्ठ है। अतः आधार वैकुण्ठ की उपान्वध्याङ्वसः सूत्र से कर्म सञ्ज्ञा एवं कर्मणि द्वितीया सूत्र से द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-उपवसति, अनुवति, अधिवसति, आवसति वा वैकुण्ठं हरिः।

14. 'इत्थम्भूतलक्षणे' इति सूत्रस्योदाहरणं किम्भवति?

- (a) जटाभिस्तापसः
(b) जपमनु प्रावर्षत्
(c) मासं कल्याणी
(d) लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः

उत्तर (a)- इत्थम्भूतलक्षणे का उदाहरण जटाभिस्तापसः है। जब कोई व्यक्ति या वस्तु किसी विशेष लक्षण से जाना जाता है तो उस लक्षण विशेष में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे - पुस्तकैः छात्रः। चन्दनेन पण्डितः।

15. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमासः कस्मिन्नर्थे भवति?

- (a) समीपार्थे (b) अत्ययार्थे
(c) विभक्त्यर्थे (d) साकल्यार्थे

उत्तर (c)- अधिगोपम् का लौकिक विग्रह गोपि इति तथा अलौकिक विग्रह गोपा ङि अधि। अव्ययविभक्तिसमीपसमृद्धि वृद्धयर्थभावऽत्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चादयथाऽऽनुपूर्व्य साकल्याऽन्त वचनेषु" इस सूत्र से विभक्ति अर्थ में अव्ययीभाव समास होकर अधिगोपम् रूप सिद्ध होगा।

16. व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासे किं ज्ञापकम्

- (a) 'अनेकमन्यपदार्थे' इत्यत्र 'अनेक' ग्रहणम्
(b) 'हलदन्तात् सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम्' इत्यत्र 'सञ्ज्ञायाम्' इत्यस्य ग्रहणम्
(c) 'सप्तमीविशेषेण बहुव्रीहौ' इत्यत्र 'सप्तमी' यस्य ग्रहणम्
(d) 'शेषो बहुव्रीहि' इत्यत्र 'शेष' ग्रहणम्

उत्तर (c)- "सप्तमी विशेषेण बहुव्रीहौ" अर्थात् सप्तम्यन्त और विशेषण का बहुव्रीहि में पहले प्रयोग हो और सप्तम्यन्त का पूर्व प्रयोग करने से ही सिद्ध होता है कि व्यधिकरण पदों का अर्थात् भिन्नविभक्तिक पदों का भी बहुव्रीहि होता है।

17. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः को भवति?

- (a) 'धि' सञ्ज्ञः (b) उपधासञ्ज्ञः
(c) निष्ठासञ्ज्ञः (d) संहितासञ्ज्ञः

उत्तर (d)- वर्णानामतिशयितः सन्निधि संहिता सञ्ज्ञः भवति "परः सन्निर्गः संहिता" अर्थात् वर्णों के अतिशय सामीप्य की संहिता संज्ञा हो।
जैसे- सुधी + उपास्यः
इसमें सुधी के ईकार और उपास्य के उकार के अत्यधिक सामीप्य के कारण यहाँ संहिता संज्ञा हुई है। जबकि "शेषो घ्यसखि" सूत्र से धि संज्ञा "अलोऽन्त्यतापूर्व उपधा" सूत्र से उपधा संज्ञा और 'क्तवतवतु निष्ठा' से निष्ठा संज्ञा होती है।

18. अधोलिखितेषु कस्य सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा भवति?

- (a) 'टा' इत्यस्य (b) 'डे' इत्यस्य
(c) 'शि' इत्यस्य (d) 'डि' इत्यस्य

उत्तर (c)- "शि सर्वनामस्थानम्" सूत्र से शि शब्द की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है।
जैसे- ज्ञान+ इ में शि के शेषांश इकार की सर्वनाम स्थान संज्ञा हुई।

19. 'निमित्तात् कर्मयोगे' इत्यत्र 'योग' शब्दस्य भट्टोजिदीक्षितमते कोऽर्थः ?

- (a) चित्तवृत्तिनिरोधः (b) संयोगसम्बन्धः केवलम्
(c) संयोग-समवायसम्बन्धौ (d) हीनै

उत्तर (c)- 'निमित्तात् कर्मयोगे' इस सूत्र में योग शब्द का अर्थ है कि वह निमित्त या फल यदि उस क्रिया के कर्म से युक्त अथवा समवेत हो तो उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे "चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।

20. 'अधि रामे भूः' इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

- (a) अधिरीश्वरे (b) उपोऽधिके च
(c) अधि-परी अनर्थकौ (d) हीने

उत्तर (a)- "अधिरीश्वरे" सूत्र के अनुसार स्वस्वामिभाव सम्बन्ध में 'अधि' शब्द कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है। अतः 'अधि रामे भूः' में अधिरीश्वरे सूत्र द्वारा अधि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा हुई है।

21. को ध्वनिः अघोषमहाप्राणः अस्ति?

- (a) घ् (b) छ्
(c) ज् (d) ढ्

उत्तर (b)- 'खरोविवाराः श्वासा अघोषाश्च'। ख् फ् छ् ट् थ् च् द् त् क् प् स् ष् श् ये खर् प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं और विवार, श्वास, अघोष होते हैं जबकि वर्ग का द्वितीय एवं चतुर्थ वर्ण महाप्राण होते हैं। अतः स्पष्ट है कि 'छ' अघोष भी है और महाप्राण भी है।

22. ग्रिमनियमानुसारं संस्कृतस्य 'क, त्, प्' इति ध्वनयः जर्मनभाषायां केषु ध्वनिषु परिवर्तिताः?

- (a) च्, छ्, ज् (b) ख्, थ्, फ्
(c) म्, द्, ब् (d) उष्मसु

उत्तर (b)- ध्वनि नियम तीन प्रकार के हैं- ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर। उसमें से ग्रिम नियम के अनुसार क् त् प् " ध्वनि जर्मन भाषा में 'ख् थ् फ्' ध्वनि में परिवर्तित हो जाती है।

23. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?

- (a) शिल्पयोगात्मिका (b) प्रशिल्पयोगात्मिका
(c) अयोगात्मिका (d) अशिल्पयोगात्मिका

उत्तर (a)- आकृति की दृष्टि से 'संस्कृत' भाषा शिल्पयोगात्मक भाषा है। भाषाओं की मूल प्रकृति संयोगात्मक या योगात्मक (बहिर्मुखी) थी। प्रकृति प्रत्यय के समन्वित रूप से अर्थ का बोध कराया जाता है।

24. ग्रीकभाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?

- (a) सैमेटिक-परिवारस्य (b) बान्टू-परिवारस्य
(c) भारोपीय-परिवारस्य (d) काकेशी-परिवारस्य

उत्तर (c)- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षिप्त रूप है इसके अन्तर्गत दश शाखाएँ आती हैं। (1) भारत इरानी (2) बाल्टो स्लाविक (3) आर्मीनी (4) अल्बानी (5) ग्रीक (6) केल्टिक (7) जर्मनिक (8) इटालिक (9) हिटाइट (10) तोघारी
अतः ग्रीक भाषा इसी परिवार से सम्बन्धित है।

25. संस्कृतस्य 'शतम्' इत्यस्य कृते 'केन्तुम्' इत्ययं शब्दः कस्यां भाषायां विद्यते?

- (a) लैटिनभाषायाम् (b) ग्रीकभाषायाम्
(c) जर्मनभाषायाम् (d) ईरानीभाषायाम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (a)- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है- (1) केन्टुम (2) सतम् (शतम्)। उदाहरण के लिए 100 संख्या वाचक शब्द लिया गया जिसे संस्कृत में 'शतम्' कहते हैं और लैटिन में केन्टुम कहते हैं अर्थात् यह केन्टुम लैटिन भाषा में प्रयुक्त हुआ है।

26. सिन्धीभाषायाः विकासः कस्याः प्राकृतभाषायाः अभवत्?

- (a) शौरसेनी- प्राकृतात् (b) पैशाची- प्राकृतात्
(c) मागधी - प्राकृतात् (d) अर्धमागधी- प्राकृतात्

उत्तर (b)- सिन्धी भाषा का विकास पैशाची और प्राकृत भाषा के संयोग द्वारा हुआ। पैशाची का क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत और अफगानिस्तान का क्षेत्र था। 'गुणाढ्य' की रचना 'वृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में थी।

27. सत्कार्यवादस्य सिद्धिः कस्माद् हेतोः न भवति?

- (a) असदकरणात् (b) सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
(c) शक्तस्य शक्यकरणात् (d) कारणभावात्

उत्तर (b)- सांख्यकारिका में सत्कार्यवाद सिद्ध करने के पाँच कारण प्रदर्शित किए गये हैं जो इस श्लोक में है-

**असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत् कार्यम्॥**

आगे यह बताते हैं कि कारण व्यापार से पहले भी कार्य सत् होता है।

28. प्रधानपुरुषयोः को धर्मः समानः?

- (a) त्रिगुणत्वम् (b) अहेतुत्वम्
(c) सामान्यत्वम् (d) अचेतनत्वम्

उत्तर (b)- सांख्यकारिका में प्रधान (प्रकृति) और पुरुष के संयोग से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है जिसमें प्रकृति को अविकृति (किसी का विकार नहीं) अर्थात् किसी से उत्पन्न नहीं होती और पुरुष को 'न प्रकृतिर्न विकृति पुरुष! कहा गया है इन दोनों में अहेतुत्वम् धर्म समान होता है।

29. अव्यक्तं कस्माद् हेतोः कारणं भवति?

- (a) नित्यत्वात् (b) परिमाणवत्त्वात्
(c) चैतन्यात् (d) निष्क्रियत्वात्

उत्तर (b)- सांख्यकारिका में प्रकृति और पुरुष मुख्य तत्वों की बात कही गई है जिसमें प्रकृति को अव्यक्त कहा गया है और इसे प्रधान भी कहते हैं। इसमें अव्यक्त 'प्रसवधर्मी' अर्थात् जिसमें 'परिमाण' धर्म (नित्य) विद्यमान रहे इसी कारण यह स्पष्ट है कि यह अव्यक्त परिमाण के कारण ही होता है।

30. प्रकृतिपुरुषयोः सम्बन्धः कीदृशो भवति?

- (a) जलाग्निवत् (b) कार्यकारणवत्
(c) मातृपुत्रवत् (d) पङ्ग्वन्धवत्

उत्तर (d)- सांख्यकारिका में 25 तत्वों की विवेचना की गई है जिसमें कुछ पदार्थ प्रकृति तथा कुछ विकृति रूप में एवं कुछ दोनों रूपों में प्राप्त होते हैं, इसमें प्रकृति को जड़ माना गया है और अन्धवद् की संज्ञा दी गई और जब इसका पुरुष से संयोग होता है तो वह चेतनवती हो जाती है इन दोनों के संयोग को ही 'पङ्ग्वन्धवत्' की संज्ञा दी गई है।

31. अध्यारोपः किम् भवति?

- (a) मिथ्याज्ञानम् (b) अस्पष्टं ज्ञानम्
(c) यथार्थज्ञानम् (d) वस्तुनि अवस्वारोपः

उत्तर (d)- वस्तुनि अवस्वारोपः अध्यारोपः अर्थात् सर्पभाव को न प्राप्त होने वाली रस्सी पर सर्प के आरोप के समान वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है।

32. आवरणम् कस्य शक्तिरस्ति?

- (a) रजोगुणस्य (b) अज्ञानस्य
(c) जीवस्य (d) चैतन्यस्य

उत्तर (b)- सदानन्द के वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान की दो शक्तियाँ मानी गई हैं -

(i) आवरण शक्ति

(ii) विक्षेपशक्ति

आवरण शक्ति का उदाहरण-

घनच्छन्नदृष्टिर्धनच्छन्नमर्कं यथा मन्यते निष्प्रभं चातिमूढः।

तथा बद्धवद्भाति यो मूढदृष्टेः स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा॥

33. वेदान्तसारानुसारं लिङ्गशरीरं कस्य गणना न भवति?

- (a) बुद्धेः (b) मनसः
(c) प्राणस्य (d) आकाशस्य

उत्तर (d)- वेदान्तसार में लिङ्गशरीर के सत्रह अवयव हैं, 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 वायु 1 बुद्धि 1 मन इसमें आकाश की गणना नहीं की गई है। जबकि सांख्यकारिका में लिङ्गशरीर की संख्या 18 है।

34. गौतमसूत्रोक्तषोडशपदार्थेषु कस्य पदार्थस्य निम्नाङ्कितेषु ग्रहणं नास्ति?

- (a) 'संशय' पदार्थस्य (b) 'विशेष' पदार्थस्य
(c) 'अवयव' पदार्थस्य (d) 'निर्णय' पदार्थस्य

उत्तर (b)- गौतम सूत्र (न्यायसूत्र) में 16 पदार्थों का निरूपण किया गया है वे क्रमशः 'इस प्रकार है' - "प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद-जल्प, वितण्डा, हेत्वाभासच्छल-जाति, निग्रहस्थान" ये 16 हैं इनमें विशेष पदार्थ की चर्चा नहीं है।

35. 'मृत्पिण्डः' घटस्य कीदृशं कारणमुच्यते?

- (a) निमित्तकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) असमवायिकारणम् (d) समवाय्यसमवायिकारणम्

उत्तर (b)- जिस प्रकार पट अपने रूप आदि का समवायीकारण होता है। इसी प्रकार मिट्टी का पिण्ड भी घट का समवायीकारण होता है तथा घट अपने मे स्थित रूप आदि का समवायीकारण है।

36. यदा चक्षुरादिना घटगतरूपादिकं गृह्यते तदाऽनयोरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः ?

- (a) संयोगः (b) समवायः
(c) संयुक्तसमवायः (d) समवेतसमवायः

उत्तर (c)- सन्निकर्ष 6 प्रकार का होता है उसमे से जब चक्षु आदि से घट मे रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि 'घट मे श्याम रूप है, तब चक्षु इन्द्रिय है घट ही रूप विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय ही है।

37. 'जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्' इत्यत्र 'प्राणादिमत्त्वत्' कीदृशो हेतुः ?

- (a) केवलान्वयी (b) केवलव्यतिरेकी
(c) अन्वय-व्यतिरेकी (d) असङ्गतः

उत्तर (b)- हेतु तीन प्रकार के होते हैं- (1) अन्वयव्यतिरेकी (2) केवलान्वयी (3) केवलव्यतिरेकी। इसमे से जो केवल व्यतिरेकी हेतु है वह सात्विकत्व के साध्य होने पर प्राणादिमत्व हेतु है, जैसे- जीवित शरीर सात्मक है क्योंकि वह प्राण आदि से युक्त होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

38. 'साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य विद्यते सः'

हेत्वाभासोऽन्वयभट्टेन केन नाम्ना प्रोक्तः

- (a) 'सत्प्रतिपक्ष' नाम्ना (b) 'असिद्ध नाम्ना
(c) 'सत्यभिचार' नाम्ना (d) 'विरुद्ध' नाम्ना

उत्तर (a)- अन्वयभट्ट कृत तर्कसंग्रह में पाँच प्रकार के हेत्वाभास बताये गये हैं। उसमें से जिस हेतु के साध्य के अभाव का साधक अन्य हेतु हो उसे सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास कहते हैं- जैसे- शब्द नित्य है श्रोतेन्द्रिय का विषय होने से।

39. 'तर्कसङ्ग्रहे तर्कलक्षणं किमुक्तम्?

- (a) मिथ्याज्ञानम्
(b) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः
(c) सन्निकृष्टसंयोगहेतुः
(d) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्ध-नानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्

उत्तर (b)- तर्कसंग्रह में अयथार्थ अनुभव या अप्रमा के तीन भेद हैं- (1) संशय (2) विपर्यय (3) तर्क। व्याप्य के आरोप से व्यापक के आरोप को 'तर्क' कहते हैं। जैसे- यदि अग्नि नहीं होगा तो धूम भी नहीं होगा।

40. अभावप्रत्यक्षेऽन्वयभट्टानुसारं कः सन्निकर्षोऽङ्गीकृतः?

- (a) विशेषण-विशेष्यभावः (b) समवायः
(c) संयुक्तसमवेत-समवायः (d) संयोगः

उत्तर (a)- अन्वयभट्ट प्रणीत "तर्कसंग्रह" में 6 प्रकार के सन्निकर्ष हैं- संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय, समवेतसमवाय और विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष। उसमें से अभाव के प्रत्यक्ष होने पर विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष होता है जैसे- घटाऽभाववद् भूतले।

41. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम् ?

- (a) अयः (b) पृथिव्याः
(c) वायोः (d) अग्नेः

उत्तर (b)- अन्वयभट्ट प्रणीत 'तर्कसंग्रह' में द्रव्य के 9 भेद हैं- पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। उसमें से पृथ्वी का गुण गन्ध है "तत्र गन्धवती पृथ्वी" यह नित्य और अनित्य के भेद से दो प्रकार की होती है।

42. कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?

- (a) भासस्य (b) श्रीहर्षस्य
(c) दण्डिनः (d) भारवेः

उत्तर (b)- श्रीहर्ष विरचित नैषधीयचरितम् के अन्तिम श्लोक से स्पष्ट होता है कि इनके पिता श्रीहीर तथा माता मामल्लदेवी थीं जैसा कि इस श्लोक के प्रथम पंक्ति से स्पष्ट है- श्रीहर्ष कविराज राजिमुकुटालङ्कार हीरः सुतं, श्रीहीरः सुपुत्रे जितेन्द्रियचयं मामल्ल देवी चयम् ।

43. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(A) श्रीहर्षः	(i) हर्षचरितम्
(B) दण्डी	(ii) मुद्राराक्षसम्
(C) बाणभट्टः	(iii) नैषधीयचरितम्
(D) विशाखदत्तः	(iv) दशकुमारचरितम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (i)	(iii)	(iv)	(ii)
(b) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c) (ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d) (iv)	(iii)	(ii)	(i)

उत्तर (b)- नैषधीयचरित के रचयिता श्रीहर्ष हैं इसमें 22 सर्ग हैं। दशकुमारचरित के लेखक दण्डी हैं और इसमें 8 उच्छवास हैं। हर्षचरितम् के लेखक बाणभट्ट हैं इसमें भी 8 उच्छवास हैं और मुद्राराक्षस के लेखक विशाखदत्त हैं इसमें 7 अंक हैं।

44. दशकुमारचरितस्य नायकः ?

- (a) राजहंसः (b) उपहारवर्मा
(c) राजवाहनः (d) अपहारवर्मा

उत्तर (c)- महाकवि दण्डी विरचित 'दशकुमारचरित' 3 खण्डों में विभक्त है इसका आधार बृहत्कथा से लिया गया है। यह शृंगार रस प्रधान है। इसके नायक राजवाहन तथा नायिका अवन्तिसुन्दरी हैं।

45. विश्वनाथमतानुसारं वीररसः कतिविधः ?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) पञ्चविधः (d) चतुर्विधः

उत्तर (d)- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ कविराज के मतानुसार वीर रस के चार भेद प्रस्तुत किए गये हैं-

(1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) युद्धवीर (4) दयावीर
इस रस के देवता महेन्द्र तथा रंग सुवर्ण होता है।

46. बृहत्त्रय्यां न गण्यते-

- (a) नैषधीयचरितम् (b) रघुवंशम्
(c) किरातार्जुनीयम् (d) शिशुपालवधम्

उत्तर (b)- रघुवंशमहाकाव्यम् महाकवि कालिदास की रचना है इसमें 19 सर्ग हैं। यह लघुत्रयी के अन्तर्गत आती है। जबकि शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम् एवं किरातार्जुनीयम् बृहत्त्रयी रचनाओं की श्रेणी में आती है।

47. गद्य-काव्यं नास्ति-

- (a) कादम्बरी (b) दशकुमारचरितम्
(c) बुद्धचरितम् (d) हर्षचरितम्

उत्तर (c)- अश्वघोष विरचित बुद्धचरित एक महाकाव्य है जिसमें 28 सर्ग मुख्यतः (14 सर्ग) हैं। शेष कादम्बरी हर्षचरित और दशकुमारचरित गद्यकाव्य के अन्तर्गत आते हैं।

48. केन कविता बौद्धधर्मस्य प्रचारार्थं काव्यानि लिखितानि?

- (a) कालिदासेन (b) माघेन
(c) अश्वघोषेण (d) भवभूतिना

उत्तर (c)- अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए 'बुद्धचरित' नामक महाकाव्य की रचना की इसमें शान्त रस अङ्गी है इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है।

49. नैषधीयचरिते कति सर्गाः सन्ति?

- (a) एकोनविंशतिः (b) द्वाविंशतिः
(c) अष्टाविंशतिः (d) चतुर्विंशतिः

उत्तर (b)- नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है इसमें 22 सर्ग हैं यह एक बृहत्त्रयी महाकाव्य है और यह महाभारत के 'वन पर्व' से लिया गया है इसके नायक नल तथा नायिका दमयन्ती हैं।

50. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम् ?

- (a) महाभारतस्य आदिपर्वः (b) महाभारतस्य भीष्मपर्वः
(c) महाभारतस्य वनपर्वः (d) रामायणमहाकाव्यात्

उत्तर (c) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की कथावस्तु महाभारत के वन पर्व में प्राप्त होती है। भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त है तथा यह बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2016

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. ऋग्वेदीय-नासदीयसूक्तस्य (10.129) ऋषिरस्ति-

- (a) प्रजापतिः परमेष्ठी (b) सुकीर्तिः काक्षीवतः
(c) यज्ञः प्राजापत्यः (d) कुल्लभर्हिषः

उत्तर (a) नासदीय सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 129वाँ सूक्त है। इस सूक्त के ऋषि 'प्रजापति परमेष्ठी' हैं तथा देवता 'परमात्मा' हैं छन्द त्रिष्टुप् है तथा अक्षर 44 होते हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या 7 है।

2. अथर्ववेदस्य पृथ्वीसूक्ते (12.1) कति मन्त्राः सन्ति?

- (a) 23 (b) 33
(c) 53 (d) 63

उत्तर (d) पृथ्वीसूक्त अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है इसके ऋषि 'अथर्व' तथा देवता भूमि या पृथ्वी हैं इसमें मन्त्रों की संख्या 63 है इसमें भूमि को माता की संज्ञा दी गयी है-

“माता भूमिः ! पुत्रोऽहं पृथिव्याः”

3. सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं सूक्तमस्ति ऋग्वेदे-

- (a) पुरुषसूक्तम् (10.90) (b) अग्निमन्त्रम् (1.1)
(c) इन्द्रसूक्तम् (2.12) (d) वाक्सूक्तम् (10.125)

उत्तर (a) ऋग्वेद के दशम मण्डल का 90वाँ सूक्त पुरुष सूक्त है इस सूक्त के ऋषि नारायण तथा देवता पुरुष हैं इसमें छन्द- अनुष्टुप् और त्रिष्टुप् दोनों हैं और मन्त्रों की संख्या 16 है। प्रथम मन्त्र सहस्रशीर्षा दशाङ्गुलम् है।

4. 'शुनःशेषम्' इत्याख्यानं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?

- (a) कौषीतकिब्राह्मणग्रन्थे (b) ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थे
(c) सामविधानब्राह्मणग्रन्थे (d) ऐतरेयारण्यकग्रन्थे

उत्तर (b)- ऋग्वेद में मुख्यतः दो ब्राह्मण प्राप्त होते हैं ऐतरेय और शांखायन। इसमें से शुनःशेष आख्यान ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में प्राप्त होता है इसमें राजा हरिश्चन्द्र का उल्लेख है। इसका महत्वपूर्ण वाक्य - चरैवेति-चरैवेति है।

5. महर्षिणा दयानन्देन कस्य वेदस्य भाष्यं कृतमस्ति?

- (a) पैपलादसंहितायाः
(b) शौनकसंहितायाः
(c) काण्वसंहितायाः
(d) वाजसनेयिमाध्यन्दिनसंहितायाः

उत्तर (d)- महर्षि दयानन्द वेद के भाष्यकार हैं वे वेद को अपौरुषेय मानते हैं उन्होंने शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी एवं माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य किया है। इस वेद की एक शाखा काण्व भी प्राप्त होती है।

6. 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-हिरण्यमश्वान्' इति कथनमस्ति-

- (a) वाजश्रवसः (b) नचिकेतसः
(c) यमराजस्य (d) याज्ञवल्क्यस्य

उत्तर (c) कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध उपनिषद् कठोपनिषद् है। इसमें नचिकेता के 'आत्मज्ञान विषयक' प्रश्न पूछने पर यमराज ने उन्हें यह प्रलोभन दिया कि तुम सौ वर्ष जीवित रहने तथा पुत्र, पौत्रों एवं पशु इत्यादि को माँग लो अतः यह कथन यमराज का है।

7. अधोऽङ्कितेषु एकमसत्यमस्ति-

- (a) 'विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोमयं सह' इति ईशोपनिषदि वर्तते।
(b) ईशोपनिषद् तैत्तिरीयशाखाया वर्तते।
(c) याज्ञवल्क्य- मैत्रेयी-संवादो बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते।
(d) नचिकेतसः वर्णनं कठोपनिषदि वर्तते।

उत्तर (b)- दिये गये विकल्पों में B को छोड़कर सभी विकल्प सही हैं। क्योंकि ईशोपनिषद् का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के 40वें अध्याय से उद्धृत है इसमें मन्त्रों की संख्या 18 है। प्रमुख सूक्ति - “ईशावास्यमिदं सर्वं” है।

8. (क) 'शिक्षावल्ली' कठोपनिषदि वर्तते।

(ख) शिक्षावल्याम् गुरुसम्बन्धितो व्यवहारो निरूपितः।
अनयोः कथनयोर्विषये उचितं युगं चिनुत।

- (a) (क) असत्यम् (ख) सत्यम्
(b) (क) सत्यम् (ख) असत्यम्
(c) उभे सत्ये स्तः
(d) उभे असत्ये स्तः

उत्तर (a)- शिक्षावल्ली का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयोपनिषद् से है न कि कठोपनिषद् से। इसमें तीन वल्लियाँ हैं (1) शिक्षावल्ली (2) ब्रह्मानन्दवल्ली (3) भृगुवल्ली। शिक्षावल्ली में गुरु सम्बन्धित व्यवहार का निरूपण किया गया है इसमें 12 अनुवाक हैं।

9. 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' इत्युद्धरणं कुत्र वर्तते?

- (a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषद्

उत्तर (b)- उठो जागो और कर्म के लिए तत्पर हो जाओ यह कथन कठोपनिषद् से सम्बन्धित है यहाँ जागने का तात्पर्य अज्ञान से बाहर आने के लिए संकेत है।

तैत्तिरीयोपनिषद् का वाक्य - 'अतिथि देवो भव'।

केनोपनिषद् का वाक्य - न तत्र चक्षुर्गच्छति।

बृहदारण्यकोपनिषद् का वाक्य - ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदम्।

10. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः ? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

- (A) मा गृधः कस्यस्विद्धनम् (i) केनोपनिषद्
(B) उमाया उपदेशः (ii) बृहदारण्यकोपनिषद्
(C) अथ शिक्षां व्याख्यास्यामः (iii) ईशोपनिषद्
(D) आत्मावाऽरे द्रष्टव्यो (iv) तैत्तिरीयोपनिषद्

मन्तव्यः श्रोतव्यो निदिध्यासितव्यः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(c)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(d)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

उत्तर (d)-

मा गृधः कस्यस्विद्धनम्	- ईशोपनिषद्।
उमाया उपदेशः	- केनोपनिषद्।
अथशिक्षां व्याख्यास्यामः	- तैत्तिरीयोपनिषद्।
आत्मावाऽरे दृष्टव्यो मन्तव्यः श्रोतव्यो	
निदिध्यासितव्यः	- बृहदारण्यकोपनिषद्।

11. षड्वेदाङ्गेषु किम् न गण्यते?

- (a) निरुक्तम् (b) छन्दस्
(c) मीमांसा (d) कल्पः

उत्तर (c)- वेदाङ्गों की संख्या 6 है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। मीमांसा का वर्णन इसमें नहीं है। शिक्षा को वेदरूपी पुरुष की नासिका कहा गया है। जबकि व्याकरण को मुख कहा गया है। छन्द को वेद का पैर कहा गया है।

12. यास्कमते पदानां प्रकाराः कति भवन्ति?

- (a) चत्वारः (b) पञ्च
(c) द्वौ (d) षड्

उत्तर (a)- निरुक्तकार यास्क ने पदों के चार प्रकार बताए हैं- (1) नाम-‘सत्त्वप्रधानानि नामानि’। (2) आख्यात- ‘भाव प्रधानम् आख्यातम्’। (3) उपसर्ग- ‘न निर्बद्धाः उपसर्गाः अर्थान्निराहुरिति ‘शाकटायनः’। (4) निपात - उच्चावचस्वर्थेषु निपतन्ति इति निपातः।

13. षड्भावविकारेषु कतमो नास्ति?

- (a) जायते (b) विनश्यति
(c) वर्धते (d) स्मरति

उत्तर (d)- यास्क विरचित निरुक्त में वार्ष्पायणि ऋषि ने क्रिया के 6 भाव विकार की विवेचना की है।

(1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति।

इसमें स्मरति की चर्चा नहीं की गई है अतः स्मरति षड् भावविकार के अन्तर्गत नहीं आता है।

14. याज्ञवल्क्यशिक्षा केन वेदेन सम्बद्धा अस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

उत्तर (b)- ऋग्वेदीय शिक्षाग्रन्थ- पाणिनीय शिक्षा है यजुर्वेदीय शिक्षाग्रन्थ - याज्ञवल्क्यशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा एवं भारद्वाज शिक्षा है।

सामवेदीय शिक्षाग्रन्थ - नारद, शाकटायन।

अथर्ववेदीय शिक्षाग्रन्थ - माण्डूकीशिक्षा।

अतः दिये गये विकल्पों से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य शिक्षा का सम्बन्ध यजुर्वेद से है।

15. ‘नैगमकाण्डम्’ कस्मिन् ग्रन्थे वर्तते?

- (a) आपस्तम्बगृह्यसूत्रे (b) निरुक्ते
(c) गौतमधर्मसूत्रे (d) बौधायनधर्मसूत्रे

उत्तर (b)-निरुक्त में तीन काण्ड की विवेचना की गई है-

(1) नैघण्टुक काण्डम् (2) नैगम काण्डम् (3) दैवत काण्डम् निरुक्त में 12 अध्याय हैं। शेष विकल्प वेदाङ्गों के कल्प सूत्रों से सम्बद्ध हैं। जिसमें से आपस्तम्बगृह्यसूत्र का सम्बन्ध यजुर्वेद से है और गौतम धर्म सूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है।

16. ‘सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे’ इति भाष्यवार्तिके नित्यपर्यायवाची ‘सिद्ध’ शब्द एवोपात्तो, न त्वसन्दिग्धो ‘नित्य’ शब्दस्तत्र को हेतुः?

- (a) अवधारणार्थे ‘सिद्ध’ शब्दप्रयोगात्
(b) पूर्वपदलोप-परकस्य ‘सिद्ध’ शब्दस्य प्रयोगात्
(c) व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तेः ‘सिद्ध’ शब्दस्य नित्यार्थकत्वात्
(d) नित्यपर्यायिणः ‘सिद्ध’ शब्दस्य मङ्गलार्थत्वादपि

उत्तर (d)-पतञ्जलिमुनि विरचित ‘महाभाष्य’ में ‘सिद्धे शब्दार्थसम्बन्ध’ के विषय में भाष्यकार कहते हैं कि शब्द और उनके अर्थ के परस्पर सम्बन्ध के सिद्ध रहने पर नित्य रूप अर्थ पर्याय से ‘सिद्ध’ शब्द वाचक है। अतः नित्यपर्यायिणः सिद्ध शब्द मङ्गल रूप प्रयोजन के लिए हैं।

17. ‘वृत्तिसमवायार्थो वर्णानामुपदेशः’ इत्यत्र ‘समवाय’ शब्दस्य कोऽर्थः?

- (a) नित्यसम्बन्धः (b) समूहः
(c) वर्णानामानुपूर्व्येण सन्निवेशः (d) वृत्तिनियामकसम्बन्धः

उत्तर (c)- वृत्ति के लिए समवाय, अथवा जिसका फल वृत्ति है वह समवाय अथवा जिसका प्रयोजन वृत्ति है वह समवाय “वृत्ति समवाय” है। इसमें समवाय शब्द का अर्थ है वर्णों को किसी विशेष क्रम में रखना और वृत्ति शब्द का अर्थ शास्त्र की प्रवृत्ति है।

18. अधोलिखितप्रयोगेषु ‘इणः षीध्वं-लुङ् - लिट्’ धोऽङ्गात्’ इति भ्वादिगणीयसूत्रस्योदाहरणं किमस्ति?

- (a) एधध्वे (b) एधाञ्चकृद्वे
(c) एधिष्यध्वे (d) एधध्वम्

उत्तर (b)- यह प्रयोग तिङन्त - आत्मनेपदम् ‘एध्’ धातु के लिट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में ‘एधाञ्चकृद्वे’ यह रूप बनता है इसमें इष्णन्त अङ्ग से परे षीध्वम्, लुङ् और लिट् के धकार को ढकार हो तब एधाञ्चकृद्वे रूप सिद्ध होता है।

19. एषु शुद्धो मत्वर्थीयप्रयोगः कः?

- (a) विद्युद्वान् (b) विद्युद्मान्
(c) विद्युत्वान् (d) विद्युत्मान्

उत्तर (c)- प्रस्तुत सूत्र- “तद अस्याऽस्ति, अस्मिन्, इति मतुप् ।” के आधार पर विद्युत्वान् पद का यहाँ मत्वर्थीय प्रयोग किया गया है।

20. ‘वास्तव्यः’ इत्यत्र ‘वस्’ धातोः ‘तव्यत्’ प्रत्ययो भवति कस्मिन्नर्थे

- (a) कर्तरि (b) कर्मणि
(c) भावे (d) स्वार्थे

उत्तर (a)- वास्तव्यः -वस् धातु से “तव्यत्वयनीयरः सूत्र से तव्यत् प्रत्यय होकर वास्तव्यः रूप सिद्ध होता है तव्यत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में होता है एवं इसका प्रयोग धातुओं में होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

21. निम्नलिखितेषु शब्देषु अर्थसंकोचस्य उदाहरणं किमस्ति?

- (a) सिंहः (b) वृकः
(c) कुशलः (d) मृगः

उत्तर (d)- अर्थ परिवर्तन के तीन कारण हैं- (1) अर्थविस्तार (2) अर्थदिश (3) अर्थसंकोच।

इसमें से अर्थसंकोच का उदाहरण “मृगः” है।

अर्थविस्तार का उदाहरण “कुशलः” है।

अर्थदिश का उदाहरण “असुरः, देवानां प्रियः” है।

22. निम्नलिखितेषु को ध्वनिः महाप्राणो नास्ति?

- (a) ध् (b) भ्
(c) ह् (d) ङ्

उत्तर (d)- “वर्गाणां द्वितीय चतुर्थी शलश्चमहाप्राणाः अर्थात् - ख् घ् छ् ढ् थ् ध् फ् भ् श् ष् स् ह् ये वर्ण महाप्राण की श्रेणी में आते हैं और “वर्गाणां प्रथम, तृतीय पंचमाः यणश्चाल्पप्राणाः ये वर्ण अल्पप्राण संज्ञक हैं दिए गये विकल्पों में ‘ङ्’ महाप्राण नहीं है।

23. ऐश्वर्यम् कस्य लक्षणम् भवति?

- (a) रजोगुणस्य (b) सत्त्वगुणस्य
(c) तमोगुणस्य (d) पुरुषस्य

उत्तर (b) सांख्यदर्शन में प्रकृति की व्याख्या उसके तीन गुणों से की जाती जो न केवल प्रकृति में बल्कि प्रकृतिजन्य समस्त वस्तु में उपस्थित होते हैं। ये तीन गुण हैं- सत्त्व रजस् तथा तमस्। ये सूक्ष्म तथा अतीन्द्रिय हैं इसीलिए अनुमान के विषय हैं। सत्त्व गुण लघु अर्थात् हल्का होता है ऐश्वर्यम् इसी का लक्षण है।

24. वेदान्तसारानुसारं तितिक्षायाः किं लक्षणम् अस्ति?

- (a) विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः
(b) मोक्षेच्छा
(c) शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता
(d) जन्ममरणबन्धनात् मुक्तिः

उत्तर (c)- सदानन्द योगीन्द्र प्रणीत वेदान्तसार में साधनचतुष्टय चार है उसमें से शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान, श्रद्धा ये 6, शमादिक सट्टक हैं। उसमें से तितिक्षा का लक्षण इस प्रकार है- “शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता” अर्थात् जिसने शीत और उष्ण का सहन कर लिया हो।

25. ‘अथातो धर्मजिज्ञासा’ इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते?

- (a) ‘अर्थ’ शब्दः (b) ‘अतः’ शब्दः
(c) ‘धर्म’ शब्दः (d) ‘जिज्ञासा’ शब्दः

उत्तर (b)- भगवान् जैमिनि ने धर्म का ज्ञान कराने के लिए बारह अध्यायों वाले मीमांसा दर्शन को भली भाँति सोचकर धर्म विषयक जिज्ञासा को “अथातो धर्म जिज्ञासा” इस सूत्र द्वारा प्रतिपादित किया। इसमें वेदाध्ययन के दृष्ट प्रयोजन के रूप में ‘अर्थज्ञान’ को निश्चित किया गया है।

26. ‘आदित्यो यूपः’ इत्यत्र किंविधोऽर्थवादः ?

- (a) भूतार्थवादः (b) अनुवादः
(c) निषेधशेषः (d) गुणवादः

उत्तर (d)- “प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यं अर्थवादः” अर्थात् प्रशंसा अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं उसके दो भेद- (1) विधिशेष (2) निषेधशेष। पुनः तीन भेद होते हैं- (1) गुणवाद (2) अनुवाद (3) भूतार्थवाद। इसमें से आदित्योयूपः- गुणवाद का उदाहरण है।

27. ‘यदिहस्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्’ इति उक्तिः कस्य विषये?

- (a) योगवासिष्ठस्य (b) श्रीमद्भागवतस्य
(c) महाभारतस्य (d) मृच्छकटिकस्य

उत्तर (c)- यह उक्ति महाभारत के आदिपर्व से सम्बन्धित है। महाभारत के रचयिता कृष्णद्वैपायन (वेदव्यास) हैं यह 18 पर्वों में विभक्त है। इसके “भीष्मपर्व” से ‘भगवद्गीता उद्धृत है जिसमें 700 श्लोक हैं।

28. श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि वर्तते?

- (a) कर्ण-पर्वणि (b) भीष्म-पर्वणि
(c) भारद्वाजः (d) विश्वामित्रः

उत्तर (b)- महाभारत में 18 पर्व हैं- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहण। इनमें से ‘श्रीमद्भगवद्गीता’ का वर्णन भीष्मपर्व में है। इसमें 700 श्लोक हैं। इसमें कर्म की प्रधानता की बात कही गई है।

29. वाल्मीकिरामायणानुसारं दशरथस्य पुत्रेष्टियज्ञे पुरोहित आसीत् ?

- (a) वसिष्ठः (b) ऋष्यशृङ्गः
(c) भारद्वाजः (d) विश्वामित्रः

उत्तर (b)- महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में 7 काण्ड हैं और 24 हजार श्लोक हैं इसी लिए इसे “चतुर्विंशति साहस्री संहिता” भी कहते हैं। रामायण के अनुसार दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के पुरोहित “ऋष्यशृङ्गः” थे।

30. वाल्मीकिरामायणानुसारं शम्बूकः केन हतः ?

- (a) दशरथेन (b) रामेण
(c) परशुरामेण (d) भरतेन

उत्तर (b)- रामायण में शम्बूक बध का वर्णन सबसे पहले उत्तरकाण्ड के 73-76 सर्ग में मिलता है शम्बूक नामक शूद्र देवलोक पाने की इच्छा से तपस्या करता है जिससे एक ब्राह्मण की मृत्यु हो जाती है। जिस कारण राम शम्बूक के वधार्थ निकलते हैं और पञ्चवटी में उसका वध करते हैं।

31. महापुराणेषु न गण्यते-

- (a) एकाम्रपुराणम् (b) ब्रह्मपुराणम्
(c) लिङ्गपुराणम् (d) पद्मपुराणम्

उत्तर (a)- पुराणों की संख्या 18 है जो इस श्लोक में निहित है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।

अनापलिङ्गकूष्कानि पुराणानि प्रचक्षते ॥

इसमें से लिङ्ग, पद्म, एवं ब्रह्मपुराण तीनों महापुराण में आते हैं,

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

32. कौटिल्यानुसारं मानवाः कां विद्यां पृथक् न मन्यन्ते?

- (a) आन्वीक्षिकीम् (b) त्रयीम्
(c) वार्ताम् (d) दण्डनीतिम्

उत्तर (a)- कौटिल्य के अनुसार आन्वीक्षिकी को मनुष्य से पृथक् विद्या नहीं मानी जाती है। क्योंकि --“आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति अर्थात् आन्वीक्षिकी के अन्तर्गत ही त्रयी, वार्ता, और दण्डनीति सम्मिलित होती है। जिन्हें कहा गया है- “त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति मानवाः।” आन्वीक्षिकी का नाम तर्क विद्या भी है।

33. कौटिल्यानुसारं त्रयी के संवरणमात्रं मन्यन्ते?

- (a) मानसाः (b) मानवाः
(c) बार्हपत्याः (d) औशनसाः

उत्तर (c)- कौटिल्य के अनुसार त्रयी बार्हपत्या संवरणमात्रं मन्यन्ते।” क्योंकि - “संवरणमात्रं त्रयी लोकयात्राविद् इति।”

34. मनुसंहितानुसारं एषु किं ब्राह्मणस्य कर्म न भवति?

- (a) अध्यापनम् (b) प्रजारक्षणम्
(c) यजनम् (d) याजनम्

उत्तर (b)- मनुस्मृति में 12 अध्याय हैं। इसके प्रथम अध्याय में ब्राह्मणादि चारों वर्णों के कर्मों का विवेचन किया गया है। ब्राह्मण का लक्षण-

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।

दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

जबकि प्रजाओं की रक्षा करना दान देना यज्ञ करना, वेद पढ़ना आदि कर्म क्षत्रियों का है अतः स्पष्ट है कि प्रजा की रक्षा करना ब्राह्मण का कर्म नहीं है।

35. मनुसंहितानुसारं सचिवानां संख्या भवेत्-

- (a) 3-4 (b) 5-6
(c) 7-8 (d) 9-10

उत्तर (c)- मनुस्मृति के अनुसार अमात्य या सचिवों की संख्या 7-8 बतायी गयी है ये सचिव राजा द्वारा बताये गये कार्यों का पालन करते थे राजा का कर्तव्य था कि वह प्रजा को प्रसन्न रखे और उनकी सुख समृद्धि का उपाय करें।

36. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं रिक्ते स्थाने कः शब्दः उपयुक्तः - ‘दर्शने प्रत्यये दाने _____ विधीयते।’

- (a) व्यवहारः (b) प्रातिभाव्यम्
(c) ऋणादानम् (d) वाक्पारुष्यम्

उत्तर (b)- याज्ञवल्क्य स्मृति के रचयिता ऋषि याज्ञवल्क्य हैं यह तीन भागों में विभक्त है। (i) आचार (ii) व्यवहार (iii) प्रायश्चित् व्यवहार अध्याय में 25 प्रकरण हैं। “दर्शने प्रत्ययेदाने प्रातिभाव्यम् विधीयते” यहाँ प्रातिभाव्यम् का अर्थ जमानतदार होता है।

37. रघुवंशस्य चतुर्दशसर्गस्य नाम किम्?

- (a) सीतापवादः (b) सीतापरित्यागः
(c) श्रीराममनस्तापः (d) सीतावनवासः

उत्तर (b)- कालिदास विरचित ‘रघुवंशमहाकाव्यम् 19 सर्गों में विभक्त है इसमें कुल 1569 श्लोक हैं। जिसके प्रथम एवं द्वितीय सर्ग में दिलीप एवं सुदक्षिणा का वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचने एवं ऋषि के आदेशानुसार नन्दिनी की सेवाव्रत का वर्णन है छठवें सर्ग में इन्दुमती स्वयम्बर का वर्णन है एवं 14वें सर्ग में सीता के परित्याग का वर्णन है।

38. ‘अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी’ - हर्षचरिते इयमुक्तिर्भवति-

- (a) प्रभाकरवर्धनस्य (b) हर्षवर्धनस्य
(c) भण्डिनः (d) यशोमत्याः

उत्तर (a)- हर्षचरित के लेखक महाकवि बाणभट्ट हैं यह एक आख्यायिका ग्रन्थ है, यह 8 उच्छ्वासों में विभक्त है। ‘अतिदुर्धरो बान्धवस्नेहः सर्वप्रमाथी’ यह उक्ति प्रभाकरवर्धन से सम्बन्धित है।

39. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

- (a) अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य (i) उत्तररामचरितम् निन्दिष्यति ध्रुवम्
(b) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः (ii) कादम्बरी फलम्
(c) प्रभवति शुचिर्विम्बग्राहे (iii) रत्नावली मणिनं मृदादयः
(d) न हि क्षुद्रनिर्धातपातभिहता (iv) अभिज्ञानशाकुन्तलम् चलति वसुधा
- | | | | | |
|-----|-------|-------|-------|-------|
| | (a) | (b) | (c) | (d) |
| (A) | (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (B) | (iii) | (iv) | (i) | (ii) |
| (C) | (ii) | (iii) | (iv) | (i) |
| (D) | (iv) | (i) | (ii) | (iii) |

उत्तर (b)- इस युग्म में- अनङ्गोऽयमनङ्गत्वमद्य निन्दिष्यति ध्रुवम्’ यह सूक्ति रत्नावली नाटिका की है। उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तल की है। प्रभवति शुचिर्विम्बग्राहे मणिनं मृदादयः यह सूक्ति उत्तररामचरित की है। न हि क्षुद्रनिर्धातपातभिहता चलतिवसुधा- यह कादम्बरी कथामुख का वाक्य है।

40. ‘अखण्डेषु कारणेषु फलावचः’ -कस्य अलङ्कारस्य लक्षणम् ?

- (a) विशेषोक्तेः (b) विभावनायाः
(c) समासोक्तेः (d) वक्रोक्तेः

उत्तर (a)- आचार्य मम्मट द्वारा रचित काव्यप्रकाश के नवम् एवं दशम उल्लास में अलंकार का वर्णन है। विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः यह विशेषोक्ति अलंकार का लक्षण है जबकि “क्रियायाः प्रतिषेधे फलव्यक्तिर्विभावना” यह लक्षण विभावनालंकार का लक्षण है।

41. ‘शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं,

किमभिधानमसावकरोत्तपः।’ इत्यादि - श्लोकः ध्वन्यालोके उदाहरणरूपेण उल्लिखितः -

- (a) अविवक्षितवाच्य-प्रसङ्गे
(b) अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारप्रसङ्गे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (c) विवक्षितान्यपरवाच्य-प्रसङ्गे
(d) दीपकालङ्कारप्रसङ्गे

उत्तर (c)- शिखरिणि क्व नु नाम कियच्चिरं।

किमभिधानमसावकरोत्तपः ॥

ध्वन्यालोक के अनुसार ध्वनि के द्वितीय ध्वनि विवक्षितान्य पर वाच्य (अभिधामूला) ध्वनि का उदाहरण है। प्रथम लक्षणमूला कहलाती है।

42. कालक्रमानुसारं तालिकां चिनुत-

(i) अप्यदीक्षितः	(a) 800 ई. पू.
(ii) भरतः	(b) 200 ई. पू.
(iii) विश्वनाथकविराजः	(c) 1650 ई.
(iv) वामनः	(d) 1450 ई.
(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(ii)	(iv)	(iii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(i)	(ii)	(iv)

उत्तर (a)- कालक्रम के अनुसार- भरत, वामन, विश्वनाथ, कविराज, और अप्यदीक्षित।

समय विभाजन

भरत - 200 ई. पूर्व

वामन - लगभग 800 ई.

विश्वनाथ - 1450 ई.

अप्यदीक्षित - 1650 ई.

43. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहिताः विरमन्ति मध्याः ।' -मुद्राराक्षसे
कस्येयमुक्तिः?

- (a) विराधगुप्तस्य (b) चाणक्यस्य
(c) राक्षसस्य (d) चन्द्रगुप्तस्य

उत्तर (a)- प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।

प्रारभ्य विघ्नविहिताः विरमन्ति मध्याः॥

यह उक्ति विराधगुप्त की है। विशाखदत्त का मुद्राराक्षस सात अङ्कों का प्रसिद्ध नाटक है।

44. 'सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि
स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः ।'
इत्युक्तिः रत्नावल्यां केन सम्बद्धा?

- (a) उदयनेन (b) वसन्तकेन
(c) बाभ्रव्येण (d) यौगन्धरायणेन

उत्तर (d)- श्रीहर्ष विरचित 'रत्नावली' नाटिका में 4 अङ्क हैं इसमें मदन महोत्सव नामक प्रथम अङ्क में -

प्रारम्भेऽस्मिन् स्वामिनो वृद्धिहेतो

देवेनेत्यं दत्तहस्तावलम्बे।

सिद्धेर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि,

स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः ॥

यह उक्ति उदयन के प्रधानमन्त्री यौगन्धरायण की है।

45. दशरूपकानुसारं -

'बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् ।

ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते' इत्यादिलक्षणं भवति-

- (a) मुखसन्धेः (b) गर्भसन्धेः
(c) निर्वहणसन्धेः (d) प्रतिमुखसन्धेः

उत्तर (c)- आचार्य धनञ्जय विरचित 'दशरूपकम्' नामक लक्षण ग्रन्थ में 4 प्रकाश हैं। उसमें 5 अर्थप्रकृतियों, 5 कार्यावस्थाओं से उत्पन्न 5 सन्धियाँ होती हैं- मुख, प्रतिमुख, गर्भ विमर्श, निर्वहण। इसमें से निर्वहण सन्धि का लक्षण इस प्रकार है-

बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम् ।

ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत् ॥-(दशरूपक)

46. 'प्रशंसात उन्मुखीकरणं' दशरूपके कस्य लक्षणं भवति?

- (a) भारत्याः (b) वीथ्याः
(c) प्ररोचनायाः (d) प्रहसनस्य

उत्तर (c)- 'दशरूपकम्' नामक लक्षण ग्रन्थ के तृतीय प्रकाश में नट द्वारा किया गया वाचिक व्यापार भारती वृत्ति कहलाता है इसके 4 अङ्ग हैं- (1) प्ररोचना (2) वीथी (3) प्रहसन (4) आमुख जिसमें प्ररोचना का लक्षण- उन्मुखीकरणम् तत्र प्रशंसात प्ररोचना। उनमें प्रशंसा के द्वारा (श्रोताओं को) उन्मुख करना प्ररोचना है।

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'परमाणुष्वेव पाको, न
द्वयणुकादावपी'ति केषाम्मते?

- (a) नैयायिकानाम् (b) वैशेषिकानाम्
(c) साङ्ख्यानानाम् (d) वेदान्तानाम्

उत्तर (b)- परमाणुष्वेव पाको, न द्वयणुकादावपी 'ति वैशेषिकानाम्।
नोट- वैशेषिक को औलूक्य दर्शन भी कहा जाता है वैशेषिक के ऋषि कणाद हैं। ऋषि का नाम कणाद इसलिए पड़ा क्योंकि वे कण भक्षण करते थे।

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्ममात्रविशेष-गुणेषु कस्य
परिगणनं नास्ति?

- (a) बुद्धेः
(b) इच्छायाः
(c) स्थिति-स्थापकसंस्कारस्य
(d) धर्मस्य

उत्तर (c)- वैशेषिकदर्शन में सप्त पदार्थ हैं-

द्रव्यगुणकर्मसामान्य विशेषसमवायाः सप्त पदार्थाः उनमें से गुणों की संख्या 24 है- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म संस्कार है। जिसमें विकल्प (c) स्थिति-स्थापक संस्कार की विवेचना नहीं है।

49. तर्कभाषानुसारं प्रमायाः करणं किम्भवति?

- (a) प्रमाता (b) प्रमेयम्
(c) तर्कः (d) इन्द्रियसंयोगादिः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d)- तर्कभाषा के अनुसार इन्द्रियसंयोगादि ही प्रमा का कारण होती है। करण व्यापारवत् होता है करण को निम्न रूप में दर्शाते हैं।

करण	अवान्तर व्यापार	फल
इन्द्रिय	इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष	निर्विकल्पक प्रमा
इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष	निर्विकल्पक प्रमा	सविकल्पक ज्ञान
निर्विकल्पक ज्ञान	सविकल्पक	हानोपादानं पेक्षा बुद्धि

50. 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः' किमुच्यते?

- (a) पक्षता (b) सपक्षः
(c) परामर्शः (d) व्याप्तिः

उत्तर (c)- 'व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः' ऐसा परामर्श ज्ञान है। व्याप्ति वह है जैसे- यत्र यत्र धूम तत्र तत्र अग्नि अर्थात् जहाँ जहाँ धूम होता है वहाँ वहाँ अग्नि होती है। जैसे -महानस। इसी तरह पक्षधर्मता सन्दिग्ध साध्यवान् पक्षः और साध्यसंशय रूपा पक्षता।

51. 'मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रव भानुं विदधे पुरुत्रा' इति मन्त्रांशो वर्तते-

- (a) उषसूक्ते (b) कालसूक्ते
(c) वरुणसूक्ते (d) पर्जन्यसूक्ते

उत्तर (a)- उषस् सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 61वाँ सूक्त है, इसके देवता उषा, ऋषि विश्वामित्र हैं और छन्द त्रिष्टुप् है। इसके अन्य नाम भी प्रचलित हैं मघोनि, विश्वावारा पुराणी युवती। यह मन्त्र ऋतस्त षुध्न उषसामिषध्न्यन, वृषा मही रोदसी आ विवेश। मही मित्रस्य वरुणस्य माया, चन्द्रेव भानुं विदधे पुरुत्रा। उषस् सूक्त से सम्बन्धित है।

52. ऋग्वेदीय- पर्जन्यसूक्तस्य कः ऋषिरस्ति?

- (a) विश्वामित्रः (b) गौतमः
(c) अत्रिः (d) कण्वः

उत्तर (c)- पर्जन्य सूक्त ऋग्वेद के पाँचवे मण्डल का 83वाँ सूक्त है, इसके देवता पर्जन्य और ऋषि अत्रि हैं, छन्द त्रिष्टुप् है। पर्जन्य को जल रूपी वर्षा करने वाले मेघ के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है। इसकी प्रसिद्ध सूक्ति- 'प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम्' है।

53. यजुर्वेदीय - शिवसंकल्पमन्त्राणं का देवता?

- (a) मनस् (b) शिवः
(c) संकल्पः (d) विष्णुः

उत्तर (a)- 'शिवसंकल्पसूक्त' शुक्लयजुर्वेद के 34वाँ अध्याय का 1-6 मन्त्र है। इस सूक्त के ऋषि याज्ञवल्क्य एवं देवता मन तथा छन्द त्रिष्टुप् है। इसके प्रत्येक मन्त्र का अन्तिम चरण- तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु है। जिसका अर्थ है -मन की संकल्पना शुभ व पवित्रमय हो।

54. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्त-संज्ञका के सन्ति?

- (a) कण्ठ्यवर्णाः (b) अयोगवाहाः
(c) निरनुनासिकवर्णाः (d) अनुनासिकवर्णाः

उत्तर (d)- ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार रक्तसंज्ञक वर्ण 5 माने गये हैं- ड, ज, ण, न, म्। इसे 'रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः' इस सूत्र से परिभाषित किया जाता है। प्रातिशाख्य के अनुसार समान अक्षरों की संख्या 8 बतायी गई है और सन्ध्य अक्षरों की संख्या 4 है।

55. 'तिस्र एव देवताः' इति कथनमस्ति-

- (a) निरुक्ते दैवतकाण्डे
(b) ऋक्प्रातिशाख्ये
(c) निरुक्ते द्वितीयेऽध्याये
(d) अथर्ववेदे राष्ट्रभिर्वर्धनसूक्ते

उत्तर (a)- यास्काचार्य विरचित निरुक्त में 12 अध्याय एवं तीन काण्ड हैं- (1) नैघण्टुक (2) नैगम (3) दैवत उसमें से दैवत काण्ड में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है-

- (i) अन्तरिक्ष स्थानीय - इन्द्र, रुद्र, वायु
(ii) पृथ्वीस्थानीय - पृथ्वी, सोम, अग्नि
(iii) द्युस्थानीय - वरुण, मित्र, विष्णु, सवित्र

56. जन्मादयो विकाराः ब्राह्मणः कां शक्तिमुपाश्रिताः भवन्ति?

- (a) आवरणशक्तिम् (b) आध्यात्मिकी शक्तिम्
(c) कालशक्तिम् (d) भिन्नात्मिका शक्तिम्

उत्तर (c)- जन्म आदि विकारों से सम्बन्धित शक्ति जो कि ब्राह्मणों की उपाश्रिता (उपासना) के योग्य होती है वह शक्ति कालशक्ति कहलाती है क्योंकि कालशक्ति के अन्तर्गत ब्राह्मणों के जन्म आदि विकारों को बताया गया है।

57. अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति।

छन्दस्यश्छन्दसां यौनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम् ॥

अस्यां कारिकायाम् 'छन्दस्यः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः?

- (a) वेदार्थग्रहणसमर्थः
(b) स्वतन्त्रः
(c) वैदिकछन्दसां निर्माता
(d) वैदिकछन्दसां प्रयोगे निष्णातः

उत्तर (a)- अत्रातीतविपर्यासः केवलामनुपश्यति

छन्दस्यश्छन्दसां यौनिमात्मा छन्दोमयीं तनुम् । इस कारिका में छन्दस्यश्छन्दसां पद के अनुसार छन्दस्य का अर्थ वेद के अर्थ को ग्रहण करने में समर्थ से है।

58. स्फोटः भेदवान् कथं प्रतीयते?

- (a) भिन्नद्रव्यानाम् अभिव्यक्तिसाधनात्
(b) भिन्नोच्चारणात्
(c) भिन्नार्थेषु प्रयोगात्
(d) नादस्य क्रमजन्मत्वात्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d)- स्फोटः भेदवान् नादस्य क्रमजन्मत्वात् प्रतीयते अर्थात् स्फोटवाद के अनुसार स्फोट (ध्वनि) नाद का क्रमशः पैदा होना है अर्थात् नाद के अनुसार ही क्रमशः स्फोट ध्वनित होता है।

59. एषूदाहरणेषु वैषयिकाधारस्योदाहरणं किमस्ति?

- (a) मोक्षे इच्छाऽस्ति (b) कटे आस्ते
(c) स्थाल्यां पचति (d) सर्वस्मिन्नात्मास्ति

उत्तर (a)- मोक्षे इच्छाऽस्ति यह वैषयिक आधार का उदाहरण है आधार तीन प्रकार के होते हैं-

(1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक (3) अभिव्यापक

उसमें औपश्लेषिक का उदाहरण - कटे आस्ते

वैषयिक का उदाहरण - मोक्षे इच्छास्ति

अभिव्यापक का उदाहरण - तिलेषु तैलम्

60. पाणिनीयशिक्षानुसारम् उदात्तस्वरोच्चारणकाले हस्तः कुत्र निधेयः?

- (a) हृदि (b) कर्णमूले
(c) सर्वास्ये (d) मूर्ध्नि

उत्तर (d)- पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उदात्त स्वर का उच्चारण करते समय हाथ को सिर तक ले जाया जाता है जबकि अनुदात्त स्वर में उच्चारण करते समय हाथ को कान तक ले जाया जाता है।

61. व्यासभाष्यानुसारेण का उक्तिः सत्या?

- (a) चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्
(b) चित्तवृत्तीनां निरोधः असाध्यः
(c) सर्ववृत्तिनिरोधे सम्प्रज्ञातः समाधिः
(d) चित्तवृत्तिबोधे पुरुषस्य अनादिः सम्बन्धः न हेतुः

उत्तर (a)- योगसूत्र (व्यासभाष्यम्) योग दर्शन का मूल ग्रन्थ है इसके लेखक पतञ्जलि हैं। पतञ्जलि के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् चित्त वृत्तियों को चञ्चल होने से रोकना ही योग है। दिए गये विकल्पों में से विकल्प (a) सही उत्तर है।

62. ब्रह्मसूत्रस्य रचयिता कोऽस्ति?

- (a) शङ्कराचार्यः (b) बादरायणः
(c) कपिलः (d) सदानन्दः

उत्तर (b)- प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत ' ब्रह्मसूत्र (वेदान्तसूत्र) वेदान्तशास्त्र (गीता) एवं उपनिषद् आते हैं। इसमें से ब्रह्मसूत्र के लेखक बादरायण हैं और शंकराचार्य ने इस सूत्र पर भाष्य लिखा है। इसमें ब्रह्म जिज्ञासा के लिए प्रचलित सूत्र- "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" है।

63. शब्दप्रमाणस्य फलं किम्भवति?

- (a) पदज्ञानम्
(b) वाक्यार्थज्ञानम्
(c) शक्तिज्ञानम्
(d) पदजन्यपदार्थस्मरणम्

उत्तर (b)- न्याय दर्शन में चार प्रमाणों की चर्चा की गई है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द ।

आप्त का वाक्य शब्द प्रमाण कहलाता है जैसा पदार्थ वैसा ही उपदेश करने वाला पुरुष आप्त कहा जाता है अतः स्पष्ट है कि शब्द प्रमाण का फल वाक्य के अर्थ ज्ञान से सम्भव है।

64. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ क उदाहृतः?

- (a) विरुद्धः (b) बाधः
(c) अनैकान्तिकः (d) सत्प्रतिपक्षः

उत्तर (b)- न्यायसिद्धान्त मुक्तावली में हेत्वाभास 5 प्रकार के बताये गये हैं- (i) असिद्ध (ii) विरुद्ध (iii) अनैकान्तिक (iv) प्रकरणसम (v) कालात्ययोपदिष्ट ।

उसमें से- साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाधोदाहृतः। अर्थात् साध्य के अभाव पक्ष में बाध हो। उदाहरण- "पन्हिरनुष्णो द्रव्यत्वात् घटवत्" यहाँ अनुष्णत्व साध्य है।

65. बौद्धदर्शने भावनाचतुष्टये किं नोपदिष्टम्

- (a) सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्
(b) स्वलक्षणम् स्वलक्षणम्
(c) सामान्यम् सामान्यम्
(d) शून्यं शून्यम्

उत्तर (c)- बौद्ध मतानुसार भावना चतुष्टय को परम् पुरुषार्थ कहते हैं, ये चार इस प्रकार हैं-

- (i) सर्वं क्षणिकं-क्षणिकम्
(ii) सर्वं दुःखं- दुःखम्
(iii) सर्वलक्षणं- स्वलक्षणं
(iv) सर्वशून्यं-शून्यम्

सामान्यं सामान्यम् का उल्लेख इसमें नहीं है।

66. 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान् ।' पण्डितराजजगन्नाथेन कस्य काव्यस्य उदाहरणरूपे उद्धृतोऽयं श्लोकः?

- (a) अधमस्य (b) उत्तमोत्तमस्य
(c) उत्तमस्य (d) मध्यमस्य

उत्तर (b)- आचार्य पण्डितराजजगन्नाथ अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसगङ्गाधर' में काव्य के चार भेद किए हैं- (1) उत्तमोत्तम् (2) उत्तम् (3) मध्यम् (4) अधम्।

इसमें से उत्तमोत्तम् काव्य का उदाहरण-

शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफली कर्तुमहो मनोरथान् ।

दयिता दयिताननाम्बुजं द्रमीलन्नयना निरीक्षते ॥

67. 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्' इति यायावरीयः । उक्तिरियं कुत्रस्ति?

- (a) नाट्यशास्त्रे (b) काव्यप्रकाशे
(c) काव्यमीमांसायाम् (d) वक्रोक्तिजीविते

उत्तर (c)- 'उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्' यह उक्ति राजशेखर के काव्यमीमांसा की है। काव्यमीमांसा 18 अधिकरणों में विभक्त है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

68. वक्रोक्तिजीवितानुसारं कविव्यापारवक्रत्वप्रकाराः कति सम्भवन्ति

- (a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) षट्

उत्तर (d)- आचार्य कुन्तक कृत “वक्रोक्तिजीवित” नामक लक्षण ग्रन्थ में कवि व्यापार वक्रता के 6 प्रकार प्रदर्शित किए गये हैं।

- (1) वर्ण विन्यासवक्रता
(2) पदपूर्वाद्धवक्रता
(3) पद पराद्धवक्रता
(4) वाक्यवक्रता
(5) प्रबन्ध वक्रता
(6) प्रकरण वक्रता।

69. काव्यप्रकाशानुसारं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् आह्लादकत्वं कस्य?

- (a) माधुर्यस्य (b) ओजसः
(c) प्रसादस्य (d) समतायाः

उत्तर (a)- आचार्य मम्मट विरचित काव्यप्रकाश के आठवें उल्लास में काव्य गुणों का विस्तार से विवेचन है उसमें तीन गुणों की बात कही गई है- माधुर्य, ओज और प्रसाद।

उसमें से माधुर्य गुण का लक्षण- आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् । अर्थात् चित्त के द्रवीभूत कारण और शृङ्गार में रहने वाला जो आह्लादस्वरूप है वह माधुर्य नामक गुण है।

70. पण्डितराजजगन्नाथमते काव्यस्य कति भेदाः स्वीकृताः?

- (a) त्रयः (b) द्वौ
(c) चत्वारः (d) पञ्च

उत्तर (c)- आचार्य पण्डितराजजगन्नाथ ने अपने लक्षण ग्रन्थ में काव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है- “रमणीयार्थं प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् और उन्होंने काव्य के 4 भेद किए हैं-

- (1) उत्तमोत्तम्
(2) उत्तम्
(3) मध्यम्
(4) अधम्

अधम काव्य का उदाहरण-

मित्रातिपुत्रनेत्राय त्रयीशतवंशत्रये।

गोत्रात्रिगोत्रजत्राय गोत्रो ते नमो नमः॥

71. ब्राह्मीलिपेः उद्वाचने प्रथमाम् सफलतां कः प्राप्तवान् ?

- (a) मैक्समूलरः
(b) विलियम जोन्सः
(c) जेम्स प्रिंसेपः
(d) व्हिटने

उत्तर (c)- जेम्स प्रिंसेप ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक अधिकारी थे उसने 1838 में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने में सफलता पाई और प्रिंसेप ने अभिलेखों एवं सिक्कों पर पियदस्सी अर्थात् सुन्दर आकृति वाले राजा का नाम लिखा है कुछ अभिलेखों में राजा अशोक का नाम अंकित है।

72. अशोकस्य शिलालेखानां भाषा का अस्ति?

- (a) प्राकृतम् (b) संस्कृतम्
(c) अपभ्रंशः (d) अवेस्ता

उत्तर (a)- अशोक के शिलालेखों में प्राकृत भाषा का प्रयोग है इसमें 14 बृहद् शिलालेख, लघु शिलालेख, स्तम्भ शिलालेख एवं लघु स्तम्भ शिलालेख का वर्णन मिलता है। क्योंकि प्राकृत भाषा उस समय जन मानस में प्रचलित थी।

73. कुत्र अशोकस्य नाम प्रदत्तम् ?

- (a) मास्क -शिलालेखे
(b) प्रयाग-स्तम्भ-लेखे
(c) गिरनार - शिलालेखे
(d) कान्धार-द्विभाषी-शिलालेखे

उत्तर (a)- कर्नाटक में मास्क नामक स्थान पर मास्की शिलालेख स्थित है। इसी शिलालेख में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख मिलता है इसके अतिरिक्त गुर्जरा (मध्य प्रदेश) से प्राप्त लेखों में भी अशोक का नाम मिलता है अन्य अभिलेखों में अशोक को ‘प्रियदर्शी’ राजा कहा गया है।

74. गिरनारस्य तडागेन सम्बद्धो नासीत् -

- (a) चन्द्रगुप्तः मौर्यः
(b) अशोकः मौर्यः
(c) कनिष्कः कुषाणः
(d) रुद्रदामनः शकः

उत्तर (c)- मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने गिरनार तडाग की स्थापना की। जिसे शकों का प्रतापी शासक रुद्र दामन प्रथम ने गुजरात के काठियावाड़ में सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया इसने ही संस्कृत में सर्वप्रथम लम्बा अभिलेख (गिरनार अभिलेख) जारी किया। मौर्य सम्राट का 14 शिलालेख अंकित है, कनिष्क का सम्बन्ध गिरनार से नहीं है।

75. अत्र वर्तते कालिदासस्य नामोल्लेखः -

- (a) तन्तुवाय -श्रेण्याः मन्दसौर -शिलालेखे
(b) प्रभावतीगुप्तायाः पूना- ताम्रपट्ट-लेखे
(c) पुलकेशनद्वितीयस्य एहोल- शिलालेखे
(d) मिहिरभोजस्य ग्वालियर-शिलालेखे

उत्तर (c)- पुलकेशन द्वितीय के एहोल अभिलेख में कालिदास के नाम का उल्लेख उसके समकालीन कवि रविकीर्ति द्वारा लिखित प्रशस्ति से प्राप्त होती है रविकीर्ति की तुलना कालिदास से की गई है। पुलकेशन ने “श्री पृथ्वीवल्लभ सत्याश्रय की उपाधि से अपने को विभूषित किया यहीं पर कालिदास का नाम उल्लिखित है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जनवरी-2017

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains fifty (50) objective type questions of two (2) marks each.... All questions are compulsory

सूचना : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहु-विकल्पीयाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येक प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते।

सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।

1. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

- (a) द्यावाचिदस्मै पृथिवी नमेते। - अग्निदेवता
(b) यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोम। - सोमसूक्तम्
(c) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीवीदिवि.....। - रुद्रदेवता
(d) ता वां वस्तून्नुश्मसि गमध्वै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः। - विष्णुसूक्तम्

उत्तर (d)- अधोलिखित में से सही विकल्प- “ता वां वस्तून्नुश्मसि गमध्वै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः”। यह विष्णुसूक्त से सम्बद्ध है। विष्णु द्युस्थानीय देवता हैं। मात्र 6 सूक्तों में इनकी स्तुति की गई है।

2. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

- (A) पुराणि देवि युवति पुरन्धिरनु (i) इन्द्रसूक्त
व्रतं चरसि विश्ववारे ...
(B) स नः पितेव सूनवेऽग्ने (ii) विष्णुसूक्तम्
सूपायनो भव
(C) यः पृथिवीं व्यथमानामदृहयः (iii) उषसूक्तम्
पर्वतान्प्रकुपितो अरम्णात्...
(D) तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां (iv) अग्निसूक्तम्
नरो यत्र देवयवो मदन्ति

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b) (iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c) (i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d) (ii)	(iv)	(i)	(iii)

उत्तर (a)- सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है- पुराणि देवि युवति पुरन्धिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे- उषस् सूक्तम्। स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव- अग्निसूक्तम्। यः पृथिवी व्यथमानामदृहयः पर्वतान्प्रकुपितो अरम्णात् - इन्द्र सूक्तम्। तदस्य प्रियमभिपाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति - विष्णुसूक्तम्।

3. “नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः” इति मन्त्रांशो वर्तते-

- (a) विश्वामित्र - नदीसूक्ते (b) सरमा - पणिसूक्ते
(c) यम - यमीसूक्ते (d) पुरुरवा - उर्वशीसूक्ते

उत्तर (b)- “नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः” यह मन्त्र ऋग्वेद के सरमा -पणि सूक्त का है यह ऋग्वेद के दशम मण्डल का 108 वाँ सूक्त (10/108) है। इसके ऋषि पणि-सरमा एवं देवता-सरमा पणि हैं तथा छन्द त्रिष्टुप् है।

4. “को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्” इति मन्त्रांशो वर्तते-

- (a) सरमा - पणिसूक्ते (b) विश्वामित्र- नदीसूक्ते
(c) पुरुरवा - उर्वशीसूक्ते (d) यम - यमीसूक्ते

उत्तर (c)- “को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्” यह मन्त्रांश पुरुरवा उर्वशी (10/95वाँ सूक्त) से सम्बद्ध है इसके ऋषि पुरुरवा उर्वशी हैं। इसमें छन्द त्रिष्टुप् है।

5. अधस्तनेषु सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति -

- (a) शांखायनब्राह्मणम् (b) कौषीतकिब्राह्मणम्
(c) षड्विंशब्राह्मणम् (d) तैत्तिरीयब्राह्मणम्

उत्तर (c)- सामवेद में 9 ब्राह्मण ग्रन्थों की चर्चा की गई है उसमें से सामवेद के ब्राह्मण षड्विंश हैं इसमें 26 अध्याय हैं यह वास्तव में पञ्चविंश (ताड्य) ब्राह्मण का परिशिष्ट ही है।

6. “अन्धंतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते/ ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः” सन्दर्भोऽयं वर्तते-

- (a) कठोपनिषदि (b) ईशोपनिषदि
(c) श्वेताश्वतरोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर (b)- अन्धंतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ।। यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के 40 वें अध्याय (‘ईशावास्योपनिषद्’) का है।

7. “सृष्टयुत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः” इति कः स्वीकरोति?

- (a) मेक्डानलः (b) मैक्समूलरः
(c) एम. विन्टरनिट्जः (d) महर्षिदयानन्दः

उत्तर (d)- “सृष्टयुत्पत्तिकाल एव वेदानामुत्पत्तिकालः” यह महर्षि दयानन्द स्वीकार करते हैं। अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति के समय ही वेदों की उत्पत्ति हुई। ऐसा महर्षि दयानन्द स्वीकार करते हैं। इन्होंने सर्वप्रथम शुक्लयजुर्वेद संहिता पर भाष्य लिखा तत्पश्चात् ऋग्वेद संहिता पर भाष्य लिखा।

8. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(A) कात्यायनशुल्बसूत्रम्	(i) व्याकरणम्
(B) त्रिमुनि	(ii) कृष्णयजुर्वेदः
(C) ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम्	(iii) शुक्लयजुर्वेदः
(D) आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्	(iv) सामवेदः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (ii)	(i)	(iii)	(iv)
(b) (iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c) (i)	(iii)	(i)	(iv)
(d) (ii)	(i)	(iv)	(iii)

उत्तर (b) - समुचित तालिका इस प्रकार है-

कात्यायनशुल्बसूत्रम् -	शुक्लयजुर्वेदः
त्रिमुनि -	व्याकरणम्
ऋक्तन्त्रप्रातिशाख्यम् -	सामवेदः
आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् -	कृष्णयजुर्वेदः

9. वेदानां विकृतिपाठः कतिविधः?

(a) त्रिविधः	(b) पञ्चविधः
(c) अष्टविधः	(d) नवविधः

उत्तर (c) - वेदों में आठ प्रकार की विकृतियाँ बताई गई हैं।

जटा माला शिखा रेखा।

ध्वजो दण्डो रथः घनः॥

ये विकृतियाँ निम्न हैं- जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन। इनमें से घनपाठ सबसे कठिन होता है।

10. द्विविधो विभाजनक्रमो वर्तते -

(a) अथर्ववेदस्य	(b) ऋग्वेदस्य
(c) ईशोपनिषदः	(d) कठोपनिषदः

उत्तर (b)- ऋग्वेद का दो प्रकार से विभाजन किया गया है-

ऋग्वेद	
(1) मण्डल क्रम	(2) अष्टक क्रम
10 मण्डल 85 अनुवाक	8 अष्टक 64 अध्याय
10 17 सूक्त 10580 $\frac{1}{4}$ मन्त्र	2006 वर्ग 10580 $\frac{1}{2}$ मन्त्र

11. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः समुपलभ्यन्ते?

(a) 4	(b) 3
(c) 5	(d) 2

उत्तर (d) शुक्लयजुर्वेद की दो शाखा प्राप्त होती है (1) वाजसनेयी या माध्यन्दिन और (2) काण्व शाखा। जबकि कृष्णयजुर्वेद पर प्राप्त होने वाली शाखा -तैत्तिरीय, कठ, मैत्रायणी, कपिष्ठल हैं। सामवेद की शाखा-जैमिनीय है, अथर्ववेद की शाखा- पिप्पलाद और शौनक है।

12. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत-

(a) पिङ्गलः	(i) ज्योतिषम्
(b) शुल्बसूत्राणि	(ii) निरुक्तम्
(c) लगधः	(iii) छन्दः शास्त्रम्
(d) तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य	(iv) कल्पः
- कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च

(a)	(b)	(c)	(d)
(A) (i)	(iii)	(iv)	(ii)
(B) (iii)	(i)	(ii)	(iv)
(C) (ii)	(iv)	(iii)	(i)
(D) (iii)	(iv)	(i)	(ii)

उत्तर (d)- समुचित तालिका इस प्रकार है-

पिङ्गलः	-	छन्दशास्त्रम्
शुल्बसूत्राणि	-	कल्पः
लगधः	-	ज्योतिषम्
तदिदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य	-	निरुक्तम्
कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च		

13. महत् किमस्ति?

(a) प्रकृतिः	(b) विकृतिः
(c) प्रकृतिविकृती	(d) न प्रकृतिः न विकृतिः

उत्तर (c) सांख्य के मतानुसार महत् (बुद्धि) प्रकृति (कारण) और विकृति (कार्य) दोनों हैं जैसा कि कारिका से स्पष्ट है

मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥

14. 'तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्' लक्षणमिदं कस्य विद्यते?

(a) शब्दप्रमाणस्य	(b) अनुमानप्रमाणस्य
(c) प्रत्यक्षप्रमाणस्य	(d) उपमानप्रमाणस्य

उत्तर (b) सांख्यमत में अनुमान के स्वरूप "लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम् ज्ञानं अनुमानम्" किया गया है, वह अनुमान पूर्ववत्, शेषवत् और सामान्यतोदृष्ट इस रूप से तीन प्रकार का होता है।

15. व्यक्तं कीदृग् न भवति?

(a) हेतुमत्	(b) अव्यापि
(c) अनाश्रितम्	(d) सावयवम्

उत्तर (c) सांख्यानानुसार व्यक्त (16 पदार्थ) अनाश्रित नहीं होते हैं अर्थात् व्यक्त आश्रित होते हैं क्योंकि अहंकार से उत्पन्न 16 पदार्थ 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 तन्मात्राएँ और मन ये कार्यभूत पदार्थ हैं।

16. "तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः" (-) वेदान्तसारानुसारं लक्षणमिदं कस्यास्ति?

(a) अधिकारिणः	(b) विषयस्य
(c) सम्बन्धस्य	(d) प्रयोजनस्य

उत्तर (c) "सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावलक्षणः।" अर्थात् जीव और ब्रह्म के ऐक्य रूप प्रमेय और उसका प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् रूप प्रमाण का परस्पर बोध्यबोधक भाव ही इस शास्त्र का सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध का लक्षण है।

17. 'समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति' उक्तिरियं वेदान्तसारे कस्य सन्दर्भेऽस्ति?

(a) विद्यायाः	(b) अज्ञानस्य
(c) अध्यारोपस्य	(d) समाधेः

उत्तर (b)- वेदान्तसार में अज्ञान के सन्दर्भ में यह कहा गया है कि यह अज्ञान समष्टि समूह (समुदाय) और व्यष्टि के अभिप्राय से क्रमशः एक और अनेक कहा गया है। जैसे वृक्षों के समूह से वन आदि अभिप्राय है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

18. अज्ञानोपहितं चैतन्यं कीदृशं कारणं भवति?

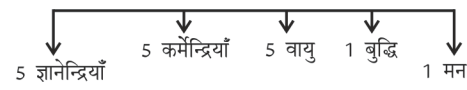
- (a) निमित्तकारणम्
- (b) उपादानकारणम्
- (c) निमित्तकारणम् उपादानकारणम् च
- (d) कीदृशमपि कारणम् न

उत्तर (c)- वेदान्तसार में अज्ञान से उपहित चैतन्य का कारण निमित्त कारण और उपादानकारण है। (अर्थात् ईश्वर) अपनी चैतन्यता की प्रधानता से जगत् का निमित्त कारण एवं अपनी उपाधि (अज्ञान) की प्रधानता से उपादान कारण है।

19. वेदान्तसारानुसारं सूक्ष्मशरीराणि कति-अवयवानि भवन्ति?

- (a) षोडशावयवानि
- (b) पञ्चदशावयवानि
- (c) सप्तदशावयवानि
- (d) त्रयोदशावयवानि

उत्तर (c)- वेदान्तसार में सूक्ष्मशरीर के 17 अवयव हैं।



20. तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं कतिविधम्?

- (a) पञ्चविधम्
- (b) सप्तविधम्
- (c) षड्विधम्
- (d) नवविधम्

उत्तर (b)- तर्कसङ्ग्रहानुसारं रूपं सप्त विधम्। तर्कसङ्ग्रह के अनुसार गुण का लक्षण एवं भेद- चक्षु मात्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण रूप है। यह शुक्ल, नील, पीत, हरित, कपित, तिक्त, रक्त के भेद से 7 प्रकार का होता है।

21. 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादिपदसमुदायः प्रमाणं कथं न भवति?

- (a) योग्यताविरहात्
- (b) आकाङ्क्षाविरहात्
- (c) सन्निध्याभावात्
- (d) पदसमूहाभावात्

उत्तर (b)- अन्नंभट्ट प्रणीत तर्कसङ्ग्रह में चौथे प्रमाण शब्द प्रमाण में वाक्यार्थ ज्ञान के तीन हेतु आकाङ्क्षा योग्यता, और सन्निधि है। उसमें गौरश्वः पुरुषो हस्ती इसमें कोई आकाङ्क्षा न होने के कारण यह प्रमाण नहीं है।

22. असाधारणधर्मः कस्य लक्षणम्?

- (a) लक्षणस्य
- (b) उद्देशस्य
- (c) परीक्षायाः
- (d) आत्मनः

उत्तर (a)- तर्कभाषाकार के अनुसार लक्षण का लक्षण असाधारणधर्मवचनम् है। यदि यहाँ केवल "धर्मवचनं लक्षणम्" इतना कहा जाता "असाधारण" विशेषण का ग्रहण न किया जाता तो यह लक्षण सजातीय तथा विजातीय पदार्थों की व्यावृत्ति न कर सकता और न ही व्यवहार का निमित्त होता है।

23. तर्कभाषायां 'प्रकरणसम्' हेत्वाभासस्य काऽपरा सज्जा?

- (a) बाधितविषयः
- (b) सत्प्रतिपक्षः
- (c) सव्यभिचारः
- (d) अनुपसंहारी

उत्तर (b)- तर्कभाषा में पाँच प्रकार का हेत्वाभास बताया गया है- उसमें से प्रकरणसम् हेत्वाभास का एक नाम सत्प्रतिपक्ष भी है इसका लक्षण "विरुद्धयोः परामर्शो हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता"। यथा- "शब्दोनित्यः कार्यत्वात् घटवत्"।

24. तर्कभाषानुसारं समवायिकारणं किम्भवति?

- (a) गुणः
- (b) द्रव्यम्
- (c) कर्म
- (d) सामान्यम्

उत्तर (b)- तर्कभाषा के अनुसार तीन प्रकार के कारण माने गये हैं- समवायी, असमवायी, एवं निमित्त कारण। इसमें 'तत्र यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' यथा-तन्तु पट के प्रति समवायिकारण है। यह द्रव्य में होता है।

25. 'पठति' इति क्रियापदं कोदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति?

- (a) अयोगात्मिकायाः
- (b) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः
- (c) श्लिष्टयोगात्मिकायाः
- (d) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः

उत्तर (c)- पठति यह क्रिया पद संस्कृत भाषा का भू धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है संस्कृत भाषा श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। श्लिष्टयोगात्मक संस्कृत भाषा में प्रकृति प्रत्यय का संयोग होता है।

26. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा अस्ति?

- (a) भारोपीय-परिवारस्य
- (b) सेमेटिक-परिवारस्य
- (c) सूडानी-परिवारस्य
- (d) काकेशी-परिवारस्य

उत्तर (a)- ग्रीक भाषा भारोपीय भाषा परिवार की विशेषता है इस परिवार की दो मुख्य शाखाएँ हैं- (1) भारोपियन शाखा (2) भारत ईरानी शाखा। भारोपीय भाषाओं को मुख्य रूप से दो वर्गों (सतम् तथा केन्टुम्) वर्गों में विभाजित किया गया है।

27. निम्नलिखितासु भाषासु का भाषा 'सतम्' वर्गस्य नास्ति?

- (a) संस्कृतभाषा
- (b) ईरानीभाषा
- (c) ग्रीकभाषा
- (d) फारसीभाषा

उत्तर (c)- सतम् और केन्टुम् में अन्तर -

सतम् वर्ग	केन्टुम वर्ग
संस्कृत - सतम्	लैटिन- केन्टुम्
हिन्दी - सौ	ग्रीक - हेक्टोन
अवेस्ता - सतम्	जर्मनिक - हुन्द

28. अंग्रेजी-भाषायाः सम्बन्धः कया भाषाशाखाया अस्ति?

- (a) कैल्टिकशाखा
- (b) जर्मनिकशाखा
- (c) इटैलिकशाखा
- (d) ग्रीकशाखा

उत्तर (b)- अंग्रेजी भाषा का सम्बन्ध जर्मनिक भाषा की शाखा से है। द्वितीय ध्वनि परिवर्तन जर्मनिक भाषाओं की दो शाखाओं में हुआ जिन्हें निम्न जर्मन एवं उच्च जर्मन कहते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

29. संस्कृतभाषायां निम्नलिखितेषु स्वरेषु कस्य स्वरस्य दीर्घा नास्ति?

- (a) ऋकारस्य (b) अकारस्य
(c) इकारस्य (d) लृकारस्य

उत्तर (d)- संस्कृत भाषा में निम्नलिखित में से लृकार का दीर्घ नहीं है जबकि अकार का दीर्घ आ और इकार का दीर्घ स्वर ई, ऋकार का दीर्घ स्वर ऋ होता है।

30. अन्त्यादयः पूर्ववर्णस्य का सञ्ज्ञा भवति?

- (a) अपृक्तसञ्ज्ञा (b) उपधा-सञ्ज्ञा
(c) टि-सञ्ज्ञा (d) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा

उत्तर (b) अन्त्यादयः पूर्व वर्णों उपधासंज्ञा स्यात्। “अलोन्त्यापूर्व उपधा।” अर्थात् अन्तिम् अल् (प्रत्याहार) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

यथा- ‘राजन्’ शब्द में अन्तिम अल्, न् से ठीक पूर्व वाले ‘अ’ की उपधा संज्ञा होगी।

31. निषेध-विकल्पयोः सञ्ज्ञा का?

- (a) अपृक्तसञ्ज्ञा (b) विभाषासञ्ज्ञा
(c) उपधासञ्ज्ञा (d) प्रगृह्यसञ्ज्ञा

उत्तर (b) विभाषा संज्ञा विधायक सूत्र “न वेति विभाषा” निषेध विकल्पयोर्विभाषा संज्ञा स्यात् अर्थात् निषेध विकल्प को ‘विभाषा’ कहा जाता है कहने का तात्पर्य यह है कि कहीं पर कार्य का होना या कार्य का न होना इसी वैकल्पिक व्यवस्था को विभाषा कहते हैं।

32. ‘सुडनपंसकस्ये’ ति सूत्रेण का सञ्ज्ञा क्रियते?

- (a) सर्वनामस्थानसञ्ज्ञा (b) निष्ठा सञ्ज्ञा
(c) प्रातिपदिकसञ्ज्ञा (d) पदसञ्ज्ञा

उत्तर (a)- सर्वनामस्थान संज्ञा विधायक सूत्र सुडनपंसकस्य स्वादिपञ्च वचनानि, सर्वनाम स्थान संज्ञानि स्युखलीवस्य। ये पाँच प्रत्ययों (सु, औ, जस्, अम् औट्) का अनपुंसक में सु आदि प्रत्ययों की “सर्वनामस्थान” संज्ञा होती है।

33. ‘अनुविष्णु’ इत्यत्र ‘अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि’ इत्यादिसूत्रेण कस्मिन् अर्थेऽव्ययीभावसमासः?

- (a) समीपार्थे (b) असम्प्रत्यर्थे
(c) पश्चादर्थे (d) आनुपूर्वार्थे

उत्तर (c) - ‘अनुविष्णु’ का लौकिक विग्रह-विष्णोः पश्चात् और अलौकिक विग्रह “विष्णु डस् अनु” होगा। यहाँ पश्चात् के अर्थ में अनु अव्यय का विष्णु डस् सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है “अव्यय-विभक्ति समीप समृद्धि.....साकल्यान्त वचनेषु” सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ है।

34. ‘व्यूढोरस्कः’ इत्यत्र कीदृशः समासः?

- (a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः
(c) द्वन्द्वः (d) बहुव्रीहिः

उत्तर (d)- व्यूढोरस्कः इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह “व्यूढम् उरो यस्य” होगा यहाँ “उरः प्रभृतिभ्यः कप्” सूत्र से उरस् प्रत्यय होने से बहुव्रीहि समास है।

35. ‘सर्पिषोऽपि स्याद्’ इत्यत्र ‘अपि’ शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञा कस्मिन् अर्थे भवति?

- (a) सम्भावनाद्योतकतायाम् (b) अन्ववसर्गद्योतकतायाम्
(c) समुच्चयद्योतकतायाम् (d) पदार्थद्योतकतायाम्

उत्तर (d)- ‘सर्पिषोऽपि स्याद्’ यहाँ अपि शब्द की कर्मप्रवचनीय संज्ञा पदार्थद्योतकता के अर्थ में हुई है। इस कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

36. ‘अधिकरणवाचिनश्चे’ ति सूत्रस्योदाहरणं किं भवति?

- (a) राज्ञां मतः (b) द्विरहो भोजनम्
(c) शब्दानामनुशासनमाचार्यस्य (d) इदम् एषाम् आसितम्

उत्तर (d)- “अधिकरणवाचिनश्च” ‘क्त’ प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। अर्थात् क्त प्रत्यय से बने हुए अधिकरण वाची शब्दों के योग में कर्ता तथा कर्मकारक में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा-‘इदम् एषाम् आसितम्’।

37. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(A) भासः	(i) मालतीमाधवम्
(B) कालिदासः	(ii) मृच्छकटिकम्
(C) भवभूतिः	(iii) मालविकाग्निमित्रम्
(D) शूद्रकः	(iv) पञ्चरात्रम्
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b) (ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c) (iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

उत्तर (a)- सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

भासः	-	पञ्चरात्रम्
कालिदासः	-	मालविकाग्निमित्रम्
भवभूतिः	-	मालतीमाधवम्
शूद्रकः	-	मृच्छकटिकम्

38. शिशुपालवधमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गस्य नाम भवति-

- (a) श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् (b) नारदगुणकीर्तनम्
(c) कृष्णनारदसम्भाषणम् (d) नारदावतरणम्

उत्तर (c)- महाकवि माघ विरचित शिशुपालवधम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है यह 20 सर्गों में विभक्त है। इसके प्रथम सर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण के दरबार में नारद का आगमन होता है। इसीलिए इसके प्रथम सर्ग का नाम “कृष्णनारदसम्भाषणम्” है।

39. सानुमत्याः उपाख्यानम् अभिज्ञानशाकुन्तले कस्मिन् अङ्के अस्ति?

- (a) सप्तमे (b) षष्ठे
(c) पञ्चमे (d) चतुर्थे

उत्तर (b)- महाकवि कालिदासप्रणीतम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् सात अंकों वाला नाटक है इसके षष्ठ अङ्क में प्रवेशक के समाप्त होने के पश्चात् सानुमती नामक अप्सरा (मेनका की सखी) का प्रवेश होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

40. आसु कस्याः उल्लेखो मेघदूते नास्ति-

- (a) रेवायाः (b) शिप्रायाः
(c) तुङ्गभद्रायाः (d) गन्धवत्याः

उत्तर (c)- महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् (गीतिकाव्य) में रेवा, शिप्रा एवं गन्धवती आदि नदियों का उल्लेख है। इसमें लगभग 120 पद्यों में कवि ने विरही यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया है इसमें तुङ्गभद्रा का उल्लेख नहीं है।

41. मृच्छकटिकम् इति कस्य रूपकस्य उदाहरणं भवति?

- (a) नाटकस्य (b) प्रकरणस्य
(c) व्यायोगस्य (d) समवकारस्य

उत्तर (b)- रूपक के दश भेदों में से मृच्छकटिकम् प्रकरण नामक रूपक का उदाहरण है यह 10 अङ्कों में विभक्त है इसका नायक चारुदत्त है।

42. कृतककोपवृत्तान्तः मुद्राराक्षसे कस्मिन्नङ्केऽस्ति?

- (a) प्रथमे (b) द्वितीये
(c) तृतीये (d) चतुर्थे

उत्तर (c)- विशाखदत्त का मुद्राराक्षस सात अङ्कों वाला नाटक है। इसके प्रथम अङ्क का नाम मुद्रालाभ, द्वितीय अंक का नाम भूषण विक्रय तृतीय अङ्क का नाम 'कृतककोपवृत्तान्त' है। यह वीर रस प्रधान नाटक है।

43. कालानुसारेण तालिकां चिनुत

- (a) भारविः
(b) भासः
(c) कालिदासः
(d) साहित्यदर्पणकारः विश्वनाथः

उत्तर (d)- कालक्रमानुसार दिए गये विकल्पों में सही आचार्यों का समय-

भासः	-	400 ई. पूर्व से 500 ई. पूर्व
कालिदासः	-	150 ई. पूर्व से 475 ई. पूर्व
भारविः	-	600 ई. के लगभग
साहित्यदर्पणकारः	-	13वीं शताब्दी

44. विश्वनाथमते हास्यं कतिविधं भवति?

- (a) चतुर्विधम् (b) पञ्चविधम्
(c) षड्विधम् (d) द्विविधम्

उत्तर (c)- आचार्य विश्वनाथ मतानुसार हास्य रस के छः भेद हैं- स्मित, हसित, विहसित, उपहसित, अपहसित, अतिहसित। इनकी प्रधानता प्रहसन नामक रूपक में होती है।

45. काव्यलक्षणाविचारे “स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्” इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

- (a) आनन्दवर्धनस्य (b) वामनस्य
(c) मम्मटस्य (d) व्यक्तिविवेकारस्य

उत्तर (a)- “स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्” आनन्दवर्धन के इस मत का निराकरण आचार्य विश्वनाथ ने किया है।

46. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?

- (a) रौद्रः (b) वीरः
(c) भयानकः (d) बीभत्सः

उत्तर (d)- जुगुप्सास्थायिभावस्तु बीभत्सः कथ्यते रसः नीलवर्णो महाकालदैवतोऽयमुदाहृतः।। तथा वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा होता है।

47. जातुकर्णीपुत्रः भवति-

- (a) भवभूतिः (b) कालिदासः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

उत्तर (a) जातुकर्णी पुत्रः भवभूतिरस्ति। महाकवि भवभूति के पितामह का नाम भट्टगोपाल था एवं भवभूति के पिता का नाम नीलकण्ठ था ये एक उच्चकोटि के यशस्वी विद्वान् थे भवभूति के माता का नाम जातुकर्णी था।

48. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

- (a) भरतः (b) सर्वदमनः
(c) गौतमः (d) वातायनः

उत्तर (b)- ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ में दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र का नाम सर्वदमन था जिसे बाद में भरत के नाम से जाना गया।

49. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति-

- (a) समवकारस्य (b) नाटिकायाः
(c) प्रकरणस्य (d) प्रहसनस्य

उत्तर (b)- रूपक के दश भेदों में नाटिका का वर्णन नहीं है दश भेद निम्न हैं- नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अङ्क, वीथी, प्रहसन्।

50. एषु गतिसंज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

- (a) ऊर्यादिच्चिडाचश्च (b) कुगतिप्रादयः
(c) तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् (d) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

उत्तर (a)- गतिसंज्ञाविधायकसूत्रम् “ऊर्यादिच्चिडाचश्च अर्थात् ऊरी आदि, च्विप्रत्ययाऽन्त और डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गति संज्ञक होते हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जनवरी-2017

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. निरुक्तानुसारेण “अति” इत्यस्य उपसर्गस्य कोऽर्थः ?

- (a) निषेधः (b) एकीभावः
(c) पूजा (d) अनादरः

उत्तर (c) – आचार्य यास्क के निरुक्त में नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात ये चार प्रकार के पद प्रसिद्ध हैं उनमें से उपसर्ग को बताया जा रहा है – अति, उपसर्ग पूजा (प्रशंसा) के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जबकि निर् और दुर ये दोनों अर्थ निन्दा के अर्थ में होते हैं।

2. निरुक्तानुसारेण “चित्” इत्यस्य निपातस्य अर्थो नास्ति—

- (a) प्रतिषेधः (b) उपमा
(c) पूजा (d) अवकुत्तितः

उत्तर (a) – निरुक्त के अनुसार निपात – ‘उच्चावचेष्टर्थे निपातन्ति’ अर्थात् निपात भिन्न भिन्न अर्थों को बोध कराते हैं इसलिए निपात कहलाते हैं। ये निपात तीन प्रकार के होते हैं – 1. उपमार्थक 2. कर्मोपसङ्ग्रह 3. पादपूरण।

Note— चित् निपात का प्रयोग प्रतिषेध अर्थ में नहीं होता है।

3. निरुक्ते अधोलिखितेषु उपधाविकारस्य उदाहरणमस्ति –

- (a) प्रतम् (b) स्तः
(c) गत्वा (d) राजा

उत्तर (d) – निरुक्त में अधोलिखित में से उपधा विकार का उदाहरण “राजा दण्डीति” राजन् दण्डिन् इति स्थिते “सर्वानाम् चासम्बुद्धौ”। शेष वर्णलोपः के उदाहरण हैं – गत्वा, स्तः प्रतम् आदि।

4. ब्राह्मणग्रन्थानां विषयो नास्ति –

- (a) छन्दोविवेचनम् (b) पुराकल्पः
(c) विधिः (d) निर्वचनम्

उत्तर (a) – छन्दोविवेचनम् ब्राह्मणग्रन्थानां विषयो नास्ति अर्थात् छन्दो का विवेचन ब्राह्मण ग्रन्थों का विवेचन नहीं है जबकि पुराकल्पः, विधिः और निर्वचनम् ये ब्राह्मणग्रन्थों के विषय हैं।

5. शिक्षावेदाङ्गे गणना नास्ति –

- (a) तैत्तिरीयप्रातिशाख्यस्य (b) ऋकृतन्त्रस्य
(c) पारस्करगृह्यसूत्रस्य (d) नारदशिक्षायाः

उत्तर (c) – शिक्षा को वेदपुरुष की नासिका के रूप में स्वीकार किया गया है।

तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों को बताया गया है – वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

Note— पारस्करगृह्यसूत्र की गणना कल्प सूत्रों में की गयी है।

6. ऐतरेयब्राह्मणस्य शुनः शेषाख्याने शुनःशेषस्य पितुर्नाम अस्ति—

- (a) वाजश्रवाः (b) अजीगर्तः
(c) कण्वः (d) सौयवसी

उत्तर (b) – “शुनः शेषाख्यानम् का सम्बन्ध ऐतरेय ब्राह्मण से है। इसमें शुनः शेष के पिता का नाम अजीगर्त था। इसमें कोई निःसन्तान हरिश्चन्द्र नामक राजा था। वह वरुण देवता की उपासना से पुत्र की प्राप्ति होने पर उसे बलि देने का वचन देता है इसी का वर्णन किया गया है।

7. “वाङ्मनस्” इत्याख्यानं वर्तते

- (a) कौषीतकिब्राह्मणे (b) ऐतरेयब्राह्मणे
(c) षड्विंशब्राह्मणे (d) शतपथब्राह्मणे

उत्तर (d) – “वाङ्मनसाख्यानम् “शतपथब्राह्मण” में संवाद रूप में निरूपित है। एक बार मन और वाणी के मध्य श्रेष्ठता को लेकर विवाद होता है दोनों प्रजापति के समीप जाते हैं।

Note— शतपथ ब्राह्मण का वर्णन यजुर्वेद में है।

8. “यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्” कठोपनिषदि इदं कथनम् अस्ति –

- (a) कण्वस्य (b) यमस्य
(c) नचिकेतसः (d) इन्द्रस्य

उत्तर (b) – “यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्” यह मंत्र कठोपनिषद में वर्णित यम का कथन है कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है। इसमें 2 अध्याय हैं प्रत्येक अध्याय तीन-तीन वल्लियों में विभक्त हैं।

9. “तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्” इत्युद्धरणं वर्तते –

- (a) तैत्तिरीयोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

उत्तर (c) – “तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्” केनोपनिषद वर्तते अर्थात् उस रहस्यमयी ब्रह्मविद्या के तपस्या, मन इन्द्रियों का नियन्त्रण, कर्म ये तीनों आधार हैं वेद उस विद्या के सम्पूर्ण अङ्ग हैं सप्तस्वरूप उसका अधिष्ठान प्राप्तव्य है।

10. अधस्तनेषु स्वरितस्वरस्य भेदोऽस्ति –

- (a) क्षैप्रः (b) सन्नतरः
(c) निघातः (d) सन्नतमः

उत्तर (a) – मुख्यरूप से स्वर तीन प्रकार के माने गये हैं। 1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
स्वरित का लक्षण – “समाहार स्वरितः” इति सूत्रेण उदात्त अनुदात्तत्वे वर्णधर्मो समाद्वियेते यस्मिन् सोऽच् स्वरितसंज्ञः स्यात् । स्वरित वर्ण के ऊपर खड़ी लकीर (क) होती है।

11. ऋग्वेदीयशाकलसंहितायां उदात्तस्वरः केन प्रकारेण प्रदर्श्यते ?

- (a) अ (b) अ^१
(c) अ^३ (d) अ [अचिह्नितम्]

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (d) – ऋग्वेद की शाकलसंहिता में उदात्त स्वरों पर कोई चिह्न नहीं रहता है। ऋग्वेदादि में स्वरित के बाद वाले अनुदात्तों को प्रचय कहते हैं और उन पर कोई स्वर चिह्न नहीं होता है।

- 12. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण रक्तसंज्ञका वर्णा भवन्ति –**
- (a) अनुनासिकवर्णाः (b) सोष्मवर्णाः
(c) अघोषवर्णाः (d) समानाक्षरवर्णाः

उत्तर (a) – ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार रक्तसंज्ञक वर्ण माने गये हैं – ङ, ज, ण, न, म् ।
इसे ‘रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः’ इस सूत्र से परिभाषित किया जाता है। प्रातिशाख्य के अनुसार समान अक्षरों की संख्या 8 बतायी गई है और सन्ध्याक्षरों की संख्या 4 है।

- 13. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारेण अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां चिनुत् –**

(A) ऊ	(i) अघोषः
(B) क	(ii) सन्ध्यक्षरम्
(C) घ	(iii) समानाक्षरम्
(D) ए	(iv) सोष्म

A	B	C	D
(a) i	iii	iv	i
(b) iv	ii	i	iii
(c) iii	i	iv	ii
(d) ii	iv	iii	i

उत्तर (c) – ऋग्वेद प्रातिशाख्य के अनुसार सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

ऊ – समानाक्षरम्
क – अघोषः
घ – सोष्म
ए – सन्ध्याक्षरम्

- 14. सर्वादौ वेदस्य आँगलभाषायाम् अनुवादः केन कृतः ?**
- (a) ए वेबरेण (b) विल्सनेन
(c) ब्लूमफिल्डेन (d) ओल्डनबर्गेण

उत्तर (b) – सर्वप्रथम वेद का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विल्सन महोदय ने किया। अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन ने अपने 14 सूत्रों में से एक सूत्र में कहा था कि ‘छोटे बड़े सभी राष्ट्रों को समता रूप से राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा प्रादेशिक अखण्डता का आश्वासन दिया जाना चाहिए।’

- 15. माध्यन्दिनसंहिताया हिन्दीभाषायाम् अनुवादः सर्वादौ केन कृतः ?**

- (a) अरविन्देन (b) महर्षिदयानन्देन
(c) श्रीपाददामोदरसातवलेकरेण (d) स्वामी-विवेकानन्देन

उत्तर (b) – महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम माध्यन्दिन संहिता का हिन्दी में अनुवाद किया। समस्त आचार्यों में सबसे श्रेष्ठ और आर्यसमाज के संस्थापक के रूप में दयानन्द का वेद का व्याख्यान सबसे नवीन एवं समाज का प्रेरक है।

- 16. अधोनिर्दिष्टेषु ‘मनोःस्त्री’ इति विग्रहे स्त्रीलिङ्गे अशुद्धः प्रयोगः कः ?**

- (a) मनायी (b) मनावी
(c) मन्वी (d) मनुः

उत्तर (c) – अधोलिखित में से “मनोः स्त्री” इस विग्रह में स्त्रीलिङ्ग में शुद्ध प्रयोग मनायी, मानवी, मनुः होगा जबकि दिए गये विकल्पों में अशुद्ध प्रयोग मन्वी होगा।

- 17. ‘अध्यापयति वेदम्’ इत्यत्र क्रियापदे परस्मैपदविधायको नियमः कः ?**

- (a) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्
(b) विभाषाऽकर्मकात्
(c) निगरणचलनार्थभ्यश्च
(d) बुध्-युध्-नश्-जनेङ्-प्रु-द्रु-सुभ्यो णेः

उत्तर (d) – अध्यापयति “वेदम्” क्रिया पदे परस्मैपद विधायको नियमः बुध्-युध्-नश्-जनेङ् प्रु द्रु सुभ्यो णेः । अर्थात् बुध्-युध्-नश्-जनेङ् प्रु-द्रु-सुभ्यो णेः एभ्यो व्यन्तेभ्यः परस्मैपदं स्यात् ।

- 18. ‘वच्’ धातोरशब्दसंज्ञायां ण्यत्प्रत्ययान्तं किं रूपम् ?**

- (a) वाच्यम् (b) वाक्यम्
(c) वच्यम् (d) उच्यम्

उत्तर (a) – वच् धातु से ण्यत् प्रत्ययान्त वाच्यम् रूप सिद्ध होगा। यथा – वच् + ण्यत् = इसमें ण्यत् के ण् का ‘चुटू’ सूत्र से इत्संज्ञा और त् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः सूत्र से लोप होकर वाच्यम् रूप बनेगा।

- 19. ‘एध्’ धातोः आशीर्लिङ् उत्तमपुरुषैकवचने किं रूपम् ?**

- (a) एधेय (b) एधिषीय
(c) एधिताहे (d) ऐधिषि

उत्तर (b) – ‘एध्’ वृद्धौ धातु (वृद्धि अर्थ में) आता है इसके आशीर्लिङ् लकार के तीनों पुरुष और तीनों वचन के रूप इस प्रकार हैं–

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यम पुरुष	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तम पुरुष	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

- 20. क्रियामात्रविषयं व्यापारनियतञ्च किम्भवति ?**

- (a) हेतुः (b) करणम्
(c) अधिकरणम् (d) सम्बन्धः

उत्तर (b) – क्रियामात्रविषयं व्यापारनियतञ्च करणं भवति। “साधकतमं करणम्” (करण संज्ञा) 1/4/42 । अर्थात् क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट रूप से उपकारक ‘करण’ कहलाता है। सूत्र में साधकतमम् ऐसा क्यों कहा गया? इसलिए ताकि ‘गङ्गायां घोषः’ घोष आदि के गौण आधार गङ्गा इत्यादि की अधिकरण संज्ञा हो सके।

- 21. ‘लोमन्’ शब्दस्य मत्वर्थीयः शुद्धप्रयोगः कः ?**

- (a) लोमनः (b) लोमिकः
(c) लोमिलः (d) लोमशः

उत्तर (d) – लोमन् शब्द का मत्वर्थीय प्रयोग ‘लोमशः’ है। “लोमाऽऽदिपामाऽऽदि-पिच्छाऽऽदिभ्यः शनेलचः सूत्र से लोमन् आदियों से श प्रत्यय पामन् आदियों से न और पिच्छ आदि से उलच् विकल्प से मत्वर्थ में होता है। यथा – शः = लोमशः।

- 22. ‘शास्त्रपूर्वके प्रयोगेऽभ्युदयः...’ – अत्र महाभाष्यानुसारं रिक्तस्थानं पूरयत ।**

- (a) कूपखननन्यायेन (b) तत्तुल्यं वेदशब्देन
(c) स्नातानुलिप्तप्रकारेण (d) पांसूदकन्यायेन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

उत्तर (b) – शास्त्रपूर्वके प्रयोगेऽभ्युदयः तत्तुल्यं वेदशब्देन। शास्त्रपूर्वकं यः शब्दान् प्रयुङ्कते सोऽभ्युदयेन युज्यते। तत्तुल्यं वेद शब्देन। अर्थात् जो पुरुष शास्त्रपूर्वक (पहले व्याकरण शास्त्र से निरुक्त जानकर) शब्दों का प्रयोग करता है, वह अभ्युदय से युक्त होता है। यह बात वेदशब्द के ही तुल्य है।

23. एषु पाठकगुणेषु कः गण्यते ?

- (a) अक्षरव्यक्तिः (b) गीती
(c) लिखितपाठकः (d) शीघ्री

उत्तर (a) – नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि ने पाठक के गुणों के प्रसङ्ग में एक प्रकार की विवेचना की है- (1) अक्षर व्यक्तिः। जबकि गीती, शीघ्री, लिखितपाठकः की गणना इसमें नहीं है।

24. निम्नलिखितेषु अन्तःस्थेषु को ध्वनिः न गण्यते ?

- (a) ट् (b) र्
(c) ल् (d) य्

उत्तर (a) – भाषा विज्ञान में अन्तस्थ वर्ण चार बताए गये हैं। य्, व्, र्, ल् ये अन्तस्थ संज्ञक हैं। जबकि टवर्ण का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है- ऋटुरषाणां मूर्धा।

25. निम्नलिखितेषु विषमीकरणस्य उदाहरणम् किम् अस्ति ?

- (a) बभूव (b) ससार
(c) गमिष्यति (d) पपाठ

उत्तर (a) – विषमीकरण यह समीकरण का उल्टा होता है, इसमें दो सम ध्वनियों में से एक ध्वनि विषयक रूप धारण करती है इसके निम्न उदाहरण है। बभूव, काग, चकार, पुलिस, मऊर, अजीगणत ये षट् हैं।

26. चीनी भाषा कीदृशी भवति ?

- (a) योगात्मिका (b) अयोगात्मिका
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मिका (d) श्लिष्टयोगात्मिका

उत्तर (b) – आकृतिमूलक वर्गीकरण को मुख्यतः दो रूपों में बाँटा जाता है। (1) अयोगात्मक (2) योगात्मक। अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व का संयोग नहीं होता है। चीनी भाषा अयोगात्मक भाषा के अन्तर्गत आती है।

27. अर्थसङ्ग्रहे 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे 'वेदप्रतिपाद्यः' इति पदं किमर्थं गृहीतम् ?

- (a) द्यूतक्रीडादावतिव्याप्तिवारणाय
(b) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय
(c) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय
(d) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय

उत्तर (d) – अर्थसंग्रह में वेद का लक्षण इस प्रकार है- 'वेद प्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' भोजन आदि में अतिव्याप्ति के निवारणार्थ 'वेद प्रतिपाद्य' यह पद है और प्रयोजन में अतिव्याप्ति के लिए 'प्रयोजनवत्' यह पद है।

28. शाब्दीभावनायाः साध्यं किम्भवति ?

- (a) लिङ्गादिज्ञानम् (b) अर्थवादज्ञाप्यप्राशस्त्यम्
(c) स्वर्गादिफलम् (d) आर्थी भावना

उत्तर (d) – अर्थसंग्रह में भावना दो प्रकार की मानी गयी है।

(i) शाब्दी भावना (ii) आर्थी भावना

शाब्दी भावना लिङ्ग अंश के द्वारा कही जाती है जबकि आर्थी भावना का आख्यातांश के द्वारा कही जाती है।

शाब्दी भावना का साध्य आर्थी भावना है क्योंकि दोनों भावनाओं का बोध एक ही प्रत्यय से होता है।

29. तर्कसङ्ग्रहदीपिकादिशा एषु गोलक्षणे कस्मिन् अतिव्याप्तिदोषः सङ्घटते ?

- (a) शृङ्गित्वम् (b) एकशफत्वम्
(c) कपिलत्वम् (d) सास्नादिमत्त्वम्

उत्तर (a) – अन्नंभट्ट कृत तर्कसङ्ग्रह में गोः के लक्षण के प्रसङ्ग में कहा है कि सास्नादिगलकम्बल से जो युक्त है वह गोः है इसमें शृङ्गित्वम् में अतिव्याप्ति दोष संघटित होता है।

30. 'तन्तुसंयोगः पटस्य' कीदृशं कारणम् ?

- (a) असमवायिकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) समवाय्यसमवायिकारणम् (d) निमित्तकारणम्

उत्तर (a) – यत्समवायिकारणप्रत्यासन्धवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्। यथा- तन्तु संयोगः पटस्यासमवायिकारणम् अर्थात् जो समवायि कारण में प्रत्यासन्न (अर्थात् जिसमें कारण का लक्षण घटित होता है) वह असमवायिकारण है। जैसे- तन्तु संयोग पट का असमवायिकारण है।

31. न्यायसिद्धान्तदृशा व्याप्तिः का ?

- (a) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्धः
(b) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः
(c) सिषाधयिषाविरहसहकृतसिद्धाभावः
(d) साध्यवत्त्वेन पक्षस्य वचनम्

उत्तर (a) – न्यायसिद्धान्त मुक्तावली के अनुसार साध्यवदन्यास्मिन्नसम्बन्धः व्याप्तिः। अर्थात् जिसमें साध्य के समान सम्बन्ध ही व्याप्ति है।

नोट- जबकि केशवमिश्र प्रणीत तर्कभाषा में धुआँ और अग्नि का साथ-साथ रहना ही व्याप्ति कहा गया है। "साहचर्यनियमोव्याप्तिः"।

32. योगसूत्रभाष्ये निर्बीजः समाधिः क उक्तः ?

- (a) सम्प्रज्ञातसमाधिः (b) असम्प्रज्ञातसमाधिः
(c) सवितर्कसमाधिः (d) सविचारसमाधिः

उत्तर (b) – पतञ्जलि विरचित योगसूत्र भाष्य में असम्प्रज्ञातसमाधि को निर्बीज समाधि कहा गया है।

नोट- जबकि वेदान्त में निर्विकल्पक और सविकल्पक दो समाधियों का विवेचना किया गया है।

33. 'तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्' इति व्यासभाष्येण किं लक्षितम् ?

- (a) सन्तोषः (b) तपः
(c) स्वाध्यायः (d) ईश्वरप्रणिधानम्

उत्तर (d) – ब्रह्मसूत्र के लेखक बादरायण (व्यास) ने "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" का लक्षण दिया है उनके अनुसार उस परमगुरु को मैं सभी कर्म अर्पित करता हूँ। जो ईश्वरप्रणिधानम् की ओर लक्षित किया गया है।

34. वाक्यपदीयानुसारं 'स्फोटनादयोः' सम्बन्धः कीदृशो भवति ?

- (a) तरङ्गप्रतिबिम्बवत् (b) कार्यकारणवत्
(c) जन्यजनकवत् (d) धूमाग्निवत्

उत्तर (a) – वाक्यपदीय के अनुसार स्फोट और नाद के मध्य तरङ्गप्रतिबिम्बवत् सम्बन्ध है। अर्थात् स्फोट (ध्वनि) और नाद में उसी प्रकार सम्बन्ध का दिग्दर्शन किया गया है जिस प्रकार तरङ्ग में उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

35. वाक्यपदीयानुसारं स्फोटः कीदृशो भवति ?

- (a) सक्रमः (b) भेदवान्
(c) अक्रमः (d) वर्णानुपूर्वी

उत्तर (c) – वाक्यपदीय संस्कृत व्याकरण शृंखला का मुख्य दार्शनिक ग्रन्थ है। स्फोट (नित्य शब्द) को संसार का कारण मानते हैं जो स्फोट या नित्य शब्द को ही संसार का हेतु मानते हैं उन्हें स्फोटवादी मानते हैं।

इसके अनुसार स्फोटः अक्रम भवति।

36. 'आनन्दमयोऽभ्यासात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'मयट्' प्रत्ययः कस्मिन्नर्थे वर्तते ?

- (a) विकारार्थे (b) जनकार्थे
(c) कारणार्थे (d) प्राचुर्यार्थे

उत्तर (d) – आनन्दमयोऽभ्यासात् इत्यस्मिन् सूत्रे "मयट्" प्रत्ययः प्राचुर्यार्थे वर्तते। अर्थात् आनन्दमय अभ्यास से प्रचुर अर्थ में मयट् प्रत्यय होता है। इसके ट् का लोप हो जाता है मय शेष बचता है।

37. 'शास्त्रयोनित्वात्' इत्यस्मिन् सूत्रे 'योनिः' इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः ?

- (a) जन्म (b) कारणम्
(c) कार्यम् (d) व्याख्या

उत्तर (b) – "शास्त्रयोनित्वात्" इत्यस्मिन् सूत्रे 'योनिः' इत्यस्य शब्दस्य कारणम् अर्थः अस्ति। अर्थात् शास्त्रयोनित्वात् इस सूत्र से योनि इस शब्द का अर्थ कारण है।

नोट- दर्शन में समवायिकारण, असमवायिकारण, निमित्तकारण में तीन प्रकार के कारण माने गये हैं।

38. हेमचन्द्रसूरिः कस्य दर्शनस्य आचार्योऽस्ति ?

- (a) बौद्धदर्शनस्य (b) जैनदर्शनस्य
(c) चार्वाकदर्शनस्य (d) सांख्यदर्शनस्य

उत्तर (b) – हेमचन्द्रसूरि जैनदर्शन के आचार्य हैं। उनके काव्यानुशासन का रचनाकाल 12वीं शताब्दी है। ग्रन्थ के तीन अंश हैं- सूत्र, वृत्ति, तथा उदाहरण।

39. सांख्यकारिकानुसारं किं तत्त्वं प्रधानपुरुषयोः अन्तरं विशिनष्टि ?

- (a) मनः (b) बुद्धिः
(c) अहङ्कारः (d) ज्ञः

उत्तर (b) – सांख्यकारिका में बुद्धि तत्त्व को प्रधान पुरुष के मध्य अन्तर को बताता है। इसे निश्चयात्मक अथवा निश्चय करने वाला तत्त्व कहा जाता है जो इस कारिका से स्पष्ट है-

अध्यवसायो बुद्धिधर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्विकमेतद् रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्॥

40. सांख्यकारिकानुसारं करणम् कतिविधम्

- (a) षोडश (b) चतुर्दश
(c) सप्तदश (d) त्रयोदश

उत्तर (d) – सांख्यतत्त्वकौमुदी में ग्यारह इन्द्रियाँ, बुद्धि तथा अहंकार ये तेरह प्रकार के कारण हैं। षड्विध कारकों में साधकतम् करणम् कारक विशेष होता है और किसी कार्य के अन्वय अथवा योग के बिना अर्थात् कार्यवान् हुए बिना कोई वस्तु कारक नहीं होती।

41. 'तत्त्वज्ञानम् पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन' उक्तिरियं केन दर्शनेन सम्बद्धा अस्ति ?

- (a) आर्हतदर्शनेन (b) बौद्धदर्शनेन
(c) रामानुजदर्शनेन (d) न्यायदर्शनेन

उत्तर (a) – तत्त्वज्ञानं पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्याय केवल भेदेन उक्तिरियं आर्हतदर्शने सम्बद्धा अस्ति। अर्थात् जो ज्ञान है वह पाँच प्रकार का होता है। ऐसा अन्य आचार्य के पर्याय के रूप में सुना गया है ऐसा आर्हत-दर्शन में कहा गया है।

42. वेदान्तसारानुसारं निर्विकल्पकस्य समाधेः कति विघ्नाः भवन्ति ?

- (a) त्रयः (b) पञ्च
(c) चत्वारः (d) षट्

उत्तर (c) – निर्विकल्पक समाधि के अभ्यास काल में उत्पन्न होने वाले आन्तरिक विघ्न चार प्रकार के बताये गये हैं-

- (1) लय
(2) विक्षेप
(3) रसास्वादन
(4) कषाय

43. रुद्रदाम्नः शिलालेखः कुत्र विद्यते ?

- (a) प्रयागे (b) जूनागढ़े
(c) तक्षशिलायाम् (d) पाटलिपुत्रे

उत्तर (b) – जूनागढ़ अभिलेख यह संस्कृत का पहला अभिलेख है जो गुजरात के जूनागढ़ जिले में स्थित है जूनागढ़ अभिलेख में क्रमशः तीन शासकों चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, स्कन्दगुप्त का वर्णन किया गया है।

44. इलाहाबादशिलालेखे अस्य नाम नास्ति -

- (a) रुद्रदेवः (b) शशाङ्कः
(c) चन्द्रवर्मा (d) नागदत्तः

उत्तर (b) – समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति' उसके सन्धिविग्रहिक हरिषेण द्वारा रचित है इसमें समुद्रगुप्त के उपलब्धियों के साथ-साथ उसके समकालीन शासकों जैसे- रुद्रदेव, चन्द्रवर्मा, तथा नागदत्त का वर्णन मिलता है।

45. खरोष्ठ्यां लिप्यां कस्य अभिलेखाः उपलभ्यन्ते ?

- (a) अशोकस्य (b) समुद्रगुप्तस्य
(c) कनिष्कस्य (d) खारवेलस्य

उत्तर (a) – अशोक का मानसेरा (पंजाब), शाहबाजगढ़ी और गिरनार शिलालेख खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होते हैं जबकि कनिष्क का सारनाथ अभिलेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख और समुद्रगुप्त का इलाहाबाद शिलालेख ब्राह्मी लिपि में प्राप्त होते हैं।

46. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत् -

- (A) लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः (i) रत्नावली
खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः
(B) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (ii) हर्षचरितम्
(C) श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषदप्येषा (iii) मुद्राराक्षसम्
गुणग्राहिणी
(D) गजेन्द्रश्च नरेन्द्रश्च प्रायः सीदन्ति (iv) किरातार्जुनीयम्
दुःखिताः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

A	B	C	D
(a) iii	ii	i	iv
(b) ii	iv	i	iii
(c) ii	iii	iv	i
(d) iv	i	iii	ii

उत्तर (b) – सही तालिका इस प्रकार है-

लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः

खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः	- हर्षचरितम्।
वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः	- किरातार्जुनीयम्।
श्रीहर्षो निपुणः कविः परिषद्वेषा गुणग्राहिणी	- रत्नावली।
गजेन्द्रश्च नरेन्द्रश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः	- मुद्राराक्षसम्।

47. एषु किं रामायणाश्रितं भवति –

(a) नैषधीयचरितम्	(b) किरातार्जुनीयम्
(c) शिशुपालवधम्	(d) रघुवंशम्

उत्तर (d) – कालिदासकृत “रघुवंशमहाकाव्यम्” का आधार रामायण है। रघुवंशम् में 19 सर्ग हैं और 1569 श्लोक हैं।

शेष – नैषधीयचरितम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् का आधार महाभारत है।

48. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति –

(a) द्रोणपर्व	(b) भीष्मपर्व
(c) युधिष्ठिरपर्व	(d) शल्यपर्व

उत्तर (c) – महाभारत में 18 पर्व हैं- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहण। नोट- युधिष्ठिर पर्व का उल्लेख इसमें नहीं है।

49. महाभारताश्रितं न भवति –

(a) वेणीसंहारम्	(b) दूतवाक्यम्
(c) मध्यमव्यायोगः	(d) अभिषेकनाटकम्

उत्तर (d) – भासकृत - अभिषेकनाटकम्, प्रतिमानाटकम् रामायण पर आश्रित हैं जबकि महाभारत पर आश्रित होने वाले ग्रन्थ वेणीसंहारम्, दूतवाक्यम्, मध्यमव्यायोग हैं।

50. ‘ज्ञानविज्ञानयोगः’ श्रीमद्भगवद्गीतायाः कतमोऽध्यायः –

(a) द्वितीयोऽध्यायः	(b) तृतीयोऽध्यायः
(c) पञ्चमोऽध्यायः	(d) सप्तमोऽध्यायः

उत्तर (d) – श्रीमद्भगवद्गीता का वर्णन महाभारत के भीष्म पर्व में है इसमें 700 श्लोक हैं। इसमें 18 अध्याय हैं तथा इसके सप्तम् अध्याय का नाम “ज्ञानविज्ञानयोग” है। श्रीमद्भगवद्गीता की गणना प्रस्थानत्रयी में की जाती है। इसे वेदान्तशास्त्र भी कहा गया है।

51. एषु कस्य महापुराणेषु अन्तर्भावो नास्ति –

(a) मत्स्यपुराणस्य	(b) ब्रह्मपुराणस्य
(c) अग्निपुराणस्य	(d) साम्बपुराणस्य

उत्तर (d) – पुराणों की संख्या 18 मानी गयी है, जिसमें से प्रथम वर्ण को लेकर एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है-
मद्वयं भद्रयं चैव ब्रत्रयं व चतुष्टयम्।
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥
इसमें से स्कन्दपुराण में “काशीखण्ड” प्राप्त होता है।

52. ‘फलेन मूलेन च वारिभूरुहां मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः’ नैषधीयचरिते इयमुक्तिर्भवति –

(a) नलस्य	(b) दमयन्त्याः
(c) हंसपत्न्याः	(d) हंसस्य

उत्तर (d) – फलेन मूलेन च वारिभूरुहां,

मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः।

त्वयाद्य तस्मिन्नपि दण्डधारिणा

कथं न पत्या धरणी हृणीयते॥

श्रीहर्षकृत नैषधीयचरितम् में यह उक्ति हंस के द्वारा कही गयी है।

53. ‘पौरुषे सोऽहं बहुलीभवन्तमपां तरङ्गेष्विव तैलबिन्दुम्। सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थानुमिव द्विपेन्द्रः॥’ रघुवंशे कस्येयमुक्तिः ?

(a) लक्ष्मणस्य	(b) रामस्य
(c) भरतस्य	(d) शत्रुघ्नस्य

उत्तर (b) – यह उक्ति राम के द्वारा कही गई है यह श्लोक “रघुवंशमहाकाव्यम्” से उद्धृत है। रघुवंशमहाकाव्य महाकवि कालिदास की रचना है।

54. ‘गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।’ शिशुपालवधे अस्मिन् पद्यांशे अनूरुसारथिः भवति –

(a) अग्निः	(b) सूर्यः
(c) चन्द्रः	(d) विद्युत्

उत्तर (b) – “शिशुपालवधम्” के प्रथम सर्ग में भगवान् कृष्ण ने नारद को आकाशमार्ग से आते हुए देखा तदनन्तर नगरवासी उन्हें विस्मयपूर्वक देखने लगे-

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः

प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।

पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः

किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः॥

इस पद्यांश में अनूरुसारथि सूर्य को कहा गया है।

55. “ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः” –

उत्तररामचरिते इयमुक्तिर्भवति –

(a) सीतायाः	(b) मुरलायाः
(c) तमसायाः	(d) लक्ष्मणस्य

उत्तर (b) – “ईदृशानां विपाकोऽपि जायते परमाद्भुतः”

यह कथन महाकवि भवभूतिविरचित “उत्तररामचरितम्” के तृतीय अङ्क में नदी अधिष्ठात्री देवता मुरला का है।

“उत्तररामचरितम्” एक करुण रस प्रधान नाटक है।

56. मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः केन निषिद्धः ?

(a) राक्षसेन	(b) चन्द्रगुप्तेन
(c) चाणक्येन	(d) मलयकेतुना

उत्तर (c) – मुद्राराक्षसे कौमुदीमहोत्सवः चाणक्येन निषिद्धः। अर्थात् मुद्राराक्षस में रात्रिमहोत्सव (चाँदनी) को चाणक्य ने मना कर दिया। विशाखदत्त द्वारा रचित “मुद्राराक्षसम्” संस्कृत साहित्य” का अद्वितीय नाटक है, इसके नायक चाणक्य हैं।

57. “स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु

संश्रयते किमुत या प्रतिबोधवत्यः॥”

अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिः कस्य ?

(a) शाङ्गरवस्य	(b) शारद्वतस्य
(c) दुष्यन्तस्य	(d) सोमरातस्य

उत्तर (c) – स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु।

संदृश्यते किमुत या प्रतिबोधवत्यः ।।

अर्थात् स्त्रियों में जो मनुष्य जाति से भिन्न स्त्रियाँ हैं, उनमें (भी) बिना शिक्षा के ही चतुरता देखी जाती है तो, जो ज्ञान सम्पन्न है उनका कहना ही क्या। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णित यह कथन दुष्यन्त का है।

58. हर्षचरिते पञ्चमे उच्छ्वासे – ‘विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा’ – इत्युक्तिर्भवति –

- (a) हर्षवर्धनस्य (b) प्रभाकरवर्धनस्य
(c) यशोमत्याः (d) कुरङ्गकस्य

उत्तर (c) – बाणभट्ट द्वारा रचित “हर्षचरितम्” आख्यायिका ग्रन्थ है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं इसके पञ्चम् उच्छ्वास में “विश्वस्तानां यशसा स्थातुमिच्छामि लोके न वपुषा” पंक्ति का वर्णन है। यह उक्ति यशोमती की है।

59. “सूरिभिः कथितः” इति विद्वदुपज्ञेयमुक्तिः ।” – अत्र विषये के तावत् आनन्दवर्धनमते प्रथमे विद्वांसः ?

- (a) मीमांसकाः (b) तार्किकाः
(c) कवयः (d) वैयाकरणाः

उत्तर (d) – ध्वन्यालोककार आचार्य आनन्दवर्धन ने काव्य की आत्मा ध्वनि को माना है और ध्वनि का लक्षण इस प्रकार दिया है- यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थो। व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।। यहाँ विद्वानों की उक्ति “सूरिभिः कथितः” से तात्पर्य वैयाकरणाः अर्थात् व्याकरण को जानने वाले से है।

60. “क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः।” काव्यप्रकाशानुसारेण कस्यालङ्कारस्य लक्षणमिदम् –

- (a) उपमालङ्कारस्य (b) निदर्शनालङ्कारस्य
(c) विभावनालङ्कारस्य (d) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य

उत्तर (c) – आचार्य मम्मट द्वारा रचित काव्यप्रकाश के नवम् एवं दशम् उल्लास में अलङ्कार का वर्णन है। ‘विशेषोक्तिखण्डेषु कारणेषु फलावचः’।

यह विशेषोक्ति अलङ्कार का लक्षण है जबकि “क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना” यह लक्षण विभावनालङ्कार का है।

61. “ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम् । पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया ॥” काव्यप्रकाशे प्रथमोल्लासे श्लोकोऽयं कस्य काव्य-भेदस्य उदाहरणरूपेण उल्लिखितः ?

- (a) ध्वनिकाव्यस्य (b) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यस्य
(c) शब्दचित्रकाव्यस्य (d) वाच्यचित्रकाव्यस्य

उत्तर (b) – आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में काव्य के तीन भेद किए हैं उसमें से द्वितीय (मध्यम) काव्य का लक्षण-“अतादृश गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्गे तु मध्यमम्।”

उदाहरण- ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम् । पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।।

62. दशरूपकानुसारेण –

‘अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विषयं ।

फलावसानं यच्चैव।’ तत् किम् अभिधीयते ?

- (a) बीजम् (b) बिन्दुः
(c) पताका (d) प्रकरी

उत्तर (a) – अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विषयं ।

फलावसानं यच्चैव बीजं तदभिधीयते।

यह पञ्चप्रकृतः में बीज नामक अर्थ प्रकृति का लक्षण है।

63. दशरूपकमतानुसारं दृष्टनष्टस्य बीजस्य अन्वेषणं भवति –

- (a) मुखसन्धिः (b) गर्भसन्धिः
(c) प्रतिमुखसन्धिः (d) निर्वहणसन्धिः

उत्तर (b) – दशरूपकम् में 5 सन्धियों को बताया गया है- मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निर्वहण है उसमें से गर्भसन्धि का लक्षण इस प्रकार है-

गर्भस्य दृष्टनष्टय बीजस्यान्वेषणम् मुहुः।

द्वादशाङ्ग पताका स्यान् वा स्यात्प्राप्तिसम्भवः।।

64. आसु कस्या वक्रतामध्ये गणनं नास्ति ?

- (a) वर्णविन्यासवक्रतायाः (b) समासवक्रतायाः
(c) पदपूर्वाद्धवक्रतायाः (d) प्रकरणवक्रतायाः

उत्तर (b) – ‘वक्रोक्तिकाव्य जीवितम् ’ में आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के भेद किए हैं-

- (1) वर्णविन्यासवक्रता
(2) पदपूर्वाद्धवक्रता
(3) पदपराद्धवक्रता
(4) वाक्यवक्रता
(5) प्रकरणवक्रता
(6) प्रबन्धवक्रता

65. राजशेखरेण काव्यमीमांसायां दोषधिकरण-विषये कस्य ग्रन्थकारस्य नाम उल्लिखितम् ?

- (a) सुवर्णनाभस्य (b) शेषस्य
(c) धिषणस्य (d) भरतस्य

उत्तर (c) – आचार्य राजशेखर प्रणीत काव्यमीमांसा 18 अधिकरणों में विभक्त है। राजशेखर ने काव्य के दो प्रकार किए हैं- (1) शास्त्रम् (2) काव्यम्
नोट- इस ग्रन्थ में दोष अधिकरण के विषय में ‘धिषण’ ग्रन्थकार का उल्लेख है।

66. “दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् । लोके नाट्यमेतद्भविष्यति ॥”

नाट्यशास्त्रतः रिक्तस्थानं पूरयत –

- (a) मोक्षप्रदायकम् (b) ज्ञानप्रदायकम्
(c) आह्लादजननम् (d) विश्रामजननम्

उत्तर (d) – भरतमुनि प्रणीत “नाट्यशास्त्र ” में 36 अध्याय हैं इसे “षट्साहस्री संहिता” कहा जाता है। रिक्त स्थान में - विश्रामजननम् होगा।

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।

विश्रामजननम् लोके नाट्यमेतद्भविष्यति।।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

67. “मित्रातिपुत्रनेत्राय त्रयीशतवंशवे ।

गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्राये ते नमो नमः ॥”

रसगङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयम् उदाहरणं भवति—

- (a) उत्तमकाव्यस्य (b) अधमकाव्यस्य
(c) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (d) मध्यमकाव्यस्य

उत्तर (b) – रसगङ्गाधर नामक लक्षण ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य के चार भेद किए हैं—

- (1) उत्तमोत्तम (2) उत्तम
(3) मध्यम (4) अधम

अधमकाव्य का उदाहरण—

मित्रातिपुत्रनेत्राय त्रयीशतवंशवे।

गोत्रारिगोत्रजत्राय गोत्राये ते नमो नमः॥

68. “यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणम्”

जगन्नाथमते तत् भवति—

- (a) मध्यमकाव्यम्
(b) उत्तमोत्तमकाव्यम्
(c) उत्तमकाव्यम्
(d) अधमकाव्यम्

उत्तर (c) – आचार्य जगन्नाथ ने उत्तम काव्य का लक्षण इस प्रकार किया है।

“यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणम्

इसका उदाहरण— राघव विरह ज्वाला सन्तापितसध्यशैलशिखरेषु।
शिशिरे सुखं शयाना कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय॥

69. कौटिल्यार्थशास्त्रोल्लेखानुसारं एषु कः कोपात् विननाश इति उल्लिखितः?

- (a) अजबिन्दुः (b) रावणः
(c) करालः (d) जनमेजयः

उत्तर (d) – कौटिल्य अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण 150 अध्याय 180 प्रकरण हैं इसमें 6000 श्लोक हैं। इस शास्त्र के अनुसार जनमेजय के कोप से विनाश का उल्लेख है। राजा जनमेजय ने ‘नागयज्ञ’ किया था।

70. कौटिल्यार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः, सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः का विद्या प्रोक्ता ?

- (a) आन्वीक्षिकी (b) त्रयी
(c) वार्ता (d) दण्डनीतिः

उत्तर (a) – कौटिल्य अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम विद्या विषयक विचार करते हुए चार विद्याओं का उल्लेख किया गया है—

- (1) आन्वीक्षिकी
(2) त्रयी
(3) वार्ता
(4) दण्डनीति

आन्वीक्षिकी विद्या-सर्वविद्यानां प्रदीपः, सर्वकर्मणाम् उपायः सर्वधर्माणां च आश्रयः प्रोक्ता।

71. कौटिल्यार्थशास्त्रे एतत् वैश्यस्य स्वधर्मो न भवति —

- (a) याजनम् (b) दानम्
(c) अध्ययनम् (d) यजनम्

उत्तर (a) – कौटिल्य के अर्थशास्त्र में ब्राह्मणादि चारों वर्णों के कर्तव्य और कर्म बताये गये हैं- वैश्य का धर्म- “पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥ याजनं अर्थात् यज्ञ कराना ब्राह्मण का धर्म है।

72. याज्ञवल्क्यमते गृहीतवेतनः कर्म त्यजन् —

- (a) चतुर्गुणमावहेत् (b) त्रिगुणमावहेत्
(c) पञ्चगुणमावहेत् (d) द्विगुणमावहेत्

उत्तर (d) – याज्ञवल्क्य मते गृहीतवेतनः कर्मत्यजन द्विगुणमावहेत्। अर्थात् मिथ्या अभियोग लगाने वाला उस धन के दूना धन दण्डस्वरूप वहन करे।

73. स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः ।

अर्थशास्त्रतु बलवद् इति स्थितिः ॥

— याज्ञवल्क्यसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत ।

- (a) राजादेशः (b) धर्मशास्त्रम्
(c) नृपस्येच्छा (d) नीतिशास्त्रम्

उत्तर (b) – याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहार अध्याय में यह बताया गया है कि दो स्मृतियों के विरोध होने पर व्यवहार से किया गया न्याय बलवान् होता है और अर्थशास्त्र की अपेक्षा धर्मशास्त्र बलवान् होता है- स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः, अर्थशास्त्रात् बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः॥

74. मनुसंहितानुसारं एषु कस्य क्रोधजव्यसने गणनं न भवति—

- (a) दिवास्वप्नस्य
(b) वाक्पारुष्यस्य
(c) साहसस्य
(d) दण्डपारुष्यस्य

उत्तर (a) – मनुस्मृति में आठ प्रकार के क्रोध को बताया गया है ये व्यसने हैं- (1) चुगुली करना (2) साहस (3) द्रोह (4) ईर्ष्या (5) दूसरों में दोष देखना (6) दूसरे के धन को छीन लेना (7) गालियाँ देना (8) दूसरों से बुरा व्यवहार करना है।

75. मनुसंहितातः रिक्तं स्थानं पूरयत —

वेदः स्मृतिः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

- (a) उपकारः (b) अपकारः
(c) सदाचारः (d) परम्परा

उत्तर (c) – मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में धर्म के चार भेद/प्रकार बताये गये हैं—

वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार तथा जिस आचरण को करने से अपना मन प्रसन्न होता है। वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, नवम्बर-2017

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् परिमिताः (50) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. ऋग्वेदे प्रथमसूक्तस्य द्रष्टा कः?

- (a) कण्वः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दा (d) गृत्समदः

Ans : (c) ऋग्वेदे प्रथमसूक्तस्य द्रष्टा मधुच्छन्दा ऋषिः अस्ति। अर्थात् ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के द्रष्टा ऋषि मधुच्छन्दा हैं। ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त है। प्रत्येक मण्डल के अलग-2 ऋषि हैं। ऋग्वेद में 10 मण्डल 1028 सूक्त तथा 10552 मन्त्र हैं।

2. सायणाचार्येण कस्य वेदस्य व्याख्यानं सर्वान्ते कृतम्?

- (a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (d) सायणाचार्येण अथर्ववेदस्य व्याख्यानं सर्वान्ते कृतम् अर्थात् आचार्य सायण ने सबसे अन्त में अथर्ववेद की व्याख्या किया। इन्होंने सबसे पहले ऋग्वेद तदनन्तर यजुर्वेद तथा सामवेद की भी व्याख्या किया।

3. 'स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्'—इति कुत्र वर्णितम्?

- (a) इन्द्रसूक्ते (b) पितृसूक्ते
(c) हिरण्यगर्भसूक्ते (d) नासदीयसूक्ते

Ans : (d) 'स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्' इति नासदीय सूक्ते वर्णितम् अर्थात् 'स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्' इसका वर्णन नासदीय सूक्त में है।

4. 'ऋग्वेदे' रुशद्वत्सा' इति कस्या विशेषणम्?

- (a) सरस्वत्याः (b) उषसः
(c) नद्याः (d) रात्र्याः

Ans : (b) ऋग्वेदे 'रुशद्वत्सा' इति उषसः विशेषणमस्ति। उषस् घुस्थानीय देवता है। आकाश की पुत्री, सूर्य की पत्नी एवं रात्रिबहन के रूप में ऋग्वेद में उषस् का वर्णन प्राप्त होता है। ऋग्वेद में लगभग 20 सूक्तों में इसकी स्तुति की गई है।

5. सप्तत्नक्षयणो मणिः कस्मिन् सूक्ते उपदिश्यते?

- (a) पृथिवीसूक्ते (b) इन्द्रसूक्ते
(c) राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्ते (d) सोमसूक्ते

Ans : (c) सप्तत्नक्षयणो मणिः राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्ते उपदिश्यते अर्थात् 'सप्तत्नक्षयणो मणिः' का वर्णन राष्ट्राभिवर्द्धनसूक्त में है।

6. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्' — इत्यत्र उवटमतेन 'दैवम्' पदस्य कोऽर्थः?

- (a) देवो विज्ञानात्मा सोऽनेन गृह्यत इति दैवम्
(b) देवो ज्ञानकर्ता सोऽनेन ज्ञानी इति दैवम्
(c) देवो यज्ञे एव दीप्यते तद् द्रव्यम् दैवम्
(d) देवो गृहे गृहे निर्मलीकरोति तज्जलं दैवम्

Ans : (a) 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवम्' इत्यत्र उवटमतेन 'दैवम्' पदस्य अर्थः अस्ति — देवो विज्ञानात्मा सोऽनेन गृह्यत इति दैवम्।

7. निम्नाङ्कितेषु प्रकृतिपाठः कः?

- (a) मालपाठः (b) रेखापाठः
(c) पदपाठः (d) दण्डपाठः

Ans : (c) पदपाठः प्रकृतिपाठः अस्ति।

8. निचृद्वायत्रीच्छन्दसि कियन्तो वर्णा भवन्ति पिङ्गलदिशा?

- (a) 22 (b) 23
(c) 25 (d) 24

Ans : (b) निचृद्वायत्रीच्छन्दसि त्रयोविंशतिः (23) वर्णाः भवन्ति।

9. 'रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्य'—इति कुत्र वर्णितम्?

- (a) सूर्यसूक्ते (b) यमयमीसूक्ते
(c) रात्रिसूक्ते (d) कालसूक्ते

Ans : (b) 'रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्य' इति यमयमी वर्णितम् अर्थात् 'रात्रीभिरस्या अहभिर्दशस्य' का वर्णन यमयमी सूक्त के अन्तर्गत हुआ है।

10. कठारण्यकं केन वेदेन सम्बद्धं वर्तते?

- (a) ऋग्वेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (d) कठारण्यकं कृष्णयजुर्वेदेन सम्बद्धं वर्तते। अर्थात् कठारण्यक कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है। यजुर्वेद की दो शाखायें हैं— (1) शुक्ल यजुर्वेद (2) कृष्ण यजुर्वेद।

11. 'इदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च'—इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?

- (a) पाणिनीयशिक्षायाम् (b) निरुक्ते
(c) ऋक्सामातिशाख्ये (d) सिद्धान्तकौमुद्याम्

Ans : (b) 'इदं विद्यास्थानं व्याकरणस्य कात्स्न्यं स्वार्थसाधकञ्च' इत्युक्तिः निरुक्ते प्राप्यते।

12. 'ओरायन'-ग्रन्थस्य लेखकः कः?

- (a) शङ्करपाण्डुरङ्गपण्डितः (b) बालगङ्गाधरतिलकः
(c) शङ्करबालकृष्णदीक्षितः (d) विन्टरनित्सः

Ans : (b) 'ओरायन' ग्रन्थस्य लेखकः बालगङ्गाधरतिलकः महोदयः सन्ति।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

13. 'दमूना' इति कस्य देवस्य विशेषणम्?

- (a) इन्द्रस्य (b) अग्नेः
(c) वरुणस्य (d) रुद्रस्य

Ans : (b) 'दमूना' इति अग्निदेवस्य विशेषणमस्ति। अग्नि ऋग्वेदीय देवताओं में सबसे प्रभावशाली देवता है। इसकी स्तुति लगभग 200 सूक्तों में की गई है। दो अरणियों के संघर्ष से जन्म होने के कारण इन्हें द्विमातृ कहा गया है। दमूना इसी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

14. 'य एक इद्धव्यः चर्षणीनामिन्द्रम्' - मन्त्रेऽस्मिन् कस्यार्थम् ?

- (a) भरद्वाजस्य (b) वामदेवस्य
(c) अत्रेः (d) कण्वस्य

Ans : (a) 'य एक इद्धव्यः चर्षणीनामिन्द्रम्' इति मन्त्रे भरद्वाजस्य कस्यार्थम्।

15. धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वावच्छब्दस्वरूपं किम्भवति?

- (a) पदसञ्ज्ञम् (b) प्रातिपदिकसञ्ज्ञम्
(c) संहितासञ्ज्ञम् (d) 'घि' सञ्ज्ञम्

Ans : (b) धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वावच्छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसञ्ज्ञं भवति यतोहि 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' अस्ति। धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त से भिन्न अर्थवान् शब्द प्रातिपदिक कहलाता है।

16. 'द्रोणो ब्रीहिः' इत्यत्र 'द्रोण' शब्दोत्तरप्रथमा विभक्तिः कस्मिन्नर्थे भवति?

- (a) प्रातिपदिकार्थमात्रे (b) लिङ्गमात्राधिक्ये
(c) परिमाणमात्राधिक्ये (d) वचनमात्रे

Ans : (c) 'द्रोणो ब्रीहिः' इत्यत्र 'द्रोण' शब्दोत्तरप्रथमा विभक्तिः परिमाणमात्राधिक्ये इति अर्थे भवति। 'द्रोणो ब्रीहिः' में द्रोण में प्रथमा विभक्तिः परिमाणमात्र में हुई है जबकि ब्रीहिः में प्रथमा 'प्रातिपदिकार्थ मात्र' से हुई है।

17. 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मकर्मकाणामणिकर्ता स णौ' इति सूत्रस्य प्रत्यवसानार्थे किमुदाहरणम् ?

- (a) आशयच्चातृत् देवान् (b) वेदमध्यापयद्विधिम्
(c) आसयत् सलिले पृथ्वीम् (d) वेदार्थं स्वानवेदयत्

Ans : (a) 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मकर्मकाणामणिकर्ता स णौ' इति सूत्रस्य प्रत्यवसानार्थे 'आशयच्चातृत् देवान्' उदाहरणमस्ति।

18. 'नमस्कुर्मो नृसिंहाय' इत्यत्र अप्रयुज्यमानस्य तुमुनः कर्मणि चतुर्थीविधायकम् अनुशासनं किमस्ति?

- (a) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्चा
(b) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(c) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः
(d) नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च

Ans : (c) 'नमस्कुर्मो नृसिंहाय' इत्यत्र अप्रयुज्यमानस्य तुमुनः कर्मणि चतुर्थीविधायकम् अनुशासनं 'क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः' अस्ति।

19. अष्टौ च दश चेति विग्रहे 'अष्टादश' इति प्रयोगे आकारान्तादेशः केन विधीयते?

- (a) 'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' इत्यनेन
(b) 'अष्टनः कपाले इविषि' इत्यनेन
(c) विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम्' इत्यनेन
(d) 'द्वयष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः' इत्यनेन

Ans : (d) अष्टौ च दश चेति विग्रहे 'अष्टादश' इति प्रयोगे आकारान्तादेशः 'द्वयष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः' इत्यनेन विधीयते।

20. 'परार्थाभिधानं वृत्तिः' इति वृत्तिलक्षणं कस्मिन् प्रयोगे न प्रवर्तते?

- (a) विद्यते (b) कुम्भकारः
(c) औपगवः (d) पीताम्बरः

Ans : (a) 'परार्थाभिधानं वृत्तिः' इति वृत्तिलक्षणं 'विद्यते' प्रयोगे न प्रवर्तते अर्थात् 'परार्थाभिधानं वृत्तिः' इस परिभाषा के आधार पर वृत्ति का लक्षण 'विद्यते' पद में घटित नहीं होता है।

21. 'हरि-शब्दस्य प्रकाशः' 'इतिहरि' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ती' त्यादिना कस्मिन्नर्थेऽव्ययीभावः?

- (a) विभक्त्यर्थे (b) शब्दप्रादुर्भावे
(c) यौगपद्ये (d) अर्थाभावे

Ans : (b) 'हरि-शब्दस्य प्रकाशः' 'इतिहरि' इत्यत्र 'अव्ययं विभक्ति' इत्यादिना 'शब्दप्रादुर्भावे' अव्ययीभावः समासः भवति। अर्थात् 'इतिहरि' में अव्ययीभाव समास शब्द प्रादुर्भाव के अर्थ में हुआ है।

22. 'यतश्च निर्धारणम्' इति सूत्रेण जातिविशिष्ट-समुदायादेकस्य निर्धारणे विहितायाः षष्ठ्याः किमुदाहरणम् ?

- (a) गवां कृष्णा बहुक्षीरा
(b) गच्छतां धावन् शीघ्रः
(c) नृणां द्विजः श्रेष्ठः
(d) छात्राणां मैत्रः पटु

Ans : (c) 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से जातिविशिष्ट से एक समुदाय के निर्धारण में प्रयुक्त षष्ठी विभक्ति का उदाहरण 'नृणां द्विजः श्रेष्ठः' है। 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र के आधार पर जब समुदाय से किसी का निर्धारण करना हो तो षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

23. चीनीभाषा निम्नलिखितेषु कस्मिन् वर्गे वर्तते?

- (a) शिल्पयोगात्मके
(b) अशिल्पयोगात्मके
(c) प्रशिल्पयोगात्मके
(d) अयोगात्मके

Ans : (d) चीनीभाषा निम्नलिखित में से अयोगात्मक वर्ग में सम्मिलित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

24. ग्रीकभाषा कस्य परिवारस्य भाषा वर्तते?

- (a) सामीपरिवारस्य
- (b) हामीपरिवारस्य
- (c) भारोपीयपरिवारस्य
- (d) बान्तूपरिवारस्य

Ans : (c) ग्रीकभाषा भारोपीयपरिवारस्य भाषा वर्तते।

25. निम्नलिखिताषु का भाषा 'केन्तुम्' वर्गस्य नास्ति?

- (a) ग्रीकभाषा
- (b) केल्टिकभाषा
- (c) जर्मनभाषा
- (d) रूसीभाषा

Ans : (d) निम्नलिखिताषु रूसीभाषा 'केन्तुम्' वर्गस्य नास्ति अर्थात् निम्नलिखित में से रूसीभाषा 'केन्तुम्' वर्ग की भाषा नहीं है।

26. 'अश्वः' इत्यस्य शब्दस्य 'अवेस्ता' भाषायां किं रूपं विद्यते?

- (a) अश्वः
- (b) अश्वो
- (c) अशपः
- (d) अस्पो

Ans : (d) अश्वः इत्यस्य शब्दस्य 'अवेस्ता' भाषायां 'अस्पो' रूपं विद्यते अर्थात् अवेस्ता भाषा में अश्व को 'अस्पो' कहा जाता है।

27. सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः किमुच्यते न्यायनवे?

- (a) अनुमतिः
- (b) उपमितिः
- (c) प्रत्यक्षम्
- (d) शब्दः

Ans : (b) सञ्ज्ञासञ्ज्ञिसम्बन्धप्रतीतिः उपमितिः उच्यते अर्थात् न्याय मत में सञ्ज्ञा और सञ्ज्ञी के सम्बन्ध की प्रतीति ही उपमिति है।

28. तुरी-वेमादिकं न्यायनये पटस्य कीदृशं कारणं मन्यते?

- (a) निमित्तकारणम्
- (b) समवायिकारणम्
- (c) समवाय्यसमवायिकारणम्
- (d) असमवायिकारणम्

Ans : (a) न्याय मत में तुरी-वेमादि का पट के साथ निमित्त कारण माना जाता है। कारण तीन बताए गये हैं - (1) समवायिकारण (2) असमवायिकारण (3) निमित्त कारण।

29. तर्कसङ्ग्रहदिशाअन्वय-व्यतिरेकदृष्टान्तरहितो हेत्वाभासः कः?

- (a) अनुपसंहारी
- (b) साधारणः
- (c) असाधारणः
- (d) विरुद्धः

Ans : (a) तर्कसङ्ग्रहदिशा अन्वय-व्यतिरेकदृष्टान्तरहितो हेत्वाभासः अनुपसंहारी भवति। अर्थात् अन्वय व्यतिरेक दृष्टान्तरहित हेत्वाभास अनुपसंहारी हेत्वाभास होता है।

30. 'वह्निनुष्णो द्रव्यत्वात्' इत्युदाहरणं कस्य हेत्वाभासस्य?

- (a) आश्रयासिद्धहेत्वाभासस्य
- (b) व्याप्यत्वासिद्धहेत्वाभासस्य
- (c) स्वरूपासिद्धहेत्वाभासस्य
- (d) बाधितहेत्वाभासस्य

Ans : (d) 'वह्निनुष्णो द्रव्यत्वात्' इत्युदाहरणं बाधितहेत्वाभासस्य उदाहरणमस्ति। अर्थात् 'वह्निनुष्णो द्रव्यत्वात्' यह बाधित हेत्वाभास का उदाहरण है।

31. वेदान्तसारानुसार 'नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपसनानां त्ववान्तरफलम्' किम्?

- (a) स्वर्गलोकप्राप्तिः
- (b) पितृलोकसत्यलोकप्राप्तिः
- (c) शरीरशुद्धिः
- (d) पापकर्मफलविनाशः

Ans : (b) वेदान्तसार के अनुसार नित्य नैमित्तिक प्रायश्चित्त और उपासना का अवान्तर फल अर्थात् गौण फल पितृलोक और सत्यलोक की प्राप्ति करना है।

32. वेदान्तसारस्य 'विद्वन्मनोरंजनी' इति नाम्न्याः टीकायाः रचयिता कोऽस्ति?

- (a) सदानन्दः
- (b) नृसिंह सरस्वती
- (c) रामतीर्थः
- (d) कृष्णतीर्थः

Ans : (c) वेदान्तसार की 'विद्वन्मनोरंजनी' नामक टीका के लेखक रामतीर्थ हैं।

33. विज्ञानमयकोशः किं भवति?

- (a) निर्गुणं ब्रह्म
- (b) सगुणं ब्रह्म
- (c) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धिः
- (d) ज्ञानेन्द्रियसहितं मन

Ans : (c) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धिः विज्ञानमयकोशः भवति अर्थात् पञ्चज्ञानेन्द्रिय एवं बुद्धि मिलकर विज्ञानमयकोश का निर्माण करती है।

34. 'अखण्डवस्त्वनवल्मबनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा' स्थितिरियं समाधेः कीदृशो विघ्नः?

- (a) विक्षेपः
- (b) कषायः
- (c) लयः
- (d) रसास्वादः

Ans : (c) 'अखण्डवस्त्वनवल्मबनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा' स्थितिरियं समाधेः लयः विघ्नः भवति।

35. सांख्यकारिकानुसारं सृष्टेरुत्पत्तिः कस्माद् भवति?

- (a) असतः
- (b) सतः
- (c) नासतः न सतः
- (d) पुरुषात्

Ans : (b) सांख्यकारिकानुसारं सृष्टेरुत्पत्तिः सतः भवति अर्थात् सांख्यकारिका के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति सत् से होती है।

36. पुरुषस्य सत्ता कस्मात् सिद्ध्यति?

- (a) कारणभावात्
- (b) कार्यभावात्
- (c) भोक्तृभावात्
- (d) उत्पत्तिभावात्

Ans : (c) सांख्य के अनुसार पुरुष की सत्ता भोक्ता होने के कारण सिद्ध होती है। 'पुरुषस्य सत्ता भोक्तृभावात् सिद्ध्यति।

37. सांख्यदर्शनानुसारं करणं कतिविधं वर्तते?

- (a) चतुर्दशविधम्
- (b) षोडशविधम्
- (c) एकादशविधम्
- (d) त्रयोदशविधम्

Ans : (d) सांख्यदर्शनानुसारं करणं त्रयोदशविधं वर्तते। पञ्चज्ञानेन्द्रियां, पञ्चकर्मेन्द्रियां, मनः, बुद्धि तथा अहंकार सांख्य के अनुसार ये 13 करण होते हैं।

38. 'स्वात्मक्षणं वृत्तिस्त्रयस्य सैषा भवत्यसामान्या' इत्यस्यां पङ्क्तौ 'त्रय' इत्यनेन पदेन किमभिधीयते?

- (a) बुद्धिः, अहङ्कारः मनश्च
- (b) मनः, ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (c) पञ्चतन्मात्राणि, पञ्चमहाभूतानि पञ्चप्राणाश्च
(d) पुरुषः अव्यक्तम् व्यक्तम् च

Ans : (a) 'स्वालक्षण्यं वृत्तिस्त्रयस्य सैषा भवत्यसामान्या' इत्यस्यां पङ्क्तौ 'त्रय' इति पदेन- बुद्धिः, अहङ्कारः मनश्च अभिधीयते।

39. समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) मेघदूतम्	(i) भट्टनारायणः
(B) रत्नावली	(ii) अश्वघोषः
(C) वेणीसंहारः	(iii) कालिदासः
(D) बुद्धिचरितम्	(iv) हर्षः
(A)	(B)	(C)	(D)
(a) (iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b) (iii)	(i)	(ii)	(iv)
(c) (iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d) (iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (c) समीची तालिका इस प्रकार है-

(a) मेघदूतम्	-	कालिदासः
(b) रत्नावली	-	हर्षः
(c) वेणीसंहार	-	भट्टनारायणः
(d) बुद्धिचरितम्	-	अश्वघोषः

40. बुद्धचरिते सिद्धार्थस्य हृदि संवेगोत्पत्तौ प्रथमं कारणं किं वर्णितम्।

- (a) रुग्णस्य दर्शनम् (b) वृद्धस्य दर्शनम्
(c) मृतस्य दर्शनम् (d) उद्यानस्य दर्शनम्

Ans : (b) बुद्धचरिते सिद्धार्थस्य हृदि संवेगोत्पत्तौ प्रथमं कारणं वृद्धस्य दर्शनम् अस्ति। अर्थात् बुद्धचरितम् महाकाव्य में सिद्धार्थ के हृदय में सबसे पहले संवेग की उत्पत्ति का कारण वृद्ध पुरुष का दर्शन है। यह महाकाव्य अश्वघोष विरचित है।

41. दशकुमारचरिते सुरतमञ्जर्याः उपाख्यानमस्ति-

- (a) राजवाहनचरिते (b) अपहारवर्मचरिते
(c) पुष्पोद्भवचरिते (d) उपहारवर्मचरिते

Ans : (a) दशकुमारचरिते सुरतमञ्जर्याः राजवाहनचरितस्य उपाख्यानम् अस्ति अर्थात् दशकुमारचरितम् में सुरतमञ्जरी का उपाख्यान राजवाहन के चरित वर्णन में है।

42. शिशुपालवधस्य सर्गसंख्या भवति-

- (a) ऊनविंशतिः (b) विंशतिः
(c) एकविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

Ans : (b) माघकृत शिशुपालवधम् महाकाव्य 20 सर्गों में विभक्त बृहत्त्रयी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें भगवान् श्री कृष्ण द्वारा चेदिनरेश शिशुपाल के वध का वर्णन है।

43. एषु किं खण्डकाव्यं भवति?

- (a) मेघदूतम् (b) शिशुपालवधम्
(c) कादम्बरी (d) किरातार्जुनीयम्

Ans : (a) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् खण्डकाव्य के अन्तर्गत आता है। जबकि शिशुपालवधम् एवं किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के अन्तर्गत परिगणित बृहत्त्रयी के ग्रन्थ है। तथा बाणभट्ट विरचित कादम्बरी गद्य काव्य के अन्तर्गत परिगणित है।

44. अभिज्ञानशाकुन्तले धीवरवृत्तान्तः कस्य उदाहरणम्?

- (a) प्रवेशकस्य (b) विष्कम्भकस्य
(c) अङ्गावतारस्य (d) अङ्गमुखस्य

Ans : (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में धीवरवृत्तान्त प्रवेशक का उदाहरण है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास विरचित प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है जो 7 अङ्कों में विभक्त है।

45. मृच्छकटिके चारुदत्तस्य पुत्रः अस्ति-

- (a) चन्दनकः (b) रोहितः
(c) रोहसेनः (d) आर्यकः

Ans : (c) शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् प्रकरण में चारुदत्त का पुत्र रोहसेन है। रोहसेन चारुदत्त की विवाहिता पत्नी धूता का पुत्र है। मृच्छकटिक में चारुदत्त एवं गणिका वसन्तसेना के प्रणय का वर्णन है।

46. "नारिकेलफलसम्मितं वचः" इति कस्य कवेः विषये प्रोक्तम्?

- (a) माघस्य (b) भारवेः
(c) कालिदासस्य (d) श्रीहर्षस्य

Ans : (b) "नारिकेलफलसम्मितं वचः" इति भारवेः विषये प्रोक्तम्। 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' यह कथन मल्लिनाथ का महाकवि भारवि के विषय में है।

47. साहित्यदर्पणानुसारेण एतेषु कस्य रूपकमध्ये गणना नास्ति?

- (a) प्रकरणस्य (b) त्रोटकस्य
(c) व्यायोगस्य (d) भाणस्य

Ans : (b) साहित्यदर्पण के अनुसार त्रोटक की गणना रूपक के अन्तर्गत नहीं होती है। रूपक दस (10) होते हैं जबकि उपरूपक अट्ठारह (18) माने गए हैं।

48. साहित्यदर्पणे "कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः" इति कस्य रसस्य वर्णः वर्णितः?

- (a) वीरस्य (b) हास्यस्य
(c) शृङ्गारस्य (d) शान्तस्य

Ans : (d) साहित्य दर्पण में "कुन्देन्दुसुन्दरच्छायः" इसमें शान्त रस का वर्णन किया गया है।

49. साहित्यदर्पणे साकल्येन कतिप्रकारा लक्षणा प्रोक्ता?

- (a) अशीतिः (b) षोडश
(c) द्वात्रिंशत् (d) अष्ट

Ans : (a) साहित्यदर्पणे साकल्येन अशीतिः लक्षणा प्रोक्ता अर्थात् साहित्यदर्पण में साकल्य ऋषि ने अस्सी (80) प्रकार की लक्षणा का वर्णन किया है।

50. साहित्यदर्पणानुसारेण रिक्तं स्थानं पूरयत-

_____ स्याद् योग्यताकाङ्क्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः।

- (a) लक्षणा (b) अभिधा
(c) व्यञ्जना (d) वाक्यम्

Ans : (d) वाक्यम् स्याद् योग्यताकाङ्क्षासक्तियुक्तः पदोच्चयः। अर्थात् साहित्यदर्पण में योग्यता आकांक्षा एवं आसक्ति से युक्त पद को वाक्य कहा गया है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, नवम्बर-2017

संस्कृत

व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

निर्देश : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चसप्तति (75) बहुविकल्पीय प्रश्नाः सन्ति। तेषु प्रतिप्रश्नमङ्कद्वयम्। सर्वे प्रश्ना उत्तरणीयाः।

1. 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' इति कस्य ऋग्वेदीयसूक्तस्य अंशः ?

- (a) अग्निसूक्तस्य (b) वाक्सूक्तस्य
(c) इन्द्रसूक्तस्य (d) नासदीयसूक्तस्य

Ans. (b) : 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' इति वाक्सूक्तस्य ऋग्वेदीयसूक्तस्य अंशोऽस्ति अर्थात् 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' यह मन्त्र वाक्सूक्त के ऋग्वेदीयसूक्त का भाग है।

2. 'हिरण्यगर्भसूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले आयाति?

- (a) प्रथमे (b) अष्टमे
(c) नवमे (d) दशमे

Ans. (d) : 'हिरण्यगर्भसूक्तम्' ऋग्वेदस्य दशमे मण्डले आयाति अर्थात् हिरण्यगर्भसूक्त का वर्णन ऋग्वेद के दशवें मण्डल में आया है। ऋग्वेद में दश (10) मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्र मिलते हैं। प्रत्येक मण्डल के अलग-अलग ऋषि हैं।

3. ऋग्वेदस्य भाष्यकारः कः ?

- (a) महीधरः (b) स्कन्दस्वामी
(c) हलायुधः (d) भट्टभास्करः

Ans. (b) : ऋग्वेदस्य भाष्यकारः स्कन्दस्वामी अस्ति अर्थात् ऋग्वेद के भाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं। ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से उपलब्ध होता है— (1) अष्टकक्रम (2) मण्डलक्रम।

4. 'ब्रात्यकाण्डम्' कस्मिन् वेदे प्राप्यते ?

- (a) अथर्ववेदे (b) सामवेदे
(c) ऋग्वेदे (d) यजुर्वेदे

Ans. (a) : 'ब्रात्यकाण्डम्' अथर्ववेदे प्राप्यते अर्थात् ब्रात्यकाण्ड अथर्ववेद में प्राप्त होता है। अथर्ववेद का 15 वाँ काण्ड ब्रात्यकाण्ड के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर ब्रात्य का अर्थ-ब्रह्म से है। इस काण्ड में ब्रह्मा के स्वरूप तथा उससे उत्पन्न सृष्टिक्रम का व्यवस्थित वर्णन है।

5. शुनः शेषस्य आख्यानं कुत्र प्राप्यते ?

- (a) ऐतरेयब्राह्मणे (b) तैत्तिरीयब्राह्मणे
(c) शतपथब्राह्मणे (d) ताण्ड्यब्राह्मणे

Ans. (a) : शुनः शेषस्य आख्यानं ऐतरेयब्राह्मणे प्राप्यते। अर्थात् शुनःशेषाख्यान का वर्णन ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण है। ऐतरेय ब्राह्मण 40 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके रचयिता महीदास ऐतरेय हैं।

6. वेदस्य नासिकास्थानीयमङ्गं किमस्ति ?

- (a) शिक्षा (b) ज्योतिषम्
(c) निरुक्तम् (d) व्याकरणम्

Ans. (a) : वेदस्य नासिकास्थानीयमङ्गं शिक्षाऽस्ति अर्थात् वेदपुरुष की नासिका को शिक्षा कहा गया है। षड्वेदाङ्गों के विषय में इस इस प्रकार वर्णन मिलता है –

“छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्माद् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

7. 'यज्ञस्य देवमृत्विजम्' इत्यत्र 'देवम्' इति पदं कीदृशमस्ति?

- (a) आद्युदात्तम् (b) मध्योदात्तम्
(c) अन्तोदात्तम् (d) सर्वानुदात्तम्

Ans. (c) : 'यज्ञस्य देवमृत्विजम्' इत्यत्र 'देवम्' इति पदं अन्तोदात्तमस्ति।

8. स्वरितपरे अनुदात्ताः किमुच्यन्ते ?

- (a) उदात्ताः (b) स्वरिताः
(c) प्रचयाः (d) अनुदात्ताः

Ans. (c) : स्वरितपरे अनुदात्ताः प्रचयाः उच्यन्ते।

9. 'भवाति' इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति?

- (a) लेट् (b) लोट्
(c) लङ् (d) लुङ्

Ans. (a) : 'भवाति' इति लेट् लकारे रूपमस्ति अर्थात् 'भवाति' लेट् लकार का रूप है। यह लकार वेदों में प्रयुक्त होता है।

10. सामवेदस्य ब्राह्मणमस्ति—

- (a) गोपथब्राह्मणम् (b) शांखायनब्राह्मणम्
(c) संहितोपनिषद्ब्राह्मणम् (d) शतपथब्राह्मणम्

Ans. (c) : सामवेदस्य संहितोपनिषद् ब्राह्मणमस्ति। अर्थात् संहितोपनिषद् ब्राह्मण सामवेद का ब्राह्मण है। यह ब्राह्मण कैथुमीय शाखा से सम्बन्धित है। सामवेद की तीन शाखाएँ प्राप्त होती हैं –

- 1- कैथुमीय शाखा
2- राणायनीय शाखा
3- जैमिनीय शाखा।

11. बृहदारण्यकम् केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans. (b) : बृहदारण्यकम् यजुर्वेदेन सम्बद्धमस्ति। अर्थात् बृहदारण्यक यजुर्वेद से सम्बन्धित है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं—

- 1- शुक्ल यजुर्वेद
2- कृष्ण यजुर्वेद।
बृहदारण्यक शुक्ल यजुर्वेद का आरण्यक है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

12. 'अरा इव रथनाभौ संहिता यत्र नाड्यः'-इत्युक्तिः कुत्र विद्यते ?

- (a) मुण्डकोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) छान्दोग्योपनिषदि

Ans. (a) : 'अरा इव रथनाभौ संहिता यत्र नाड्यः' इत्युक्तिः मुण्डकोपनिषदि विद्यते। अर्थात् 'अरा इव रथनाभौ संहिता यत्र नाड्यः' यह उक्ति मुण्डकोपनिषद् में प्राप्त होता है।

13. अतिमुक्तिः कुत्र वर्णिता ?

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) ऐतरेयोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) प्रश्नोपनिषदि

Ans. (c) : 'अतिमुक्तिः' बृहदारण्यकोपनिषदि वर्णिता। अर्थात् 'अतिमुक्तिः' का वर्णन बृहदारण्यक उपनिषद् में है।

14. 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्'-इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते ?

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) छान्दोग्योपनिषदि (d) प्रश्नोपनिषदि

Ans. (c) : 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्' इत्युक्तिः ऐतरेयोपनिषदि प्राप्यते। अर्थात् 'आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्' इस उक्ति का वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् में है।

नोट- यूजीसी नेट के अनुसार विकल्प 'c' माना गया है।

15. 'अन्नं बहु कुर्वति'-अयमुपदेशः कुत्र प्राप्यते?

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) छान्दोग्योपनिषदि (d) प्रश्नोपनिषदि

Ans. (b) : 'अन्नं बहु कुर्वति' अयमुपदेशः तैत्तिरीयोपनिषदि प्राप्यते। तैत्तिरीयोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की उपनिषद् है। इसमें तीन (3) अध्याय हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं -

1- शिक्षावल्ली 2- ब्रह्मानन्दवल्ली 3- भृगुवल्ली।

16. 'मृगो न भीमः' कुचरो गिरिष्ठा' इत्यत्र 'न' कीदृशः ?

- (a) उपमार्थीयः (b) प्रतिषेधार्थीयः
(c) विचिकित्सार्थीयः (d) समुच्चयार्थः

Ans. (a) : 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा' इत्यत्र 'न' इति उपमार्थीयोऽस्ति। अर्थात् 'मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा' यहाँ पर 'न' शब्द उपमार्थीयः है।

17. 'पुरुषः' इति पदस्य निर्वचने किं नास्ति?

- (a) पुरुषादः (b) परुषः
(c) पुरिशयः (d) पूरयते:

Ans. (b) : 'पुरुषः' इति पदस्य निर्वचने परुषः नास्ति।

18. 'धर्मसूत्रम्' केन वेदाङ्गेन सह सम्बद्धमस्ति?

- (a) शिक्षावेदाङ्गेन (b) कल्पवेदाङ्गेन
(c) व्याकरणवेदाङ्गेन (d) निरुक्तवेदाङ्गेन

Ans. (b) : 'धर्मसूत्रम्' कल्पवेदाङ्गेन सह सम्बद्धमस्ति अर्थात् धर्मसूत्र कल्पवेदाङ्ग से सम्बन्धित है। कल्प से सम्बन्धित चार (4) सूत्र मिलते हैं -

- 1- श्रोतसूत्र
2- गृह्यसूत्र
3- धर्मसूत्र
4- श्रुत्वसूत्र।

19. निरुक्तदिशा पदजातानि कति सन्ति?

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans. (b) : निरुक्तदिशा पदजातानि चत्वारि सन्ति। अर्थात् निरुक्तदिशा से चार पद (नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात) उत्पन्न होते हैं। जो इस प्रकार हैं- नाम, अख्यात्, उपसर्ग और निपात। इसके अलावा निरुक्त के पाँच (5) प्रतिपाद्य विषय हैं -

- (1) वर्णागम
(2) वर्णविपर्यय
(3) वर्णविकार
(4) वर्णनाश
(5) धातु का अर्थ ज्ञापन।

20. अथर्ववेदस्य किं गृह्यसूत्रम् अस्ति?

- (a) खादिरगृह्यसूत्रम् (b) कात्यायनगृह्यसूत्रम्
(c) कौशिकगृह्यसूत्रम् (d) वैखानसगृह्यसूत्रम्

Ans. (c) : अथर्ववेदस्य कौशिकगृह्यसूत्रम् अस्ति। अर्थात् कौशिकगृह्यसूत्र अथर्ववेद से सम्बन्धित है। इसके अलावा खादिरगृह्यसूत्र सामवेद से सम्बन्धित है। जबकि कात्यायनगृह्यसूत्र यजुर्वेद से सम्बन्धित है।

21. ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रवक्ता कः अस्ति?

- (a) शौनकः (b) उवटः
(c) कात्यायनः (d) अनन्तभट्ट

Ans. (a) : ऋग्वेदप्रातिशाख्यस्य प्रवक्ता शौनकः अस्ति। अर्थात् ऋग्वेद प्रातिशाख्य के प्रवक्ता शौनक ऋषि हैं।

22. 'स्वरान्तरे व्यञ्जनानि' कस्याङ्गं भवन्ति ऋक्प्रातिशाख्यमते ?

- (a) पूर्वस्य (b) उत्तरस्य
(c) अपूर्वस्य (d) मध्यस्य

Ans. (b) : 'स्वरान्तरे व्यञ्जनानि' उत्तरस्याङ्गं भवन्ति ऋक्प्रातिशाख्यमते अर्थात् ऋक्प्रातिशाख्य के मत में स्वर के अन्त में व्यञ्जनों को उत्तराङ्ग कहते हैं।

23. ऋक्प्रातिशाख्यदिशा व्यञ्जनानामाद्याः किं भवन्ति ?

- (a) अन्तःस्थाः (b) ऊष्माणः
(c) सन्ध्यक्षराणि (d) स्पर्शाः

Ans. (d) : ऋक्प्रातिशाख्यदिशा व्यञ्जनानामाद्याः स्पर्शाः भवन्ति। अर्थात् ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार व्यञ्जनों में सबसे पहले स्पर्श वर्ण आते हैं।

24. ऋक्प्रातिशाख्यमतेन वक्ष्यमाणेषु सोष्मवर्णः कः ?

- (a) ह (b) श
(c) ष (d) झ

Ans. (d) : ऋक्प्रातिशाख्यमतेन वक्ष्यमाणेषु सोष्मवर्णः 'झ' अस्ति।

25. 'आर्षिषेणः' इत्यत्र कियान् स्वरभक्तिकालः ?

- (a) एकमात्राकालः (b) अर्धमात्राकालः
(c) पादमात्राकालः (d) द्विमात्राकालः

Ans. (c) : 'आर्षिषेणः' इत्यत्र पादमात्राकालः स्वरभक्तिकालः।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

26. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वरितस्वरोच्चारणकाले हस्तप्रदर्शन विधिः कुत्र विधातव्यः?

- (a) कर्णमूले (b) हृदि
(c) मूर्ध्नि (d) सर्वास्ये

Ans. (a) : पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वरितस्वरोच्चारणकाले हस्तप्रदर्शन विधिः कर्णमूले विधातव्यः अर्थात् पाणिनीयशिक्षा के अनुसार स्वरित स्वर के उच्चारण के समय हस्तप्रदर्शनविधि (हाथ) कर्ण के मूल में होता है।

27. कथं ज्ञायते महाभाष्यदृष्ट्या 'सिद्धः शब्दोऽर्थः सम्बन्धश्चे' ति?

- (a) अर्थक्रियार्थिभ्यः (b) लोकतः
(c) शास्त्रतः (d) कोशतः

Ans. (b) : लोकतः ज्ञायते महाभाष्यदृष्ट्या 'सिद्धः शब्दोऽर्थः सम्बन्धश्चे' ति।

28. 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च ।

वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥'

— अनया कारिकया भर्तृहरिः किं बोधितवान् ?

- (a) वर्णानां सत्यत्वम् (b) पदानां सत्यत्वम्
(c) वाक्यस्य सत्यत्वम् (d) सर्वेषां सत्यत्वम्

Ans. (c) : 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च । वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥' अनया कारिकया भर्तृहरिः 'वाक्यस्य सत्यत्वम् बोधितवान्। अर्थात् उपर्युक्त कारिका में भर्तृहरि महोदय ने वाक्य की सत्यता को बताया है।

29. 'एध्' धातोः लुङि उत्तमपुरुषैकवचने कः प्रयोगः ?

- (a) ऐधिषि (b) एधिषीय
(c) ऐधिष्ये (d) ऐधे

Ans. (a) : 'एध्' धातोः लुङि उत्तमपुरुषैकवचने 'ऐधिषि' प्रयोग भवति। अर्थात् एध् धातु के लुङ् लकार उत्तमपुरुष एकवचन में 'ऐधिषि' रूप बनेगा।

30. 'भवती' त्यर्थे 'यत्' प्रत्ययान्तः कः प्रयोगः ?

- (a) भव्यम् (b) भव्यः
(c) भाव्यम् (d) भाव्यः

Ans. (b) : 'भवती' इत्यर्थे 'यत्' प्रत्ययान्तः 'भव्यः' प्रयोगः भवति।

31. एषु 'मतुप्' प्रत्ययान्तो शुद्धः प्रयोगोऽन्वेष्टव्यः

- (a) यववान् (b) ज्ञानवान्
(c) विद्यावान् (d) लक्ष्मीवान्

Ans. (a) : एषु 'मतुप्' प्रत्ययान्तो शुद्धः प्रयोगः 'यववान्' अस्ति अर्थात् दिये गए विकल्पों में यववान् में 'यव्' मादुपधायाश्च मतोर्वाऽयवादिभ्यः सूत्र से मतुप् प्रत्यय होकर यववान् बना है।

32. स्त्रियां 'सीमन्' शब्दस्य प्रथमायां कः प्रयोगो भवति?

- (a) सीमन् (b) सीमनी
(c) सीमा (d) सीमाना

Ans. (c) : स्त्रीलिङ्ग 'सीमन्' का प्रथमा विभक्ति एकवचन में रूप सीमा होगा इसके रूप इस प्रकार चलते हैं—
प्रथमा विभक्ति सीमा सीमानौ सीमानः
द्वितीया विभक्ति सीमानम् सीमानौ सीमन्ः

33. 'वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते' इत्यत्रात्मने पदविधायकं सूत्रं किम् ?

- (a) भावकर्मणोः (b) अकर्मकाच्च
(c) कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि (d) भुजोऽनवने

Ans. (d) : 'वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते' इत्यत्र आत्मनेपद विधायकं सूत्रं 'भुजोऽनवने' अस्ति। अर्थात् 'वृद्धो जनो दुःखशतानि भुङ्क्ते' इस वाक्य में आत्मने पद विधायक सूत्र 'भुजोऽनवने' है।

34. 'आख्यातोपयोगे' इत्यत्र प्रयुक्तस्योपयोगशब्दस्य कोऽर्थः ?

- (a) वक्ता
(b) नियमपूर्वकविद्यास्वीकारः
(c) नियतकालं भृत्या स्वीकरणम्
(d) अन्यकर्तृकोऽभिलाषः

Ans. (b) : 'आख्यातोपयोगे' इत्यत्र प्रयुक्तस्योपयोगशब्दस्य अर्थ अस्ति— 'नियमपूर्वकविद्यास्वीकारः।' अर्थात् 'आख्यातोपयोगे' सूत्र के आधार पर जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाए उसमें पञ्चमी विभक्ति है।

35. 'अरबी' भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषा अस्ति?

- (a) सामीपरिवारस्य (b) हामीपरिवारस्य
(c) काकेशीपरिवारस्य (d) हितीपरिवारस्य

Ans. (a) : 'अरबी' भाषा सामीपरिवारस्य भाषा अस्ति अर्थात् 'अरबी' सामीपरिवार की भाषा है।

36. कलिङ्गराजखारवेलस्य उल्लेखः कस्मिन्नभिलेखे वर्तते?

- (a) एहोले-शिलालेखे (b) हाथीगुम्फालेखे
(c) गिरनारलेखे (d) जूनागढलेखे

Ans. (b) : कलिङ्गराजखारवेलस्य उल्लेखः हाथीगुम्फा अभिलेखे वर्तते। अर्थात् कलिङ्गराजखारवेल का उल्लेख हाथीगुम्फा अभिलेख में है।

37. निम्नलिखितेषु कस्यैकोऽभिलेखो यूनानीलिप्यां वर्तते?

- (a) समुद्रगुप्तस्य (b) पुलकेशिनः
(c) अशोकस्य (d) रुद्रदासः

Ans. (c) : निम्नलिखितेषु अशोकस्य अभिलेखो यूनानीलिप्यां वर्तते। अर्थात् निम्नलिखित में से अशोक के अभिलेख यूनानी लिपि में है।

38. अधोलिखितानां 'केन सह कस्य सम्बन्ध' इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) नैयायिकाः	(i) प्रामाण्यं स्वतोऽप्रामाण्यं परतः
(B) पूर्वमीमांसकाः	(ii) प्रामाण्याप्रामाण्ये परतः
(C) जैनाः	(iii) अप्रामाण्यं स्वतः प्रामाण्यं परतः
(D) बौद्धाः	(iv) प्रामाण्याप्रामाण्ये स्वतः

	A	B	C	D
(a)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (a) : समीचीन तालिका इस प्रकार है -

(a) नैयायिकाः	-	(i) प्रामाण्याप्रामाण्ये परतः
(b) पूर्वमीमांसकाः	-	(ii) प्रामाण्यं स्वतोऽप्रामाण्यं परतः
(c) जैनाः	-	(iii) प्रामाण्याप्रामाण्ये स्वतः
(d) बौद्धाः	-	(iv) अप्रामाण्यं स्वतः प्रामाण्यं परतः

39. तर्कसंङ्ग्रहदीपिकायामीश्वरस्य लक्षणं किमुक्तम् ?

(a) ज्ञानाधिकरणत्वम्	(b) नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्
(c) प्रत्यक्षग्राह्यत्वम्	(d) सुखादिमत्त्वम्

Ans. (b) : तर्कसंङ्ग्रहदीपिकायाम् ईश्वरस्य लक्षणं 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इत्युक्तम्। अर्थात् तर्कसंग्रह दीपिका में ईश्वर का लक्षण 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इस प्रकार दिया गया है।

40. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरीत्याऽनुमितौ व्याप्तिज्ञानं किम्भवति ?

(a) व्यापारः	(b) परामर्शः
(c) पक्षः	(d) करणम्

Ans. (d) : न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीरीत्याऽनुमितौ व्याप्तिज्ञानं करणं भवति। अर्थात् न्यायसिद्धान्त मुक्तावलीरीति अनुमिति में व्याप्तिज्ञान 'करण' होता है।

41. 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणो लौगाक्षिभास्करेण 'अर्थ' पदोपादानं किमर्थम् ?

- | |
|--|
| (a) स्वर्गादिप्रयोजनेऽतिव्याप्तिवारणाय |
| (b) भोजनादावतिव्याप्तिवारणाय |
| (c) श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय |
| (d) हस्तप्रक्षालनादावतिव्याप्तिवारणाय |

Ans. (c) : 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः' इति धर्मलक्षणे लौगाक्षिभास्करेण 'अर्थ' पदोपादानं श्येनयागादावतिव्याप्तिवारणाय अर्थमस्ति।

42. बौद्धानां कति प्रस्थानानि प्रसिद्धानि सन्ति ?

(a) चत्वारि	(b) त्रीणि
(c) पञ्च	(d) षड्

Ans. (a) : बौद्धानां चत्वारि प्रस्थानानि प्रसिद्धानि सन्ति। अर्थात् बौद्धों के चार प्रस्थान प्रसिद्ध हैं- (1) दुःख (2) दुःख समुदाय (3) दुःख निरोध (4) दुःख निरोधगामी।

43. बौद्धदर्शनानुसारं चित्तस्कन्ध कतिविधः ?

(a) चतुर्विधः	(b) पञ्चविधः
(c) षड्विधः	(d) सप्तविधः

Ans. (c) : बौद्धदर्शनानुसारं चित्तस्कन्धः षड्विधः अर्थात् बौद्धदर्शन के अनुसार चित्तस्कन्ध पाँच प्रकार के होते हैं चित्त स्कन्ध के पाँचो नाम- रूप स्कन्ध, विज्ञान स्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संज्ञा स्कन्ध और संस्कार स्कन्ध।

44. 'ईक्षतेर्नाशब्दम्' इत्यस्मिन् सूत्रे निम्नलिखितेषु शाङ्करभाष्यानुसारं किं मतं निरस्यते ?

- | |
|-------------------------------------|
| (a) ब्रह्म जगतः कारणमस्ति |
| (b) प्रधानं जगतः कारणमस्ति |
| (c) ब्रह्म सर्वज्ञमस्ति सर्वकारणात् |
| (d) ईक्षणशक्तिर्ब्रह्मणि नास्ति |

Ans. (b) : 'ईक्षतेर्नाशब्दम्' इत्यस्मिन् सूत्रे निम्नलिखितेषु शाङ्करभाष्यानुसारं 'प्रधानं जगतः कारणमस्ति' मतं निरस्यते।

45. 'तद् ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्तिजगदुत्पत्तिस्थितिलय-कारणम्' इत्यवबोधः शाङ्करभाष्यानुसारं कस्माद् भवति ?

(a) प्रत्यक्षदर्शनात्	(b) वेदान्तशास्त्रात्
(c) जगद्वैचित्र्यात्	(d) कारणकार्यभावात्

Ans. (b) : 'तद् ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्तिजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणम्' इत्यवबोधः शाङ्करभाष्यानुसारं 'वेदान्तशास्त्रात्' भवति।

46. 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' इतिलक्षणां योगसूत्रे कस्य विद्यते ?

(a) अविद्यायाः	(b) अभिनिवेशस्य
(c) अस्मितायाः	(d) रागस्य

Ans. (c) : 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' इतिलक्षणां योगसूत्रे अस्मितायाः विद्यते अर्थात् 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता' यह लक्षण योगसूत्र में 'अस्मिता' का है। 'योगसूत्र' महर्षि पतञ्जलि का बहुप्रसिद्ध ग्रन्थ है।

47. वेदान्तसारानुसारं अनुबन्धे किं न गण्यते ?

(a) अधिकारी	(b) विषयः
(c) साधनानि	(d) सम्बन्धः

Ans. (c) : वेदान्तसारानुसारं अनुबन्धे साधनानि न गण्यते अर्थात् वेदान्तसार के अनुबन्ध चतुष्टय में साधन की गिनती नहीं होती है क्योंकि अनुबन्ध चतुष्टय के अन्तर्गत - 1- अधिकारी 2- विषय 3- सम्बन्ध एवं 4- प्रयोजन आते हैं।

48. वेदान्तदर्शनानुसारं व्यष्ट्युपहितं चैतन्यं किमुच्यते ?

(a) ईश्वरः	(b) प्राज्ञः
(c) आत्मा	(d) ब्रह्म

Ans. (b) : वेदान्तदर्शनानुसारं व्यष्ट्युपहितं चैतन्यं 'प्राज्ञः' इति उच्यते अर्थात् वेदान्त दर्शन के अनुसार व्यष्टि से उपहित चैतन्य को प्राज्ञ कहा जाता है।

49. 'पुद्गलः' इति शब्दः कस्य दर्शनस्य वर्तते ?

(a) बौद्धदर्शनस्य	(b) जैनदर्शनस्य
(c) सांख्यदर्शनस्य	(d) वेदान्तदर्शनस्य

Ans. (b) : 'पुद्गलः' इति शब्द जैनदर्शनस्य वर्तते अर्थात् 'पुद्गल' यह शब्द जैनदर्शन से सम्बन्धित है। जैन दर्शन दो विभागों में विभक्त है -

- | |
|-----------|
| 1- हीनयान |
| 2- महायान |

50. जिनदत्तसूरिमते जिनः को भवितुमर्हति ?

(a) वेदवेदाङ्गविद्	(b) अष्टादशदोषेभ्यो मुक्तः
(c) तत्त्वज्ञानी	(d) जैनदर्शने दीक्षितः

Ans. (b) : जिनदत्तसूरिमते जिनः अष्टादशदोषेभ्यो मुक्तः भवितुमर्हति अर्थात् जिनदत्तसूरी के मत में अट्ठारह (18) दोषों से मुक्त व्यक्ति ही 'जिन' कहलाता है।

51. एषु किः रामायणाश्रितं न भवति ?

(a) पञ्चरात्रम्	(b) उत्तररामचरितम्
(c) महानाटकम्	(d) रघुवंशम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (a) : एषु 'पञ्चरात्रम्' रामायणाश्रितं न भवति अर्थात् दिये गए विकल्पों में से 'पञ्चरात्रम्' रामायण पर आश्रित नहीं है क्योंकि इसका उपजीव्य महाभारत है यह 'भास' के 13 नाटकों में से एक है, जो तीन अंकों में विभक्त है।

52. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति?

- (a) सभापर्व (b) भीष्मपर्व
(c) वनपर्व (d) शल्यपर्व

Ans. (b) : उपर्युक्त विकल्पों में से 'भीष्मपर्व' महाभारत में नहीं है। महाभारत अट्ठारह (18) पर्वों में विभक्त है। इसके रचयिता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास माने जाते हैं। इसके भीष्मपर्व में श्रीमद्भगवद्गीता का वर्णन है।

53. एषु किं महापुराणम् अस्ति?

- (a) कूर्मपुराणम् (b) साम्बपुराणम्
(c) एकाम्रपुराणम् (d) आदित्यपुराणम्

Ans. (a) : निम्नलिखित में से कूर्मपुराण महापुराण के अन्तर्गत आता है। पुराणों की संख्या अट्ठारह (18) है तथा उपपुराण भी अट्ठारह (18) माने गए हैं। पुराण का लक्षण इस प्रकार है -
सर्गश्चप्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्च लक्षणम्॥

54. काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये रीतिनिर्णयविषये अस्य नाम अस्ति-

- (a) सुवर्णनाभः (b) चित्राङ्गदः
(c) प्रचेतायनः (d) भरतः

Ans. (a) : काव्यमीमांसायां प्रथमेऽध्याये रीतिनिर्णयविषये 'सुवर्णनाभः' नाम अस्ति।

55. 'त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्' आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः॥ -अत्र मनसः प्रतिबिम्बनं केन सह वर्तते ?

- (a) हिमांशुना सह (b) कुसुमेन सह
(c) कुमुद्वत्या सह (d) मनोभवेन सह

Ans. (b) : 'त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्' आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः॥
अत्र मनसः प्रतिबिम्बनं 'कुसुमेन सह' वर्तते।

56. 'राघवविरहज्वालासन्तापितसह्यशैलशिखरेषु।

शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय॥'
- रसङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकोऽयमुदाहरणं भवति।

- (a) उत्तमोत्तमकाव्यस्य (b) उत्तमकाव्यस्य
(c) मध्यमकाव्यस्य (d) अधमकाव्यस्य

Ans. (b) : 'राघवविरहज्वालासन्तापितसह्यशैलशिखरेषु।
शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय॥'
रसङ्गाधरे प्रथमे आनने श्लोकः उत्तमकाव्यस्य उदाहरणं भवति।

57. 'सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषस्त्रयः' - इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते कस्य उदाहरणं भवति।

- (a) अविवक्षितवाच्यस्य (b) विवक्षितान्यपरवाच्यस्य

- (c) आक्षेपलाङ्कारस्य (d) विशेषोक्त्यलङ्कारस्य

Ans. (a) : 'सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषस्त्रयः'
इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते
अविवक्षितवाच्यस्य उदाहरणं भवति।

58. दशरूपकमते मुखसन्धेः अङ्गानि भवन्ति-

- (a) एकादाश (b) द्वादश
(c) त्रयोदश (d) चतुर्दश

Ans. (b) : दशरूपकमते मुखसन्धेः द्वादश (12) अङ्गानि भवन्ति अर्थात् दशरूपक के अनुसार मुखसन्धि के बारह (12) अङ्ग होते हैं।

59. धनञ्जयमते भूयसे फललाभाय औत्सुक्यमात्रं भवति-

- (a) आरम्भः (b) यत्नः
(c) प्राप्त्याशा (d) फलागमः

Ans. (a) : धनञ्जयमते भूयसे फललाभाय औत्सुक्यमात्रं आरम्भः भवति अर्थात् दशरूपककार धनञ्जय के मत में 'भूयसे फललाभाय औत्सुक्यमात्रम्' यह आरम्भ होता है।

60. कालक्रमानुसारं तालिका चिनुत-

- (A) जगन्नाथः (B) भरतः
(C) विश्वनाथ-कविराज (D) मम्मटः
(a) (B) (D) (C) (A)
(b) (B) (D) (A) (C)
(c) (B) (A) (C) (D)
(d) (A) (B) (C) (D)

Ans. (a) : कालक्रम के अनुसार सही तालिका इस प्रकार है -
1- भरतः (2) मम्मटः (3) विश्वनाथ-कविराजः 4- जगन्नाथः।

61. 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।

काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥'

-अत्र कुन्तकेन किं प्रतिपादितम् ?

- (a) काव्यलक्षणम् (b) काव्यहेतुः
(c) काव्यप्रयोजनम् (d) काव्यवैविध्यम्

Ans. (c) : 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।

काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥

यह आचार्य कुन्तक का काव्यप्रयोजन का लक्षण है।

62. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत-

- (A) चीयते बालिशस्यापि (a) मृच्छकटिकम्
सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
(B) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः। (b) कर्णभारम्
(C) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति (c) रघुवंशम्
गम्यताम्।
(D) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति। (d) मुद्राराक्षसम्
(A) (B) (C) (D)
(a) (iv) (i) (ii) (iii)
(b) (iv) (ii) (i) (iii)
(c) (iii) (iv) (i) (ii)
(d) (iv) (iii) (i) (ii)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (d) : समीचीन तालिका इस प्रकार है-

(a) चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः	(i) मुद्राराक्षसम्
(b) आसीत् स दोलाचलचित्तवृत्तिः	(ii) रघुवंशम्
(c) हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्	(iii) मृच्छकटिकम्
(d) हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति	(iv) कर्णभारम्

63. 'हतेऽपि भारे महत्स्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः'-शिरः'-शिशुपालवधे महाकाव्ये इयं वर्णना केन सम्बद्धा ?

(a) यमवाहनमहिषेण	(b) वरुणेन
(c) कुबेरेण	(d) इन्द्रेण

Ans. (a) : 'हतेऽपि भारे महत्स्त्रपाभरादुवाह दुःखेन भृशानतं शिरः'। शिशुपालवध में यह वर्णन यम के वाहन महिष (भैंसा) से सम्बन्धित है। शिशुपालवधमहाकाव्य 20 सर्गों में विभक्त माघ का एक मात्र प्रसिद्ध महाकाव्य है।

64. अभिज्ञानशाकुन्तले दुष्यन्तस्य पुरोहितः भवति-

(a) वातायनः	(b) सोमरातः
(c) गालवः	(d) मारीचः

Ans. (b) : 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में दुष्यन्त के पुरोहित का नाम सोमरात था। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' महाकवि कालिदास का सात (7) अङ्कों में विभक्त प्रसिद्ध नाटक है।

65. मुद्राराक्षसे चन्द्रगुप्तस्य अन्तः पुरचरः कञ्चुकी भवति-

(a) सिद्धार्थकः	(b) चन्दनदासः
(c) वैहीनरिः	(d) भगुरायणः

Ans. (c) : मुद्राराक्षसे चन्द्रगुप्तस्य अन्तः पुरचरः कञ्चुकी वैहीनरिः भवति।

66. दशकुमारचरिते अष्टमे उच्छ्वासे विदर्भदेशस्य भोजवंशभूषणस्य कस्य राज्ञः वर्णनमस्ति ?

(a) पुण्यवर्मणः	(b) मानसारस्य
(c) राजहंसस्य	(d) प्रहारवर्मण

Ans. (a) : 'दशकुमारचरितम्' के अष्टम् उच्छ्वास में विदर्भ देश के भोजवंश के भूषण स्वरूप 'पुण्यवर्म' नामक राजा का वर्णन है। 'दशकुमारचरितम्' दण्डी का प्रसिद्ध गद्यकाव्य है। इसमें दश राजकुमारों की कहानी का वर्णन है।

67. 'तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः'-रघुवंशेऽयं पद्यांशः केन सम्बद्धः ?

(a) श्रीरामेण	(b) रघुणा
(c) अजेन	(d) दिलीपेन

Ans. (d) : 'तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः' रघुवंशेऽयं पद्यांशः राजा दिलीपेन सम्बद्धोऽस्ति।

68. 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा'-नैषधचरिते इयमुक्तिर्भवति-

(a) दमयन्त्याः	(b) हंसस्य
(c) भीमस्य	(d) नलस्य

Ans. (b) : 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा'- नैषधीयचरितं महाकाव्य में यह उक्ति हंस की है। नैषधीयचरितं महाकाव्य 22 सर्गों में विभक्त श्री हर्ष का प्रसिद्ध महाकाव्य है इसकी गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है।

69. 'हर्षचरितम्' कतिषु उच्छ्वासेषु रचितमस्ति?

(a) त्रिषु	(b) पञ्चसु
(c) सप्तसु	(d) अष्टसु

Ans. (d) : 'हर्षचरितम्' अष्टसु उच्छ्वासेषु रचितमस्ति अर्थात् हर्षचरित 8 उच्छ्वासो में रचित है। यह बाण का प्रसिद्ध आख्यायिका ग्रन्थ है।

70. उत्तररामचरिते 'मैत्रावरुणिः' पदं कस्य कृते प्रयुक्तम् ?

(a) विश्वामित्रस्य कृते	(b) वसिष्ठस्य कृते
(c) अष्टावक्रस्य कृते	(d) ऋष्यशृङ्ग

Ans. (b) : उत्तररामचरिते 'मैत्रावरुणिः' पदं वसिष्ठस्य कृते प्रयुक्तम् अर्थात् 'उत्तररामचरितम्' नाटक में 'मैत्रावरुणिः' महर्षि वसिष्ठ के लिए कहा गया है। 'उत्तररामचरितं' भवभूति का 7 अङ्कों में विभक्त प्रसिद्ध नाटक है।

71. 'अलब्धलाभार्था लब्धपरिरक्षणी' इत्यादि-विशेषणानि कौटिलीयार्थशास्त्रे कां लक्षयन्ति ?

(a) भेदनीतिम्	(b) दण्डनीतिम्
(c) वार्ताम्	(d) आन्वीक्षीकी

Ans. (b) : 'अलब्धलाभार्था लब्धपरिरक्षणी' इत्यादि विशेषणानि कौटिलीयार्थशास्त्रे 'दण्डनीतिम्' लक्षयन्ति।

72. 'संख्यातार्थेषु कर्मसु नियुक्ता ये यथादिष्टमर्थं सविशेषं वा कुर्युः तानमात्यान् कुर्वीत' -कौटिलीयार्थशास्त्रेः।

(a) भारद्वाजस्य	(b) विशालाक्षस्य
(c) बाहुदन्तीपुत्रस्य	(d) पिशुनस्य

Ans. (d) : 'संख्यातार्थेषु कर्मसु नियुक्ता ये यथादिष्टमर्थं सविशेषं वा कुर्युः तानमात्यान् कुर्वीत' - कौटिलीयार्थशास्त्रेः पिशुनस्य एतद् मतमस्ति।

73. याज्ञवल्क्यमते पैतामहे द्रव्ये अनेकपितृकपुत्राणां भागविभागः कथं भवति ?

(a) पितृतः	(b) कामतः
(c) समभावतः	(d) ज्येष्ठकनिष्ठभावतः

Ans. (a) : याज्ञवल्क्यमते पैतामहे द्रव्ये अनेकपितृकपुत्राणां भागविभागः पितृतः भवति।

74. मनुमते वैश्यस्य मेखला कीदृशी कार्या?

(a) मुञ्जमयी	(b) मूर्वामयी
(c) शणतान्तवी	(d) कुशमयी

Ans. (c) : मनुमते वैश्यस्य मेखला शणतान्तवी कार्या।

75. मनुमते एतेषां कस्य मात्रा नृपस्य निर्माणे न गृहीता ?

(a) इन्द्रस्य	(b) चन्द्रस्य
(c) अश्विनो	(d) अनिलस्य

Ans. (c) : मनुमते एतेषां अश्विनोः मात्रा नृपस्य निर्माणे न गृहीता।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2018

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note: This paper contains hundred (100) objective type questions of two (2) marks each. All questions are compulsory.

सूचना: इस प्रश्नपत्र में सौ (100) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। अस्मिन् प्रश्नपत्रे एकं शतं परिमिताः (100) बहु-वैकल्पिकाः प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम् प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. शंखायन-शाखायाः सम्बन्धः वर्तते-

- (a) अथर्ववेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (b) अनेक पुराणों और पतञ्जलि के महाभाष्य में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख किया गया है। लेकिन शौनक के समय में ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ उपलब्ध थीं- शाकल, वाष्कल, शांखायन, आश्वलायन और माण्डूकायन। भर्तृहरि ने 'वाक्यपदीय' में 15 शाखाओं का उल्लेख किया है। लेकिन वर्तमान समय में इसकी केवल एक ही शाखा-वाष्कल शाखा उपलब्ध है। शांखायन ऋग्वेद की एक शाखा है।

2. 'द्राह्यायणश्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?

- (a) अथर्ववेदस्य (b) कृष्णयजुर्वेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) सामवेदस्य

Ans : (d) सामवेद को आर्चिकों में विभक्त किया गया है।

(1) पूर्वाचिक (2) उत्तरार्चिक

सामवेद में दो सूत्र मिलते हैं-

(1) श्रौतसूत्र (2) ग्रह्यसूत्र

सामवेद के श्रौतसूत्रों में- द्राह्यायण, लाट्यायन, आर्षेय, खादिर, जैमिनीय आदि नाम मिलते हैं।

अतः 'द्राह्यायणश्रौतसूत्रम्' सामवेदस्य विद्यते।

3. 'एतद्वचो जरितर्मापिमृष्टा आयत्तेघोषानुत्तरा युगानि' इति मन्त्रांशो वर्तते-

- (a) पुरुरवा- उर्वशीसूक्ते (b) सरमा-पणिसूक्ते
(c) विश्वामित्र-नदीसूक्ते (d) यम-यमीसूक्ते

Ans : (c) इस सूक्त का वर्णन ऋग्वेद के तृतीयमण्डल के आठवें मंत्र में किया गया है। जिसके देवता-नद्यः ऋषि-विश्वामित्र है। 1-12 मंत्रों में त्रिष्टुप् और अन्तिम में अनुष्टुप् छन्द है।

'एतद्वचो जरितर्मापिमृष्टा आयत्तेघोषानुत्तरा युगानि।'

विश्वामित्र के स्तुति वचनों को सुनकर नदियाँ कहती हैं- हे स्तुति करने वाले विश्वामित्र! जो तुम्हारा वचन है, इसको उच्च स्वर से घोषित करते हुये यह मत भूलो। उत्तरवर्ती यज्ञों के दिनों में अपने स्तुति गीतों में हमारी सेवा करो अर्थात् हमारी प्रशंसा करो।

4. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

- (a) 'यो रन्ध्रस्य चोदिता यः कृशस्य' - इन्द्रदेवता।
(b) 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम्' - अग्निसूक्तम्।
(c) 'विश्वं प्रतीची सप्रथः उदस्थात्' - सवितृसूक्तम्।
(d) 'अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्' - वाक्देवता।

Ans : (a) 'यो रन्ध्रस्य चोदिता यः कृशस्य'-

यह सूक्त ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के छठवें मंत्र का अंश है। इन्द्रसूक्त के ऋषि - गृत्समद

देवता - इन्द्र

छन्द - त्रिष्टुप

"जो समृद्धिशाली व्यक्ति को प्रेरणा देने वाला है, जो निर्धन को प्रेरणा देने वाला है। हे असुरों! वही इन्द्र है।"

अतः विकल्प (a) को छोड़कर अन्य विकल्प असंगत हैं।

5. 'यो वाघते ददाति सूनरं वसु'-अत्र 'वाघते' पदस्य कोऽर्थः-

- (a) यज्ञकर्त्रे (b) राज्ञे
(c) बाधकाय (d) सूर्याय

Ans : (a) 'यो वाघते ददाति सूनरं वसु' अत्र 'वाघते' पदस्य यज्ञकर्त्रे अर्थः।

'वाघते' शब्द यज्ञ कर्ता के लिए प्रयुक्त हुआ है।

6. नामाख्याताभ्यां वियुक्ता अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति कः मन्यते-

- (a) वार्ष्पायणिः (b) शाकटायनः
(c) गार्ग्यः (d) कौत्सः

Ans : (c) "नामाख्याताभ्यां वियुक्ता अपि उपसर्गाः वाचकाः भवन्तीति गार्ग्यः मन्यते।"

7. वेदेष्वेव प्रयुज्ये प्रत्ययः -

- (a) अर्ध्वै (b) तुमुन्
(c) क्त्वा (d) क्त

Ans : (a) वेदेष्वेव प्रयुज्ये प्रत्ययः- अर्ध्वै

तुमुन्, क्त्वा, क्त्वादि प्रत्यय लौकिक साहित्य में प्रयोग किये जाते हैं जबकि अर्ध्वै प्रत्यय का प्रयोग वैदिक संस्कृत साहित्य में किया गया है।

जैसे- गमध्वै, चरध्वै

गम् + अर्ध्वै चर् + अर्ध्वै (प्रत्यय)

म् + अ

ग मध्वै

र् + अ

चरध्वै

8. 'यस्मान्न ऋते विजयन्ते'- इत्यत्र 'यस्मात्' पदेन कः गृह्यते -

- (a) विष्णुः (b) रुद्रः
(c) इन्द्रः (d) वरुणः

Ans : (c) यह मंत्र ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में वर्णित इन्द्रसूक्त (2.12) के नवें मंत्र से उद्धृत है। 'यस्मात्' इन्द्र के लिए आया है, जिसके बिना मनुष्य विजयी नहीं होते हैं।

9. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' विद्यते-

- (a) द्वितीये (b) दशमे
(c) तृतीये (d) अष्टमे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में 'विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्' का वर्णन है। नदी संवाद सूक्त के 13 मंत्र में नदियों से प्रार्थना की गयी है। जबकि द्वितीयमण्डल में - इन्द्रसूक्त, रूद्रसूक्त दशम् मण्डल में - यमसूक्त, पितृसूक्त, अक्षसूक्त, वाकादिसूक्त। अष्टम् मण्डल में - विश्वदेवाः सूक्त, सोम सूक्त

10. परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते कति अध्यायाः सन्ति-
 (a) सप्त (b) द्वादश
 (c) पञ्च (d) चतुर्दश

Ans : (b) परिशिष्टभागमतिरिच्य निरुक्ते द्वादश अध्यायाः सन्ति अर्थात् निरुक्त का शाब्दिक अर्थ है- 'व्युत्पत्ति करने वाला' निरुक्त-यास्क की कृति है। जिसमें कुल 12 अध्याय हैं। दो परिशिष्टभाग को लेकर कुल 14 अध्याय हैं।

11. 'प्रचोदयात्'- इति कस्मिन् लकारे रूपमस्ति-
 (a) लिङ् (b) लोट्
 (c) लृट् (d) लेट्

Ans : (d) 'प्रचोदयात्'- इति लेट् लकारे रूपमस्ति। लिङ् लकार, लोट् लकार, लृट् लकार का प्रयोग लौकिक संस्कृत के धातु रूप में किया जाता है जबकि 'लेट् लकार' का प्रयोग वैदिक संस्कृत (वेदादि) में किया जाता है।

12. 'स जातो अत्यरिच्यत' - इत्यत्र 'सः' पदेन कः गृह्यते-
 (a) इन्द्रः (b) पुरुषः
 (c) प्रजापतिः (d) विष्णुः

Ans : (b) 'स जातो अत्यरिच्यत'- इत्यत्र 'सः' पदेन पुरुषः गृह्यते यह सूक्त ऋग्वेद के दशम् - मण्डल में वर्णित है। जिसके ऋषि - नारायण तथा देवता- पुरुष हैं।
 "वह उत्पन्न होते ही आगे बढ़ गया अर्थात् पशु-पक्षी, मनुष्य आदि के रूप में चेतनता को प्राप्त करके अन्य जगत् से बढ़कर था। यहाँ 'सः' शब्द आदिपुरुष के लिए प्रयुक्त हुआ है।

13. "Vedic Grammar"-इत्याख्यास्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् कः -
 (a) एच.टी.कोलब्रुक (b) एफ. मैक्समूलरः
 (c) ए.मैकडानलः (d) एच. विल्सनः

Ans : (c) "वैदिक ग्रामर" इत्याख्यास्य ग्रन्थस्य प्रणेता वैदेशिको विद्वान् ए. मैकडानलः सन्ति।

14. सामवेदीयाः षड्ज -मध्यम-पञ्चम् स्वराः कतमे त्रैस्वर्यस्वरे अन्तर्भवन्ति-
 (a) अनुदात्ते (b) स्वरिते
 (c) प्रचये (d) उदात्ते

Ans : (b) पाणिनि ने अपनी 'पाणिनीय शिक्षा' एवं 'अष्टाध्यायी' में स्वरों के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना की।
 स्वर तीन हैं-

उदात्त - उच्चैरुदात्तः

अनुदात्त - नीचैरनुदात्तः

स्वरित - समाहारःस्वरितः

पाणिनि ने इसको समाहार स्वरित के रूप में स्वीकार किया। जिसका अर्थ है- जिस स्वर के उच्चारण के समय पहले गामों का आरोह हो, बाद में अनुदात्त स्वर के कारण अवरोह हो।

15. 'बृहती'- छन्दसि अक्षराणां संख्या विद्यते-
 (a) 48 (b) 28
 (c) 36 (d) 42

Ans : (c) ऋग्वेद में सात छन्दों का प्रयोग किया गया है। जो निम्नलिखित हैं- गायत्री-24, उष्णिक्-28, अनुष्टुप्-32, त्रिष्टुप्-44, बृहती-36, जगती-48, पंक्ति-40। बृहती छन्द में कुल अक्षरों की संख्या 36 (8+8+8+12= 36) है।

16. दर्शपौर्णमासेष्टियागो अनुयाजानां संख्या विद्यते-
 (a) पञ्च (b) त्रयः
 (c) एकदश (d) अष्ट

Ans : (b) दर्शपौर्णमासेष्टियागो अनुयाजाना संख्या त्रयः विद्यते। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रन्थ है। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ के आरम्भ के ही काण्ड में दर्श और पौर्णमास यज्ञों के मुख्य तथा अवान्तर अनुष्ठानों का वर्णन यथाक्रम से किया गया है।

17. 'वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः' - इत्यत्र 'नु' विद्यते-
 (a) उपमार्थीयः (b) हेत्वपदेशार्थीयः
 (c) अनुप्रश्नार्थीयः (d) अवकुत्सार्थीयः

Ans : (a) 'वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वयाः'- इत्यत्र 'नु' उपमार्थीयः विद्यते।
 'नु' निपात अनेकार्थक हैं जो उपमा या सादृश्य अर्थ को कहते हैं तथा वे उपमार्थक निपात कहलाते हैं।' जैसे कथं नु करिष्यति।

18. 'नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्वव्या भवन्ति'- इति कथं वर्तते-
 (a) शाकटायनस्य (b) औदुम्बराणस्य
 (c) गार्ग्यस्य (d) कौत्स्य

Ans : (d) नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्वव्या भवन्ति- इति कथं कौत्स्य वर्तते।
 मन्त्र अनर्थक हैं, ऐसा आचार्य 'कौत्स' का मत है। वे कहते हैं कि मन्त्र शब्दों की नियत योजना वाले तथा निश्चित क्रम वाले होते हैं।

19. ऋक्संहितायाः समुपलब्धभाष्येषु प्रथमो भाष्यकारः विद्यते -
 (a) सायणः (b) आनन्दतीर्थः
 (c) स्कन्दस्वामी (d) वेङ्कटमाधवः

Ans : (c) वेदों के जिन टीकाकारों के नाम हमें ज्ञात हैं, इनमें सबसे प्राचीन "स्कन्दस्वामी" जी है। इन्होंने अपनी टीका 687 विक्रमी सम्वत् में पूरी की थी। माधव, सायणादि भाष्यकारों ने स्कन्दस्वामी को अपने भाष्यों में उद्धृत किया है।
 स्कन्दस्वामी के बाद अनेक भाष्यकार (टीकाकार) हुए-
 वेङ्कटमाधव, आनन्दतीर्थ, सायण, हलायुध, माधवादि।

20. ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या कियती-
 (a) 16 (b) 14
 (c) 12 (d) 18

Ans : (d) ऋक्प्रातिशाख्यस्य पटलसंख्या अष्टादश (18) भवति।

21. अथर्ववेदेन सम्बद्धा शिक्षा का वर्तते-
 (a) लोमशी शिक्षा (b) माण्डूकी शिक्षा
 (c) गौतमी शिक्षा (d) केशवी शिक्षा

Ans : (b) शिक्षा वेदाङ्ग का एक अंग है। जिसकी तुलना वेदपुरुष की नासिका से की जाती है। शिक्षा को 'स्वर- विज्ञान' भी कहते हैं। शिक्षा शास्त्र के प्रथम ग्रन्थ का नाम 'गाएलम' है इसके लेखक "वामज्य" हैं।
 माण्डूकीय शिक्षा का सम्बन्ध अथर्ववेद से है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

22. 'शिवसंकल्पसूक्तम्' माध्यन्दिनसंहितायां कस्मिन् अध्याये समुपलभ्यते-

- (a) षोडशो (b) चतुस्त्रिंशे
(c) एकत्रिंशे (d) चत्वारिंशे

Ans : (b) शिवसंकल्प सूक्त शुक्ल यजुर्वेद के 34वें अध्याय का प्रथम सूक्त है।

23. भर्तृहरिदिशा को ब्रह्मामृतमश्नुते?

- (a) शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञः (b) पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः
(c) प्रमाणादिषोडशपदार्थनिष्णातः (d) याज्ञिकः

Ans : (a) भर्तृहरिदिशा शब्दप्रवृत्तितत्त्वज्ञः ब्रह्मामृतमश्नुते।

24. परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा कस्माज्जायते?

- (a) शाब्दात् (b) अनुमानाद्
(c) अभ्यासाद् (d) उपमानात्

Ans : (c) परेषामसमाख्येयं मणिरूप्यादिविज्ञानं भर्तृहरिदिशा अभ्यासाद् जायते।

25. 'एध्' धातोः लुङ् लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने कः प्रयोगः?

- (a) ऐधन्त (b) ऐधिष्ठ
(c) ऐधिषत (d) ऐधत

Ans : (c) 'एध्' धातोः लुङ् लकारे प्रथमपुरुषबहुवचने ऐधिषत प्रयोगः।

तिङन्त 'एध्' धातु के लुङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप "ऐधिषत" बनता है। सामान्य भूतार्थ में लुङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।

26. 'लोटो लङ् वत्' इति सूत्रप्रवृत्तिः कस्मिन् प्रयोगे जाता?

- (a) अभवः (b) भवाम्
(c) भवेताम् (d) अभविष्यत्

Ans : (b) लोटो लङ् वत् सूत्र से- भवाम् बनता है।
लोट् लकार आज्ञार्थक होते हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म.पु.	भव	भवतम्	भवत
उ.पु.	भवानि	भवाव	भवाम

27. 'महद् यशो यस्य सः' इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे कः प्रयोगः?

- (a) महायशः (b) महायशसः
(c) महायशाः (d) महायशस्कः

Ans : (c) 'अन्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहिः'

- जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि समास होने पर समास युक्त पद स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ नहीं बताते अपितु वे विशेषण के रूप में काम करते हैं, और अन्य वस्तु का बोध विशेष्य के रूप में कराते हैं।

बहुव्रीहि समास के साधारणतया तीन भेद

- समानाधिकरण
- सहायक
- व्यधिकरण

महद् यशो यस्य सः इति विग्रहे बहुव्रीहिसमासे महायशाः प्रयोगः

28. 'कुगतिप्रादयः' इति समासविधायकसूत्रस्य किमुदाहरणम् नास्ति?

- (a) पटपटाकृत्य (b) कुम्भकारः
(c) सुपुरुषः (d) हस्तेकृत्य

Ans : (b) यदि तत्पुरुष समास में पूर्वपद 'क' शब्द हो अथवा 'प्र' आदि उपसर्गों में से हो अथवा गति संज्ञक कोई पद हो तो 'प्रादि तत्पुरुष' समास कहलाता है।
कुम्भकार में पूर्वपद 'कु' है।

29. 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र कः कृत्यप्रत्ययः?

- (a) ण्यत् (b) यत्
(c) क्यप् (d) तव्यत्

Ans : (c) 'प्रगृह्यम्' इत्यत्र क्यप् प्रत्ययः सति।

इ, स्तु, शास्, वृ, दृ, तथा जुष् धातुओं से चाहिए अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय होता है।

विकल्प (c) को छोड़कर अन्य विकल्प असमीचीन हैं।

30. 'विद्वांसः सन्ति अस्मिन्' इति विग्रहे को मत्वर्थीयः प्रयोगः?

- (a) विद्वद्वान् (b) विदुष्वान्
(c) विद्वत्त्वान् (d) विद्वन्मान्

Ans : (b) विद्वांसः मत्वर्थक प्रत्यय का प्रयोग करने से विदुष्वान् शब्द बनता है।

त् और स् अन्त वाले शब्द भ-संज्ञक होते हैं, बाद में मत्वर्थक प्रत्यय हो तो। भ संज्ञा होने पर संज्ञा वाले कारक त > द्, स् > रु इत्यादि नहीं होंगे।

31. या स्वयमेवाध्यापिका सा किमुच्यते?

- (a) उपाध्यायानी (b) उपाध्याया
(c) आचार्यानी (d) आचार्याणी

Ans : (b) या स्वयमेवाध्यापिका सा उपाध्याया उच्यते।

उपाध्याय मातुलाभ्यां वा, आचार्य दगत्व च। अर्य क्षत्रियाभ्यां वा (वार्तिक) उपाध्याय, मातुल, आचार्य, अर्य एवं क्षत्रिय शब्दों से ङीष् प्रत्यय एवं आनुक् (आन्) आगम विकल्प से होता है। यथा- उपाध्याया (शिक्षिका)।

32. 'वृत्तिसर्गायतनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक- 'क्रम्' धातोरुदाहरणं चिनुत।

- (a) अध्ययनाय क्रमते (b) ऋचि क्रमते बुद्धिः
(c) क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि (d) आक्रमते सूर्यः

Ans : (a) 'वृत्तिसर्गायतनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदविधायकसूत्रस्य सर्गार्थक- 'क्रम्' धातोरुदाहरणं अध्ययनाय क्रमते इति।

33. 'बोधयति पदम्' इत्यत्र परस्मैपदविधायकं किमस्ति पाणिनिसूत्रम्?

- (a) विभाषाऽकर्मकात्
(b) निगरणचलनार्थेभ्यश्च
(c) बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु- सुभ्यो णेः
(d) अणावकर्मकाच्चित्तकर्तृकात्

Ans : (c) बुध-युध-नश, जनेङ्-प्रु-द्रु-सुभ्योणेः अर्थात् बुध, युध, जन्। अधि+ इ, प्रु, द्रु तथा सु णिजन्त तथा परस्मैपदी होती है। यथा- सूर्यः कमलं बोधयति।

34. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः? इति समीचीनां तालिकां चिनुत।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (1) अपवर्गे तृतीया (i) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
 (2) तथायुक्तं चाऽनीप्सितम् (ii) प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।
 (3) धारेरुत्तमर्णः (iii) क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
 (4) प्रतिनिधि-प्रतिदाने च (iv) भक्ताय धारयति मोक्षं यस्मात् हरिः।
- | | | | |
|-----------|-------|------|------|
| a | b | c | d |
| (a) (iii) | (i) | (iv) | (ii) |
| (b) (iii) | (ii) | (iv) | (i) |
| (c) (ii) | (iii) | (i) | (iv) |
| (d) (iii) | (i) | (iv) | (ii) |

Ans : (a)

- (1) अपवर्गे तृतीया (i) क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
 (2) तथायुक्तं चाऽनीप्सितम् (ii) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
 (3) धारेरुत्तमर्णः (iii) भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।
 (4) प्रतिनिधि-प्रतिदाने च (iv) प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।

35. “पराजेरसोढः” इत्यनेन सूत्रेण कतमं कारकं भवति?

- (a) अधिकरणम् (b) सम्प्रदानम्
 (c) अपादानम् (d) करणम्

Ans : (c) पराजेरसोढः इत्यनेन सूत्रम् अपादानं कारकं भवति। ‘पराजेरसोढ’ सूक्त के अनुसार ‘परा’ पूर्वक ‘जि’ (पराजि) धातु की थकने या असह्य होने के अर्थ में प्रयोग होने पर जो असह्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथा-अध्ययनात् पराजयते। (अध्ययन से भागता है।)

36. “प्रातिपदिकम्” इति संज्ञा केन सूत्रेण विधीयते?

- (a) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।
 (b) प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च।
 (c) ड्याप्तातिपदिकात्।
 (d) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।

Ans : (d) “प्रातिपदिकम्” इति संज्ञा अर्थवदधातुरप्रत्ययः विधीयते। जबकि “प्रातिपदिकार्थ- लिङ्ग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा” इस सूत्र से-प्रातिपदिकार्थमात्र, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र तथा वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति का विधान किया गया है।

37. निम्नाङ्कितेषु ‘प्रगृह्यम्’ इति संज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

- (a) ओत् (b) तरप्तमपौ घः
 (c) तृतीयासमासे (d) आद्यन्तवदेकस्मिन्

Ans : (a) प्रगृह्यम् इति संज्ञाविधायकं सूत्रं ओतमास्ति। ईकारान्त, ऊकारान्त, ऐकारान्त द्विवचन पद की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

38. ‘ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः’ कथनमिदं पतञ्जलिना कस्य व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्?

- (a) रक्षाविषये (b) ऊहविषये
 (c) आगमविषये (d) लघुविषये

Ans : (d) ‘ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेयाः’ कथनमिदं पतञ्जलिना लघुविषये व्याकरणप्रयोजनस्य विषये कृतम्। ‘रक्षोहागम लध्वसंदेहाः प्रयोजनम् अर्थात् रक्षा, ऊह। आगम, लघु तथा असन्देह ये पाँच मुख्य प्रयोजन है। पतञ्जलि के अनुसार वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है। इसलिए ब्राह्मण अर्थात् वेदपाठी के लिए शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है।

39. पतञ्जलिमतानुसारं शब्दः कः?

- (a) अर्थरूपम्

- (b) यद् इङ्गितं चेष्टितम्
 (c) यद् भिन्नेष्वच्छिन्नं, छिन्नेष्वच्छिन्नम्
 (d) प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः

Ans : (d) व्याकरण महाभाष्य में शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है -

‘प्रतीतपदार्थ को लोके ध्वनिः शब्दः इत्युच्यते।’

प्रतीतपदार्थ इत्यादि लक्षण अनित्य हैं, जिसे नैयायिक शब्द मानते हैं।

40. पाणिनीयशिक्षानुसारं स्वराणां संख्या का?

- (a) विंशतिः (b) एकविंशतिः
 (c) अष्टादश (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (b) पाणिनीय शिक्षा की कारिका 4 के अनुसार-

स्वर विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः। अर्थात् स्वर 21 तथा स्पर्श वर्ण-25 होते हैं।

41. ‘समीकरणम्’ कस्य दिशा वर्तते?

- (a) ध्वनिपरिवर्तनस्य (b) रूपपरिवर्तनस्य
 (c) अर्थपरिवर्तनस्य (d) वाक्यपरिवर्तनस्य

Ans : (a) ‘समीकरणम्’ ध्वनिपरिवर्तनस्य दिशावर्तते।

संस्कृत वैयाकरण समीकरण को ‘सवर्णीकरण’ संज्ञा से अभिहित करते हैं।

42. हिब्रू-भाषा कस्य भाषापरिवारस्य भाषाऽस्ति?

- (a) चीनीपरिवारस्य (b) भारोपीयपरिवारस्य
 (c) सूडानीपरिवारस्य (d) सामी-हामीपरिवारस्य

Ans : (d) हिब्रू भाषा सामी-हामीपरिवारस्य भाषा अस्ति।

भाषा के चार खण्डों में अफ्रीका खण्ड के प्रधानतः पाँच भाषा परिवार हैं। सैमेटिक या सामी अफ्रीका में इस परिवार की भाषाओं में हिब्रू, आरमेनियन भी हैं। यह भाषा मोरक्को से स्वेज नहर तक बोली जाती है।

43. संस्कृतभाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं केनोद्घाटितः?

- (a) मैक्समूलरमहोदयेन (b) विन्टरनिज महोदयेन
 (c) सर-विलियम-जोन्स महोदयेन (d) वेबरमहोदयेन

Ans : (c) संस्कृतभाषायाः यूरोपीयभाषाभिः सम्बन्धः सर्वप्रथमं ‘सर-विलियम-जोन्स महोदयेन’ उद्घाटितः।

वैदिक साहित्य के अध्ययन और प्रकाशन में सर-विलियम-जोन्स का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में हमें वेदों का जो क्रमबद्ध प्रकाशित उपलब्धि है, उसके लिए हमें इन यूरोपीय विद्वानों का आभार स्वीकार करना चाहिए।

44. बन्तूपरिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?

- (a) यूरेशियाखण्डस्य (b) अफ्रीकाखण्डस्य
 (c) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य (d) अमेरिकाखण्डस्य

Ans : (b) अफ्रीका खण्ड के प्रधान रूप से पाँच भाषा परिवार हैं, जिनमें बन्तू (बाण्टू) परिवार की भाषाएँ मध्य और दक्षिणी अफ्रीका की भाषाएँ हैं। अतः ‘बन्तूपरिवारस्य अफ्रीकाखण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति।’

45. अर्थसङ्ग्रहे प्रत्ययस्य लिङ्शेन कीदृशी भावना प्रोक्ता?

- (a) शाब्दी (b) आर्थी
 (c) शाब्दीआर्थी च (d) स्वर्गभावना

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) तत्र पुरुष प्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापार विशेषः शब्दीभावना। सा च लिङ्गशेनोच्यते। भावना के प्रथम भेद शाब्दी भावना में व्यक्ति की प्रवृत्ति का जनक या सहायक प्रयोजक का व्यापार विशेष शाब्दी भावना है। वह लिङ्ग अंश से व्यक्त होती है।

46. अर्थसङ्ग्रहानुसारं 'शब्दसामर्थ्यम्' इत्येनं कतमं प्रमाणं लक्षितम्?

- (a) श्रुतिः (b) प्रकरणम्
(c) लिङ्गम् (d) वाक्यम्

Ans : (c) 'शब्द सामर्थ्यम् लिङ्गम्' अर्थात् शब्द की शक्ति लिङ्ग है। जैसा कहा गया है- सभी शब्दों की शक्ति लिङ्ग कही जाती है। "सामर्थ्य सर्वशब्दानां लिङ्गमित्याभिधीयते।"

47. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं स्पर्शानुमेयः कः पदार्थः:-

- (a) आकाशम् (b) मनः
(c) आत्मा (d) वायुः

Ans : (d) अन्नभट्ट कृत् तर्कसंग्रह में 24 गुणों का उल्लेख है। जिसमें स्पर्श भी एक गुण है। 'रूपरहित स्पर्शान्वायुः' अर्थात् रूप से हीन और स्पर्श वाला वायु होता है। यह दो प्रकार का होता है। नित्य, अनित्य।

48. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुणः कः?

- (a) वेगसंस्कारः (b) स्थितिस्थापकसंस्कारः
(c) प्रयत्नः (d) शब्दः

Ans : (c) तर्कसंग्रहानुसारम् आत्मनो विशेषगुण प्रयत्नः। तर्कसंग्रह के अनुसार-आत्मा का विशेषगुण ही प्रयत्न कहलाता है।

49. तर्कभाषानुसारम् आत्मा कीदृशः?

- (a) सर्वस्मिन् एकोऽणुश्च
(b) विभुर्नित्यश्च
(c) देहेन्द्रियाद्यनतिरिक्तः
(d) प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च

Ans : (d) तर्कभाषानुसारम् आत्मा प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च अस्ति अर्थात् तर्कभाषानुसार आत्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न तथा नित्य है।

50. साध्याशून्यो यत्र पक्षः सः कीदृशो हेत्वाभासः?

- (a) बाधः (b) आश्रयासिद्धः
(c) असाधारणोऽनैकान्तिकः (d) विरुद्धः

Ans : (a) जहाँ साध्य के अभाव की सिद्धि किसी दूसरे प्रमाण से (अनुमान को छोड़कर) हो, वहाँ पर बाधित हेत्वाभास होता है। अर्थात् पक्ष में साध्य का अभाव प्रमाणान्तरों से ही हो जाता है।

51. तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कः?

- (a) संयोगः (b) संयुक्तसमवायः
(c) विशेषण-विशेष्यभावः (d) संयुक्तसमवेतसमवायः

Ans. (b) तर्कभाषारीत्या समवायस्य प्रत्यक्षग्राह्यत्वे इन्द्रियार्थसन्निकर्षः संयुक्तसमवायः इति।

52. वेदान्तसारानुसारं 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि' कर्माणि निम्नलिखितेषु कानि भवन्ति?

- (a) काम्यकर्माणि (b) नित्यकर्माणि
(c) उपासनाकर्माणि (d) साध्यकर्माणि

Ans : (c) सदानन्द कृत् वेदान्तसार के अनुसार, "उपासनानिसगुणब्रह्म विषय- मानसव्यापार रूपाणि" के आधार पर सगुण ब्रह्म में दीर्घकाल तक मनोवृत्ति को स्थिर करने के लिए किये जाने वाले शाण्डिल्य-विद्या आदि कर्म उपासना कहे गये हैं।

53. 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयम्' इत्यम् अनुबन्धः कतमः?

- (a) अधिकारी (b) विषयः
(c) सम्बन्धः (d) प्रयोजनम्

Ans : (b) विषयो जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यम् प्रमेयम् अर्थात् चैतन्यांश के द्वारा जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन वेदान्त का विषय है।

54. समष्ट्यज्ञानोपहितं चैतन्यं किं भवति?

- (a) जीवः (b) ईश्वरः
(c) ब्रह्म (d) प्राज्ञः

Ans : (b) 'समष्ट्य ज्ञानोपहितं चैतन्यं ईश्वरः भवति।' यह अनुपहित चैतन्य भी इस ब्रह्माण्ड के सभी चैतन्यों का आधार होता है।

55. 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा' किमुच्यते?

- (a) विकारः (b) विवर्तः
(c) शब्दः (d) अनुपहितचैतन्यम्

Ans : (b) 'अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्तः इति उच्यते' अर्थात् किसी वस्तु में अपने रूप के परित्याग के बिना दूसरी वस्तु का मिथ्याभास होना विवर्त कहलाता है।

56. 'ब्रह्मसूत्रम्' इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कोऽस्ति?

- (a) बादरायणः (b) पाराशरः
(c) शङ्कराचार्यः (d) जैमिनिः

Ans : (a) वेदान्त दर्शन सूत्र शैली में लिखा हुआ एक मात्र दार्शनिक ग्रन्थ ब्रह्मसूत्र है। आचार्य बादरायण कृत यह ग्रन्थ चार अध्यायों में विभक्त है।

"ब्रह्मसूत्रम्" ग्रन्थस्य रचयिता बादरायणः अस्ति।"

57. 'शारीरिकम्' इति नाम्ना किं भाष्यं प्रसिद्धमस्ति?

- (a) सांख्यकारिकाभाष्यम् (b) मीमांसाभाष्यम्
(c) ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (d) उपनिषद्भाष्यम्

Ans : (c) शारीरिकम् इति नाम्ना ब्रह्मसूत्रभाष्यं प्रसिद्धमस्ति। 'शारीरिकम्' नाम से ब्रह्म सूत्र प्रसिद्ध है। ब्रह्म सूत्र को निम्नलिखित नामों से जाना जाता है-

वेदान्तसूत्र, शारीरिकसूत्र, बादरायणसूत्र, उत्तरमीमांसा सूत्र

58. 'दृष्टवदानुश्रविकः' इत्यस्मिन् सांख्यकारिकाप्रयोगे 'आनुश्रविकः' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

- (a) श्रुतिः (b) स्मृतिः
(c) वेदाङ्गम् (d) पुराणम्

Ans : (a) गुरु के उपदेश के अनन्तर सुने जाने के कारण वेद को अनुश्रव कहते हैं अनुश्रव मूलक होने के कारण वैदिक उपाय को आनुश्रविक कहते हैं।

59. अव्यक्तं कीदृशं भवति?

- (a) सक्रियम् (b) निष्क्रियम्
(c) अश्रितम् (d) सावयवम्

Ans : (b) 'अव्यक्तं निष्क्रियं भवति।' कार्य की उत्पत्ति कारण ही कहलाता है। जिस प्रकार दूध से दही बनता है। वह अव्यक्त है।

60. व्यक्तस्य च प्रधानस्य च कः समानधर्मः?

- (a) त्रिगुणत्वम् (b) सक्रियत्वम्
(c) हेतुमत्त्वम् (d) लिङ्गत्वम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) सुख, दुःख और मोह- ये तीन गुण जिसमें हो वह त्रिगुण अर्थात् सुख-दुःख-मोहात्मक है।
अतः 'व्यक्तस्य च प्रधानस्य च त्रिगुणत्वम् समानधर्मः।'

61. सांख्यदर्शनानुसारं "त्रैगुण्यविपर्ययात्" किं सिध्यति?
(a) अव्यक्तस्य नित्यत्वम् (b) पुरुषबहुत्वम्
(c) व्यक्तस्य त्रिगुणात्मकत्वम् (d) अव्यक्तस्य कारणत्वम्

Ans : (b) सांख्यदर्शनानुसारं "त्रैगुण्यविपर्ययात्" पुरुषबहुत्वम् सिध्यति।

सभी प्राणियों में तीनों गुण एक जैसे नहीं पाये जाते हैं किसी में तमोगुण की प्रधानता होती है तो किसी में सतोगुण की प्रधानता तथा किसी में रजोगुण की प्रधानता होती है।

62. अधस्तनानां केन सह कस्य सम्बन्धः?
समीचीनां तालिकां चिनुत-
A. मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (i) स्वाध्यायात्
B. इष्टदेवतासम्प्रयोगः (ii) यमाः
C. अनुभूतिविषयासम्प्रमोषः (iii) विपर्ययः
D. सार्वभौमा महाव्रतम् (iv) स्मृतिः
- | | | | |
|-----------|-------|-------|-------|
| (a) | (b) | (c) | (d) |
| (a) (iii) | (i) | (iv) | (ii) |
| (b) (i) | (iii) | (ii) | (iv) |
| (c) (ii) | (i) | (iii) | (iv) |
| (d) (iv) | (ii) | (i) | (iii) |

Ans : (a)
A. मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् (i) विपर्ययः
B. इष्टदेवतासम्प्रयोगः (ii) स्वाध्यायात्
C. अनुभूतिविषयासम्प्रमोषः (iii) स्मृतिः
D. सार्वभौमा महाव्रतम् (iv) यमाः

63. "यथा मधुकरराजं मक्षिका उत्पतन्तमनूत्पतन्ति, निविशमानमनुनिविशन्ते तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधे निरुद्धानीत्येषः.....।"
(a) प्रत्याहारस्य (b) धारणायाः
(c) ध्यानस्य (d) ब्रह्मचर्यस्य

Ans : (a) इन्द्रियों का अपने विषयों के साथ सन्निकर्ष न होने पर चित्त के समान हो जाना ही प्रत्याहार कहलाता है। जैसे-मधुकरराज के उड़ने के पीछे मक्षिका भी उड़ जाती हैं, और बैठने पर बैठ जाती हैं। वैसे ही चित्त के निरोध के पीछे इन्द्रियाँ भी निरुद्ध हो जाती हैं।

64. योगदर्शनस्य व्यासभाष्यानुसारेण चित्तभूमीनां समुचितः क्रमोऽस्ति-
(a) क्षिप्तम्, विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(b) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्।
(c) विक्षिप्तम्, मूढम्, एकाग्रम्, क्षिप्तम्, निरुद्धम्।
(d) निरुद्धम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, क्षिप्तम्, एकाग्रम्।

Ans : (b) व्यास ने पाँच + चित्त भूमियों का उल्लेख इस प्रकार किया है- क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तं, एकाग्रं, निरुद्धमिति, चित्तभूमयः अर्थात् क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ये पाँच चित्त भूमि होती हैं।

65. जैनदर्शनानुसारेण निम्नाङ्कितस्य सप्तभङ्गिन्यास्य समुचितः क्रमः कोऽस्ति?
(a) स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

- (b) स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।
(c) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति।
(d) स्यादस्ति, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्ति चावक्तव्यः, स्यान्नास्ति, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यान्नास्ति चावक्तव्यः, स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः।

Ans : (b) जैन दर्शन में जैनियों ने जिन सप्तभंग न्याय की कल्पना की है। वह सप्तभङ्गिनय कहलाता है।

- (i) स्यादस्ति- सम्भवतः इसमें सापेक्ष सत्ता है।
(ii) स्यान्नास्ति- इसमें सापेक्षिक सत्ता नहीं होती है।
(iii) स्यादस्ति व नास्ति च-अंशतः है, अंशतः नहीं है।
(iv) स्यादवक्तव्यः - यह किसी अंश में अवर्णनीय है।
(v) स्यादस्ति च वक्तव्यम् - अंशतः है और अंशतः अवर्णनीय है।
(vi) स्यान्नास्ति च वक्तव्यं च- अंशतः नहीं और अंशतः अवर्णनीय
(vii) स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च- अंशतः है अंशतः नहीं है।

66. अधोलिखितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?
समीचीनां तालिकां चिनुत।

- A. माध्यमिकाः (i) बाह्यार्थानुमेयत्वम्
B. योगाचाराः (ii) सर्वशून्यत्वम्
C. सौत्रान्तिकाः (iii) बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्
D. वैभाषिकाः (iv) बाह्यार्थशून्यत्वम्
- | | | | |
|-----------|-------|-------|-------|
| (a) | (b) | (c) | (d) |
| (a) (iii) | (i) | (ii) | (iv) |
| (b) (iv) | (i) | (iii) | (ii) |
| (c) (ii) | (iv) | (i) | (iii) |
| (d) (i) | (iii) | (i) | (ii) |

Ans : (c)
A. माध्यमिकाः (i) सर्वशून्यत्वम्
B. योगाचाराः (ii) बाह्यार्थशून्यत्वम्
C. सौत्रान्तिकाः (iii) बाह्यार्थानुमेयत्वम्
D. वैभाषिकाः (iv) बाह्यार्थप्रत्यक्षत्वम्

67. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

- A. हर्षहरितम् (i) शूद्रकः
B. मुद्राराक्षम् (ii) दण्डी
C. दशकुमारचितम् (iii) विशाखदत्तः
D. मृच्छकटिकम् (iv) बाणभट्टः
- | | | | |
|-----------|-------|-------|-------|
| (a) | (b) | (c) | (d) |
| (a) (iv) | (iii) | (ii) | (i) |
| (b) (iii) | (ii) | (i) | (iv) |
| (c) (ii) | (iv) | (iii) | (i) |
| (d) (i) | (ii) | (iv) | (iii) |

Ans : (a)
A. हर्षचरितम् (i) बाणभट्टः
B. मुद्राराक्षम् (ii) विशाखदत्तः
C. दशकुमारचितम् (iii) दण्डी
D. मृच्छकटिकम् (iv) शूद्रकः

68. अभिज्ञानशाकुन्तले शकुन्तलायाः प्रतिकूलदैवशमनार्थं कण्वः कुत्र गतः?
(a) काशीतीर्थम् (b) प्रयागतीर्थम्
(c) काञ्चीतीर्थम् (d) सोमतीर्थम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) महाकवि कालिदास कृति अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक में दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप का वर्णन है। जब कण्व ऋषि को यह भान होता है कि महर्षि दुर्वासा शकुन्तला को शाप दे दिये हैं तो महर्षि कण्व अभिशाप की शान्ति के लिए सोमतीर्थ जाते हैं। क्योंकि शकुन्तला महर्षि कण्व की पालिता पुत्री थी।

69. “उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी”- अभिज्ञानशाकुन्तले इयमुक्तिर्भवति-
 (a) मारीचस्य (b) शारद्वतस्य
 (c) कण्वस्य (d) शार्ङ्गरवस्य

Ans : (b) ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ के पाँचवें अंक में यह सूक्त प्रयुक्त है। शारद्वत राजा दुष्यन्त से कहता है- इसे छोड़ दीजिए या स्वीकार कीजिए क्योंकि पत्नी पर पति का सब प्रकार का अधिकार होता है।

70. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखो नास्ति-
 (a) तुङ्गभद्रा (b) रेवा
 (c) गन्धवती (d) गम्भीरा

Ans : (a) कालिदास कृति मेघदूतं में यक्ष अपना संदेश अपनी पत्नी यक्षिणी को भेजता है इसी का मनोहर चित्रण किया गया है। रामगिरी से अलकापुरी तक जाने में कालिदास ने नगरों एवं विदिशा, उज्जयिनी, अवन्ती, रेवा, गन्धवती, गम्भीरा, नर्मदा आदि नदियों का कौतूहल वर्धक वर्णन किया है जिनमें तुङ्गभद्रा नदी का उल्लेख नहीं है।

**71. “सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
 क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।”
 एषा उक्तिः कं लक्षयति:**
 (a) चाणक्यम् (b) राक्षसम्
 (c) चन्दनदासम् (d) भागुरायणम्

Ans : (c) यह सूक्ति चाणक्य द्वारा चन्दनदास के विषय में कही गयी है। अतः सही उत्तर (c) ही है। विशाखदत्त कृति मुद्राराक्षस नाटक के प्रथम अंक के 24वें श्लोक में चाणक्य अपने मन में कहता है कि धन्य हो चन्दनदास, धन्य हो। दूसरे की वस्तु को समर्पित कर देने पर राज-प्रसादादि सिद्धियों के सुलभ होने पर भी राजा शिवि के अतिरिक्त तुम्हारे समान कौन ऐसे दुख पूर्वक किये जाने वाले कार्य को कर सकता है।

72. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम भवति-
 (a) आर्यकः (b) मैत्रेयः
 (c) शर्विलकः (d) संस्थानकः

Ans : (b) शूद्रक विरचित मृच्छकटिक नामक प्रकरण में मैत्रेय चारुदत्त का मित्र तथा विदूषक है।

73. “निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां। तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि॥”- इति कस्य कथा अत्र उल्लिखिता?
 (a) दुष्यन्तस्य (b) रघोः
 (c) रामचन्द्रस्य (d) नलस्य

Ans : (d) महाकवि श्री हर्ष कृति ‘नैषधीयचरितम्’ संस्कृत साहित्य के गौरवपूर्ण महाकाव्य-पञ्चक में अन्यतम है। प्रथम सर्ग के मङ्गलाचरण में राजा नल का वर्णन है।

74. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति-
 (a) शृङ्गारः (b) वीरः
 (c) शान्तः (d) अद्भुतः

Ans : (b) भारवि कृत किरातार्जुनीयम् 18 सर्गों में निबद्ध वीर रस प्रधान महाकाव्य है। जो वृहत्रयी के अन्तर्गत परिगणित है।

75. वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी भवति-
 (a) विनयन्धरः (b) जयन्धरः
 (c) रुधिरप्रियः (d) सुन्दरकः

Ans : (a) वेणीसंहारे दुर्योधनस्य कञ्चुकी विनयन्धरः भवति। वेणीसंहारम् नाटक के प्रणेता भट्ट नारायण कन्नौज के निवासी थे। इसमें दुर्योधन का कञ्चुकी विनयन्धर है।

**76. “अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थं परस्यान्वयसिद्धये।”
 उपलक्षणहेतुत्वाद्देष्टा.....॥”
 -साहित्यदर्पणानुसारतः रिक्तस्थानं पूरयत।**
 (a) लक्षण-लक्षणा (b) उपादानलक्षणा
 (c) सारोपा लक्षणा (d) साध्यवसाना लक्षणा

Ans : (a) आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्य दर्पण के द्वितीय परिच्छेद की सातवीं कारिका में लक्षण-लक्षणा का उल्लेख है। वाक्यार्थ में दूसरे के अन्वय की सिद्धि के लिए जब कोई शब्द अपने मुख्यार्थ का परित्याग कर किसी दूसरे अर्थ का उपलक्षण ग्रहण कर लेता है तो वह लक्षणलक्षणा कहलाती है। यथा - गङ्गायां घोषः।

77. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-
 (A) आशङ्कसे यदिग्नं तदिदं (i) रत्नावली
 स्पर्शक्षमं रत्नम्।
 (B) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्य (ii) मुद्राराक्षसम्
 - मनन्तकं दुःखम्।
 (C) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च (iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
 प्रायः सीदन्ति दुःखिताः
 (D) आनीय झटिति घटयति (iv) मृच्छकटिकम्
 विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।

(a)	(b)	(c)	(d)
(a) (ii)	(iii)	(iv)	(i)
(b) (iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c) (iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d) (i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans : (b)
 (A) आशङ्कसे यदिग्नं तदिदं स्पर्शक्षमं (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् रत्नम्।
 (B) अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्य-मनन्तकं (ii) मृच्छकटिकम् दुःखम्।
 (C) गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति (iii) मुद्राराक्षसम् दुःखिताः
 (D) आनीय झटिति घटयति (iv) रत्नावली विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।

78. “लोके हि लोहेभ्यः खलु स्नेहमयाः बन्धनपाशाः”-इति हर्ष चरिते कस्य मनसि समजायत?
 (a) राज्यवर्धनस्य (b) प्रभाकरवर्धनस्य
 (c) कुरङ्गकस्य (d) हर्षवर्धनस्य

Ans : (d) यहाँ हर्षवर्धन द्वारा देखे गये स्वप्न का विचित्र वर्णन किया गया है। उसके मन में एक विचार आया कि संसार में लोहे से भी कठोर अत्यधिक स्नेह से युक्त बन्धनपाश होते हैं।

79. “श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामलदेवी च यम्”- इति वार्त्ता केन सम्बद्धा?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (a) माघेन (b) भारविणा
(c) हर्षेण (d) कालिदासेन

Ans : (c) “श्रीहीरः सुषवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्”
इतिवार्ता श्री हर्षेण सम्बद्धः

80. “स बाल आसीद् वपुषा चतुर्भुजो मुखेन
पूर्णन्दुनिभस्त्रिलोचनः।”- इति शिशुपालवधस्य पद्यांशः
केन सम्बद्धः?

- (a) शिशुपालेन (b) श्रीकृष्णेन
(c) नारदेन (d) रावणेन

Ans : (a) महाकवि माघ कृति शिशुपालवधम् महाकाव्य की कथा का श्रोत महाभारत का सभापर्व है। यह 20 सर्गों का महाकाव्य है। इसके प्रथम सर्ग के 70वें- श्लोक में शिशुपाल का वर्णन है कि वह शिशुपाल बाल्यावस्था में चार भुजाओं वाला, मुख से पूर्ण चन्द्र के समान तथा तीन नेत्रों वाला था।

81. “वैदेहिबन्धाहृदयं विदद्रे”- रघुवंशस्य अस्मिन् पद्यांशे
वैदेहिबन्धुः भवति-

- (a) लक्ष्मणः (b) भरतः
(c) रामः (d) रघुः

Ans : (c) ‘रघुवंशमहाकाव्यम्’ महाकवि कालिदास की एक अनुपम कृति है। जो 19 सर्गों में विभक्त है और जिसमें 1569 श्लोक हैं। रघुवंशम् के चौदहवें सर्ग के 33वें श्लोक में वैदेहि के ऊपर लगाये गये कलंक की बात सुनकर राम के हृदय में शोक की वह लहर वैसे ही फैल गयी है जैसे कि हथौड़े की चोट से तपा हुआ लोहा फैल जाता है।

82. काव्यमीमांसोक्तकथानुसारं पुरा पुत्रीयन्ती सरस्वती कुत्र
तपस्यामास?

- (a) विन्ध्यगिरौ (b) तुषारगिरौ
(c) सह्यागिरौ (d) मेरुगिरौ

Ans : (b) श्री राजशेखर विरचित काव्यमीमांसा में सरस्वती ने तुषारगिरि पर तपस्या की।
अतः विकल्प (b) तर्कसंगत है।

83. जगन्नाथमते काव्यं कतिविधिं भवति-

- (a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) पञ्चविधम्

Ans : (c) जगन्नाथ मते काव्यम् चतुर्विधम् पं० राज जगन्नाथ ने काव्य के चार भेद स्वीकार किये हैं।

(i) उत्तमोत्तमकाव्य (ii) उत्तमकाव्य (iii) मध्यमकाव्य (iv) अधमकाव्य

84. “त्रयः समुदिताः, न तु व्यस्ताः”- इति काव्यप्रकाशे
प्रथमे उल्लासे किम् अधिकृत्य उल्लिखितम्?

- (a) काव्यलक्षणम् (b) काव्यभेदम्
(c) काव्य-हेतुम् (d) काव्यफलम्

Ans : (c) आचार्य मम्मट कृति ‘काव्यप्रकाश’ के प्रथम उल्लास में काव्य हेतु की व्याख्या के अन्तर्गत बताया गया है कि काव्य निर्माण और उनके संयोजन में बार-2 प्रवृत्ति, अभ्यास के तीनों सम्मिलित रूप से न कि अलग-अलग काव्य के उद्भव अर्थात् निर्माण और विकास (उत्कर्ष) के हेतु हैं।

85. काव्यप्रकाशे उपमानोपमेययोः अभेदे अयमलङ्कार
भवति-

- (a) रूपकम् (b) उपमा
(c) उत्प्रेक्षा (d) श्लेष

Ans : (a) काव्य प्रकाश के अनुसार- ‘तदरूपकमभेदो उपमानोपमेययोः’ अर्थात्- उपमान और उपमेय में अभेद का आरोप अर्थात् जो दोनों के बीच अभेद का पाया जाना ही रूपक अलङ्कार है।

उदाहरण- “पर्याप्तपुष्पस्तबकस्तनाभ्यः।

स्फुरत्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः।।

लताबधूभ्यस्तरवोडप्यवापुः।

विनम्र शाखाभुज बन्धनानि।।”

अर्थात्- प्रभूत पुष्पों के गुच्छा रूप स्तनों वाली, खिले हुए प्रवाल रूप होठों से मनोरम लगने वाली, लतारूप बन्धुओं से वृक्षों ने भी झुकी हुई शाखा रूप भुजाओं द्वारा आलिंगनों को प्राप्त किया।

86. आसु का नाट्यवृत्तिर्न भवति-

- (a) अभिधा (b) आरभटी
(c) सात्वती (d) भारती

Ans : (a) ‘आसु अभिधा नाट्यवृत्तिः न भवति।’

प्रवृत्ति रूप नायक आदि के व्यापार का स्वभाव ही वृत्ति कहलाता है। ये वृत्ति-कौशिकी, सात्वती, आरभटी तथा भारती के भेद से चार प्रकार की होती है। इनसे भिन्न कोई नाट्य वृत्ति नहीं है।

87. “भम धम्मिअ-” इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे
उद्द्योते अस्य उदाहरणं भवति-

- (a) वाच्ये प्रतिषेधे विधिरूपस्य
(b) वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य
(c) वाच्ये विधिरूपेऽनुभयरूपस्य
(d) वाच्ये प्रतिषेधेऽनुभयरूपस्य

Ans : (b) भम धम्मिअ-” इत्यादिश्लोकः ध्वन्यालोके प्रथमे उद्द्योते अस्य वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य उदाहरणम् भवति।

आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक की रचना की जो चार उद्द्योतों में विभाजित है। इनके अनुसार काव्य की आत्मा ध्वनि है। ‘काव्यस्य आत्मा ध्वनिः।’

अतः विकल्प (b)- वाच्ये विधिरूपे प्रतिषेधरूपस्य ‘समीचीनमस्ति’ है।

88. दशरूपकतः रिक्तस्थानं पूरयत-

“आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं
फलमल्पबुद्धिः।

योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः.....।।”

- (a) काव्यपराङ्मुखाय (b) नाट्यपराङ्मुखाय
(c) शास्त्रपराङ्मुखाय (d) स्वादुपराङ्मुखाय

Ans : (d) “आनन्दनिस्यन्दिषु रूपकेषु व्युत्पत्तिमात्रं फलमल्पबुद्धिः। योऽपीतिहासादिवदाह साधुस्तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय।।”

धनञ्जय विरचित ‘दशरूपक’ प्रथम प्रकाश की छठी कारिका में रूपकों में पर्यालोचन का लक्ष्य केवल व्युत्पत्ति या लौकिक ज्ञान न होकर रस रूप अलौकिक आस्वाद का अनुभव है।

89. “कटुकौषधवच्छास्त्रमविद्याव्याधिनाशनम्।” इत्युक्तिः
एषु कस्मिन् अलङ्कारग्रन्थेऽस्ति-

- (a) साहित्यदर्पणे (b) वक्रोक्तिजीविते
(c) रसङ्गाधरे (d) काव्यप्रकाशे

Ans : (b) आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति जीवितम् के प्रथम उन्मेष में प्रयोजन की दृष्टि से शास्त्र को कड़वी औषधि के समान अज्ञान रुपी रोग का निवारक माना है तथा काव्य को अमृत के समान मधुर औषधि माना है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

90. एषु किं काण्डं रामायणे नास्ति?

- (a) किष्किन्ध्याकाण्डम् (b) सीताकाण्डम्
(c) बालकाण्डम् (d) युद्धकाण्डम्

Ans : (b) महर्षि वाल्मीकि विरचित “रामायण” भारतीय साहित्य का आदि महाकाव्य है। इसकी सम्पूर्ण कथा 7 काण्डों में विभक्त है जिसमें 24000 श्लोक हैं।

काण्ड- बालकाण्ड, अयोद्धाकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्ध्याकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड में विभक्त है। अतः विकल्प (b) असंगत है।

91. अस्य महापुराणेषु गणनां नास्ति-

- (a) पद्मपुराणस्य (b) ब्रह्मपुराणस्य
(c) विष्णुपुराणस्य (d) आदित्यपुराणस्य

Ans : (d) पुराणों की रचना लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा ने की। पुराणों की संख्या 18 है। जिनके नाम हैं- मत्स्यपुराण, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्म, ब्रह्मवैवर्त, वामन, बराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कूर्म, स्कन्दमहापुराण है।

अतः आदित्यपुराण की गणना नहीं की गयी है।

92. एषु किम् उपपुराणं न भवति?

- (a) कूर्मपुराणम् (b) साम्बपुराणम्
(c) नृसिंहपुराणम् (d) एकाम्रपुराणम्

Ans : (a) गरुड़ पुराण के अनुसार 18 महापुराण के अतिरिक्त 18 उप पुराण भी मिलते हैं। जिनके नाम- सनत् - नृसिंह, स्कन्द, शिवधर्म, आश्चर्य, नारदीय, कपिल, वामन, औशनसा, ब्रह्माण्ड, वारुण, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, सौर, पाराशर, मरीच तथा भार्गव उपपुराण।

एकाम्रपुराण का उल्लेख नहीं किया गया है विकल्प (d) असंगत है।

93. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति-

- (a) मौसलपर्व (b) कुन्तीपर्व
(c) शान्तिपर्व (d) उद्योगपर्व

Ans : (b) कृष्णद्वैपायन कृति महाभारत पर्वों में विभक्त है। जिनके नाम निम्नवत् हैं-

आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिक पर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानपर्व, स्वर्गरोहणपर्व।

महाभारत के 18 पर्वों में कुन्तीपर्व की गणना नहीं की गयी है।

94. कौटिलीयार्थशास्त्रे सर्वविद्यानां प्रदीपः सर्वकर्मणाम् उपायः, सर्वधर्माणामाश्रयः भवति-

- (a) आन्वीक्षिकी (b) त्रयी
(c) वार्ता (d) दण्डनीतिः

Ans : (a) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में आन्वीक्षिकी विद्या का उल्लेख है। यह विद्या सभी विद्याओं का प्रदीप, सभी कार्यों का साधन तथा सभी धर्मों का आश्रय है।

“प्रदीपः सर्वविद्यानामप्रायःसर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणाम् शश्वदान्वीक्षिकीमता”

95. मनुसंहितानुसारं राज्ञः सचिवानां संख्या भवति-

- (a) 10-12 (b) 7-8
(c) 3-4 (d) 5-6

Ans : (b) मनु जी ने अपने मनुस्मृति में बताये हैं कि राजा के मन्त्रिमण्डल में सदस्यों की संख्या के सम्बन्ध में मनु ने अपना मत दिया है कि राजा सात या आठ सचिवों की नियुक्ति करे।

96. “तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः कर्महेतुना।

अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः॥”

इति मनुवचनं केन सम्बद्धम्?

- (a) उद्भिदेन (b) अण्डजेन
(c) जरायुजेन (d) स्वदजेन

Ans : (a) मनु के अनुसार- पृथ्वी को छेदकर उत्पन्न स्थावर उद्भिज्ज कहलाते हैं। जिनमें कुछ बीज बोने से उत्पन्न होते हैं। कुछ शाखा काटकर लगाने से होते हैं। फल के पकने पर जिनका पौधा नष्ट हो जाता है और जिनमें बहुत फल-फूल लगते हैं, वे (लोकी, सेम, चनादि) जीवन अवधि कहलाते हैं। भूमि से वृक्षादि के सहारे चढ़ने वाले सब बीज बोने तथा टहनी लगाने से उत्पन्न होते हैं। ये सभी अनेक प्रकार के दुःख देने वाले, पूर्व जन्म के पाप के कारण तमोगुण से तथा भीतर चेतनता के कारण के सुख-दुःख का अनुभव करने वाले होते हैं।

97. श्रीमद्भगवद्गीतायां कर्मयोगः कतमोऽध्यायः?

- (a) द्वितीयोऽध्यायः (b) तृतीयोऽध्यायः
(c) चतुर्थोऽध्यायः (d) पञ्चमोऽध्यायः

Ans : (b) श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने अपने प्राप्ति के लिए मुख्य दो मार्ग बताये हैं- एक सांख्ययोग और दूसरा कर्मयोगः जिसमें से ‘कर्मयोग’ का वर्णन तृतीय अध्याय में मिलता है, ‘संख्ययोग’ का वर्णन द्वितीय अध्याय में, ‘ज्ञानसंन्यासयोग’ का वर्णन चतुर्थ अध्याय और ‘कर्मसंन्यासयोग’ का वर्णन पञ्चम अध्याय में मिलता है।

98. “एपिग्रेफिया इंडिका” इति पत्रिकायाः प्रकाशनम् केन प्रारब्धम्?

- (a) जेम्स प्रिंसेपमहोदयेन (b) सर विलियमजॉसमहोदयेन
(c) जे. बर्जेसमहोदयेन (d) कीलहार्नमहोदयेन

Ans : (c) “एपिग्रेफिया इंडिका” का प्रकाशन ‘जे. बर्जेसमहोदय’ ने किया। यह पत्रिका प्राकृत, संस्कृत, तमिल, तेलगू आदि भाषाओं में प्रकाशित होती थी।

99. ‘धम्मलिपी’ नाम कस्य लेखेषु प्राप्यते?

- (a) अशोकस्य (b) समुद्रगुप्तस्य
(c) खारवेलस्य (d) कनिष्कस्य

Ans : (a) ‘धम्मलिपी’ नाम अशोकस्य लेखेषु प्राप्यते अर्थात् धम्मलिपी का प्रयोग अशोक के लेखों में प्राप्त होता है। दूसरे तथा सातवें स्तम्भ लेखों में धम्म की व्याख्या की गई है।

“धम्म है- साधुता, बहुत से कल्याणकारी अच्छे कार्य करना, पापरहित होना, दूसरों के प्रति व्यवहार में “मधुरता, दया-दान तथा शुचिता आदि का होना।”

100. भारतवर्षे दानलेखानाम् उत्कीर्णनं बाहुल्येन कस्मिन् धातौ कृतम्?

- (a) लौहधातौ (b) ताम्रधातौ
(c) रजतधातौ (d) स्वर्णधातौ

Ans : (b) भारतदेश में “दान लेखों” का उत्कीर्णन बहुलतः से ताम्र धातु में किया गया है।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2018

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. भाषाविज्ञानानुसारेण भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति-
(a) आर्मीनी (b) मय
(c) तोखारी (d) इटालिक

Ans : (b)

भाषाविज्ञानानुसारेण भारोपीयपरिवारस्य भाषा 'मय' नास्ति।
“ईरानी भारती चैव बाल्टो सुस्लाविकी।
आर्मीनी अल्बानी चैताः शतम् वर्गे समाश्रिताः।।
इटालिकी च ग्रीकी च जर्मनिक केल्टिकी तथा।
हिती तोखारिकी चैताः केन्दुम् वर्गे प्रकीर्तिताः।।”

2. साङ्ख्यदर्शनेऽन्तःकरणं कयात्मकम्?

- (a) बुद्ध्यहङ्कारमनांसि (b) बुद्धिरेव
(c) बुद्ध्यहङ्कारावेव (d) मनोबुद्धी एव

Ans : (a) साङ्ख्यदर्शनेऽन्तःकरणं बुद्ध्यहङ्कारमनांसि त्रयात्मकम्।
अर्थात् साङ्ख्यदर्शन के अनुसार बुद्धि, अहङ्कार और मन ये तीन अन्तःकरण माने हैं।

3. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

समुचितां तालिकां चिनुत -

- (a) अयोगात्मकभाषा (i) संस्कृत भाषा
(b) श्लिष्टयोगात्मकभाषा (ii) तुर्की
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा (iii) तिब्बती भाषा, हिन्दी
(d) अश्लिष्टयोगात्मकभाषा (iv) चेरोकी

कूट :

1. (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)
2. (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
3. (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
4. (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

Ans : (a)

अयोगात्मकभाषा - तिब्बती भाषा
श्लिष्टयोगात्मकभाषा - संस्कृत भाषा
प्रश्लिष्टयोगात्मकभाषा - चेरोकी
अश्लिष्टयोगात्मकभाषा - तुर्की

4. 'दण्डिक' इत्यस्मिन् पदे कः तद्धितप्रत्ययः?

- (a) ठक् (b) ठन्
(c) इक् (d) ठञ्

Ans : (b) 'दण्डिक' इत्यस्मिन् पदे ठन् तद्धितप्रत्ययः।
'अत इनिठनौ' -अकारान्त शब्दों से युक्त या 'वाला' अर्थ में शब्द के अन्त में 'इनि' 'ठन्' (तद्धित) प्रत्यय होते हैं। इनि का इन् शेष रहता है यथा-गुण ⇒ गुणिन् (गुणयुक्त, गुणवाला) ठन् प्रत्यय का 'इक' शेष रहता है।

यथा - दण्ड ⇒ दण्डिकः

दण्ड + ठन्

दण्ड + इक (ठन् को इक हुआ है)

दण्डिकः

इसी तरह माया ⇒ मायिकः

5. 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' इत्यनेन योगाङ्गनियमेषु कः?

- (a) सन्तोषः (b) तपः
(c) शौचम् (d) ईश्वरप्रणिधानम्

Ans : (a) सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' इत्यनेन योगाङ्गनियमेषु सन्तोषः। अर्थात् महर्षि पतञ्जलि के योगदर्शन में योग समाधि के आठ नियम बताये हैं-यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि। इसमें से नियम के संतोष का लक्षण- 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा।'

6. कतिविधास्तुष्टयः साङ्ख्ये परिगणिताः?

- (a) सप्त (b) तिस्रः
(c) नव (d) अष्टौ

Ans : (c)

“पंचविपर्ययभेदाः भवन्त्यशक्तिश्च करणवैकल्यात्।

अष्टाविंशति भेदा तुष्टिर्नवधाऽष्टा सिद्धिः।।”

नव तुष्टियाँ इस प्रकार हैं -

प्रकृति, उपादान, काल, भाग, शब्दोपरम, स्पर्शोपरम, रूपोपरम, रसोपरम, गन्धोपरम।

7. निरुक्ते कति पदजातानि उपदिष्टानि?

- (a) षट् (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) त्रीणि

Ans : (b) निरुक्त में पदों की संख्या चार है। नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात। निरुक्त का अर्थ है - निर्वचन, व्युत्पत्ति यास्क कृत निरुक्त में 12 अध्याय है अन्त में परिशिष्ट के रूप में 2 अध्याय है। इस प्रकार यह 14 अध्यायों में विभक्त है।

8. जातिवाच्ये सति 'हस्त' शब्दस्य मत्वर्थीयः कः प्रयोगः?

- (a) हस्तवान् (b) हस्तिकः
(c) हस्तालुः (d) हस्ती

Ans : (d) जातिवाच्ये सति 'हस्त' शब्दस्य मत्वर्थीयः प्रयोगः हस्तीऽस्ति।

9. हर्षचरितम् कति उच्छ्वासेषु विभक्तम्?

- (a) दशसु (b) चतुर्षु
(c) अष्टसु (d) सप्तसु

Ans : (c) हर्षचरितम् अष्टसु उच्छ्वासेषु विभक्तम्। महाकवि बाणभट्ट विरचित हर्षचरित गद्यकाव्य के अन्तर्गत आता है जिसमें आठ उच्छ्वास है। बाणभट्ट की अन्य रचनाएँ - कादम्बरी, पार्वतीपरिणय, चण्डीशतक, मुकुटाडितक।

10. फललक्षणा निम्नलिखितासु लक्षणासु कस्याः पर्याया विद्यते?

- (a) शुद्धालक्षणायाः (b) रूढिवतीलक्षणायाः
(c) गौणीलक्षणायाः (d) प्रयोजनवतीलक्षणायाः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) फललक्षणा प्रयोजनवतीलक्षणायाः पर्याया विद्यते। फललक्षणा प्रयोजनवतीलक्षणा का पर्याय है। लक्षणा के अस्सी (80) भेद बताये गये हैं।

11. 'त्रयो धर्मस्कन्धाः, यज्ञो अध्ययनं दानम् इति'-इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि लभ्यते?
- (a) ऐतरेयोपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (b) छान्दोग्य उपनिषद् सामवेदीय उपनिषद् है। इसमें 18 अध्याय या प्रपाठक हैं। यह प्राचीनता, प्रौढ़ता, ब्रह्मज्ञान -प्रतिपादन और प्रमेय-बहुलकता के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। 'त्रयो धर्मस्कन्धाः, यज्ञो अध्ययनं दानम् इति'- इसका वर्णन छान्दोग्य उपनिषद् के द्वितीय अध्याय में है। धर्म के तीन स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान। त्रयो धर्मस्कन्धाः। यज्ञोऽध्ययनं दानम् इति।

12. काव्यमीमांसानुसारं काव्यकविः कतिधा भवति?
- (a) त्रिधा (b) चतुर्धा
(c) पञ्चधा (d) अष्टधा

Ans : (d) काव्यमीमांसानुसारं काव्यकविः अष्टधा भवति। अर्थात् काव्यमीमांसा के अनुसार काव्य कवि आठ प्रकार के होते- रचनाकवि, शब्दकवि, अर्थकवि, अलङ्कारकवि, उक्तिकवि (भक्तिकवि), रसकवि, मार्गकवि, शास्त्रार्थकवि इत्यादि।

13. साध्यशून्यः पक्षो मुक्तावल्यां क उदाहृतः?
- (a) व्याप्यत्वासिद्धः (b) बाधः
(c) सत्प्रतिपक्षः (d) अनैकान्तिकः

Ans : (b) साध्यशून्यः पक्षो मुक्तावल्यां बाधः उदाहृतः। यथा- साध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्वसौ बाधः उदाहृतः। उत्पत्ति कालीन घटे गन्धादिर्यत्र साध्यते।।

14. 'शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः' इति लक्षणलक्षिता चित्तवृत्तिः का योगदर्शनानुसारेण?
- (a) निद्रा (b) प्रमाणम्
(c) विपर्ययः (d) विकल्पः

Ans : (d) योगदर्शनानुसारेण "शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः" इति लक्षणलक्षिता चित्तवृत्तिः विकल्पः भवति।

15. "कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखान्तरेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते" अत्र नलपदस्यार्थोऽस्ति-
- (a) अग्निः (b) नृपः
(c) शत्रुः (d) तृणम्

Ans : (d) "कथाप्रसङ्गेषु मिथः सखीमुखान्तरेऽपि तन्व्या नलनामनि श्रुते" अत्र नलपदस्यार्थोऽस्ति-तृणम्। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित श्रीहर्ष विरचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य 22 सर्गों में निबद्ध है। प्रथम सर्ग के 35 वें श्लोक में श्रीहर्ष नल के प्रति दमयन्ती के अतिशय अनुराग का वर्णन कर रहे हैं। सखियों के मुख से घास के तिनके के अर्थ वाले नल शब्द के सुनने पर भी दमयन्ती सभी कार्य त्यागकर प्रसन्नतापूर्वक राजा नल के विषय में सुनने हेतु प्रस्तुत कानों वाली हो गयी।

16. महाभाष्ये व्याकरणस्य आनुषङ्गिकप्रयोजनेषु "विभक्तिं कुर्वन्ति" इत्यस्य क्रमोऽस्ति-
- (a) षष्ठः (b) पञ्चमः
(c) दशमः (d) सप्तमः

Ans : (a) महाभाष्ये व्याकरणस्य आनुषङ्गिकप्रयोजनेषु "विभक्तिं कुर्वन्ति" इत्यस्य क्रमो षष्ठः अस्ति। अर्थात् महाभाष्य में व्याकरण का आनुषङ्गिक प्रयोग में विभक्ति का क्रम छठवाँ है।

17. 'व्रीहीनवहन्ती' ति कस्य विधेरुदाहरणम् अर्थसङ्ग्रहदिशा?
- (a) नियमविधेः (b) आर्थी-परिसङ्ख्याविधेः
(c) अपूर्वविधेः (d) श्रौती-परिसङ्ख्याविधेः

Ans : (a) 'व्रीहीनवहन्ती' ति नियमविधेः उदाहरणम् अर्थसङ्ग्रहदिशा। अतः मन्त्रविभाग के अन्तर्गत -नियमविधि, परिसङ्ख्याविधि आते हैं।

18. 'सारङ्गी' इत्यत्र स्त्रियां डीष्-प्रत्यय-विधायकं विभक्ति सूत्रम्?
- (a) षिट्रौरादिभ्यश्च (b) जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
(c) वर्णादनुदात्तात् तोपधातोः नः (d) अन्यतो डीष्

Ans : (d) 'सारङ्गी' इत्यत्र स्त्रियां डीष्-प्रत्यय विधायकं सूत्रम् अन्यतोडीष्। अर्थात् तोपधभिन्नाद् वर्णवाचिनोऽनुदात्तान्तात् प्रातिपदिकात् स्त्रियां डीष् स्यात् यथा-सारङ्गी, कल्माषी।

19. योगदर्शने सर्वा चित्तभूमयः काः?
- (a) स्मृतिः, विस्मृतिः, निरुद्धम्, एकाग्रम्, मोहः
(b) निद्रा, तन्द्रा, प्रमादः मोदः, दुःखम्
(c) क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्
(d) क्षिप्तम्, प्रक्षिप्तम्, मूढम्, विमूढम्, सम्मूढम्

Ans : (c) योगदर्शने सर्वा चित्तभूमयः-क्षिप्तम्, मूढम्, विक्षिप्तम्, एकाग्रम्, निरुद्धम्। अर्थात् योगदर्शन में चित्तभूमि के पञ्च भेद बताये गये हैं- (1) क्षिप्तचित्तभूमि (2) मूढचित्तभूमि (3) विक्षिप्तचित्तभूमि (4) एकाग्रचित्तभूमि (5) निरुद्धचित्तभूमि।

20. वेदे 'सूनरी' कस्याः विशेषणम्?
- (a) सरस्वत्याः (b) घोषायाः
(c) अपालायाः (d) उषसः

Ans : (d) वेदे 'सूनरी' उषसः विशेषणम् अस्ति। उषस् सूक्त के देवता उषा, ऋषि-विश्वामित्र तथा छन्द- त्रिष्टुप् है तथा उषस् सूक्त में 7 मन्त्र हैं। ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का सूक्त है।

21. 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः' तर्कसङ्ग्रहे कः प्रोक्तः?
- (a) प्रध्वंसाभावः (b) अत्यन्ताभावः
(c) प्रागभावः (d) अन्योन्याभावः

Ans : (d) तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽन्योन्याभावः। यथा- घटः पटोनेति।

जिस अभाव की प्रतियोगिता तादात्म्यसम्बन्ध से अवच्छिन्न हो वह अभाव अन्योन्याभाव होता है। जैसे -"घटः पटोनेति" घट पट नहीं है। अन्योन्याभाव का अर्थ है परस्पर अभाव अर्थात् एक वस्तु दूसरी वस्तु नहीं है इसका तात्पर्य है कि दोनों में आपसी भेद है- 'घट न पट है' और पट 'न ही घट है'।

22. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-
- (a) योगाचाराः-हीनयानम्
(b) सौत्रान्तिकाः-तज्ज्ञान पञ्चविधं मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलभेदेन
(c) माध्यमिकाः-महायानम्
(d) वैभाषिकाः -तत्र बोधात्मको जीवः। अबोधात्मस्त्वजीवः

Ans : (c) समुचितं विकल्पं -माध्यमिकाः - महायानम्।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

23. 'वेः शब्दकर्मणः' इति सूत्रस्योदाहरणम्भवति-

- (a) शत्रुमधिकुरुते (b) स्वरान् विकुरुते
(c) छात्राः विकुर्वते (d) चित्तं विकरोति कामः

Ans : (b) 'वेः शब्दकर्मणः' इति सूत्रस्योदाहरणं -स्वरान् विकुरुते भवति।

24. 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'-अत्र 'दीदिविम्' पदस्य कोऽर्थः?

- (a) इन्द्रम् (b) प्रकाशमानम्
(c) द्युलोकम् (d) पुनर्जायमानम्

Ans : (b) राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् ।
वर्धमानं स्वे दमे ॥ ८ ॥

यह अग्निसूक्त का मन्त्र है।

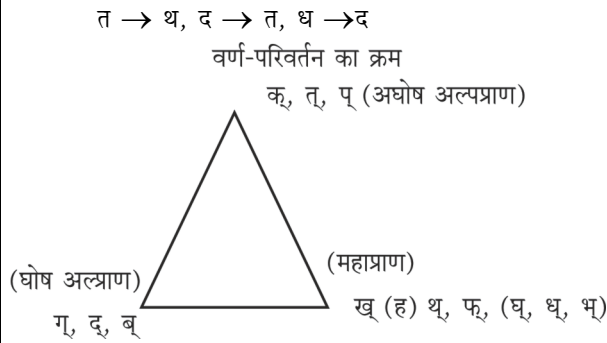
अतः 'राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्'

अत्र 'दीदिविम्' पदस्य 'प्रकाशमानम्' अर्थः।

25. ग्रिमनियमानुसारेण प्रथमवर्णपरिवर्तने तवर्गीय-ध्वर्गीय-ध्वनीनां कः परिवर्तनक्रमोऽस्ति?

- (a) त → ध, द → त, ध → द
(b) त → थ, द → त, ध → द
(c) त → द, द → थ, ध → द
(d) त → थ, ध → त, द → थ

Ans : (b) ग्रिमनियमानुसारेण प्रथमवर्णपरिवर्तने तवर्गीय-ध्वनीनां परिवर्तनमस्ति-



26. 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इति तर्कसङ्ग्रहदीपिकायां कस्य लक्षणं प्रोक्तम् ?

- (a) ईश्वरस्य (b) जीवात्मनः
(c) मनसः (d) परमाणोः

Ans : (a) 'नित्यज्ञानाधिकरणत्वम्' इति तर्कसङ्ग्रहदीपिकायां ईश्वरस्य लक्षणं प्रोक्तम्।

अन्नंभट्ट कृत तर्कसङ्ग्रह न्याय एवं वैशेषिक दर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें बताया गया है कि-

परमात्मनो लक्षणमाह-तत्रेतिनित्यज्ञानाधिकरणत्वमीश्वरत्वम्

27. 'तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि'-इत्युद्धरणं वर्तते-

- (a) कठोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) ईशोपनिषदि

Ans : (d) 'तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि।'-

इत्युद्धरणं ईशोपनिषद् वर्तते।

ईशोपनिषद् सारे उपनिषदों का आधार है। इसमें वर्णित सिद्धान्त का ही सारे उपनिषदों में विशदीकरण है। यह मूलरूप से यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय है। इसमें 18 मन्त्र हैं। इसके कुछ मन्त्र हैं-
विद्ययाऽमृतमश्नुते।
अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् ।

28. 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' इत्यनेन कस्यालङ्कारस्य लक्षणं प्रोक्तमाचार्यमम्मटेन?

- (a) सङ्करस्य (b) विशेषोक्तेः
(c) समासोक्तेः (d) विभावनायाः

Ans : (b) विशेषोक्ति अर्थालङ्कार के अन्तर्गत परिगणित है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

“विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः”

उदाहरण -

“स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।

हरतापि तनुं यस्य शम्भुना न बलं हतम्॥”

29. साहित्यदर्पणानुसारं रसास्वादाने को हेतुः?

- (a) सत्त्वोद्रेकः (b) काव्यपाठः
(c) सहृदयता (d) पात्राणि

Ans : (a) “सत्त्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।

वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः॥”

सत्त्व का उद्रेक होने के कारण कुछ प्रमाताओं (सहृदयों) द्वारा अखण्ड (अद्वितीय) स्वयंप्रकाश-स्वरूप, आनन्दमय, अनुभूय-मान अन्यविषय के संस्पर्श से शून्य ब्रह्मास्वाद सहोदर (सविततर्कसमाधिकल्प) अलौकिक चमत्कार से अनुप्राणित इस रस को अपने आकार की ही भाँति अभिन्न रूप से आस्वादन किया जाता है।

30. 'जन्माद्यस्य यतः' इत्यस्मिन् सूत्रे 'यतः' पदेन किमभिधीयते?

- (a) ब्रह्मणः (b) प्रकृतेः
(c) सृष्टेः (d) जगतः

Ans : (a) 'जन्माद्यस्य यतः' इस सूत्र में यतः पद का अर्थ 'ब्रह्मण' है।

31. अथर्ववेदीयकृषि द्रष्टा ऋषिः कः?

- (a) भिक्षुः (b) बुधः
(c) विश्वामित्रः (d) मधुच्छन्दा

Ans : (c) अथर्ववेदीय कृषि सूक्त के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र हैं।

32. 'गौतमधर्मसूत्रम्' केन वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते?

- (a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (a) 'गौतमधर्मसूत्रम्' सामवेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते।

गौतमधर्मसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है। इसके प्रणेता आचार्य गौतम हैं। यह धर्मसूत्रों में प्राचीनतम है। इसमें 28 अध्याय और एक हजार सूक्त हैं। इसका 26 वाँ अध्यायसामविधान ब्राह्मण के सदृश है। यह सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है। इसमें चार आश्रमों का वर्णन, माता-पिता गुरु का सत्कार, राजधर्म, कर, स्त्रीधर्म, संपत्ति विभाजनादि का वर्णन मिलता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

33. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
सुदुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥
अत्र कोऽलंकारः?
- (a) लुप्तोपमा (b) श्लिष्टोपमा
(c) मालोपमा (d) उत्प्रेक्षा

Ans : (b) कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः सुदुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः अत्र
श्लिष्टोपमा अलङ्कारः। यह श्लोक भारवि कृत् किरातार्जुनीयम् के
प्रथम सर्ग का श्लोक है। यह श्लोक वनेचर द्वारा कथित है। यह
महाकाव्य 18 सर्गों में विभक्त है।

34. 'खलु कृत्वा'-इत्यत्र निरुक्तानुसारं 'खलु' पदं विद्यते-
(a) प्रतिषेधार्थे (b) निश्चयार्थे
(c) समुच्चयार्थे (d) पदपूरणार्थे

Ans : (a) महर्षियास्क खलु को भी अर्थ की दृष्टि से 'मा' के समान
निषेधार्थक ही कहते हैं। तथा उनके मतानुसार कहीं-कहीं यह
पादपूरण भी है। किन्तु वैदिक साहित्य में 'खलु' का प्रयोग मात्र
पादपूरण या जोर देने वाले निपात के रूप में ही हुआ है।
यथा- खलु कृत्वा। खलु कृतम्। खलु तद् बभूव इति।
महावैयाकरण आचार्य पाणिनि ने भी 'खलु' को निषेधार्थक ही माना है।

35. तर्कसङ्ग्रहदीपिकानुसारं 'तज्जन्यत्वे सति
तज्जन्यजनकः' कः?
- (a) परामर्शः (b) हेतुः
(c) उपनयः (d) व्यापारः

Ans : (d) तर्कसङ्ग्रहदीपिका के अनुसार व्यापार का लक्षण है -
"तज्जन्यत्वे सति तज्जन्यजनकः" इति।

36. 'मौद' शाखा केन वेदेन सह सम्बद्धा वर्तते?
(a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) सामवेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (b) 'मौद' शाखा अथर्ववेदेन सह सम्बद्धा वर्तते अर्थात् मौद
शाखा अथर्ववेद से सम्बन्धित है।
अथर्ववेद में कुल नव शाखा वर्णित है -
पिप्पलाद , शौनक
मौद, स्तौद
जाजल, जलद
ब्रह्मवेद, चारणवैद्य
देवदर्श।

37. अधस्तनेषु किं मेलनं सत्यमस्ति-
(a) प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम् -सारस्वती
(b) त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति-सकुमिव
(c) म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः -दुष्टः शब्दः
(d) न चान्तरेण व्याकरणं कृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम्-
सुदेवोऽसि

Ans : (a) निम्नलिखित में उचित मेल है- प्रायश्चित्तीया मा
भूमेत्यध्येयं व्याकरणम् - सारस्वती।

38. 'मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः' इत्येवं
कस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादितम्?
(a) पर्यटनस्य (b) पादपसिञ्चनस्य
(c) तपश्चर्यायाः (d) मृगयायाः

Ans : (d) 'मेदश्छेदकृशोदरं लघुभवत्युत्थानयोग्यं वपुः' इस सूक्ति में
मृगयायाः का वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया गया है।

39. मनुस्मृतौ 'सर्वतेजोमयो हि सः' अस्मिन् श्लोकांशे 'सः'
पदेन कः प्रोक्तः?
(a) सूर्यः (b) प्राज्ञः
(c) नृपः (d) गुरुः

Ans : (c) मनुस्मृतौ 'सर्वतेजोमयो हि सः' अस्मिन् श्लोकांशे 'सः'
पदेन नृपः प्रोक्तः।

मनुस्मृति महर्षि मनु की एकमात्र रचना है। जो 12 अध्याय में विभक्त
है। इसमें मनुष्य के सम्पूर्ण पहलुओं पर अध्ययन किया गया है।

40. पुरुषस्यास्तित्वं साङ्ख्यरीत्या कस्माद् हेतोः?
(a) विषयत्वात् (b) अधिष्ठानात्
(c) त्रैगुण्यात् (d) भेदानां परिमाणात्

Ans : (b) साङ्ख्यरीत्या पुरुषस्यास्तित्वं अधिष्ठानात् हेतोः। अर्थात्
पुरुष का अस्तित्व अधिष्ठान का हेतु है।

41. "सहस्रगुणमुत्सृष्टमादत्ते हि रसं रविः" उक्तिरियं कुत्र
प्राप्यते?
(a) मेघदूते (b) रघुवंशे
(c) किरातार्जुनीये (d) मालविकाग्निमित्रे

Ans : (b) "सहस्रगुणमादत्ते हि रसं रविः" उक्तिरियं रघुवंशे प्राप्यते।
रघुवंशम् महाकवि कालिदास का एक अलौकिक महाकाव्य है। जो
उन्नीस सर्गों में विभक्त है।

42. 'अग्निष्टोमाख्ये' सोमयागे कति शस्त्राणि भवन्ति?
(a) पञ्चदश (b) द्वादश
(c) एकादश (d) अष्ट

Ans : (b) 'अग्निष्टोमाख्ये' सोमयागे द्वादश शस्त्राणि भवन्ति।
अग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी और अतिरात्र ज्योतिष्टोम संस्था के चार
प्रकार हैं। जिस संस्था का सोमयाग होगा उसका अन्त उसी के
सोमयाग से होगा। जैसे - अग्निष्टोम संस्था वाले सोमयागों का अन्त
अग्निष्टोम नामक सोमयाग से ही होगा।

43. 'मशककल्पसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते?
(a) अथर्ववेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) कृष्णयजुर्वेदस्य

Ans : (c) 'मशककल्पसूत्रम्' सामवेदस्य वर्तते। मशककल्पसूत्र
सामवेदीय तांड्य महाब्राह्मण से संबद्ध है। इसके रचयिता मशक
ऋषि माने जाते हैं, अतः इसे मशक सूत्र कहते हैं। आर्षेय कल्पसूत्र
(मशककल्पसूत्र) दो भागों में विभक्त है; (1) आर्षेयकल्प
(2) क्षुद्रकल्पसूत्र
आर्षेय कल्प में बड़े यागों का तथा क्षुद्रकल्पसूत्र में छोटे यागों का
वर्णन है। सामवेदीय कल्पसूत्रों में इसका अत्यन्त आदरणीयस्थान है।
इस विशालतम ग्रन्थ में 11 अध्याय हैं। आर्षेयकल्प (मशककल्पसूत्र)
पर वरदराज की एक विद्वत्पूर्ण 'विवृति' नामक टीका प्राप्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

44. अर्थसङ्ग्रहीत्या शाब्दीभावनाया लक्षणं किम्?

- (a) पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः
- (b) प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापारः
- (c) भवितुर्भवानुकूलो भावकव्यापारविशेषः
- (d) भवितुर्भवानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः

Ans : (a) लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह के अनुसार शाब्दीभावना का लक्षण है- “पुरुषप्रवृत्त्यानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः” इति।

45. ‘मानवश्रौतसूत्रम्’ केन वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते?

- (a) ऋग्वेदेन
- (b) अथर्ववेदेन
- (c) सामवेदेन
- (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (d) ‘मानवश्रौतसूत्रम्’ कृष्ण यजुर्वेदेन सह सम्बद्धम् विद्यते। मानवश्रौतसूत्रम् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद के मैत्रायणी शाखा से है। यह प्राचीनतम् श्रौतसूत्रों में गिना जाता है। इसमें 5 भाग 11 अध्याय है। 5 भागों के नाम हैं - (1) प्राक्सोम (2) इष्टिकल्प (3) अग्निष्टोम (4) राजसूय (5) चयन। इसके वर्ण्य विषय - दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयण, चातुर्मास्य, पितृयज्ञ, पशुबन्ध, अग्निष्टोम, प्रायश्चित्त, प्रवर्ग्य, वाजपेयी, राजसूय, अश्वमेध, एकाह, अहीन, सत्र, शुल्बसूत्र, परिशिष्ट आदि। इसका रचनाकाल आपस्तम्ब से प्राचीन माना जाता है। इसकी शैली कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थों के सदृश है। इसमें आख्यान नहीं है।

46. ‘रि च’ इत्यनेन सूत्रेण किं कार्यं भवति?

- (a) तासस्त्योः सस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे
- (b) रेफस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे
- (c) पूर्वस्वरस्य दीर्घः रादौ प्रत्यये परे
- (d) उपधायाः दीर्घः रेफस्य च लोपः

Ans : (a) ‘रि च’ इस सूत्र का कार्य है- “तासस्त्योः सस्य लोपः रादौ प्रत्यये परे।” इति।

47. ‘स्वच्छजलवत् सहसैव.....सर्वत्र विहितस्थितिः’ इत्यादिना काव्यप्रकाशकृता को गुणो मतः?

- (a) प्रसादगुणः
- (b) माधुर्यगुणः
- (c) ओजो गुणः
- (d) समाधिगुणः

Ans : (a) ‘स्वच्छजलवत् सहसैव सर्वत्र विहितस्थितिः’ इस पंक्ति में काव्यप्रकाश के अनुसार ‘प्रसादगुणः’ है।

48. ‘वाग्मी’ इत्यत्र को मत्वर्थीयप्रत्ययः?

- (a) इनिः
- (b) विनि
- (c) गिनि
- (d) मिनि

Ans : (c) वाचोगिनिः।

= वाग्मी

‘वाच्’ इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मत्वर्थ में ‘गिनि’ प्रत्यय होता है। गिनि में अन्त्य इकार इत्संज्ञक है, गिन् शेष रहता है। वाग्मी -प्रशस्त वाणी वाला

49. शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।

स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥

अत्र ‘तत्’ पदेन किं द्योतते?

- (a) धनम्
- (b) शमः
- (c) तेजः
- (d) तपः

Ans : (c) शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः। स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति॥ अत्र ‘तत्’ पदेन तेजः द्योतते।

50. पण्डितराज-जगन्नाथानुसारं निम्नलिखितेषु को न रसदोषः?

- (a) समबल-प्रबलप्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनम्
- (b) विच्छन्नरसस्य पुनर्दीपनम्
- (c) स्थायि-व्यभिचारिणां शब्दवाच्यत्वम्
- (d) रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्

Ans : (d) पण्डितराज-जगन्नाथानुसारं रसस्य व्यङ्ग्यत्वम् न रसदोषः। अतः पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार रसगंगाधर में दश रस दोष माने गये हैं-

- (1) समबल-प्रबलप्रतिकूलरसाङ्गानां निबन्धनम् - (6वाँ रस दोष)
- (2) विच्छन्नरसस्य पुनर्दीपनम् (7वाँ रस दोष)
- (3) स्थायि -व्यभिचारिणां शब्दवाच्यत्वम् (1,2, रस दोष)

जबकि ‘रसस्य व्यङ्ग्यत्वम्’ रस दोष नहीं है।

51. याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं किं स्त्रीधनं नास्ति?

- (a) अन्वाधेयकम्
- (b) अध्यग्नि
- (c) सामान्यार्थ
- (d) आधिवेदनिकम्

Ans : (c) याज्ञवल्क्यस्मृत्यनुसारं स्त्रीधनं सामान्यार्थं नास्ति। याज्ञवल्क्यस्मृतौ स्त्रीधनं षड्धा उक्तम्। अध्यग्नि, अध्यावहनिकम्, प्रीतिदत्तम्, शुल्कधनम्, अन्वाधेयधनम्, सौदायिकम्।

52. जहदजहल्लक्षणाया वेदान्ते किमपरं नाम प्रयुक्तम् ?

- (a) अजहल्लक्षणा
- (b) जहल्लक्षणा
- (c) भागलक्षणा
- (d) सारोपलक्षणा

Ans : (c) जहदजहल्लक्षणाया वेदान्ते अपरं नाम भागलक्षणा प्रयुक्तम्। अर्थात् वाच्यार्थ के एक अंश का परित्याग करके अवशिष्ट अंश का बोध कराने वाली वृत्ति ‘जहदजहल्लक्षणा’ कहलाती है। इस वृत्ति के द्वारा वाच्यार्थ के एक भाग का परित्याग कर दिया जाता है और एक भाग को ग्रहण कर लिया जाता है। एक भाग का परित्याग करने से इसको “भागत्याग लक्षणा” और भाग मात्र को ग्रहण करने से भाग लक्षणा भी कहते हैं।

53. ऋग्वेदप्रातिशाख्ये कियन्ति समानाक्षराणि उक्तानि?

- (a) चत्वारि
- (b) अष्टौ
- (c) दश
- (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (b) ऋग्वेदप्रातिशाख्ये अष्टौ समानाक्षराणि उक्तानि। ऋग्वेदप्रातिशाख्य में समानाक्षराणि मुख्यतः आठ (8) प्रकार के बताये गये हैं। यथा - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ हैं।

54. ‘सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च’- अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कः?

- (a) वसिष्ठः
- (b) दीर्घतमा
- (c) कुत्स आङ्गिरसः
- (d) मधुच्छन्दा

Ans : (c) ‘सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च’ इति मन्त्रस्य द्रष्टा ऋषिः कुत्स आङ्गिरसः सन्ति। अतः अङ्गिरस ऋग्वेद के आठवें (8) मण्डल के ऋषि हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

55. 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्यात्' -इत्युक्तिः कस्याम् उपनिषदि प्राप्यते?

- (a) केनोपनिषदि (b) मुण्डकोपनिषदि
(c) प्रश्नोपनिषदि (d) श्वेताश्वतरोपनिषदि

Ans : (c) 'तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्यात्' इत्युक्तिः प्रश्नोपनिषदि प्राप्यते यह मन्त्र अथर्ववेद के प्रश्नोपनिषद् से लिया गया है। अथर्ववेद में तीन उपनिषद् हैं- प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्य उपनिषद्।

56. 'तस्मादृचः साम यजूषि दीक्षा'-पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?

- (a) मुण्डकोपनिषदि (b) शुक्लयजुर्वेदे
(c) ऋग्वेदे (d) ईशोपनिषदि

Ans : (a) 'तस्मादृचः साम यजूषि दीक्षा' इयं पंक्ति मुण्डकोपनिषदि प्राप्यते। मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेदीय उपनिषद् है। यह मण्डित अर्थात् संन्यासियों के लिए विरचित हुई है।

57. कस्याम् उपनिषदि 'भृगुवल्ली' उपदिष्टा?

- (a) बृहदारण्यकोपनिषदि (b) तैत्तिरीयोपनिषदि
(c) ऐतरेयोपनिषदि (d) केनोपनिषदि

Ans : (b) तैत्तिरीयोपनिषदि 'भृगुवल्ली' उपदिष्टा। अर्थात् तैत्तिरीयोपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं -प्रथम शिक्षावल्ली, द्वितीया-ब्रह्मानन्दवल्ली, तृतीय-भृगुवल्ली।

58. शब्दनित्यत्वे वार्तिककृतः किं प्रमाणम् ?

- (a) सिद्धन्तु नित्यशब्दत्वात्
(b) पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्
(c) सर्वे सर्वपदादेशाः दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः
(d) तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात्

Ans : (a) शब्दनित्यत्वे वार्तिककृतः सिद्धन्तु नित्यशब्दत्वात् प्रमाणम्।

59. 'उभयप्राप्तौ कर्मणी' ति कारकसूत्रस्योदाहरणं किम् ?

- (a) कर्तृकर्मणोः कृति (b) कृत्यानां कर्तरि वा
(c) अधिकरणवाचिनश्च (d) आश्रयो गवां दोहोऽगोपेन

Ans : (d) 'उभयप्राप्तौ कर्मणी' सूत्र से जहाँ कर्ता और कर्म दोनों आये हों, वहाँ कृदन्त के योग में कर्म में ही षष्ठी होगी, कर्ता में नहीं; जैसे -आश्रयो गवां दोहोऽगोपेन।

60. अज्ञानस्य समष्ट्योपहितं चैतन्यं वेदान्ते किमुच्यते?

- (a) प्राज्ञः (b) विराट्
(c) ईश्वरः (d) वैश्वानरः

Ans : (c) अज्ञानस्य समष्ट्योपहितं चैतन्यं वेदान्ते ईश्वरः उच्यते। अर्थात् अज्ञान से उपहित चैतन्य को वेदान्त में ईश्वर कहा गया है।

61. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' मतमिदं कस्य विद्यते?

- (a) रुद्रटस्य (b) भामहस्य
(c) रुय्यकस्य (d) वामनस्य

Ans : (d) रीति सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य वामन हैं। वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- 'रीतिरात्मा काव्यस्य' इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- 'विशिष्ट पद रचना रीतिः।' अर्थात् विशिष्ट पद पर रचना का नाम 'रीति' है।

62. 'तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते' अत्र त्रिवर्गस्याभिप्रायः कः?

- (a) ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यश्च (b) साम दानं भेदश्च
(c) भूः भुवः स्वश्च (d) धर्मः अर्थः कामश्च

Ans : (d) तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते' अत्र त्रिवर्गस्याभिप्रायः धर्मः, अर्थः कामश्च।

63. माण्डूकायनी शाखा कस्य वेदस्य विद्यते?

- (a) यजुर्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) ऋग्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (c) माण्डूकायनी शाखा ऋग्वेदस्य विद्यते। 'चरणव्यूह' के अनुसार ऋग्वेद की प्रमुख 5 शाखायें हैं- 1. शाकल, 2. वाष्कल, 3. आश्वलायन, 4. शांखायन, 5. माण्डूकायन। जबकि महाभाष्य के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएँ हैं।

64. तस्मादकृतकं शास्त्रं स्मृतिं च सनिबन्धनाम् ।

आश्रित्यारभ्यते शिष्टैः शब्दानामनुशासनम् ॥

वाक्यपदीयस्यास्यां कारिकायाम् 'अकृतकं शास्त्रम्' इति किम् ।

- (a) मीमांसाशास्त्रम् (b) ब्रह्मसूत्रम्
(c) अपौरुषेयं शास्त्रम् (d) व्याकरणशास्त्रम्

Ans : (c) वाक्यपदीयस्यास्यां कारिकायाम् 'अकृतकं शास्त्रम्' इति अपौरुषेयं शास्त्रम्।

65. 'बुध-युध-नश-जनेड्-पु-द्वु-सुभ्यो णेः' इति नियमेन शुद्धः प्रयोगः कः?

- (a) बोधयते पदम् (b) बोधयति पदम्
(c) योधयते काष्ठानि (d) वेदमध्यापयते

Ans : (b) 'बुध, युध, नश, जनेड्, पु-द्वु-सुभ्यो णेः' इति नियमेन शुद्धः प्रयोगः बोधयति पदम्। अर्थात् -बुध, युध, नश, जनेड्, पु-द्वु सुभ्यो णेः एभ्यो व्यन्तेभ्यः परस्मैपदं स्यात्।

यथा-बोधयति पदम्।

अध्यापयति वेदम् ।

66. भरतमुनिना रसस्य संख्या कियती स्वीकृता?

- (a) नव (b) अष्टौ
(c) षट् (d) दश

Ans : (b) आचार्य भरत के अनुसार नाटक में आठ रस माने गये हैं- 'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।' अभिनवगुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम् रस के रूप में स्वीकार किया है। "शान्तोऽपि नवमो रसः।" विश्वनाथ नवरस के अतिरिक्त 'वात्सल्य' नामक रस को भी स्वीकार करते हैं। तथा भवभूति ने 'करुण रस' को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं। "एको रसः करुण एव।"

67. काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति सिद्धान्तः प्रधानतया केन प्रतिपादितः?

- (a) आनन्दवर्धनेन (b) अभिनवगुप्तेन
(c) मम्मटेन (d) भरतमुनिना

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) आनन्दवर्धन ने काव्य की आत्मा ध्वनि माना है - “काव्यस्यात्मा ध्वनिः।” इनका विश्वप्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ ध्वन्यालोक है। इसमें इन्होंने ध्वनि के विषय में विस्तार से वर्णन किया है। ध्वन्यालोक चार उद्योत में विभक्त है।

68. साहित्यदर्पणानुसारं रसस्य किं विशेषणं न साधु?

- (a) लोकानुभूतिः (b) स्वप्रकाशः
(c) ब्रह्मास्वादसहोदरः (d) अभिन्नः

Ans : (a) साहित्यदर्पणानुसारं रसस्य ‘लोकानुभूतिः’ विशेषणं न साधु।

69. ‘शोणो धावती’ त्युदाहरणे वेदान्तरीत्या का लक्षणा?

- (a) भागलक्षणा (b) साध्यवसानलक्षणा
(c) अजहल्लक्षणा (d) जहल्लक्षणा

Ans : (c) ‘शोणो धावती’ त्युदाहरणे शोणो धावती- अजहल्लक्षणा। अर्थात् वेदान्तानुसार शोणो धावती -अजहल्लक्षणा उदाहरण है। इसको उपादान लक्षणा भी कहते हैं। वाच्यार्थ का बिना परित्याग किए हुए वाच्यार्थ से सम्बद्ध अर्थ का बोध कराने वृत्ति अजहल्लक्षणा कहते हैं- “शोणो धावति” अर्थात् ‘लाल दौड़ रहा है।’

70. कस्माद् हेतोः प्रधानस्यानुपलब्धिः सांख्यरीत्या?

- (a) मनोऽनवस्थानात् (b) सौक्ष्म्यात्
(c) समानाभिहारात् (d) अतिदूरात्

Ans : (b) सौक्ष्म्यात् तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः। महदादि तच्च कार्यं प्रकृति सरूपं विरूपं च।। अर्थात् प्रकृति एवं पुरुष अत्यधिक सूक्ष्म होने के कारण हमें दिखाई नहीं देते हैं। प्रकृति का ज्ञान हमें महदादि कार्यों के कारण होता है। यह सांख्यकारिका की आठवीं कारिका में वर्णित है।

71. तर्कसङ्ग्रहरीत्या आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं किम्भवति?

- (a) गुरुत्वम् (b) द्रव्यत्वम्
(c) स्नेहः (d) द्रवत्वम्

Ans : (d) तर्कसङ्ग्रहरीत्या आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम् भवति।

72. अधस्तनेषु उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं चिनुत-

- (a) यो रश्मस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः-इन्द्रसूक्तम्
(b) ऋतस्य बुध्न उषसमिषण्यन् वृषा मही रोदसी सा विवेश-उषससूक्तम्
(c) यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जभ्युरीति-पर्जन्यसूक्तम्
(d) वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्च न संदितम्-वरुणसूक्तम्

Ans : (c) उचितसम्बन्धयुतं विकल्पं अस्ति यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जभ्युरीति- पर्जन्यसूक्तम् अन्य सभी विकल्प अनुचित है।

73. “अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः” रघुवंशे इयमुक्तिः कस्य?

- (a) वसिष्ठस्य (b) कौत्सस्य
(c) सिंहस्य (d) अरुन्धत्याः

Ans : (a) “अदूरवर्तिनीं सिद्धिं राजन्विगणयात्मनः” रघुवंशे इयं वशिष्ठस्य उक्तिः। कालिदास विरचित ‘रघुवंश महाकाव्यं’ लघुत्रयी के अन्तर्गत परिगणित होता है। इस महाकाव्य में 19 सर्ग हैं। इसमें रघुवंश के 31 राजाओं का वर्णन किया गया है।

74. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

समुचितां तालिकां चिनुत-

- (a) अचोन्त्यादि (i) प्रगृह्यः
(b) इ इन्द्रः (ii) उपधा
(c) कृतद्धितसमासाश्च (iii) टि
(d) अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः (iv) प्रातिपदिकम्

कूट :

1. (a)-(ii), (b)-(i) (c)-(iii), (d)-(iv)
2. (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)
3. (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(iii)
4. (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)

Ans : (2) अचोन्त्यादि -टि

इ इन्द्रः- प्रगृह्यः

कृतद्धितसमासाश्च - प्रातिपदिकम्

अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः - उपधा।

75. ‘केवलाघो भवति केवलादी’ अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा कः?

- (a) कण्वः (b) ब्रह्मा
(c) गविष्ठिरः (d) भिक्षुराङ्गिरसः

Ans : (d) ‘केवलाघो भवति केवलादी’ अस्य मन्त्रस्य द्रष्टा भिक्षुराङ्गिरसः। अर्थात् केवलाघो भवति केवलादी इस मन्त्र के द्रष्टा भिक्षुराङ्गिरस हैं।

76. ‘अग्निष्टोमाख्यः’ सोमयागः कदा अनुष्ठीयते?

- (a) प्रावृषि (b) ग्रीष्मे
(c) शरदि (d) वसन्ते

Ans : (d) ‘अग्निष्टोमाख्यः’ सोमयागः वसन्ते अनुष्ठीयते। अर्थात् अग्निष्टोम नाम सोमयाग सदैव वसन्त नामक ऋतु के समय पर सम्पादित किया जाता है जो पांच दिनों तक चलता है।

77. ‘महदरण्यमि’ त्यर्थे स्त्रीप्रत्यये किं भवति?

- (a) महारण्यानी (b) अरण्या
(c) महारण्या (d) अरण्यानी

Ans : (d) ‘महदरण्यमि’ त्यर्थे स्त्रीप्रत्यये अरण्यानी भवति। वार्तिक-हिमारण्ययोर्महत्त्वे। महद् हिमं हिमानी, महद् अरण्यम् अरण्यानी। हिम और अरण्य शब्दों से महत्त्व अर्थ में डीष (ई) और आनुक् (आन) का आगम ‘इन्द्र-वरुण भव---’सूत्र और हिमारण्ययोर्महत्त्वे वार्तिक से हुआ।

78. अधस्तनेषु किं मेलनं समुचितम् ?

- (a) आ मुक्तेः-आङ्मर्यादाभिवध्योः
(b) मुहूर्तसुखम् - यस्य चायामः
(c) घृतगन्धि -वोपसर्जनात्
(d) दम्पती-स्त्रियां संज्ञायाम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) आ मुक्तेः-आड्मर्यादाभिधयोः समुचित मेलनम् अस्ति।
यथा-

आड्मर्यादावचने - परिहरेः संसारः
पञ्चम्यपाङ्परिभिः - आमुक्तेः संसारः

79. साङ्ख्यदर्शने कैवल्यं कस्य मन्यते?

- (a) प्रधानस्य (b) महतः
(c) अहङ्कारस्य (d) पुरुषस्य

Ans : (d) साङ्ख्यदर्शने कैवल्यं पुरुषस्य मन्यते। पुरुषस्यदर्शनाथं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य। 'पङ्गवन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।' दुःखों की ऐकान्तिक या आत्यन्तिक निवृत्ति ही सांख्य का लक्ष्य है। प्रकृति की सृष्टिः के उद्देश्य की पूर्ति हो जाने पर प्रकृति विरत हो जाती है और पुरुष कैवल्य को प्राप्त हो जाता है।

80. 'सच्चिदानन्दाद्वयं ब्रह्मे' त्यादिना वेदान्तसारे किं लक्षितम् ?

- (a) अवस्तु (b) वस्तु
(c) अज्ञानम् (d) अधिकारी

Ans : (b) वस्तु सच्चिदानन्दाद्वयं ब्रह्मे। अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु। अर्थात् वस्तु है, सच्चिदानन्द अद्वितीय ब्रह्म, और अज्ञान से प्रारम्भ होने वाले समस्त जड़पदार्थों का समूह अवस्तु है।

81. रुद्रदाम्नः गिरनारलेखः कस्यां भाषायां विद्यते?

- (a) प्राकृतभाषायाम् (b) अपभ्रंशभाषायाम्
(c) संस्कृतभाषायाम् (d) पालिभाषायाम्

Ans : (c) रुद्रदाम्नः गिरनारलेखः संस्कृत भाषायां विद्यते। रुद्रदाम्न का गिरनार शिलालेख संस्कृत भाषा में निबद्ध है।

82. "वागर्थाविव" इत्यत्र कतमः समासः?

- (a) द्विगुसमासः (b) केवलसमासः
(c) कर्मधारयसमासः (d) अव्ययीभावसमासः

Ans : (b) वागर्थाविव-केवलसमासः। लौकिकविग्रह- वागर्थी इव अलौकिक विग्रह-वागर्थ औ इव। यहां पर 'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च' सूत्र से केवल समास का विधान हुआ है।

83. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' उक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?

- (a) उत्तररामचरिते (b) नैषधीयचरिते
(c) मालविकाग्निमित्रे (d) हर्षचरिते

Ans : (a) 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' यह उक्ति भवभूति का है। 'उत्तररामचरितम्' के प्रथमाङ्क में भवभूति राम के माध्यम से कहते हैं कि-लौकिक सज्जनों की वाणी तो अर्थ का अनुसरण करती है, परन्तु प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है।

यथा-

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।

84. 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' वाक्यपदीयस्य अस्यां कारिकायां 'विद्यैवैकपदागमा' इत्यनेन पदेन किंस्वरूपा विद्या लक्ष्यते?

- (a) वर्णरूपा (b) अर्थरूपा
(c) प्रणवरूपा (d) शब्दरूपा

Ans : (c) 'सत्या विशुद्धिस्तत्रोक्ता विद्यैवैकपदागमा' वाक्यपदीयस्य अस्यां कारिकायां 'विद्यैवैकपदागमा' इत्यनेन पदेन स्वरूपा प्रणवरूपा विद्या लक्ष्यते।

85. 'नीतिमञ्जरी' प्रतिपाद्यविषयाः केन सम्बद्धाः?

- (a) कृष्णयजुर्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) सामवेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (d) 'नीतिमञ्जरी' प्रतिपाद्यविषयाः ऋग्वेदेन सम्बद्धाः। नीतिमञ्जरी का प्रतिपाद्य विषय ऋग्वेद से सम्बन्धित है।

86. 'लोकेऽधिको हरिः' इत्यत्र सप्तमीविभक्तौ को नियमः?

- (a) 'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः' इति सूत्रनिर्देशात्
(b) सप्तमी-पञ्चम्यौ कारकमध्ये
(c) अधिरीश्वरे
(d) यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी

Ans : (a) 'लोकेऽधिको हरिः' इत्यत्र सप्तमी विभक्तौ 'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः' इति सूत्रनिर्देशात् नियमः।

87. अधोऽङ्कितेषु समासप्रकरणानुसारं केन सह कस्य समबन्धः?

समुचितां तालिकां चिनुत-

- (a) हंसौ (i) जातेश्वर
(b) ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ii) पुमान् स्त्रिया
(c) शूद्रभार्यः (iii) न निर्धारणे
(d) नृणां द्विजः श्रेष्ठः (iv) वर्णानामानुपूर्व्येण

कूटः

1. (a)-(iii), (b)-(iv) (c)-(ii), (d)-(i)
2. (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(iii)
3. (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(ii)
4. (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(iii)

Ans : (b) दिये गये युग्मों में सही सुमेलन इस प्रकार है-

हंसौ - पुमान् स्त्रिया
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः - वर्णानामानुपूर्व्येण
शूद्रभार्यः - जातेश्वर
नृणां द्विजः श्रेष्ठः - न निर्धारणे

88. 'मनसा हरिं व्रजति' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणी'-त्यादिसूत्रेण कर्मणि चतुर्थी कथं भवति?

- (a) चेष्टायाः प्रतीत्यभावात् (b) अध्ववाचिकर्मत्वात्
(c) गत्यर्थकर्मणोऽभावात् (d) व्रजधातोः गत्यर्थाभावात्

Ans : (a) 'मनसा हरिं व्रजति' इत्यत्र 'गत्यर्थकर्मणी' त्यादिसूत्रेण कर्मणि चतुर्थी चेष्टायाः प्रतीत्यभावात् न भवति।

89. पाणिनीयशिक्षानुसारेण विसर्गस्य रूपपरिवर्तनं (गतिः) कतिविधम् भवति?

- (a) अष्टविधम् (b) नवविधम्
(c) त्रिविधम् (d) सप्तविधम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) पाणिनीयशिक्षानुसारेण विसर्गस्य रूपपरिवर्तनं (गतिः) अष्टविधम् भवति।
- ओभावश्च विवृतिश्च शषसा रेफ एव च।
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणाम् ।।

90. 'अग्निवेश्य-गृह्यसूत्रम्' कस्य वेदस्य वर्तते?

- (a) अथर्ववेदस्य (b) ऋग्वेदस्य
(c) कृष्णयजुर्वेदस्य (d) सामवेदस्य

Ans : (c) 'अग्निवेश्य-गृह्यसूत्रम्' कृष्णयजुर्वेदस्य अन्तर्गते वर्तते।
यजुर्वेद - कृष्णयजुर्वेद
शुक्लयजुर्वेद

91. तर्कभाषांरीत्या अभावात्मककार्यस्य कारणं कीदृशम्भवति?

- (a) असमवायिकारणम् (b) निमित्तकारणम्
(c) समवायिकारणम् (d) समवाय्यसमवायिकारणम्

Ans : (b) तर्कभाषांरीत्या अभावात्मककार्यस्य कारणं निमित्तकारणम् भवति।

92. अर्थशास्त्रस्य चतुर्थमधिकरणं वर्तते-

- (a) धर्मस्थीयम् (b) षाड्गुण्यम्
(c) योगवृत्तम् (d) कण्टकशोधनम्

Ans : (d) अर्थशास्त्र आचार्य कौटिल्य की कृति है। यह राजनीति विज्ञान का विश्वकोश कहा जाता है यह 15 अधिकरणों 150 अध्यायों तथा 180 प्रकरणों में विभाजित है इसके चतुर्थ अधिकरण का नाम कण्टकशोधन है, प्रथम अधिकरण का नाम विनयाधिकरण, तृतीय अधिकरण का नाम धर्मस्थीय तथा सप्तम अधिकरण का नाम षाड्गुण्य अधिकरण है।

93. अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) जीवाजीवास्त्रबन्धसम्बरनिर्जरमोक्षास्तत्त्वानि-सौत्रान्तिधः
(b) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः-वैभाषिकाः
(c) भावनाभिर्भावितानि पञ्चभिः पञ्चधाक्रमात्, महाव्रतानि-न्यासभाष्यम्
(d) तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च- आर्हताः

Ans : (d) तत्र जीवा द्विविधाः संसारिणो मुक्ताश्च-आर्हताः इति समुचितं विकल्पं अस्ति। अन्यतमः असमुचितं विकल्पं सन्ति।

94. अजहत्त्वार्था लक्षणा का भवति?

- (a) उपादानलक्षणा (b) लक्षणलक्षणा
(c) साध्यवसानिका (d) फललक्षणा

Ans : (a) अजहत्त्वार्था लक्षणा उपादानलक्षणा भवति। वेदान्तसार में तीन प्रकार की लक्षणाओं का उल्लेख मिलता है-

- (1) जहल्लक्षणा- उदा. = गङ्गायांघोषः
(2) अजहल्लक्षणा - उदा. = शोणोधावति
(3) जहतजहल्लक्षणा - उदा. = तत्त्वमसि

95. 'मा नो वधाय हत्नवे जिहीष्णानस्य रीरधः।' अत्र स्तूयमानो देवः कः?

- (a) मित्रः (b) रुद्रः
(c) अग्निः (d) वरुणः

Ans : (d) 'मा नो वधाय हत्नवे जिहीष्णानस्य रीरधः।' यत्र स्तूयमानो देवः 'वरुण'।

96. साङ्ख्यरीत्या मोक्षप्राप्तिः कस्मादङ्गीक्रियते?

- (a) धर्मात् (b) वैराग्यात्
(c) ऐश्वर्यात् (d) ज्ञानात्

Ans : (d) साङ्ख्यरीत्या मोक्षप्राप्तिः ज्ञानात् अङ्गीक्रियते।

97. एध् धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनस्य किं रूपं भवति?

- (a) ऐधेमहि (b) एधामहै
(c) ऐधामहि (d) एधामहि

Ans : (c) एध् धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनस्य रूपम् ऐधामहि भवति।

यथा-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
म.पु.	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उ.पु.	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि।

98. 'प्रतिहर्ता' ऋत्विक् कस्य गणस्य विद्यते

- (a) उद्गातृगणस्य (b) अध्वर्युगणस्य
(c) होतृगणस्य (d) ब्रह्मगणस्य

Ans : (a) 'प्रतिहर्ता' ऋत्विक् उद्गातृगणस्य विद्यते।

99. शिशुपालवधस्य सर्गसंख्या काऽस्ति?

- (a) एकविंशतिः (b) विंशतिः
(c) सप्तविंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (b) शिशुपालवधम् महाकाव्य महाकवि माघ की एक मात्र कृति है जिसमें विंशतिः (20) सर्ग तथा 1650 पद्य हैं।

किरातार्जुनीयम्	-	18 सर्ग
कुमारसम्भवम्	-	17 सर्ग
रघुवंशम्	-	19 सर्ग

100. तर्कसङ्ग्रहीत्या मनः कीदृक् ?

- (a) एकं विभु नित्यञ्च (b) अनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च
(c) अनन्तं विभु नित्यञ्च (d) एकमनित्यं परमाणुरूपञ्च

Ans : (b) मनसः सुखदुःखलब्धिसाधनमिन्द्रियं। मैं सुखी, मैं दुःखी इस प्रकार से जो सुख दुःखादि की उपलब्धि का साधन है वह मन है। मन प्रत्येक जीवात्मा में सम्बद्ध होने के कारण भिन्न-भिन्न है, परमाणुरूप है तथा नित्य है- 'अनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च'।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2019

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. दुर्गेण कस्मिन् ग्रन्थे टीका लिखिता?

- (a) बृहदेवतायाम् (b) बौधायनगृह्यसूत्रे
(c) कात्यायनशुल्बसूत्रे (d) निरुक्ते

Ans : (d) दुर्गेण निरुक्ते ग्रन्थे टीका लिखिता। अर्थात् - दुर्गाचार्य ने निरुक्त ग्रन्थ पर टीका लिखी। इन्होंने अपनी टीका/व्याख्या में 'निरुक्तं चतुर्दश प्रभेदम्' कहा है अभिप्राय यह है कि यास्क सहित कुल 14 निरुक्तकार हैं। निरुक्त, आचार्य यास्क कृत रचित ग्रन्थ है। छः वेदाङ्गों में निरुक्त का चौथा स्थान है।

2. सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुर्नास्ति-

- (a) असदकरणम् (b) सर्वसम्भवाभावः
(c) शक्तस्य शक्यकरणम् (d) सर्वसम्भव-भावः

Ans : (d) सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुः सर्वसम्भव - भावः नास्ति। सत्कार्यवाद के पाँच हेतु माने गये हैं जो श्लोक से स्पष्ट हैं-
असदकरणादुपादान ग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्यशक्यकरणाद् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ।।

3. अधोलिखितेषु 'केन्दुम्' वर्गं नास्ति

- (a) जर्मनभाषा (b) रूसीभाषा
(c) फ्रेंचभाषा (d) ग्रीकभाषा

Ans : (b) 'रूसीभाषा' 'केन्दुम्' वर्गस्य नास्ति। रूसी भाषा केन्दुम् वर्ग की भाषा नहीं है जबकि जर्मनभाषा, फ्रेंचभाषा और ग्रीकभाषा 'केन्दुम्' भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है।

नोट- डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा अष्टादश (18) भाषा परिवारों का नामोल्लेख करते हैं।

4. कुन्तकानुसारम् अधस्तनेषु सुकुमारमार्गस्य प्रथमो गुणः वर्तते

- (a) माधुर्यम् (b) सौन्दर्यम्
(c) स्वाभाविकम् (d) लावण्यम्

Ans : (a) कुन्तक के अनुसार, सुकुमारमार्ग का प्रथम गुण 'माधुर्य' गुण है।

5. ऋग्वेदसंहितायाः पदपाठकारो निम्नलिखितेषु कोऽस्ति?

- (a) गार्ग्यः (b) शाकल्यः
(c) शौनकः (d) यास्कः

Ans : (b) ऋग्वेदसंहितायाः पदपाठकारो 'शाकल्यः' अस्ति। अर्थात् - ऋग्वेद संहिता के पद पाठकार शाकल्य ऋषि हैं। जबकि निरुक्तकार आचार्य यास्क हैं-

शाकल्यः प्रथमस्तेषां तस्मादन्यो रथीतरः।

बाष्कलिश्च भरद्वाज इति शाखा प्रवर्तकः॥

अर्थात् -शाकल्य ऋग्वेद के पद पाठकर्ता हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में इनको प्रथम शाखा प्रवर्तक कहा गया है।

6. दर्शयज्ञः कस्यां तिथौ क्रियते?

- (a) पौर्णमास्याम् (b) अमावस्याम्
(c) अष्टम्याम् (d) चतुर्दश्याम्

Ans : (b) दर्शयज्ञः 'अमावस्याम्' तिथौ क्रियते। अर्थात्- 'दर्शयज्ञः' अमावस्या तिथि को सम्पन्न किया जाता है। इस यज्ञ में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दूध तथा दही से बने द्रव्य की आहुति दी जाती है।

7. 'षड् भावविकारा भवन्ति' मतमिदं कस्य विद्यते?

- (a) वार्ष्पायणैः (b) शाकपूणेः
(c) शाकटायनस्य (d) यास्कस्य

Ans : (a) 'षड् भावविकारा भवन्ति' मतमिदं 'वार्ष्पायणैः' विद्यते। 'षड् भावविकाराः भवन्ति' यह मत वार्ष्पायण का है। षड् भावविकार निम्न हैं- जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।

8. सवितार्का समापत्तिः उच्यते-

- (a) शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा
(b) स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा
(c) श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया
(d) उक्तेषु त्रिषु न कापि

Ans : (a) सवितार्का समापत्तिः उच्यते -
शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा।

9. अशोकस्य शाहबाजगढ़ी-अभिलेखः कुत्र प्राप्यते

- (a) जूनागढ़-गुजरातप्रान्ते (b) पेशावर-पाकिस्तानदेशे
(c) गुर्जरा-मध्यप्रदेशे (d) भावू-राजस्थानप्रदेशे

Ans : (b) अशोकस्य शाहबाजगढ़ी अभिलेख 'पेशावर पाकिस्तानदेशे' प्राप्यते। अर्थात् अशोक का शाहबाजगढ़ी अभिलेख पेशावर पाकिस्तान में प्राप्त होता है। गुजरात प्रान्त का जूनागढ़ अभिलेख रुद्रदामन का है। जबकि गुर्जरा - मध्य प्रदेश में, भावू राजस्थान प्रदेश में स्थित है। ये दोनों अशोक के अभिलेख हैं।

10. जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे कस्मिन् दर्शने मन्यते?

- (a) बौद्धदर्शने (b) सांख्यदर्शने
(c) वेदान्तदर्शने (d) जैनदर्शने

Ans : (d) जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे 'जैनदर्शने' मन्यते। अर्थात् जैन दर्शन एक नास्तिक दर्शन है। जैन दर्शन के प्राचीन आचार्य उमास्वाति हैं, इन्होंने जैन दर्शन में सात तत्त्वों को स्वीकार किया है-

- (1) जीव, (2) अजीव, (3) आस्रव, (4) बन्ध, (5) संवर
(6) निर्जरा और (7) मोक्ष।

सांख्यदर्शन - 25 तत्त्व मानता है।

बौद्धदर्शन - 1 तत्त्व

वेदान्तदर्शन - जीव और ब्रह्म कि एकता को मानता है।

अतः वेदान्त 1 पदार्थ (तत्त्व) मानता है।

11. 'रुदति प्राव्राजीत्' अत्र रुदति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति

- (a) निर्धारणे (b) सामीप्ये अधिकरणे
(c) अनादराधिक्ये भावलक्षणे (d) कर्मप्रवचनीयस्य योगे

Ans : (c) 'रुदति प्राव्राजीत्' अत्र रुदति पदे अनादराधिक्ये भावलक्षणे अर्थे सप्तमी विभक्तिः अस्ति। षष्ठी चानादरे सूत्र से जिसका अनादर या तिरस्कार करके कोई कार्य किया जाता है, उसमें षष्ठी वा सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे - रुदतः पुत्रस्य रुदति पुत्रे वा वनं प्राव्राजीत्। रोते हुए पुत्र का तिरस्कार करके वह संन्यासी हो गया।

12. कौटिलीय-अर्थशास्त्रं कति अधिकरणेषु विभक्तमस्ति?

- (a) अष्टादशाधिकरणेषु (b) द्वादशाधिकरणेषु
(c) दशाधिकरणेषु (d) पञ्चदशाधिकरणेषु

Ans : (d) आचार्य कौटिलीय-अर्थशास्त्रं पञ्चदशाधिकरणेषु विभक्तमस्ति। अर्थात् - आचार्य कौटिल्य द्वारा रचित ग्रन्थ अर्थशास्त्र में 15 (पन्द्रह) अधिकरण हैं- 1. विनयाधिकारिक 2. अध्यक्षप्रचार 3.

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

धर्मस्थीय 4. कण्टकशोधन 5. योगवृत्त 6. मण्डलयोनि 7. षाड्गुण्य प्रकरण 8. व्यसनाधिकारिक 9. अभियास्यत्कर्म 10. साङ्गामिक 11. सङ्घवृत्त 12. आबलीयम 13. दुर्गलम्भोपाय 14. औपनिषदिक 15. तन्त्रयुक्ति।

13. मुद्राराक्षसस्य तृतीयाङ्कस्य नाम अस्ति

- (a) मुद्राप्रप्तिः (b) भूषणविक्रयः
(c) प्रलोभनम् (d) कृतककलहः

Ans : (d) मुद्राराक्षसस्य तृतीयाङ्कस्य नाम 'कृतककलहः' अस्ति। अर्थात्- मुद्राराक्षस के लेखक विशाखदत्त हैं। जो सात अंकों में विभक्त नाटक हैं। मुद्राराक्षस के सात अंकों के नाम इस प्रकार हैं- 1. मुद्रालाभ, 2. भूषणविक्रय, 3. कृतककलह, 4. प्रलोभन 5. कूटलेख, 6. कपटपाश, 7. संग्रहण।

14. 'विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।' इति कस्य ग्रन्थस्य वचनमस्ति

- (a) मनुस्मृत्याः (b) याज्ञवल्क्यस्मृत्याः
(c) पाराशरस्मृत्याः (d) नारदस्मृत्याः

Ans : (b) 'विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान्।' इति याज्ञवल्क्यस्मृत्याः वचनमस्ति। अर्थात् यह याज्ञवल्क्य स्मृति का वचन है।

15. ऑन दि सब्लाइम [On the Sublime] ग्रन्थस्य प्रणेता वर्तते

- (a) अरस्तु (b) क्रोञ्चे
(c) प्लेटो (d) लान्जाइनस

Ans : (d) 'ऑन दि सब्लाइम' ग्रन्थस्य प्रणेता लान्जाइनस वर्तते।

प्रणेता	ग्रन्थ
क्रोञ्चे	'ला फिलोसोफिया दि क्रियम्बटिस्टा विको।
प्लेटो	'द रिपब्लिक'
	सिम्पोजियम्
अरस्तु	पोयेटिक्स

16. 'यस्य हलः' इत्यत्र 'यस्य' इत्यनेन ग्रहणं भवति

- (a) केवलं यकारस्य
(b) अकारसहितं यकारस्य
(c) यत् प्रातिपदिकेन निष्पन्नस्य षष्ठ्यन्तस्य
(d) उक्तेषु न कस्यापि

Ans : (b) 'यस्य हलः' इत्यत्र 'यस्य' इति 'अकारसहितं यकारस्य' ग्रहणं भवति।

17. कर्मकाण्डस्य प्रधानता कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते?

- (a) न्यायदर्शने (b) चार्वाकदर्शने
(c) मीमांसादर्शने (d) योगदर्शने

Ans : (c) कर्मकाण्डस्य प्रधानता मीमांसादर्शने प्रतिपाद्यते अर्थात् कर्मकाण्ड की प्रधानता मीमांसा दर्शन में प्रतिपादित है। मीमांसादर्शन ही वेदान्त दर्शन कहलाता है यह दर्शन आस्तिक दर्शन है। जबकि चार्वाकदर्शन नास्तिक दर्शन है।

18. अधोलिखितेषु उपन्यासकारं चिनुत

- (a) बाणभट्टः (b) बिल्हणः
(c) दण्डी (d) अम्बिकादत्तव्यासः

Ans : (d) अधोलिखितेषु उपन्यासकारं अम्बिकादत्तव्यासः अस्ति। अर्थात् निम्नलिखित में से अम्बिकादत्तव्यास उपन्यासकार हैं जबकि अन्य सभी रचनाकारों की रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कवि	रचना
बाणभट्टः	कादम्बरी
बिल्हणः	विक्रमांकदेव चरितम्
दण्डी	अवन्तिसुन्दरी कथा

19. 'कुरुचरः' इत्यत्र 'चरेष्टः' सूत्रेण 'ट' प्रत्ययो विधीयते-

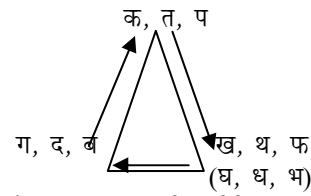
- (a) अधिकरणे उपपदे (b) कर्मण्युपपदे
(c) सुबन्ते उपपदे (d) उपसर्गे उपपदे

Ans : (a) 'कुरुचरः' इत्यत्र 'चरेष्टः' सूत्रेण 'ट' प्रत्ययो अधिकरणे उपपदे विधीयते। अर्थात् 'कुरुचरः' में चरेष्टः सूत्र से 'ट' प्रत्यय का विधान अधिकरण अर्थ में उपपद के रूप में हुआ है।

20. ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनीनां परिवर्तनक्रमोऽस्ति

- (a) द > ध, ध > थ, > त
(b) त > थ, द > ध, > त
(c) थ > ध, त > द, ध > द
(d) त > थ, ध > द, द > त

Ans : (d) ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनीनां परिवर्तनक्रमो त > थ, ध > द, द > त अस्ति। ग्रिम नियम का निरूपण इस प्रकार है-



21. कौषीतकिब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?

- (a) शुक्लयजुर्वेदेन (b) कृष्णयजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) सामवेदेन

Ans : (c) कौषीतकिब्राह्मणं ऋग्वेदेन सम्बद्धमस्ति। अर्थात् - कौषीतकि ब्राह्मण का सम्बन्ध ऋग्वेद से है। शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ 'शतपथब्राह्मण' है। जबकि तैत्तिरीय कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है। तथा सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ-पञ्चविंश, षड्विंश आर्षेय, दैवत, छान्दोग्य, संहिता, वंशः, जैमिनीय, सामविधान हैं।

22. 'मालामतिक्रान्तः-अतिमालः' इत्यत्र समासविधायकं वर्तते

- (a) अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया
(b) अत्यादयः कुष्ठाद्यर्थे द्वितीयया
(c) कुगतिप्रादयः
(d) एकविभक्ति चापूर्वनिपाते

Ans : (a) 'मालामतिक्रान्तः-अतिमालः' इत्यत्र समासविधायकं अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे द्वितीयया वर्तते। अर्थात् अत्यादयः क्रान्त्याद्यर्थे प्रकरण में द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। अतः 'मालामतिक्रान्तः-अतिमालः' में द्वितीया विभक्ति युक्त तत्पुरुष समास है।

23. 'नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां ऐरेण महाराजेन.....' इति वाक्यं कस्मिन्नभिलेखे प्राप्यते?

- (a) इलाहाबाद-लेखे (b) एहोल-शिलालेखे
(c) गिरनार-लेखे (d) हाथीगुम्फा-लेखे

Ans : (d) नमो अरिहंतानां नमो सवसिधानां ऐरेण महाराजेन इति वाक्यं 'हाथीगुम्फा लेखे' प्राप्यते। अर्थात् उपर्युक्त वाक्य हाथीगुम्फा अभिलेख में प्राप्त होता है। हाथीगुम्फा अभिलेख खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होता है।

24. पाणिनीयशिक्षायाम् अधमपाठकेषु को न परिगणितः?

- (a) गीती (b) लिखितपाठकः
(c) पदानि विच्छिद्य पाठकः (d) शीघ्री

Ans : (c) पाणिनीयशिक्षायाम् अधमपाठकेषु पदानि विच्छिद्य पाठकः न परिगणितः।

गीती, शीघ्री, शिरः, कम्पी, यथा, लिखित पाठकः।
अनर्थज्ञो अल्प कण्ठश्च षडेते पाठकाधमः॥

25. 'यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्ततेः' इति केन उद्धोषितम्।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

- (a) भवभूतिना (b) भासेन
(c) माघेन (d) भट्टनारायणेन

Ans : (a) 'यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्ततेः' इति भवभूतिना उद्धोषितम्।

'यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्ततेः' यह करुण रस प्रधान 'उत्तररामचरितम्' के रचनाकार महाकवि भवभूति की उक्ति है।

26. 'श्लोकवार्तिकम्' कस्य दर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति?

- (a) मीमांसादर्शनस्य (b) वेदान्तदर्शनस्य
(c) न्यायदर्शनस्य (d) सांख्यदर्शनस्य

Ans : (a) श्लोकवार्तिकम् मीमांसादर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति। अर्थात् श्लोकवार्तिक मीमांसादर्शन का ग्रन्थ है। जबकि सांख्यदर्शन एवं वेदान्तदर्शन आस्तिक दर्शन हैं।

27. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः कतमोऽस्ति

- (a) प्रथमः (b) द्वितीयः
(c) तृतीयः (d) चतुर्थः

Ans : (b) याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः 'द्वितीयः' अध्यायोऽस्ति। याज्ञवल्क्यस्मृति के द्वितीय अध्याय का नाम व्यवहाराध्याय है।

28. मनुस्मृत्यनुसारं कति पाकयज्ञाः

- (a) चत्वारः (b) पञ्च
(c) षट् (d) दश

Ans : (a) मनुस्मृत्यनुसारं 'चत्वारः' पाकयज्ञाः अस्ति। अर्थात् मनुस्मृति के अनुसार चार पाकयज्ञ हैं।

(1) पितृ कर्म, (2) हवन, (3) बलि, (4) वैश्वदेव

29. अधोलिखितेषु भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं चिनुत् -

- (a) पश्यन्ती, वैखरी (b) प्राकृतः, वैखरी
(c) प्राकृतः, वैकृतः (d) वैखरी, वैकृतः

Ans : (c) भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं प्राकृतः, वैकृतः इति। अर्थात् भर्तृहरि के मत में दो ध्वनियाँ हैं- प्राकृत ध्वनि एवं वैकृत ध्वनि।

30. वानीरकृद्धोद्दीनशकुनि कोलाहलं शृण्वन्त्याः।

गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्गानि।

काव्यप्रकाशानुसारम् उपर्युक्तमुदाहरणं कस्य?

- (a) काक्काक्षिप्तगुणीभूतव्यंग्यस्य
(b) असुन्दरगुणीभूतव्यंग्यस्य
(c) अस्फुटगुणीभूतव्यंग्यस्य
(d) सन्दिग्धप्राधान्यगुणीभूतव्यंग्यस्य

Ans : (b) यह श्लोक आचार्य मम्मट के काव्यप्रकाशानुसारं पञ्चम अङ्क में वर्णित असुन्दर गुणी भूतव्यंग्य का उदाहरण है।

अगूढमपरस्याङ्ग वाच्यसिद्धयङ्गमस्फुटम्।

सन्दिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्काक्षिप्तमसुन्दरम्॥

व्यङ्ग्यमेवं गुणीभूतव्यङ्ग्यस्याष्टौ भिदाः स्मृताः

गुणीभूत व्यङ्ग्य के आठ भेद निम्न हैं- 1. अगूढ (व्यङ्ग्य)

2. अपर अङ्ग (भूत व्यङ्ग्य) 3. वाच्यसिद्धि का अङ्ग (भूत व्यङ्ग्य)

4. अस्फुट (गूढ व्यङ्ग्य) 5. सन्दिग्धप्राधान्य 6. तुल्यप्राधान्य

(व्यङ्ग्य) 7. काकुसे आक्षिप्त (व्यङ्ग्य) 8. असुन्दर (व्यङ्ग्य) इस प्रकार गुणीभूत व्यङ्ग्य के आठ भेद बतलाए गए हैं।

31. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति

- (a) गवेषणा (b) तैलम्
(c) प्रवीणः (d) श्राद्धः

Ans : (d) अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं 'श्राद्धः' नास्ति। अर्थात् अर्थ विस्तार का उदाहरण श्राद्ध नहीं है। जबकि गवेषणा, तैलम्, प्रवीणः ये सभी अर्थ विस्तार के उदाहरण हैं।

32. सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषाऽस्ति

- (a) संस्कृतम् (b) प्राकृतम्
(c) पालिः (d) अपभ्रंशः

Ans : (b) सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषा 'प्राकृतम्' अस्ति। अर्थात् सारनाथ में स्थित बौद्ध प्रतिमालेख की भाषा प्राकृत है तथा लिपि ब्रह्मी है।

33. निम्नलिखितेषु केन ज्योतिषशास्त्रमाधृत्य ऋग्वेदस्य कालो निर्धारितः?

- (a) वेबरमहोदयेन (b) मैक्डानलमहोदयेन
(c) बालगंगाधरतिलकमहोदयेन (d) विल्सनमहोदयेन

Ans : (c) बालगंगाधरतिलकमहोदयेन ज्योतिषशास्त्रमाधृत्य ऋग्वेदस्य कालो निर्धारितः। अर्थात् ज्योतिषशास्त्र को आधार मानकर बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद का काल (समय) निर्धारित किया है।

34. 'भवति' रूपमिदं कस्य लकारस्य विद्यते?

- (a) लोटलकारस्य (b) विधिलिङलकारस्य
(c) लेटलकारस्य (d) लुटलकारस्य

Ans : (c) 'भवति' रूपमिदं लेटलकारस्य विद्यते।

भू (धातु) परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	भवति/भवात्	भवातः	भवान्
मध्यम पु.	भवासि/भवाः	भवाथः	भवाथ
उत्तम पु.	भवानि	भवाव	भवाम

35. पाणिनीयशिक्षानुसारं कस्य प्राणिनः ध्वनिः

एकमात्रिकवर्णतुल्यः भवति।

- (a) नकुलस्य (b) शिखिनः
(c) वायसस्य (d) चाषस्य

Ans : (d) पाणिनीयशिक्षानुसारं चाषस्य प्राणिनः ध्वनिः एकमात्रिकवर्णतुल्यः भवति।

चाषस्तु वदते मात्रा द्विमात्रं चैव वायसः।

शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ॥

36. त्रिविक्रमभट्टप्रणीतं चम्पूकाव्यमस्ति

- (a) नलचम्पू (b) राजचम्पू
(c) रामायणचम्पू (d) जीवन्धरचम्पू

Ans : (a) त्रिविक्रमभट्टप्रणीतं चम्पूकाव्यं 'नलचम्पू' अस्ति। त्रिविक्रमभट्टप्रणीत चम्पूकाव्य नल चम्पू है। संस्कृत साहित्य में चम्पू काव्य का प्रथम निदर्शन इसी ग्रन्थ में हुआ। नलचम्पू दमयन्ती कथा के नाम से भी प्रसिद्ध है। नलचम्पू कथा का मूल स्रोत महाभारत का वनपर्व है।

37. निम्नलिखितेषु ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः कोऽस्ति?

- (a) वेङ्कटमाधवः (b) सायणः
(c) उव्वटः (d) स्कन्दस्वामी

Ans : (d) ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः 'स्कन्दस्वामी' अस्ति। अर्थात् - ऋग्वेद के प्राचीनतम भाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं, जबकि वेङ्कटमाधव, सायण, उव्वट, ये सभी स्कन्दस्वामी के बाद के भाष्यकार हैं।

38. 'प्र + एजते = प्रेजते' इत्यत्र एकारो भवति

- (a) 'आद्गुणः' सूत्रेण गुणत्वात्
(b) 'वृद्धिरचि' सूत्रेण वृद्धित्वात्
(c) 'एङि पररूपम्' सूत्रेण पररूपत्वात्
(d) 'एङः पदान्तादति' सूत्रेण पूर्वरूपत्वात्

Ans : (c) 'प्र + एजते = प्रेजते' इत्यत्र एकारो 'एङि पररूपम्' सूत्रेण पररूपत्वात् भवति। अवर्णान्त उपसर्ग से एङ् (जिसके अंत में ए और ओ हो) धातु पर (बाद में) होने पर, पर और पूर्व के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। जैसे- प्र + एजते = प्रेजते, उप + ऐहि = उपेहि।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

39. शारिपुत्रप्रकरणमस्ति

- (a) माघप्रणीतम् (b) श्रीहर्षप्रणीतम्
(c) अश्वघोषप्रणीतम् (d) विल्हणप्रणीतम्

Ans : (c) अश्वघोषप्रणीतम् शारिपुत्रप्रकरणमस्ति।

अर्थात्- शारिपुत्रप्रकरण अश्वघोष की कृति है। यह अधूरा होने पर भी महनीय रूपक का रम्य प्रतिनिधि है। अश्वघोष की केवल चार प्रामाणिक कृतियाँ हैं-

- (1) बुद्धचरितम् (2) सौन्दरानन्दकाव्यम् (3) गान्धीवस्तोत्रगाथा
(4) शारिपुत्रप्रकरणम्।

40. महाभारतोपजीविकाव्यं नास्ति

- (a) बृहत्कथामंजरी (b) शिशुपालवधम्
(c) मध्यमव्यायोगः (d) भारतमंजरी

Ans : (a) महाभारतोपजीविकाव्यं 'बृहत्कथामंजरी' नास्ति।

शिशुपालवधम्, मध्यमव्यायोगः, भारतमंजरी, महाभारतोपजीविकाव्यं अस्ति।

41. 'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति मन्त्रांशोऽयं कस्मिन् वेदे विद्यते?

- (a) ऋग्वेदे (b) यजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (d) सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति मन्त्रांशोऽयं अथर्ववेदे विद्यते। यह मन्त्रांश अथर्ववेद में प्राप्त होता है।

42. अधस्तनानां केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I तालिका-II

- (a) रुद्रदामनः (i) हाथीगुम्फा
(b) खारवेलस्य (ii) मन्दसौरः
(c) यशोधर्मणः (iii) ऐहोलः
(d) पुलकेशिनः (iv) गिरनारः
1. (a)-(iv); (b)-(i); (c)-(ii); (d)-(iii)
2. (a)-(i); (b)-(ii); (c)-(iii); (d)-(iv)
3. (a)-(iv); (b)-(iii); (c)-(ii); (d)-(i)
4. (a)-(iii); (b)-(i); (c)-(iv); (d)-(ii)

Ans : (1)

शासक	अभिलेख
रुद्रदामनः	गिरनारः
खारवेलस्य	हाथीगुम्फा
यशोधर्मणः	मन्दसौरः
पुलकेशिनः	ऐहोलः

43. वाष्कलशाखा कस्य वेदस्य विद्यते?

- (a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (a) 'वाष्कलशाखा' ऋग्वेदस्य शाखा। शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन ये पाँच ऋग्वेद की शाखाएँ हैं। वाष्कलशाखा ऋग्वेद की अनुपलब्ध शाखा है। परन्तु वाष्कल शाखा में 1025 सूक्त थे, जबकि शाकल शाखा में 1017 सूक्त थे अर्थात् - वाष्कल शाखा में 8 सूक्त अधिक थे। इन आठ सूक्तों को शाकल शाखा में समाविष्ट कर लिया गया है।

44. माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम किं प्रचलितमस्ति?

- (a) कैथुमशाखा (b) बौधायनीशाखा
(c) वाजसनेयिशाखा (d) मैत्रायणीशाखा

Ans : (c) माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम 'वाजसनेयिशाखा' प्रचलितमस्ति। अर्थात् - माध्यन्दिनशाखा का अपरनाम वाजसनेयी शाखा है, इसमें 40 अध्याय और 1975 मन्त्र हैं। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं। जिनकी दो संहिताएँ उपलब्ध हैं- माध्यन्दिन/वाजसनेयि तथा काण्वसंहिता।

45. अधस्तनीयानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

तालिका-I तालिका-II

- (a) पाणिनिः (i) वृत्तिः
(b) कात्यायनः (ii) सूत्रम्
(c) पतञ्जलिः (iii) वार्तिकम्
(d) जयादित्यः (iv) इष्टिः
1. (a)-(i); (b)-(ii); (c)-(iii); (d)-(iv)
2. (a)-(i); (b)-(iii); (c)-(ii); (d)-(iv)
3. (a)-(iii); (b)-(ii); (c)-(iv); (d)-(i)
4. (a)-(ii); (b)-(iii); (c)-(iv); (d)-(i)

Ans : (4)

समीचीन तालिका

पाणिनिः	=	सूत्रम्
कात्यायनः	=	वार्तिकम्
पतञ्जलिः	=	इष्टिः
जयादित्यः	=	वृत्तिः

46. अरस्तुविरचितं पुस्तकमस्ति

- (a) दि रिपब्लिक (The Republic)
(b) ऑन द सबलाइम (On the Sublime)
(c) पॉएटिक्स (Poetics)
(d) टेल ऑफ टू सिटीज (Tale of two cities)

Ans : (c)

लेखक	पुस्तक
प्लेटो	दि रिपब्लिक
लान्जाइनस	ऑन द सबलाइम
अरस्तू	पॉएटिक्स तथा टेल ऑफ टू सिटीज

47. अभिनिहितस्वरितो भेदोऽस्ति

- (a) आश्रितस्वरितस्य (b) जात्यस्वरितस्य
(c) तैरोविरामस्वरितस्य (d) स्वतन्त्रस्वरितस्य

Ans : (d)

अभिनिहित स्वरित का भेद 'स्वतन्त्र स्वरित' है।

48. 'कौटिल्यमते कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति विषयाः सन्ति

- (a) व्रय्याः (b) दण्डनीतेः
(c) वार्तायाः (d) आन्वीक्षक्याः

Ans : (c)

'कौटिल्यमते कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति 'वार्तायाः' विषयाः सन्ति। अर्थात्- कृषि, पशुपालन और व्यापार ये वार्ता विद्या के विषय हैं। यह 'विद्या' धान्य, पशु, हिरण्य-ताम्र आदि खनिज पदार्थ और नौकर-चाकर आदि को देने वाली परम उपकारिणी है।

49. अलङ्कारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्यः कः?

- (a) वामनः (b) भरतः
(c) भामहः (d) रुद्रटः

Ans : (c)

अलङ्कारसम्प्रदायस्य प्रवर्तकाचार्यः 'भामहः' सन्ति। अर्थात् - अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भामह कहे जाते हैं। क्योंकि अलङ्कारों का सैद्धान्तिक विवेचन आचार्य भामह ने ही किया है।

50. भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं भवति

- (a) भावनोत्पादकत्वेन (b) शब्दभावनानिवर्तकत्वेन
(c) आर्थभावनोत्पादकत्वेन (d) शब्दभावनाभाव्यनिवर्तकत्वेन

Ans : (d)

भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं शब्दभावनाभाव्यनिवर्तकत्वेन भवति।

तस्य च करणत्वं न भावनोत्पादकत्वेन तत्पूर्वमपि तस्याः शब्दे सत्त्वात् किन्तु भावना ज्ञापकत्वेन शब्द भावनाभाव्यनिवर्तकत्वेन वा अर्थात्- साधन की आकांक्षा होने पर लिङ्ग आदि का ज्ञान साधन के रूप में अन्वित होता है। उस लिङ्ग आदि के ज्ञान की करणता इसलिये नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

है कि उससे भावना की उत्पत्ति होती है। बल्कि उसके पहले भी भावना उसमें रहती है। अपितु लिङ्ग आदि का ज्ञान भावना व्यापक के रूप में अथवा शाब्दी भावना के साधक के रूप में करण में होता है।

51. मनुस्मृतिः कति अध्यायेषु विभक्ताऽस्ति?

- (a) दशाध्यायेषु (b) एकादशाध्यायेषु
(c) त्रयोदशाध्यायेषु (d) द्वादशाध्यायेषु

Ans : (d) मनुस्मृति द्वादशाध्यायेषु विभक्ताऽस्ति।

मनुस्मृति बारह अध्यायों में विभक्त है। इनके अन्तर्गत 2694 श्लोक हैं तथा इसमें समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र सभी का समावेश है, अतः सामाजिक व्यवस्था का यह आधारभूत ग्रन्थ है।

52. 'काण्वशतपथब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) सामवेदेन

Ans : (c) 'काण्वशतपथब्राह्मणम्' यजुर्वेदेन सम्बद्धम् अस्ति। अर्थात् काण्व शतपथब्राह्मण का सम्बन्ध यजुर्वेद से है। शुक्लयजुर्वेद ब्राह्मण के अन्तर्गत काण्व शतपथब्राह्मण में 17 काण्ड, 104 अध्याय और 6806 कण्डिकाएँ उपलब्ध हैं तथा माध्यन्दिन शाखा के शतपथब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय और लगभग 7624 कण्डिकाएँ उपलब्ध हैं।

53. तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति सन्ति?

- (a) सप्त (b) षोडश
(c) नव (d) दश

Ans : (a) तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः 'सप्त' सन्ति। तर्क संग्रह के अनुसार पदार्थ 'सात' माने गये हैं जबकि तर्कभाषा में पदार्थों की संख्या सोलह बतायी गयी है। तर्कसंग्रहकार ने सप्तपदार्थों का उल्लेख किया है—“द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायाभावः सप्तपदार्थाः।”

54. 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' इत्यत्र 'उद्भिद' शब्दो यागस्य नामधेयो भवति-

- (a) मत्त्वर्थलक्षणाभयात् (b) वाक्यभेदभयात्
(c) तत्प्रख्यशास्त्रात् (d) तदव्यपदेशात्

Ans : (a) उद्भिदा यजेत पशुकामः 'मत्त्वर्थलक्षणाभयात्' उद्भिदा यजेत पशुकामः इत्यत्र 'उद्भिद' शब्दो यागस्य मत्त्वर्थलक्षणाभयात् नामधेयो भवति। अर्थात् - उद्भिदा यजेत पशुकामः 'इस वाक्य में 'उद्भिद' शब्द का नाम धेयत्व मत्त्वर्थलक्षणा के भय से है। क्योंकि इस वाक्य से न तो पशुरूप फल के लिये याग का विधान मानना संगत है न ही याग के प्रति गुण विधान क्योंकि एक ही वाक्य में फल और साधन मानने पर वाक्य भेद नामक दोषोपपत्ति होगी।

55. तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कस्य कारणम्?

- (a) अनुमानस्य (b) प्रत्यक्षस्य
(c) उपमानस्य (d) इन्द्रियस्य

Ans : (b) तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः प्रत्यक्षस्य कारणम्। तर्कभाषा के अनुसार इन्द्रिय का वस्तु विशेष से सन्निकर्ष (सम्बन्ध) प्रत्यक्ष का कारण कहलाता है।

56. निम्नलिखितेषु कतमं ब्राह्मणं सामवेदीयं नास्ति?

- (a) ताण्ड्यब्राह्मणम् (b) शतपथब्राह्मणम्
(c) षड्विंशब्राह्मणम् (d) छान्दोग्यब्राह्मणम्

Ans : (b) शतपथब्राह्मणं सामवेदीयं नास्ति। अर्थात् शतपथब्राह्मण सामवेद का नहीं है इसका यजुर्वेद से सम्बन्ध है। ताण्ड्यब्राह्मण, षड्विंशब्राह्मण तथा छान्दोग्यब्राह्मण का सम्बन्ध सामवेद से है।

57. काव्यप्रकाशस्य कस्मिन्मुल्लासे व्यञ्जनायाः स्थापना अभवत्

- (a) सप्तमोल्लासे (b) अष्टमोल्लासे
(c) पञ्चमोल्लासे (d) प्रथमोल्लासे

Ans : (c) काव्यप्रकाशस्य 'पञ्चमोल्लासे' व्यञ्जनायाः स्थापना अभवत्। काव्य प्रकाश के पञ्चम् उल्लास में व्यञ्जना की स्थापना हुई है।

पञ्चम् उल्लास में काव्य के दूसरे भेद 'गुणीभूत व्यङ्ग्य' काव्य के आठ भेद दिये गये हैं। पूर्ववर्ती आचार्यों के साथ उनकी परिभाषा की विवेचना करते हुए "व्यञ्जना शक्ति" विषयक अनेक आचार्यों की परिभाषा तथा उदाहरण का खण्डन-मण्डन करते हुये अपने मत का प्रतिपादन किया है।

इस उल्लास का शीर्षक "ध्वनिगुणीभूत व्यंग्यसंकीर्णभेद निर्णय है।

58. अधस्तनयुग्मानां वाल्मीकिरामायणस्योपजीविग्रन्थेषु केन सह कस्य सम्बन्धः? समुचितं तालिका चिनुत

तालिका-I

तालिका-II

(a) रामायणमञ्जरी	(i) विलोमकाव्यम्
(b) यादवराघवीयम्	(ii) चित्रकाव्यम्
(c) अनर्घराघवम्	(iii) महाकाव्यम्
(d) रामलीलामृतम्	(iv) नाटकम्

1. (a)-(iii); (b)-(i); (c)-(iv); (d)-(ii)
2. (a)-(iii); (b)-(iv); (c)-(i); (d)-(ii)
3. (a)-(ii); (b)-(iv); (c)-(iii); (d)-(i)
4. (a)-(iv); (b)-(ii); (c)-(i); (d)-(iii)

Ans : (1)

तालिका-I

तालिका-II

रामायणमञ्जरी	महाकाव्यम्
यादवराघवीयम्	विलोमकाव्यम्
अनर्घराघवम्	नाटकम्
रामलीलामृतम्	चित्रकाव्यम्

59. अधस्तनेषु वाल्मीकि रामायणस्य काण्डानां समुचितक्रमोऽस्ति

- (a) बाल-अयोध्या-सुन्दर-अरण्य-किष्किन्धा-युद्ध-उत्तराणि
(b) बाल-अयोध्या-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(c) अयोध्या-बाल-किष्किन्धा-अरण्य-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि
(d) बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि

Ans : (d) वाल्मीकि रामायणस्य काण्डानां समुचितक्रमोऽस्ति- बाल-अयोध्या-अरण्य-किष्किन्धा-सुन्दर-युद्ध-उत्तराणि। अर्थात् महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित आदिकाव्य लोकप्रसिद्ध महाकाव्य 'रामायण' है। इसमें लगभग 24000 श्लोक हैं। इसी कारण से यह "चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता" कहलाती है।

60. 'अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यामनन्तकं दुःखमिति केनोक्तम्?

- (a) बाणभट्टेन (b) माघेन
(c) शूद्रकेण (d) भारविणा

Ans : (c) "अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यामनन्तकं दुःखमिति" शूद्रकेण उक्तम्। यह सूक्ति शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्' से उद्धृत है। मृच्छकटिक 10 अङ्कों का एक 'प्रकरण' ग्रन्थ है जिसमें चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है।

61. अशोकस्य शाहबाजगढीलेखः कस्यां लिप्यां प्रप्यते

- (a) ब्राह्मी (b) खरोष्ठी
(c) शारदा (d) पुष्करी

Ans : (b) अशोकस्य शाहबाजगढीलेखः 'खरोष्ठी' लिप्यां प्राप्यते। अर्थात् अशोक का शाहबाजगढी अभिलेख खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त मानसेहरा का अभिलेख भी खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होता है।

अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरमेइक तथा यूनानी लिपि में लिखे गये हैं।

62. ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.25) ऋषिः कः?

- (a) शुनः शेषः (b) मधुच्छन्दाः
(c) हिरण्यस्तूपः (d) गौतमः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1-25) ऋषिः शुनः शेषः अस्ति। अर्थात् ऋग्वेद में वरुणसूक्त (1.25) के ऋषि 'शुनः शेषः' हैं। वरुण सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 25वाँ सूक्त है। वरुण सूक्त में कुल 11 मन्त्र हैं। इस सूक्त के देवता वरुण हैं यह सूक्त गायत्री (24 अक्षर) छन्द में है। वरुण को भौतिक नियमों का नियन्ता भी कहा जाता है।

- 63. शब्दे व्याकरणे स्वीकारे महाभाष्ये का शङ्का नोत्थापिता**
- ल्युङर्थस्य अनुपपन्नतायाः
 - 'तत्र भव' इत्यस्य अनुपपन्नतायाः
 - प्रोक्तादीनां तद्धितार्थानाम् अनुपपन्नतायाः
 - षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नतायाः

Ans : (d) शब्दे व्याकरणे स्वीकारे महाभाष्ये 'षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नतायाः' शङ्का नोत्थापिता।

- 64. अधोलिखितेषु का वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति**
- सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः
 - 'लेट्' लकारस्य प्रयोगः
 - तुमुन्त्रर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः
 - क्त्वार्थे तवेड्प्रत्ययस्य प्रयोगः

Ans : (d) 'क्त्वार्थे तवेड्प्रत्ययस्य प्रयोगः' वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति। अर्थात् क्त्वा प्रत्यय के अर्थ में तवेड्प्रत्यय का प्रयोग वैदिक भाषा में नहीं होता है।

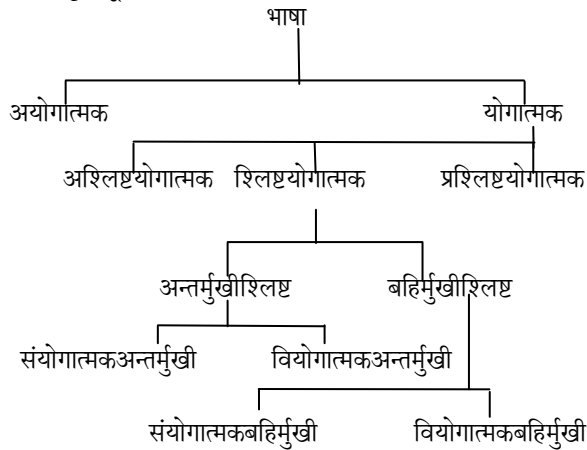
Note- निम्नलिखित तीनों विशेषताएँ वैदिक भाषा में परिलक्षित होती हैं-

- सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः अर्थात् सानुनासिक स्वरों का प्रयोग
- 'लेट्' लकारस्य प्रयोगः अर्थात् लेट् लकार का प्रयोग
- तुमुन्त्रर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः अर्थात् तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में 'तवै' प्रत्यय का प्रयोग।

- 65. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते**
- प्रश्लिष्ट-बहिर्मुखी
 - श्लिष्टबहिर्मुखी वियोगात्मिका
 - श्लिष्टबहिर्मुखी संयोगात्मिका
 - श्लिष्टान्तर्मुखी वियोगात्मिका

Ans : (b) आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दी भाषा 'श्लिष्टबहिर्मुखी वियोगात्मिका' मन्यते।

आकृतिमूलक भाषाओं का वर्गीकरण आरेख



- 66. अधस्तनेषु पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु नास्ति**

- वंशः
- मन्वन्तराणि
- संसर्गः
- प्रतिसर्गः

Ans : (c) संसर्गः पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु नास्ति। अर्थात् संसर्ग पुराण पञ्चलक्षण में नहीं है।

Note: पुराण का लक्षण-

“सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

- 67. वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः किं कथ्यते?**

- ईश्वरस्य स्वरूपम्
- अनन्तसत्ता
- अनादितत्त्वम्
- विवर्तः

Ans : (d) वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः 'विवर्तः' कथ्यते। अर्थात् वेदान्तदर्शन के अनुसार जगत का प्रपञ्च विवर्त कहलाता है। विवर्तवाद वह प्रक्रिया है जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप का परित्याग न करते हुए अपने सदृश किसी अन्य वस्तु के रूप में प्रतिभाषित होने लगती है जैसे-रस्सी अपने यथार्थ रूप का परित्याग न करते हुए भी सर्प की मिथ्या प्रतीति करवाने लगती है यही विवर्तवाद है -“अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्तः इत्युदीरितः।”

- 68. 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' अत्र जिजीविषेत् पदस्य कोऽर्थः?**

- जीवितुमिच्छेत्
- जेतुमिच्छेत्
- ज्ञातुमिच्छेत्
- प्राप्तुमिच्छेत्

Ans : (a) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' अत्र जिजीविषेत् पदस्य 'जीवितुमिच्छेत्' अर्थः। यह मन्त्र ईशावास्योपनिषद् से लिया गया है। उपनिषदों में सबसे प्राचीन व सर्वाधिक महत्वपूर्ण ईशावास्योपनिषद्, माध्यन्दिनि शाखा यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है। इसमें कुल 18 मन्त्र हैं। इन मन्त्रों में कर्मसंन्यास से हटकर कर्मोपासना का बहुत ही मार्मिक विवेचन किया गया है।

- 69. 'सर्पिषो नाथनम्' इह षष्ठी विभक्तिर्भवति**

- कर्मणः शेषत्वेन विवक्षायाम्
- करणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्
- सम्बन्धस्य सम्बन्धत्वेन विवक्षायाम्
- अधिकरणस्य शेषत्वेन विवक्षायाम्

Ans : (a) "सर्पिषो नाथनम्" में कर्म के शेषत्व की विवक्षा में 'सर्पिषः' में षष्ठी हुआ अर्थात् - 'आशिषि नाथः'- नाथ धातु के आशीष या आशा रखने के अर्थ में होने पर उसके कर्म में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।

- 70. पञ्चमहायज्ञेषु किं न गण्यते?**

- देवयज्ञः
- पितृयज्ञः
- ब्रह्मयज्ञः
- विष्णुयज्ञः

Ans : (d) पञ्चमहायज्ञेषु विष्णुयज्ञः न गण्यते। पञ्चमहायज्ञों में देवयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, भूतयज्ञ तथा नृयज्ञ इन पञ्च महायज्ञों की गणना की जाती है जबकि विष्णुयज्ञ की गणना पञ्चमहायज्ञों में नहीं की जाती है।

- 71. 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्' मन्त्रांशोऽयं विद्यते?**

- सूर्यसूक्तस्य
- वरुणसूक्तस्य
- अग्निसूक्तस्य
- इन्द्रसूक्तस्य

Ans : (d) यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् मन्त्रांशोऽयं 'इन्द्रसूक्तस्य' विद्यते। प्रस्तुत सूक्त कारिका ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के इन्द्रसूक्त से लिया गया है। ऋग्वेद में इसकी स्तुति में 250 सूक्त सम्बोधित किये गये हैं। इन्द्र सूक्त के ऋषि - गृत्समद तथा देवता इन्द्र हैं।

- 72. निम्नलिखितेषु को हेत्वाभासो नास्ति?**

- असिद्धः
- विरुद्धः
- अनैकान्तिकः
- असत्प्रतिपक्षः

Ans : (d) असत्प्रतिपक्ष हेत्वाभासो नास्ति। अर्थात् - असत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास नहीं है।

तर्कभाषा के अनुसार, हेत्वाभास पाँच बताये गये हैं। जो इस प्रकार हैं- असिद्ध विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम तथा कालात्ययापदिष्ट इत्यादि।

- 73. 'एध् -वृद्धौ' इत्यस्माद् धातोः 'ऐधिष्ठ' इति रूपं निष्पद्यते**

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

- (a) विधिलिङ्लकारे (b) लुङ्लकारे
(c) आशीर्लिङ्लकारे (d) लङ्लकारे

Ans : (b) 'एध् - वृद्धौ' इत्यस्माद् धातोः 'ऐधिष्ठ' इति रूपं लुङ्लकारे निष्पद्यते।

'एध्' धातु लुङ्लकार

प्रथम पुरुष	ऐधिष्ठ	ऐधिष्ठाताम्	ऐधिष्ठत
मध्यम पुरुष	ऐधिष्ठाः	ऐधिष्ठाथाम्	ऐधिष्ठवम्
उत्तम पुरुष	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

74. मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाऽस्ति?

- (a) अविद्या (b) अतिभोजनम्
(c) उच्छिष्टभोजनम् (d) अवशिष्टभोजनम्

Ans : (b) मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं अतिभोजनम् चाऽस्ति।

75. 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' इति केनोक्तम्?

- (a) भामहेन (b) भरतेन
(c) विश्वनाथेन (d) मम्मटेन

Ans : (b) 'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते' इति भरतेनोक्तम्।

76. कस्य वचः नारिकेलफलसम्मितं कल्पितम् ?

- (a) विशाखदत्तस्य (b) भारवेः
(c) दण्डिनः (d) बाणभट्टस्य

Ans : (b) भारवेः वचः नारिकेलफलसम्मितं कल्पितम्। मल्लिनाथ ने भारवि के काव्य सौन्दर्य व अर्थगौरव को 'नारिकेलफलसम्मत' कहा है- "नारिकेलफलसम्मितं वचो, भारवेः सपदि तद् विभज्यते। स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं, सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।"

77. अधोलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत-

- (a) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि
(b) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(c) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(d) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

Ans : (c) वेदान्तमते नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि असमीचीनं कथनम्। अर्थात् इसका सही कथन है- "नित्यानि कर्माणि सन्ध्यावन्दनादि।" अर्थात् जिन कर्मों के करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, किन्तु न करने पर पाप की प्राप्ति होती है। 'नित्य-कर्म' कहलाते हैं। यथा-सन्ध्यावन्दन आदि।

78. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षराणां का संख्या?

- (a) षड् (b) अष्टौ
(c) पञ्च (d) सप्त

Ans : (b) ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं समानाक्षराणां अष्टौ संख्या। "अष्टौसमानाक्षराण्यादितः" अर्थात् वर्णमाला के आदि से लेकर आठ-अक्षर पर्यन्त 'समानाक्षर' कहलाते हैं। अर्थात् - अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ तथा ऊ-ये आठ वर्ण समानाक्षर संज्ञक हैं।

79. निम्नलिखितेषु दर्शनेषु किं दर्शनं परमात्मनः सृष्टिकर्तृत्वं न मन्यते?

- (a) आर्हतदर्शनम् (b) न्यायदर्शनम्
(c) वेदान्तदर्शनम् (d) योगदर्शनम्

Ans : (a) आर्हतदर्शनं परमात्मनः सृष्टिकर्तृत्वं न मन्यते। तथा न्यायदर्शनम् वेदान्तदर्शनम् तथा योगदर्शनं परमात्मनः सृष्टिकर्तृत्वं मन्यते।

80. चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे कः सन्निकर्षः

- (a) समवायः (b) संयुक्तसमवायः
(c) संयुक्तसमवेतसमवायः (d) विशेषणविशेष्यभावः

Ans : (c) चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः। लौकिक तथा अलौकिक सन्निकर्ष में से लौकिक पक्ष में सन्निकर्ष को संयोगादि छः वर्गों में रखा गया है जो इस प्रकार है-

(1) संयोग, (2) संयुक्तसमवाय, (3) संयुक्तसमवेतसमवाय,

(4) समवाय, (5) समवेतसमवाय, (6) विशेषण विशेष्यभाव।

चक्षु के द्वारा घट रूपत्व को ग्रहण करना- संयुक्तसमवेतसमवाय सन्निकर्ष कहलाता है। उपर्युक्त विकल्प में (c) सही है।

81. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्?

- (a) विशाखदत्तेन (b) दण्डिना
(c) भासेन (d) भारविणा

Ans : (b) "न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः" इति 'भारविणा' उक्तम्। अर्थात् - यह कथन भारविकृत किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि सेवकों द्वारा राजा को नहीं ठगा जाना चाहिए।

82. आर्हतदर्शने चतुर्विधबन्धेषु परिगणितो नास्ति-

- (a) प्रकृतिबन्धः (b) विषयबन्धः
(c) स्थितिबन्धः (d) प्रदेशबन्धः

Ans : (b) आर्हतदर्शने चतुर्विधबन्धेषु विषयबन्धः परिगणितो नास्ति। अर्थात् प्रकृतिबन्धः, स्थितिबन्धः तथा प्रदेशबन्धः आर्हतदर्शने परिगणितो अस्ति। जबकि विषयबन्ध आर्हत दर्शन में परिगणित नहीं है।

83. 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन भवति

- (a) पूर्वसवर्णदीर्घः (b) पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः
(c) वृद्धिः एकादेशः (d) गुणादेशस्याभावः

Ans : (b) 'दीर्घाज्जसि च' इत्यनेन पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः भवति।

84. पुराणसन्दर्भे सप्तद्वीपेषु गणना नास्ति

- (a) कुशद्वीपः (b) लक्षद्वीपः
(c) शाकद्वीपः (d) आन्द्रद्वीपः

Ans : (d) पुराणसन्दर्भे सप्तद्वीपेषु गणना आन्द्रद्वीपः नास्ति। पुराणों के सन्दर्भ में सप्तद्वीपों में आन्द्रद्वीप की गणना नहीं है।

85. अधस्तनयुग्मानां समीचीनमेलनतालिकां चिनुत

तालिका-I	तालिका-II
(a) भारविः	(i) बुद्धचरितम्
(b) कालिदासः	(ii) रघुवंशम्
(c) अश्वघोषः	(iii) किरातार्जुनीयम्
(d) शूद्रकः	(iv) मृच्छकटिकम्
1. (a)- (iii); (b)- (ii); (c)- (i); (d)- (iv)	
2. (a)- (ii); (b)- (i); (c)- (iv); (d)- (iii)	
3. (a)- (i); (b)- (ii); (c)- (iii); (d)- (iv)	
4. (a)- (iv); (b)- (iii); (c)- (ii); (d)- (i)	

Ans : (1)

भारविः	-	किरातार्जुनीयम्
कालिदासः	-	रघुवंशम्
अश्वघोषः	-	बुद्धचरितम्
शूद्रकः	-	मृच्छकटिकम्

86. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः। इत्यत्र 'अल्पविषया मतिः।' इति कस्य कृते प्रयुक्तम्?

- (a) विशाखदत्तस्य (b) भासस्य
(c) कालिदासस्य (d) बाणभट्टस्य

Ans : (c) "क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः। इत्यत्र 'अल्पविषया मतिः।' इति कालिदास कृते प्रयुक्तम् यह सूक्ति महाकवि कालिदास द्वारा विरचित रघुवंश महाकाव्य से लिया गया है। रघुवंश में सूर्यवंश के 31 राजाओं का वर्णन है, जो 19 सर्गों में विभक्त है। यह लघुत्रयी के अन्तर्गत समाहित है।

87. वेदान्तसारमतेन कर्मन्द्रियाणामुत्पत्तिः भवति-

- (a) आकाशादीनां रजोऽशेभ्यः समस्तेभ्यः
(b) आकाशादीनां रजोऽशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(c) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(d) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो समस्तेभ्यः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) वेदान्तसारमतेन कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिः 'आकाशादीनां रजोऽंशेभ्यो व्यस्तभ्यः' भवति। अर्थात् वेदान्तसार के मतानुसार कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति क्रमशः आकाश आदि सूक्ष्मभूतों के रजोगुण प्रधान अंशों से क्रमशः अलग-अलग उत्पन्न होते हैं।

88. स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥
इत्यस्मिन् मंगलाचरणे ग्रन्थकारेण इष्टदेवस्य कस्य रसाभिव्यञ्जकस्वरूपस्य स्मरणं कृतम्
(a) शृङ्गाररसाभिव्यञ्जकस्य (b) वीररसाभिव्यञ्जकस्य
(c) शान्तरसाभिव्यञ्जकस्य (d) करुणरसाभिव्यञ्जकस्य

Ans : (b) स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः॥
इत्यस्मिन् मङ्गलाचरणे ग्रन्थकारेण इष्टदेवस्य वीररसाभिव्यञ्जक स्वरूपस्य स्मरणं कृतम्।

89. अनुमितिज्ञाने व्यापार उच्यते
(a) करणम् (b) परामर्शः
(c) व्याप्तिः (d) हेतुः

Ans : (b) अनुमितिज्ञाने व्यापार परामर्शः उच्यते अर्थात् 'परामर्श' से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं। यथा-वहिन की व्याप्ति से विशिष्ट अर्थात् उसका व्याप्य धूम पर्वत में है, यह ज्ञान परामर्श है।

90. अधोलिखितेषु खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्ततमं विकल्पं चिनुत
(a) विवारः, श्वासः, अघोषः, अल्पप्राणः
(b) संवारः, नादः, घोषः, अल्पप्राणः
(c) विवारः, श्वासः, अघोषः, महाप्राणः
(d) संवारः, नादः, घोषः, महाप्राणः

Ans : (c) खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्ततमं विकल्पं विवारः, श्वासः, अघोषः, महाप्राणः। अर्थात् - बाह्यप्रयत्नभेदनिरूपणम् - बाह्यस्वेकादशधा-विवारः संवारः श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्त स्वरितश्चेति। खरो विवाराः, श्वासा, अघोषाश्च। हशः संवार नादा घोषाश्च। वर्गाणां प्रथम तृतीया पञ्चमा यणश्चात्प्राणाः। वर्गाणां द्वितीय चतुर्थी शलश्च महाप्राणः।

91. विश्वनाथकविराजेन प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं किम्?
(a) रीतिरात्मा काव्यस्य
(b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(c) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दो काव्यम्
(d) काव्यस्यात्मा ध्वनिः

Ans : (b) विश्वनाथकविराजेन प्रतिपादितं काव्यस्वरूपं-वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। आचार्य विश्वनाथ ने काव्यस्वरूप का लक्षण इस प्रकार दिया है-
'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य कहलाता है।

92. यशोधर्मणः मन्दसौर-स्तम्भलेखस्य लिपिरस्ति-
(a) देवनागरी (b) ब्राह्मी
(c) खरोष्ठी (d) शारदा

Ans : (b) यशोधर्मणः मन्दसौर स्तम्भलेखस्य ब्राह्मी लिपिरस्ति। अर्थात् यशोधर्मण के मन्दसौर स्तम्भलेख की लिपि ब्राह्मी है।

93. अधस्तनेषु 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इत्यनेन कोऽभिप्रायः?
(a) व्यञ्जकशब्दार्थी (b) व्यञ्जनाशक्तिः
(c) व्यङ्ग्यार्थः (d) व्यङ्ग्यकाव्यम्

Ans : (c) 'ध्वन्यते इति ध्वनिः' इत्यनेन व्यङ्ग्यार्थः अभिप्रायः। अर्थात् जिसके द्वारा ध्वनित किया जाये वह ध्वनि है। इसमें वस्तु, अलङ्कार, रस ये तीनों व्यङ्ग्य अर्थ में आ जाते हैं।

94. अधोलिखितेषु वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो मन्यते
(a) देवेभिः (b) विश्वा
(c) एनसि (d) उक्ताः सर्वेऽपि साधवः

Ans : (d) वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो 'देवेभिः', विश्वा, एनसि, एताः सर्वेऽपि साधवः मन्यते। अर्थात् वैदिक भाषा की दृष्टि से देवेभिः, विश्वा, एनसि ये सभी साधु प्रयोग मिलते हैं।

95. चार्वाकदर्शनस्य कृते किम् अपरनाम प्रचलितमस्ति?
(a) ब्रह्मदर्शनम् (b) परलोकदर्शनम्
(c) ऐहलौकिकदर्शनम् (d) लोकायतदर्शनम्

Ans : (d) चार्वाकदर्शनस्य कृते अपरनाम लोकायतदर्शनं प्रचलितमस्ति। अर्थात् चार्वाक दर्शन के लिए अपरनाम लोकायतदर्शन प्रचलित है।

96. अधोऽङ्कितेषु योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमोऽस्ति-
(a) अस्तेय-अपरिग्रह-सत्य-ब्रह्मचर्य-अहिंसाः
(b) अपरिग्रह-ब्रह्मचर्य-सत्य-अस्तेय-अहिंसाः
(c) अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः
(d) सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः

Ans : (c) योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमः-अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः अस्ति। जैनदर्शन/बौद्धदर्शनानुसारेण क्रमः-सत्य-अहिंसा-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहाः।

97. बौद्धदर्शने पञ्चविधस्कन्धेषु परिगणितो नास्ति-
(a) विज्ञानम् (b) वेदना
(c) संज्ञा (d) विशेषणम्

Ans : (d) बौद्धदर्शने पञ्चविधस्कन्धेषु विशेषणं परिगणितो नास्ति। अपितु विज्ञानम्, वेदना, संज्ञा इति बौद्धदर्शने पञ्चविध स्कन्धेषु परिगणितोऽस्ति। बौद्धदर्शन में पञ्चविध स्कन्धों में विशेषण की गणना नहीं है। अपितु विज्ञान, वेदना, संज्ञा ये बौद्धदर्शन के पञ्चविध स्कन्धों में परिगणित हैं।

98. अधस्तनानां महाभारतीयपर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति
(a) शान्तपर्व, स्त्रीपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(b) स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व
(c) अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, आश्वमेधिकपर्व, शान्तिपर्व
(d) आश्वमेधिकपर्व, अनुशासनपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व

Ans : (b) महाभारतीयपर्वणां समुचितः स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व क्रमोऽस्ति। महाभारत में पर्वों का क्रम इस प्रकार है- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गरोहण हैं।

99. यजुर्वेदस्य निम्नलिखितभाष्यकारेषु कोऽर्वाचीनतमः?
(a) स्वामिदयानन्दः (b) रावणः
(c) उव्वटः (d) महीधरः

Ans : (a) यजुर्वेदस्य भाष्यकारेषु स्वामिदयानन्दः अर्वाचीनतमः अस्ति। अर्थात् यजुर्वेद के अर्वाचीन भाष्यकार 'स्वामी दयानन्द' हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक माने जाते हैं। इन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की संस्कृत और हिन्दी में व्याख्या की। ऋग्वेद की व्याख्या मण्डल 7 के सूक्त 80 तक ही कर सके। असामयिक निधन से ऋग्वेदभाष्य पूरा नहीं हो सका।

100. 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं कस्याः विद्यायाः सन्दर्भोऽस्ति
(a) त्रय्याः (b) आन्वीक्षिक्याः
(c) वार्तायाः (d) दण्डनीतेः

Ans : (b) 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं आन्वीक्षिक्याः विद्यायाः सन्दर्भोऽस्ति।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2019

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. अधस्तनेषु चित्तभूमिषु न गण्येते-

- (a) चलम् (b) मूढम्
(c) विक्षिप्तम् (d) अचलम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (c) (2) (a) एवं (d)
(3) (c) एवं (d) (4) (b) एवं (c)

Ans. (2) : चित्त की पाँच भूमियाँ (दशायेँ) हैं- क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ये पाँच चित्तभूमियाँ हैं, जबकि चलम् और अचलम् इन दोनों की गणना चित्तभूमियों के अन्तर्गत नहीं की जाती है।

2. 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' अस्मिन् मन्त्रांशे 'शुष्मात्' पदस्य अर्थो निर्धार्यताम्-

- (a) बलात् (b) पूजनात्
(c) पराक्रमात् (d) शस्त्रात्

अत्रोचितमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (c) एवं (d)
(3) (a) एवं (d) (4) (a) एवं (c)

Ans. (4) : 'यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम्' इस मंत्र में 'शुष्मात्' पद का अर्थ 'बलात्' और 'पराक्रमात्' है। भाष्यकार सायण ने शुष्मात् पद का अर्थ 'शरीर से' और 'बल से' माना है। जबकि मैकडॉनल ने इस पद का अर्थ 'प्रचण्ड से' तथा 'पराक्रम से' माना है।

3. अधोऽङ्कितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः ?

- (a) माध्यमिकाः (i) वाह्यार्थशून्यम्
(b) योगाचाराः (ii) वाह्यार्थप्रत्यक्षम्
(c) सौत्रान्तिकाः (iii) सर्व शून्यम्
(d) वैभाषिकाः (iv) वाह्यार्थानुमेयम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)
(2) (a) (i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(3) (a) (iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)
(4) (a) (iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)

Ans. (1) :

- माध्यमिक - सर्व शून्यम्
योगाचार - वाह्यार्थ शून्यम्
सौत्रान्तिक - वाह्यार्थानुमेयम्
वैभाषिक - वाह्यार्थप्रत्यक्षम्

4. यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।

तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।

अत्र 'अङ्ग' इति कस्मिन्नर्थे प्रयुक्तोऽयं शब्दः?

- (a) अभिमुखीकरणार्थे (b) शरीरार्थे
(c) अवयवार्थे (d) विषयार्थे

Ans. (a) : यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः। यह श्लोक अग्नि सूक्त का है। श्लोक में दिये गये 'अङ्ग' शब्द का अर्थ भाष्यकार सायण के अनुसार अभिमुख अर्थात् सम्मुख करने के अर्थ में है। किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिये प्रयुक्त सम्बोधनात्मक पद 'अङ्ग' है, यह मत पाश्चात्य विद्वानों को भी अभीष्ट था।

5. आधिदैविकदुःखेषु गण्येते-

- (a) झञ्झावातः (b) अशवाघातः
(c) पशवाघातः (d) भूकम्पः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (c) (2) (a) एवं (d)
(3) (c) एवं (d) (4) (b) एवं (c)

Ans. (2) : आधिदैविक दुःखों में झञ्झावात तथा भूकम्प गिने जाते हैं। यक्ष, राक्षस, विनायक, शनि, राहु आदि ग्रह नक्षत्रों से उत्पन्न होने वाला दुःख आधिदैविक दुःख होता है।

6. यजुर्वेदसंहितायां प्राधान्येन निरूपणं प्राप्यते-

- (a) संवादस्य (b) यज्ञानाम्
(c) गानानाम् (d) दार्शनिकविचारणाम्

Ans. (b) : यजुर्वेद संहितायां प्राधान्येन यज्ञानां निरूपणं प्राप्यते। अर्थात् यजुर्वेद संहिता में प्रधान रूप से यज्ञों का निरूपण प्राप्त होता है। यजुष् शब्द का मुख्य अर्थ है- (1) यजुर्यजते अर्थात् यज्ञ से सम्बद्ध मंत्रों को यजुष् कहते हैं। (2) इज्यतेऽनेनेति यजुः अर्थात् जिन मंत्रों से यज्ञ किया जाता है।

यजुर्वेद संहिता का यज्ञ के कर्मकाण्ड से साक्षात् सम्बन्ध है, अतः इसे 'अध्वर्युवेद' भी कहते हैं।

7. ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीयः प्रभेदः कः?

- (a) अलङ्कारादिः (b) गुणादिः
(c) रसादिः (d) वृत्तादिः

Ans. (c) : ध्वन्यालोके प्रतीयमानस्य तृतीय प्रभेदः रसादिः अर्थात् ध्वन्यालोक में वर्णित प्रतीयमान का तीसरा भेद रस है।

प्रतीयमान अर्थ का प्रथम भेद वस्तु, द्वितीय भेद अलङ्कार तथा तृतीय भेद रस है।

ध्वन्यालोक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है, जो आनन्दवर्धन की कृति है।

8. 'ननु तन्तुसम्बन्ध इव तुर्यादिसम्बन्धोऽपि पटस्य विद्यते, तत्कथं तन्तुष्वेव पट समवेतो जायते, न तुर्यादिषु? सत्यम्। द्विविधः सम्बन्धः संयोगः समवायश्चेति। तत्रायुतसिद्धयोः सम्बन्धः समवायः। अन्ययोस्तु संयोग एव।

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) तन्तुः पटस्य समवायिकारणम् अयुतसिद्धत्वात्।
(b) न तन्तुः पटस्य समवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्।
(c) तन्तुः पटस्य असमवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्।
(d) तुर्यादि पटस्य असमवायिकारणम्, अयुतसिद्धत्वात्।

Ans. (a) : पट का तन्तु के साथ जिस प्रकार का सम्बन्ध है, वैसा ही तुरी आदि के साथ, फिर क्यों तन्तुओं में ही समवाय सम्बन्ध से पट उत्पन्न होता है और तुरी आदि में नहीं। सम्बन्ध दो प्रकार का होता है-संयोग और समवाय। उनमें जो दो अयुतसिद्ध पदार्थों का सम्बन्ध होता है, वह समवाय कहा जाता है। शेष अन्य पदार्थों का सम्बन्ध संयोग कहा जाता है।

अयुतसिद्ध का अर्थ है- अपृथक्-सिद्ध। अर्थात् जिन दो पदार्थों में से एक जब तक रहता है, वह दूसरे सम्बन्धी पर आश्रित होकर ही रहता है, वे अयुत सिद्ध कहलाते हैं।
 अतः स्पष्ट है कि तन्तु और पट अयुतसिद्ध हैं तथा उनमें समवाय सम्बन्ध है।

9. 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' इति कथनमस्ति-

- (a) साङ्ख्यदर्शने (b) योगदर्शने
 (c) मीमांसादर्शने (d) वैशेषिकदर्शने

Ans. (b) : 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः' इति कथनम् योगदर्शने अस्ति।

योगदर्शन के प्रतिपादक महर्षि पतञ्जलि हैं। योगदर्शन का मुख्य प्रयोजन 'समाधि लाभ' को प्राप्त करना है।

उपरोक्त कारिका में ईश्वर को परिभाषित किया गया है कारिका का आशय है- "अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश इन पञ्चक्लेशों, शुभाशुभ कर्मों तथा इन कर्मों के फलस्वरूप सुख-दुःख, आयु एवं भोगरूप विपाक और उन कर्मफल विपाकों के वासनारूपी संस्कार से सम्पर्क रहित पुरुष विशेष ही ईश्वर है।"

10. शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः कतमोऽध्याय ईशोपनिषद्

- (a) विंशतितमः (b) षोडशतमः
 (c) चत्वारिंशतमः (d) एकोनविंशतितमः

Ans. (c) : शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः चत्वारिंशत्तमः अध्यायो ईशोपनिषद्। अर्थात् - ईशोपनिषद् (ईशावास्योपनिषद्) शुक्ल यजुर्वेद संहिता के 40वें अध्याय में निहित है।

11. "ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाऽजिनधारणमग्निहोत्राभिषेकौ देवतापित्रतिथिपूजा वन्यश्चाहारः" इति कौटिलीयमते कस्य धर्मोऽस्ति?

- (a) ब्रह्मचारिणः (b) गृहस्थस्य
 (c) वानप्रस्थस्य (d) परिव्राजकस्य

Ans. (c) : ब्रह्मचारी होना, भूमि पर शयन करना, जनेऊ धारण करना, अग्निहोत्रादि हवन करना, देवता, पितरों और अतिथि पूजन करना तथा वन में भ्रमण करना या निवास करना ये सब वानप्रस्थ धर्म के लक्षण हैं, जो कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में बताये हैं।

12. चत्वारो वेदाः जगति प्रसिद्धाः सन्ति। एते ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च। एतेषां मन्त्राणामर्थख्यापनाय बहवः आचार्याः प्रयत्नं कृतवन्तः। तत्रर्वेदस्य प्रथमो भाष्यकारः स्कन्दस्वामी आसीत्। विस्तारपूर्वकं यज्ञपद्धतेः प्रथमं भाष्यं आचार्यसायणेन कृतम्। स एव कृष्णयजुर्वेदस्य भाष्यं प्रथमतया विरचितवान्। आनन्दतीर्थः, दयानन्दश्च वेदभाष्यं रचितवन्तौ। उपर्युक्तेषु ऋग्वेदस्य प्रथमभाष्यकारः कः आसीत् ?

- (a) सायणः (b) स्कन्दस्वामी
 (c) आनन्दतीर्थः (d) दयानन्दः

Ans. (b) : उपरोक्त गद्य के अनुसार, ऋग्वेद के प्रथम भाष्यकार स्कन्दस्वामी हैं, जो सायण के पूर्ववर्ती आचार्य हैं।

13. मनुस्मृत्यनुसारं समुचितमस्ति-

- (a) आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः (b) आचार्यो मूर्तिः प्रजापतेः
 (c) आचार्यो मूर्तिरात्मनः (d) आचार्यः पृथिव्या मूर्तिः

Ans. (a) : मनुस्मृति के अनुसार, "आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः" यह कथन समुचित है। अर्थात् आचार्य परमात्मा की मूर्ति है, पिता ब्रह्म की मूर्ति।

आचार्यो ब्राह्मणो मूर्तिः, पिता मूर्तिः प्रजापतेः।

माता पृथिव्या मूर्तिस्तु, भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः।।

14. दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि।

एता जुषत में गिरः॥

उपर्युक्तमन्त्रे 'गिरः' पदस्य अर्थो स्तः-

- (a) पर्वतः (b) गिरिः
 (c) वाणी (d) स्तुतिः

अत्र समीचीनमुत्तरं चिनुत-

- (1) (b) एवं (c) (2) (a) एवं (b)
 (3) (c) एवं (d) (4) (b) एवं (d)

Ans. (3) : उपर्युक्त मंत्र में दिये गये 'गिरः' शब्द का पर्याय वाणी एवं स्तुति दोनों हैं।

15. पुरुरवा-उर्वशीसंवादसूक्ते कियन्तो मन्त्राः सन्ति?

- (a) एकादश (b) पञ्चदश
 (c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans. (d) : पुरुरवा-उर्वशीसंवादसूक्ते अष्टादश मन्त्राः सन्ति। अर्थात् पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में 18 मन्त्र हैं। यह ऋग्वेद के दशम मण्डल का प्रसिद्ध 95वाँ सूक्त है। इसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा वर्णित है।

16. सिद्धान्तकौमुदीमाश्रित्य प्रकरणानां समीचीनं क्रमं चिनुत-

- (a) कारकम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः, तद्धितम्
 (b) कारकम्, तद्धितम्, परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः,
 (c) परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः, तद्धितम्, कारकम्,
 (d) परस्मैपदप्रक्रिया, कारकम्, तद्धितम्, कृदन्तः,

Ans. (b) : सिद्धान्तकौमुदीमाश्रित्य प्रकरणानां कारकं तद्धितम् परस्मैपदप्रक्रिया, कृदन्तः उचितं क्रमं अस्ति अर्थात् सिद्धान्तकौमुदी के आश्रित प्रकरणों में कारक प्रकरण, तद्धित प्रकरण, परस्मैपदप्रक्रिया व कृदन्त प्रकरण व्याकरणिक दृष्टि से उचित क्रम है।

17. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्याये प्रकरणानां समुचितं क्रमोऽस्ति-

- (a) ऋणादान-उपनिधि - साक्षि - लेख्य - दिव्य - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्
 (b) दिव्य - लेख्य - साक्षि - उपनिधि - ऋणादान - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्
 (c) ऋणादान - उपनिधि - साक्षि - लेख्य - दिव्य - दायविभाग - सीमाविवादप्रकरणम्
 (d) साक्षि - लेख्य - दिव्य - उपनिधि - ऋणादान - सीमाविवाद - दायविभागप्रकरणम्

Ans. (c) : याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्याये प्रकरणानां ऋणादान-उपनिधि-साक्षि-लेख्य-दिव्य-दायविभाग-सीमाविवादप्रकरणम् समुचितं क्रमो अस्ति। स्मृति साहित्य में मनुस्मृति के अनन्तर द्वितीय महत्वपूर्ण स्मृति में याज्ञवल्क्य स्मृति की गणना की जाती है।

18. मनुस्मृतेः टीकाकाराणां केन सह कस्य सम्बन्धः-

- (a) गोविन्दराजः (i) मनुभाष्यम्
 (b) कुल्लूकभट्टः (ii) मन्वाशयानुसारिणी-मनुटीका
 (c) सर्वज्ञनारायणः (iii) मन्वर्थमुक्तावली
 (d) मेधातिथिः (iv) मन्वर्थविवृति

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) (iii), (b) (i), (c) (ii), (d) (iv)
 (2) (a) (ii), (b) (iii), (c) (iv), (d) (i)
 (3) (a) (iv), (b) (ii), (c) (i), (d) (iii)
 (4) (a) (i), (b) (iv), (c) (iii), (d) (ii)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (2) : मनुस्मृतैः टीकाकाराणां अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पः—

(a) गोविन्दराजः	-	मन्वाशयानुसारिणी मनुटीका
(b) कुल्लूकभट्टः	-	मन्वर्थमुक्तावली
(c) सर्वज्ञनारायणः	-	मन्वर्थविवृति
(d) मेधातिथिः	-	मनुभाष्यम्

मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव-धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। मनुस्मृति पर अनेक टीकाकारों के नाम ज्ञात हैं—

- (1) गोविन्दराज कृत मन्वाशयानुसारिणी मनुटीका
- (2) कुल्लूकभट्ट कृत मन्वर्थमुक्तावली
- (3) सर्वज्ञनारायण कृत मन्वर्थविवृति
- (4) मेधातिथि कृत मनुभाष्य

19. 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी'-अत्र 'सः' पदस्य क आशयः—

(a) शब्दः	(b) व्यङ्ग्यः
(c) लक्ष्यः	(d) वाच्यः

Ans. (b) : 'सोऽर्थस्तद्व्यक्तिसामर्थ्ययोगी' अत्र 'सः' पदस्य आशयः व्यङ्ग्यः।

20. 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्/यथा-तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणेषु समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात्। अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्चा।' इति सिद्धान्तानुसारेण 'तन्तुसंयोगः' पटस्य कीदृशं कारणम् भवति?

(a) असमवायिकारणम्	(b) समवायिकारणम्
(c) संयोगकारणम्	(d) निमित्तकारणम्

Ans. (a) : 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्/यथा- तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणेषु समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात्। अनन्यथासिद्ध नियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्चा।' इति सिद्धान्तानुसारेण 'तन्तुसंयोगः' पटस्य असमवायिकारणम् भवति।

अर्थात् जो समवायिकारण में प्रत्यासन्न (= निकटतः सम्बद्ध) होता है और जिसकी (कार्य के प्रति) सामर्थ्य निश्चित होती है (अर्थात् जिसमें कारण का लक्षण घटित होता है) वह असमवायिकारण है। जैसे -तन्तुसंयोग पट का असमवायिकारण है। क्योंकि तन्तुसंयोग गुण है, वह पट के समवायिकारण तन्तु नामक गुणी में समवाय सम्बन्ध से रहता है। अतः (पट के) समवायिकारण में प्रत्यासन्न है। और वह अनन्यथासिद्ध पूर्वभावी होने से पट के प्रति कारण भी है।

21. 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' इत्युक्ति अस्ति—

(a) दण्डिनः	(b) वामनस्य
(c) अभिनवगुप्तस्य	(d) भोजस्य

Ans. (b) : 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' इत्युक्ति वामनः अस्ति। अर्थात् संस्कृत साहित्य में रीति सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा करने वाले आचार्य वामन हैं। संस्कृत साहित्य में रीति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम वामन ने किया। वामन के अनुसार, शब्दालङ्कारों व अर्थालङ्कारों को प्रकट करने वाले शब्दार्थ को अलङ्कार कहते हैं।

22. रथाङ्गपाणेःपटलेन रोचिषामृषित्विषःसंवलितविरेजिरे। चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥

-अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्ति' इति शब्दः कस्य वाचकः?

(a) सूर्यस्य	(b) चन्द्रस्य
(c) श्रीकृष्णस्य	(d) रथस्य

Ans. (b) : रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलितविरेजिरे। चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशवः॥ अस्मिन् श्लोके 'तुषारमूर्ति' इति चन्द्रस्य शब्दः वाचकः। अर्थात् प्रस्तुत श्लोक में 'तुषारमूर्ति' यह शब्द चन्द्र शब्द का वाचक है।

23. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(a) आख्यातम्	(i) अदः
(b) नाम	(ii) भवति
(c) निपातः	(iii) परि
(d) उपसर्गः	(iv) नु

समुचितां तालिकां चिनुत—

- (1) (a) (iii), (b) (ii), (c) (i), (d) (iv)
- (2) (a) (i), (b) (iii), (c) (ii), (d) (iv)
- (3) (a) (iv), (b) (iii), (c) (i), (d) (ii)
- (4) (a) (ii), (b) (i), (c) (iv), (d) (iii)

Ans. (4) : समुचितां तालिकां -

(a) आख्यातम्	भवति
(b) नाम	अदः
(c) निपातः	नु
(d) उपसर्गः	परि

24. अधोऽङ्कितेषु योगसूत्रानुसारं योगाङ्गेषु गण्येते—

(a) स्वाध्यायः	(b) निरुद्धम्
(c) प्रत्यक्षम्	(d) समाधिः

समुचित विकल्पं चिनुत—

- (1) (a) एवं (d)
- (2) (a) एवं (b)
- (3) (a) एवं (c)
- (4) (b) एवं (d)

Ans. (1) : योगसूत्रानुसारं योगाङ्गेषु-स्वाध्यायः समाधिः गण्येते-योगसूत्र के अनुसार योग के अङ्गों में स्वाध्याय व समाधि की गणना की जाती है।

25. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा तेन विजिह्यमानम् ।

गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥

- अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते—

(a) युधिष्ठिरस्य	(b) वनेचरस्य
(c) दुर्योधनस्य	(d) अर्जुनस्य

Ans. (c) : न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा तेन विजिह्यमानम्।

गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥ अस्मिन् श्लोके दुर्योधनस्य प्रशंसा वर्तते।

26. याज्ञवल्क्यमते उतरा कुत्र बलवतीभवति?

(a) सर्वेष्वर्थविवादेषु	(b) आधौ प्रतिग्रहे
(c) सर्वेषु भूमिविवादेषु	(d) दायविभागविवादेषु

Ans. (a) : याज्ञवल्क्यमते उतरा सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवती भवति। अर्थात् सभी प्रकार के अर्थ (धन) के विवादों में उत्तरक्रिया (बाद के कार्य) प्रबल होते हैं। "सर्वेष्वर्थविवादेषु बलवत्युत्तरा क्रिया" यह सूक्ति याज्ञवल्क्यस्मृति के 'व्यवहाराध्याय' से लिया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

27. ससायणभाष्यगर्वेदसंहितां सम्पाद्य तस्याः प्रकाशनकार्यं प्रथमं केन वैदेशिकेन कृतमस्ति?

- (a) मैक्षमूलरेण (b) वेवरेण
(c) जैकोवी महोदयेन (d) विण्टरनित्समहोदयेन

Ans. (a) : ससायणभाष्यगर्वेदसंहितां सम्पाद्य तस्याः प्रकाशनकार्यं प्रथमं मैक्षमूलरेण वैदेशिकेन कृतमस्ति। अर्थात् सायणभाष्य द्वारा सम्पादित ऋग्वेद संहिता का प्रकाशन कार्य सर्वप्रथम विदेशी विद्वान् 'मैक्षमूलर' ने किया।

28. (A) 'स किं सखा साधु न शास्ति यो नृपम्'। - इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयदुद्धतोऽस्ति।

(B) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोधयितुं वदति।

- (a) (A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणीकरोति।
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति।
(b) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति।
(R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते।
(c) (A) कथने 'सः' पदेन वनेचरः 'नृपम्' पदेन सुयोधनं कथितमस्ति।
(R) कथने सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति।
(d) (A) कथने 'सखा' वनेचर अस्ति।
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति।

Ans. (a) : उपर्युक्त पंक्तियों के कथन के अनुसार उचित निष्कर्ष इस प्रकार है-

(A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणीकरोति। अर्थात् मित्र का कथन उत्तम चरित्र को प्रमाणित करता है।
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति अर्थात् वनेचर का कथन स्वामी (राजा युधिष्ठिर) को ठगने से बचाता है।

29. अधस्तनेषु वेदान्तानुसारं षट्कसम्पत्तिषु गण्येते-

- (a) श्रवणम् (b) मननम्
(c) श्रद्धा (d) समाधानम्

समुचित विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (d) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (c) एवं (a)

Ans. (3) : वेदान्त के अनुसार, षट्कसम्पत्तियों में श्रद्धा और समाधान की गणना की जाती है।

श्रद्धा - 'गुरुपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा' अर्थात् गुरु द्वारा उपदिष्ट वेदान्त के वाक्यों में विश्वास श्रद्धा है।

समाधान - 'निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्' अर्थात् निगृहीत मनस् (चित्त) का श्रवणादि के अनुकूल गुरुश्रृंखला, वेदान्तग्रन्थों का सम्पादन और उनकी रक्षा करना आदि विषयों में स्थिर हो जाना समाधान है। षट्क सम्पत्तियाँ इस प्रकार हैं- (1) शम (2) दम (3) उपरति (4) तितिक्षा (5) समाधान (6) श्रद्धा।

30. महाभारतस्य 'खिल' पर्व कथ्यते-

- (a) मत्स्यपुराणम् (b) स्कन्दपुराणम्
(c) हरिवंशपुराणम् (d) पद्मपुराणम्

Ans. (c) : महाभारतस्य 'खिल' पर्व 'हरिवंशपुराणम्' कथ्यते अर्थात् महाभारत के खिल (शेष) पर्व को हरिवंश पुराण के नाम से जाना जाता है।

31. महाभारताश्रितं भासविरचितं ग्रन्थद्वयं किमस्ति?

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) ऊरुभङ्गम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) दूतघटोत्कचम्

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (d) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (b) एवं (d)

Ans. (4) : महाभारताश्रितं भासविरचितं ग्रन्थद्वयं ऊरुभङ्गम् दूतघटोत्कचम् अस्ति अर्थात् महाभारत पर आश्रित भास द्वारा रचित दो ग्रन्थ- ऊरुभङ्गम् और दूतघटोत्कचम् हैं।
भास के नाम से तेरह नाटक प्रचलित हैं जो कथा स्रोत की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है:-

(क) उदयन-कथा-मूलक -

- (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्
(ख) महाभारत मूलक - (3) ऊरुभङ्ग (4) दूतवाक्य
(5) पञ्चरात्र (6) बालचरित (7) दूतघटोत्कच (8) कर्णभारम्
(9) मध्यमव्यायोग (ग) रामायण-मूलक (10) प्रतिमानाटक
(11) अभिषेकनाटक (घ) कल्पना-मूलक (12) अविमारक
(13) चारुदत्त

32. 'पैलः' इति पदं विद्यते-

- (a) गणविशेषस्यादिमः शब्दः (b) पैले भवा
(c) पीलाया गोत्रापत्यम् (d) पैलस्य इयम्
अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (c) एवं (d)
(3) (a) एवं (c) (4) (b) एवं (d)

Ans. (3) : पैलः इति पदं गणविशेषस्यादिमः शब्दः पीलाया गोत्रापत्यं च विद्यते अर्थात् 'पैलः' यह पद गण विशेष का प्रथम शब्द और पीलाया गोत्र के पुत्र का बोधक है।

33. बौद्धदर्शनानुसारं चतुर्णाम् आर्यसत्यानाम् उचितः क्रमोऽस्ति-

- (a) दुःखम्, समुदायः, निरोधः, मार्गः
(b) मार्गः, दुःखम्, निरोधः, समुदायः
(c) समुदायः, दुःखम्, मार्गः, निरोधः
(d) निरोधः, मार्गः, दुःखम्, समुदायः

Ans. (a) : बौद्धदर्शनानुसारं चतुर्णाम् आर्यसत्यानाम् उचितः क्रमोऽस्ति दुःखम्, दुःख समुदायः, दुःख निरोधः, दुःख निरोधः मार्गः।

दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार्यार्यबुद्धस्याभिमतानि तत्त्वानि अर्थात्- (1) दुःख - संसार दुःखमय है। (2) दुःख समुदाय-दुःख उत्पन्न होने का कारण है। (तृष्णा) (3) दुःख निरोध- दुःख का निवारण सम्भव है। (4) दुःखनिरोधमार्ग - दुःख निवारक मार्ग। **अष्टांगिक मार्ग** - (1) सम्यक्दृष्टि (2) सम्यक् संकल्प (3) सम्यक् वाणी (4) सम्यक् कर्म (5) सम्यक् आजीव (6) सम्यक् प्रयत्न (7) सम्यक् स्मृति तथा (8) सम्यक् समाधि

34. ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थानुसारेण शुनः शेषस्य पितुर्नाम किमासीत्?

- (a) कुक्षीवान् (b) ऐतरेयः
(c) अजीगर्तः (d) महीदासः

Ans. (c) : ऐतरेयब्राह्मणग्रन्थानुसारेण शुनः शेषस्य पितुर्नाम 'अजीगर्तः' आसीत् अर्थात् ऐतरेयब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार 'शुनः शेष' के पिता का नाम 'अजीगर्त' था।

35. कौटिलीयमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः गूढपुरुषोऽस्ति-

- (a) कापटिकः (b) गृहपतिकः
(c) वैदेहकः (d) उदास्थितः

Ans. (d) : कौटिलीयमते प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः गूढपुरुषोऽस्ति 'उदास्थितः'। अर्थात् - कौटिल्य के मत के अनुसार, सन्यासी के समीप निवास करने वाला प्रज्ञा (विद्वान्) शौच (पवित्रता) से युक्त गूढपुरुष 'उदास्थित' कहलाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

36. “काव्यप्रकाशे विशेषवपुपदार्थोऽपि वाक्यार्थः” - अत्र क उच्यते-

- (a) अनन्वितार्थः (b) लक्ष्यार्थः
(c) व्यंग्यार्थः (d) तात्पर्यार्थः

Ans. (d) : “काव्यप्रकाशे विशेषवपुपदार्थोऽपि वाक्यार्थः” अत्र तात्पर्यार्थः उच्यते अर्थात् काव्यप्रकाश में आये हुए विशेषवपुः (विलक्षण शरीर वाला) वाक्य में आये हुए पदों का अर्थ नहीं है, अपितु तात्पर्य वृत्ति से प्रकटित वाक्य का अर्थ है।
तात्पर्यार्थो विशेषवपुपदार्थोऽपि वाक्यार्थः समुल्लसतीत्यभिहितान्वयवादिनां मतम्। वाक्य में आया हुआ ‘अभिहितान्वयवाद कुमारिल भट्ट के मतानुयायी मीमांसको का मत है। कुमारिल भट्ट के अनुसार, ‘तात्पर्यार्थ’ नामक चतुर्थ शक्ति भी होती है, जबकि ‘अन्विताभिधानवादी’ (गुरु प्रभाकर) इनके वाच्यार्थ में ही ‘तात्पर्यार्थ’ शक्ति को मानते हैं।

37. ‘हरि + एतौ’ इत्यत्र भवतः-

- (a) यण् - सन्धिः (b) पररूपम्
(c) प्रगृह्यसञ्ज्ञा (d) प्रकृतिभावः
अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (d)

Ans. (3) : हरि + एतौ इत्यत्र प्रगृह्यसञ्ज्ञा प्रकृति भावः भवतः अर्थात् हरी + एतौ इस पद में प्रगृह्यसञ्ज्ञा और प्रकृतिभाव दोनों होता है, क्योंकि “ईदृदेद् द्विवचनम् प्रगृह्यसञ्ज्ञा स्यात्” सूत्र से ईकारान्त, ऊकारान्त, ऐकारान्त द्विवचन की प्रगृह्यसञ्ज्ञा होती है, जहाँ पर प्रगृह्यसञ्ज्ञा होती है वहाँ पर प्रकृतिभाव होता है।

38. अधोलिखितानां ग्रन्थानां रचनाकालदृष्ट्या समुचितं क्रमं चिनुत -

- (a) काशिका, वाक्यपदीयम्, सारस्वत व्याकरणम्, प्रदीपः
(b) वाक्यपदीयम्, काशिका, सारस्वत व्याकरणम्, प्रदीपः
(c) वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीपः, सारस्वत व्याकरणम्,
(d) वाक्यपदीयम्, प्रदीपः, काशिका, सारस्वत व्याकरणम्,

Ans. (c) : अधोलिखितानां ग्रन्थानां रचनाकालदृष्ट्या समुचितं क्रमं अस्ति- वाक्यपदीयम्, काशिका, प्रदीपः, सारस्वत व्याकरणम्।

वाक्यपदीयम् - भर्तृहरि
काशिका टीका - जयादित्य और वामन
प्रदीप टीका - आचार्य कैयट
सारस्वत व्याकरणम् - श्रीमद्भूति स्वरूपाचार्य

39. अधोऽङ्कितानां केन सहः कस्य सम्बन्धः?

- (a) प्रत्यक्षमेवः प्रमाणम् (i) जैनाः
(b) सप्तभङ्गिनयः (ii) साङ्ख्यदर्शनम्
(c) हेत्वाभासाः (iii) चार्वाकः
(d) सत्कार्यवादः (iv) नैयायिकाः

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) (iv), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(ii)
(2) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)
(3) (a) (ii), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(i)
(4) (a) (i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)

Ans. (2) :

- (a) प्रत्यक्षमेवः प्रमाणम् (iii) चार्वाकः
(b) सप्तभङ्गिनयः (i) जैनाः
(c) हेत्वाभासाः (iv) नैयायिकाः
(d) सत्कार्यवादः (i) साङ्ख्यदर्शनम्

40. वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु न गण्येते-

- (a) पुरुषः (b) विशेषः
(c) गुणः (d) अहङ्कारः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (c) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (d)

Ans. (4) : वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु पुरुषः अहङ्कारः न गण्येते अर्थात् वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात पदार्थों में पुरुष और अहङ्कार की गणना नहीं की गयी है।
सप्तपदार्थानाम् - (1) द्रव्यः (2) गुणः (3) कर्मः (4) सामान्यः (5) विशेषः (6) समवायः (7) अभावः

41. साङ्ख्यदर्शनानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वेषु गणना नास्ति--

- (a) रसस्य (b) पुद्गलस्य
(c) श्रोत्रस्य (d) जलस्य

Ans. (b) : साङ्ख्यदर्शनानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वेषु ‘पुद्गलस्य’ गणना नास्ति अर्थात् साङ्ख्यदर्शन के अनुसार पच्चीस तत्वों में ‘पुद्गल’ की गणना नहीं की गई है। जबकि रसस्य, श्रोत्रस्य और जलस्य की गणना की गई है।

42. पाणिनीयशिक्षानुसारं लृकारस्य भेदाः सम्भवन्ति-

- (a) ह्रस्वदीर्घौ (b) दीर्घप्लुतौ
(c) ह्रस्वप्लुतौ (d) ह्रस्वदीर्घप्लुताः

Ans. (c) : पाणिनीय शिक्षा के अनुसार लृकार के ह्रस्व और प्लुत भेद होते हैं। इसका ‘दीर्घ’ भेद नहीं होता है। अतः लृकार वर्ण के कुल 12 भेद किये जा सकते हैं।

उदाहरणः अ, इ, उ, ऋ → 18 (भेद) ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत
ए, ऐ, ओ, औ → 12 (भेद) दीर्घ, प्लुत
ल → 12 (भेद) ह्रस्व, प्लुत

43. निरुक्तकारेण केन क्रमेण पदजातानि वर्णितानि?

- (a) आख्यातम् (b) उपसर्गाः
(c) निपाताः (d) नाम

अत्र कः क्रमः? स्पष्टयत्

- (1) (iv), (i), (ii), (iii) (2) (i), (iii), (ii), (iv)
(3) (ii), (i), (iii), (iv) (4) (iii), (ii), (iv), (i)

Ans. (1) : निरुक्तकार ने पदों को चार भागों में विभाजित किया है। पदों का क्रम इस प्रकार है - नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपात
(1) नाम - “सत्त्वप्रधानानि नामानि” (सत्त्व प्रधानानि में सत्त्व शब्द का अर्थ क्रिया से भिन्न द्रव्य है) (2) आख्यात- “भावप्रधानमाख्यातम्” (भाव-प्रधान में भाव पद का अर्थ ‘क्रिया’ है) (3) उपसर्ग - “प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे (क्रिया के योग में प्रादि 22 की उपसर्ग संज्ञा होती है) (4) निपात - “चादयोऽसत्तवे और प्रादयश्च” (इन सूत्रों के अनुसार चादि और प्रादिगण में पठित शब्दों की ‘निपात’ संज्ञा होती है।

44. ‘मृगाक्षी’ - शब्दे विद्यमानः ‘मृग’ इति शब्दः उदाहरणं विद्यते -

- (a) अर्थदिशस्य (b) अर्थविस्तारस्य
(c) अर्थसङ्कोचस्य (d) अर्थगमस्य

Ans. (c) : मृगाक्षी शब्द में विद्यमान ‘मृग’ शब्द अर्थसंकोच का उदाहरण है। यह अर्थ विस्तार का ठीक उल्टा होता है। इसमें अर्थ की परिधि पहले विस्तृत रहती है, फिर संकुचित हो जाती है। उदाहरण के लिए संस्कृत ‘मृग’ का मूल अर्थ ‘पशु’ है। शिकार का वाचक मृगया तथा पशुओं के राजा ‘सिंह के लिए’ मृगराज के प्रयोग में मूल अर्थ आज भी सुरक्षित है। किन्तु आगे चलकर इस शब्द के

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

अर्थ में संकोच हो गया और सभी पशुओं का वाचक शब्द मृग केवल हिरण का वाचक हो गया। यह अर्थ संकोच संस्कृत में ही हो गया था। वस्तुतः अर्थ संकोच में 'सामान्य' से परिवर्तित होकर 'विशेष' हो जाता है। मृग 'सामान्य पशु' से 'विशेष पशु' हो गया। अर्थ संकोच के अन्य उदाहरण- सरसिज, महापात्र, भार्या, गौ, श्राद्धम्, मनुष्य।

45. मनुस्मृतिकारेण 'नारा' इति शब्देन किं गृहीतम् ?

- (a) आपः (b) मनुष्यः
(c) पशुः (d) पक्षी

Ans. (a) : मनुस्मृतिकारेण 'नारा' इति शब्देन आपः गृहीतम्। अर्थात् मनुस्मृति के अनुसार 'नारा' शब्द का अर्थ आपः (जल) है।
श्लोक - आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
वा सदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।।
यह श्लोक मनुस्मृति के प्रथम अध्याय से लिया गया है। जिसमें 'जल' को 'नार' कहा गया है।

46. रामायणस्य बालकाण्डस्य सर्गानुसारम् उपाख्यानानां समुचितं क्रमोऽस्ति -

- (a) शुनःशोपाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्-अहिल्योद्धारख्यानम्
(b) क्रौञ्चवधाख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-अहिल्योद्धारख्यानम्-शुनःशोपाख्यानम्-
(c) क्रौञ्चवधाख्यानम्-शुनःशोपाख्यानम्-अहिल्योद्धारख्यानम्-ऋष्यशृङ्गाख्यानम्
(d) ऋष्यशृङ्गाख्यानम्-शुनःशोपाख्यानम्-अहिल्योद्धारख्यानम्-क्रौञ्चवधाख्यानम्

Ans. (b) : रामायण के बालकाण्ड में दिये गये विकल्पों के अनुसार सर्गों का उपाख्यान क्रम इस प्रकार है - क्रौञ्चवधाख्यान, ऋष्यशृङ्ग का आख्यान, अहिल्या उद्धार की कथा तथा शुनः शोपाख्यानम्। रामायण के बालकाण्ड में कुल 77 सर्ग हैं। बालकाण्ड के आरम्भ के 4 सर्गों में रामायण की पूर्व पीठिका दी गयी है। नारद ने महर्षि वाल्मीकि को रामकथा सुनायी।

47. 'प्रवीणः' इति पदम् कयोः उदाहरणं वर्तते-

- (a) अर्थसङ्कोचस्य (b) अर्थपरिवर्तनस्य
(c) अर्थविस्तारस्य (d) अर्थहानेः

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (c)

Ans. (2) : अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ (प्रकार) अर्थ परिवर्तन किन-किन दिशाओं में होता है अथवा उसके कितने प्रकार होते हैं इस विषय पर सबसे पहले फ्रांसीसी भाषा विज्ञान वेत्ता ब्रिल ने विचार किया था। उन्होंने तीन दिशाओं की खोज की -अर्थ संकोच, अर्थविस्तार, अर्थदिश। अर्थ विस्तार -अर्थ विस्तार का अर्थ है अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार पा जाना।
अतः 'प्रवीण' पद अर्थ परिवर्तन की दिशाओं के अन्तर्गत अर्थ विस्तार का उदाहरण है। प्रवीण मूलतः वीणा बजाने में पटु-प्रकृष्टो वीणायाम्, अब किसी कार्य को करने में प्रवीण।
अन्य उदाहरण - कुशल, निपुण, महाराज, श्रीगेश, गवेषणा, तैल।

48. वेदान्तसारानुसारं 'तत्त्वमसि' इत्यत्र अखण्डार्थबोधकसम्बन्धः कतिविधः?

- (a) चतुर्विधः (b) त्रिविधः
(c) द्विविधः (d) पञ्चविधः

Ans. (b) : वेदान्तसार के अनुसार 'तत्त्वमसि' (वह तू है) इत्यादि वाक्य तीन सम्बन्धों से अखण्ड अर्थ बोध कराने वाला होता है। (1) समानाधिकरण (2) विशेषण विशेष्यभाव (3) लक्ष्य लक्षण भाव ये तीन सम्बन्ध होते हैं। 'तत्त्वमसि' महावाक्य वस्तुतः उपदेश वाक्य है। जो एक गुरु द्वारा अधिकारी प्रमाता को उपदेश रूप में दिया जाता है। 'तत्त्वमसि' यह ब्रह्म और जीव की एकता को बताता है।

49. 'गो + अग्रम्' इत्यत्र न सम्भवति-

- (a) प्रकृतिभावः (b) पूर्वरूपम्
(c) अवडादेशः (d) संहिताया अभावः

Ans. (d) : यहाँ पर 'सर्वत्र विभाषा गोः' सूत्र से -लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के प्रयोगों में एङ्गन्त 'गो' शब्द का पदान्त में विकल्प से प्रकृतिभाव होता है। गो + अग्रम् = गोअग्रम्, गोऽग्रम् (गाय का अग्रभाग) प्रकृतिभाव न होने के पक्ष में अवङ्गुआदेश होकर 'गवाग्रम्' भी बनता है। 'अवङ्गुस्फोटायनस्य' सूत्र से। और एङ्गन्त पद गो के बाद अग्रम् के 'अ' स्वर आने पर पूर्वरूप सन्धि होकर = गोऽग्रम् 'एङ्गुः पदान्तादति' से प्रकृतिभाव के अभाव में बना। अतः विकल्प (d) संहिताया अभावः इसका सही उत्तर होगा।

50. 'राम' शब्दस्य पञ्चम्येकवचनस्य विषये समुचितं कथनं नास्ति-

- (a) 'रामात्' इति रूपम्भवति
(b) 'रामाद्' इति रूपम्भवति
(c) अवसाने खरः स्थाने चरो भवति
(d) अवसाने झलां चरो वा स्युः

Ans. (c) : राम शब्द से पञ्चमी विभक्ति का एकवचन में 'इसि' प्रत्यय आया है। उसके स्थान में 'टाडसिडसामिनात्स्याः' से आत् आदेश होने से राम + आत् यह स्थिति हुयी। इसमें सवर्ण दीर्घ होकर रामात् बना। तब तकार झल् के पदान्त होने से 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से तकार के स्थान में दकार 'जश्' हुआ। तदनन्तर 'झल्' दकार की 'विरामोऽवसानम्' सूत्र से अवसान संज्ञा होने से अग्रिम सूत्र की प्रवृत्त होगी। 'अवसाने झलां चरो वा स्युः' अर्थात् अवसान में झलो को चर् विकल्प से हो। अतः 'रामाद्' में दकार के स्थान पर चर् तकार विकल्प से हुआ। अतः पञ्चमी एकवचन में रामाद् / रामात् दो रूप बनते हैं।

(लघुसिद्धान्तकौमुदी पेज-133)

51. ऋग्वेदसंहिताया वैशिष्ट्यमस्ति-

- (a) यज्ञवर्णनम् (b) देवस्तुतिः
(c) स्मार्तकार्यम् (d) वस्तुनिर्देशः

Ans. (b) : ऋग्वेद संहिता में देवस्तुति परख विषय का वर्णन है। ऋक् का अर्थ- ऋक् (ऋक्) का अर्थ -स्तुति परक मंत्र। 'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्' ऋग्वेद में विभिन्न 'देवों की स्तुति' का यथास्थान निर्देश है। ऋचाओं के द्वारा उन देवों का आह्वान किया जाता है। ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसका नाम ऋग्वेद संहिता पड़ा। संहिता शब्द 'संकलन' या संग्रह का बोधक है। यज्ञवर्णन यजुर्वेद संहिता में मिलता है और वस्तुनिर्देश का वर्णन अथर्ववेद संहिता में मिलता है।

52. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

- (a) द्यूतक्रीडा (i) भीष्मपर्व
(b) गीता-उपदेशः (ii) महाप्रस्थानिकपर्व
(c) अभिमन्यु-वधः (iii) सभापर्व
(d) पाण्डवानां हिमालययात्रा (iv) द्रोणपर्व का वर्णन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) (i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)
- (2) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
- (3) (a) (iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)
- (4) (a) (iii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(ii)

Ans. (4) :

महाभारत के पर्व	वर्णन
सभापर्व (2)	- द्यूतक्रीडा
भीष्म पर्व (6)	- गीता उपदेश
द्रोण पर्व (7)	- अभिमन्युवध
महाप्रस्थानिक पर्व (9)	- पाण्डवों की हिमालय यात्रा का वर्णन

53. भवभूतिकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

- (a) महावीरचरितम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
- (b) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्
- (c) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्
- (d) मृच्छकटिकम्, महावीरचरितम्

Ans. (b) : भवभूति रचनाद्वयं उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् अस्ति।

भवभूति ने कुल तीन नाटक ग्रन्थों की रचना की है। रचना क्रम की दृष्टि से इनका क्रम इस प्रकार है-

रचनाएँ	अङ्क	रस	नायक, नायिका
(1) मालतीमाधवम्	10 अङ्क	शृङ्गार रस	माधव, मालती
(2) महावीरचरितम्	7 अङ्क	वीर रस	राम, सीता
(3) उत्तररामचरितम्	7 अङ्क	करुण रस	राम, सीता

नोट- भवभूति के नाटकों में 'विदूषक का अभाव' पाया जाता है।

54. सूत्रोदाहरणयोः युग्मं यथोचितं मेलयतु-

- (a) तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (i) पठितुं प्रवीणः
- (b) समानकर्तृकेषु तुमुन् (ii) वेला भोक्तुम्
- (c) पर्याप्तवचनेष्वलमर्थेषु (iii) ज्ञातुम् इच्छामि
- (d) कालसमयवेलासु तुमुन् (iv) कृष्णं दर्शको याति

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) (i), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(ii)
- (2) (a) (iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)
- (3) (a) (ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
- (4) (a) (iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)

Ans. (2) : सूत्रों के उदाहरण का सही क्रम -

सूत्र	उदाहरण
(A) तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्	कृष्णं दर्शको याति
(B) समानकर्तृकेषु तुमुन्	ज्ञातुम् इच्छामि
(C) पर्याप्तवचनेष्वलमर्थेषु	पठितुं प्रवीणः
(D) कालसमयवेलासु तुमुन् याति	वेलाभोक्तुम्

55. भोजप्रबन्धानुसारं शिलालेख-लिपिवाचनं कथ्यते-

- (a) लिपिपरीक्षा
- (b) शिलापरीक्षा
- (c) जतुपरीक्षा
- (d) पाण्डुपरीक्षा

Ans. (c) : भोजप्रबन्ध के अनुसार शिलालेख की लिपि 'जतुपरीक्षा' कही गयी है।

56. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

- (a) हर्षः (i) मुद्राराक्षसम्
- (b) भवभूतिः (ii) कर्णभारम्
- (c) विशाखदत्तः (iii) उत्तररामचरितम्
- (d) भासः (iv) रत्नावली

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

- (1) (a) (iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)
- (2) (a) (iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)
- (3) (a) (ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
- (4) (a) (i), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(iii)

Ans. (2) : दिये गये तालिका के अनुसार सही मिलान -

हर्ष	रत्नावली	(4 अङ्क, नाटिका)
भवभूतिः	उत्तररामचरितम्	(7 अङ्क, नाटक)
विशाखदत्तः	मुद्राराक्षसम्	(7 अङ्क, नाटक)
भासः	कर्णभारम्	(1 अङ्क, एकांकी)

57. दीप्या च धैर्येण च यो रराज बालो
रविभूमिमावावतीर्णः।

तथातिदीप्तोऽपि निरीक्ष्यमाणो जहार चक्षूंषि यथा
शशाङ्कः ॥

-श्लोकेऽस्मिन् किं छन्दः कश्चात्र अलङ्कारः?

- (a) मालिनीवृत्तम्, परिकरालङ्कारः
- (b) आर्यावृत्तम्, उत्प्रेक्षालङ्कारः
- (c) उपजातिवृत्तम्, उपमालङ्कारः
- (d) वंशस्थवृत्तम्, रूपकालङ्कारः

Ans. (c) : उपर्युक्त श्लोकं उपजातिवृत्तम् छन्दः उपमालङ्कार अस्ति। अर्थात् - उपर्युक्त श्लोक में उपजाति नामक छन्द तथा उपमा अलङ्कार है।

58. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य विषयोऽस्ति-

- (a) ऋणादानप्रकरणम्
- (b) दानप्रकरणम्
- (c) गृहस्थधर्मप्रकरणम्
- (d) साक्षिप्रकरणम्

अधस्तनेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b)
- (2) (a) एवं (d)
- (3) (b) एवं (d)
- (4) (c) एवं (b)

Ans. (2) : याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य विषयः

ऋणादानप्रकरणम् साक्षिप्रकरणम् च अस्ति। अर्थात् - याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय का विषय ऋणादानप्रकरण और साक्षिप्रकरण है।

59. पूर्ववर्तिन आचार्यस्य प्राथम्येन

कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशत-

- (a) क्षेमेन्द्रः
- (b) अभिनवगुप्तः
- (c) भरतः
- (d) रुय्यकः

-एषु क्रमं चिनुत-

- (1) (d) (c) (b) (a)
- (2) (c) (b) (a) (d)
- (3) (a) (d) (b) (c)
- (4) (b) (d) (c) (a)

Ans. (2) : पूर्ववर्तिन आचार्यस्य प्राथम्येन

कालक्रमानुसारसमुचितमुत्तरं निर्दिशत -

भरतः → अभिनवगुप्तः → क्षेमेन्द्रः → रुय्यकः।

60. अशोकस्य गिरनार-अभिलेखानां सन्दर्भे समुचितं

कथनमस्ति-

- (a) अभिलेखानां भाषा संस्कृतमस्ति।
- (b) अभिलेखानां भाषा प्राकृतम् (पालिः) अस्ति।
- (c) अभिलेखानां लिपिः देवनागरी अस्ति।
- (d) अभिलेखानां लिपिः ब्राह्मी अस्ति।

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b)
- (2) (b) एवं (c)
- (3) (c) एवं (d)
- (4) (b) एवं (d)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (4) : अशोकस्य गिरनार-अभिलेखानां सन्दर्भे समुचितं कथनं अभिलेखानां भाषा प्राकृतम् (पालिः) अस्ति, अभिलेखानां लिपिः ब्राह्मी अस्ति। अर्थात् अशोक के गिरनार अभिलेख के सन्दर्भ में समुचित (उचित) कथन है-
अभिलेखों की भाषा प्राकृत (पालि) तथा लिपि ब्राह्मी है।

61. वैदिकसाहित्ये अधोलिखितानां सुनिश्चितक्रमो लेख्यः-

- (i) ब्राह्मणम् (ii) उपनिषद्
(iii) शुक्लयजुर्वेदः (iv) सूत्रसाहित्यम्
अधोलिखितेषु उचितक्रमं चिनुत-
(1) (ii), (i), (iv), (iii) (2) (iii) (i) (ii) (iv)
(3) (i), (ii), (iii); (iv) (4) (iv), (i), (ii), (iii)

Ans. (2) : वैदिकसाहित्ये सुनिश्चितक्रमो लेख्यः -

शुक्लयजुर्वेदः → ब्राह्मणम् → उपनिषद् → सूत्रसाहित्यम्।

62. कथनद्वयमधोलिखितम् - एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च कारणम् (R)

अभिकथनम् (A) : साङ्ख्यकारिकायां पुरुषस्य सत्ता स्वीक्रियते।

कारणम् (R) : सङ्घातपरार्थत्वात्।

अत्र समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) असत्यम् (R) सत्यम्
(b) (A) तथा (R) उभे सत्ये स्तः
(c) (A) तथा (R) उभे असत्ये स्तः
(d) (A) सत्यम् (R) असत्यम्

Ans. (b) : उपर्युक्त कथन में (A) और (R) दोनों सत्य हैं।
(A) अभिकथन (R) कारण की सही व्याख्या करता है।

63. 'प्रत्यर्थम्' इत्यत्र अव्ययीभाव समासो विद्यते-

- (a) योग्यतार्थे (b) वीप्सार्थे
(c) पदार्थानतिवृत्तयर्थे (d) सादृश्यार्थे

Ans. (b) : 'प्रत्यर्थम्' इत्यत्र अव्ययीभाव समासो 'वीप्सार्थे' विद्यते। अर्थात् 'प्रत्यर्थम्' यह पद अव्ययीभाव समास में 'वीप्सा' अर्थ में परिगणित है। अन्य उदाहरण - प्रतिदिनम्, प्रत्येकम्।

**64. 'अनैकान्तो विरुद्धश्चाप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।
कालात्ययापदिष्टश्च हेत्वाभासास्तु पञ्चधा ॥'
इति कस्य दार्शनिकस्य कथनमस्ति?**

- (a) विश्वनाथपञ्चाननस्य (b) अत्रम्भट्टस्य
(c) सदानन्दस्य (d) केशवमिश्रस्य

Ans. (d) : उपर्युक्त श्लोक 'केशवमिश्रस्य' दार्शनिक का कथन है। इनके अनुसार हेत्वाभास पाँच प्रकार होते हैं-
(1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरण सम (5) कालात्ययापदिष्ट।

65. भाषाणां 'सतम्' वर्गे स्वीक्रियते -

- (a) लैटिन (b) ग्रीक्
(c) संस्कृतम् (d) फ्रेंच

Ans. (c) : भाषाणां 'सतम्' वर्गे 'संस्कृतम्' स्वीक्रियते अर्थात् भाषा विज्ञान के सतम् वर्ग में संस्कृत भाषा को स्वीकार किया गया है। सतम् वर्ग में अन्य स्वीकृत भाषाएँ - हिन्दी, अवेस्ता, ईरानी, फारसी इत्यादि हैं।

66. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत -

- (a) श्रीहर्षः (i) हर्षचरितम्
(b) दण्डी (ii) मुद्राराक्षसम्
(c) बाणभट्टः (iii) नैषधीयचरितम्
(d) विशाखदत्तः (iv) दशकुमारचरितम्

समुचितं तालिकां चिनुत-

- (1) (a) (ii), (b) (iii), (c) (iv), (d) (i)
(2) (a) (iii), (b) (iv), (c) (i), (d) (ii)
(3) (a) (iv), (b) (i), (c) (ii), (d) (iii)
(4) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)

Ans. (2) : अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां -

- a. श्रीहर्षः - नैषधीयचरितम्
b. दण्डी - दशकुमारचरितम्
c. बाणभट्टः - हर्षचरितम्
d. विशाखदत्तः - मुद्राराक्षसम्

**67. महाकविकालिदासस्य प्रसिद्धौ कस्यालङ्कारस्योदाहरण-
रूपेण उपयोगः क्रियते-**

- (a) उपमालङ्कारस्य (b) उत्प्रेक्षालङ्कारस्य
(c) समासोक्त्यलङ्कारस्य (d) अतिशयोक्त्यलङ्कारस्य

Ans. (a) : महाकविकालिदासस्य प्रसिद्धे 'उपमालङ्कारस्य' उदाहरणरूपेण उपयोगः क्रियते अर्थात् महाकविकालिदास की प्रसिद्धि में 'उपमालङ्कार' का उदाहरण के रूप में उपयोग किया जाता है। जो इस श्लोक से दृष्टव्य है -
उपमालङ्कारस्य भार्वेऽर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोः गुणाः ॥

**68. संस्कृत-आलोचना-परम्परायां वाल्मीकिरामायणं कीदृशं
काव्यं मन्यते?**

- (a) अरससिद्धकाव्यम् (b) सिद्धरसकाव्यम्
(c) असिद्धरसकाव्यम् (d) सिद्धासिद्धरसकाव्यम्

Ans. (b) : संस्कृत आलोचना परम्परायां वाल्मीकि रामायणं 'सिद्धरसकाव्यम्' मन्यते अर्थात् संस्कृत आलोचकों की परम्परा में वाल्मीकि रामायण 'सिद्धरस काव्य' के रूप में माना जाता है।

69. नाट्यशास्त्रे विश्वकर्मणा प्रेक्षागृहस्य त्रैविध्ये वर्णितम्-

- (a) विकृष्टम् (b) त्र्यस्रम्
(c) चतुरस्रम् (d) अष्टास्रम्

उपर्युक्तेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (a) एवं (d)
(3) (b) एवं (d) (4) (c) एवं (d)

Ans. (1) : नाट्यशास्त्रे विश्वकर्मणा प्रेक्षागृहस्य त्रैविध्ये वर्णितम् - विकृष्टम् त्र्यस्रम्।

सबसे पहले जब विश्वकर्मा को नाट्यगृह बनाने की आज्ञा दी गई तो उस बुद्धिमान ने इस दिव्य प्रेक्षागृह के स्थल को देखकर बताया कि वास्तुशास्त्र के अनुसार नाट्यगृह की रचना तीन प्रकार से विहित है - (1) आयताकार (विकृष्ट) (2) वर्गाकार (चतुरस्रम्)

(3) त्रिभुजाकार (त्र्यस्र)

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिपकारो विधिः स्मृतः।

विकृष्टश्चतुरस्रश्च त्र्यस्रश्चैव प्रयोक्तृभिः ॥

70. नाट्यशास्त्रानुसारं रसानां वर्णाः सन्ति-

- (a) शृङ्गारः श्यामः हास्यः कपोतः
(b) हास्यः सितः शृङ्गारः श्यामः
(c) हास्यः सितः शृङ्गारश्च कपोतः
(d) करुणः कपोतः शृङ्गारः श्यामः

समीचीनमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (d)
(3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (d)

Ans. (2) : नाट्यशास्त्रानुसारं रसानां हास्यः सितः शृङ्गारः श्यामः - करुणः कपोतः शृङ्गारः श्यामः वर्णाः सन्ति।
अथ वर्णाः-

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

श्यामो भवति शृङ्गारः सितो हास्य प्रकीर्तितः।
कपोतः करुणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्तितः॥
गौरो वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णश्चैव भयानकः।
नीलवर्णस्तु वीभत्सः पीतश्चैवाद्भुतः स्मृतः॥

नाट्यशास्त्र (षष्ठोऽध्यायः)

71. 'पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।

वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन ॥'

- अस्याः कारिकायाः सम्बन्धः सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति ?

- (a) ध्वनिवादः (b) स्फोटवादः
(c) व्यञ्जनावदः (d) लक्षणावादः

Ans. (b) : पदे न वर्णा विद्यन्ते वर्णेष्ववयवा न च।

वाक्यात् पदानामत्यन्तं प्रविवेको न कश्चन॥

अस्याः कारिकायाः सम्बन्धः 'स्फोटवादः' सिद्धान्तेन सह भवितुमर्हति। अर्थात् उपर्युक्त कारिका का सम्बन्ध 'स्फोटवाद' सिद्धान्त के साथ होना चाहिए।

'स्फोटायन' स्फोटवादसिद्धान्त के आदि प्रवक्ता हैं। 'यन्त्र सर्वस्व' के रचयिता भरद्वाज ने 'चित्तिण्येवेति स्फोटायन' सूत्र के द्वारा आचार्य स्फोटायन को विमानशास्त्र का विशेषज्ञ वैज्ञानिक बताया गया है।

72. यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुगिरीणां सरसां समुद्रः।
तारा सचन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः॥

-----श्लोकेऽस्मिन् कस्य पुत्रस्य वर्णनमस्ति-

- (a) दशरथस्य (b) दुष्यन्तस्य
(c) दुर्योधनस्य (d) शुद्धोधनस्य

Ans. (d) : श्लोकेऽस्मिन् शुद्धोधनस्य पुत्रस्य वर्णनम् अस्ति। अर्थात् उपर्युक्त श्लोक में शुद्धोधन के पुत्र का वर्णन है। राजा शुद्धोधन, सिद्धार्थ (गौतम) के पिता थे। जिन्हें बाद में गौतम बुद्ध के नाम से जाना गया। वे दक्षिणी नेपाल में रहने वाले शाक्य लोगों के नेता थे।

73. भर्तृहरेः कृती इमेः-

- (a) दीपिका (b) प्रदीपः
(c) द्योतनम् (d) वाक्यपदीयम्

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (c)
(3) (a) एवं (d) (4) (b) एवं (d)

Ans. (3) : भर्तृहरेः कृति दीपिका एवं वाक्यपदीयम् अस्ति। भर्तृहरि की अन्य रचनाएँ निम्न हैं -

वाक्यपदीयम् (व्याकरण ग्रन्थ)
नीतिशतकम् (मुक्तक काव्य) (111 श्लोक)
शृंगारशतकम् (मुक्तक काव्य) (103 श्लोक)
वैराग्यशतकम् (मुक्तक काव्य) (111 श्लोक)

74. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम्
(A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) : एकनवतिवर्षीयस्य प्रणवस्य प्रपौत्रः

ओङ्कारः। ओङ्कारस्य युवापत्यसञ्ज्ञा भवति॥

कारणम् (R) : 'जीवति तु वंश्ये युवा' इति विधानात्।

- (a) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति। (A) इत्यस्य (R) उचितं कारणमस्ति।
(b) (A) तथा (R) उभावपि असमीचीनौ
(c) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणं नास्ति।
(d) (A) इति असमीचीनं परं (R) इति समीचीनम्

Ans. (a) : A तथा R उभयं सत्यमस्ति A इत्यस्य R उचितं कारणं अस्ति अर्थात् A और R दोनों सत्य हैं। A, R का उचित कारण है।

75. कल्पसाहित्ये गण्येते-

- (a) गौतमधर्मसूत्रम् (b) वाजसनेयिप्रातिशाख्यम्
(c) मानवशुल्कसूत्रम् (d) निघण्टुः

अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (c) एवं (d)
(3) (a) एवं (c) (4) (b) एवं (d)

Ans. (3) : कल्पसाहित्ये गौतमधर्मसूत्रम् मानवशुल्कसूत्रम् गण्येते। अर्थात् कल्पसाहित्य में गौतमधर्मसूत्र और मानव शुल्क सूत्र की गणना की जाती है। जबकि वाजसनेयिप्रातिशाख्य शौनक शिष्य कात्यायन की रचना है। इसमें 8 अध्याय हैं। ये ग्रन्थ प्रायः ध्वनि विज्ञान की प्राचीनता के परिचायक हैं। निघण्टु 5 अध्यायों का वैदिक शब्द संग्रह है यह 3 काण्डों में विभक्त है, नैघण्टुक, नैगम व दैवतकाण्ड।

76. 'आत्मा बुद्ध्या' समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।

मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥

उपर्युक्तेन श्लोकेन उपदिश्यते-

- (a) वर्णोत्पत्तिप्रक्रिया (b) वर्णानां स्थानम्
(c) वर्णानां प्रयत्नः (d) वर्णानां उच्चारणकालः

Ans. (a) :

आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।

मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥

(पाणिनीय शिक्षा)

अर्थात् सर्वप्रथम आत्मा बुद्धि के साथ संयुक्त होकर कुछ कहने की इच्छा से मन को युक्त करता है, पुनः मन जठराग्नि को प्रताड़ित करता है, फिर जठराग्नि वायु को प्रेरित करता है। उपर्युक्त श्लोक में वर्णोत्पत्ति प्रक्रिया का वर्णन किया गया है।

77. महाभारताश्रितं भासविरचितं नाटकमस्ति-

- (a) दूतवाक्यम् (b) प्रतिमानाटकम्
(c) मध्यमव्यायोगम् (d) बालभारतम्

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (d)
(3) (a) एवं (c) (4) (b) एवं (c)

Ans. (3) : महाभारताश्रितं भासविरचितं 'दूतवाक्यम्' एवं मध्यमव्यायोगम् नाटकमस्ति। अर्थात् - महाभारत आश्रित भास विरचित दूतवाक्य एवं मध्यम व्यायोग नाटक है जबकि प्रतिमा नाटक रामायण आश्रित नाटक ग्रन्थ है।

भास के नाटकों को कथा-स्रोत की दृष्टि से चार भागों में बाँटा जा सकता है।

(क) उदयन-कथा-मूलक -

- (1) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (2) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) महाभारत-मूलक -

- (3) ऊरुभंग
(4) दूतवाक्य
(5) पञ्चरात्र
(6) बालचरित
(7) दूतघटोत्कच
(8) कर्णभार
(9) मध्यमव्यायोग

(ग) रामायण-मूलक -

- (10) प्रतिमानाटक
(11) अभिषेकनाटक

(घ) कल्पना-मूलक -

- (12) अविमारक
(13) चारुदत्त

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

78. अत्र द्वौ कथनांशौ स्तः -

- (a) पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादः
(b) पशुः चतुष्पादयुक्ता भवन्ति। तेषामियं प्रकृतिर्भवति। अतः छन्दस्सु चत्वारः पादा भवन्ति। पद्यो चत्वारः पादाः छन्दनिरूपेण गण्यन्ते।

एतेषु-उचितमुत्तरं लिखत-

- (a) (a) तथा (b) उभये सत्यकथने, (b) (a) अंशस्य उचितमुदाहरणम्।
(b) (a) कथनं सत्यम् (b) कथनं तथा न निर्दिशति (a) स्वरूपम्।
(c) (a) कथनमसत्यम् (b) कथनं सत्यमस्ति।
(d) (a) सत्यमस्ति (b) परिभाषां न प्रस्तौति।

Ans. (a) : (a) तथा (b) उभये सत्य कथने (b), (a) अंशस्य उचितमुदाहरणम् अर्थात् A और B दोनों कथन सत्य है। B, A का उचित उदाहरण है।

79. नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।

दैवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

उपर्युक्तश्लोकेन सम्बन्धोऽस्ति-

- (a) वाल्मीकिरामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) जयपुराणस्य (d) भारतविजयस्य

Ans. (b) : नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।

दैवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥

उपर्युक्तश्लोकेन महाभारतस्य सम्बन्धोऽस्ति।

अंतर्यामी नारायणरूप भगवान् श्रीकृष्ण उनके सखा नर रत्न अर्जुन, उनकी लीला प्रकट करने वाली देवी सरस्वती और उनके वक्ता भगवान् व्यास को नमस्कार करके आसुरी संपत्तियों का नाश करके अंतःकरण पर विजय प्राप्त कराने वाले महाभारत का पाठ करना चाहिए।

उपर्युक्त पद्यांश महाभारत से सम्बन्धित है। महाभारत शान्त रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें 1 लाख श्लोक है जिसके कारण इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' भी कहा जाता है।

क्रम → जय → भारत → महाभारत।

80. ---अमृतसहोदरापि कटुकविपाका----शुकनासोपदेशं वर्णनमिदं वर्तते-

- (a) सरस्वत्याः (b) कादम्बर्याः
(c) लक्ष्म्याः (d) महाश्वेतायाः

Ans. (c) : लक्ष्म्याः अमृतसहोदरापि कटुकविपाका, शुकनासोपदेशं वर्णनमिदं वर्तते। अर्थात् लक्ष्मी अमृत की सगी बहन होते हुए भी कशौलापन उत्पन्न करने वाली होती है।

नोट- शुकनासोपदेश में "लक्ष्मी" हेतु प्रयुक्त प्रमुख विशेषण-

- (1) इन्द्रियहरिणहारिणी
(2) अनार्या
(3) अपरिचिता
(4) पुरुषोत्तमरता
(5) खलजनप्रिया आदि।

81. आर्हतदर्शनानुसारं 'सप्तभङ्गी' नयः कुत्र न स्वीकृतोऽस्ति?

- (a) स्यादस्ति च नास्ति च
(b) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः
(c) स्यादस्ति च वक्तव्यः
(d) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः

Ans. (c) : आर्हतदर्शनानुसारं 'सप्तभङ्गीनयः' स्यादस्ति च वक्तव्यः न स्वीकृतोऽस्ति अर्थात् आर्हतदर्शन के अनुसार 'सप्तभङ्गी मार्ग' स्यादस्ति च वक्तव्यः यह स्वीकार नहीं किया गया है जबकि अन्य

तीनों विकल्प स्वीकार किये गये हैं। सप्तभङ्गीनय अथवा अनेकान्तवाद के सात रूप हैं-

- (1) स्यादस्ति- किसी प्रकार है।
(2) स्याद्नास्ति किसी प्रकार का नहीं।
(3) स्यादस्ति च नास्ति च- किसी प्रकार है तथा नहीं है।
(4) स्यादवक्तव्यः - किसी प्रकार का अवर्णनीय है।
(5) स्यादस्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार का है और वर्णनीय है।
(6) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार का नहीं है तथा अवर्णनीय है।
(7) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः - किसी प्रकार का है नहीं है अवर्णनीय है।

82. अलोऽन्त्यात् पूर्ववर्णस्य का संज्ञा भवति?

- (a) निष्ठा (b) उपधा
(c) गति (d) संहिता

Ans. (b) : अलोऽन्त्यात् पूर्व वर्णस्य 'उपधा' संज्ञा भवति अर्थात् अन्तिम 'अल्' के पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

यथा → राजन्

इसमें अन् की उपधा संज्ञा होगी।

निष्ठा संज्ञा - क्तवतवतू निष्ठा

गति संज्ञा - उपसर्गाः क्रियायोगे गतिः।

संहिता संज्ञा - परः सन्निकर्षः संहिता

83. इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः? स कतिविधिः?

- (a) सप्तविधिः (b) चतुर्विधिः
(c) षड्विधिः (d) पञ्चविधिः

Ans. (c) : इन्द्रियार्थयोस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिप्रमाहेतुः स षड्विधिः।

इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष- 'प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधिः- प्रत्यक्षज्ञान का हेतु इन्द्रिय एवं पदार्थ का सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है-

- (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय
(4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषण विशेष्यभाव

षोढा सन्निकर्ष

इन्द्रिय	पदार्थ	सन्निकर्ष
चक्षु →	घट	→ संयोग
चक्षु →	घटरूप	→ संयुक्तसमवाय
चक्षु →	घटरूपत्व	→ संयुक्तसमवेतसमवाय
श्रोत्र →	शब्द	→ समवाय
श्रोत्र →	शब्दत्व	→ समवेतसमवाय
चक्षु →	घटाभाव (विशेषण)	→ विशेषण विशेष्यभाव भूतल (विशेष्य)

84. अधोलिखितेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

- (a) भट्टोजिदीक्षितः (i) काशिका
(b) नरेन्द्राचार्यः (ii) शब्दकौस्तुभः
(c) वामनः (iii) लघुमञ्जूषा
(d) नागेशः (iv) सारस्वतव्याकरणम्

समुचितं तालिकां चिनुत-

- (1) (a) (iv), (b) (iii), (c) (i), (d) (ii)
(2) (a) (i), (b) (iv), (c) (iii), (d) (ii)
(3) (a) (iii), (b) (ii), (c) (i), (d) (iv)
(4) (a) (ii), (b) (iv), (c) (i), (d) (iii)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (4) : अधोलिखितेषु सह सम्बन्धः-

- (a) भट्टोजिदीक्षितः → शब्दकौस्तुभः
(b) नरेन्द्राचार्यः → सारस्वतव्याकरणम्
(c) वामनः → काशिका
(d) नागेशः → लघुमञ्जूषा

85. याज्ञवल्क्यस्मृतेरनुसारं 'लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति' किम् ?

- (a) प्रमाणम् (b) प्रकरणम्
(c) अनुमानम् (d) साधनम्

Ans. (a) : याज्ञवल्क्यस्मृतेरनुसारं 'लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति' प्रमाणम् अस्ति।

याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार लिखित भुक्ति साक्षी प्रमाण है।
विनापि साक्षिभिलेख्यं स्वहस्तलिखितं तु यत्।
तत्प्रमाणं स्मृतं लेख्यं बलोपधिकृताहते।।

(याज्ञवल्क्यस्मृति)

86. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

- (a) शिक्षा (i) पादव्यवस्था
(b) कल्पः (ii) शब्दानुशासनम्
(c) व्याकरणम् (iii) यज्ञविधानविमर्शः
(d) छन्दः (iv) वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः

समुचितं तालिकां चिनुत-

- (1) (a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)
(2) (a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)
(3) (a) (iii), (b) (ii), (c) (i), (d) (iv)
(4) (a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)

Ans. (2) : अधस्तनेषु सह सम्बन्धः -

- शिक्षा → वर्णस्वरमात्रादिविमर्शः
कल्पः → यज्ञविधानविमर्शः
व्याकरणम् → शब्दानुशासनम्
छन्दः → पादव्यवस्था

87. 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं' इत्यत्र शाङ्करभाष्यानुसारं भवति-

- (a) विकारः (b) अपवादः
(c) अध्यासः (d) परिणामः

Ans. (c) : 'स्थूलोऽहं, कृशोऽहं' इत्यत्र शाङ्करभाष्यानुसारं भवति-
अध्यासः अर्थात् मैं स्थूल (मोटा) हूँ मैं कृश (पतला) हूँ यह
शाङ्करभाष्य के अनुसार अध्यास के अन्तर्गत परिगणित है।

88. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) बुद्धचरितम् (b) नैषधीयचरितम्
(c) स्वप्नवासवदत्तम् (d) मुद्राराक्षसम्

- एषु क्रमं चिनुत-

- (1) (a) (b) (c) (d) (2) (d) (c) (a) (b)
(3) (c) (b) (a) (d) (4) (c) (a) (d) (b)

Ans. (4) : सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

- एषु क्रमं चिनुत -
स्वप्नवासवदत्तम् - भास
बुद्धचरितम् - अश्वघोष
मुद्राराक्षसम् - विशाखदत्त
नैषधीयचरितम् - श्रीहर्ष

89. 'अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे' इत्यस्मिन्मन्त्रांशे (रयिः) पदस्य अर्थम् निर्दिशतु-

- (a) रात्रि (b) रत्नम्
(c) धनम् (d) वसु

अत्र उचितमुत्तरं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (c) एवं (d)
(3) (b) एवं (c) (4) (a) एवं (d)

Ans. (3) : 'अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे' इत्यस्मिन्मन्त्रांशे (रयिः) पदस्य अर्थम् - धनम् एवं रत्नम्।

अर्थात् - यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' का है जिसके ऋषि-मधुच्छन्दा, देवता-अग्नि, छन्दः - गायत्री। अग्निसूक्त 9 मन्त्रों में वर्णित है। रत्नधातुम्, पुरोहितम्, ऋत्विजम्, होतारं ये सब अग्नि का विशेषण है।

90. पाणिनीयशिक्षानुसारं शम्भुमते मताः वर्णाः सन्ति-

- (a) 61 (b) 62
(c) 63 (d) 64

अधोलिखितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (c)
(3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (d)

Ans. (3) : पाणिनीयशिक्षानुसारं शम्भुमते मताः 63 एवं 64 वर्णाः सन्ति। अर्थात् - पाणिनीय शिक्षा-यह अत्यन्त प्रसिद्ध शिक्षाग्रन्थ है वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है। इसमें 63 एवं 64 वर्ण हैं। मुख्य विषय है - वर्णों की संख्या, उच्चारण- प्रक्रिया का ध्वनि शास्त्रीय वर्णन, स्थान और प्रयत्न का विवरण, संवृत-विवृत, इत्यादि भेदों का वर्णन, पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि।

91. 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' इत्ययं वाक्यांशः कस्य आचार्यस्य कालनिर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते?

- (a) पतञ्जलेः (b) कात्यायनस्य
(c) पाणिनेः (d) भर्तृहरेः

Ans. (a) : 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' इत्ययं वाक्यांशः पतञ्जलेः आचार्यस्य कालनिर्धारणाय विद्वद्भिः उपयुज्यते। अर्थात् 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' यह वाक्य विद्वानों द्वारा 'आचार्य पतञ्जलि' के काल निर्धारण के लिए बताया गया है।

92. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥

अत्र श्लोके केषां वर्णनं प्राप्यते-

- (a) आरण्यकानाम् (b) उपनिषदाम्
(c) वेदाङ्गानाम् (d) वेदानाम्

Ans. (c) : छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥

अत्र श्लोके 'वेदाङ्गानाम्' वर्णनं प्राप्यते-

अर्थात्-पाणिनीय शिक्षा में वेद-पुरुष के छह अङ्गों के रूप में छह वेदाङ्गों का वर्णन है-छन्द वेद पुरुष के पैर हैं, कल्प हाथ हैं, ज्योतिष नेत्र हैं, निरुक्त कान हैं, शिक्षा नासिका है और व्याकरण मुख है।

“शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्म लोके महीयते॥”

(पा. शिक्षा 42)

93. कथनद्वयमधोलिखितम्-एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम्।

अभिकथनम् (A) : वाल्मीकेः रामः सीता-कारुण्य-आनृशंस्य-शोके-मदनरूप-चतुर्मुखी-सन्तापेन-सन्तप्तो भवति।

कारणम् (R) : सर्वेऽपि पुरुषा भार्या-वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (a) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम् (R) इति समुचितं समुचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य।
 (b) (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यम् किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य।
 (c) (A) इति सत्यम् (R) इति असत्यम्
 (d) (A) तथा (R) उभौ अपि असत्यम्।

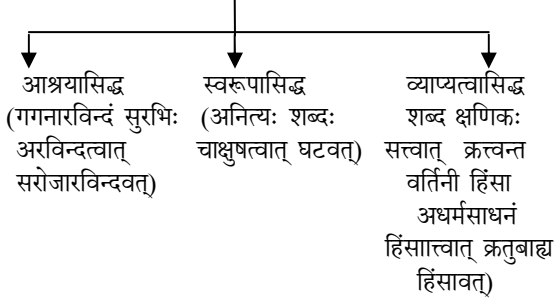
Ans. (b) : अभिकथन (A): वाल्मीके: राम: सीता वियोगे-कारुण्य आनृशंस्यशोके-मदनरूप-चर्तुर्मुखी -सन्तापेन-सन्तप्तो भवति।

कारणम् (R) : सर्वेऽपि पुरुषा भार्या-वियोगे सन्तप्ताः भवन्ति। अर्थात् (A) तथा (R) उभौ अपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य।

94. गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत् इत्यत्र तर्कभाषानुसारं कतमो हेत्वाभासः?
 (a) स्वरूपासिद्धः (b) विरूद्धः
 (c) आश्रयासिद्धः (d) व्याप्यत्वासिद्धः

Ans. (c) : गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत् इत्यत्र तर्कभाषानुसारं आश्रयासिद्धः हेत्वाभासः। अर्थात् - जिस हेतु के आश्रय का ही अभाव होता है उसे आश्रयासिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। जैसे-गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्।

असिद्ध हेत्वाभास के तीन भेद



95. निम्नाङ्कितेषु समुचितः सम्बन्धो वर्तते-
 (a) हर्षस्य बाँसखेडा-ताम्र-अभिलेखः
 (b) पुलकेशिन द्वितीयस्य मन्दसौर-अभिलेखः
 (c) यशोधर्मणः इलाहाबाद - अभिलेखः
 (d) रुद्रदामनः गिरनार अभिलेखः
अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-
 (1) (a) एवं (b) (2) (b) एवं (c)
 (3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (d)

Ans. (4) : समुचितः सम्बन्धो वर्तते -

(a) हर्षस्य बाँसखेडा-ताम्र-अभिलेखः
 (b) रुद्रदामनः गिरनार अभिलेखः
 अर्थात् (1) हर्ष के अभिलेख शाहजहाँपुर जिले में स्थित बाँसखेडा नामक स्थान से मिला है। इस लेख में हर्षवर्धन के बारे में बताया गया है। यह लेख ब्राह्मी लिपि तथा संस्कृत भाषा में लिखा गया है। (2) रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख पश्चिमी छत्रप नरेश रुद्रदामन द्वारा लिखवाया गया शिलालेख है। यह शिलालेख गिरनार पर्वतों पर है जो जूनागढ़ के निकट स्थित है। यह 130 से 150 ई. के मध्य लिखा गया था। जूनागढ़ शिलाओं पर अशोक के 14 शिलालेख तथा स्कन्दगुप्त के शिलालेख भी हैं।

रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख -
 स्थान - जूनागढ़ प्राचीन नाम- गिरनार,
 विकृत होकर गिरनार (गुजरात)
 भाषा -संस्कृत, लिपि-ब्राह्मी, समय -150 ई.

96. तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमे काण्डे के द्वे वर्णिते-
 (a) उपहोमः (b) अग्निहोत्रम्
 (c) अग्न्याधानम् (d) गवामयनम्
अधोलिखितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-
 (1) (b) एवं (c) (2) (a) एवं (d)
 (3) (c) एवं (d) (4) (a) एवं (b)

Ans. (3) : तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमे काण्डे अग्न्याधानम् गवामयनम् इति वर्णिते अर्थात् तैत्तिरीय ब्राह्मण के प्रथम काण्ड में अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय सोम नक्षमेष्टि तथा राजसूय याग का वर्णन है। तैत्तिरीय ब्राह्मण, कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा का एक मात्र यही ब्राह्मण सम्प्रति पूरा उपलब्ध है। शतपथ ब्राह्मण के तुल्य इसमें भी स्वर चिह्न है, जो इसकी प्राचीनता का द्योतक है।

97. जैनमतानुसारं सप्ततत्त्वानां समुचितः क्रमोऽस्ति-
 (a) आस्रवः संवरः, बन्धः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
 (b) बन्धः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, जीवः, अजीवः, मोक्षः
 (c) जीवः, अजीवः, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः
 (d) बन्धः, जीवः, अजीवः, आस्रवः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः

Ans. (c) : जैनमतानुसारं सप्ततत्त्वानां समुचितः क्रमोऽस्ति-जीवः, अजीवः, आस्रवः, बन्धः, संवरः, निर्जरा, मोक्षः जैनमतानुसारं सात तत्त्वों का समुचित क्रम है - जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष।

98. ऋग्वेदस्य वरुणसूक्ते [1.25] कियन्तो मन्त्राः सन्ति?
 (a) दश (b) द्वादश
 (c) एकविंशतिः (d) द्वाविंशतिः

Ans. (c) : ऋग्वेदस्य वरुणसूक्ते (1.25) एकविंशतिः मन्त्राः सन्ति। ऋग्वेद के वरुण सूक्त के (1.25) में 21 मंत्र हैं।
 ऋषि - शुनः शेष अजीगर्त
 देवता -वरुण
 छन्द - गायत्री
 एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है।

99. अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अस्ति-
 (a) अरस्तू (b) लॉन्जाइनस
 (c) क्रोचे (d) प्लेटो

Ans. (a) : अनुकरणसिद्धान्तस्य समर्थकः मुख्यतया अरस्तू अस्ति। 'अनुकरण सिद्धान्त' के समर्थक अरस्तू हैं।
 लॉन्जाइनस - उदात्तवाद
 क्रोचे - अभिव्यंजनात्मकवाद
 प्लेटो - अनुकरण सिद्धान्त
 'अरस्तू' - अनुकरण सिद्धान्त
 'अरस्तू' अनुकरण के अतिरिक्त रेचन (विरेचन) सिद्धान्त, त्रासदीसिद्धान्त आदि सिद्धान्त दिये हैं।

100. रामायणाश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति?
 (a) मालविकाग्निमित्रम्, रत्नावली
 (b) उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्
 (c) प्रतिमानाटकम्, वेणीसंहारम्
 (d) मालविकाग्निमित्रम्, स्वप्नवासवदत्तम्

Ans. (b) : रामायणाश्रितं रचनाद्वयं उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् अस्ति। भवभूति कृत् उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् ये दोनों रचनाएँ रामायण पर आश्रित हैं।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2020

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. पाश्चात्यविचारकस्य अरस्तूमहोदयस्य काव्यशास्त्रीयौ ग्रन्थौ स्तः?

- (A) पेरिडप्सुस
(B) भाषणशास्त्रम्
(C) सौन्दर्यशास्त्रम्
(D) काव्यशास्त्रम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

Ans. (c) : पाश्चात्यविचारकस्य अरस्तू महोदयस्य काव्यशास्त्रीयौ ग्रन्थौ भाषणशास्त्रम्, काव्यशास्त्रम् स्तः।

अर्थात् - पाश्चात्यविचारक अरस्तू महोदय का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ भाषणशास्त्र और काव्यशास्त्र है।

अरस्तू को पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान की विधाओं का आदि आचार्य माना गया है। उनकी कृतियों की संख्या लगभग 400 है। किन्तु उनकी प्रतिष्ठा के लिए दो ही ग्रन्थ उपलब्ध हैं-तेखनेस रितेरिकेस जो भाषणकला से सम्बन्धित है। इसका अनुवाद भाषणशास्त्र (Rhetoric) किया गया है। दूसरा पेरिपोइतिकेस जो काव्यशास्त्र से सम्बन्धित है। जिसका अनुवाद काव्यशास्त्र (Poetics) में किया गया है।

2. 'द्वित्राः' इत्यत्र कः समासः?

- (a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः
(c) बहुव्रीहिः (d) द्वन्द्वः

Ans. (c) : 'द्वित्राः' इत्यत्र 'बहुव्रीहिः' समासः। द्वित्रा इस पद में 'बहुव्रीहि' समास है। द्वित्रा पद का समास विग्रह है-

द्वौ वा त्रयो वा = द्वित्राः

सूत्र-प्रायेण अन्य पदार्थप्रधानः बहुव्रीहि समासः। प्रायः जिस समास में अन्य पद की प्रधानता होती है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

3. कालक्रमानुसारमधोलिखित ग्रन्थानां समुचितं क्रमं चिनुत-

- (A) शब्दकौस्तुभम् (B) काशिकावृत्तिः
(C) महाभाष्यम् (D) वैयाकरणभूषणसारः
(E) शब्देन्दुशेखरः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (C), (A), (B), (E), (D)
(b) (D), (B), (A), (E), (C)
(c) (B), (A), (C), (D), (E)
(d) (C), (B), (A), (D), (E)

Ans. (d) : कालक्रमानुसारमधोलिखित ग्रन्थानां समुचित क्रमं महाभाष्यम्→काशिकावृत्तिः→शब्दकौस्तुभम्→वैयाकरणभूषणसारः→शब्देन्दुशेखरः सन्ति।

ग्रन्थ	ग्रन्थकार
महाभाष्य	- पतञ्जलि
काशिकावृत्ति	- वामन और जयादित्य
शब्दकौस्तुभ	- भट्टोजिदीक्षित
वैयाकरणभूषणसार	- कौण्डभट्ट
शब्देन्दुशेखर	- नागेश भट्ट

4. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) अग्नि- सूक्तः	(i) आडिरस - बृहस्पतिः
(B) रुद्रसूक्तः	(ii) मधुच्छन्दा - ऋषिः
(C) पर्जन्यसूक्तः	(iii) गृत्समद - ऋषिः
(D) ज्ञानसूक्तः	(iv) भौमोऽग्नि - ऋषिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

- (a) (A) - (ii), (B) - (iii), (C) - (iv), (D) - (i)
(b) (A) - (i), (B) - (ii), (C) - (iii), (D), (iv)
(c) (A) - (ii), (B) - (i); (C) - (iv), (D), (iii)
(d) (A) - (iii), (B) - (iv), (C) - (i), (D), (ii)

Ans. (a) : समुचितं विकल्पं अस्ति-

सूक्त	ऋषि
अग्नि सूक्त	- मधुच्छन्दा
रुद्र सूक्त	- गृत्समद
पर्जन्य सूक्त	- भौमोऽग्नि
ज्ञान सूक्त	- आडिरस - बृहस्पतिः

5. अत्र कथनद्वयम् -

तत्र एकम् अभिकथनम् (A), अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।

अभिकथनम् (A) : न्यायदर्शनरीत्या आत्मत्वसामान्यवान् आत्मा इति।

कारणम् (R) : बुद्धि-सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष प्रयत्नगुणलिङ्गकत्वात्।

उपर्युक्त अभिकथन कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (a) (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति (A) इत्यस्य (R) इति उचितं कारणम्
 (b) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ
 (c) (A) तथा (R) उभावपि समीचीनौ, परं (A) इत्यस्य (R) इति समुचितं कारणम् नास्ति
 (d) (A) इति असमीचीनं, परं (R) इति समीचीनम्

Ans. (a) : अभिकथनं कारणञ्चाश्रित्य समुचितं विकल्पं स्तः-

(A) न्यायदर्शनरीत्या आत्मत्वसामान्यवान् आत्मा इति। (R) बुद्धि सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष-प्रयत्नगुणलिङ्गकत्वात् उभयं सत्यमस्ति (A) इत्यस्य (R) इति उचितं कारणम्।

6. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

- (A) सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः
 (B) धम्मपदम्
 (C) त्रिल्लानि
 (D) योगदर्शनम्

अधोऽङ्कितेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (B) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
 (c) (A) एवम् (B) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (b) : सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्गः, त्रिल्लानि एतद् द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति। बौद्ध दर्शन के मार्ग हैं-

- (1) सम्यक् दर्शन
 (2) सम्यक् ज्ञान
 (3) सम्यक् चरित्र

बौद्ध दर्शन के अनुसार, ये तीन रत्न कहे जाते हैं इसलिए इन दोनों का समुचित सम्बन्ध है।

7. मनुमते वेदप्रदानादाचार्यं परिचक्षते-

- (a) गुरुम्
 (b) उपाध्यायम्
 (c) पितरम्
 (d) गुरुतरम्

Ans. (c) : मनुमते वेदप्रदानादाचार्यं 'पितरम्' परिचक्षते। अर्थात् मनु के मत में वेद का दान करने से आचार्य को पिता कहा है-

वेदप्रदानादाचार्यं पितरं परिचक्षते।

न ह्यस्मिन्नुज्यते कर्म किञ्चदामौञ्जिबन्धनात्॥

(मनुस्मृति द्वितीयाध्याय)

8. सम्पूर्णम् - इन्द्र - सूक्तम् अधोलिखितेषु कतमेन छन्दसा ग्रथितमस्ति?

- (a) जगती - छन्दसा
 (b) अनुष्टुप् - छन्दसा
 (c) त्रिष्टुप् - छन्दसा
 (d) गायत्री - छन्दसा

Ans. (c) : सम्पूर्णम् - इन्द्र - सूक्तम् 'त्रिष्टुप् छन्दसा' ग्रथितमस्ति।

अर्थात् सम्पूर्ण इन्द्र सूक्त में त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है।

इन्द्र सूक्त दूसरे (2) मण्डल का बरहवाँ (12) सूक्त है। जिसमें कुल 15 मंत्र हैं।

इन्द्र सूक्त के ऋषि - गृत्समद, देवता-इन्द्र तथा स्वर धैवत है।

महत्वपूर्ण मंत्र-

1- यो जात एव प्रथमो मनस्वान्, देवो देवान्कृतुना पर्यभूषत्।

2- यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः।

3- यो रश्मस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्राह्मणो नाधमानस्य कीरेः।

9. अधोऽङ्कितेषु वाल्मीकिरामायणं कयोः काव्ययोः उपजीव्यम् ?

- (A) नैषधीयचरितम् (B) सेतुबन्धः
 (C) भट्टिकाव्यम् (D) किरातार्जुनीयम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (b) (B) एवम् (C)
 (c) (C) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

Ans. (b) : उपरिऽङ्कितेषु वाल्मीकिरामायणं सेतुबन्धः, भट्टिकाव्यम् काव्ययोः उपजीव्यम्। 'सेतुबन्ध' और 'भट्टिकाव्य' वाल्मीकिरामायण का उपजीव्य काव्य है।

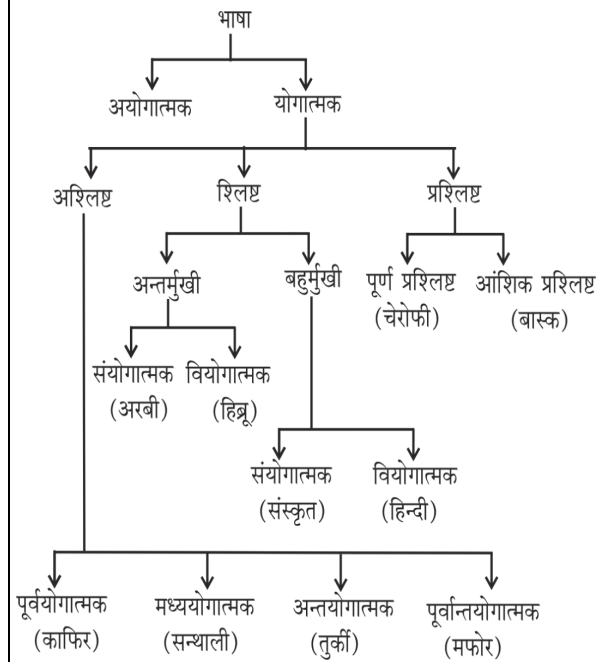
सेतुबन्ध नामक पुस्तक के रचयिता प्रवरसेन द्वितीय हैं।

भट्टिकाव्य को 'रावणवध' काव्य कहा जाता है इसके रचयिता भट्टि हैं।

10. भाषावैज्ञानिकैः भाषाः कतिधा वर्गीकृताः?

- (a) चतुर्धा (b) त्रिधा
 (c) द्विधा (d) पञ्चधा

Ans. (c) : भाषावैज्ञानिकैः भाषाः 'द्विधा' वर्गीकृताः।



CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

11. अधोलिखितेषु ग्रन्थेषु अम्बिकादत्तव्यासस्य रचना वर्तते—

- (a) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (b) प्रतिमानाटकम्
(c) शिवराजविजयम् (d) मृच्छकटिकम्

Ans. (c) : 'शिवराजविजयम्' अम्बिकादत्तव्यासस्य रचना वर्तते।
'शिवराजविजयम्' अम्बिकादत्त व्यास की रचना है।
अम्बिकादत्त व्यास की लगभग 78 रचनाएँ हैं—
जिसमें संस्कृत रचनाएँ -शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्।
हिन्दी रचनाएँ -बिहारी- विहार
पत्रिका - पीयूष प्रवाह
व्यास जी की उपाधियाँ - (1) घटिकाशतक (2) शतावधान
(3) भारतरत्न (4) सुकवि (5) अभिनवबाण (6) भारतभूषण
(7) महाकवि।

12. पूर्ववर्तिनः आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशतः—

- (A) विश्वनाथः (B) दण्डी
(C) धनञ्जयः (D) कुन्तकः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत—

- (a) (A), (B), (C), (D) (b) (B), (C), (D), (A)
(c) (C), (B), (A), (D) (d) (B), (A), (C), (D)

Ans. (b) : पूर्ववर्तिनः आचार्यस्य प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं निर्दिशतः—दण्डी→धनञ्जयः→कुन्तकः→विश्वनाथ।
दण्डी - दशकुमारचरितम्
धनञ्जय - दशरूपक
कुन्तक - वक्रोक्तिजीवितम्
विश्वनाथ - साहित्य दर्पण

13. 'ब्राह्मीलिपेराविष्कारका भारतीया आसन् इति को मन्यते?

- (a) जार्जब्यूलर - महोदयः (b) बर्नेल - महोदयः
(c) वेबर - महोदयः (d) एडवर्डथामस - महोदयः

Ans. (d) : ब्राह्मीलिपेराविष्कारका भारतीया आसन् इति 'एडवर्डथामस-महोदयः' मन्यते।

14. कौटिलीय - अर्थशास्त्रस्य विनयाधिकरणे प्रकरणानां समुचितः क्रमोऽस्ति—

- (A) इन्द्रियजयः (B) वृद्धसंयोगः
(C) मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः (D) अमात्योत्पत्तिः
(E) विद्यासमुद्देशः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत—

- (a) (A), (C), (D), (E), (B)
(b) (B), (A), (C), (D), (E)
(c) (C), (D), (B), (A), (E)
(d) (E), (B), (A), (D), (C)

Ans. (d) : कौटिलीय-अर्थशास्त्रस्य विनयाधिकरणे प्रकरणानां समुचितः क्रमोऽस्ति।

विद्यासमुद्देशः→वृद्धसंयोगः→इन्द्रियजयः→अमात्योत्पत्तिः
मन्त्रिपुरोहितोत्पत्तिः।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 150 अध्याय तथा 180 प्रकरण हैं। इसके प्रथम अधिकरण का नाम 'विनयाधिकरण' है।

15. "अहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च" इति कौटिलीयमते केषां धर्मः?

- (A) सर्वेषामाश्रमाणाम् (B) सर्वेषां वर्णानाम्
(C) सर्वेषां प्राणिनाम् (D) सर्वेषां सम्प्रदायानाम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत—

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (D) एवम् (A)

Ans. (a) : "अहिंसा सत्यं शौचमनसूयाऽऽनृशंस्यं क्षमा च" इति कौटिलीयमते 'सर्वेषामाश्रमाणाम्' सर्वेषां वर्णानाम् धर्मः।

कौटिल्य के मत में अहिंसा, सत्य, शौच (पवित्रता) असूया (ईर्ष्या न करना), अनुशंस्य (हत्या न करना) और क्षमा ये सब सभी आश्रमों का और सभी वर्णों का धर्म है।

16. अभिकथनम् (A) - तिब्बतीभाषा योगात्मिका भाषा कारणम् (R) - प्रकृतिप्रत्यययोः संयोगात्।

उपर्युक्त अभिकथन (A) तथा कारण (R) चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत—

- (a) अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयं असत्यम्
(b) अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयं सत्यम्
(c) अभिकथनम् (A) सत्यम् तथा कारणम् (R) असत्यम्
(d) अभिकथनम् (A) असत्यम् तथा कारणम् (R) सत्यम्

Ans. (a) : उपर्युक्त अभिकथन (A) तथा कारण (R) चाश्रित्य समुचितं विकल्पं -अभिकथनम् (A) कारणम् (R) उभयं असत्यम्।

अर्थात् -तिब्बतीभाषा योगात्मिका भाषा के अन्तर्गत नहीं आती है और न ही यह प्रकृति-प्रत्यय के संयोग से उत्पन्न होती है। इसलिए अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों असत्य हैं।

17. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत—

(A) दण्डी	(i) सौन्दरनन्दम्
(B) बिल्हणः	(ii) हर्षचरितम्
(C) अश्वघोषः	(iii) दशकुमारचरितम्
(D) बाणभट्टः	(iv) विक्रमाङ्कदेवचरितम्

एषु समीचीनमुत्तरं चिनुतः

- (a) (A) - (ii), (B) - (i), (C) - (iv), (D) - (iii)
(b) (A) - (iii), (B) - (iv), (C) - (i), (D), (ii)
(c) (A) - (i), (B) - (ii); (C) - (iii), (D), (iv)
(d) (A) - (iv), (B) - (iii), (C) - (ii), (D), (i)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (b) : समीचीनां तालिकां -

(1) दण्डी	-	दशकुमारचरितम्
(2) बिल्हणः	-	विक्रमाङ्कदेवचरितम्
(3) अश्वघोषः	-	सौन्दरानन्दम्
(4) बाणभट्टः	-	हर्षचरितम्

18. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सह मेलयतु-

प्रथमा सूची	द्वितीया सूची
(A) वाव्रज्यते	(i) नामधातुक्रियापदम्
(B) अजिज्ञपत्	(ii) यङ्लुगन्तक्रियापदम्
(C) स्वति	(iii) यङन्तक्रियापदम्
(D) बोभवीति	(iv) सन्नन्तक्रियापदम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) - (iii), (B) - (iv), (C) - (i), (D) - (ii)
 (b) (A) - (ii), (B) - (iii), (C) - (iv), (D), (i)
 (c) (A) - (i), (B) - (ii); (C) - (iii), (D), (iv)
 (d) (A) - (iv), (B) - (iii), (C) - (ii), (D), (i)

Ans. (a) : समुचितं विकल्पं सन्ति -

प्रथम सूची		द्वितीय सूची
वाव्रज्यते	—	यङन्तक्रियापदम्
अजिज्ञपत्	—	सन्नन्तक्रियापदम्
स्वति	—	नामधातुक्रियापदम्
बोभवति	—	यङ्लुगन्तक्रियापदम्

19. इन्द्र-सूक्ते (2. 12. 4) चतुर्थे मन्त्रे प्राप्तस्य 'दासं वर्णम्' इत्यस्य सायण-भाष्यानुसारम् अधोलिखितेषु कतमः अर्थोऽस्ति?

- (a) कृष्णवर्णम् (b) दुष्टवर्णम्
 (c) शूद्रादिकम् (d) अन्त्यवर्णम्

Ans. (c) : इन्द्र-सूक्ते (2.12.4) चतुर्थे मन्त्रे प्राप्तस्य 'दासं वर्णम्' इत्यस्य सायण-भाष्यानुसारम् अधोलिखितेषु 'शूद्रादिकम्' अर्थोऽस्ति। येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि, यो दासं वर्णमधरं गुहाकः श्वहनीवयो जिगीवाँल्लक्षमादद् अर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥

इस मंत्र में आये हुए 'दासं वर्णम्' का अर्थ सायण भाष्य के अनुसार शूद्रादि वर्ण किया है। जबकि पिटर्सन ने 'दासम् वर्णम्' का अर्थ - (Hostile colour dark skin) किया है।

20. 'तनु विस्तारे' धातोः विधिलिङ् प्रथपुरुषैकवचने रूपद्वयं भवति-

- (A) तन्यात् (B) तनुयात्
 (C) तनिषीष्ट (D) तन्वीत

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (A) एवम् (C)
 (c) (A) एवम् (D) (B) एवम् (D)

Ans. (d) : 'तनु विस्तारे' धातोः विधिलिङ् प्रथमपुरुषैकवचने रूपद्वयं तनुयात्, तन्वीत भवति।

तनु धातु - का परस्मैपद विधिलिङ् लकार एकवचन में इसका रूप-तनुयात् -तनुयाताम्-तनुयुः चलता है। जबकि आत्मनेपदी एकवचन में इसका रूप तन्वीत-तन्वीयाताम् -तन्वीरन् की तरह चलता है।

21. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

- (A) हर्षचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
 (C) रघुवंशम् (D) नलचम्पूः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

- (a) (A), (C), (B), (D) (b) (C), (A), (D), (B)
 (c) (B), (A), (D), (C) (d) (D), (B), (C), (A)

Ans. (b) : सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं। रघुवंशम् → हर्षचरितम् → नलचम्पूः → नैषधीयचरितम् 'रघुवंशम्' महाकाव्य कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य है इसमें उन्नीस सर्ग हैं, तथा रघु के कुल में उत्पन्न 31 राजाओं का वर्णन है। 'हर्षचरितम्' बाणभट्ट की रचना है, यह 8 उच्छ्वास में विभक्त तथा हर्ष के राज्य के इतिहास के बारे में बताया गया है। 'नलचम्पू' त्रिविक्रमभट्ट की रचना है, यह 7 उच्छ्वास में विभक्त 'नल एवं दमयन्ती' की प्रणयकथा है। नैषधीयचरितम् 'श्रीहर्ष' द्वारा रचित ग्रन्थ है। यह वृहत्तयी के अन्तर्गत परिगणित है। यह 22 सर्गों में विभक्त है।

22. किं पुराणं महाभारतस्य परिशिष्टम् ?

- (a) वायुपुराणम् (b) पद्मपुराणम्
 (c) मत्स्यपुराणम् (d) हरिवंशपुराणम्

Ans. (d) : 'हरिवंशपुराणम्' महाभारतस्य परिशिष्टमस्ति "वायुपुराण" में शिव उपासना चर्चा होने के कारण इसको शिवपुराण का दूसरा अंग माना गया है।

"पद्म पुराण" में भगवान विष्णु की विस्तृत महिमा के साथ, श्रीराम तथा कृष्ण की महिमा की व्याख्या मिलती है।

"मत्स्यपुराण" में भगवान श्री हरि के मत्स्य अवतार की कथा मिलती है। 'हरिवंशपुराण' में वैवस्वत मनु एवं यम की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है तथा विष्णु के अवतारों के बारे में बताया गया है। पुराणों की संख्या 18 है- (1) ब्रह्मपुराण (2) पद्मपुराण (3) ब्राह्माण्डपुराण (4) विष्णुपुराण (5) वायुपुराण (6) भागवतपुराण (7) नारदपुराण (8) मार्कण्डेयपुराण (9) अग्निपुराण (10) भविष्यपुराण (11) ब्रह्मवैवर्तपुराण (12) लिङ्गपुराण (13) वराहपुराण (14) स्कन्दपुराण (15) वामनपुराण (16) कूर्मपुराण (17) मत्स्यपुराण (18) गरुडपुराण

23. महाभारतस्य टीकाकाराणां कया टिकया सह सम्बन्धः?

(A) विमलबोधः	(i) ज्ञानदीपिका
(B) देवबोधः	(ii) लक्षाभरषटीका
(C) नारायणः	(iii) विषमश्लोकी
(D) वादिराजः	(iv) निगूढार्थ-पदबोधिनी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) - (iii), (B) - (i), (C) - (iv), (D) - (ii)
 (b) (A) - (i), (B) - (iii), (C) - (ii), (D), (iv)
 (c) (A) - (ii), (B) - (i); (C) - (iii), (D), (iv)
 (d) (A) - (iv), (B) - (ii), (C) - (i), (D), (iii)

Ans. (a) : समुचितं विकल्पं अस्ति-

- A. विमलबोधः - विषमश्लोकी
 B. देवबोधः - ज्ञानदीपिका
 C. नारायणः - निगूढार्थ - पदबोधिनी
 D. वादिराजः - लक्षाभरषटीका

24. के वर्णाः स्वयंप्रकाशन्ते?

- (A) मूलस्वराः (B) अन्तस्थाः
 (C) संयुक्तस्वराः (D) ऊष्मवर्णाः

अत्र समीचिनं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (D)
 (c) (A) एवम् (C) (d) (C) एवम् (D)

Ans. (c) : मूलस्वराः एवं संयुक्तस्वराः स्वयंप्रकाशन्ते अर्थात् मूल स्वर अथवा संयुक्त स्वर स्वयं (अपने आप) प्रकाशित होते हैं। संस्कृत में मूल स्वरों की संख्या पाँच है- अ, इ, उ, ऋ, ल तथा संयुक्त स्वरों की संख्या चार है- ए, ओ, ऐ, औ। मूल स्वर तथा संयुक्त स्वर अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं।

25. न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदिशा व्याप्तेर्लक्षणमस्ति-

- (A) साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः
 (B) व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्वधीः
 (C) हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यम्
 (D) सिषाधयिषाविरहविशिष्टसिद्धयभावः

अत्र समीचिनं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (C) (b) (B) एवम् (D)
 (c) (A) एवम् (D) (d) (C) एवम् (D)

Ans. (a) : न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदिशा व्याप्तेर्लक्षणमस्ति। साध्यवदन्यस्मिन्नसम्बन्ध उदाहृतः, हेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना साध्येन हेतोरैकाधिकरण्यम्।

26. सांख्यकारिकानुसारं 'प्रत्ययसर्गः' इत्यस्य कोऽर्थः?

- (a) प्रत्ययो बुद्धिः तस्य सर्गः कार्यम्
 (b) प्रत्ययो मनः, तस्य सर्गः कार्यम्
 (c) प्रत्ययः संसारः, तस्य सर्गः उत्पत्तिः
 (d) प्रत्ययोऽहङ्कारः, तस्य सर्गः कार्यम्

Ans. (a) : सांख्यकारिकानुसारं प्रत्ययसर्गः इत्यस्य "प्रत्ययो बुद्धिः तस्य सर्गः कार्यम्" अर्थमस्ति। बुद्धि के चार प्रमुख परिणाम विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि सिद्धि है इसे हि 'प्रत्ययसर्ग' या 'बुद्धिसर्ग' कहते हैं। प्रत्यय सर्ग के कुल पचास भेद हैं।

5 विपर्यय + 28 अशक्ति + 9 तुष्टि + 8 सिद्धि = 50 प्रत्यय सर्ग।

27. वेदभाष्यकारेषु कौ याज्ञिकौ भाष्यकारौ स्तः?

- (A) स्वामी दयानन्दः सरस्वती (B) सायणः
 (C) उवटः (D) आत्मानन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (C) (b) (B) एवम् (D)
 (c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

Ans. (d) : वेदभाष्यकारेषु 'सायणः एवम् उवटः' याज्ञिकौ भाष्यकारौ स्तः। अर्थात् वेद भाष्य कारों में सायण अथवा उवट याज्ञिक भाष्यकार हैं।

सायण ने ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद पर भाष्य लिखा है। इन्होंने सबसे अन्त में अथर्ववेद पर 'अथर्वभाष्य' लिखा है। सायणाचार्य ने अपने ऋग्वेदभाष्य का नाम 'वेदार्थ प्रकाश रखा है। उवट यजुर्वेद भाष्यकार हैं-

आनन्दपुरवास्तव्यवज्रटाख्यस्य सूनुना।

उवटेन कृतं भाष्यं पदवाक्यैः सुनिश्चितैः॥

ऋष्यादींश्च पुरस्कृत्य अवन्त्यामुवटो वसन् ।

मन्त्राणां कृतवान् भाष्यं महीं भोजे प्रशासति॥

28. काव्यप्रकाशानुसारं काव्यप्रयोजनं किमभीप्सितं भवति?

- (A) शक्तिः (B) यशः
 (C) व्यवहारः (D) निपुणता

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
 (c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (b) : काव्यप्रकाशानुसारं काव्यप्रयोजनं यशः एवम् व्यवहारः ईप्सितं भवति। काव्य प्रकाश के अनुसार काव्य के छः प्रयोजन हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परिनिर्वृत्तये कान्तः सम्मिततयोपदेशयुजे॥

अर्थात् काव्य यश की प्राप्ति, सम्पत्ति लाभ, सामाजिक व्यवहार, रोग आदि का नाश, तुरन्त ही उच्चकोटि के आनन्द का अनुभव और स्त्री के समान मनभावन उपदेश देने के लिए उपादेय है।

29. सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।

नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा॥

कस्माद् ग्रन्थादुद्धृतोऽयं श्लोकः?

- (a) रामायणात् (b) उत्तररामचरितात्
 (c) रघुवंशात् (d) नलचम्पोः

Ans. (d) : सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।

नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा॥

"नलचम्पोः" ग्रन्थादुद्धृतोऽयं श्लोकः अस्ति। 'रामायण' महर्षि वाल्मीकि की रचना है, जिसे चतुर्विंशतिः साहस्री संहिता कहा जाता है। इसमें सात काण्ड हैं। उत्तररामचरितम् भवभूति की रचना है इसमें 7 अंक है। रघुवंशम् कालिदास कृत है, जिसमें उन्नीस सर्ग तथा रघु कुल के 31 राजाओं का वर्णन मिलता है। 'नलचम्पू' त्रिविक्रम भट्ट की रचना है जिसमें 7 उच्छवास हैं। तथा नल एवं दमयन्ती की प्रणय कथा का वर्णन है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

30. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-

- (A) गोपथब्राह्मणम् (B) अथर्ववेदः
(C) ऐतरेय - ब्राह्मणम् (D) ऋग्वेदः

अत्र समुचितं क्रमं चिनुत-

- (a) (A), (B), (C), (D) (b) (B), (C), (D), (A)
(c) (C), (A), (B), (D) (d) (D), (B), (C), (A)

Ans. (d) : कालक्रमानुसारमधोलिखितं ग्रन्थानां समुचित क्रमम्—

ऋग्वेदः—अथर्ववेदः—ऐतरेय-ब्राह्मणम्—गोपथब्राह्मणम्।

गोपथब्राह्मण, अथर्ववेद का एक मात्र ब्राह्मण है। जबकि अथर्ववेद में आयुर्वेद एवं चिकित्सा पद्धति का वर्णन मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेद की एक शाखा है जिसका केवल 'ब्राह्मण' ही उपलब्ध है, संहिता नहीं, ऋग्वेद चार वेदों में सबसे प्राचीन वेद है। इसमें 10 मण्डल एवं 1028 सूक्त और 10552 या 10580 $\frac{1}{4}$ मन्त्र है।

31. अधुना-प्राप्तेषु सामवेदस्य ब्राह्मणेषु द्वौ ब्राह्मणौ कौ स्तः?

- (A) चरक - ब्राह्मणम्
(B) गालव - ब्राह्मणम्
(C) संहितोपनिषद् - ब्राह्मणम्
(D) वंशब्राह्मणम्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (C) (b) (A) एवम् (D)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

Ans. (c) : अधुना - प्राप्तेषु सामवेदस्य ब्राह्मणेषु द्वौ ब्राह्मणौ, संहितोपनिषद् एवम् वंशब्राह्मणम् अस्ति।

आधुनिक समय में सामवेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं- संहितोपनिषद् और वंश ब्राह्मण सामवेद में ब्राह्मणों की संख्या कुल आठ है जो निम्न है।

- (1) तांड्य ब्राह्मण (2) षड्विंश ब्राह्मण (3) आर्षेय ब्राह्मण (4) सामविधान ब्राह्मण (5) दैवत ब्राह्मण (6) उपनिषद् ब्राह्मण (7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण (8) वंश ब्राह्मण

32. बर्नेल - महोदयानुसारं ब्राह्मीलिपेरक्षराणामुत्पत्तिः सञ्जाता-

- (a) हिमिअरेटिक - अक्षरेभ्यः
(b) अरमइक - अक्षरेभ्यः
(c) सिलोन - अक्षरेभ्यः
(d) मिसर - अक्षरेभ्यः

Ans. (b) : बर्नेल - महोदयानुसारं ब्राह्मीलिपेरक्षराणामुत्पत्तिः 'अरमइक - अक्षरेभ्यः' सञ्जाता।

अर्थात्—बर्नेल महोदय के अनुसार ब्राह्मी लिपि के अक्षरों की उत्पत्ति 'अरमइक' अक्षरों से हुई है। अरमइक लिपि में केवल 22 अक्षर थे। अरमइक (आर्मेइक) लिपि खरोष्ठी से प्राचीन है।

33. कस्य मतानुसारं फिनिशियन - लिपेः 22 अक्षरेभ्यः ब्राह्मीलिपेः 22 अक्षराणामुत्पत्तिरभवत् -

- (a) बूलरमहोदयस्य (b) आइजकटेलरमहोदय
(c) लेनोर्मट - महोदय (d) बर्नेल - महोदय

Ans. (a) : बूलरमहोदयस्य मतानुसारं फिनिशियन लिपेः 22 अक्षरेभ्यः ब्राह्मीलिपेः 22 अक्षराणामुत्पत्तिरभवत्। अर्थात् बूलरमहोदय के मतानुसार फिनिशियन लिपि में 22 अक्षरों की तथा ब्राह्मी लिपि में 22 अक्षरों की उत्पत्ति होती है।

34. 1846 तमे ख्रीस्ताब्दे अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्य - विदुषा वैदिक साहित्यम् इतिहासञ्च (Vedic literature and History) इति ग्रन्थः रचितः?

- (a) मैक्समूलर - इत्यनेन
(b) रूडाल्फ-रॉथ - इत्यनेन
(c) विलियम - जोन्स - इत्यनेन
(d) मोनियर - विलियम - इत्यनेन

Ans. (b) : 1846 तमे ख्रीस्ताब्दे अधोलिखितेषु 'रूडाल्फ-रॉथ - इत्यनेन' पाश्चात्य - विदुषा 'वैदिक साहित्यम् इतिहासञ्च' इति ग्रन्थः रचितः। अर्थात् 1846 तमे ख्रीस्ताब्दी (शताब्दी) 'रूडाल्फ-रॉथ - इत्यनेन' पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक साहित्य इतिहास की रचना की।

35. महाभारतस्य वनपर्वणि के उपाख्याने स्तः?

- (A) शकुन्तलोपाख्यानम् (B) मत्स्योपाख्यानम्
(C) शिशुपालोपाख्यानम् (D) रामोपाख्यानम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (D) (d) (D) एवम् (A)

Ans. (c) : महाभारतस्य वनपर्वणि मत्स्योपाख्यानम् एवं रामोपाख्यानम् स्तः—महाभारत के वनपर्व में 'मत्स्य उपाख्यान' एवं रामोपाख्यान प्राप्त होते हैं।

36. अधोऽङ्कितेषु ब्राह्मीलिपेरुद्भवसिद्धान्तेषु कतमो विदेशी - सिद्धान्तो नास्ति?

- (a) फोनिशियन - उद्भवसिद्धान्तः
(b) द्रविड - उद्भवसिद्धान्तः
(c) दक्षिणी - सामील्लिपि उद्भवसिद्धान्तः
(d) उत्तरी - सामील्लिपि - उद्भवसिद्धान्तः

Ans. (b) : अधोऽङ्कितेषु ब्राह्मीलिपेरुद्भवसिद्धान्तेषु 'द्रविड - उद्भवसिद्धान्तः' विदेशी - सिद्धान्तो नास्ति।

अर्थात्— ब्राह्मीलिपि के उद्भवसिद्धान्त में 'द्रविड' विदेशी सिद्धान्त नहीं हैं जबकि फोनिशियन दक्षिणी सामील्लिपि और उत्पत्ति उत्तरी सामी लिपि ब्राह्मीलिपि के उत्पत्ति के विदेशी सिद्धान्त हैं। द्रविड की उत्पत्ति वर्णमाला रहित लिपियों से होता है जबकि उत्तरी सामी, दक्षिणी सामी और फोनीशियन ये तीनों वर्णमाला युक्त लिपियाँ हैं। द्रविड उत्पत्ति के प्रस्तावक जान मार्शल आदि हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

37. महाभारताश्रितं रचनाद्वयं किमस्ति?

- (a) उत्तररामचरितम् महावीरचरितम्
- (b) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् रत्नावली
- (c) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्
- (d) बुद्धचरितम्, स्वप्नवासवदत्तम्

Ans. (c) : महाभारताश्रितं रचनाद्वयं अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम् अस्ति। अर्थात् महाभारत पर आश्रित दो रचनार्ये अभिज्ञानशाकुन्तलम् और वेणीसंहारम् है। “उत्तररामचरितम्” रामायण आश्रित ग्रन्थ है जिसमें 7 अंक एवं विदूषक का आभाव है। “महावीरचरितम्” रामायण पर आश्रित भवभूति की रचना है। “प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्” भासकृत नाटक है, जिसमें 4 अंक है। “रत्नावली” नाटिका है, यह हर्षकृत है तथा इसमें 4 अंक है। ‘बुद्धचरितम्’ अश्वघोषकृत है, जिसमें 28 सर्ग है। ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ भासकृत है जिसमें 6 अंक है।

38. ‘उपाध्यायाद् अधीते’ इत्यत्र अपादानसञ्ज्ञाविधायकः पाणिनेर्नियमः कः?

- (a) जनिकर्तुः प्रकृतिः
- (b) भुवः प्रभवः
- (c) पराजेरसोढः
- (d) आख्यातोपयोगे

Ans. (d) : ‘उपाध्यायाद् अधीते’ इत्यत्र अपादानसञ्ज्ञाविधायकः पाणिनेर्नियमः सूत्रम् आख्यातोपयोगे-

1. **जनिकर्तुः प्रकृतिः-** जन् धातु के कर्ता का आदि कारण अपादान होता है। जैसे-कामात्क्रोधोऽभिजायते-काम से क्रोध पैदा होता है।
2. **भुवः प्रभवः-**उत्पन्न होने वाले का जो उत्पत्तिस्थान होता है, वह अपादान कहलाता है-जैसे-हिमवतो गङ्गा प्रभवति- गंगा हिमालय से निकली है।
3. **पराजेरसोढः-**परा अर्थात् जि धातु के प्रयोग में जो असहाय होता है। उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-अध्ययनात् पराजयते-वह अध्ययन से भागता है।
4. **आख्यातोपयोगे-** जिस गुरु या अध्यापक या मनुष्य से कोई विषय नियमपूर्वक पढ़ी जाती है वह गुरु, अध्यापक या मनुष्य अपादान होता है।

39. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः?

- (a) राजधर्मप्रकरणम्
- (b) विवाहप्रकरणम्
- (c) लेख्यप्रकरणम्
- (d) दिव्यप्रकरणम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- 1. (A) एवम् (B)
- 2. (B) एवम् (C)
- 3. (C) एवम् (D)
- 4. (D) एवम् (A)

Ans. (3) : याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे ‘लेख्यप्रकरणम्’ ‘दिव्यप्रकरणम्’ स्तः। अर्थात् याज्ञवल्क्य स्मृति के व्यवहाराध्याय प्रकरण में लेख्यप्रकरण और दिव्यप्रकरण का उल्लेख है।

40. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(A) एतान्याकाशादीनां सात्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते	(I) मनबुद्धिचिन्ताहंकाराः
(B) एते पुनराकाशादिगतसात्विकांशेभ्यो मिलितेभ्यः उत्पद्यन्ते	(II) विज्ञानमयकोशः
(C) एतानि पुनराकाशादीनां रजोऽंशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् -पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते	(III) ज्ञानेन्द्रियाणि
(D) बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता भवति	(IV) कर्मेन्द्रियाणि

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत -

- 1. (A) - (III), (B) - (I), (C) - (IV), (D) - (II)
- 2. (A) - (IV), (B) - (III), (C) - (II), (D), (I)
- 3. (A) - (I), (B) - (II); (C) - (III), (D), (IV)
- 4. (A) - (III), (B) - (II), (C) - (I), (D), (IV)

Ans. (1) :

समुचितं विकल्पं अस्ति-

(A) एतान्याकाशादीनां सात्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते	ज्ञानेन्द्रियाणि
(B) एते पुनराकाशादिगतसात्विकांशेभ्यो मिलितेभ्यः उत्पद्यन्ते	मनबुद्धिचिन्ताहंकाराः
(C) एतानि पुनराकाशादीनां रजोऽंशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक् -पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते	कर्मेन्द्रियाणि
(D) बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता भवति	विज्ञानमयकोशः

41. ‘ऐधेताम्’ इति प्रयोगे कानि धातु-लकार-पुरुष-वचनानि?

- (a) ‘एध्’ धातुः लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्
- (b) ‘एध्’ धातुः, लोटलकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
- (c) ‘एध्’ धातुः लोटलकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्
- (d) ‘एध्’ धातुः, लोटलकारः, मध्यमपुरुषः, द्विवचनम्

Ans. (a) : ‘ऐधेताम्’ इति प्रयोगे ‘एध्’ धातुः लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, द्विवचनम्।

एध् धातु लङ्लकार का रूप निम्न प्रकार से बनेगा-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यम पु०	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तम पु०	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

42. आलोकविशाला मे सहसा तिमिरप्रवेशविच्छिन्ना ।

उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण ॥

श्लोकेऽस्मिन् कः छन्दः कश्चलङ्कारः?

- (A) रूपकम्
- (B) आर्या
- (C) वसन्ततिलका
- (D) उत्प्रेक्षा

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (B) 2. (B) एवम् (C)
3. (B) एवम् (D) 4. (C) एवम् (D)

Ans. (3) : आलोकविशाला मे सहसा तिमिरप्रवेशविच्छिन्ना ।

उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण ।।

श्लोकेऽस्मिन् आर्या छन्दः एवं उत्प्रेक्षा अलङ्कारः। आर्या मात्रिक छन्द है, इसका लक्षण निम्न है-

यास्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।।

पहचान-

प्रथम एवं तृतीय चरण में = 12, 12

द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में = 18, 15

उत्प्रेक्षा अलंकार लक्षण-

सम्भावनमयोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेनयत् ।

43. अधुना तैत्तिरीय-नाम्ना प्रसिद्धौ कौ ग्रन्थौ स्तः?

- (A) ब्राह्मणम् (B) व्याकरणम्
- (C) उपनिषद् (D) छन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) (A) एवम् (C) (b) (A) एवम् (D)
- (c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

Ans. (a) : अधुना तैत्तिरीय नाम्ना ब्राह्मणम् एवम् उपनिषद् प्रसिद्धौ ग्रन्थौ स्तः। अर्थात् आधुनिक 'तैत्तिरीय' नाम से ब्राह्मण और उपनिषद् प्रसिद्ध ग्रन्थ है। 'तैत्तिरीय' नाम यजुर्वेद के ब्राह्मसम्प्रदाय (कृष्ण यजुर्वेद) की चार शाखाओं में से एक है। 'तैत्तिरीय' नाम से कृष्ण यजुर्वेद शाखा में उपनिषद् भी मिलता है।

44. वैशेषिकदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) प्रत्यक्षानुमानोपमानानि त्रीणि प्रमाणानि
- (b) प्रत्यक्षानुमाने द्वे प्रमाणे
- (c) प्रत्यक्षानुमानागमैतिह्यानि चत्वारि प्रमाणानि
- (d) प्रत्यक्षानुमानशब्दाः त्रीणि प्रमाणानि

Ans. (b) : वैशेषिकदर्शनानुसारं प्रत्यक्ष एवम् अनुमान द्वे प्रमाणे अस्ति। अर्थात् वैशेषिकदर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष एवं अनुमान दो प्रमाण हैं। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द चार प्रमाण को न्याय एवं मीमांसा दर्शन मानता है। प्रत्यक्ष, 'अनुमान', शब्द, ये तीन प्रमाण सांख्य एवं योग दर्शन मानते हैं।

45. अधोऽङ्कितेषु कोऽर्थापत्तिप्रमाणं स्वीकरोति?

- (a) चार्वाकदर्शनम् (b) जैनदर्शनम्
- (c) योगदर्शनम् (d) मीमांसादर्शनम्

Ans. (d) : उपरिलिखितेषु दर्शनेषु 'मीमांसादर्शनम्' अर्थापत्तिप्रमाणं स्वीकरोति। उपरोक्त दर्शन में 'मीमांसादर्शनम्' अर्थापत्तिप्रमाण को स्वीकार करता है- चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है। जैनदर्शन प्रत्यक्ष और अनुमान को प्रमाण मानता है। योग दर्शन प्रत्यक्ष अनुमान एवं शब्द को प्रमाण मानता है।

46. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

- (A) षोडशपदार्थाः सन्ति (B) सप्तपदार्थाः सन्ति
- (C) न्यायदर्शनम् (D) जैमिनिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (D) 2. (C) एवम् (D)
3. (A) एवम् (C) 4. (B) एवम् (C)

Ans. (3) : उपरिलिखितेषु कार्याद्वयोः समुचितः सम्बन्धोऽस्ति-

षोडशपदार्थाः एवम् न्यायदर्शनम्

अर्थात् उपरोक्त

न्याय दर्शन (तर्कभाषा) सोलह पदार्थ मानता है-

(1) प्रमाण (2) प्रमेय (3) संशय (4) प्रयोजन (5) दृष्टान्त (6) सिद्धान्त (7) अवयव (8) तर्क (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति (16) निग्रहस्थान, जबकि वैशेषिक दर्शन के अनुसार पदार्थों की संख्या सात है।

47. तर्कसङ्ग्रहानुसारं वाक्यार्थज्ञाने 'अग्निना सिञ्चेद्' इति वाक्यं कथं न प्रमाणम् ?

- (a) योग्यताविरहात्
- (b) सान्निध्याभावात्
- (c) आकाङ्क्षाविरहात्
- (d) पदानामविलम्बेनोच्चारणाभावात्

Ans. (a) : तर्कसङ्ग्रहानुसारं वाक्यार्थज्ञाने 'अग्निना सिञ्चेद्' इति वाक्यं 'योग्यताविरहात्' न प्रमाणम्।

तर्क संग्रह के अनुसार वाक्यार्थ के ज्ञान में 'अग्निना सिञ्चेद्' यह वाक्य योग्यता से रहित होने के कारण प्रमाण नहीं है।

वाक्यार्थज्ञान के हेतु तीन हैं-

48. अर्थसङ्ग्रहदिशा विधिः कतिविधिः?

- (a) षड्विधः (b) पञ्चविधः
- (c) चतुर्विधः (d) त्रिविधः

Ans. (c) : अर्थसङ्ग्रहदिशा विधिः चतुर्विधः। अर्थसंग्रह के अनुसार विधि चार प्रकार की होती है- (1) उत्पत्ति विधि (2) विनियोग विधि (3) प्रयोग विधि (4) अधिकार विधि।

49. हर्षस्य कृती इमे स्तः-

- (A) रत्नावली (B) नैषधीयचरितम्
- (C) कर्पूरमञ्जरी (D) प्रियदर्शिका

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (D) 2. (B) एवम् (C)
3. (C) एवम् (D) 4. (B) एवम् (D)

Ans. (1) : हर्षस्य कृती 'रत्नावली' एवम् 'प्रियदर्शिका' अस्ति। हर्ष की रचना रत्नावली एवं प्रियदर्शिका है। रत्नावली में 4 तथा प्रियदर्शिका में भी 4 अंक हैं। हर्ष की एक अन्य रचना 'नागानन्द' है, जिसमें 5 अंक हैं। 'नैषधीयचरितम्' श्री हर्ष की रचना है, जिसमें 22 सर्ग तथा नल एवं दमन्ती की प्रणयकथा है। 'कर्पूरमञ्जरी' राजशेखर कृत 4 अंक का सट्टक ग्रन्थ है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

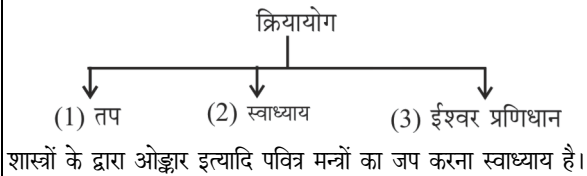
<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

50. कथनद्वयम् अधोलिखितम्- तत्र एकम् अभिकथनम्
(A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति।
अभिकथन (A) उत्पत्तिपरिपूताया किमस्याः पावनान्तरैः।
कारणम् (R) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतिः॥
उपर्युक्त अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं
चिनुत-
1. (A) तथा (R) उभावपि असत्यं
 2. (A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति यतः (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणमस्ति
 3. (A) तथा (R) उभावपि सत्यं परं (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणं नास्ति
 4. (A) इति सत्यम् परं (R) इति असत्यम्

Ans. (2) : अभिकथन (A) उत्पत्तिपरिपूताया किमस्याः पावनान्तरैः।
कारणम् (R) तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतिः॥
(A) तथा (R) उभयं सत्यमस्ति यतः (A) इत्यस्य (R) समुचितं
कारणमस्ति।

51. योगदर्शनानुसारेण अधोऽङ्कितेषु कस्य ग्रहणं
क्रियायोगेऽस्ति।
- (a) शौचस्य
 - (b) प्राणायामस्य
 - (c) ध्यानस्य
 - (d) स्वाध्यायस्य

Ans. (d) : योगदर्शनानुसारेण 'स्वाध्यायस्य' ग्रहणं क्रियायोगेऽस्ति।
अर्थात् योग दर्शन के अनुसार स्वाध्याय का ग्रहण क्रियायोग में होता है।



52. रससम्प्रदायस्य आचार्यो स्तः?

- (A) भरतमुनिः
- (B) वामनः
- (C) क्षेमेन्द्रः
- (D) अभिनवगुप्तः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (B)
2. (A) एवम् (C)
3. (A) एवम् (D)
4. (B) एवम् (D)

Ans. (3) : रससम्प्रदायस्य आचार्यो भरतमुनिः, अभिनवगुप्तः स्तः।
भरतमुनि-इनके द्वारा रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' भारतीय नाट्य और
काव्यशास्त्र का आदिग्रन्थ है। इसमें सर्वप्रथम रस सिद्धान्त की चर्चा
की गयी है। सूत्र- 'विभावानुभाव विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस
निष्पत्तिः।'

अभिनवगुप्त- अभिनवगुप्त दार्शनिक रहस्यवादी एवं साहित्यशास्त्र के
मूर्धन्य आचार्य हैं। इन्होंने भरत मुनि के रससिद्धान्त की व्याख्या
'अभिव्यक्तिवाद' नाम से की है।

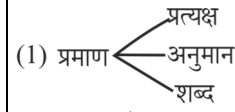
53. योगसूत्रानुसारेण लिखत अधोऽङ्कितेषु कयो द्वयोः
समुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

- (A) अनुमानप्रमाणम्
- (B) यमाः
- (C) चित्तभूमिः
- (D) चित्तवृत्तिः

अत्र समुचित विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (C)
2. (A) एवम् (D)
3. (C) एवम् (D)
4. (B) एवम् (D)

Ans. (2) : योगसूत्रानुसारेण लिखत 'अनुमानप्रमाणम्', चित्तवृत्तिः
समुचितः सम्बन्धोऽस्ति। आचार्य पतञ्जलि के योगसूत्र में चित्तवृत्तियों
पाँच हैं- (1) प्रमाण (2) विपर्यय (3) विकल्प (4) निद्रा (5) स्मृति।



अतः स्पष्ट है कि चित्तवृत्तियों के अन्तर्गत प्रमाण तथा प्रमाण के
अन्तर्गत अनुमान प्रमाण आता है।

54. 'बृहच्छब्देन्दुशेखरः' इति ग्रन्थस्य कर्ता?

- (a) कैयटः
- (b) नागेशभट्टः
- (c) चिन्तामणिः
- (d) वामनः

Ans. (b) : 'बृहच्छब्देन्दुशेखरः' इति ग्रन्थस्य कर्ता नागेशभट्टः
सन्ति। अर्थात् बृहच्छब्देन्दुशेखर इस व्याकरण ग्रन्थ के कर्ता आचार्य
नागेशभट्ट हैं-

ग्रन्थ	-	ग्रन्थकर्ता
प्रदीप (टीका)	-	कैयट
सौन्दर्यालङ्कार	-	वामन

55. अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः। मणौ
वज्रसंमुकीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥

पद्येऽस्मिन् मे इति पदं केन सम्बद्धम् ?

- (a) माघेन
- (b) भारविणा
- (c) कालिदासेन
- (d) श्रीहर्षेण

Ans. (c) : अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः। मणौ
वज्रसंमुकीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥

पद्येऽस्मिन् मे इति पदं कालिदासेन सम्बद्धम् ?

56. कालक्रमानुसारम् अधोलिखितवैयाकरणानां समुचितं
क्रमं चिनुत -

- (A) वरदराजः, भट्टोजिदीक्षितः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः
- (B) भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः, पतञ्जलिः, भर्तृहरिः
- (C) पतञ्जलिः, भट्टोजिदीक्षितः, भर्तृहरिः, वरदराजः
- (D) पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः

अत्र समुचितं उत्तरं चिनुत-

1. (A)
2. (B)
3. (C)
4. (D)

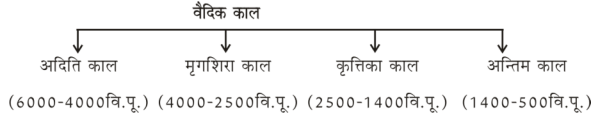
Ans. (4) : कालक्रम के अनुसार वैयाकरणों का क्रम-
पतञ्जलिः, भर्तृहरिः, भट्टोजिदीक्षितः, वरदराजः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

57. बालगंगाधर-तिलकेन मृगशिरा-काले ऋग्वेदस्य अधिकांश-मन्त्राणां रचना स्वीकृतास्ति। अधोलिखितेषु मृगशिरा-कालः वर्तते?
- (a) 6000-4000 वि.पू. (b) 4000-2500 वि.पू.
(c) 2500-1400 वि.पू. (d) 1400-500 वि.पू.

Ans. (b) : लोकमान्य ने वैदिककाल को चार युगों में विभक्त किया है-



मृगशिराकाल- आर्य सभ्यता के इतिहास में नितान्त महत्वशाली युग यही था जब ऋग्वेद के अधिकांश मंत्रों का निर्माण किया गया। रचना की दृष्टि से यह विशेषतः क्रियाशील था।

58. रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा सरोषहुंकारपराङ्मुखीकृताः। प्रहर्तुरिवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे॥ शिशुपालवधस्य श्लोकेऽस्मिन् कस्य दिक्पालस्य वर्णनं कृतम्?
- (a) रावणस्य (b) वरुणस्य
(c) यमस्य (d) इन्द्रस्य

Ans. (b) : रणेषु तस्य प्रहिताः प्रचेतसा सरोषहुंकारपराङ्मुखीकृताः। प्रहर्तुरिवोरगराजरज्जवो जवेन कण्ठं सभयाः प्रपेदिरे॥ शिशुपालवधस्य श्लोकेऽस्मिन् वरुणस्य दिक्पालस्य वर्णनं कृतम्। शिशुपालवध महाकवि माघ क अलौकिक ग्रन्थ है।

59. आकृतिमूलकवर्गीकरणमाश्रित्य अधस्तनासु का भाषा योगात्मकभाषासु नास्ति?
- (a) अरबी (b) संस्कृतम्
(c) चीनी (d) तुर्की

Ans. (c) : आकृतिमूलकवर्गीकरणमाश्रित्य अधस्तनासु 'चीनी' भाषा योगात्मकभाषासु नास्ति।

60. "कविक्रतुः" अधोलिखितेषु कस्य विशेषणं विद्यते?
- (a) इन्द्रस्य (b) बृहस्पतेः
(c) अग्नेः (d) शुक्रस्य

Ans. (c) : "कविक्रतुः" अधोलिखितेषु कस्य विशेषणं विद्यते। अग्नि सूक्त-ऋषि-मधुच्छन्दा, निवास-स्थान-पृथ्वीस्थानीय, सूक्ति संख्या- ऋग्वेद ऋग्वेदीय देवों में अग्नि का सबसे प्रमुख स्थान है। वैदिक मंत्रों के अनुसार अग्निदेव-नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न, यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करने वाले, तेज तथा प्रकाश के अधिष्ठाता हैं। ऋग्वेद में अग्नि को घृतपृष्ठ, रक्तदत्त, गृहपति, द्रव्यवाहन, समिधान, दमूनस्, यविष्ट, मेघ, 'कविक्रतुः' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। "अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्याश्चित्र श्रवस्तमः। देवो देवेभिरागमत् ॥"

61. 'दोषावस्तः' इति पदस्य सायणानुसारम् अधोलिखितेषु कतम अर्थः विद्यते?
- (a) गुणदोषौ (b) उदयास्तौ
(c) रात्रावहनी (d) सूर्याचन्द्रमसौ

Ans. (c) : 'दोषावस्तः' इति पदस्य सायणानुसारम् 'रात्रावहनी' अर्थः विद्यते। अर्थात् दोषवस्तः। इस पद का अर्थ सायण के अनुसार 'रात और दिन' होता है।

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् नमो भरन्त एमसि। इस मंत्र में आया हुआ 'दोषावस्तः' इस पद का अर्थ विच्छेद इस प्रकार है-दोषा शब्द रात्रि वाची, वस्तः शब्द दिन वाची का प्रतीक है।

दोषावस्तः- भारतीय व्याख्याता इसे सम्बोधन पद मानते हैं।

स्कन्द स्वामी- रात्रौ स्वेन ज्योतिषा तप्तसामाच्छादयतिः।

माधव- दोषाया आच्छादयतिः। दोषा निषा भवति।

सायण- ऋ.सं. 4.4.9 में इसे वैकल्पित रूप में सम्बोधन मानकर अर्थ करते हैं और ऋ.सं. 7.15.15. में केवल सम्बोधन मानते हैं।

62. अधोलिखितानां कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत-
- (A) उव्वट-भाष्यम्
(B) दयानन्द-भाष्यम्
(C) स्कन्दस्वामी-भाष्यम्
(D) सायण-भाष्यम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A), (D), (C), (B) 2. (D), (B), (C), (A)
3. (C), (A), (D), (B) 4. (B), (C), (A), (D)

Ans. (3) : कालक्रम के अनुसार उचित क्रम है- स्कन्दस्वामी भाष्यम्, उव्वट-भाष्यम्, सायण-भाष्यम्, दयानन्द-भाष्यम्

भाष्यकार समय

स्कन्दस्वामी	- 625 ई0
उव्वट	- 11वीं शती
सायण	- 1315-1387 ई0 (11वीं शती)
दयानन्द	- 1824ई0, 19वीं0 शताब्दी

63. वेदानामपौरुषेयत्वमधोऽङ्कितेषु कुत्र वर्णितम् ?
- (a) बौद्धदर्शने (b) मीमांसादर्शने
(c) योगदर्शने (d) सांख्यदर्शने

Ans. (b) : मीमांसादर्शने हिन्दुओं के छः दर्शनों से एक है। इस शास्त्र को 'पूर्वमीमांसा' और वेदान्त को 'उत्तरमीमांसा' भी कहा जाता है। पूर्वमीमांसा में 'धर्म' का तथा उत्तर मीमांसा में 'ब्रह्म' का विचार है। मीमांसा दर्शन के अनुसार वेद अपौरुषेय, नित्य एवं सर्वोपरि है।

64. शांखायनारण्यकः अधोनिर्दिष्टेषु केन सह सम्बद्धोऽस्ति?
- (a) सामवेदेन सह
(b) यजुर्वेदेन सह
(c) अथर्ववेदेन सह
(d) ऋग्वेदेन सह

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (d) : शांखायनारण्यकः ऋग्वेदेन सह सम्बद्धोऽस्ति। शांखायन आरण्यक का सम्बन्ध ऋग्वेद से है। यह ऐतरेय आरण्यक के समान है तथा पंद्रह अध्यायों में विभक्त है। यह 'कौषीतकि उपनिषद्' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

वेद - आरण्यक

ऋग्वेदन - ऐतरेय आरण्यक, शांखायन/कौषीतकि आरण्यक

सामवेद - जैमिनीयोपनिषद् आरण्यक, छान्दोग्य आरण्यक

यजुर्वेद - वृहदारण्यक आरण्यक, तैत्तिरीय आरण्यक, मैत्रायणी आरण्यक

अथर्ववेद - कोई आरण्यक उपलब्ध नहीं है

65. अश्वघोषकृतं रचनाद्वयं किमस्ति?

- (a) हर्षचरितम्, -बुद्धचरितम्
- (b) बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्दम्
- (c) विक्रमाङ्कदेवचरितम्, दशकुमारचरितम्
- (d) उत्तररामचरितम् महावीरचरितम्

Ans. (b) : अश्वघोषकृतं रचनाद्वयं अस्ति-बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्दम्
बुद्धचरितम् - संस्कृत का महाकाव्यग्रन्थ है इसकी रचना द्वितीय शताब्दी में अश्वघोष द्वारा की गयी। इसमें गौतम बुद्ध का जीवन चरित वर्णित है। इसका आरम्भ बुद्ध के 'गर्भावान' से तथा परिणति "बुद्धत्व-प्राप्ति" से होती है। यह 28 सर्गों में विभक्त है।

सौन्दरानन्द काव्यम् - यह भी अश्वघोषकृत संस्कृत ग्रन्थ है। ग्रन्थ बुद्ध के सौतेले भाई के बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के प्रसंग पर आधारित है।

बुद्धचरितम्- सौन्दरानन्दकाव्यम्, गंडीस्तोत्रगाथा तथा शारिपुत्रप्रकरण अश्वघोष की प्रमुख रचनाएं हैं।

66 'सुडनपुंसकस्य' इति पाणिनिसूत्रेण का सञ्ज्ञा विधीयते?

- (a) संहिता सञ्ज्ञा
- (b) उपधा सञ्ज्ञा
- (c) विभाषा सञ्ज्ञा
- (d) सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा

Ans. (d) : 'सुडनपुंसकस्य' इति पाणिनिसूत्रेण 'सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा' विधीयते। स्वादिपञ्चवचनानि सर्वनामस्थानसंज्ञानि स्युरक्लीबस्य।

अर्थात् सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच की सुट् संज्ञा होती है।

67. वैशेषिकदर्शनानुसारं निम्नाङ्कितानां समुचितः क्रमोऽस्ति?

- (A) अभावः
- (B) विशेषः
- (C) कर्म
- (D) सामान्यम्
- (E) समवायः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- 1. (D), (B), (C), (A), (E)
- 2. (C), (D), (B), (E), (A)
- 3. (A), (C), (D), (B), (E)
- 4. (A), (B), (C), (D), (E)

Ans. (2) : वैशेषिकदर्शनानुसारं समुचितः क्रमोऽस्ति-

कर्म → सामान्यम् → विशेषः → समवायः → अभावः।

अर्थात् वैशेषिक दर्शन के अनुसार समुचित क्रम है-

कर्म → सामान्य → विशेष → समवाय → अभाव

कर्म - उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्चकर्माणि।

सामान्य - परमपरं च द्विविधं सामान्यम्।

विशेष - नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।

समवाय - समवायस्त्वेक एव

अभाव-अभावश्चतुर्विधः-प्राग्भावः, प्रध्वंसाभावः, अत्यन्ताभावः, अन्योन्याभावश्चेति।

68. 'नैषधीयचरिते' कति सर्गाः सन्ति?

- (a) एकोनविंशतिः
- (b) विंशतिः
- (c) एकविंशतिः
- (d) द्वाविंशतिः

Ans. (d) : 'नैषधीयचरिते' द्वाविंशतिः सर्गाः सन्ति। अर्थात्- नैषधीयचरित में 22 सर्ग हैं।

ग्रन्थाः

सर्गाः

- रघुवंशम् - एकोनविंशतिः
- शिशुपालवधम् - विंशतिः
- धर्मशर्माभ्युदय - एकविंशतिः
- भट्टिकाव्य (रावणवधम्) - द्वाविंशतिः

69. अधस्तनेषु मात्रिकापश्रुतेरुदाहरणे स्तः-

- (A) पित्सति-पतति-पातयति
- (B) गेएन-गिंग-गेगांगेन
- (C) गतः-गमनम्- जगाम
- (D) कत्ल् -कतिल- मकतूल

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- 1. (A) एवम् (B)
- 2. (A) एवम् (C)
- 3. (B) एवम् (D)
- 4. (C) एवम् (D)

Ans. (2) : पित्सति -पतित-पातयति, गतः-गमनम् -जगाम मात्रिकापश्रुतेरुदाहरणे स्तः।

70. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

(A) पुरुषः	(i) विकृतिः
(B) वाक्	(ii) प्रकृतिर्विकृतिः
(C) शब्दः	(iii) प्रकृतिः
(D) मूलप्रकृतिः	(iv) न प्रकृतिर्न विकृतिः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

- 1. (A)- (IV), (B)- (III), (C)- (I), (D)-(II)
- 2. (A)- (IV), (B)- (II), (C)-(I), (D)-(III)
- 3. (A)- (IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)
- 4. (A)- (III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (3) : समुचितं सम्बन्धः अस्ति-

पुरुष - न प्रकृतिः न विकृतिः
वाक् - विकृतिः
शब्दः - प्रकृतिविकृतिः
मूलप्रकृतिः - प्रकृतिः

71. अधोनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

(A) गोपथ-ब्राह्मणम्	(I) कृष्णयजुर्वेदः
(B) बृहदारण्यकम्	(II) सामवेदः
(C) आर्षेय-ब्राह्मणम्	(III) अथर्ववेदः
(D) तैत्तिरीय-ब्राह्मणम्	(IV) शुक्लयजुर्वेदः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A)- (III), (B)- (IV), (C)- (II), (D)- (I)
2. (A)- (IV), (B)- (I), (C)- (III), (D)- (II)
3. (A)- (II), (B)- (III), (C)- (IV), (D)- (I)
4. (A)- (I), (B)- (II), (C)- (III), (D)- (IV)

Ans. (1) : उपरिनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां सन्ति-

गोपथ-ब्राह्मणम् - अथर्ववेदः
बृहदारण्यकम् - शुक्लयजुर्वेदः
आर्षेय-ब्राह्मणम् - सामवेदः
तैत्तिरीय-ब्राह्मणम् - कृष्णयजुर्वेदः

- ⇒ अथर्ववेद का एक मात्र ब्राह्मण - गोपथ ब्राह्मण है।
⇒ शुक्लयजुर्वेद का एक मात्र आरण्यक - बृहदारण्यक है।
⇒ आर्षेय , तांड्य (पंचविंश) षड्विंश, - सामवेद के ब्राह्मण
सामविधान, देवताध्याय, उपनिषद्, ग्रन्थ है
संहितोपनिषद्, मंत्रब्राह्मण और वंशब्राह्मण
⇒ कृष्णयजुर्वेद एकमात्र - तैत्तिरीय ब्राह्मण
ग्रन्थ है।

72. वाक्यपदीये भर्तृहरिणा कतमौ शब्दार्थयोः सम्बन्धौ स्वीकृतौ?

- (A) संयोगः (B) कार्यकारणभावः
(C) समवायः (D) योग्यता

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुतः

1. (A) एवम् (B) 2. (B) एवम् (C)
3. (C) एवम् (D) 4. (B) एवम् (D)

Ans. (4) : वाक्यपदीये भर्तृहरिणा 'कार्यकारणभावः, योग्यता' शब्दार्थयोः सम्बन्धौ स्वीकृतौ।

अर्थात् - वाक्यपदीय में भर्तृहरि के द्वारा कार्यकारणभाव, योग्यता शब्दों और अर्थों का सम्बन्ध स्वीकार किया है। वाक्यपदीय भर्तृहरि की रचना है, जिसमें तीन काण्ड हैं- (1) आगम (2) वाक्य (3) प्रकीर्ण।

73. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।	(I) नलचम्पूः
(B) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।	(II) नैषधीयचरितम्
(C) अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा ब्राह्मीव दौर्जनी संसद्बन्धनीया समेखला।	(III) रत्नावली
(D) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जन दर्शनातिथिम्।	(VI) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A)- (II), (B)- (I), (C)- (III), (D)- (IV)
2. (A)- (I), (B)- (II), (C)- (IV), (D)- (III)
3. (A)- (III), (B)- (II), (C)- (IV), (D)- (I)
4. (A)- (IV), (B)- (III), (C)- (I), (D)- (II)

Ans. (4) : उपरिनिर्दिष्टयुग्मानां समीचीनां तालिकां सन्ति-

- (A) शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः - अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(B) आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः - रत्नावली
(C) अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा ब्राह्मीव दौर्जनी- नलचम्पूः
(D) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जन दर्शनातिथिम् - नैषधीयचरितम्
अभिज्ञानशाकुन्तलम् 'कालिदास' की रचना है।
रत्नावली हर्षवर्धन की रचना है।
नलचम्पू - त्रिविक्रमभट्ट की रचना है।
नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष द्वारा रचित महाकाव्य है। यह वृहत्त्रयी के अन्तर्गत आता है। जिसमें 22 सर्ग हैं।

74. कथनद्वयमधोलिखितम् एकम् (A) इति अभिकथनम् अपञ्च (R) इति कारणम्

अभिकथनम् (A) पारोवर्मवित्तु तु खलु वेदितृषु भुयोविद्यः प्रशस्यो भवति।

कारणम् (R)- यथा तेन गहनरूपेण बारम्बारं स्वाध्यायेन बहुपरिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति।

उपर्युक्ताभिकथन-कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) तथा (R) उभावपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य
2. (A) तथा (R) उभावपि सत्यं। (R) इति उचितकारणमस्ति (A) इत्यस्य।
3. (A) सत्यं, परन्तु (A) इति असत्यम्
4. (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (2) : कथनद्वयम् एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् ।
अभिकथन (A) पारोवर्मीवित्सु तु खलु वेदितृषु भुयोविद्यः प्रशस्यो भवति ।
कारणम् (R) यथा तेन गहनरूपेण बारम्बारं स्वाध्यायेन बहुपरिश्रमेण वेदाभ्यासः कृतोऽस्ति ।
उपयुक्ताभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं-
(A) तथा (R) उभावपि सत्यं । (R) इति उचित कारणमस्ति (A) इत्यस्य ।

75. चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य इत्यत्र द्वे-शीर्षे इत्यनेन महाभाष्ये पतञ्जलिना किं गृहीतम्?

- (A) नित्यशब्दः (B) शिरःस्थानम्
(C) कार्यशब्दः (D) कण्ठस्थानम्
अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-
1. (A) एवम् (C) 2. (A) एवम् (B)
3. (A) एवम् (D) 4. (B) एवम् (D)

Ans. (1) : चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य इत्यत्र द्वे-शीर्षे इत्यनेन महाभाष्ये पतञ्जलिना 'नित्यशब्दः, कार्यशब्दः' गृहीतम् । पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में चार सींग कहने से चार प्रकार के पदसमूह (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी) और (प्रकारान्त से) सुबन्त, तिङन्त, उपसर्ग और निपात समझे जाते हैं। तीन पैर का अर्थ है तीन काल-भूत, भविष्यत् और वर्तमान। दो सिर अर्थात् शब्द के दो स्वरूप नित्य शब्द और कार्य शब्द। सात हाथ अर्थात् प्रथमा, द्वितीया आदि सातों विभक्तियाँ। अतः स्पष्ट है कि 'द्वे शीर्षे' से तात्पर्य नित्य शब्द और कार्य शब्द से है।

76. अधस्तनेषु पतञ्जलिप्रतिपादितेषु व्याकरण-प्रयोजनेषु नास्ति

- (a) रक्षार्थं (b) ऊहः
(c) आगमः (d) सन्देहार्थं

Ans. (d) : पतञ्जलिप्रतिपादितेषु व्याकरण-प्रयोजनेषु 'सन्देहार्थ' नास्ति, अन्ये चाऽस्ति ।

अर्थात् - पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित व्याकरण के प्रयोजनों में 'सन्देहार्थ' प्रयोजन नहीं है जबकि अन्य तीनों रक्षार्थ, ऊह और आगम प्रयोजन हैं-

रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम् ।

महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार मुख्य प्रयोजन पाँच हैं- रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह जबकि 13 गौण प्रयोजन हैं- (1) तेऽसुराः (2) दुष्टः शब्दाः (3) यद्ऽधीतं (4) यस्तु प्रयुङ्क्ते (5) अविद्वांसः (6) विभक्तिं कुर्वन्ति (7) यो वा इमाम् (8) चत्वारि (9) उत् त्वः (10) सक्तुमिव (11) सारस्वतीम् (12) दशम्यां पुत्रस्य (13) सुदेवो असि वरुण ।

77. महाभारतीय पर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति-

- (A) अनुशासनपर्व (B) अश्वमेधपर्व
(C) शान्तिपर्व (D) मौसलपर्व
(E) आश्रमवासीपर्व

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A), (D), (B), (C), (E)
2. (B), (C), (A), (D), (E)
3. (C), (A), (B), (E), (D)
4. (D), (B), (C), (A), (E)

Ans. (3) : महाभारतीय पर्वणां समुचितः क्रमोऽस्ति-

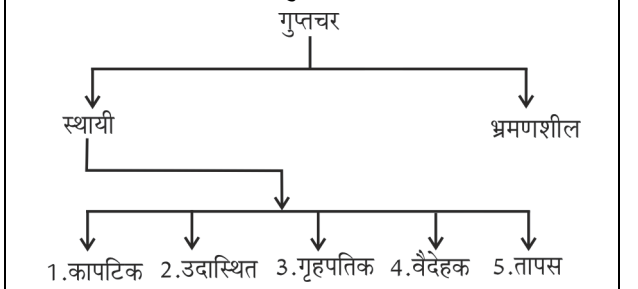
शान्तिपर्व → अनुशासनपर्व → अश्वमेधपर्व → आश्रमवासीपर्व → मौसलपर्व ।

महाभारत कृष्णद्वैपायन व्यास द्वारा रचित महाकाव्य है, यह अट्टारह पर्वों में विभक्त है, जिनके नाम क्रमशः हैं-आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिक पर्व, स्वर्गारोहण पर्व ।

78. "कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः" इति कौटिलीयमते कस्य वैशिष्ट्यमस्ति?

- (a) वैदेहकस्य (b) तापसस्य
(c) गृहपतिकस्य (d) ब्रह्मचारिणः

Ans. (c) : "कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः" इति कौटिलीयमते 'गृहपतिकस्य' वैशिष्ट्यमस्ति । कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः (गरीब किसान के वेश में रहने वाला गुप्तचर गृहपतिक कहलाता है।



79. अधोऽङ्कितानां योगदर्शनव्यासभाष्यानुसारे समुचितं क्रमं चिनुत-

- (a) क्षिप्तम् (b) विक्षिप्तम्
(c) निरुद्धम् (d) मूढम्
(e) एकाग्रम्

अधोऽङ्कितेषु समुचितं क्रमं चिनुत-

1. (A), (E), (D), (B), (C)
2. (A), (E), (B), (D), (C)
3. (E), (A), (D), (B), (C)
4. (B), (D), (A), (C), (E)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (2) : योगदर्शनव्यासभाष्यानुसारं समुचित क्रमम् -
क्षिप्तम् → मूढम् → विक्षिप्तम् → एकाग्रम् → निरुद्धम् ।

चित्तभूमियाँ (पाँच)

(1) क्षिप्त (2) मूढ (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) निरुद्ध
(रजोगुण) (तमोगुण अधिक्य) (सत्त्वगुण) (सात्त्विक) रजस+तामस
+सत्त्व का विरोध

80. अधोलिखितेषु कतमेन पाश्चात्यविदुषा 'ए वैदिक कॉन्कार्डेन्स' (A Vedic Concordance) इति नामको ग्रन्थो रचितः?

- (a) रुडाल्फ-रॉथ-इत्यनेन (b) कीथ-इत्यनेन
(c) विल्सन-इत्यनेन (d) ब्लूम-फील्ड-इत्यनेन

Ans. (d) : 'ब्लूम फील्ड इत्यनेन' पाश्चात्यविदुषा 'ए वैदिक कॉन्कार्डेन्स (A vedic concordance) इति नामको ग्रन्थो रचितः । पाश्चात्य विद्वान् ब्लूम फील्ड ने "पैपलाद संहिता" का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया है।

'ब्लूम फील्ड' अमेरिका में वर्णानात्मक भाषा विज्ञान के प्रवर्तक माने जाने जाते हैं। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लैंग्वेज' इस विषय का प्रमाणिक ग्रन्थ है। 'ब्लूमफील्ड' अमेरिका भाषाविज्ञानी हैं। पाश्चात्य विद्वान् ब्लूम फील्ड ने "पैपलाद संहिता" का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किये हैं।

81. 'को अद्धा वेद क इह प्रवोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।'

अस्य मन्त्रांशस्य को ऋषिः का च देवता?

- (A) परमेष्ठी नाम प्रजापतिर्ऋषिः (B) नारायणः ऋषिः
(C) विसृष्टिः देवता (D) परमात्मा देवता

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (C) 2. (A) एवम् (D)
3. (C) एवम् (D) 4. (B) एवम् (C)

Ans. (2) : 'को अद्धा वेद क इह प्रवोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः। अस्य मन्त्रांशस्य परमेष्ठी नाम प्रजापतिर्ऋषिः, परमात्मा च देवता।

अर्थात् - "कौन इस बात को वास्तविक रूप से जानता है और कौन इस लोक में सृष्टि के उत्पन्न होने का विवरण बता सकता है कि यह विविध प्रकार की सृष्टि किस उपादान कारण से और किस निमित्त कारण से सब ओर से उत्पन्न हुई।" इस मंत्र के ऋषि प्रजापति तथा देवता परमात्मा है। नासदीय सूक्त एक दार्शनिक सूक्त है, यह ऋग्वेद के 10वें मण्डल से उद्धृत है इसमें 129 सूक्त है।

82. ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यानुसारं ब्रह्मणोऽस्तित्वप्रसिद्धिः कस्माद् ज्ञायते?

- (a) बृहतेर्धातोरनुगमात् (b) पञ्चप्रयाजेभ्यः
(c) प्रकृतियागाद् (d) सर्वस्यात्मत्वाद्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (B) 2. (B) एवम् (C)
3. (C) एवम् (D) 4. (A) एवम् (D)

Ans. (4) : ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यानुसारं ब्रह्मणोऽस्तित्वप्रसिद्धिः। बृहतेर्धातोरनुगमात् सर्वस्यात्मत्वाद् ज्ञायते।

83. मनुमते कः द्विजः सान्वयः शूद्रत्वं प्राप्नोति अधोलिखितेषु?

- (a) वेदं परित्यज्य अन्यत्र श्रमं कुर्वन्
(b) प्रातरुत्थाय स्नानमकुर्वन्
(c) ब्राह्मणग्रन्थान् वेदं स्वीकुर्वन्
(d) एकेश्वरवादं निन्दयन्

Ans. (a) : मनुमते 'वेदं परित्यज्य अन्यत्र श्रमं कुर्वन्' द्विजः सान्वयः शूद्रत्वं प्राप्नोति।

84. अधस्तनेषु केन सह कस्य सम्बन्धः?

(A) वाक्यपदीयम्	(I) हरदत्तः
(B) पदमञ्जरी	(II) भर्तृहरिः
(C) अष्टाध्याय्याः मिताक्षरावृत्तिः	(III) नागेशभट्टः
(D) स्फोटवादः नाम ग्रन्थः	(IV) अन्नम्भट्टः

अधस्तनेषु समीचीनां तालिकां चिनुत-

1. (A)- (I), (B)- (III), (C)- (II), (D)- (IV)
2. (A)- (II), (B)- (I), (C)- (IV), (D)- (III)
3. (A)- (III), (B)- (II), (C)- (I), (D)- (IV)
4. (A)- (IV), (B)- (II), (C)- (III), (D)- (I)

Ans. (2) : समीचीनं तालिकां अस्ति-

वाक्यपदीयम् - भर्तृहरिः

पदमञ्जरी - हरदत्त

अष्टाध्याय्याः मिताक्षरावृत्तिः - अन्नम्भट्टः

स्फोटवादः नाम ग्रन्थः - नागेशभट्टः

85. तर्कभाषानुसारं अयुतसिद्धयोः कः सम्बन्धः?

- (a) संयोगः (b) समवायः
(c) विषय-विषयिभावः (d) आधाराधेयभावः

Ans. (b) : तर्कभाषानुसारं अयुतसिद्धयोः 'समवायः' सम्बन्धः। अर्थात् तर्कभाषा के अनुसार अयुतसिद्धों (पदार्थों) का सम्बन्ध समवाय सम्बन्ध है।

86. दशरूपकानुसारं फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यस्य कति अवस्थाः भवन्ति?

- (a) पञ्च (b) षट्
(c) सप्त (d) अष्ट

Ans. (a) : दशरूपकानुसारं फलार्थिभिः प्रारब्धस्य कार्यस्य 'पञ्च' अवस्था भवति। अर्थात् - फल की इच्छा वाले व्यक्ति के द्वारा आरम्भ किये गये कार्य की पाँच अवस्थाएँ होती हैं-

(1) आरम्भ (2) यत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागम

अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।

आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमः॥

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

87. “हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥” अस्मिन् मन्त्रे को ऋषिः कश्छन्दः?

- (A) हिरण्यगर्भऋषिः (B) जगती छन्दः
(C) प्रजापतिऋषिः (D) त्रिष्टुप् छन्दः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (C) 2. (A) एवम् (D)
3. (C) एवम् (D) 4. (B) एवम् (C)

Ans. (2) : “हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥” अस्मिन्मन्त्रे हिरण्यगर्भऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः।

88. कथनद्वयमधोलिखितम् । एकम् (A) इति अभिकथनम् अपरञ्च (R) इति कारणम् । अभिकथनम् (A) मन्त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिर्पा सह मन्त्रयेत। कारणम् (R)- एकेनार्थकृच्छेषु निश्चयं नाधिगच्छेत् । द्वाभ्यां मन्त्रयमाणो द्वाभ्यां संहताभ्यामवगृह्यते विगृहीताभ्यां विनाश्यते। ततः परेषु कृच्छ्रेणार्धनिश्चयो गम्यते।

उपर्युक्तअभिकथन-कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्
2. (A) तथा (R) उभावपि सत्यं (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य
3. (A) तथा (R) उभावपि सत्यं किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य
4. (A) सत्यम् (R) असत्यम्

Ans. (2) : अभिकथनम् (A) मन्त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिर्पा सह मन्त्रयेत। कारणम् (R) एकेनार्थकृच्छेषु निश्चयं नाधिगच्छेत्। द्वाभ्यां मन्त्रयमाणो द्वाभ्यां संहताभ्यामवगृह्यते, विगृहीताभ्यां विनाश्यते। ततः परेषु कृच्छ्रेणार्धनिश्चयो गम्यते।

उपर्युक्त अभिकथन कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं -

- (A) तथा (R) उभावपि सत्यं (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य।

89. मनुमतेरनधीयानो विप्रो कीदृशो भवति?

- (a) काष्ठमयो हस्ती (b) शक्तिमयो सिंहः
(c) चर्ममयो मृगः (d) गतिमयोऽश्वः

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

1. (A) एवम् (B) 2. (B) एवम् (C)
3. (C) एवम् (A) 4. (D) एवम् (B)

Ans. (3) : मनुमतेरनधीयानो विप्रो ‘काष्ठमयो हस्ती, चर्ममयो मृगः’ भवति।

90. अधोऽङ्कितेषु केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः?

(A) हर्षः	(I) सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखः
(B) पुलकेशिनद्वितीयः	(II) इलाहाबाद-स्तम्भलेखाः
(C) समुद्रगुप्तः	(III) बांसखेडा-ताम्रपट्टाभिलेखः
(D) कनिष्कः	(IV) ऐहोलशिलालेखः

1. (A)- (I), (B)- (III), (C)- (II), (D)-(IV)
2. (A)- (II), (B)- (III), (C)-(I), (D)-(IV)
3. (A)- (IV), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(II)
4. (A)- (III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

Ans. (4) : समुचितं विकल्पं अस्ति -

- A. हर्षः - बाँसखेडा -ताम्रपट्टाभिलेखः
B. पुलकेशिनद्वितीयः - ऐहोलशिलालेखः
C. समुद्रगुप्तः - इलाहाबाद-स्तम्भलेखाः
D. कनिष्कः - सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखः

परिच्छेदः

उपर उपलो मेघो भवति। उपरमन्तेऽस्मिन्नप्राणि। उपरता आप इति वा। तेषामेषा भवति-देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेशमुपरा उदायन्। त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृहूकं वहतः पुरीषम्। देवानां निर्माणे प्रथमा अतिष्ठन् माध्यमिका देवणाः। प्रथम इति मुख्यनाम प्रथमो भवति। कृन्तत्रमन्तरिक्षं विकर्तनं मेघानां विकर्तनेन मेघानामुदकं जायते। त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपाः। पर्जन्योः वायुरादित्यः शीतोष्णवर्षेरोषधीः पाचयन्त्यनूपा अनुवपन्ति लोकान्स्वनेन स्वेन कर्मणा। अयमपीतरोऽनूप एतस्मादेवानूप्यत उदकेनापि वान्वाविति स्पाद्यथा प्रागिति लस्यानूप इति स्पाद्यथा प्राचीनमिति। द्वा बृहूकं वहतः पुरीषम्। वाय्वादित्या उदकं बृहूकमित्युदकनाम।

91. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ‘उपर’ इति पदस्य अर्थं चिनुत-

- (a) नभः (b) मेघः
(c) जलम् (d) अश्वः

Ans. (b) : उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य ‘उपर’ इति पदस्य अर्थ ‘मेघः’ अस्ति।

अर्थात् - ऊपर लिखे गये परिच्छेद (गद्यांश) में ‘उपर’ इस पद का अर्थ ‘मेघ’ है।

92. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु ‘अनूपाः’ इति पदं केषां विशेषणमस्ति?

- (a) रवि-पृथिवी-जलानाम् (b) अपस्तेजसादित्यानाम्
(c) पृथिवी-जल-वायूनाम् (d) वायुरादित्यपर्जन्यानाम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. : (d) उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य 'अनूपाः' इति पदं 'वायुरादित्यपर्जन्यानाम्' विशेषणमस्ति। अर्थात्- उपरि लिखित परिच्छेद में अनूपा इस पद का विशेषण वायु सूर्य और पर्जन्य है।

93. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'बृबूकम्' इति पदस्यार्थं चिनुत-

- (a) मेघः (b) उदकम्
(c) वायुः (d) आदित्यः

Ans. (b) : उपरिलिखित - परिच्छेदमनुसृत्य 'बृबूकम्' इति पदस्य अर्थ 'उदकम्' अस्ति। ऊपर लिखे गये परिच्छेद में 'बृबूकम्' इस पद का अर्थ उदकम् (जल) है।

94. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु 'कृन्तत्रम्' इति पदस्य अर्थं चिनुत-

- (a) अन्तरिक्षम् (b) विकर्तनम्
(c) उदकम् (d) मेघः

Ans. (a) : उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य 'कृन्तत्रम्' इति पदस्य अर्थः अन्तरिक्षम् अस्ति।

ऊपर लिखे गये परिच्छेद में 'कृन्तत्रम्' इस पद का अर्थ अन्तरिक्षम् (आकाश) है।

95. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु त्रयस्तपन्ति इत्यस्य वाक्यस्य अभिप्रायः कः?

- (a) त्रयोतापाः पृथिवीं तपन्ति
(b) मनुष्याणां पापानि पृथिवीं तपन्ति
(c) पर्जन्यो-वायुरदित्याः पृथिवीं तपन्ति
(d) सूर्यरश्मयः वडवानश्च पृथिवीं तपन्ति

Ans. (c) : उपरिलिखित -परिच्छेदमनुसृत्य 'त्रयस्तपन्ति' इत्यस्य वाक्यस्य अभिप्रायः पर्जन्यो-वायुरदित्याः पृथिवीं तपन्ति।

परिच्छेद :

इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णा विषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम् पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधवेगग्राहणाम् आपानभूमिर्विषयमधूनाम् सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम् उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य कदलिका कामकारिणः, वध्यशाला साधुभावस्य राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य, लतेव विटपकानध्यरोहति। गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला, पातालगुहेव तमोबहुला, हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यं हृदया, प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी, दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्रया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्तीकरोति।

96. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु- "कदलिका कामकारिणः- "इत्यत्र करिणः तुलना केन सह कृता?

- (a) शुकनासेन (b) जलेन
(c) क्रोधेन (d) कामेन

Ans. (d) : उपरिलिखित -परिच्छेदे "कदलिका कामकारिणः" इत्यत्र करिणः तुलना कामेन सह कृता। ऊपर लिखे गये परिच्छेद में 'कदलिका कामकारिणः' इस पद में 'करिण' पद की तुलना काम के साथ किया गया है।

97. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु- "तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम् "इति गद्यांशानुसारं तिमिरोद्गतिः कुत्र भवति?

- (a) कर्णे (b) हस्ते
(c) शिरसि (d) नेत्रे

Ans. (d) : उपरिलिखित-परिच्छेदे 'तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्' इति गद्यांशानुसारं तिमिरोद्गतिः 'नेत्रे' भवति।

अर्थात्-ऊपर लिखे गये परिच्छेद में 'तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्' इस गद्यांश के अनुसार 'तिमिरोद्गतिः' नामक रोग नेत्र (आँख) में होती है।

98. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु "वल्लिनां संवर्धने कस्यापेक्षा भवति?" इति प्रश्नस्य समीचीनमुत्तरं चिनुत-

- (a) अग्नेः (b) वायोः
(c) जलस्य (d) काष्ठस्य

Ans. (c) : उपरिलिखित परिच्छेदे "वल्लिनां संवर्धने जलस्य अपेक्षा भवति।"

99. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु- "पुरःपताका सर्वाविनयानाम्"- इति गद्यांशे पुरः पताका उच्यते-

- (a) सरस्वती (b) चण्डी
(c) लक्ष्मीः (d) कालिका

Ans. (c) : उपरिलिखित-परिच्छेदे "पुरःपताका सर्वाविनयानाम्" इति गद्यांशे पुरः पताका 'लक्ष्मी' उच्यते।

ऊपर लिखे गये परिच्छेद में पुरःपताका सर्वाविनयानाम् (अर्थात् सभी अविनयों (दुराचारियों) के आगे चलने वाली पताका के समान इस गद्यांश में 'पुरः पताका' लक्ष्मी के लिए कहा गया है।

100. उपरिलिखित-परिच्छेदमनुसृत्य अधोलिखितेषु "हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया" इत्यंशे कोऽलङ्कारः?

- (a) विरोधाभासः (b) विभावना
(c) श्लिष्टोपमा (d) विशेषोक्तिः

Ans. (c) : उपरिलिखित परिच्छेदे 'हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया' इत्यंशे श्लिष्टोपमा अलङ्कारः। ऊपर लिखे गये परिच्छेद में हिडिम्बेव भीम साहसैकहार्यहृदया इस वाक्य में श्लिष्ट उपमा अलङ्कार है।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2021

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. अधोऽङ्कितेषु नागेशभट्टस्य ग्रन्थो नास्ति

- (a) प्रदीपोद्योतः (b) बृहत्शब्देन्दुशेखरः
(c) माधवीयधातुवृत्तिः (d) लघु-शब्देन्दुशेखरः

Ans. (c) : अधोऽङ्कितेषु नागेशभट्टस्य ग्रन्थो 'माधवीयधातुवृत्तिः' नास्ति। अर्थात् नीचे उल्लिखित 'माधवीयधातुवृत्तिः' नागेशभट्ट की रचना नहीं है जबकि अन्य तीनों (प्रदीपोद्योतः, बृहत्शब्देन्दुशेखरः, लघु-शब्देन्दुशेखरः) इनकी रचना है।

'माधवीयधातुवृत्तिः' सायणाचार्य की रचना है। सायण ने अपने भाष्यों को "माधवीय वेदार्थप्रकाश" के नाम से अभिहित किया है।

“तेन मायणपुत्रेण सायणेन मनीषिणा।

आख्यया माधवीयेयं धातुवृत्तिर्विरच्यते॥”

नागेश भट्ट की अन्य रचनाएँ-परिभाषेन्दुशेखर, वैयाकरण सिद्धान्त मञ्जूषा, लघुमञ्जूषा, परमलघुमञ्जूषा आदि हैं।

2. वेदान्तसारे चतुर्विधस्थूलशरीरेषु द्वे इमे स्तः

- A. कायजम् B. जरायुजम्
C. अण्डजम् D. तोयजम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं C (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) B एवं D

Ans. (c) : वेदान्तसारे चतुर्विधस्थूलशरीरेषु 'जरायुजम्, अण्डजम्' द्वे इमे स्तः। वेदान्तसार के अनुसार चार प्रकार के स्थूल शरीर होते हैं- (1) जरायुज (2) अण्डज (3) स्वेदज (4) उद्भिज

(1) जरायुज- जरायु से उत्पन्न होने वाले मनुष्य, पशु आदि जरायुज नामक स्थूल शरीर हैं।

(2) अण्डज - अण्डों से उत्पन्न होने वाले-पक्षी, सर्प आदि अण्डज हैं।

(3) स्वेदज - पसीने से उत्पन्न होने वाले-जू, मच्छर आदि स्वेदज नामक स्थूलशरीर हैं।

(4) उद्भिज- पृथ्वी को भेदकर उत्पन्न होने वाले-लता, वृक्ष आदि उद्भिज हैं।

3. अधस्तनेषु कयोर्द्वयोः सम्बन्धः?

- A. पतञ्जलिः महाभाष्यकारः B. कालिदासः
C. गोनर्दीयः D. शबरस्वामी

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं C (b) B एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (a) : अधस्तनेषु 'पतञ्जलिः महाभाष्यकारः गोनर्दीयः' एतयोः द्वयोः सम्बन्धः। महाभाष्यकार पतञ्जलि का सम्बन्ध 'गोनर्दीयः' से है। पतञ्जलि 'व्याकरण महाभाष्य' के रचयिता हैं। इनकी गणना भारत के अग्रगण्य विद्वानों में की जाती है। इनका निवास 'गोनर्दीय' नामक ग्राम है। पतञ्जलि को अन्य नाम से भी जानते हैं-गोनर्दीय, गोणिकापुत्र, नागनाथ, अहिपति, चूर्णिकार आदि।

4. मनुमते स्वयम्भूर्भगवानव्यक्तो किमिदं व्यञ्जयन् प्रादुरासीत्?

- (a) अज्ञानमिदम् (b) जगदिदम्
(c) ज्ञानमिदम् (d) तममिदम्

Ans. (b) : मनुमते स्वयम्भूर्भगवानव्यक्तो 'जगदिदम्' व्यञ्जयन् प्रादुरासीत्।

ततः स्वयंभूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम् ।

महाभूतादि वृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः॥6॥

तब जो इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न हों, ऐसी सृष्टि की रचना करने में समर्थ, अपनी इच्छा से शरीर धारण करने वाले और प्रकृति के प्रेरक भगवान्, आकाशादि महाभूतों को प्रकाशित करते हुए प्रकट हुए।

5. एतयोः अलंकारयोः उपमान - उपमेयौ भवतः

- A. रूपकम् B. विभावना
C. उत्प्रेक्षा D. विशेषोक्तिः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) A एवं D (d) B एवं C

Ans. (b) : एतयोः अलंकारयोः 'रूपकं, उत्प्रेक्षा' उपमान - उपमेयौ भवतः। रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलङ्कार में उपमान और उपमेय दोनों होता है। रूपक- 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे।' निरपह्नव अर्थात् निषेध रहित विषय (उपमेय) में रूपित के आरोप को ही रूपक कहते हैं।

उदा.- रावणावग्रहक्लान्तमिति वागमृतेन सः।

अभिवृष्य मरुत्सस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे॥

उत्प्रेक्षा- 'भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना॥'

किसी प्रकृत अर्थात् प्रस्तुत वस्तु (उपमेय) को अप्रस्तुत वस्तु (उपमान) के रूप में सम्भावना करना ही उत्प्रेक्षा है।

उदा.- सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुत्सृजाम् ।
अदृश्यते त्वच्चरणारविन्दं विश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम्॥

विभावना- 'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।'

विशेषोक्ति- 'सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिस्तथा द्विधा।'

6. महाभारतस्य मंगलश्लोक कस्य ग्रन्थस्य निर्देशोऽस्ति?

- (a) जयग्रन्थस्य (b) भारतग्रन्थस्य
(c) महाभारतग्रन्थस्य (d) विजयग्रन्थस्य

Ans. (a) : महाभारतस्य मंगलश्लोक 'जयग्रन्थस्य' निर्देशोऽस्ति। महाभारत का मंगलश्लोक 'जयग्रन्थ' में निर्देशित है।

महाभारत का मूल रूप 'जय' के नाम से प्रसिद्ध था।

'जयोनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा।' - महाभारत (1/62/20)

महाभारत के मंगल श्लोक में भी स्पष्ट उल्लेख है-

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था। व्यास ने इसे वैशम्पायन को सुनाया था। इसमें 8800 श्लोक थे।

महाभारत का क्रम- जय → भारत → महाभारत। द्वितीया अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ। इसमें 24000 श्लोक थे। भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने व्यास के आदेश पर जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था। अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ बना। भारत वर्ष का विश्वकोष 'महाभारत' है। भारत को महाभारत के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर होने वाला यज्ञ था।

महाभारत की रचना कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने की। यह अट्टारह पर्वों में विभक्त है। इसे 'शत-साहस्री संहिता' भी कहते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. “यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः” इति केनोपदिष्टम्?

- (a) चन्द्रापीडेन (b) तारापीडेन
(c) महाश्वेतया (d) शुकनासेन

Ans. (d) : “यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः” इति ‘शुकनासेन’ उपदिष्टम्। अर्थात् युवावस्था के आरम्भ में शास्त्रजल के प्रक्षालन के पश्चात् भी ‘बुद्धि’ कलुषता को प्राप्त करती है। यह उपदेश शुकनास ने दिया। ‘शुकनासोपदेश’ कादम्बरी का ही एक अंश है। कादम्बरी की रचना बाणभट्ट ने की। यह दो भागों में विभक्त है पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध। चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मन्त्री ‘शुकनास’ चन्द्रापीड को उपदेश देता है।
⇒ जिस प्रकार जल के कारण कसैले पदार्थ मीठा स्वाद देते हैं उसी प्रकार युवावस्था के कारण विषय में अनुरक्ति मधुर प्रतीत होती है।
⇒ शुकनास ने चन्द्रापीड के लिए ‘तात’ शब्द का प्रयोग किया।
⇒ शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।
⇒ लक्ष्मी से उत्पन्न मद दारुण होता है तथा वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता।
⇒ शुकनास कहता है कि- (i) जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य (ii) नयी युवावस्था (iii) अनुपम सौन्दर्य (iv) अलौकिक शक्ति ये चारों अनर्थ की परम्पराएँ हैं।

8. कौटिलीयमते लुब्धवर्गस्य के द्वे लक्षणे –

- A. मानकामः B. आत्मसंभावितः
C. व्यसनी D. अत्याहितव्यवहारः
समुचितं विकल्पं चिनुत –
(a) A एवं B (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) C एवं D

Ans. (d) : कौटिलीयमते लुब्धवर्गस्य ‘व्यसनी, अत्याहितव्यवहारः’ द्वे लक्षणे। परीक्षीणोऽत्यात्तस्वः कदर्यो व्यसन्यत्याहितव्यवहारश्चेति लुब्धवर्गः। जिसका सब धन-वैभव नष्ट हो गया, जो कायर, व्यसनी और अपव्ययी हो, वह ‘लुब्धवर्ग’ कहलाता है।
कुद्धवर्ग—जिसकी स्त्री को जबरजस्ती छीन लिया गया हो, जिसको जेल में ठूस दिया गया हो, दूसरे के कहने मात्र से जिसको दण्ड दिया गया हो, जिसके बन्धु-बान्धव को देश निकाला कर दिया गया हो वे इस प्रकार के सभी वर्ग ‘कुद्धवर्ग’ कहलाते हैं।
मानीवर्ग—अपने को महान् समझने वाला, आत्मश्लाघी, शत्रु के सम्मान को सहन न करने वाला, नीच लोगों द्वारा प्रशंसित, तीक्ष्णप्रकृति, साहसी और भोग्य-पदार्थों से कभी सन्तुष्ट न होने वाला वर्ग ही ‘मानीवर्ग’ कहलाता है।

9. अत्र कथनद्वये (A) इत्यभिकथनम् (R) इति च कारणम् अभिकथनम् (A) : पाणिनीय अष्टाध्याया आदौ चतुर्दशसूत्रेषु वर्णोपदेशः विद्यते

कारणम् (R) : वृत्तिसमवायार्थः - अनुबन्धकरणार्थः - इष्टबुद्धर्थश्च

समुचितं विकल्पं चिनुतः

- (a) (A) इति - अभिकथनम् तथा च (R) इति कारणम् उभयं सत्यम्
(b) (A) इति अभिकथनम् असत्यम् (R) इति कारणम् सत्यम्
(c) (A) इति अभिकथनम् तथा च (R) इति कारणम् उभयम् असत्यम्
(d) (A) इति अभिकथनम् सत्यम् (R) इति कारणम् असत्यम्

Ans. (a) : अभिकथनम् (A) : पाणिनीय अष्टाध्याया आदौ चतुर्दशसूत्रेषु वर्णोपदेशः विद्यते।

कारणम् (R) : वृत्तिसमवायार्थः - अनुबन्धकरणार्थः - इष्टबुद्धर्थश्च समुचितं विकल्पं अस्ति।

(A) इति - अभिकथनम् तथा च (R) इति कारणम् उभयं सत्यम्

10. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका-I

तालिका-II

- A. भारविः I. सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति
B. माघः II. गुरुपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्
C. कालिदासः III. सहसा विदधीत न क्रियाम्
D. बाणभट्टः IV. ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-III, B-I, C-II, D-IV
(c) A-III, B-IV, C-I, D-II
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

Ans. (c) : सुमेलित तालिका है-

- A. भारविः III. सहसा विदधीत न क्रियाम्
B. माघः IV. ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः
C. कालिदासः I. सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति
D. बाणभट्टः II. गुरुपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्
अतः विकल्प (c) A-III, B-IV, C-I, D-II सही है।

11. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका-I	तालिका-II
A. तथायुक्तं चानीप्सितम्	I. अनु हरिं सुराः
B. हीने	II. गोषु दुह्यमानासु गतः
C. कर्तुर्कर्मणोः कृति	III. ग्रामं गच्छन्तृणं स्पृशति
D. यस्य च भावेन भावलक्षणम्	IV. जगतः कर्ता कृष्णः

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A-I, B-III, C-IV, D-II
(b) A-II, B-IV, C-III, D-I
(c) A-III, B-I, C-IV, D-II
(d) A-IV, B-I, C-III, D-II

Ans. (c) : सुमेलित तालिका है-

तालिका - I	तालिका - II
A. तथायुक्तं चानीप्सितम्	I. ग्रामं गच्छन्तृणं स्पृशति
B. हीने	II. अनु हरिं सुराः
C. कर्तुर्कर्मणोः कृति	III. जगतः कर्ता कृष्णः
D. यस्य च भावेन भावलक्षणम्	IV. गोषु दुह्यमानासु गतः
अतः विकल्प (C) A-III, B-I, C-IV, D-II सही है।	

12. शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डस्य विषयौ कौ?

- A. अग्निहोत्रम् B. सोमयागः
C. राजसूयः D. पिण्डपितृयज्ञः
(a) A एवं C (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) C एवं D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डस्य विषयौ 'अग्निहोत्रम्, पिण्डपितृयज्ञः'। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ड का विषय अग्निहोत्र, पिण्डपितृयज्ञ है। शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण-शतपथ ब्राह्मण है। इसके रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। वाजसनि के पुत्र होने से इन्हें 'वाजसनेय' भी कहा जाता है। सूर्य की कृपा से प्राप्त शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या वाजसनेय याज्ञवल्क्य ने की। माध्यन्दिन (शुक्लयजुर्वेदीय) शतपथ ब्राह्मण में 14 काण्ड, 100 अध्याय, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकाएँ हैं। काण्व शतपथ ब्राह्मण में माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण से कुछ क्रम-विन्यास में अन्तर है। इसमें 17 काण्ड, 104 अध्याय, 435 ब्राह्मण और 6806 कण्डिकाएँ हैं।

13. एते महाकविकालिदासप्रणीते महाकाव्ये स्तः

- A. रघुवंशम् B. मेघदूतम्
C. अभिज्ञान शाकुन्तलम् D. कुमार सम्भवम्
समुचितं विकल्पं चिनुत –
(a) A एवं B (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) B एवं D

Ans. (b) : एते महाकविकालिदासप्रणीते 'रघुवंशम्', कुमार सम्भवम् महाकाव्ये स्तः। इसमें महाकवि कालिदास प्रणीत महाकाव्य रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् है। रघुवंशम् महाकवि कालिदास की रचना है। यह उन्नीस सर्गों में विभक्त है। यह वीर रस प्रधानकाव्य है। इसमें वैदर्भी रीति का प्रयोग हुआ है। रघुवंश में आकर्षक चरित्र-चित्रण विशद एवं रुचिर वर्णन, प्रौढ़ प्रतिभा, सुन्दर रस व्यञ्जना, सरल अलंकृत शैली का मणिकाञ्चन संयोग। इसका मूलस्रोत- वाल्मीकि रामायण है। रघुवंश के उन्नीस सर्गों में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के 29 राजाओं का वर्णन। मनु तथा इक्ष्वाकु सहित कुल 31 राजाओं का वर्णन है। कुमारसम्भव सत्रह सर्गों में विभक्त महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना है। इसमें शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म तथा उसके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है। कुमारसम्भव में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है। शिव पार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य शृङ्गारमय है। मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
⇒ 'मेघदूतम्' महाकवि कालिदास का दो भागों में विभक्त खण्डकाव्य है।
⇒ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' सात अंकों में विभक्त कालिदास का अद्वितीय नाटक है।

14. अनैकान्तिकहेत्वाभासस्य कौ द्वौ प्रकारौ वर्तते तर्कभाषायाम्

- A. साधारणः B. सत्प्रतिपक्षः
C. असाधारणः D. आश्रयासिद्धः
समुचितं विकल्पं चिनुत –
(a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (b) : अनैकान्तिकहेत्वाभासस्य 'साधारणः' 'असाधारणः' एतौ द्वौ प्रकारौ वर्तते तर्कभाषायाम्। तर्कभाषा में अनैकान्तिक हेत्वाभास साधारण, असाधारण दो प्रकार के हैं। सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः। सः द्विविधः साधारणानैकान्तिकोऽसाधारणानैकान्तिकश्चेति। सव्यभिचार हेतु अनैकान्तिक (हेत्वाभास) कहलाता है। वह दो प्रकार का है-
(क) साधारण अनैकान्तिक
(ख) असाधारण अनैकान्तिक
(क) साधारण अनैकान्तिक-उनमें से पक्ष, सपक्ष तथा विपक्ष में रहने वाला साधारण अनैकान्तिक है। जैसे- शब्द नित्य है (प्रतिज्ञा), क्योंकि वह प्रमेय है (हेतु), आकाश के समान।

उदा.- यहाँ प्रमेयत्व हेतु है जो नित्य (पक्ष या सपक्ष) एवं अनित्य (विपक्ष) दोनों में रहता है।

(ख) जो सपक्ष तथा विपक्ष (दोनों) से व्यावृत्त होकर केवल पक्ष में ही रहता है वह असाधारण अनैकान्तिक (हेत्वाभास) है। जैसे- भूमि नित्य है (प्रतिज्ञा), क्योंकि यह गन्ध वाली है (हेतु)। यहाँ गन्धत्व (हेतु दिया गया) है वह सपक्ष = नित्य से तथा विपक्ष = अनित्य से व्यावृत्त है जो केवल पृथ्वी में रहता है।

15. 'उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य तत्' इति वचनं वर्तते

- (a) आनन्दवर्धनस्य (b) क्षेमेन्द्रस्य
(c) भामहस्य (d) विश्वनाथस्य

Ans. (b) : 'उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य तत्' इति वचनं क्षेमेन्द्रस्य वर्तते। औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य क्षेमेन्द्र माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का 'जीविततत्त्व' कहा है। 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम् ।' आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, "उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्। उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥"

(औचित्यविचार चर्चा)

अर्थात् जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है। यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व है।

'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

आनन्दवर्धन- 'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'

भामह- भामह अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं 'काव्यालङ्कार' इनका अलङ्कार ग्रन्थ है। रसवद्दर्शितस्पष्टशृङ्गारादिरसं यथा।

विश्वनाथ- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।'

16. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका – I	तालिका – II
A. त्रिविक्रमभट्टः	I. मृच्छकटिकम्
B. भट्टनारायणः	II. मुद्राराक्षसम्
C. विशाखदत्तः	III. वेणीसंहारम्
D. शूद्रकः	IV. नलचम्पू

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III, B-II, C-I, D-IV
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

Ans. (d) : सुमेलित है-

तालिका – I	तालिका – II
A. त्रिविक्रमभट्टः	I. नलचम्पू
B. भट्टनारायणः	II. वेणीसंहारम्
C. विशाखदत्तः	III. मुद्राराक्षसम्
D. शूद्रकः	IV. मृच्छकटिकम्

अतः विकल्प (d) A-IV, B-III, C-II, D-I सही है।

17. महाभाष्यानुसारं कयोर्द्वयोरुचितः सम्बन्धोऽस्ति?

- A. दुष्टः शब्दः B. गुणो नाम सः
C. कर्मण्यण् D. विभक्तिं कुर्वन्ति

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) A एवं D (d) B एवं D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (c) : महाभाष्यानुसारं 'दुष्टः शब्दः, विभक्तिं कुर्वन्ति' एतयोर्द्वयोरुचितः सम्बन्धोऽस्ति अस्ति।

दुष्टः शब्दः-

“दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधाद् ॥”
विभक्तिं कुर्वन्ति-यज्ञिकाः पठन्ति- “प्रयाजाः- सविभक्तिकाः कार्याः”
इति। न चान्तरेण व्याकरणं प्रयाजा सविभक्तिकाः शक्याः कर्तुम्
विभक्तिं कुर्वन्ति।

18. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. संस्कृत भाषा	I. शिलष्ट वियोगात्मक
B. हिन्दी भाषा	II. अशिलष्ट मध्ययोगात्मक
C. तिब्बती भाषा	III. अयोगात्मक
D. सन्थाली भाषा	IV. शिलष्ट संयोगात्मक

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-II, B-IV, C-III, D-I
(c) A-III, B-II, C-IV, D-I
(d) A-IV, B-I, C-III, D-II

Ans. (d) : सुमेलित है-

तालिका - I	तालिका - II
A. संस्कृत भाषा	I. शिलष्ट संयोगात्मक
B. हिन्दी भाषा	II. शिलष्ट वियोगात्मक
C. तिब्बती भाषा	III. अयोगात्मक
D. सन्थाली भाषा	IV. अशिलष्ट मध्ययोगात्मक

19. अधोलिखितानां रामायणस्य विषयवस्तूनाम् समुचितः क्रमोऽस्ति

- A. ताडकावधः B. दशरथेन यज्ञानुष्ठानम्
C. मिथिला - प्रस्थानम् D. रामजन्म
E. रामद्वारा धनुर्भङ्गः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A, B, C, D, E (b) A, B, D, C, E
(c) B, C, D, A, E (d) B, D, A, C, E

Ans. (d) : अधोलिखितानां रामायणस्य विषयवस्तूनाम् समुचितः क्रमः अस्ति।

दशरथेन यज्ञानुष्ठानम्, रामजन्म, ताडकावधः, मिथिला - प्रस्थानम्, रामद्वारा धनुर्भङ्गः।

रामायण महर्षि वाल्मीकि की रचना है। यह सात काण्डों में विभक्त है। इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहते हैं। रामायण में मुख्यतः 'अनुष्टुप्' छन्द का प्रयोग हुआ है। ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे 'आर्षकाव्य' भी कहा जाता है। ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा।

‘न ते वागनुताकाव्ये काचिदत्र भविष्यति।

कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमा॥’

यह सनातन काव्य बीज होने से परवर्ती काव्यों का उपजीव्य है। 'काव्यबीज' सनातनम्।

रामायण का महत्व एक शास्त्रीय ग्रन्थ के रूप में भी अङ्गीकार किया जा सकता है। कथाओं के मध्य-मध्य में धर्मशास्त्रीय, नीति शास्त्रीय तथा राजनीति विषयक श्लोक आये हैं। जिनमें शास्त्रीयता दृष्टिगत होती है।

20. संस्कृत व्याकरणानुसारं 'भवति' इत्यस्य का सञ्ज्ञा भवति?

- (a) निष्ठा (b) पदम्
(c) भ (d) सर्वनामस्थानम्

Ans. (b) : संस्कृत व्याकरणानुसारं 'भवति' इत्यस्य पदम् सञ्ज्ञा भवति। संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'भवति' की पद संज्ञा होती है।

पद- 'सुप्तिङन्तं पदम् अर्थात् सुप् - प्रत्ययान्त और तिङ् - प्रत्ययान्त शब्दों की पद-सञ्ज्ञा होती है।'

सुप् (प्रत्याहार) प्रातिपदिक (नामविहित) संज्ञक विभक्ति प्रत्यय (स्वोऽसमौट) से विहित 21 'सु', 'औ', 'जस्' आदि। तिङ् (प्रत्याहार) धातु से विहित विभक्ति प्रत्यय- 'तिप्, तस्, झि' आदि 18 प्रत्यय।

भवति = भू + तिप्

निष्ठा संज्ञा ⇒ क्तवतवतू निष्ठा।

भ संज्ञा ⇒ यचिभम्

सर्वनामस्थानम् - सुडनपुंसकस्य, शि सर्वनामस्थानम्।

21. ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्तसंज्ञोऽस्ति?

- (a) अनुनासिकः (b) जिह्वामूलीयः
(c) सन्ध्यक्षरः (d) संयोगः

Ans. (a) : ऋग्वेदप्रातिशाख्यानुसारं रक्तसंज्ञः अनुनासिकः अस्ति। 'ऋक् प्रातिशाख्य' ऋग्वेद का एकमात्र उपलब्ध प्रातिशाख्य है। इसके रचयिता शौनक हैं। ऋग्वेद प्रातिशाख्य तीन अध्यायों में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय में 6 पटल हैं, कुल 18 पटल हैं। ऋग्वेदप्रातिशाख्य के अनुसार 'अनुनासिक' रक्तसंज्ञक है।

22. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. शैव	I. अग्निपुराणम्
B. वैष्णव	II. पद्मपुराणम्
C. ब्राह्म	III. मार्कण्डेयपुराणम्
D. आग्नेय	IV. गरुडपुराणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-III, C-II, D-IV
(b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A-III, B-IV, C-II, D-I
(d) A-IV, B-II, C-I, D-III

Ans. (c) : सुमिलित तालिका है-

तालिका-I	तालिका-II
A. शैव	I. मार्कण्डेयपुराणम्
B. वैष्णव	II. गरुडपुराणम्
C. ब्राह्म	III. पद्मपुराणम्
D. आग्नेय	IV. अग्निपुराणम्

अतः विकल्प (c) A-III, B-IV, C-II, D-I सही है।

23. अस्मिन् श्लोके अलंकार - छन्दसोः स्थितिरियम् वर्तते श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम् स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः

- A. उपमा B. वृत्त्यानुप्रासः
C. मालिनी D. वंशस्थम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : अस्मिन् श्लोके वृत्त्यानुप्रासः अलंकारः - वंशस्थम् छन्दसोः स्थितिरियम् वर्तते। 'श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।' इस श्लोक में वृत्त्यानुप्रास अलङ्कार और वंशस्थ छन्द है।

वृत्त्यानुप्रास अलङ्कार-आवृत्तवर्ण सम्पूर्णवृत्त्यानुप्रासवदवचः।

अमन्दानन्द सन्दोहस्वच्छन्दास्पदमन्दिरम् ॥

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

आवृत्त (दुहरायेगये) वर्णों (व्यञ्जनों) से भरी हुई तथा अमन्द-अत्यधिक आनन्द के समूह की स्वतंत्र स्थिति की निधान-भूत रचना वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार से युक्त होती है।
वंशस्थ छन्द—‘जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।’ वंशस्थ के प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं। क्रमशः 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण, 1 रगण।

24. अधोऽङ्कितेषु भाषाविज्ञानानुसारं अर्धस्वरौ स्तः

- A. अ B. य
C. इ D. व्

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A एवं C (b) A एवं D
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : अधोऽङ्कितेषु भाषाविज्ञानानुसारम् अर्धस्वरौ य, व् स्तः। भाषा विज्ञान के अनुसार अर्धस्वर य, व् हैं। स्वर और व्यञ्जन के बीच में कुछ और ध्वनियाँ हैं, जिनको हम अर्ध-स्वर कहते हैं। संस्कृत में इनको अन्तस्थ कहा जाता है। अन्तस्थ का अभिप्राय यह है कि ये ध्वनियाँ न तो स्वर की तरह पूर्णतया अवरोध रहित हैं और न व्यञ्जन की तरह पूर्णतया अवरुद्ध। ये ध्वनियाँ य, व् हैं।

25. अधोऽङ्कितेषु कयोर्द्वयोः सम्बन्धोऽस्ति?

- A. बभूवे B. नेर्विशः
C. समवप्रविभ्यः स्थः D. भावकर्मणोः

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) A एवं D (d) B एवं C

Ans. (c) : अधोऽङ्कितेषु ‘बभूवे, भावकर्मणोः एतयोः द्वयोः’ सम्बन्धोऽस्ति।
भाव-कर्मणोः। तस्यात्मनेपदम् ॥
भाव और कर्म में हुए लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय है। भाववाच्य और कर्मवाच्य में परस्मैपद का नितान्त अभाव होता है। धातु चाहे परस्मैपदी हो या आत्मनेपदी अथवा उभयपदी भी क्यों न हो, भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद का ही प्रयोग होगा, परस्मैपद का नहीं।

26. योगदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु वृत्तिर्वर्तते

- (a) अहिंसा (b) निद्रा
(c) ब्रह्मचर्यम् (d) हिंसा

Ans. (b) : योगदर्शनानुसारमधोऽङ्कितेषु ‘निद्रा’ वृत्तिर्वर्तते। योगदर्शन के प्रणेता ‘महर्षि पतञ्जलि’ हैं। योगदर्शन का आधार योग सूत्र है। योगदर्शन का पहला सूत्र ‘अथ योगानुशासनम्’ है। इसमें चित्त-वृत्तियों की संख्या 5 है—

प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति।

निद्रा— ‘अभाव प्रत्यालम्बना वृत्तिर्निद्रा।’ (1/10)

जाग्रत तथा स्वप्नावस्था की वृत्तियों के अभाव के कारणभूत तमोगुण को विषय बनाने वाली वृत्ति निद्रा कही जाती है।

27. योगदर्शनानुसारं ‘संयमः’ इत्यनेन कस्य निर्देशः ?

- (a) अहिंसा - सत्य - अस्तेयानि
(b) धारणा - ध्यान - समाधयः
(c) यम - नियम - प्रत्याहारः
(d) शौच - संतोष - तपांसि

Ans. (b) : योगदर्शनानुसारं ‘संयमः’ इत्यनेन ‘धारणा - ध्यान - समाधयः’। संयम- ये धारणा, ध्यान और समाधि तीनों एकत्र अर्थात् एक ही आलम्बनगत होने पर संयम कहे जाते हैं।

‘त्रयमेकत्र संयमः’ (3/4)

अन्तरङ्ग साधन-यमादि साधनों की अपेक्षा वे धारणा, ध्यान और समाधि सम्प्रज्ञात समाधि के लिये अन्तरङ्ग माने जाते हैं। त्रयमन्तरङ्ग

पूर्वेभ्यः (3/7) संयम भी निर्बीजसमाधि के लिए बहिरङ्ग ही है। ‘तदपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य’ (3/8)
तीनों परिणामों में संयम करने से योगी को अतीत तथा अनागत का साक्षात्कार होता है।

परिणामत्रय संयमादतीतानागतज्ञानम् (3/16)

सूर्य में किये गये संयम में समस्त भुवनों का ज्ञान होता है।

‘भुवनज्ञानं सूर्ये संयमाद् (3/26)

28. ‘यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः’

इदं वचनं कस्मिन् काव्ये विलसति?

- (a) उत्तररामचरिते (b) किरातार्जुनीये
(c) बुद्धचरिते (d) मुद्राराक्षसे

Ans. (c) : ‘यथा हिरण्यं शुचिधातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः’ इदं वचनं ‘बुद्धचरिते’ काव्ये विलसति। यह कथन ‘बुद्धचरितम्’ से है। बुद्धचरितम् अश्वघोष की रचना है। यह एक महाकाव्य है। इसमें बुद्ध का जीवन चरित तथा उनके सिद्धान्त वर्णित हैं। इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। इस महाकाव्य में मूल रूप से 28 सर्ग हैं।

यथा हिरण्यं शुचि धातुमध्ये मेरुर्गिरीणां सरसां समुद्रः।

तारासु चन्द्रस्तपतां च सूर्यः पुत्रस्तथा ते द्विपदेषु वर्यः॥

अर्थात् जिस प्रकार धातुओं में शुद्ध वर्ण, पर्वत में सुमेरु, जलाशयों में समुद्र, ताराओं में चन्द्रमा तथा अग्नियों में सूर्य श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार मनुष्यों में आपका पुत्र श्रेष्ठ है।

29. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम्

(A) अपरञ्च तस्य कारण (R) इति -

अभिकथनम् (A) : वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां तथैव जडे, न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।

भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद् यथा,

कारणम् (R) : प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः॥

उपर्युक्तं अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) (A) इति सत्यं परं (R) इति असत्यम्
(b) (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्
(c) (A) तथा (R) उभावपि सत्यम्
(d) (A) तथा (R) उभावपि सत्यम् परं (A) इत्यस्य (R) समुचितं कारणं नास्ति

Ans. (c) : कथनद्वयम् अधोलिखितम्- तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च तस्य कारण (R) इति -

अभिकथनम् (A) : वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां तथैव जडे, न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा। भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद् यथा गुरु तीव्र बुद्धि एवं मंद बुद्धि वाले दोनों तरह के छात्रों को एक समान शिक्षा प्रदान करता है। दोनों में से किसी को न अलग से समझने की सामर्थ्य प्रदान करता है और न ही किसी के बोध शक्ति को नष्ट ही करता है। ऐसा होने पर भी परिणाम में बहुत भिन्नता होती है, जैसे कि हिरा

कारण (R) : प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः॥

(उत्तररामचरितम्)

स्फटिक मणि आदि सभी प्रतिबिम्ब ग्रहण करने में समर्थ होते हैं किन्तु मिट्टी आदि पदार्थ प्रतिबिम्ब धारण नहीं कर सकते। (A) तथा (R) उभावपि सत्यम् अर्थात् (A) तथा (R) दोनों सत्य हैं।

30. सामवेदस्य ब्राह्मणग्रन्थौ कौ स्तः?

- A. ऐतरेय - ब्राह्मणम् B. पञ्चविंश - ब्राह्मणम्
C. शांखायन - ब्राह्मणम् D. वंश ब्राह्मणम्
(a) A एवं B (b) B एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (c) : सामवेदस्य ब्राह्मणग्रन्थौ एतौ द्वौ पञ्चविंश, वंश ब्राह्मण स्तः। पञ्चविंश और वंश सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। सामवेद में कुल 8 ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं- ताण्ड्य (पञ्चविंश), षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, दैवत, उपनिषद्, संहितोपनिषद्, वंश।

नोट:-

- (1) **ताण्ड्य ब्राह्मण**— इसे (पञ्चविंश) भी कहते हैं। इसमें कुल 25 अध्याय हैं। इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय सोमयाग है।
 (2) **ताण्ड्य ब्राह्मण**— यह सबसे छोटा ब्राह्मण ग्रन्थ है। इसमें 3 खण्ड हैं। स्वयंभू ब्रह्म से सामवेद की परम्परा का आरम्भ माना जाता है।

31. **सदानन्दप्रणीते वेदान्तसारे 'तत्त्वमसि' अत्र अखण्डार्थबोधकेषु त्रिषु सम्बन्धेषु अयं नास्ति**
 (a) अयुतसिद्धसम्बन्धः
 (b) पदयोः सामानाधिकरण्यम्
 (c) पदार्थयोर्विशेषणविशेष्यभावः
 (d) प्रत्यगात्मलक्षणयोलक्ष्यलक्षणभावः

Ans. (a) : सदानन्दप्रणीते वेदान्तसारे 'तत्त्वमसि' अत्र अखण्डार्थ-बोधकेषु त्रिषु सम्बन्धेषु 'अयुतसिद्धसम्बन्धः' नास्ति। तत्त्वमसि इस महावाक्य का अर्थ है- वह ब्रह्म तुम्ही हो। सृष्टि के जन्म से पूर्व, द्वैत के अस्तित्व से रहित, नाम और रूप से रहित एक मात्र सत्य-स्वरूप, अद्वितीय ब्रह्म ही था। वही ब्रह्म आज भी विद्यमान है। उसी ब्रह्म को 'तत्त्वमसि' कहा गया है। वह शरीर और इन्द्रियों में रहते हुए भी, उनसे परे है। आत्मा में इसका अंश मात्र उसी से उसका अनुभव होता है, किन्तु वह अंश परमात्मा नहीं है। वह उससे दूर है। वह सम्पूर्ण जगत् में प्रतिभासित होते हुए भी उससे दूर है।

32. **सरविलियमजोन्समहोदयः ब्राह्मीलिप्योत्पत्तिः मन्यते**
 (a) फिनिशियनतः सेबूअन् (हिमिअरेटिक) लिपितः
 (b) फिनिशियनलिपेः अरमाइक - अक्षरेभ्यः
 (c) फिनिशियनलिपितः मिसराक्षरेभ्यः वा
 (d) सेमेटिकलिपितः

Ans. (d) : सरविलियमजोन्समहोदयः ब्राह्मीलिप्योत्पत्तिः 'सेमेटिकलिपितः' मन्यते। ब्राह्मी लिपि की सेमेटिक उत्पत्ति का सिद्धान्त विलियम जोन्स इस सिद्धान्त के मुख्य प्रस्तुत करता है। ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति के विषय में अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किये गए हैं। इन सिद्धान्तों को दो मुख्य धाराओं में विभक्त किया जा सकता है।

- (1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त (2) वृद्ध भारत की स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त। विदेशी उत्पत्ति के सिद्धान्त को मानने वाले पुनः दो भागों में विभक्त है।
 (क) यूनानी मूल से ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति-इस सिद्धान्त के पोषक अल्फ्रेडम्यूलर हैं।
 (ख) ब्राह्मी लिपि की सेमेटिक उत्पत्ति का सिद्धान्त जोन्स के द्वारा प्रस्तुत किया गया इसे भी तीन भागों में विभक्त किया है।
 (1) फिनीशियन मूल (2) दक्षिण सेमेटिक मूल
 (3) उत्तर सेमेटिक मूल

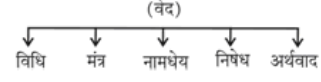
33. **अर्थसंग्रहे कतिधा वेद उच्यते**

- (a) अष्टविधः (b) चतुर्विधः
 (c) दशविधः (d) पञ्चविधः

Ans. (d) : अर्थसंग्रहे 'पञ्चविधः' वेद उच्यते। लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह में वेद के पञ्चविध का वर्णन किया गया है। जो निम्नवत् हैं।

वेद का लक्षण- अपौरुषेयं वाक्यं वेदः।
 (अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं।)

स च विधि-मंत्र-नामधेय-निषेधार्थवाद-भेदात्पञ्चविधः



34. **'हर्षचरितम्' इत्यस्य रचनाकारः वर्तते**

- (a) बाणभट्टः (b) भारविः
 (c) श्रीहर्षः (d) हर्षदेवः

Ans. (a) : 'हर्षचरितम्' बाणभट्टः रचनाकारः वर्तते। हर्षचरितं के रचनाकार बाणभट्ट हैं। इसमें भारतीय सम्राट हर्षवर्धन का जीवन चरित वर्णित है। ऐतिहासिक कथानक से सम्बन्धित यह संस्कृत का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। 'हर्षचरितम्' आठ उच्छ्वासों में विभाजित है। जिसमें से पहले ढाई उच्छ्वास बाण की आत्मकथा रूप में है।

35. **अधोऽङ्कितान् वैयाकरणान् कालक्रमेण प्रदर्शयत**

- A. कात्यायनः B. नागेशभट्टः
 C. कैयटः D. पाणिनिः
 E. भर्तृहरिः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) D, A, B, C, E (b) D, A, E, B, C
 (c) D, E, B, C, A (d) D, E, C, B, A

Ans. (b) : पाणिनिः, कात्यायनः, भर्तृहरिः नागेशभट्टः, कैयटः वैयाकरणान् कालक्रमेण प्रदर्शयत-कालक्रम की दृष्टि से वैयाकरणों के नाम- (पाणिनी-450 ई.पू.), (कात्यायन-350 ई.पू.), (भर्तृहरि- सातवीं शती ई. पूर्वाब्द), (नागेशभट्ट 1730 -1810 ई.पू.), (कैयट 18वीं शताब्दी) प्राप्त होता है। जो कि इनका व्यवस्थित कालक्रम है।

36. **अर्थसंग्रहानुसारं देशसामान्यं स्थानम्, तच्च द्विविधं, किं तत् ?**

- A. पाठसादेश्यम् B. अनुष्ठानसादेश्यम्
 C. यथासंख्यसादेश्यम् D. मीमांसासादेश्यम्

समुचितं विकल्पं चिनुत

- (a) A एवं B (b) A एवं C
 (c) B एवं C (d) C एवं D

Ans. (a) : अर्थसंग्रहानुसारं देशसामान्यं स्थानम्, तच्च द्विविधं, 'पाठसादेश्यम्, अनुष्ठानसादेश्यम्' तत्। लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह में देश सामान्य के स्थान को दो प्रकार के रूप में दिखाया गया है- (1) पाठसादेश्यम् (2) अनुष्ठानसादेश्यम् स्थानम् - देशसामान्यं स्थानम्। तद् द्विविधं पाठसादेश्यं अनुष्ठानसादेश्यं चेति। स्थानं क्रमश्चेत्यनन्तरं पाठसादेश्यमपि द्विविधम्, यथासंख्यापाठः सन्निधिपाठश्चेति।

(1) **पाठसादेश्यम्** - तत्र ऐन्द्राग्नमेकादशकपालं निर्वपेत्। वैश्वानरं द्वादशकपालं निर्वपेत् इत्येवं क्रमविहितेषु 'इन्द्राग्नी रोचना दिव' इत्यादीनां याज्यानुवाक्यामन्त्राणां यथासंख्यं प्रथमस्य प्रथमं द्वितीयस्य द्वितीयम् इत्येवं रूपो विनियोगो यथासंख्यापाठात्।

(2) **अनुष्ठानसादेश्यम्** - पशुधर्माणाम् अग्नीषोमीयार्थत्वम् अनुष्ठानसादेश्यात् औपवसथ्येऽहनि अग्नीषोमीयः पशुः अनुष्ठीयते तस्मिन्नेव दिने ते धर्माः पठ्यन्ते। अतस्तेषां कैमर्थ्याकाङ्क्षायाम् अनुष्ठेयत्वेन उपस्थितं पशुपूर्वमेव भाव्यत्वेन सम्बध्यते।

37. **सर्वप्राचीन रचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत -**

- A. किरातार्जुनीयम् B. कुमारसंभवम्
 C. नैषधीयचरितम् D. रामायणम्
 E. स्वप्नवासवदत्तम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A, B, C, D, E (b) A, B, C, E, D
 (c) B, C, D, A, E (d) D, E, B, A, C

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (d) : सर्वप्राचीन रचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारं रामायण, स्वप्नवासवदत्तम्, कुमारसंभवम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम् उत्तरं अस्ति। सर्वप्राचीन रचना प्रथम दृष्टि में कालक्रमानुसार-रामायण, स्वप्नवासवदत्तम्, कुमारसंभवम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्

रचनाएँ—

(1) वाल्मीकि कृत रामायण (2) भास कृत स्वप्नवासवदत्तम्
(3) कालिदास कृत कुमारसंभवम् (4) भारवि कृत किरातार्जुनीयम्
(5) श्रीहर्ष कृत नैषधीयचरितम्

38. सांख्यकारिकायां 'संघात परार्थत्वात्' अनेन हेतुना साध्यते

- (a) अव्यक्तम् (b) अहङ्कारः
(c) पुरुषः (d) महत्

Ans. (c) : सांख्यकारिकायां 'संघात परार्थत्वात्' अनेन हेतुना पुरुषः साध्यते। संघातो का दूसरे के लिए होना त्रिगुणत्व इत्यादि का अभाव होना, सभी त्रिगुणात्मक वस्तुओं के लिए (चेतन) अधिष्ठाता एवं भोक्ता की अपेक्षा होने एवं कैवल्य या मोक्ष के लिये प्रवृत्ति होने के कारण पुरुष की पृथक् सत्ता सिद्ध होती है। अव्यक्त इत्यादि से पृथक् पुरुष की सत्ता है, क्योंकि सभी संघात (वस्तु-समुदाय) किसी दूसरे के लिए होते हैं, अव्यक्त, महत् और अहङ्कार इत्यादि संघात होने के कारण दूसरे के लिये हैं, जैसे- शयन, आसन-इत्यादि।

39. तत्पुरुषसमासस्य उदाहरणानीमानि विभक्तिक्रमेण प्रदर्शयत

- A. धान्यार्थः B. राजपुरुषः
C. सुखप्राप्तः D. चोरभयम्
E. यूपदारु

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A, D, B, E, C (b) A, D, C, B, E
(c) C, A, B, D, E (d) C, A, E, D, B

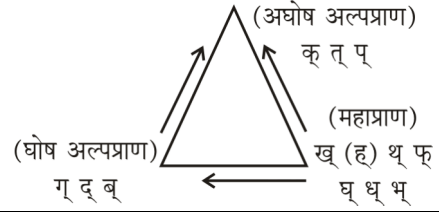
Ans. (d) : तत्पुरुषसमासस्य उदाहरणानीमानि विभक्तिक्रमेण-
सुखप्राप्तः = सुखं प्राप्तः द्वितीया
धान्यार्थः = धान्येन अर्थः तृतीया तत्पुरुष
यूपदारु = यूपाय दारु चतुर्थी तत्पुरुष
चोरभयम् = चोरात् भयम् पञ्चमी तत्पुरुष
राजपुरुषः = राज्ञः पुरुषः षष्ठी तत्पुरुष
उपर्युक्त सभी उदाहरण तत्पुरुष के हैं जो कि विभक्ति के क्रम में दर्शाया गया है।

40. ग्रिमस्य नियमानुसारं ग्, द्, ब् (घोष अल्प प्राण) ध्वनीनां परिवर्तनक्रमः कः?

- (a) ग् → क् ; द् → थ् ; ब् → फ्
(b) ग् → क् ; द् → त् ; ब् → प्
(c) ग् → ख् ; द् → थ् ; ब् → फ्
(d) ग् → घ् ; द् → ध् ; ब् → भ्

Ans. (b) : ग्रिमस्य नियमानुसारं ग्, द्, ब् (घोष अल्प प्राण) ध्वनीनां परिवर्तनक्रमः ग् → क् ; द् → त् ; ब् → प्। ग्रिम, ग्रसमान और वर्नर नियम मूल भारोपीय भाषा से सम्बद्ध हैं। इन नियमों के मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन का वर्णन है।
ग्रिम नियम—यह ध्वनि नियम प्रो. याकोब ग्रिम (1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को 'ध्वनि-परिवर्तन' का नाम दिया गया था। प्रो. मैक्समूलर ने इसे (ग्रिम नियम) नाम दिया है।
ग्रिम नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं।
(प्रथम को द्वितीय 1 को 2) क्रमशः क् त् प् को ह् (ख), थ् फ्।
(चतुर्थ को तृतीय 4 को 3) क्रमशः घ् ध् भ् को ग् द् ब्।
(तृतीय को प्रथम 3 को 1) क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प्।

वर्ण परिवर्तन का क्रम



41. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. आगमग्रन्थाः	I. आचार्यशङ्करः
B. त्रिपिटकसाहित्यम्	II. जैनदर्शनम्
C. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	III. बौद्धसाहित्यम्
D. निर्विशेषाद्वैतवादः	IV. विश्वनाथपञ्चाननः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-II, B-III, C-IV, D-I
(c) A-III, B-I, C-II, D-IV
(d) A-IV, B-II, C-I, D-III

Ans. (b) : प्रश्नानुसारं समुचितं विकल्पं (b) अस्ति।

तालिका - I	तालिका - II
A. आगमग्रन्थाः	जैनदर्शनम्
B. त्रिपिटकसाहित्यम्	बौद्धसाहित्यम्
C. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	विश्वनाथपञ्चाननः
D. निर्विशेषाद्वैतवादः	आचार्यशङ्करः

42. किष्किन्धाकाण्डे कौ विषयौ वर्णितौ स्तः

- A. अशोकवनिता - ध्वंसनम् B. सीतान्वेषणम्
C. विभीषणेन दूतवधनिषेधः D. सम्पाति कथा

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) B एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : किष्किन्धाकाण्डे सीतान्वेषणम्, सम्पाति कथा एतौ विषयौ वर्णितौ स्तः। सीतान्वेषण और सम्पाति-कथा किष्किन्धाकाण्ड में यह विषय वर्णित है। वाल्मीकि कृत रामायण में कुल 7 काण्ड हैं। इसमें 24 हजार श्लोक हैं। रामायण में राम के चरित्र का वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने किया है। इसमें प्रधान रस करुण है। इसके नायक राम और नायिका सीता हैं।

सातकाण्ड निम्नवत् हैं—

- (1) बालकाण्ड - 77 सर्ग
(2) अयोध्याकाण्ड - 119 सर्ग
(3) अरण्यकाण्ड - 75 सर्ग
(4) किष्किन्धाकाण्ड - 67 सर्ग
(5) सुन्दरकाण्ड - 68 सर्ग
(6) युद्धकाण्ड - 128 सर्ग
(7) उत्तरकाण्ड - 111 सर्ग

43. सांख्यकारिकायां द्विविधः सर्गः (भौतिको बौद्धिकश्च) एतन्नामाख्यो वर्तते-

- A. तन्मात्राख्यः B. लिङ्गाख्यः
C. सत्त्वरजस् - तमसाख्यः D. भावाख्यः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : सांख्यकारिकायां 'लिङ्गाख्यः च भावाख्यः' सर्गः (भौतिको बौद्धिकश्च) एतन्नामाख्यो वर्तते-
लिङ्गं पद से यहाँ तन्मात्र-परिणाम और 'भावैः' से बुद्धि परिणाम अभिलक्षित है। कहने का तात्पर्य यह है कि बुद्धि परिणाम के बिना तन्मात्र-परिणाम न तो स्वरूपतः ही सिद्ध होगा और न पुरुषार्थ में साधन ही बनेगा। इसी प्रकार तन्मात्र-परिणाम के बिना बुद्धि परिणाम भी न स्वरूपतः ही सिद्ध होगा और न पुरुषार्थ में साधन ही बनेगा। इसलिए दोनों प्रकार की सृष्टि या परिणाम होते हैं। 'भोग' नामक पुरुषार्थ शब्द इत्यादि भोग्य विषयों तथा द्विविध (स्थूल और सूक्ष्म) शरीर रूप भोगायतनों के बिना असम्भव है।

44. 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'—इति मन्त्रांशे 'यज्ञम्' इति पदस्य भाष्यकार सायणानुसारमर्थोऽस्ति?

- (a) प्रजापतिम् (b) श्रौतयज्ञम्
(c) सद्वृत्तम् (d) हविर्यज्ञम्

Ans. (a) : 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'—इति मन्त्रांशे 'यज्ञम्' इति पदस्य भाष्यकार सायणानुसारं 'प्रजापतिम्' अर्थो अस्ति। येन यज्ञं अजन्तः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः तानि धर्माणि प्रथमानि आसन् । तेह नाकं महिमानः सचन्तयत्र पूर्वोसाध्याः सति देवाः।।

45. 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्' अत्र मन्त्रांशे आगतानां पदानामर्थ सायणमनुसृत्य मेलयत -

तालिका - I	तालिका - II
A. अहम्	I. ईश्वरी
B. राष्ट्री	II. मुख्या
C. संगमनी	III. आम्भृणी वाक्
D. प्रथमा	IV. प्रापयित्री

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-IV, C-I, D-III
(c) A-III, B-I, C-IV, D-II
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

Ans. (c) : 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्' अत्र मन्त्रांशे आगतानां पदानामर्थ सायणमनुसृत्य मेलयत-

Ans. (c) : 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्' अत्र मन्त्रांशे आगतानां पदानामर्थ सायणमनुसृत्य समुचितं मेलयत इति-

तालिका - I	तालिका - II
A. अहम्	आम्भृणी वाक्
B. राष्ट्री	ईश्वरी
C. संगमनी	प्रापयित्री
D. प्रथमा	मुख्या

उपर्युक्त तालिका 1 का तालिका 2 से क्रमानुसार व्यवस्थित रूप रखा गया है।

46. एतौ काव्यशास्त्रप्रणेतारौ आचार्यौ स्तः

- A. वाल्मीकिः B. भामहः
C. क्षेमेन्द्रः D. कालिदासः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं C (d) B एवं D

Ans. (c) : 'भामहः च क्षेमेन्द्रः' काव्यशास्त्रप्रणेतारौ आचार्यौ स्तः। भामह, क्षेमेन्द्र काव्य शास्त्री आचार्यों में से हैं।

भामह- आचार्य भामह संस्कृत भाषा के सुप्रसिद्ध आचार्य थे। उनका काल निर्णय भी अन्य पूर्ववर्ती आचार्यों की तरह विवादपूर्ण है। परन्तु अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि भामह 300 ई से 600 ई. के मध्य हुये हैं। आचार्य भरतमुनि के बाद प्रथम आचार्य भामह ही हैं। काव्यशास्त्र पर काव्यालङ्कार नामक ग्रन्थ उपलब्ध होता है इन्हें अलङ्कार सम्प्रदाय का जनक कहते हैं। "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" यह इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य की परिभाषा है।

क्षेमेन्द्र- (जन्म लगभग 1025-1066) संस्कृत के प्रतिभासम्पन्न काश्मीरी महाकवि थे। ये विद्वान् ब्राह्मणकुल में उत्पन्न हुए थे। ये सिन्धु के प्रपौत्र, निम्नाशय के पौत्र और प्रकाशेन्द्र के पुत्र थे। इन्होंने प्रसिद्ध आलोचक तथा तन्त्रशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् अभिनवगुप्त से साहित्यशास्त्र का अध्ययन किया था। इनके पुत्र सोमेन्द्र ने पिता की रचना बोधिसत्त्वावदानकल्पलता को एक नया पल्लव (कथा) जोड़कर पूरा किया था।

रचनाएँ- रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी, बृहत्कथामञ्जरी।

47. अधोऽङ्कितानि भारोपीय परिवारानुसारं कतमा भाषा शतम् वर्गेऽस्ति?

- (a) आर्मीनी (b) केल्टिक
(c) ग्रीक (d) तोखारी

Ans. (a) : भारोपीय परिवारानुसारं 'आर्मीनी' भाषा शतं वर्गेऽस्ति। **आर्मीनी-** यह श्लिष्ट योगात्मक भाषा है तथा इसकी ध्वनियाँ ईरानी से भिन्न हैं। यह आर्य परिवार और बाल्टो-स्लाविक भाषाओं के मध्य संयोजक कड़ी मानी जाती है। इसका स्वरूप ग्रीक और भारत ईरानी के बीच का है। आधुनिक आर्मीनी की स्तम्बूल बोली कुस्तुनुनिया और काला सागर के किनारे के भाग में बोली जाती है। आर्मीनी में ईसाई साहित्य अधिकांश में है। यह 11वीं सदी से प्रारम्भ होता है। कीलाक्षर अभिलेख ऐतिहासिक महत्व के हैं। जिस प्रकार भारत में पुरोहित संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं, इसी प्रकार आर्मीनिया के पुरोहित प्राचीन आर्मीनी का ही प्रयोग करते हैं। आर्मीनी के वर्तमान समय में दो रूप हैं। (1) **स्तम्बूल-**यह यूरोप वाले भाग में बोली जाती है। (2) **अगरट-**यह एशिया वाले क्षेत्र में बोली जाती है।

48. 'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः' अस्य मन्त्रस्य देवता का?

- (a) अक्षाः (b) कवषः
(c) कृषिः (d) कितवः अक्षाश्च

Ans. (c) : 'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः' अस्य मन्त्रस्य देवता 'कृषिः' अस्ति। उपर्युक्त मन्त्र अक्ष सूक्त से अवतरित है। मण्डल-10, सूक्त-34, कुल मन्त्र-14, ऋषि-कवष ऐलूष। देवता-अक्षकृषि प्रशंसा, छन्द-सातवें मन्त्र में जगती छन्द तथा शेष में त्रिष्टुप् है।

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।

तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः।।3।।

अर्थात् जुआड़ी, कभी जुआ नहीं खेलना, खेती करना। कृषि से जो कुछ लाभ हो उसी से सन्तुष्ट रहना अपने को कृतार्थ समझना। इसी से स्त्री प्राप्त करोगे और अनेक गायें भी पाओगे। प्रभु सूर्य देव ने मुझसे ऐसा कहा है।

49. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. कापटिकः	I. कर्षको वृत्तिकीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः
B. उदास्थितः	II. वाणिजको वृत्तिकीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः
C. गृहपतिकः	III. प्रवज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचमुक्तः
D. वैदेहकः	IV. परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A-II, B-IV, C-III, D-I
(b) A-III, B-I, C-II, D-IV
(c) A-III, B-II, C-IV, D-I
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

Ans. (d) : प्रश्नानुसारं समुचित विकल्पं (b) अस्ति।

तालिका – I	तालिका – II
A. कापटिकः	परममंजुः प्रगल्भश्छात्रः
B. उदास्थितः	प्रवज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः
C. गृहपतिकः	कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः
D. वैदेहकः	वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः

उपर्युक्त तालिका 1 का तालिका 2 से क्रमानुसारं व्यवस्थित रूप में रखा गया है।

50. कौटिलीयार्थशास्त्रानुसारं के राजानमुत्तिष्ठमानमनूत्तिष्ठन्ते?

- (a) पौरजनाः (b) भृत्याः
(c) शत्रवः (d) शिष्याः

Ans. (b) : कौटिलीयार्थशास्त्रानुसारं 'भृत्याः' राजानमुत्तिष्ठमानमनूत्तिष्ठन्ते। भृत्य- दुर्ग तथा जनपद की शक्ति के अनुसार भृत्य रखे जाये उनकी भूति में राजकीय आय का चौथाई खर्च किया जाय। भूति इतनी होनी चाहिये कि भृत्य कार्य करने में समर्थ हो सके तथा उनके शरीर को हानि न पहुँचे धर्म तथा अर्थ की अवहेलना किसी भी काम में न करें। राजा द्वारा कर्मचारियों पर वार्षिक धन व्यय विवरण इस तालिका से सपष्ट हो जाता है-

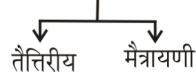
राजा मन्त्रिमण्डल	वार्षिक पण
ऋत्विग् , आचार्य, मन्त्रि, पुरोहित, सेनापति, युवराज, राजमाता, तथा राजमहिषी	4800 पण वार्षिक
दोवारिक, आन्तर्वेशिक, प्रशास्ता, समाहर्ता तथा सन्निधाता	2400 पण वार्षिक
कुमार, कुमार-माता, नायक, पौर, व्यावहारिक कार्मान्तिक, मन्त्रिपरिषद्, राष्ट्रांतपाल	1200 पण वार्षिक
श्रेणी, मुख्य, हस्ति-मुख्य, अश्व मुख्य, रथ-मुख्य तथा प्रदेशा	8000 पण वार्षिक

51. ब्राह्मणग्रन्थेषु वर्णनं नोपलभ्यते?

- (a) आत्मनः (b) त्रयाणां लोकानाम्
(c) पुनर्जन्मनः (d) परमाण्वस्त्रस्य

Ans. (d) : ब्राह्मणग्रन्थेषु वर्णनं 'परमाण्वस्त्रस्य' नोपलभ्यते। ब्राह्मणग्रन्थों में 'परमाण्वस्त्र' का वर्णन नहीं उपलब्ध होता जबकि, आत्मा, तीनों लोकों का, पुनर्जन्म का वर्णन प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रन्थ इस प्रकार हैं-

- (1) ऋग्वेदीय ब्राह्मण-(1) ऐतरेय ब्राह्मण (2) कौषीतकि ब्राह्मण
(2) यजुर्वेदीय ब्राह्मण-(1) शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक ब्राह्मण 'शतपथ' ब्राह्मण प्राप्त होता है।
(2) कृष्ण यजुर्वेदीय दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।



- (3) सामवेदीय ब्राह्मण- 8 प्राप्त होते हैं- (1) ताण्ड्यविंश ब्राह्मण (2) षड्विंश (3) सामविधान (4) आर्षेय (5) दैवत (6) उपनिषद् (7) संहितोपनिषद् (8) वंश
(4) अथर्ववेदीय ब्राह्मण-अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण 'गोपथ' ब्राह्मण है।

52. 'जाबाले: नास्तिकमतस्य रामेण खण्डनम्' इति विषयः रामायणस्य कस्मिन् काण्डे वर्णितोऽस्ति?

- (a) अयोध्याकाण्डे (b) अरण्यकाण्डे
(c) किष्किन्धाकाण्डे (d) बालकाण्डे

Ans. (a) : 'जाबाले: नास्तिकमतस्य रामेण खण्डनम्' इति विषयः रामायणस्य 'अयोध्याकाण्डे' वर्णितोऽस्ति।

⇒ जाबालिक का नास्तिक मत एवं राम द्वारा खण्डन यह विषय रामायण के अयोध्याकाण्ड में वर्णित है।

⇒ महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में सात काण्ड हैं।

	काण्डों के नाम	सर्गों का संख्या
(1)	बालकाण्ड	77 सर्ग
(2)	अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
(3)	अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
(4)	किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
(5)	सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
(6)	युद्धकाण्ड	128 सर्ग
(7)	उत्तरकाण्ड	111 सर्ग

रामायण में 24 हजार श्लोक हैं। रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है। रामायण में प्रधान रस 'करुण' है।

53. याज्ञवल्क्यानुसारं सीमातिक्रमणे दण्डः प्रोक्ताः

- (a) अधमसाहसाः (b) उत्तमसाहसाः
(c) उत्तमोत्तमसाहसाः (d) मध्यमसाहसाः

Ans. (b) : याज्ञवल्क्यानुसारं सीमातिक्रमणे 'उत्तमसाहसाः' दण्डः प्रोक्ताः अस्ति। याज्ञवल्क्य के अनुसार दण्ड का उद्देश्य- अधर्मदण्डनं स्वर्गकीर्ति लोकविनाशनम्।

संयुक्त दण्डनं राज्ञः स्वर्गकीर्तिजयावहम्॥

दण्ड का प्रयोग करने वाला राजा धर्म का अवतार कहा गया है।

धनदण्ड के अनेक भेद हैं- याज्ञवल्क्य ने उत्तम, मध्यम और अधम साहस के तीन भेद किये हैं। उनके अनुसार एक हजार अस्सी पण का दण्ड उत्तम होता है। इसका आधा मध्यम साहस में दण्ड दिया जाता है। मध्यम साहस का आधा दण्ड अधम या प्रथम साहस में दिया जाता था।

54. बुद्धचरिते सर्गप्राथम्येन क्रमशः सर्गाणामुचितमुत्तरं चिनुत –

- A. संवेग - उत्पत्तिः B. अभिनिष्क्रमणम्
C. स्त्री - निवारणम् D. तपोवन प्रवेशः
E. अन्तःपुर विलाप

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A, B, C, D, E (b) A, C, B, D, E
(c) B, C, D, E, A (d) C, D, E, A, B

Ans. (b) : बुद्धचरिते सर्गप्राथम्येन क्रमशः - संवेग उत्पत्तिः, स्त्री निवारण, अभिनिष्क्रमणम्, तपोवनप्रवेशः, अन्तःपुरविलाप सर्गाणामुचितमुत्तरं समुचितं विकल्पं अस्ति।

'बुद्धचरितम्' महाकाव्य है। इसके रचयिता अश्वघोष हैं। इनका रचनाकाल दूसरी शताब्दी है। इसमें गौतम बुद्ध का जीवनचरित वर्णित है। बुद्धचरित 28 सर्गों से युक्त है। जिसमें 14 सर्गों तक बुद्ध के जन्म से बुद्धत्व-प्राप्ति तक का वर्णन किया गया है। 28 सर्गों में विरचित इस महाकाव्य के दूसरे सर्ग से लेकर तेरहवें सर्ग तक पूर्ण रूप से तथा पहला एवं चौदहवें सर्ग के कुछ अंश ही मिलते हैं।

बुद्धचरित के 28 सर्गों में प्रथम सर्ग से तेरह सर्गों तक के नाम इस प्रकार हैं- (1) भगवत्प्रसूति, (2) अन्तः पुरविहार, (3) संवेगोत्पत्ति, (4) स्त्रीविधातन, (5) अभिनिष्क्रमण, (6) छन्दक निवर्तनम् (7) तपोवनप्रवेशम्, (8) अन्तः पुरविलाप, (9) कुमारान्वेषणम्, (10) श्रेणभिगमनम् (11) काम विगर्हणम्, (12) आराडदर्शन, (13) मार विजय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

55. काण्वसंहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण योजयत?

- A. मुरारिमिश्रः B. कालनाथः
C. आनन्दबोधः D. अनन्ताचार्यः
E. सायणः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A, C, D, B, E (b) B, E, A, C, D
(c) C, B, A, E, D (d) D, A, B, E, C

Ans. (b) : काण्वसंहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण कालनाथः, सायण, मुरारिमिश्र, आनन्दबोध, अनन्ताचार्यः सन्ति।

⇒ काण्व संहिता के अनुसार भाष्यकारों का काल निर्धारण की योजना क्रमशः इस प्रकार है-

⇒ **कालनाथ-** संवत् 1250 के लगभग इनका समय माना जाता है। कालनाथ के ग्रन्थ का नाम यजुर्मञ्जरी है। इसमें 250 मन्त्रों का भाष्य है।

⇒ **सायण-** सायण का समय 1317-1387 ई. के आस-पास माना जाता है। सायणाचार्य ने 5 संहिताओं पर भाष्य तथा 13 ब्राह्मण आरण्यकों की व्याख्या लिखे हैं। सायण ने अपने ऋग्वेदभाष्य का नाम 'वेदार्थ-प्रकाश' रखा है।

⇒ **मुरारिमिश्र-** मुरारि मिश्र भारतीय दार्शनिक थे। उन्हें मीमांसा दर्शन में तृतीय सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने 'मीमांसा-सूत्र' की व्याख्या लिखी है।

⇒ **आनन्दबोध-** जातवेद भट्टोपाध्याय के पुत्र आनन्दबोध ने सम्पूर्ण काण्व संहिता पर 'काण्डवेदमन्त्र-भाष्य-संग्रह' की रचना की है।

⇒ **अनन्ताचार्य-** इनका स्थित काल 16वीं शती माना जाता है। इन्होंने 'भाषिक-सूत्र-भाष्य' 'यजुः प्रातिशाख्य-भाष्य' और शतपथ ब्राह्मण भाष्य भी लिखा है।

56. कथनद्वयं अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति

अभिकथनम् (A) : रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत् कारणम् (R) : दुश्चारित्र्यम् अपकीर्तः कारणं भवति उपर्युक्त - अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) (A) तथा (R) उभावपि सत्यम्, (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य
(b) (A) तथा (R) उभावपि असत्यम्
(c) (A) तथा (R) उभावपि सत्यम् किन्तु (R) इति उचितं कारणं नास्ति (A) इत्यस्य
(d) (A) सत्यम्, (R) असत्यम्

Ans. (a) : कथनद्वयं अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A) अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति अभिकथनम् (A) : रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत् कारणम् (R) : दुश्चारित्र्यम् अपकीर्तः कारणं भवति कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं- (A) तथा (R) उभावपि सत्यम्, (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य।

अर्थात् अधोलिखित दो कथन हैं- उसमें एक अभिकथन (A), दूसरा उसका कारण है (R), इस प्रकार अभिकथन (R) रामादि के समान आचरण करना चाहिए रावणादि के समान नहीं, कारण (R) यह दुःचरित अपकीर्ति का कारण होता है। कारण आश्रित समुचित विकल्प A तथा R दोनों सही हैं। R इस प्रकार उचित कारण है, A इस अभिकथन का।

57. एतद् नाटकद्वयं महाकवि भवभूति विरचितं नास्ति

- A. विक्रमोर्वशीयम् B. उत्तररामचरितम्
C. मृच्छकटिकम् D. मालतीमाधवम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं D (d) B एवं C

Ans. (b) : एतद् नाटकद्वयं 'विक्रमोर्वशीयम्, मृच्छकटिकम्' महाकवि भवभूति विरचितं नास्ति।

⇒ 'विक्रमोर्वशीयम् और मृच्छकटिकम्' महाकवि भवभूति के द्वारा विरचित नाटकों में से नहीं हैं। विक्रमोर्वशीयम् - कालिदास द्वारा रचित 'त्रोटक' नाटक है। जबकि मृच्छकटिकम् - शूद्रक का प्रकरण ग्रन्थ है।

⇒ भवभूति कृत उत्तररामचरितं में 7 अङ्क, मालतीमाधव में 10 अंक हैं। जो कि भवभूति के द्वारा रचित नाटक है। उत्तररामचरितं करुण रस प्रधान, जबकि मालतीमाधव शृङ्गार रस प्रधान नाटक है।

58. 'अग्निर्वे देवानां मुखम्' इति कथम् ?

- (a) प्रकाशन - साधनात् (b) भोजनपाचनात्
(c) वनदहनात् (d) हविर्भक्षणात्

Ans. (d) : 'अग्निर्वे देवानां मुखम्' इति 'हविर्भक्षणात्'। अर्थात् अग्नि देवताओं का मुख है। ऋग्वेदीय देवों में अग्नि का सबसे प्रमुख स्थान है। यह यजमानों के द्वारा विभिन्न देवों के उद्देश्य से अपने में प्रक्षिप्त हविष् को उनके पास पहुँचाता है। वैदिक आर्यों के लिए देवताओं में इन्द्र के पश्चात् अग्नि देव का ही पूजनीय स्थान है। वैदिक मन्त्रों के अनुसार अग्निदेव नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करने वाला तथा तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता है। ऋग्वेद में अग्नि को धृतपृष्ठ, शोचिषकेश, गृहपति, दमूनस आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

59. कौटिलीयमते धर्मोपधशुद्धान् अमात्यान् स्थापयेत्

- A. धर्मस्थानीयेषु B. सन्निधातुनिचयकर्मसु
C. कण्टकशोधनेषु D. ब्राह्मभ्यन्तरविहाररक्षसु

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) A एवं D (d) B एवं C

Ans. (b) : कौटिलीयमते धर्मोपधशुद्धान् अमात्यान् 'धर्मस्थानीयेषु' 'कण्टकशोधनेषु' स्थापयेत्। कौटिलीयमतानुसार धर्मोपधा (धार्मिक उपायों द्वारा) अमात्य पद के लिए दो प्रकार के न्यायालय की स्थापना की गयी थी।

(1) **कण्टकशोधन न्यायालय-** जिसके अन्तर्गत अपराध सम्बन्धी समस्याओं का निस्तारण किया जाता था।

(2) **धर्मस्थानीय न्यायालय-** जिसके अन्तर्गत सामान्य समस्याओं का निस्तारण किया जाता था।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र विश्व के राजशास्त्रीय और अर्थशास्त्रीय ग्रन्थों में मूर्धन्य माना जाता है। यह नितान्त यथार्थपरक और व्यावहारिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कुल 15 अधिकरण, 150 अध्याय हैं।

60. योगदर्शनानुसारं सार्वभौमव्रतेषु कस्य गणना न भवति?

- (a) अपरिग्रहस्य (b) अस्तेयस्य
(c) ईश्वरप्रणिधानस्य (d) सत्यस्य

Ans. (c) : योगदर्शनानुसारं सार्वभौमव्रतेषु 'ईश्वरप्रणिधानस्य' गणना न भवति। अर्थात् योगदर्शन के अनुसार सार्वभौमिक व्रतों में ईश्वरप्रणिधान की गणना नहीं की जाती है। ईश्वर प्रणिधान पाँच नियमों में से एक है। ईश्वर प्रणिधान का अर्थ है- ईश्वर में भक्तिपूर्वक सब कर्मों का समर्पण करना। योगदर्शन में नियम के पाँच प्रकार बताये गये हैं- (i) शौच (ii) संतोष (iii) तप (iv) स्वाध्याय (मोक्षशास्त्र का अनुशीलन/जप) (v) ईश्वरप्रणिधान (ईश्वर में भक्तिपूर्वक सब कर्मों का समर्पण) योगदर्शन के सार्वभौमिक व्रतों में सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह की गणना की जाती है।

61. 'सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि' अत्र स्तूयमाना देवी का?

- (a) उषस् (b) भूमिः
(c) वाक्, (d) सरस्वती

Ans. (b) : 'सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि' अत्र स्तूयमाना देवी भूमिः। अर्थात् समस्त प्राणियों का जीवन सुखमय तथा आनन्दमय ही, इस प्रकार की स्तुति भूमि सूक्त में की गयी है। अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त भूमि सूक्त है जिसमें कुल 63 मन्त्र हैं। अथर्ववेद के रचनाकार अथर्वन् या अथर्वा ऋषि का चिन्तन पृथ्वी के समस्त चर-अचर के प्रति भूमि सूक्त में मुखरित होता है। भूमि सूक्त में पृथ्वी के पर्यावरण, जीव जगत् चर-अचर के सम्बन्धों की जो वैज्ञानिकता मुखरित हुई है वो आज अपने रचनाकाल के समय से ज्यादा प्रासङ्गिक प्रतीत होती है।

62. अत्र कथनद्वयं वर्तते - तत्र (A) इत्यभिकथनम्, (R) इति च तस्य कारणम् ।

अभिकथनम् (A) : न्याय दिशा तु न गुणगुणिनोः समानकालीनं जन्म। किन्तु द्रव्यं निर्गुणमेव प्रथममुत्पद्यते, पश्चात् तत्समवेता गुणा उत्पद्यन्ते।

कारणम् (R) : समानकालोत्पत्तौ तु गुणगुणिनोः समानसामग्रीकत्वाद् भेदो न स्यात्, कारणभेदनियतत्वात् कार्यभेदस्य।

उपर्युक्तम् (A) इत्यभिकथनं (R) इति कारणं चाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) (A) असत्यम् तथा (R) सत्यम्
(b) (A) तथा (R) उभयं असत्यम्
(c) (A) तथा (R) उभयं सत्यम्
(d) (A) सत्यम् तथा (R) असत्यम्

Ans. (c) : अत्र कथनद्वयं वर्तते - तत्र (A) इत्यभिकथनम्, (R) इति च तस्य कारणम् उभयं सत्यम्। न्याय दिशा तु न गुणगुणिनोः समानकालीनं जन्म। किन्तु द्रव्यं निर्गुणमेव प्रथममुत्पद्यते, पश्चात् तत्समवेता गुणा उत्पद्यन्ते। समानकालोत्पत्तौ तु गुणगुणिनोः समानसामग्रीकत्वाद् भेदो न स्यात्, कारणभेदनियतत्वात् कार्यभेदस्य। अर्थात् न्याय दिशानुसार गुण और गुणी की समान काल में उत्पत्ति नहीं होती। किन्तु पहले द्रव्य निर्गुण ही उत्पन्न होता है, बाद में उसमें समवाय सम्बन्ध से रहने वाले गुण उत्पन्न होते हैं। यदि गुण तथा गुणी (दोनों) की समान काल में उत्पत्ति होगी तो उनकी कारण सामग्री भी समान होगी अतः उन दोनों में (यह गुण है यह गुणी है) इस प्रकार का भेद न होगा। क्योंकि कार्य का भेद कारण के भेद से व्याप्त है इसलिए प्रथमक्षण में निर्गुण घट ही उत्पन्न होता है। वह (रूप आदि) गुणों से पूर्वभावी है, इस प्रकार वह गुणों का समवायिकारण होता है। अतः अभिकथन A और R दोनों सत्य हैं।

63. केशवमिश्रानुसारं

संयुक्तसमवायसन्निकर्षस्योदाहरणमस्ति

- (a) चक्षुः - घटत्वम् (b) चक्षुः - घटम्
(c) चक्षुः - घटरूपम् (d) श्रोत्रम् - शब्दत्वम्

Ans. (c) : केशवमिश्रानुसारं संयुक्तसमवायसन्निकर्षस्योदाहरणं चक्षुः घटरूपम्-अस्ति। अर्थात् केशवमिश्र के अनुसार संयुक्त समवायसन्निकर्ष का उदाहरण है-चक्षु- घटरूप। अर्थात् जब चक्षु के द्वारा घट के रूप में समवेत रूप का ग्रहण होता तब चक्षु इन्द्रिय है, रूप अर्थ (विषय) है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय ही है। क्योंकि चक्षु से संयुक्त घट में रूप समवेत है (यह समवाय सम्बन्ध से रहता है)।

चक्षुरादिना घटरूपादिकं गृह्यते, घटे श्यामं रूपमस्तीति, तदा चक्षुरिन्द्रियं, घटरूपमर्थः अनयोः सन्निकर्षः संयुक्त समवाय एव।

64. अधस्तनेषु के द्वे शैवविषयक पुराणे स्तः

- A. भागवतपुराणम् B. मत्स्यपुराणम्
C. गरुडपुराणम् D. ब्रह्माण्डपुराणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं D
(c) B एवं C (d) B एवं D

Ans. (d) : अधस्तनेषु पुराणे शैवविषयक मत्स्यपुराणम्, ब्रह्माण्डपुराणम् द्वे स्तः। अर्थात् दिये गये विकल्पों में दो पुराण मत्स्यपुराण और ब्रह्माण्डपुराण शैवविषयक पुराण के अन्तर्गत समाहित हैं। मत्स्यपुराण ऐतिहासिक पुराण है। इसमें आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली का वर्णन है। मत्स्यपुराण में दक्षिण भारत की मूर्तिकला, वास्तुकला एवं स्थापत्यकला का सुन्दर वर्णन है। लिङ्गपूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मत्स्य पुराण में मिलता है। समस्त महापुराणों में 'ब्रह्माण्डपुराण' अन्तिम पुराण होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक दृष्टि से इस पुराण का विशेष महत्व है। ब्रह्माण्डपुराण में लगभग 12000 श्लोक और 156 अध्याय हैं। ब्रह्माण्डपुराण के मध्य भाग में श्राद्ध और पिण्डदान सम्बन्धी विषयों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। साथ ही परशुरामचरित्र की विस्तृत कथा, राजा सगर की वंश परम्परा, भगीरथ द्वारा गङ्गा की उपासना, शिवोपासना, गङ्गा को पृथ्वी पर लाने का व्यापक प्रसङ्ग सूर्य एवं चन्द्रवंश के राजाओं का चरित्र वर्णन प्राप्त होता है।

65. याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः

- A. उपनिधिप्रकरणम् B. उपोद्धातप्रकरणम्
C. साहसप्रकरणम् D. स्नातकधर्मप्रकरणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं B (b) A एवं C
(c) B एवं C (d) C एवं D

Ans. (b) : याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे 'उपनिधिप्रकरणम्, साहसप्रकरणम्' स्तः। अर्थात् याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय के प्रकरण में उपनिधिप्रकरण तथा साहसप्रकरण का वर्णन मिलता है। याज्ञवल्क्यस्मृति धर्मशास्त्र परम्परा का एक हिन्दू धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ है। याज्ञवल्क्य स्मृति का 'विषय निरूपण-पद्धति' अत्यन्त सुगठित है। इस पर विरचित मिताक्षरा टीका हिन्दू धर्मशास्त्र के विषय में भारतीय न्यायालयों में प्रमाण मानी जाती रही है। व्यवहाराध्याय में पच्चीस प्रकरण हैं- साधाराव्यवहारमातृका, असाधाराव्यवहारमातृका, ऋणादान, उपनिधि, साक्षि, लेख्य, दिव्य, दायविभाग, सीमाविवाद, स्वामिपालविवाद, अस्वामिविक्रय, दत्ताप्रदानिक, क्रीटानुशया, अभ्युपेत्याशुश्रूषा, संविदयव्यतिक्रम, वेतनादान, धूतसमाहवय, वाक्पारुष्य, साहस, विक्रीयासम्प्रदान, सम्भूयसमुत्थान, स्तेय, स्त्रीसंग्रहण, प्रकीर्णक, दण्डपारुष्य।

66. पाणिनीय शिक्षानुसारम् अधमपाठकस्य दोषोऽस्ति

- (a) गीती (b) धैर्यम्
(c) माधुर्यम् (d) सुस्वरः

Ans. (a) : पाणिनीय शिक्षानुसारम् अधमपाठकस्य दोषो 'गीतीऽस्ति'। अर्थात् पाणिनीय शिक्षा के अनुसार अधम पाठक के दोषों में गीती का वर्णन है।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः धैर्यं लयसमर्थश्च षडेते पाठकगुणाः। (उत्तमपाठकः)

गीती, शीघ्री, शिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥

(अधमपाठकः)

पाणिनीय शिक्षानुसार अधम पाठक के दोषों में गीती, अर्थात् गाकर पढ़ने वाला, शीघ्री-शीघ्र पाठी, शिरः कम्पी-पढ़ते समय सिर हिलाने वाला, अनर्थज्ञ - पाठ्य के अर्थ को नहीं जानने वाला और अल्पकण्ठ ये छः अधम पाठक माने गये हैं।

67. 'अध्यात्मम्' अत्र कतमः समासः?

- (a) अव्ययीभावः (b) तत्पुरुषः
(c) द्वन्द्वः (d) बहुव्रीहिः

Ans. (a) : 'अध्यात्मम्' अत्र 'अव्ययीभावः' समासः। अध्यात्मम् पद का लौकिकविग्रह - आत्मनि इति। तथा अलौकिक विग्रह- आत्मनि डि अधि सु। "अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि------" सूत्र से 'अधि' अव्यय का 'आत्मन् डि' सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास हुआ। 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अधि' की उपसर्जनसंज्ञा और 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से पूर्वनिपात होकर अधि आत्मन् डि बना। 'कृतद्धितसमासाश्च' सूत्र से 'अधि आत्मन् डि' की

प्रातिपदिक संज्ञा और 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् 'ङि' का लोप होकर 'अधि + आत्मन्' बना। 'अनश्च' सूत्र से 'अध्यात्मन्' तथा अनन्त से समासान्त टच् प्रत्यय होकर 'अध्यात्मन् + टच्' (अ) बना। 'नस्तद्विते' सूत्र से 'अध्यात्मन्' के टि 'अन्' का लोप होकर 'अध्यात् + टच्' = अध्यात्म + अ बना।
 'एकदेशविकृतस्यानन्यत्वात्' न्याय से 'ङि' सुप् के लोप होने पर भी 'अध्यात्म' की प्रातिपदिकता अक्षुण्ण है अतः 'ङ्यापप्रातिपदिकात्' सूत्र से प्रथमा विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'सु' सुप् की प्राप्ति हुई। इस प्रकार अध्यात्म + सु बना। अव्ययीभावश्च सूत्र से अध्यात्म 'सु' की अव्यय संज्ञा हुई और 'नाव्ययीभावादतोऽमृत्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' के लोप का निषेध हुआ और 'सु' के स्थान पर अम् आदेश होकर 'अध्यात्म + अम्' बना। 'अमिपूर्वः' सूत्र से पूर्व रूप एकादेश होकर 'अध्यात्मम्' रूप सिद्ध हुआ।

68. 'श्रूयतां महाभाग विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन् भोज वंश भूषणम् -----'

इति गद्यखण्डं कस्यां रचनायां विद्यते?

- (a) कादम्बर्याम् (b) दशकुमारचरिते
 (c) स्वप्नवासवदत्ते (d) हर्षचरिते

Ans. (b) : 'श्रूयतां महाभाग विदर्भो नाम जनपदः तस्मिन् भोज वंश भूषणम्' इति गद्यखण्डं 'दशकुमारचरिते' रचनायां विद्यते। सारांश इस प्रकार है- वह वृद्ध विश्रुत अश्रु के कारण अवरुद्धकण्ठ से गद्गद् स्वर में बोला-महोदय सुनें विदर्भ नामक जनपद है वहाँ भोजवंश के अलङ्कार, धर्म के अंशावतार अत्यन्त बलवान्, सत्यनिष्ठ, दानशील, उदारप्रवृत्ति, विनम्र, यशस्वी धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र के अध्ययन में संलग्न पावनकीर्ति पुण्यवर्मा नाम का राजा था। यह गद्य खण्ड 'दशकुमारचरितम्' में वर्णित है। दशकुमारचरितम् दण्डी द्वारा प्रणीत संस्कृत गद्यकाव्य है। इसमें दश कुमारों का चरित वर्णित होने के कारण इसका नाम 'दशकुमारचरित' है। जबकि कादम्बरी कथा बाणभट्ट, स्वप्नवासवदत्त भास का नाटक ग्रन्थ तथा हर्षचरित बाणभट्ट कृत आख्यायिका ग्रन्थ के अन्तर्गत आते हैं।

69. 'अन्धं तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इव ते तमः य उ सम्भूत्यां रताः।'

अत्र मन्त्रे 'असम्भूति - सम्भूति' - पदयोः अर्थो कौ?

- A. विकृतिः B. प्रकृतिः
 C. कार्यब्रह्म D. अविनाशः
 (a) A एवं B (b) A एवं D
 (c) B एवं C (d) C एवं D

Ans. (c) : 'अन्धं तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमः य उ सम्भूत्यां रताः।' अत्र मन्त्रे 'असम्भूति - सम्भूति' - पदयोः अर्थो प्रकृतिः, कार्यब्रह्म अस्ति। असम्भूति अर्थात् अव्यक्त प्रकृति के उपासक घोर अंधकार में प्रवेश करते हैं तथा जो सम्भूति अर्थात् हिरण्यगर्भ नामक कार्यब्रह्म की उपासना करते हैं वह उनसे भी अधिक घोर अंधकार में प्रवेश करते हैं। कार्यों के बीज रूप अव्यक्त प्रकृति का सूचक है- असम्भूति पद और कार्य ब्रह्म हिरण्यगर्भ के लिए- सम्भूति पद का वर्णन है।

70. नियमपूर्वकविद्याध्यने अध्यापकः किं संज्ञो भवति?

- (a) अधिकरणसंज्ञः (b) अपादानसंज्ञः
 (c) करणसंज्ञः (d) कर्मसंज्ञः

Ans. (b) : नियमपूर्वकविद्याध्यने अध्यापकः अपादानसंज्ञा भवति। अर्थात् जिस गुरु या अध्यापक या मनुष्य से कोई वस्तु नियमपूर्वक पढ़ी जाती है अथवा मालूम की जाती है, वह गुरु या अध्यापक या अन्य मनुष्य अपादान संज्ञक होता है। जैसे- उपाध्यायाद् अधीते - उपाध्याय से पढ़ता है।

71. अथर्ववेदीय-राष्ट्राभिवर्धन - सूक्तस्य देवता का?

- (a) अथर्वा (b) ब्रह्मणस्पतिः
 (c) राष्ट्रम् (d) राष्ट्राभिवर्धनम्

Ans. (b) : अथर्ववेदीय-राष्ट्राभिवर्धन - सूक्तस्य देवता 'ब्रह्मणस्पतिः' अस्ति। अथर्ववेद में राष्ट्राभिवर्धनम् सूक्त के देवता ब्रह्मणस्पति हैं। वैदिक साहित्य में अथर्ववेद का स्थान बड़ा ही अनुपम है, जहाँ अन्य वेद देवताओं की स्तुति को ही अपना प्रतिपाद्य विषय बनाते हैं। 'राष्ट्राभिवर्धनम्' सूक्त का भी एक विशिष्ट स्थान है। इसमें राष्ट्र की सुख समृद्धि के लिए ऋषि प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे! ब्रह्मणस्पति जिस समृद्धिदायक मणि से इन्द्र की वृद्धि हुई है, उसी मणि के द्वारा तू हमें देश के हित के निमित्त विस्तृत करे। अथर्ववेद के राष्ट्राभिवर्धनसूक्त में राष्ट्र की वृद्धि के लिए राजा द्वारा अभिवर्त मणि बाँधने की प्रार्थना है- "तेनास्मान् ब्राह्मणस्पतेतेभि राष्ट्राय वर्धय" जिससे तात्पर्य है कि राजा को राष्ट्र की उन्नति और सुरक्षा के लिए क्या-क्या उपाय करना चाहिए। इसको यहाँ प्रतीक रूप में बताया गया है।

72. अधोलिखितेषु द्वावेतौ सिद्धान्तरूपेण बौद्धदर्शने स्वीक्रियेते

- A. शब्दनित्यतावादः B. प्रतीत्यसमुत्पादः
 C. सप्तभङ्गीनयः D. क्षणिकवादः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं C (b) B एवं C
 (c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : अधोलिखितेषु सिद्धान्तरूपेण बौद्धदर्शने 'प्रतीत्यसमुत्पादः, क्षणिकवादः' एतौ द्वौ स्वीक्रियेते।

प्रतीत्यसमुत्पादः- बौद्ध भैषज्य-शास्त्र की शब्दावली में प्रतीत्यसमुत्पाद वह आध्यात्मिक रसायन है, जिसके सेवन से संसार रूपी महारोग का समन होता है और समूल विनाश भी। प्रतीत्यसमुत्पाद के सम्यक् सम्बोधन द्वारा समस्त मिथ्या दृष्टियों का निरसन होता है और प्रथम तीन आर्य सत्यों का सम्यक् एवं यथाभूत प्रकाशन होता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार वस्तु नित्य नहीं है वस्तुओं की उत्पत्ति अन्य कारण से होती है। परन्तु इनका पूर्ण विनाश नहीं होता, बल्कि उसका कुछ कार्य एवं परिणाम अवश्य शेष रह जाता है। अतः प्रतीत्यसमुत्पाद न तो पूर्ण नित्यवाद है और न ही अपूर्ण विनाशवाद।

क्षणिकवादः- बौद्धदर्शन में सबसे महत्वपूर्ण दर्शन क्षणिकवाद का है। इसके अनुसार, इस ब्रह्माण्ड में सब कुछ क्षणिक और नश्वर है। यह शरीर और ब्रह्माण्ड उसी तरह है जैसे घोड़े, पहिए और पालकी के संगठित रूप को रथ कहते हैं और इन्हें अलग करने से रथ का अस्तित्व नहीं माना जाता। इस सिद्धान्त का मूल महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये चार आर्य-सत्यों पर आधारित है। अतः दिये गये विकल्पों में प्रतीत्यसमुत्पाद और क्षणिकवाद समुचित विकल्प के रूप में स्वीकार किये गये हैं।

73. केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. ऋग्वेदः	I. आदित्यः
B. यजुर्वेदः	II. अङ्गिराः
C. सामवेदः	III. अग्निः
D. अथर्ववेदः	IV. वायुः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-II, C-IV, D-III
 (b) A-II, B-I, C-III, D-IV
 (c) A-III, B-IV, C-I, D-II
 (d) A-IV, B-III, C-II, D-I

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (c) : तालिकानुसार समुचित विकल्प का क्रम इस प्रकार है—				
तालिका – I		तालिका – II		
A. ऋग्वेदः		I. अग्निः		
B. यजुर्वेदः		II. वायुः		
C. सामवेदः		III. आदित्यः		
D. अथर्ववेदः		IV. अङ्गिराः		
वैदिक वाङ्मय – एक दृष्टि में				
वेद	आचार्य	देवता	ऋत्विक्	उपवेद
ऋग्वेद	पैल	अग्नि	होता	आयुर्वेद
यजुर्वेद	वैशम्पायन	वायु	अध्वर्यु	धनुर्वेद
सामवेद	जैमिनि	आदित्य	उद्गाता	गान्धर्ववेद
अथर्ववेद	सुमन्तु	सोम	ब्रह्मा	सर्पवेद

74. तैत्तिरीय- संहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण योजयत्?

- A. भवस्वामी B. क्षुरः
C. कुण्डिनः D. सायणः
E. कौशिकः भट्ट - भास्कर - मिश्रः

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A, C, D, B, E (b) C, A, E, B, D
(c) D, C, B, A, E (d) E, B, D, C, A

Ans. (b) : तैत्तिरीय - संहितायाः भाष्यकारान् कालक्रमेण योजयत् समुचितं विकल्पं— कुण्डिनः—भवस्वामी—कौशिकः भट्ट-भास्कर - मिश्रः—क्षुरः—सायणः। तैत्तिरीय संहिता के भाष्यकारों को कालक्रमानुसार रखने पर समुचित विकल्प इस प्रकार बनता है— कुण्डिन, भवस्वामी, कौशिकभट्ट, भास्कर मिश्र, क्षुर और सायणाचार्य। तैत्तिरीय शाखा कृष्ण यजुर्वेद की प्रमुख शाखा है। विष्णुपुराण के अनुसार इस शाखा के प्रवर्तक यक्ष के शिष्य तित्तिर ऋषि थे। तैत्तिरीय संहिता में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, तथा 631 अनुवाक हैं जिसका वर्ण्यविषय यज्ञीय कर्मकाण्ड (पुरोडास, वाजपेय, राजसूय इत्यादि यागानुष्ठान) का विशद वर्णन है।

75. वाक्यपदीयानुसारं शब्दब्रह्मविषये के कथने उचिते स्तः?

- A. नादैराहितबीजायाम्
B. अनादि निधनं ब्रह्म
C. बुद्धौ शब्दोऽवधार्यते
D. एकमेव यदाम्नातं भिन्नं शक्तिव्यपाश्रयात्

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A एवं B (b) B एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : वाक्यपदीयानुसारं शब्दब्रह्मविषये 'द्वौ' कथने उचिते स्तः (1) अनादि निधनं ब्रह्म (2) एकमेव यदाम्नातं भिन्नं शक्तिव्यपाश्रयात्। 'वाक्यपदीय' संस्कृत व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसे त्रिकाण्डी भी कहते हैं। वाक्यपदीय व्याकरण शृङ्खला का मुख्य दार्शनिक ग्रन्थ है। इसके रचयिता महावैयाकरण भर्तृहरि हैं। यह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है जिन्हें 'काण्ड' कहते हैं। यह समस्त ग्रन्थ पद्य में लिखा गया है। प्रथम ब्रह्मकाण्ड है जिसमें 157 कारिकाएँ हैं, दूसरा वाक्यकाण्ड है जिसमें 493 कारिकाएँ हैं और तीसरा 'पदकाण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। प्रथम काण्ड (ब्रह्मकाण्ड) मूल में एक प्रकार से आगमशास्त्र है। इसकी अभिव्यक्ति महेश्वर से है। आगम के अनुसार शब्द के चार स्वरूप हैं— परा, पश्यन्ती, मध्यमा, बैखरी। इनमें 'परा' ही ब्रह्म है। इसीलिए वाक्यपदीय की प्रथम कारिका में ही शब्दतत्त्व को अनादि और अनन्त तथा अक्षर ब्रह्म भी कहा गया

है। इसी पररूप ब्रह्म से संसार के पदार्थों की उत्पत्ति तथा व्यवहार विवर्तरूप में माना गया है। एकमेव यदाम्नातं भिन्नं शक्तिव्यपाश्रयात्। अर्थात् कारण- कार्यात्मक शक्तियों के बीज भूत और भोगरूप में अनेक प्रकार की स्थिति या लोक व्यवहार दृष्टिगत होता है। अर्थात् वह सूक्ष्म हुए भी सभी पदार्थों का मूल कारण है। यथा- वृक्ष के सभी भागों का कारण उसका बीज छोटा है।

76. स्त्री प्रत्ययानुसारमधोऽङ्कितेषु 'डीष्' प्रत्ययान्तः शब्दोऽस्ति

- (a) कुरुचरी (b) देवी
(c) पचन्ती (d) भवानी

Ans. (d) : स्त्री प्रत्ययानुसारमधोऽङ्कितेषु 'डीष्' प्रत्ययान्तः भवानी शब्दोऽस्ति। इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मूड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में डीष् प्रत्यय एवं इनको ही आनुक् का आगम भी होता है।

भवानी शब्द से 'इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मूड-हिम-अरण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणामानुक्' सूत्र द्वारा आनुक् का आगम और डीष् प्रत्यय हुआ। आगम और प्रत्यय में अनुबन्ध लोप होकर भव + आनु + ई बना। भव + आनु में सवर्णदीर्घ करके भवान् + ई, = भवानी। सु, उसका 'हल्ङ्याभ्यो दीर्घात्सुतिस्त्वपृक्तं हल्' से 'सु' का लोप होकर भवानी रूप सिद्ध हुआ। स्त्री प्रत्ययानुसार दिये गये विकल्पों में भवानी डीष् प्रत्ययान्त शब्द है।

77. 'सौत्रान्तिकमतम्', 'वैभाषिकमतम्' अनयोः सम्बन्धो वर्तते –

- (a) चार्वाकदर्शनेन (b) जैनदर्शनेन
(c) न्यायदर्शनेन (d) बौद्धदर्शनेन

Ans. (d) : 'सौत्रान्तिकमतम्', 'वैभाषिकमतम्' अनयोः 'बौद्धदर्शनेन' सम्बन्धो वर्तते। अर्थात् सौत्रान्तिक और वैभाषिकमत का सम्बन्ध बौद्ध दर्शन से है जो भगवान् बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया है। सिद्धान्तभेद के अनुसार बौद्ध परम्परा में चार दर्शन प्रसिद्ध हैं इनमें वैभाषिक और सौत्रान्तिक मत हीनयान परम्परा में हैं। योगाचार और माध्यमिक मत महायान परम्परा में हैं। यह उत्तरी बौद्धमत है सौत्रान्तिक मत के अनुसार पदार्थों का प्रत्यक्ष नहीं अनुमान होता है जबकि वैभाषिक मत बाह्य वस्तुओं की सत्ता तथा स्वलक्षणों के रूप में उनका प्रत्यक्ष मानता है।

78. मनुमते उत्तरोत्तरश्रेष्ठानि मान्यस्थानानि सन्ति

- A. बन्धुः B. वयः
C. कर्म D. विद्या
E. वित्तम्

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A, D, E, B, C (b) C, D, B, A, E
(c) D, A, B, E, C (d) E, A, B, C, D

Ans. (d) : मनुमते उत्तरोत्तरश्रेष्ठानि मान्यस्थानानि वित्तम्, बन्धुः, वयः, कर्म, विद्या सन्ति। मनुमतानुसार उत्तरोत्तर श्रेष्ठमान्य स्थानक्रम का समुचित विकल्प इस प्रकार है। वित्तम् → बन्धु → वय → कर्म → विद्या। अतः प्रश्नानुसार समुचित विकल्प (d) है।

79. संयोगानन्तरं पञ्चसन्निकर्षाणामयं क्रमः तर्कभाषायामुपलभ्यते

- A. समवेतसमवायः B. विशेषणविशेष्यभावः
C. संयुक्तसमवेत समवायः D. समवायः
E. संयुक्त समवायः

समुचितं विकल्पं चिनुत –

- (a) A, C, B, E, D (b) C, A, B, D, E
(c) E, C, A, B, D (d) E, C, D, A, B

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : संयोगान्तरं पञ्चसन्निकर्षाणामयं क्रमः तर्कभाषायामुपलभ्यते - संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः, समवायः, समवेतसमवायः, विशेषणविशेष्यभावः, समुचितं विकल्पं अस्ति। इन्द्रिय तथा अर्थ का जो सन्निकर्ष है वह प्रत्यक्ष ज्ञान (साक्षात्कारिणी प्रमा) का निमित्त होता है, वह 6 (छः) प्रकार से होता है, जैसे- (i) संयोग, (ii) संयुक्तसमवाय (iii) संयुक्तसमवेत समवाय (iv) समवाय (v) समवेतसमवाय (vi) विशेषणविशेष्यभाव।

इन 6 (छः) प्रकार के सन्निकर्षों में सर्वप्रथम संयोग का ग्रहण इसलिए किया गया है, क्योंकि द्रव्य के साथ इन्द्रिय का संयोग सन्निकर्ष होता है। और समस्त पदार्थों का आश्रय होने के कारण द्रव्य ही प्रधान है। संयोग के अनन्तर पाँच सन्निकर्षों में सर्वप्रथम संयुक्त समवाय का ग्रहण किया गया है। उसके अनन्तर गुण आदि में रहने वाली सामान्य के सन्निकर्ष (संयुक्त समवेत समवाय) का ग्रहण किया गया है। तृतीय स्थान पर समवाय सन्निकर्ष का ग्रहण है, क्योंकि समवाय भाव पदार्थों का धर्म है। फिर समवेत समवाय सन्निकर्ष का ग्रहण है, क्योंकि वह समवेत पदार्थ में समवाय से स्थित सामान्य का ग्राहक है। तदनन्तर विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष को रखा गया है। क्योंकि वह समवाय आदि का ग्राहक है। मुख्य रूप से संयोग तथा समवाय दो ही सम्बन्ध हैं, इन दोनों में ही सम्बन्ध का लक्षण घटित होता है अन्य सन्निकर्षों का गौण रूप से सम्बन्ध कहा जाता है। क्योंकि इनका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में दोनों सम्बन्धों से रहा करता है। अतः समुचित विकल्प (d) है।

80. सांख्याचार्याणां कालक्रमो यथातथं विभावनीयः

- A. कपिलः B. ईश्वरकृष्णः
C. आसुरिः D. पञ्चशिखः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A, B, D, C (b) A, C, B, D
(c) A, C, D, B (d) C, A, B, D

Ans. (c) : सांख्याचार्याणां कालक्रमो यथातथं विभावनीयः। अर्थात् कपिलः → आसुरिः → पञ्चशिखः → ईश्वरकृष्णः। इति समुचितं विकल्पं अस्ति। सांख्याचार्यों के कालक्रम को विभाजन करने पर आचार्यों का समुचित क्रम इस प्रकार है- (i) कपिल (ii) आसुरि (iii) पञ्चशिख (iv) ईश्वरकृष्ण।

कपिल-आचार्य कपिल को सांख्यशास्त्र (तत्त्व पर आधारित ज्ञान) के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है जिसके मान्य अर्थों के अनुसार विश्व का उद्भव विकासवादी प्रक्रिया से हुआ है। गीता में इन्हें श्रेष्ठ मुनि कहा गया है। 'सिद्धान्तो कपिलो मुनिः।'

आसुरि- आसुरि कपिलमुनि के शिष्य और सांख्याचार्य पञ्चशिख के गुरु थे।

पञ्चशिख-पञ्चशिख सांख्यदर्शन के एक प्रधान आचार्य थे जिनका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व में आया है। ये कपिल की शिष्य परम्परा में आसुरि के शिष्य थे। इनका उल्लेख वामनपुराण, कूर्मपुराण और वायुपुराण तथा तर्पण विधि में प्रतिष्ठित आचार्यों के रूप में हुआ है।

ईश्वरकृष्ण- 'सांख्यकारिका' सांख्यदर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है जिसके लेखक ईश्वरकृष्ण हैं। ईश्वर कृष्ण के गुरु पञ्चशिख माने जाते हैं।

81. अशोकस्य शाहबाजगढ़ी - शिलालेखस्य लिपिरस्ति

- (a) खरोष्ठी (b) देवनागरी
(c) ब्राह्मी (d) शारदा

Ans. (a) : अशोकस्य शाहबाजगढ़ी - शिलालेखस्य 'खरोष्ठी' लिपिरस्ति। अर्थात् अशोक के शाहबाजगढ़ी शिलालेख की लिपि खरोष्ठी है। शाहबाजगढ़ी मौर्य सम्राट अशोक से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, यह पाकिस्तान के उत्तरी भाग में खैबर प्रान्त के मरदान जिले में स्थित है। यहाँ तीसरी शताब्दी ई.पू. के मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक के शिला पर अभिलेख का सबसे प्राचीन उदाहरण मिलता है। क्योंकि भारतीय उपमहाद्वीप में लिखाई का यह सबसे पुराना ज्ञात नमूना है।

82. सा केन सह कस्य सम्बन्धः?

तालिका - I	तालिका - II
A. सङ्कल्पकम्	I. सिद्धिः
B. नवधा	II. मनः
C. अष्टधा	III. तामिस्रः
D. अष्टादशधा	IV. तुष्टिः

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A-I, B-III, C-II, D-IV
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-II, B-IV, C-I, D-III
(d) A-III, B-II, C-I, D-IV

Ans. (c) : तालिकानुसार समुचित विकल्प (c) है।

तालिका - I	तालिका - II
A. सङ्कल्पकम्	I. मनः
B. नवधा	II. तुष्टिः
C. अष्टधा	III. सिद्धिः
D. अष्टादशधा	IV. तामिस्रः

“सङ्कल्पकमत्र मनः” अर्थात् संकल्प करने वाला मन है। ‘संकल्प’ से मन लक्षित होता है। इन्द्रिय के द्वारा किसी विषय के ‘यह वस्तु’ इस प्रकार अविविक्त (अर्थात् सामान्य विषय से रहित) या अस्पष्ट रूप से ज्ञात होने पर मन के द्वारा ‘यह वस्तु ऐसी है ऐसी नहीं’ इस प्रकार से उनका संकल्प ज्ञात होता है।

तुष्टिर्नवधा- (i) प्रकृति (ii) उपादान (iii) काल (iv) भाग (v) पार (vi) सुपार (vii) पारापार (viii) अनुत्तमाम्भस् (ix) उत्तमाम्भस्

अष्टधा सिद्धिः-(i) अणिमा (ii) महिमा (iii) लघिमा (iv) गरिमा (v) प्राप्ति (vi) प्राकाम्य (vii) ईशित्व (viii) वशित्व।

83. ‘न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः’ इति मन्त्रांशे ‘सुतेकरासः’ इति पदस्य सायणानुसारमर्थोऽस्ति?

- (a) ऋत्विजः (b) कृषकाः
(c) ब्राह्मणाः (d) सुताः

Ans. (a) : ‘न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः’ इति मन्त्रांशे ‘सुतेकरासः’ इति पदस्य सायणानुसारमर्थो ऋत्विजः अस्ति। सायणानुसार ‘न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः’ इस मन्त्र में सुतेकरासः पद का अर्थ ‘ऋत्विज’ है। ऋग्वेद के 10वें मण्डल में ब्राह्मण, ज्ञान एवं यज्ञों के सम्पादन को श्रेष्ठ और हल आदि कार्यों से जीविकोपार्जन का हेतु माना गया है। अर्थात् जो वेदार्थ न जानने वाले अविद्वान इस लोक में ब्राह्मणों के और परलोक में देवों के साथ यज्ञादि कर्म नहीं करते और जो न ब्रह्मवेद जानने वाले हैं और न सोमयज्ञकर्ता हैं, वह ज्ञानी नहीं होते। वे ये पापकारिणी लौकिक वाणी को प्राप्त कर मूर्ख व्यक्ति के समान हल आदि साधन लेकर अपना भरण-पोषण कृषि आदि व्यवहार से करते हैं।

84. यशोधर्मणः मन्दसौरस्तम्भलेखानुसारं यशोधर्मा कस्य देवस्य समर्चनां करोति

- (a) कृष्णस्य (b) गणेशस्य
(c) विष्णोः (d) शिवस्य

Ans. (d) : यशोधर्मणः मन्दसौरस्तम्भलेखानुसारं यशोधर्मा ‘शिवस्य’ देवस्य समर्चनां करोति। यशोधर्मन के मन्दसौरस्तम्भलेखानुसार यशोधर्मा शिव की अर्चना करता है। यशोधर्मन का दूसरा नाम विष्णुवर्धन था। उसने राजाधिराजपरमेश्वर और सम्राट की उपाधि धारण की थी। अभिलेख में उसके अच्छे शासन और उसके सद्गुणों के कई उल्लेख हैं। यशोधर्मन की तुलना मनु, भरत से की गयी है। यशोधर्मन (विष्णुवर्धन) का मन्दसौर शिलालेख मध्यप्रदेश के मन्दसौर में स्थित एक शिलालेख है जो संस्कृत भाषा एवं गुप्तलिपि में है। यह लेख ‘ऊँ’ से आरम्भ होता है, जिसके पश्चात् शिव का मङ्गलाचरण है।

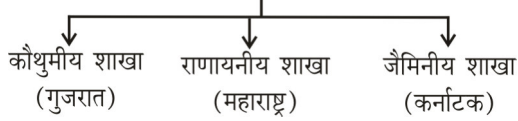
CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

85. सामवेदस्य शाखे स्तः?

- A. वाधूल - संहिता
B. शाट्यायनीय - संहिता
C. कपिष्ठल - कठ - संहिता
D. जैमिनीय - संहिता
(a) A एवं C (b) B एवं C
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : सामवेदस्य शाखे स्तः—(i) शाट्यायनीय - संहिता (ii) जैमिनीय - संहिता। अर्थात् महाभाष्य में पतञ्जलि ने सामवेद की एक सहस्र शाखाओं का उल्लेख किया है, (सहस्रवर्त्ता सामवेदाः) जबकि जैमिनि गृह्यसूत्र में 13 शाखाओं का उल्लेख मिलता है।
सामवेदीय शाखाएँ



86. 'वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः' इदं वाक्यस्वरूपं प्रतिपादितमाचार्येण अनेन

- (a) आचार्य - आनन्दवर्धनेन (b) आचार्य - मम्मटेन
(c) आचार्य - वामनेन (d) आचार्य - विश्वनाथेन

Ans. (d) : 'वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः' इदं वाक्यस्वरूपं प्रतिपादितमाचार्येण विश्वनाथेन। अर्थात् आचार्य विश्वनाथ ने 'आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति से युक्त पद-समूह को वाक्य माना है।

आकांक्षा = अर्थज्ञान की पूर्ति की जिज्ञासा
योग्यता = बुद्धि सम्मत सम्बन्ध
आसत्ति = अव्यवधान

यदि आकांक्षा पद न होता तो के बिना हाथी, मनुष्य, घोड़ा, यह पद समूह भी वाक्य हो जाता।

योग्यता— 'पदार्थों के परस्पर सम्बन्ध में बाध का न होना। यदि कोई कहे 'वह्निना सिञ्चति' आग से सींचता है तो यह वाक्य न होगा।

आसत्ति— आसत्ति के लिए अपेक्षित होता है अर्थ के विचार से परस्पर सम्बद्ध दो पदों के बीच समय और पदार्थ दोनों का अव्यवधान।

87. अथर्ववेदस्य शाखे स्तः?

- A. हरिद्रवीय - संहिता B. शौनक - संहिता
C. छागलेय - संहिता D. पैप्पलाद - संहिता

समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) A एवं C (b) A एवं D
(c) B एवं D (d) C एवं D

Ans. (c) : अथर्ववेदस्य शाखे स्तः— (i) शौनक - संहिता (ii) पैप्पलाद - संहिता। अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा—

(i) शौनकीय शाखा (शौनक)- अथर्ववेद संहिता शौनकीय शाखा है। इसमें 20 काण्ड, 730 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं।

(ii) पैप्पलाद शाखा— पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण किया गया। पैप्पलाद शाखा की संहिता 'पैप्पलाद संहिता' है। पिप्पलाद शाखा की एकमात्र प्रति कश्मीर में शारदालिपि में प्राप्त हुई थी। महाभाष्य काल में पिप्पलाद/पैप्पलाद शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।

पतञ्जलि ने महाभाष्य में 'नवधाऽथर्वणो वेदः' कहकर अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया है जो इस प्रकार हैं— (1) पिप्पलाद/पैप्पलाद (2) स्तौद/तौद (3) मौद (4) शौनकीय (5) जाजल (6) जलद (7) ब्रह्मवेद (8) देवदर्श (9) चारणवैद्य

88. वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः।

नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः॥

इति पद्यं कस्मिन् काव्ये विलसति?

- (a) कादम्बर्याम् (b) दशकुमारचरिते
(c) नलचम्पू काव्ये (d) शिवराज विजये

Ans. (c) : वाचः काठिन्यमायान्ति भङ्गश्लेषविशेषतः। नोद्वेगस्तत्र कर्तव्यो यस्मान्नैको रसः कवेः॥ इति पद्यं 'नलचम्पू काव्ये' विलसति। अर्थात् (काव्य की) वाणियाँ सभङ्गश्लेष की विशेषता से कठिन हो जाती है पर उससे घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि कवि के लिए एक ही रस नहीं है। कवि अपने काव्य में कहीं कठिनता और कहीं कोमलता का प्रयोग करता है, जिससे रसास्वाद दुष्कर नहीं होता है। यह पद्य नल चम्पू काव्य में मिलता है।

89. कथनद्वयम् अधोलिखितम् - तत्र एकम् अभिकथनम् (A), अपरञ्च तस्य कारणम् (R) इति -

अभिकथनम् (A) : यो वै एताम् एवं वेद, अपहृत्य पाप्मनम्, अनन्ते स्वर्गलोके, ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठतिः

कारणम् (R) : 'यतः स जानाति - तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा, वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्'

उपर्युक्त - अभिकथन - कारणमाश्रित्य समुचितं विकल्पं चिनुत -

- (a) (A) असत्यम् (R) सत्यम्
(b) (A) एवम् (R) उभावपि असत्यम्
(c) (A) एवम् (R) उभावपि सत्यम् (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य
(d) (A) सत्यम् (R) असत्यम्

Ans. (c) : अभिकथनम् (A) : यो वै एताम् एवं वेद, अपहृत्य पाप्मनम्, अनन्ते स्वर्गलोके, ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठतिः

कारणम् (R) : 'यतः स जानाति - तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा, वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्'

(A) एवम् (R) उभावपि सत्यम् (R) इति उचितं कारणमस्ति (A) इत्यस्य अर्थात् (A) और (R) दोनों सत्य हैं, (R) उचित कारण है (A) का।

90. 'स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।

हरताऽपि तनुं यस्य शंभुना न हृतं बलम्॥

इत्यस्मिन् पद्ये कः अलङ्कारे वर्तते?

- (a) तुल्ययोगिता (b) निदर्शना
(c) विभावना (d) विशेषोक्तिः

Ans. (d) : 'स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः। हरताऽपि तनुं यस्य शंभुना न हृतं बलम्॥ इत्यस्मिन् पद्ये 'विशेषोक्तिः' अलङ्कारो वर्तते। इस पद्य में विशेषोक्ति अलङ्कार है।

लक्षण— 'विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः॥' (काव्यप्रकाश) 'सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिस्तथा द्विधा॥' (साहित्य दर्पण) हेतु अर्थात् कारण के होते हुए भी फलाभिव्यक्ति न होने पर विशेषोक्ति अलङ्कार होता है विशेषोक्ति भी विभावना की ही तरह दो प्रकार की होती है—उक्तिनिमित्ता तथा अनुक्तनिमित्ता। आचार्य विश्वनाथ ने मम्मट द्वारा स्वीकृत 'अचिन्त्यनिमित्ता' नामक विशेषोक्ति के तृतीय भेद को 'अनुक्तनिमित्ता' में ही अन्तर्भूत माना है।

स एकस्त्रीणि-----बलम् ।
यह अचिन्त्यनिमित्ता विशेषोक्ति अलङ्कार का उदाहरण है।
तुल्ययोगिता— 'नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता' (काव्यप्रकाश)

निदर्शना— 'सम्भवन् वस्तुसम्बन्धोऽसम्भवन्वाऽपि कुत्रचित् ।

अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः निदर्शना॥' (काव्यप्रकाश)

विभावना— 'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।'

(काव्यप्रकाश)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानामुत्तरं देयम् :

षट्सु वेदाङ्गेषु शिक्षा हि प्रथमम् । वर्णानां यथातथम् उच्चारणं शिक्षितुमावश्यकमेतदङ्गम् । येन स्वजनः श्वजनो मा भूत् । नैके दोषा वर्णोच्चारणे दृश्यन्ते। अतः 'शब्दो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्' इत्याहुराचार्याः। उपलब्धानां शिक्षाग्रन्थानां संख्या शताधिका वर्तते, तेषु 40 ग्रन्थास्तु प्रायः प्रकाशिता एव । आपिशलिशिक्षा सर्वप्रथमं लाहौरतः प्रकाशिता। पाणिनीय शिक्षाया शिक्षाया श्लोकात्मकं; सूत्रात्मकं चेति पाठद्वयमुपलभ्यते । सूत्रात्मकपाठस्तु 'वर्णोच्चारणशिक्षा' इति नाम्ना प्रकाशिता। पाणिनीयशिक्षाया लघुपाठो बृहत्पाठोऽपि लभ्यते। बौद्धवैयाकरणस्य चन्द्रगोमिनः चान्द्रशिक्षाऽपि सुतरां प्रतिष्ठिता ।

91. चान्द्रशिक्षायाः प्रणेता वर्तते –

- (a) जैनवैयाकरणः (b) प्राकृतभाषाया वैयाकरणः
(c) बौद्धवैयाकरणः (d) शैवः

Ans. (c) : चान्द्रशिक्षायाः प्रणेता 'बौद्धवैयाकरणः' वर्तते। चान्द्रशिक्षा के प्रणेता बौद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमा (चन्द्रगोमिन) हैं।

92. 'वर्णोच्चारणशिक्षा' इत्यस्याः प्रणेता वर्तते–

- (a) आपिशलिः (b) इन्द्रः
(c) चन्द्रगोमी (d) पाणिनिः

Ans. (d) : 'वर्णोच्चारणशिक्षा' इत्यस्याः प्रणेता 'पाणिनिः' वर्तते। अर्थात् वर्णोच्चारण शिक्षा के प्रणेता पाणिनि हैं। छः वेदागों में शिक्षा का स्थान प्रथम है। वर्णोच्चारण का व्याकरण में बड़ा महत्व है। वर्णोच्चारण से ही 'स्वजन' और 'श्वजन' में अन्तर स्पष्ट होता है।
आपिशलिः – आपिशलिशिक्षा
इन्द्रः – ऐन्द्रशिक्षा
चन्द्रगोमी – चान्द्रशिक्षा
पाणिनि – वर्णोच्चारण शिक्षा (पाणिनीय शिक्षा)

93. कति शिक्षाग्रन्थाः प्रकाशिताः सन्ति –

- (a) चत्वारिंशत् (b) त्रयः
(c) दश (d) शताधिकाः

Ans. (a) : 'चत्वारिंशत्' शिक्षाग्रन्थाः प्रकाशिताः सन्ति। चालीस (40) शिक्षाग्रन्थ प्रकाशित हैं। आज सौ से अधिक शिक्षा ग्रन्थ उपलब्ध हैं परन्तु चालीस ग्रन्थ ही प्रकाशित हुए।

94. कस्याः शिक्षायाः लघुपाठो बृहत्पाठश्च विद्यते

- (a) आपिशलि शिक्षायाः (b) चान्द्रशिक्षायाः
(c) पाणिनीयशिक्षायाः (d) वर्णोच्चारणशिक्षायाः

Ans. (c) : 'पाणिनीयशिक्षायाः' लघुपाठो बृहत्पाठश्च विद्यते। पाणिनीय शिक्षा के श्लोकात्मक और सूत्रात्मक दो पाठ उपलब्ध हैं। सूत्रात्मक पाठ 'वर्णोच्चारण' के नाम से प्रकाशित है। पाणिनीय शिक्षा का लघुपाठ, बृहत्पाठ भी प्राप्त है।

95. स्वरतोऽपराधस्य किमुदाहरणमत्र वर्तते

- (a) इन्द्रशत्रुः (b) यजमानम्
(c) वाग्वज्रः (d) श्वजनः

Ans. (a) : स्वरतोऽपराधस्य 'इन्द्रशत्रुः' उदाहरणमत्र वर्तते। महाभाष्यकार ने 'दुष्टः शब्दः' में कहा है कि 'स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।' अर्थात् अशुद्ध शब्द वज्र बनकर यजमान का उसी प्रकार नाश करता है जैसे-'इन्द्रशत्रुः' में तत्पुरुष का स्वर न कर बहुव्रीहि का स्वर कर दिया जिससे उत्पन्न पुरुष (वृत्र) इन्द्र का घातक न होकर इन्द्र ही वृत्र का घातक हो गया।

अधोलिखितं गद्य - खण्डं पठित्वा प्रश्नानां समीचीनम् उत्तरं चिनुत –

तात ! चन्द्रापीड ! विदितवेदितव्यस्य अधीत सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवालञ्च निसर्गत एव अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम् । अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः।

भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम् । अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेन उपदेशगुणाः। सरस्वती परिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम् । गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति। उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते। इति शुकनासोपदेशं श्रुत्वा राजकुमारोऽतितरां धर्जितः।

96. अस्मिन् गद्यखण्डे कः उपदिशति?

- (a) तारपीडः (b) महाश्वेता
(c) शुकनासः (d) शूद्रकः

Ans. (c) : अस्मिन् गद्यखण्डे शुकनासः उपदिशति। इस गद्य खण्ड में शुकनास चन्द्रापीड को उपदेश देता है। जब तारपीड चन्द्रापीड को राज्याभिषेक करने वाले थे तो राज्याभिषेक के पहले शुकनास ने चन्द्रापीड को विभिन्न प्रकार के उपदेश दिये जिसमें लक्ष्मी के मद से होने वाले अभिमान पर विशेष चर्चा की। 'अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।'।

97. राजलक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं केन कारणेन न आलिङ्गति

- (a) ईर्ष्या (b) क्रोधेन
(c) लोभेन (d) स्वार्थबुद्ध्या

Ans. (a) : राजलक्ष्मीः सरस्वतीपरिगृहीतं जनं ईर्ष्या कारणेन न आलिङ्गति। अर्थात् जिनके पास सरस्वती रहती है राजलक्ष्मी मानो ईर्ष्या वश उनका आलिंगन नहीं करती है।

98. एष आदेशः कस्मै प्रदीयते?

- (a) कादम्बर्यै (b) चन्द्रापीडाय
(c) तारापीडाय (d) शुकनासाय

Ans. (b) : एष आदेशः 'चन्द्रापीडाय' प्रदीयते। यह आदेश चन्द्रापीड को प्रदान किया गया। उपर्युक्त गद्यांश में चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के पहले शुकनास ने चन्द्रापीड को यौवनारम्भ के पहले शास्त्र के उपदेश रूपी जल से उनके बुद्धि को निर्मल किया।

99. उपदेशाः कस्य मनसि सुखेन प्रविशन्ति?

- (a) मलरहिते मनसि (b) राजकुमारमनसि
(c) श्रद्धालुजनस्य मनसि (d) शिष्यमनसि

Ans. (a) : उपदेशाः मलरहिते मनसि सुखेन प्रविशन्ति। उपदेश मलरहित मन में सुख से प्रवेश करते हैं। जिनका मन निर्मल होता है उनके मन में उपदेश सहजता से प्रवेश कर जाता है और जिनका मन कलुषित होता है उनको कोई भी उपदेश दिया जाय वह निरर्थक ही सिद्ध होता है। 'शुकनासोपदेशं श्रुत्वा राजकुमारोऽतितरां धर्जितः।'।

100. यूनां बुद्धिः कदा कालुष्यमुपयाति?

- (a) कुमारवस्थायाम् (b) यौवनारम्भे
(c) राजनीतौ (d) वार्धक्ये

Ans. (b) : यूनां बुद्धिः यौवनारम्भे कालुष्यमुपयाति। नवयुवकों की बुद्धि यौवनारम्भ के समय कलुषता को प्राप्त करती है। यह सूक्ति बाणभट्ट विरचित शुकनासोपदेश से ली गयी है।

यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2021/जून-2022

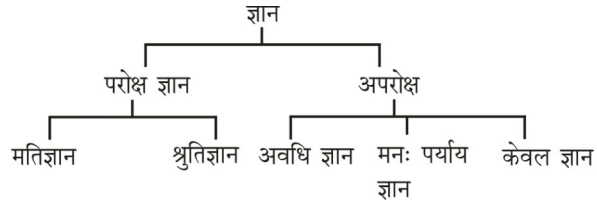
संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. सम्यग्दर्शनादिगुणजनितक्षयोपशमनिमित्तमवच्छिन्नविषयं ज्ञानम् -

- (a) श्रुतम् (b) मतिः
(c) अवधिः (d) मनःपर्यायः

Ans. (c) : सम्यग्दर्शनादिगुणजनितक्षयोपशमनिमित्तमवच्छिन्नविषयं ज्ञानम् अवधिः अस्ति। अर्थात् सम्यक् दर्शनादि के कारण होने वाले क्षय के उपशमन (बचाव) के कारण अन्य विषय का ज्ञान अवधि (काल या समय) है। जैन दर्शन में ज्ञान के दो भेद माने हैं-



इन्द्रियों तथा मन के निमित्त के बिना ज्ञान रूपी पदार्थों और उनकी कुल पर्यायों को स्पष्ट जानना अवधिज्ञान है। मनः पर्याय ज्ञान से दूसरों के मनोद्रव्यों के पर्यायों का शाक होता है।

अतः विकल्प (c) सही है।

2. सिद्धान्ते 'वैश्वदेवेन यजेत' इत्यत्र 'वैश्वदेव' पदं यागनामधेयम् अस्ति-

- (a) उत्पत्तिशिष्टगुणबलीयस्त्वात् (b) तत्प्रख्यशास्त्रात्
(c) तद्व्यपदेशात् (d) वाक्यभेदभयात्

Ans. (b) : सिद्धान्ते 'वैश्वदेवेन यजेत' इत्यत्र वैश्वदेव पदं यागनामधेयम् तत्प्रख्यशास्त्रात् अस्ति। सिद्धान्त में वैश्वदेवेन यजेत यहाँ वैश्वदेव पद यागनामधेय तत्प्रख्यशास्त्र से है। अर्थात् विधेय अर्थ का निश्चय कराता हुआ सार्थक नामधेय होता है। नामधेय का अर्थ याग का नाम। यागों के नाम हैं- उद्भिदा यजेत, बलभिदा यजेत, विश्वजित यजेत, वाजपेयेन यजेत, वैश्वदेवेन यजेत। वस्तुतः प्रकृत स्थल में भी तत्प्रख्यशास्त्ररूप निमित्त से ही 'वैश्वदेव' शब्द याग विशेष का नामधेय होता है। प्रस्तुत याग में विश्वदेव रूप गुण का प्रकाशक अर्थवाद वाक्य 'यद् विश्वदेवाः समयजन्त तद् वैश्वदेवस्य वैश्वदेवत्वम्' है। इसलिये 'वैश्वदेवेन यजेत' में 'वैश्वदेव' शब्द याग का नामधेय होता है।

3. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I

- (A) निपातः (I) कृतद्धितसमासाश्च
(B) नाम (II) भावप्रधानम्
(C) आख्यातम् (III) सत्त्वप्रधानानि
(D) प्रातिपदिकम् (IV) उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) I	II	III	IV	(b) IV	II	I	III
(c) IV	III	II	I	(d) II	III	I	IV

Ans. (c) : यथोचितं मेलनं अस्ति-

- (A) निपातः - उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति
(B) नाम - सत्त्वप्रधानानि
(C) आख्यातम् - भावप्रधानम्
(D) प्रातिपदिकम् - कृतद्धितसमासाश्च

उच्चावचेषु अर्थेषु निपतन्ति इति निपाताः - अर्थात् अनके अर्थों को लेकर जो वाक्य में गिरने लगते हैं या प्रयोग किये जाते हैं उन्हें निपात कहते हैं। निपात तीन प्रकार के होते हैं-

- (1) उपमार्थक निपात।
(2) पदपूरणार्थक निपात।
(3) कर्मोपसंग्रहार्थक निपात।

सत्त्वप्रधानानि नामानि भाव प्रधानम् आख्यातम्। अर्थात् सत्त्व (द्रव्य) की प्रधानता होता है उसे नाम कहते हैं। जैसे ब्रज्, गम्, पच् इत्यादि और जहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है। उसे आख्यात कहते हैं। जैसे ब्रजति, चलति, पचति आदि।

कृतद्धिसमासाश्च प्रातिपदिकम् - अर्थात् कृदन्त, तद्धितान्त और समासश्च प्रातिपदिक होते हैं।

4. याज्ञवल्क्यानुसारं प्रत्यभियोगं केषु विवादेषु कर्तुं शक्यते?

- (a) साहसेषु (b) ऋणादानेषु
(c) वेतनादानेषु (d) सम्भूयसमुत्थानेषु

Ans. (a) : याज्ञवल्क्यानुसारं प्रत्यभियोगं 'साहसेषु' विवादेषु कर्तुं शक्यते।

कुर्यात् प्रत्यभियोगं च कलहे साहसेषु च।

उभयोः प्रतिभूर्गाहः समर्थः कार्यनिर्णये॥

अर्थात् कलह (वाग्दण्ड, पारुष्य) में और साहस के विषय में अभियोग लगाना चाहिए तथा दोनों के प्रतिभूः (उचित दण्ड) ग्रहण कर समर्थ कार्य का निर्णय करना चाहिए।

साहसस्तेयपारुष्यगोभिशपात्ययये स्त्रियाम्।

विवादयेत्सद्य एव कालोऽन्यत्रेच्छया स्मृताः॥

अर्थात् याज्ञवल्क्य के अनुसार साहस, चोरी, गाली, गाय, अभिशाप (पाप का अभियोग) और स्त्री विषयक विवादों को तुरन्त निर्णय करे और विषयों में इच्छानुसार समय लगावे।

याज्ञवल्क्यानुसारं प्रत्यभियोग साहस के विवाद में करना चाहिए

5. रसादिध्वनौ अन्तर्भवतः-

- (A) वस्तुध्वनिः (B) अलङ्कारध्वनिः
(C) रसध्वनिः (D) भावध्वनिः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (D) एवम् (D)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (c) : रसादिध्वनौ 'रसध्वनि, भावध्वनि' अन्तर्भवतः। अर्थात् रसादि ध्वनि में रस ध्वनि और भाव ध्वनि अन्तर्भूत होती है। ध्वनि के दो भेद होते हैं- (1) लक्षणामूला ध्वनि (2) अभिधामूला ध्वनि। अभिधामूला के दो भेद-
(1) असंलक्ष्य क्रम व्यङ्ग्य (2) संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य।
संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य के तीन भेद होते हैं-
(1) शब्दशक्त्युत्थ (2) अर्थशक्त्युत्थ (3) उभयशक्त्युत्थ।
शब्दशक्त्युत्थ के वस्तुध्वनि और अलंकार ध्वनि से दो भेद होते हैं। अर्थशक्त्युत्थ के 12 भेद तथा उभयशक्त्युत्थ के एक भेद होते हैं। परन्तु असंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनि को रसध्वनि कहते हैं। अतः रसादि ध्वनि अर्थात् रसाभाव, भाव, भावाभास, भावशान्ति, भावोदय, भावसन्धि और भावशबलता आदि असंलक्ष्यक्रम व्यङ्ग्य के अन्तर्गत है। अतः विकल्प (c) सही है।

6. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
(A) स्पर्श-संघर्षी	(I) ट्
(B) संघर्षी	(II) च्
(C) स्पर्शः	(III) ष्
(D) अर्धस्वरः	(IV) य्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) I	IV	III	II	(b) II	III	I	IV
(c) II	I	III	IV	(d) III	I	IV	II

Ans. (b) : यथोचितं मेलनं अस्ति-

सूची-I	सूची-II
(A) स्पर्श-संघर्षी	- च्
(B) संघर्षी	- ष्
(C) स्पर्शः	- ट्
(D) अर्धस्वरः	- य्

स्पर्श-संघर्षी- च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, वर्ग हैं, संघर्षी- श्, ष्, सू, ह्, वर्ण हैं, स्पर्श वर्ण क से लेकर म् तक हैं तथा अर्धस्वर य् और ल् वर्ण हैं अतः विकल्प (b) सही है।

7. 'वास्तव-औपम्य-अतिशय-श्लेषाः' इति रूपेण अलङ्काराणां चतुर्धा विभाजनं करोति-

- (a) दण्डी (b) रुद्रटः
(c) वामनः (d) हेमचन्द्रः

Ans. (b) : वास्तव-औपम्य-अतिशय-श्लेषाः इति रूपेण अलङ्काराणां चतुर्धा विभाजनं रुद्रटः करोति। अर्थात् वास्तव-औपम्य अतिशय-श्लेष इस तरह अलङ्कारों का चार प्रकार से विभाजन रुद्रट करते हैं। रुद्रट ने अलंकारों का चार मूल तत्वों में विभाजन किया है।

- (i) वास्तव वर्ग में 23 (ii) औपम्यवर्ग में 21 (iii) अतिशय वर्ग में 12 (iv) श्लेष में 1 अलङ्कार माना है।

रुद्रट ने काव्य में रस दोष को 'विरस' नाम से अभिहित किया है। उनके ग्रन्थ का नाम काव्यालङ्कार है जो विषय की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक है। ग्रन्थ सोलह अध्यायों में पूर्ण है। प्रथमाध्याय में काव्य प्रयोजन और काव्य हेतु, द्वितीय में काव्यलक्षण, रीति, भाषाभेद, वक्रोक्ति आदि तीन शब्दालङ्कार, तृतीय, चतुर्थ में क्रमशः यमक और श्लेष, पांचवे में चित्र काव्य, छठे में शब्ददोष एवं उनका परिहार, सात से दस के चार अध्यायों में अर्थालङ्कार दोष, बारह से पन्द्रह तक के चार अध्यायों में रस आदि का निरूपण विवेचन और सोलहवें अध्याय में महाकाव्य, प्रबन्ध आदि का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ की पद्यसंख्या 734 है।

8. अधोलिखितेषु कौ द्वौ क्यप्प्रत्ययान्तौ?

- (A) आदृत्यः (B) आहत्य
(C) शप्यम् (D) जुष्यः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (d) : उपरिलिखितेषु आदृत्यः जुष्यः द्वौ क्यप्प्रत्ययान्तौ। अर्थात् आदृत्यः और जुष्यः ये दानों क्यप्प्रत्ययान्त शब्द हैं।

सूत्र- 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' इ, स्तु, शास्, वृ, दृ, जुष् तथा वृत्, वृध् आदि अन्यान्य धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है। क्यप् में ककार की लशक्वतद्धित से इत्संज्ञा और पकार की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा और दोनों का 'तस्यलोपः' से लोप होकर केवल 'य' शेष बचता है। आ+दृ+क्यप् = आदृत्यः, वृ+क्यप् = वृत्यः
शास् + क्यप् = शिष्यः, जुष् + क्यप् = जुष्यः।

9. 'आर्स पोएटिका' (Ars Poetica) इति ग्रन्थस्य कर्ता कः?

- (a) सैमुअल टेलर कोलरिजमहोदयः
(b) मैथ्यू आर्नल्डमहोदयः
(c) ईवर आर्मस्ट्रॉंग रिचर्ड्समहोदयः
(d) होरेस महोदयः

Ans. (d) : आर्स पोएटिका (Ars Poetica) इति ग्रन्थस्य कर्ता 'होरेस महोदयः' अस्ति अर्थात् 'आर्स पोएटिका' इस ग्रन्थ के कर्ता (रचयिता) होरेस महोदय हैं।

- आर्स पोएटिका और द आर्ट ऑफ पोएट्री होरेस द्वारा लिखित एक कविता है।
- सैमुअल टेलर कोलरिज महोदय की रचना 'द राइम ऑफ द एन्शियंट मेरिनर और कुबला खान' है।
- मैथ्यू आर्नल्डमहोदय की रचना- द स्कॉलर जिप्सी, द स्टडी ऑफ पोएट्री, कल्चर एण्ड एनार्की आदि है।
- ईवर आर्मस्ट्रॉंग रिचर्ड्स महोदय की रचना- द फिलॉसफी ऑफ रिटोरिक, कॉलरिज आन् इमैजिनेशन, साइन्स एण्ड पोएट्री आदि रचनाएँ हैं।

10. पदपूर्वार्धवक्रतायाः भेदेषु अस्ति-

- (a) कारकवैचित्र्यवक्रता
(b) क्रियावैचित्र्यवक्रता
(c) पुरुषवैचित्र्यवक्रता
(d) संख्यावैचित्र्यवक्रता

Ans. (b) : पदपूर्वार्धवक्रतायाः भेदेषु 'क्रियावैचित्र्यवक्रता' अस्ति वक्रोक्ति सिद्धान्त की वर्ण-विन्यास वक्रता, पदपूर्वार्ध वक्रता के आठ भेद हैं-

1. रूढ़िवैचित्र्य वक्रता	2. पर्याय वक्रता
3. उपचार वक्रता	4. विशेषण वक्रता
5. संवृत्ति वक्रता	6. वृत्ति वक्रता
7. लिंगवैचित्र्य वक्रता	8. क्रियावैचित्र्य वक्रता

11. 'वितर्कितः पुरा बुद्ध्या काचिदर्थं निवेशितः' इत्यत्र पुरा बुद्ध्या वितर्कितः कः?

- (a) ध्वनिरूपः शब्दः
(b) स्फोटरूपः बौद्धशब्दः
(c) बाह्योऽर्थः
(d) पूर्वोक्तेषु न कोऽपि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (b) : 'वितर्कितः पुरा बुद्ध्या काचिदर्थे निवेशितः' इत्यत्र पुरा बुद्ध्या वितर्कितः 'स्फोटरूपः बोद्धशब्दः'

वितर्कितः पुरा बुद्ध्या काचिदर्थे निवेशितः।

कारणेभ्यो विवृतेन ध्वनिना सोऽनुगृह्यते।। (वाक्यपदीयम्)

उच्चारण के पहले ही बुद्धि (अन्तःकरण की वृत्ति) से शब्द और अर्थ में अभेदाध्यास कर किसी एक अर्थ में विचारा गया और उसी अर्थ में तादात्म्य प्राप्त शब्द (स्फोट) फिर बोध कराने की इच्छा से स्थान और प्रयत्नों के द्वारा भाषित होकर स्वयं अविकारी भी कत्व, गत्वरूप विकृतधर्मों में भाषता है और घटध्वनि से अभिव्यक्त स्फोट पटध्वनि से अभिव्यक्तस्फोट से भिन्न है अतः घट ध्वनि पट का बोध नहीं करवाता।

'वाक्यपदीयम्' में कुल तीन काण्ड

1. ब्रह्मकाण्ड - 156
2. वाक्यकाण्ड - 486
3. पदकाण्ड - 1218 तथा 1860 कारिकाएँ

12. 'एको रसोऽङ्गीकर्तव्यो वीरः शृङ्गार एव वा' इति कस्याचार्यस्योक्तिः?

(a) पण्डितराजस्य	(b) धनञ्जयस्य
(c) विश्वनाथस्य	(d) मम्मटस्य

Ans. (b) : 'एको रसोऽङ्गीकर्तव्यो वीरः शृङ्गार एव वा' इति धनञ्जयाचार्यस्योक्तिः अर्थात् आचार्य धनञ्जय के अनुसार काव्य में एक ही रस शृङ्गार अथवा वीर रस होना चाहिए।

**13. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत-
कथनम् (I) :** आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्डः

कथनम् (II) : दुष्प्रणीतः क्रामक्रोधाभ्यामज्ञानाद्
वानप्रस्थपरिव्राजकान् अपि कोपयति।

यथोचितं विकल्पं चिनुत-

- | |
|-----------------------------------|
| (a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये |
| (b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये |
| (c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम् |
| (d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम् |

Ans. (a) : उपरिलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तर स्तः-

कथनम् (i) - आन्वीक्षिकीत्रयीवार्तानां योगक्षेम- साधनो दण्डः।

कथनम् (ii) - दुष्प्रणीतः क्रामक्रोधाभ्यामज्ञानाद् वानप्रस्थपरिव्राजकान् अपि कोपयति।

अत्र उभे अपि विकल्पं सत्ये।

अर्थशास्त्र के रचनाकार कौटिल्य के अनुसार चार प्रकार की विधाएँ हैं।

1. आन्वीक्षिकी- प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्। आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकीमता।।
2. त्रयी - सामर्थ्यजुदास्त्रयस्त्रयी।
3. वार्ता- कृषि पशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता।
4. दण्डनीति - आन्वीक्षिकी त्रयीवार्तानां योगक्षेम साधनो दण्डः। तस्यनीति दण्डनीतिः।

14. व्यवहारस्य पादान् क्रमेण नियोजयत-

(A) उत्तरपादः	(B) क्रियापादः
(C) सिद्धिपादः	(D) भाषापादः

समुचितं विकल्पं चिनुतः

(a) (D), (A), (B), (C)	(b) (D), (C), (B), (A)
(c) (C), (B), (D), (A)	(d) (A), (B), (C), (D)

Ans. (a) : व्यवहारस्य पादान् क्रमेण नियोजयत- भाषापादः

उत्तरपादः - क्रियापादः-सिद्धिपादः।

व्यवहार के पदों को क्रम से 'भाषापाद → उत्तर पद → क्रियापाद → सिद्धिपाद' होते हैं। याज्ञवल्क्य ने बीस व्यवहार पदों की गणना की है। कौटिल्य ने सोलह, नारद ने अट्ठारह और बृहस्पति ने उन्नीस स्वीकार किये हैं। उक्त अट्ठारह अथवा बीस ऋणादानादि व्यवहारपदों या विवादों में चतुष्पाद अर्थात् चतुरंश की कल्पना से व्यवहार वर्णित होता है। ये चार पाद हैं - भाषापाद, उत्तरपाद, क्रियापाद और सिद्धिपाद।

- (1) **भाषापाद-** अर्थात् अर्थों ने जैसा आवेदन किया है प्रत्यर्थी ने वैसा सामने लिखे। लेख पर वर्ष, मास, पक्ष, दिन, नाम जाति आदि लिखे- यह भाषापाद है।
- (2) **उत्तरपाद-** वादी के वाद को सुनने के बाद प्रतिवादी द्वारा सुने गये विषय-अभियोग का उत्तर पहले के आवेदक के सामने लिखना चाहिए- यह उत्तर पाद है।
- (3) **क्रियापाद-** प्रतिवादी का उत्तर सुनने के बाद वादी को तुरन्त प्रतिज्ञात अर्थ या लगाए गये अभियोग का साधन-प्रमाण लिखना चाहिए। यह क्रियापाद है।
- (4) **सिद्धिपाद-** उस साधन या प्रमाण की सिद्धि होने पर वादी सिद्धि या विजय प्राप्त करता है और इसके विपरीत होता है। यह सिद्धिपाद है। यह चतुष्पाद व्यवहार कहा जाता है।

15. अर्थशास्त्रे तन्त्रयुक्तीनां विवेचनं कस्मिन् अधिकरणे प्राप्यते?

(a) द्वितीये	(b) नवमे
(c) त्रयोदशे	(d) पञ्चदशे

Ans. (d) : अर्थशास्त्रे तन्त्रयुक्तीनां विवेचनं पञ्चदशे अधिकरणे प्राप्यते अर्थात् अर्थशास्त्र में तन्त्रयुक्तियों का विवेचन पन्द्रहवें अधिकरण में प्राप्त होता है। अर्थशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शदी ई.पू.) द्वारा रचित संस्कृत का एक ग्रन्थ है। इसमें राजव्यवस्था, कृषि, न्याय एवं राजनीति आदि के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। इसकी शैली उपदेशात्मक और सलाहात्मक है।

इसके मुख्य विभाग हैं-

1. विनयाधिकरण	2. अध्यक्ष प्रचार
3. धर्मस्थीयाधिकरण	4. कंटक शोधन
5. वृत्ताधिकरण	6. योगजन्याधिकरण
7. षाड्गुण्य	8. व्यसनाधिकरण
9. अभियास्यत्कर्माधिकरण	10. संग्रामाधिकरण
11. संघवृत्ताधिकरण	12. आबलीयसाधिकरण
13. दुर्गलम्भोपायाधिकरण	14. औपनिषदिकाधिकरण
15. तन्त्रयुक्ताधिकरण	

अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 उपविभाग तथा 6,000 श्लोक हैं।

16. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I

- | |
|----------------------|
| (A) नागेशः |
| (B) कैव्यटः |
| (C) जिनेन्द्रबुद्धिः |
| (D) पतञ्जलिः |

सूची-II

- | |
|-------------------------|
| (I) विवरणपञ्जिका |
| (II) प्रदीपः |
| (III) लघुशब्देन्दुशेखरः |
| (IV) इष्टिः |

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) III	IV	II	I	(b) I	III	II	IV
(c) III	II	I	IV	(d) IV	I	II	III

Ans. (c) : यथोचित मेलनं अस्ति-

- (A) नागेशः - लघुशब्देन्दुशेखरः
 (B) कैयटः - प्रदीपः
 (C) जिनेन्द्रबुद्धिः - विवरणपञ्जिका
 (D) पतञ्जलिः - इष्टिः

रचनाकार

रचना

नागेश	-	लघुशब्देन्दुशेखर, वृहत्शब्देन्दुशेखर परिभाषेन्दुशेखर
कैयट	-	महाभाष्य पर प्रदीप टीका
जिनेन्द्रबुद्धिः	-	विवरण पञ्जिका
पतञ्जलि	-	महाभाष्य, पातञ्जलयोगसूत्र, महानन्दकाव्य, सामवेदीय निदान सूत्र

17. अधोलिखितेषु ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं नास्ति-

- (a) भावावेशः (b) शीघ्रभाषणम्
 (c) एकान्तवार्ता (d) कृत्रिमता

Ans. (c) : उपरिलिखितेषु ध्वनिपरिवर्तनस्य कारणं एकान्तवार्ता नास्ति। अर्थात् उपर्युक्त में से ध्वनिपरिवर्तन का कारण 'एकान्तवार्ता' नहीं है जबकि भावावेशः, शीघ्रभाषणम्, कृत्रिमता ध्वनिपरिवर्तन का कारण है।

1. आभ्यान्तर कारण

2. बाह्यकारण

1. मुखसुख	1. व्यक्तिगत भिन्नता
2. अनुकरण की पूर्णता	2. भौगोलिक कारण
3. प्रयत्नलाघव	3. सामाजिक परिस्थिति
4. अशिक्षा	4. अन्य भाषाओं का प्रभाव
5. शीघ्रता	
6. बलाघात	
7. सादृश्यता	
8. भावावेश	

18. केन सह कस्य सम्बन्धः-

सूची-I

काव्यशास्त्रकृतयः

- (A) अलङ्कारसर्वस्वम्
 (B) काव्यादर्शः
 (C) चित्रमीमांसा
 (D) साहित्यदर्पणम्

सूची-II

टीकाकाराः

- (I) अनन्तदासः
 (II) केशवभट्टारकः
 (III) जयरथः
 (IV) धरानन्दः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) I	II	III	IV	(b) II	III	IV	I
(c) III	II	IV	I	(d) III	II	I	IV

Ans. (c) : समुचित विकल्पं अस्ति

सूची-I

काव्यशास्त्रकृतयः

- (A) अलङ्कारसर्वस्वम्
 (B) काव्यादर्शः
 (C) चित्रमीमांसा
 (D) साहित्यदर्पणम्

सूची-II

टीकाकारः

- जयरथः
 केशवभट्टारकः
 धरानन्दः
 अनन्तदास

रचना

रचनाकार

अलङ्कारसर्वस्वम्	-	रुय्यक
काव्यादर्श	-	दण्डी
चित्रमीमांसा	-	अप्पयदीक्षित
साहित्यदर्पण	-	आचार्य विश्वनाथ

19. 'सामदण्डौ प्रशंसन्ति राष्ट्राभिवृद्धये।'

इति श्लोकांशः कस्माद् उद्धृतः?

- (a) मनुस्मृतेः (b) याज्ञवल्क्यस्मृतेः
 (c) नारदस्मृतेः (d) अर्थशास्त्रात्

Ans. (a) : 'सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये।' इति श्लोकांशः मनुस्मृते उद्धृतः। अर्थात् बुद्धिमान लोग साम और दण्ड की प्रशंसा राष्ट्र के उत्थान के लिए नित्य करते थे।

श्लोकांश मनुस्मृति में उद्धृत है-

सामादीनां उपायानां चतुर्णां अपि पण्डिताः

सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये।।

बुद्धिमान लोग साम, दान, दण्ड और भेद इन चार उपायों में से साम और दण्ड की प्रशंसा राष्ट्र के उत्थान के लिए नित्य करते थे।

20. आङ्गिक - वाचिक - आहार्य - सात्त्विक - रूपाः भेदाः सन्ति -

- (A) अनुभावस्य (B) अभिनयस्य
 (C) विभावस्य (D) सञ्चारिभावस्य

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (C) एवम् (D) (b) (A) एवम् (B)
 (c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

Ans. (b) : आङ्गिक-वाचिक-आहार्य-सात्त्विक रूपाः अनुभावस्य, अभिनयस्य भेदाः सन्ति।

जब नट अपनी वाणी, शारीरिक चेष्टा, भावभङ्गिमा, मुखमुद्रा, वेशभूषा के द्वारा दर्शकों को, शब्दों के भावों का ज्ञान और रस की अनुभूति कराते हैं तब उस सम्पूर्ण समन्वित व्यापार को अभिनय कहते हैं।

भरतमुनि ने चार प्रकार का अभिनय माना है-

1. **आङ्गिक**- शरीर, मुख और चेष्टाओं से कोई भाव या अर्थ प्रकट करना। सिर, हाथ, कटि, वक्ष, पार्श्व और चारण द्वारा किया जाने वाला अभिनय या आङ्गिक अभिनय कहलाता है।
2. **सात्त्विक**- सात्त्विक अभिनय तो उन भावों का वास्तविक और हार्दिक अभिनय है जिन्हें रस सिद्धान्त वाले सात्त्विक भाव कहते हैं और जिसके अन्दर स्वेद, स्तंभ, कंप, अश्रु, रोमांच, स्वरभङ्ग और प्रलय की गणना होती है।
3. **वाचिक**- अभिनेता रंगमंच पर जो कुछ कहता है वह सबका सब वाचिक अभिनय कहलाता है।
4. **आहार्य**- आहार्य अभिनय वास्तव में अभिनय का अंग न होकर नेपथ्य कर्म का अंग है और उसका संबंध अभिनेता से उतना नहीं है जितना नेपथ्य सज्जा करने वालों से।

21. अधोलिखितेषु कः ध्वनिः स्पर्शवर्गे नास्ति?

- (a) प् (b) स्
 (c) त् (d) क्

Ans. (b) : उपरिलिखितेषु 'स' ध्वनि स्पर्शवर्गे नास्ति अर्थात् स स्पर्श वर्ण की ध्वनि नहीं है जब अन्य तीनों क्, त्, प् स्पर्श वर्ण की ध्वनि हैं।

इन वर्णों को स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं।

स्पर्श ध्वनियाँ हैं-

क वर्ग	- क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग	- च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग	- ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग	- त् थ् द् ध् न्
प वर्ग	- प् फ् ब् भ् म्
ऊष्म ध्वनियाँ	- श् ष् स् ह्
अन्तस्थ ध्वनियाँ	- य् व् र् ल्

22. 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते.....' इतीयं श्रुतिः विषयवाक्यम् अस्ति-

- (a) जन्माद्यधिकरणस्य (b) जिज्ञासाधिकरणस्य
(c) शास्त्रयोनित्वाधिकरणस्य (d) आनन्दमयाधिकरणस्य

Ans. (a) : 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते जन्माद्यधिकरणस्य' इतीयं श्रुतिः विषयवाक्यम् अस्ति।

यह सूक्ति तैत्तिरीयोपनिषद् (3/1) से लिया गया है।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।

यत्प्रयत्नयभिसंविशन्ति, तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति॥

ये सब प्रत्यक्ष दिखने वाले प्राणी जिससे उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होकर जिसके सहारे जीवित रहते हैं तथा अन्त में इस लोक से प्रयाण करते हुए जिसमें प्रवेश करते हैं, उसको तत्व से जानने की इच्छा कर, वही ब्रह्म है।

23. अभावविषयकप्रत्यक्षप्रमायां चक्षुरिन्द्रियस्य अभावपदार्थस्य च मध्ये सन्निकर्षः-

- (a) समवेतसमवायः (b) संयुक्तसमवेतसमवायः
(c) समवायः (d) विशेषणविशेष्यभावः

Ans. (d) : अभावविषयकप्रत्यक्षप्रमायां चक्षुरिन्द्रियस्य अभावपदार्थस्य च मध्ये सन्निकर्षः विशेषणविशेष्य भावः।

यथा चक्षुषा संयुक्ते भूतले घटाभावो गृह्यते 'इह भूतले घटो नास्ति' इति तदा विशेष्यविशेषण भाव सम्बन्धः। अर्थात् जब चक्षु से संयुक्त भूमि पर 'यहाँ भूतल पर घट नहीं है' इस प्रकार घट के अभाव का ग्रहण होता है तब विशेष्य-विशेषण भाव सन्निकर्ष हुआ करता है।

इन्द्रियार्थस्तु यः सन्निकर्षः साक्षात्कारिक प्रमा हेतुः स षड्विधः एव।

1. संयोगः	2. संयुक्तसमवायः
3. संयुक्त समवेतसमवायः	4. समवायः
5. समवेत समवाय	6. विशेषण विशेष्यभावः

24. ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण 'रक्तसंज्ञा' कस्य भवति?

- (a) अनुनासिकस्य (b) अनुस्वारस्य
(c) विसर्जनीयस्य (d) जिह्वामूलीयस्य

Ans. (a) : ऋक्प्रातिशाख्यानुसारेण 'अनुनासिकस्य' रक्तसंज्ञा भवति अर्थात् ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार अनुनासिक वर्ण (ञ् म् ङ् ण् न्) रक्त संज्ञक कहलाते हैं।

'रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः'। अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं। स्वरभक्ति दो प्रकार की होती है-

1. दीर्घस्वर भक्ति	2. ह्रस्व स्वर भक्ति

यदि एक ही 'ऊष्म' वर्ण के परे हो तो 'स्वर भक्ति' दीर्घ होती है और यदि द्वित्व-प्राप्त 'ऊष्म' वर्ण के परे हो तो 'स्वरभक्ति' ह्रस्व होती है।

25. ऋणादाने वृद्धिः कतिविधा?

- (a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्विधा (d) पञ्चविधा

Ans. (c) : ऋणादाने वृद्धिः चतुर्विधाः। अर्थात् ऋणादान में वृद्धि चार प्रकार की होती है।

अशीतिभागो वृद्धिः स्यान्मासि मासि सम्बन्धके।

वर्णक्रमाच्छतं द्वित्रिचतुष्पञ्चकमन्यथा ॥37॥

अर्थ- बन्धक रखे हुए धन पर उसका अस्सीवाँ भाग प्रत्येक मास में ब्याज होता है। अन्यथा (बन्धक न होने पर) वर्ण के अनुसार (ब्राह्मण आदि से क्रमशः) दो, तीन, चार और पाँच प्रतिशत ब्याज लेना चाहिए।

अतः विकल्प (c) सही है।

26. अधोलिखितेषु वर्णेषु कौ सोष्माणौ स्तः?

- (A) क् (B) ख्
(C) न् (D) द्

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (D) एवम् (D)

Ans. (d) : उपरिलिखितेषु वर्णेषु ख्, द् सोष्मवर्णौ स्तः।

अर्थात् उपर्युक्त वर्णों में ख् और द् सोष्म वर्ण हैं।

द्वितीय चतुर्थी वर्णों सोष्म वर्णों वेदितव्यो।

वर्णों के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण सोष्म वर्ण कहलाते हैं।

जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ।

अतः विकल्प (d) सही है।

27. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' इत्यस्मिन् वाक्ये 'विषम्' इति पदे द्वितीयाविभक्तिः केन सूत्रेण भवति?

- (a) तथायुक्तं चानीप्सितम् (b) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(c) कर्मणि द्वितीया (d) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया

Ans. (c) : 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' इत्यस्मिन् वाक्ये 'विषम्' इति पदे द्वितीया विभक्ति 'कर्मणि द्वितीया' सूत्रेण भवति।

अर्थात् इस वाक्य में 'विषं' इस पद में द्वितीया विभक्ति का विधान 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से होती है। 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' वाक्य में ओदनं मुख्य कर्म है और 'विषं' गौण कर्म है अतः मुख्य कर्म में कर्तुरीप्सिततमं कर्म सूत्र से 'ओदनं' की कर्मसंज्ञा तथा 'विषं' में तथायुक्तं चानीप्सितं सूत्र से कर्म संज्ञा तथा दोनों में 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया का विधान होता है।

अतः विकल्प (c) सही है।

28. ध्वनेः प्रकारद्वयं भर्तृहरिमते किम्?

- (A) आहार्यम् (B) वैकृतः
(C) संस्कृतः (D) प्राकृतः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (B) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (a) : ध्वनेः प्रकारद्वयं भर्तृहरिमते वैकृतः प्राकृतः स्तः। अर्थात् भर्तृहरि के मत में ध्वनि के दो प्रकार वैकृत और प्राकृत हैं।

29. अधोलिखितेषु कः सामवेदस्य सप्तस्वरेषु न परिगणयते?

- (a) ऋषभः (b) पञ्चमः
(c) उत्तमः (d) मध्यमः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (c) : उपरिलिखितेषु उत्तमः सामवेदस्य सप्तस्वरेषु न परिगण्यते। अर्थात् सामवेद के सप्तस्वरों में उत्तम स्वर की गणना नहीं की जाती है जबकि ऋषभः, पञ्चमः, मध्यमः सप्तस्वरों की उत्पत्ति के बारे में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। ऐसा माना जाता है कि वे किसी एक व्यक्ति या सभ्यता का काम होने के बजाय समय के माध्यम से विकसित हुए हैं। हिन्दू धर्म की सबसे पुरानी पवित्र पुस्तकों में से एक सामवेद, सप्तस्वरों का पहला उल्लेख करता है। सामवेद के अनुसार सप्त स्वर 'सात स्वर के पैमाने' हैं।

सामवेद के 7 सप्त स्वर-

1. षडज्	2. ऋषभ
3. गांधार	4. पञ्चम
5. धैवत	6. मध्यम
7. निषाद	

**30. साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।
विजेतुं प्रयतेताऽरीन् न युद्धेन कदाचन॥
इति श्लोकः कस्माद् ग्रन्थात्?**

(a) याज्ञवल्क्यस्मृतेः	(b) अर्थशास्त्रात्
(c) नारदस्मृतेः	(d) मनुस्मृतेः

Ans. (d) : साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरथवा पृथक्।

विजेतुं प्रयतेताऽरीन् न युद्धेन कदाचन॥

इति श्लोकः मनुस्मृतेः ग्रन्थात्।

अर्थात् 'साम' से 'दाम' से इन सब उपायों से एक साथ अथवा अलग-अलग एक-एक से शत्रुओं को जीतने का प्रयत्न करें, कभी पहले युद्ध से जीतने का यत्न न करें। यह श्लोक मनुस्मृति ग्रन्थ से अवतरित है।

31. असमवायिकारणत्वम् एव अस्ति-

(a) द्रव्यसामान्ययोः	(b) अभावसमवाययोः
(c) क्रियागुणयोः	(d) विशेषसमाहारयोः

Ans. (c) : असमवायिकारणत्वम् एव क्रियागुणयोः अस्ति। असमवायिकारण गुण या कर्म (क्रिया) हुआ करते हैं, जैसे पट का असमवायी कारण तन्तु-संयोग तथा पटरूप का असमवायी कारण तन्तु रूप दोनों ही हैं। क्रिया भी असमवायिकारण होती है, जैसे- जब किसी गाड़ी के पहियों (अवयव) में गमन क्रिया होती है तो उससे गाड़ी (अवयवी) में भी गमन क्रिया हो जाती है। यहाँ गाड़ी की क्रिया में पहियों की क्रिया उसी प्रकार असमवायी कारण है जिस प्रकार पट-रूप में तन्तु रूप असमवायी कारण है।

32. समुचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I				सूची-II			
(A) उणादिकोषः		(I) भट्टोजिदीक्षितः					
(B) प्रौढमनोरमा		(II) हेमचन्द्रः					
(C) महाभाष्यदीपिका		(III) पाणिनिः					
(D) हेमशब्दानुशासनम्		(IV) भर्तृहरिः					
- समुचितं विकल्पं चिनुत-**
- | | | | | | | | |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| A | B | C | D | A | B | C | D |
| (a) III | I | IV | II | (b) I | II | III | IV |
| (c) IV | II | III | I | (d) II | IV | III | I |

Ans. (a) : समुचितं मेलनं कुरुत-

सूची-I		सूची-II	
(A) उणादिकोषः		(III) पाणिनिः	
(B) प्रौढमनोरमा		(I) भट्टोजिदीक्षितः	

(C) महाभाष्यदीपिका	(IV) भर्तृहरिः
(D) हेमशब्दानुशासनम्	(II) हेमचन्द्रः

उणादिकोषः- उणादिकोष पाणिनि के पाँच उपदेशों का एक भाग है। यह व्याकरणिक ग्रन्थ है। आचार्य पाणिनि के 5 उपदेश इस प्रकार हैं-

1. अष्टाध्यायी	2. धातुपाठ
3. गणपाठ	4. उणादिकोष
5. लिङ्गानुशासनम्	

प्रौढमनोरमा- भट्टोजि दीक्षित 17वीं शताब्दी में उत्पन्न संस्कृत वैयाकरण थे जिन्होंने सिद्धान्त कौमुदी की रचना की। इस ग्रन्थ पर उन्होंने स्वयं प्रौढमनोरमा टीका लिखी। पाणिनीय सूत्रों पर अष्टाध्यायी क्रम से एक अपूर्ण व्याख्या शब्दकौस्तुभ तथा वैयाकरणभूषण कारिका भी इनके ग्रन्थ हैं। इनकी सिद्धान्त कौमुदी लोकप्रिय है।

महाभाष्यदीपिका- यह आचार्य भर्तृहरि की महाभाष्य पर विस्तृत तथा प्रौढ़ व्याख्या है। अनेक उद्धरणों से अनुमान होता है कि उन्होंने पूरे महाभाष्य पर दीपिका नामक टीका लिखी।

हेमशब्दानुशासनम्- आचार्य हेमचन्द्र ने समस्त व्याकरण वाङ्मय का अनुशीलन कर शब्दानुशासन एवं अन्य व्याकरण ग्रन्थों की रचना की।

33. काव्यालङ्कारसूत्रस्य 'कविप्रिया' वृत्ते: रचयिता कः?

(a) सहदेवः	(b) गोपेन्द्रः
(c) भट्टगोपालः	(d) वामनः

Ans. (d) : काव्यालङ्कारसूत्रस्य 'कविप्रिया' वृत्ते: रचयिता वामनः।

काव्यालङ्कार सूत्र के 'कविप्रिया' नामक वृत्ति के रचयिता आचार्य वामन हैं। काव्यालङ्कारसूत्र आचार्य वामन द्वारा रचित एकमात्र ग्रन्थ है। यह सूत्र शैली में लिखा गया है। इसमें 5 अधिकरण हैं। प्रत्येक अधिकरण अध्यायों में विभक्त हैं। इस ग्रन्थ में कुल 12 अध्याय हैं। आचार्य वामन ने इस पर कविप्रिया नामक वृत्ति लिखी।

प्रणम्य परमं ज्योतिर्वामनेन कविप्रिया।

काव्यालङ्कारसूत्राणां स्वेषां वृत्तिर्विधीयते॥

34. अधोलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं चिनुत-

कथनम् (I) : रुपकेषु नाटके पूर्वमुच्यते: यतः

कथनम् (II) : अन्येषां प्रकृतित्वात्, भूयः रसपरिग्रहात्

सम्पूर्णलक्षणत्वात्

- | |
|-----------------------------------|
| (a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये |
| (b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये |
| (c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम् |
| (d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम् |

Ans. (a) : उपरिलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये अस्ति।

अर्थात् उपर्युक्त दो कथनों पर आश्रित समुचित उत्तर (I) तथा (II) दोनों सत्य हैं। 'रूपक तत्समारोपात्' अर्थात् रूपकों में नाटक सबसे प्रथम कहा गया है।

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।

व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति ॥ दशरूपक

नाटक अन्य रूपकों का कारण होने से और रस ग्रहण करने से सम्पूर्ण लक्षण घटित होने से नाटक रूपकों में प्रथम स्थान पर होता है। अतः विकल्प (a) सही है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

35. 'सिति च' सूत्रेण का सञ्ज्ञा विधीयते?

- (a) सर्वनामसञ्ज्ञा (b) प्रगृह्यसञ्ज्ञा
(c) भसञ्ज्ञा (d) पदसञ्ज्ञा

Ans. (d) : 'सिति च' सूत्रेण पदसञ्ज्ञा विधीयते।

अर्थात् 'सिति च' सूत्र से पदसञ्ज्ञा का विधान होता है।

यचिभम् सूत्र भसञ्ज्ञक, सुडनपुंसकस्य सूत्र सर्वनाम स्थान सञ्ज्ञक सूत्र है। अतः विकल्प (d) सही है।

36. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I आचार्याः	सूची-II ग्रन्थाः
(A) कालिदासः	(I) छन्दसूत्रम्
(B) केदारभट्टः	(II) वृत्तरत्नाकरः
(C) क्षेमेन्द्रः	(III) श्रुतबोधः
(D) पिङ्गलः	(IV) सुवृत्ततिलकम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) I	II	III	IV	(b) II	III	IV	I
(c) III	II	IV	I	(d) IV	II	III	I

Ans. (c) : यथोचितं मेलनं अस्ति। अर्थात् समुचित मेल है-

सूची-I (आचार्याः)	सूची-II (ग्रन्थाः)
(A) कालिदासः	- श्रुतबोधः
(B) केदारभट्टः	- वृत्तरत्नाकरः
(C) क्षेमेन्द्रः	- सुवृत्ततिलकम्
(D) पिङ्गलः	- छन्दसूत्रम्

अतः विकल्प (c) सही है।

37. 'स नः पितेव सूनवेः.....' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते वर्तते?

- (a) अग्निसूक्ते (b) वरुणसूक्ते
(c) इन्द्रसूक्ते (d) पुरुषसूक्ते

Ans. (a) : 'स नः पितेव सूनवे' इति मन्त्रांशः अग्निसूक्ते वर्तते। अर्थात् यह मन्त्रांश अग्निसूक्त में है।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सृपायनो भव।

सचस्वा नः स्वस्तये ॥११॥

अर्थ- अग्नि! तुम हमारे लिए सुगम बनो, जैसे-पिता अपने पुत्र के लिए (सुगम होता है) तथा हमारे कल्याण के लिए सदा हमारे साथ रहो। अग्नि सूक्त में गायत्री छन्द है। यह प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का 9वाँ मन्त्र है। इस सूक्त के ऋषि 'मधुच्छन्दा' तथा देवता अग्नि है। गायत्री छन्द में तीन पाद तथा प्रत्येक पाद में 8 वर्ण होते हैं अतः कुल 24 वर्ण होते हैं।

38. वर्गाणां पञ्चमवर्णैः युक्तो हकारो भवति-

- (a) कण्ठ्यः (b) ओष्ठ्यः
(c) जिह्वामूलीयः (d) मूर्धन्यः

Ans. (b) : वर्गाणां पञ्चमवर्णैः हकारो 'ओष्ठ्यः' भवति। अर्थात् वर्गों के पञ्चम वर्णों से युक्त ह वर्ण ओष्ठ्य होता है।

हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्तःस्थाभिश्च संयुतम्।

उरस्य तं विजानीयात्कण्ठ्यमाहुरसंयुतम् ॥१६॥

आठ उच्चारण वर्णों में उरस् से उच्चार्यमाण ओष्ठ्य है। वह हकार जो कवगादि के पञ्चम व्यञ्जन से एवं अन्तःस्थ वर्ग (य, र, ल, व) से संयुक्त हो। इसमें भिन्न हकार कण्ठस्थानक (कण्ठ्य) है।

39. 'ब्रह्मावर्त' किं प्रचक्षते?

- (a) सरस्वतीदृषद्वत्योः यदन्तरम् (b) सरस्वतीयमुनयोः यदन्तरम्
(c) गंगादृषद्वत्योः यदन्तरम् (d) गंगासरस्वत्योः यदन्तरम्

Ans. (a) : 'ब्रह्मावर्त' सरस्वतीदृषद्वत्योः यदन्तरम् प्रचक्षते।

अर्थात् 'ब्रह्मावर्त' सरस्वती और दृषद्वती देव नदियों के बीच का भाग कहलाता है।

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्दन्तरम्।

त देवनिमित्तं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥१७॥

अर्थ- सरस्वती और दृषद्वती देव नदियों के मध्य का जो देवताओं का रचा हुआ देश है उसको ब्रह्मावर्त कहते हैं।

40. शब्दब्रह्मणः शक्तिद्वयं किम्?

- (A) अर्थशक्तिः (B) अभ्यनुज्ञा
(C) प्रतिबन्धः (D) शब्दशक्तिः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C) (d) (B) एवम् (D)

Ans. (c) : शब्दब्रह्मणः अभ्यनुज्ञा, प्रतिबन्धः अस्ति। अर्थात् शब्दब्रह्म की अभ्यनुज्ञा और प्रतिबन्ध दो शक्तियाँ हैं।

अतः विकल्प (c) सही है।

41. अधोलिखितेषु मीमांसादर्शनस्य आचार्यो न स्तः-

- (A) मुरारिमिश्रः (B) शबरस्वामी
(C) गदाधरः (D) जगदीशः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (b) : उपरिलिखितेषु मीमांसादर्शनस्य आचार्यो शबरस्वामी, गदाधरः न स्तः अर्थात् उपरिलिखित मीमांसादर्शन के आचार्य शबरस्वामी और गदाधर नहीं हैं। जबकि अन्य दोनों विकल्प मुरारिमिश्र और जगदीश मीमांसादर्शन के आचार्य हैं।

मीमांसा या पूर्वमीमांसा दर्शन हिन्दुओं के छः दर्शनों में से एक है जिसमें वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या की गयी है। इसके प्रणेता आचार्य जैमिनि हैं। मीमांसा का तत्त्व सिद्धान्त विलक्षण है। इसकी गणना अनीश्वरवादी दर्शनों में से एक है। मीमांसा दर्शन में छः प्रमाण स्वीकार किये जाते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि।

जैमिनि-सूत्रों पर शबर स्वामी का विशद् भाष्य है जिसे शबरभाष्य कहते हैं। प्रभाकर और कुमारिल के समान ही मुरारि मिश्र ने मीमांसा के क्षेत्र में एक नये मत का प्रतिपादन किया जिसे मुरारिमत कहते हैं। इनके ग्रन्थ क्रमशः इस प्रकार हैं-

(i) त्रिपादी (ii) नीतिनयन (iii) एकादशाध्यायाधिकरण

42. शब्दालङ्कारौ स्तः-

- (A) यमकम् (B) रूपकम्
(C) उत्प्रेक्षा (D) अनुप्रासः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (D) (b) (C) एवम् (B)
(c) (B) एवम् (D) (d) (A) एवम् (C)

Ans. (a) : शब्दालङ्कारौ स्तः- यमकम्, अनुप्रासः। काव्य में शब्दगत चमत्कार या शब्द से जो प्रभाव किसी काव्य पर डाला जाता है उसे शब्दालङ्कार कहते हैं। शब्दालङ्कार काव्य में शब्दों पर आश्रित होता है। शब्दालङ्कार के भेद- शब्दालङ्कार के मुख्य रूप से 7 भेद होते हैं जो इस प्रकार हैं

1. अनुप्रास अलङ्कार	2. यमक अलङ्कार
3. श्लेष अलङ्कार	4. वक्रोक्ति अलङ्कार
5. पुनरुक्तिवदाभास अलङ्कार	6. वीप्सा अलङ्कार
- जबकि रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलङ्कार की गणना अर्थालङ्कार में की जाती है।

43. विनियोगविधेः प्रमाणानि क्रमशः लिखत-

(A) लिङ्गम्	(B) वाक्यम्
(C) श्रुतिः	(D) प्रकरणम्
(E) स्थानम्	

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A), (B), (C), (D), (E) (b) (B), (D), (A), (C), (E)
 (c) (E), (A), (B), (D), (C) (d) (C), (A), (B), (D), (E)

Ans. (d) : विनियोगविधेः प्रमाणानि क्रमशः लिखत- श्रुतिः लिङ्गम्, वाक्यम्, प्रकरणम्, स्थानम्।

अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः। अर्थात् अङ्गों के साथ सम्बन्धबोधक विधि को विनियोग विधि कहते हैं। उदाहरणार्थ-दध्ना जुहोति अर्थात् दधि के द्वारा होम का सम्पादन होता है।

विनियोग विधि के षट् सहकारी भूत प्रमाण



44. तत्पुरुषसमासस्य भेदद्वयं किम्?

(A) प्रादिः	(B) उपपदम्
(C) तद्गुणसंविज्ञानः	(D) इतरेतरयोगः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (B) एवम् (C)	(b) (C) एवम् (D)
(c) (A) एवम् (B)	(d) (A) एवम् (D)

Ans. (c) : तत्पुरुषसमासस्य भेदद्वयं- प्रादिः उपपदम्। जिस समास में उत्तरपद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जब समास में पूर्व पद उपसर्ग हो वहाँ प्रादि तत्पुरुष समास होता है। जैसे-पर्यध्ययनः।

और जब तत्पुरुष समास में उत्तरपद कोई क्रिया होती है तब उपपदतत्पुरुष समास होता है। जैसे-कुम्भकारः, धनदः, मर्मज्ञः, धर्मज्ञः।

45. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I

(A) प्रत्यक्षप्रमाणम्	(I) अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिः
(B) अनुमानम्	(II) प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलम्
(C) चित्तम्	(III) विशेषावधारणप्रधाना वृत्तिः
(D) निद्रा	(IV) सामान्यावधारणप्रधाना वृत्तिः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A B C D	A B C D
(a) IV III I II	(b) II I III IV
(c) III IV II I	(d) I II IV III

Ans. (c) : यथोचितं मेलनं अस्ति-

सूची-I

सूची-II

(A) प्रत्यक्षप्रमाणम्	– विशेषावधारणप्रधानावृत्तिः
(B) अनुमानम्	– सामान्यावधारणप्रधाना वृत्तिः
(C) चित्तम्	– प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलम्
(D) निद्रा	– अभावप्रत्ययावलम्बना वृत्तिः

समुचित विकल्प (c) सही उत्तर है।

46. आधुनिकयुगे ब्राह्मीलिपिं सर्वप्रथमं कः पठितुं समर्थः अभवत्?

(a) जेम्सप्रिंसमहोदयः	(b) चार्ल्समैनमहोदयः
(c) विल्सनमहोदयः	(d) बी.बी. लालमहोदयः

Ans. (a) : आधुनिकयुगे ब्राह्मीलिपिं सर्वप्रथमं जेम्सप्रिंसमहोदयः पठितुं समर्थः अभवत्।

अर्थात् आधुनिक युग में ब्राह्मीलिपि को पढ़ने में सर्वप्रथम जेम्सप्रिंस महोदय समर्थ हुए। प्राचीन भारतीय लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी के सर्वप्रथम वाचन का श्रेय जेम्स प्रिंसेस को प्राप्त है, जिन्होंने सर एलेक्जेंडर कनिंघम के सहयोग से मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेखों को पढ़कर इस कार्य को प्रतिपादित किया।

47. 'रिटोरिक' इति ग्रन्थस्य कर्ता कः?

(a) प्लेटोमहोदयः	(b) अरस्तुमहोदयः
(c) बेनेदितो क्रोचेमहोदयः	(d) होरेसमहोदयः

Ans. (b) : 'रिटोरिक' इति ग्रन्थस्य कर्ता- अरस्तु महोदयः।

'रिटोरिक' इस ग्रन्थ के लेखक अरस्तू है। अरस्तू एक ग्रीक दार्शनिक थे। वे दुनिया के बड़े विचारकों में से एक थे। अरस्तू का मानना था कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केन्द्र में है और केवल चार तत्वों से बनी है- मिट्टी, जल, वायु, अग्नि।

अन्य रचनाएँ- पॉलिटिक्स, हिस्ट्री ऑफ एनिमल्स, ऑन मेमोरी ऑन स्लीप, ऑन ड्रीम्स।

48. 'सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति' इत्यत्र रेखाङ्कितपदे केन सूत्रेण द्वितीया विभक्तिः भवति?

(a) कर्मणि द्वितीया	(b) अकथितं च
(c) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया	(d) उभयप्राप्तौ कर्मणि

Ans. (a) : 'सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति' इत्यत्र 'कर्मणि द्वितीया' इति सूत्रेण द्वितीया विभक्तिः भवति।

'सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति' अर्थात् वह अमृत के लिए समुद्र को मथता है। यहाँ सुधा वस्तुतः सम्प्रदान है किन्तु सम्प्रदान की अविश्वस्य होने के कारण 'अकथितं च' सूत्र से कर्म संज्ञा और 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त हुई। क्षीरनिधि प्रधान कर्म है तथा 'सुधा' गौण कर्म है। सम्प्रदान की विश्वस्य होने पर 'सुधायै क्षीरनिधिं मथ्नाति' ही होगा।

49. सांख्यमतानुमतं कथनद्वयं चिनुत

- | |
|--|
| (A) प्रकृतिः आत्मना आत्मानं बध्नाति |
| (B) प्रकृतिः आत्मना आत्मानं न बध्नाति |
| (C) प्रकृतिः पुरुषं बध्नाति |
| (D) प्रकृतिः आत्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते |

समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (A) एवम् (C)	(b) (A) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C)	(d) (B) एवम् (D)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : सांख्यमतानुसृतं-

(i) प्रकृतिः आत्मना आत्मानं बध्नाति।

(ii) प्रकृतिः आत्मानं प्रकाशय विनिवर्तते।

सांख्यमतानुसार प्रकृति स्वयं को अपने सात रूपों धर्म, अधर्म, अज्ञान, वैराग्य, राग, ऐश्वर्य, अनेश्वर्य के द्वारा अपने को बाँधती है- 'रूपैः सप्तभिरैव तु बध्नात्यात्मानमात्मना प्रकृतिः'।

जिस प्रकार संसार में स्वेच्छा पूर्ति के लिए लोग कार्यों में प्रवृत्ति होते हैं ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी पुरुष के लिए प्रवृत्त होती है। जैसे नृत्याङ्गना नाट्यशाला में स्थित दर्शकों को नृत्य दिखाकर नृत्य से निवृत्त हो जाती है- 'रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा पुरुषस्य नृत्यात् तथाऽऽत्मानं प्रकाशय विनिवर्तते प्रकृतिः'।

गुणवती एवं उपकारिणी प्रकृति निर्गुण होते हुए पुरुष के भोग एवं अपवर्ग रूप प्रयोजन को अनेक प्रकार के उपायों द्वारा बिना किसी स्वार्थभाव से सम्पादित करती हैं।

50. अलङ्कारसम्प्रदायस्य आचार्यो स्तः-

(A) भामहः दण्डी च (B) उद्भटः रुय्यकः च

(C) रुद्रटः आनन्दवर्धनः च (D) रुय्यकः मम्मटः च

समुचितं उत्तरं चिनुत-

(a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)

(c) (C) एवम् (D) (A) एवम् (D)

Ans. (a) : अलङ्कारस्य आचार्यो स्तः-

(i) भामहः दण्डी च

(ii) उद्भटः रुय्यकः च

अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य भामह (छठी शताब्दी का पूर्वार्ध) दण्डी (7वीं शताब्दी) उद्भट (8वीं शताब्दी) रुद्रट (9वीं शताब्दी का पूर्वार्ध) हैं। भामह का अनुकरण दण्डी ने किया और भामह तथा दण्डी का उद्भट ने। उपरोक्त सभी आचार्य अलङ्कार को ही 'काव्य की आत्मा' मानते हैं। भारतीय काव्य शास्त्र के इतिहास में यही सम्प्रदाय सबसे प्राचीन माना जाता है।

51. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I

(A) प्रकृतिभावः

(B) सवर्णदीर्घः

(C) पूर्वरूपैकादेशः

(D) पररूपैकादेशः

सूची-II

(I) अग्रे + अत्र

(II) उप + ओषति

(III) अहो + ईशाः

(IV) यदि + इयम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A B C D

(a) I II III IV

(c) II I IV III

A B C D

(b) IV III II I

(d) III IV I II

Ans. (d) : समुचितं विकल्पं-

सूची-I

(A) प्रकृतिभावः

(B) सवर्णदीर्घः

(C) पूर्वरूपैकादेशः

(D) पररूपैकादेशः

सूची-II

- अहो + ईशाः

- यदि + इयम्

- अग्ने + अत्र

- उप + ओषति

प्रकृतिभावः - संस्कृत व्याकरण में जब किसी सन्धि पद के अन्तर्गत सन्धि योग्य दशा की प्राप्ति होने पर सन्धि करने का निषेध करना प्रकृतिभाव कहलाता है। जैसे-अहो + ईशाः = अहोईशाः

सवर्णदीर्घः - अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे- यदि + इयम् = यदीयम्।

पूर्वरूपैकादेशः - यदि पदान्त एङ् अर्थात् ए और ओ के बाद अत् अर्थात् ह्रस्व अ आवे तो पूर्व एवं पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हो जाता है। जैसे- अग्ने + अत्र = अग्नेऽत्र।

पररूपैकादेशः - अवर्णान्त उपसर्ग के बाद एङादि अर्थात् (ए और ओ) से प्रारम्भ होने वाली धातु के रहने पर अवर्ण और एङ (ए, ओ) के स्थान पर पररूप एकादेश हो जाता है। जैसे- उप + ओषति = उपोषति।

52. 'यद्विषयकत्वेन ज्ञानस्यानुमितिविरोधित्वं तत्त्वम्' - अनेन वाक्येन कस्य लक्षणं प्रस्तूयते?

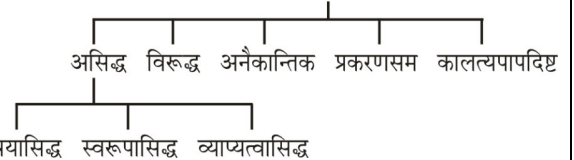
(a) उपमितिव्यापारस्य (b) हेत्वाभाससामान्यस्य

(c) वैशिष्ट्यावगाहिज्ञानस्य (d) विरुद्धार्थापत्तेः

Ans. (b) : 'यद्विषयकत्वेन ज्ञानस्यानुमितिविरोधित्वं तत्त्वम्'। अनेन वाक्येन हेत्वाभाससामान्यस्य लक्षणं प्रस्तूयते।

असद् हेतु को हेत्वाभास कहते हैं, अर्थात् जो हेतु नहीं होता किन्तु हेतु के समान भासित होता है। 'आभासते इत्याभासः हेतोराभासः हेत्वाभासः।' अर्थात् जिसके ज्ञान से अनुमिति के कारण अथवा साक्षात् अनुमिति ही प्रतिबन्ध हो जाता है, वह हेत्वाभास या हेतुदोष कहलाता है।

हेत्वाभास के 5 भेद



53. शिक्षाग्रन्थस्य प्रतिपाद्येषु बलं नाम किम्?

(A) स्थानम्

(B) प्रयत्नः

(C) स्वरः

(D) व्यञ्जनम्

समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (A) एवम् (B) (C) एवम् (D)

(c) (B) एवम् (D) (A) एवम् (C)

Ans. (a) : शिक्षाग्रन्थस्य प्रतिपाद्येषु बलं नाम-

(i) स्थानम्।

(ii) प्रयत्नः।

'शिक्षा प्राणं तु वेदस्य।' आचार्य सायणने शिक्षा की परिभाषा की है- 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा।' जिस वेदाङ्ग में स्वर और वर्ण आदि के उच्चारण की रीति का उपदेश दिया जाता है वह शिक्षा है।

शिक्षाग्रन्थ में इन छः अङ्गों का विवेचन किया जाता है-

1. वर्ण- अ, इ, उ, क, ख आदि वर्णों का उच्चारण।
2. स्वर- वेदपाठ में प्रयुक्त उदात्त, अनुदात्त और स्वरित का उच्चारण।
3. मात्रा - ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत का उच्चारण।
4. बल- स्थान, प्रयत्न के अनुसार वर्णों का उच्चारण।
5. साम- दोषरहित और माधुर्य आदि गुण सहित।
6. सन्तान- संहिता (सन्धि) के नियमों के साथ उच्चारण।

54. पक्षतायाः लक्षणम् अस्ति-

(a) सिषाधयिषावत्त्वाभावः पक्षता

(b) सिषाधयिषाविरहसिद्धिः पक्षता

(c) सिषाधयिषाविरहविषिष्टसिद्ध्यभावः पक्षता

(d) सिषाधयिषाविरहविषिष्टसिद्धिः पक्षता

Ans. (c) : पक्षतायाः लक्षणम् - सिषाधयिषाविरहविषिष्ट सिद्ध्यभावः पक्षता अस्ति।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

55. 'सोऽयमात्मा चतुष्पात्' इति कस्याम् उपनिषदि वर्तते?

- (a) मुण्डकोपनिषदि (b) माण्डूक्योपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) कठोपनिषदि

Ans. (b) : 'सोऽयमात्मा चतुष्पात्' इति माण्डूक्योपनिषदि वर्तते। 'सोऽयमात्मा चतुष्पात्' यह आत्मा ही ब्रह्म है जिसके 4 पाद हैं। यह वर्णन माण्डूक्योपनिषद् में मिलता है। माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद से सम्बद्ध लघुकाय उपनिषद् है। जिसमें केवल 12 गद्यात्मक मंत्र या वाक्य हैं। इसमें ओंकार की महत्ता का वर्णन है। तीनों काल और त्रिकालातीत सब कुछ ओम ही है। इस प्रकार जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय (शिव अद्वैत) को इस उपनिषद् में समझाया गया है। इस उपनिषद् पर गौड़पाद ने चार खण्डों में विभक्त 'माण्डूक्यकारिका' नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें 215 पद्य हैं। वह अद्वैत वेदान्त का प्रतिष्ठापक ग्रन्थ है। उसके प्रथम खण्ड में माण्डूक्योपनिषद् की व्याख्या है।

56. मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदस्य का संहिता सम्पादिता?

- (a) शाकलसंहिता (b) वाष्कलसंहिता
(c) शांखायनसंहिता (d) माण्डूकायनसंहिता

Ans. (a) : मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदस्य शाकलसंहिता सम्पादिता। मैक्समूलरमहोदय द्वारा ऋग्वेद की शाकल संहिता का सम्पादन किया गया है। महाभाष्य में इस वेद की 21 शाखाओं का उल्लेख है किन्तु चरणव्यूह के अनुसार पाँच शाखाएँ मुख्य हैं- शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन सम्प्रति शाकल शाखा की ही संहिता उपलब्धि है। आश्वलायन शाखा के श्रौतसूत्र और गृह्य सूत्र ही मिलते हैं। शांखायन शाखा के ब्राह्मण और आरण्यक प्राप्य हैं। अन्य शाखाएँ नामशेष हैं। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का प्राचीनतम ग्रन्थ होने के कारण शाकल संहिता को विश्वसाहित्य का प्रथम ग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त है। चारों वेदों की संहिताओं की तुलना में यह सबसे बड़ी संहिता है। एक विशालकाय वैदिक ग्रन्थ के रूप में यह अद्भुत और अनंत ज्ञान का स्रोत है।

57. ऋग्वेदस्य उपनिषदौ स्तः

- (A) तैत्तिरीयोपनिषद् (B) ऐतरेयोपनिषद्
(C) बृहदारण्यकोपनिषद् (D) कौषीतकी उपनिषद्
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) (B) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (B) एवम् (A)

Ans. (a) : ऋग्वेदस्य उपनिषदौ स्तः-

(i) ऐतरेयोपनिषद् (ii) कौषीतकी उपनिषद्
उपनिषदों का सम्बन्ध वेदों से है। प्राचीन प्रामाणिक तथा प्रमुख उपनिषदों की संख्या 14 है। ऐतरेयोपनिषद् ऋग्वेद से सम्बद्ध ऐतरेयारण्यक के द्वितीय आरण्यक (खण्ड) के अन्तर्गत चतुर्थ से षष्ठ अध्याय पर्यन्त अंश के रूप में है। इसलिए इस उपनिषद् में तीन अध्याय हैं। ऋषि महिदास ऐतरेय के नाम पर इसका यह नाम दिया गया है। प्रथम अध्याय तीन खण्डों में और शेष दोनों एक-एक खण्ड के हैं, इस प्रकार कुल 5 खण्ड हैं। इसमें विश्व की उत्पत्ति का विवेचन है। तृतीय अध्याय में आत्मा के स्वरूप का विवेचन है और अन्त में 'प्रज्ञान' को ब्रह्म कहा गया है। प्रज्ञानं ब्रह्म।

कौषीतिक उपनिषद् में 4 अध्याय हैं जो क्रमशः 7, 15, 9 तथा 20 खण्डों में विभक्त है। सम्पूर्ण उपनिषद् गद्यात्मक है। प्रथम अध्याय में देवयान और पितृयान (मृत्यु के बाद के मार्ग) का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में आत्मा के प्रतीक 'प्राण' का विवेचन है जिससे तृतीय अध्याय में प्रतर्दन इन्द्र से ब्रह्मविद्या सीखते हैं, यहाँ भी प्राण सिद्धान्त का निरूपण है। चतुर्थ अध्याय में अजातशत्रु और बालाकि के आख्यान के प्रसङ्ग में परब्रह्म का विवेचन है।

58. तर्कस्य स्वरूपम् अस्ति-

- (a) व्यापकारोपेण व्याप्यारोपः
(b) समव्याप्त्यारोपेण विषमव्याप्त्यारोपः
(c) विशेषणारोपेण विशेष्यारोपः
(d) व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः

Ans. (d) : तर्कस्य स्वरूपं व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः अस्ति।

अर्थात् व्याप्य के आरोप से व्यापक के आरोप को 'तर्क' कहते हैं। जैसे- अग्नि नहीं होगी तो धूआं भी नहीं होगा। यहाँ अग्नि आभाव व्याप्य और धूमाभाव व्यापक है। अतः व्याप्य के आरोप से व्यापक का आरोप होने के कारण यह तर्क है (अनिष्टप्रसङ्गो तर्कः तर्कभाषा)

59. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I

- (A) चित्तभूमिः
(B) यमः
(C) नियमः
(D) क्लेशः

सूची-II

- (I) अस्तेयम्
(II) रागः
(III) एकाग्रम्
(IV) तपः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) III	II	I	IV	(b) III	I	IV	II
(c) I	II	III	IV	(d) IV	III	II	I

Ans. (b) : यथोचितं मेलनं अस्ति-

सूची-I

- (A) चित्तभूमिः
(B) यमः
(C) नियमः
(D) क्लेशः

सूची-II

- एकाग्रम्
— अस्तेयम्
— तपः
— रागः

यम - अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य ये 5 यम हैं।

नियम - शौच सन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। अर्थात् शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर की आराधना ये 5 नियम हैं।

60. ऋग्वेदादिक्रमेण ब्राह्मणनामानि लिखत-

- (A) कौषीतकीब्राह्मणम् (B) सामविधानब्राह्मणम्
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (D), (B), (C), (A) (b) (A), (C), (B), (D)
(c) (B), (A), (D), (C) (d) (C), (D), (A), (B)

Ans. (b) : ऋग्वेदादिक्रमेण ब्राह्मणनामानि -

- (A) कौषीतकीब्राह्मणम् (B) सामविधानब्राह्मणम्
(C) तैत्तिरीयब्राह्मणम् (D) गोपथब्राह्मणम्

शांखायन ब्राह्मण को कौषीतकी ब्राह्मण भी कहते हैं। इसमें 30 अध्याय हैं। इसमें अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास और चातुर्मास्य इष्टियों का वर्णन है। इसमें भी सोमयाग प्रधान विषय है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण- यह कृष्णयजुर्वेदीय शाखा का एकमात्र ब्राह्मण है। इसमें 3 काण्ड हैं। इसमें काण्ड 1 में अग्न्याधान, वाजपेय, सोम, राजसूय आदि काण्ड 2 में सौत्रामणि, बृहस्पतिसव और वैश्वसव आदि काण्ड 3 में नक्षत्रेष्टि का मुख्य रूप से वर्णन है।

सामविधान- सामविधान ब्राह्मण में 3 प्रकरण हैं। जिनमें कृच्छ्र अतिकृच्छ्र आदि व्रतों, पुत्र, ऐश्वर्य एवं आयुष्य की प्राप्ति के लिए विविध अनुष्ठानों का वर्णन है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

गोपथ ब्राह्मणः - यह अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण है। इसके दो भाग हैं-

- (i) पूर्व भाग या पूर्व गोपथ
(ii) उत्तरभाग/उत्तर गोपथ।

प्रथम में 5 प्रपाठक या अध्याय हैं, द्वितीय में 6 प्रपाठक। इसके रचयिता गोपथ ऋषि माने जाते हैं।

61. 'षड् + सन्तः षट्सन्तः' इत्यत्र कः आगमो भवति?

- (a) धुट् (b) तुट्
(c) दुट् (d) तुक्

Ans. (a) : 'षड् + सन्तः = षट्सन्तः' इत्यत्र धुट् आगमो भवति। षट्सन्तः में धुट् का आगम होता है। डः सि धुट् (8/3/29) ड् के बाद स हो तो बीच में विकल्प से धुट् (धु) का आगम हो जाता है। षट्सन्तः, षट्सन्तः (सज्जन)- षड् + सन्तः। बीच में धु, खरि च से धु को त् और ड् को ट्। पक्ष में खरि च से ड् को ट्।

62. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत-

कथनम् (I) : उत्पत्तिविधौ कर्मणः करणत्वेन अन्वयः।

कथनम् (II) : उत्पत्तिविधौ कर्मणः साध्यत्वेन अन्वयः।

यथोचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये
(c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम्
(d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम्

Ans. (c) : अधोलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं चिनुत-

कथनम् - (I) उत्पत्तिविधौ कर्मणः करणत्वेन अन्वयः।

कारणम् - (II) उत्पत्तिविधौ कर्मणः साध्यत्वेन अन्वयः।

यथोचितं विकल्पं I उत्पत्तिविधौ कर्मणः करणत्वेन अन्वयः कथनं सत्यम् अस्ति।

उत्पत्तिविधौ कर्मणः साध्यत्वेन अन्वयः असत्यं विकल्पं अस्ति।

उत्पत्ति विधि- उत्पत्ति विधि किसी कार्य की प्रकृति का वर्णन करती है। उदाहरणार्थ- 'अग्निहोत्रं जुहोति' उसे अग्निहोत्र होम द्वारा यज्ञ करना चाहिए। यहाँ कार्य अग्निहोत्र अभीष्ट वस्तु के साधन के रूप में निषेधाज्ञा से सम्बन्धित है। इसका तात्पर्य यह है कि अग्निहोत्र होम करने से व्यक्ति को अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त करनी चाहिए।

63. पाणिनिः यङ्प्रत्यये विदधाति-

- (A) कौटिल्येऽर्थे (B) भावगर्हायाम् अर्थे
(C) इच्छायाम् अर्थे (D) वेदनायाम् अर्थे

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (C) एवम् (D) (b) (A) एवम् (B)
(c) (A) एवम् (D) (d) (B) एवम् (D)

Ans. (b) : पाणिनिः यङ्प्रत्यये विदधाति-

(A) कौटिल्येऽर्थे (B) भावगर्हायाम् अर्थे

64. 'शिव + छाया = शिवच्छाया' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् अधोलिखितसूत्राणाम् उचितमनुक्रमं चिनुत

- (A) खरि च (B) छे च
(C) झलां जशोऽन्ते (D) स्तोः श्चुना श्चुः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A), (B), (D), (C) (b) (B), (A), (C), (D)
(c) (B), (C), (D), (A) (d) (D), (C), (A), (B)

Ans. (c) : शिव + छाया = 'शिवच्छाया' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् उपरिलिखित सूत्राणाम् उचित क्रमः

(i) छे च (ii) झलां जशोऽन्ते (iii) स्तोः श्चुना श्चुः (iv) खरि च। छे च- यदि ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' हो तो उस ह्रस्व स्वर को तुक् (त्) का आगम होता है। यहाँ पर शिव के व में ह्रस्व 'अ' है और ह्रस्व 'अ' के बाद छाया का 'छ' है अतः 'छे च' सूत्र से 'अ' को तुक् का आगम हुआ। तुक् के क् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्सज्ञा हुई और 'तस्य लोपः' से लोप हुआ और 'तु' के उ की 'उपदेशोऽजनुनासिक इतः' सूत्र से इत्सज्ञा हुई और 'तस्यलोपः' से लोप हुआ। इस प्रकार तुक् का त् शेष बचता है। त् कित् है अतः 'आद्यन्तौटकितौ' सूत्र से शिव के वकारोत्तरवर्ती अ के बाद में होकर शिवत् छाया बना। 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र से 'त्' के बाद छाया के 'छ' आने पर त् को च् होकर शिवच्छाया बना।

65. औचित्य-भेदो स्तः-

- (A) अभिप्रायः स्वभावश्च (B) कालः देशश्च
(C) ध्वनिः रीतिश्च (D) पदे वर्णश्च

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (B) एवम् (C) (b) (C) एवम् (D)
(c) (D) एवम् (A) (d) (A) एवम् (B)

Ans. (d) : औचित्य-भेदो स्तः

(i) अभिप्रायः स्वभावश्च (ii) कालः देशश्च।

आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रन्थ 'औचित्य विचार चर्चा' में औचित्य के 27 भेदों का निरूपण किया है किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्ग में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं- औचित्य के भेद-

1. पद	2. वाक्य	3. प्रबन्ध
4. गुण	5. अलङ्कार	6. रस
7. क्रिया	8. कारक	9. लिङ्ग
10. वचन	11. विशेषण	12. उपसर्ग
13. निपात	14. देश	15. काल
16. कुल	17. व्रत	18. तत्त्व
19. सत्व	20. अभिप्राय	21. विभाव
22. सारसंग्रह	23. प्रतिभा	24. विचार
25. नाम	26. आशीर्वचन	27. प्रत्यय

66. 'चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपम्', 'प्रतिषिद्धिर्वस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः' 'तिष्ठति वाणः'- इत्यादिकम् उदाहरणम् अस्ति-

- (a) स्मृतिवृत्तेः (b) प्रमाणवृत्तेः
(c) विकल्पवृत्तेः (d) विपर्ययवृत्तेः

Ans. (c) : 'चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपम्' प्रतिषिद्धिर्वस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः 'तिष्ठति वाणः' इत्यादि उदाहरण विकल्पवृत्ति का है। यह पुरुष शरीर, बुद्धि, इन्द्रियाँ अहङ्कार, मन से भिन्न या विलक्षण है। पुरुष चैतन्य स्वरूप है। चैतन्य उसका स्वरूप है। वह परम् विशुद्ध परात्पर चैतन्य है, आत्मतत्त्व है।

किसी वस्तु के उपस्थित न रहते हुए भी शब्द ज्ञान मात्र से उत्पन्न चितवृत्ति को विकल्प कहते हैं।

शब्द ज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः।

अर्थात् वस्तु के न रहते हुए शब्द ज्ञानमात्र से उत्पन्न चित वृत्ति को 'विकल्प' कहते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

67. बौद्धदर्शनस्य आचार्यद्वयम् अस्ति-

- (A) उमास्वातिः (B) उदयनः
(C) असङ्गः (D) धर्मकीर्तिः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (C) (b) (C) एवम् (D)
(c) (B) एवम् (C) (d) (B) एवम् (D)

Ans. (b) : बौद्धदर्शनस्य आचार्यद्वयम् असङ्ग धर्मकीर्तिश्च स्तः आचार्य असङ्ग बौद्ध दर्शन के योगाचार अर्थात् विज्ञानवाद प्रस्थान के प्रवर्तक हैं। इनकी शैली की शैली आगमों की तरह है और उन्होंने युक्ति से अधिक आगमों का आश्रय लिया है। धर्मकीर्ति और धर्मपाल ईश्वरसेन के शिष्य थे। बौद्ध न्याय की जिस परम्परा का प्रारम्भ मैत्रेयनाथ, असङ्ग और वसुबन्धु की कृतियों से हुआ था, उसे आचार्य दिङ्नाग ने अपनी कृतियों में वाद विधि से पृथक् तर्कशास्त्र या हेतुशास्त्र के रूप में विकसित किया था आगे चलकर दिङ्नाग द्वारा प्रवर्तित इस तर्क विद्या को धर्मपाल एवं ईश्वरसेन के शिष्य धर्मकीर्ति ने (बौद्ध न्याय को) 'प्रमाणशास्त्र' के रूप में विकसित किया।

68. वर्णनियमेन मूलभारोपीयभाषायाः क्, त्, प् इत्येते ध्वनयः जर्मनिक- भाषासु ह, थ्, फ् इति कस्यां स्थितौ जायन्ते?

- (a) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् उदात्तस्वरः भवति।
(b) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् अनुदात्तस्वरः भवति।
(c) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् स्वरितस्वरः भवति।
(d) यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् एकश्रुतिस्वरः भवति।

Ans. (a) : वर्णनियमेन मूलभारोपीयभाषायाः क्, त्, प् इत्येते ध्वनयः जर्मनिक-भाषासु ह, थ्, फ्, इति-यदा तेभ्यः ध्वनिभ्यः अव्यवहितपूर्वम् उदात्तस्वरः भवति।

→ वर्ण ने यह पता लगाया कि ग्रिम-नियम बलाघात पर आधारित था।

→ मूल भाषा के क्, त्, प् के पूर्व यदि बलाघात हो तो ग्रिम नियम के अनुसार मूलभारोपीय भाषा का घोषाल्प प्राणध्वनि और जर्मनिक भाषाओं में अघोष महाप्राण ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती है।

	मूलभारोपीय परिवार की भाषा की ध्वनियाँ	भारोपीय जर्मनिक भाषा में
(i)	सघोष महाप्राणस्पर्श (घ्, ध्, भ्,)	सघोष अल्पप्राण स्पर्श ध्वनि (ग्, द्, ब्)
(ii)	सघोष अल्पप्राण ध्वनि (ग्, द्, ब्)	अघोष अल्पप्राणस्पर्श ध्वनि (क्, त्, प्)
(iii)	अघोष अल्पप्राण स्पर्श ध्वनियाँ (क्, त्, प्)	अघोष महाप्राणस्पर्श ख्, (ह्), थ्, फ्।

69. अधोलिखितानां काव्यलक्षणानां पूर्वापरक्रमं नियोजयत-

- (A) शब्दार्थी काव्यम्
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(C) तददोषौ शब्दार्थी सगुणावनलङ्कृति पुनः क्वापि
(D) सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (C), (D), (A), (B) (b) (B), (A), (C), (D)
(c) (D), (B), (C), (A) (d) (A), (D), (C), (B)

Ans. (d) : उपरिलिखितानां काव्यलक्षणानां पूर्वा परक्रमं नियोजयत-

- (A) शब्दार्थी काव्यम् -
(D) सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम् -
(C) तददोषौ शब्दार्थी सगुणावनलङ्कृति पुनः क्वापि
(B) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।

70. निरुक्ते प्रतिपादितान् भावविकारान् क्रमेण नियोजयत-

- (A) अस्ति (B) वर्धते
(C) जायते (D) अपक्षीयते
(E) विपरिणमते

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (D), (B), (E), (A), (C)
(b) (E), (A), (D), (B), (C)
(c) (C), (A), (E), (B), (D)
(d) (A), (B), (C), (D), (E)

Ans. (c) : आचार्य यास्क के निरुक्त में छः भावविकारों का उल्लेख किये हैं जिनका क्रम इस प्रकार है-

- (1) जायते- कोई वस्तु उत्पन्न होती है।
(2) अस्ति- उसकी सत्ता होती है।
(3) विपरिणमते- उसमें परिवर्तन होता है।
(4) वर्धते- वह वृद्धि को प्राप्त होती है।
(5) अपक्षीयते- वह क्षीण होता है।
(6) विनश्यति- विनाश को भी प्राप्त होता है।
अतः विकल्प (c) सही है।

71. 'तस्य परमाणु समवायिकारणम्, तत्संयोगः असमवायिकारणम्, अदृष्टादि निमित्तं कारणम्' - अत्र 'तस्य' इति पदेन परामर्शः भवति-

- (a) मनसः (b) निर्विकल्पकबुद्धेः
(c) द्वयणुकस्य (d) कर्मणः

Ans. (c) : 'तस्य परमाणु समवायिकारणम्, तत्संयोगः असमवायिकारणम्, अदृष्टादि निमित्तं कारणम्'- अत्र 'तस्य' इति पदेन परामर्शः द्वयणुकस्य भवति।

अर्थात् उस द्वयणुक का परमाणु समवायिकारण है, उसका संयोग असमवायि कारण है तथा उस द्वयणुओं का दिखाई न देना निमित्त कारण है। अतः यहाँ तस्य पद से द्वयणुक का परामर्श होता है।

72. 'घनश्यामः' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं वर्तते-

- (a) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(b) उपमानानि सामान्यवचनैः
(c) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे
(d) मयूरव्यंसकादयश्च

Ans. (b) : 'घनश्यामः' इत्यत्र समासविधायकं सूत्रं 'उपमानानि सामान्यवचनैः' वर्तते। अर्थात् 'घनश्यामः' इस पद का समास विधायक सूत्र 'उपमानानि सामान्यवचनैः' है। उपमान शब्द पूर्व में और उपमेय पद उत्तर में प्रयुक्त होता है तो उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास होता है। 'घनश्यामः' में घन उपमान है, श्यामः उपमेय अतः इसका अर्थ हुआ बादल के समान काला।

- (1) विशेषण विशेष्येण बहुलम् - नीलोत्पलम्, कृष्णसर्पः।
(2) उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे - पुरुषव्याघ्रः मुखकमलम्।
(3) मयूरव्यंसकादयश्च- मयूरव्यंसकः, राजान्तरम् आदि।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

https://t.me/uppcstestseries2023pdf

73. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
(A) भुङ्क्ते	(I) व्यक्तवाचां समुच्चारणे
(B) भुनक्ति	(II) अभ्यवहारे
(C) सम्प्रवदन्ते	(III) पालनार्थे
(D) सम्प्रवदन्ति	(IV) अव्यक्तवाचां समुच्चारणे

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) III	I	II	IV	(b) I	II	IV	III
(c) IV	III	II	I	(d) II	III	I	IV

Ans. (d) : उचित सम्मेलन यह है-

सूची-I	सूची-II
(A) भुङ्क्ते	- अभ्यवहारे
(B) भुनक्ति	- पालनार्थे
(C) सम्प्रवदन्ते	- व्यक्तवाचां समुच्चारणे
(D) सम्प्रवदन्ति	- अव्यक्तवाचां समुच्चारणे

अतः विकल्प (d) सही है।

74. महाभारते 'भारतभावदीपः' इति टीका केन रचिता?

(a) नीलकण्ठेन	(b) देवबोधेन
(c) विमलबोधेन	(d) नारायणभट्टेन

Ans. (a) : महाभारते 'भारतभावदीपः' इति टीका 'नीलकण्ठेन' रचिता। अर्थात् महाभारत पर भारतभावदीपः टीका नीलकण्ठ के द्वारा रचित है। देवबोध की 'ज्ञानदीपिका', विमल बोध की 'विषमश्लोकी' या दुर्घटार्थ प्रकाशिनी तथा नारायण भट्ट की 'निगूढार्थ पदबोधिनी' नाम से टीका की गयी है।

75. षट्कसम्पत्तिषु न स्तः-

(A) मुमुक्षुत्वम्	(B) तितिक्षा
(C) विषयः	(D) उपरतिः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) (A) एवम् (C)	(b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D)	(d) (B) एवम् (D)

Ans. (*) : षट्कसम्पत्तिषु मुमुक्षुत्वम्, विषयश्च एतौ द्वौ न अस्तः। अर्थात् षट्कसम्पत्तियों में मुमुक्षुत्व और विषय ये दो नहीं हैं। मुमुक्षुत्व, साधन, चतुष्टय और विषय अनुबन्धचतुष्टय के अन्तर्गत है। षट्कसम्पत्ति- शम, दम, उपरति, तितिक्षा समाधान और श्रद्धा हैं।

नोट - इस प्रश्न को NTA ने विलोपित कर दिया है।

76. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत-

कथनम् (I) : सत्त्वं लघु प्रकाशकम्।

कथनम् (II) : उपलम्भकं चलं च तमः।

यथोचितं विकल्पं चिनुत-

- | |
|-----------------------------------|
| (a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये |
| (b) (I) तथा (II) असत्ये |
| (c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम् |
| (d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम् |

Ans. (c) : उपरिलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम् अस्ति। 'सत्त्वं लघु प्रकाशकम्' सत्त्व गुण हल्का तथा प्रकाशक होता है। 'उपलम्भकं चलं च तमः' रजोगुण चञ्चल तथा प्रेरक या उत्तेजक होता है। 'गुरुवरणकमेव तमः' तमोगुण भारी और अवरोधक होता है। ये तीनों गुण विपरीत होते हुए भी दीपक के समान व्यवहार करते हैं। 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः'।

77. 'नृ + पाहि = नृं = पाहि' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् अधोलिखितसूत्राणाम् उचितमनुक्रमं चिनुत-

(A) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	(B) नृन् पे
(C) विसर्जनीयस्य सः	(D) कुप्पोः क पौ च
- समुचितं विकल्पं चिनुत-
- | | |
|------------------------|------------------------|
| (a) (A), (B), (C), (D) | (b) (B), (A), (D), (C) |
| (c) (C), (D), (A), (B) | (d) (B), (A), (C), (D) |

Ans. (d) : 'नृन् + पाहि = नृं = पाहि' इत्यत्र प्रवृत्तानाम् उपरिलिखितसूत्राणाम्

उचितमनुक्रमः 'नृन् पे → अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा → विसर्जनीयस्य सेट सः → कुप्पोः क पौ च अस्ति। नृन् + पाहि 'नृन् पे' सूत्र से नृन् के न को विकल्प से रु होता है प के परे होने पर नृरु + पाहि (नृन् + पाहि)

'अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा' सूत्र से रु के पूर्ववर्ती वर्ण को विकल्प से अनुनासिक आगम हुआ नृरु + पाहि (नृन् + पाहि)

'अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः' पक्ष में अनुस्वार हुआ

नृरु + पाहि अनुबन्धलोप तथा खरवसानयोर्विसर्जनीयः

सूत्र से र् को विसर्ग होकर नृः पाहि, नृः पाहि बना।

'कुप्पोः क पौ च' सूत्र से प के परे होने पर विसर्ग को उपध्मानीय होकर नृं पाहि, नृं पाहि बना।

78. यथोचित मेलनं कुरुत-

सूची-I	सूची-II
(A) पदमञ्जरी	(I) नागेशभट्टः
(B) सारस्वतव्याकरणम्	(II) हरदत्तमिश्रः
(C) शब्दकौस्तुभः	(III) अनुभूतिस्वरूपाचार्यः
(D) बृहच्छब्देन्दुशेखरः	(IV) भट्टोजिदीक्षितः

समुचितं विकल्पं चिनुत-

A	B	C	D	A	B	C	D
(a) II	IV	I	III	(b) II	III	IV	I
(c) I	IV	II	III	(d) IV	III	II	I

Ans. (b) : यथोचित सम्मेलन है-

सूची-I	सूची-II
(A) पदमञ्जरी	- हरदत्तमिश्रः
(B) सारस्वतव्याकरणम्	- अनुभूतिस्वरूपाचार्यः
(C) शब्दकौस्तुभः	- भट्टोजिदीक्षितः
(D) बृहच्छब्देन्दुशेखरः	- नागेशभट्टः

अतः विकल्प (b) सही है।

79. महाभारतस्य पर्वनामानि क्रमेण लिखत-

(A) आदिपर्व	(B) विराट्पर्व
(C) सभापर्व	(D) वनपर्व

समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (C), (B), (D), (A)	(b) (B), (A), (D), (C)
(c) (A), (C), (D), (B)	(d) (D), (B), (A), (C)

Ans. (c) : महाभारतस्य पर्वनामानि क्रमेण आदि पर्वः → सभापर्वः

→ वनपर्वः → विराट्पर्वः सन्ति। अर्थात् महाभारत के पर्वों के नाम क्रम से (1) आदि पर्व (2) सभापर्व (3) वनपर्व (4) विराट् पर्व हैं। महाभारत पर्वों में विभक्त है जिनकी संख्या अष्टादह है।

अतः विकल्प (c) सही है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

80. रसविषये समुचितकथने स्तः

- (A) रसः वाच्यः भवति
(B) अभिनवगुप्तमतेन रसः व्यङ्ग्यः भवति
(C) महिमभट्टमतेन रसः अनुमेयः भवति
(D) रसः लौकिकः भवति

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (B) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (D) एवम् (A)

Ans. (b) : रसविषये समुचितकथने (B) एवं (C) स्तः।

अर्थात् रस विषयक समुचित कथन में (B) और (C) हैं। अभिनवगुप्तमतेन रसः व्यङ्ग्यः भवति। अर्थात् अभिनवगुप्त ने अपने 'अभिव्यक्तिवाद' के सिद्धान्त में रस को व्यङ्ग्य माना है। ये विभावादि का रस के साथ व्यङ्ग्य-व्यञ्जक भाव सम्बन्ध को माना है। महिमभट्टमतेन रसः अनुमेयः। न्यायवादी आचार्य महिमभट्ट ने रस को अनुमेय माना है। वे रस के साक्षात्कार में अनुमान प्रमाण का आश्रय लिये हैं। अतः रस वाच्य न होकर व्यङ्ग्य होता है और लौकिक न होकर अलौकिक होता है। अतः विकल्प (b) सही है।

81. 'रसः सुखदुःखात्मकः भवति' इति मान्यता अस्ति-

- (a) भरतस्य (b) धनिक-धनञ्जययोः
(c) रामचन्द्र-गुणचन्द्रयोः (d) मम्मट-विश्वनाथयोः

Ans. (c) : 'रसः सुखदुःखात्मकः भवति' इति मान्यता रामचन्द्र-गुणचन्द्रयोः अस्ति। अर्थात् रस सुख दुःखात्मक होता है, यह मान्यता आचार्य रामचन्द्र-गुणचन्द्र की है। आचार्य रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने अपने नाट्य-दर्पण में सभी रसों को दो विभागों में विभक्त किया है, जिसमें से शृङ्गार, हास्य, वीर, अद्भुत और शान्त इन पाँच रसों को सर्वथा सुखात्मक और करुण, रौद्र, वीभत्स तथा भयानक इन चार को सर्वथा दुःखात्मक बताते हैं। अतः ये न तो सभी रसों को सुखात्मक ही माना है और न ही सभी रसों में सुख दुःख का समावेश। अतः विकल्प (c) सही है।

82. व्याकरणशब्दस्य सूत्रमिति अर्थे स्वीकृते भाष्यकारेण के द्वे विप्रतिपत्ति उपस्थापिते?

- (A) भवार्थस्य असंगतिः (B) षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नता
(C) प्रोक्तार्थस्य अनिष्पन्नता (D) शब्दानामप्रतिपत्तिः

समुचितमुत्तरं चिनुत-

- (a) (A) एवम् (D) (b) (A) एवम् (C)
(c) (B) एवम् (D) (d) (B) एवम् (C)

Ans. (c) : व्याकरणशब्दस्य सूत्रमिति अर्थे स्वीकृते भाष्यकारेण 'षष्ठ्यर्थस्य अनुपपन्नता, शब्दानामप्रतिपत्तिः' ये द्वे विप्रतिपत्ति उपस्थापिते।

83. अधोलिखितं कथनद्वयम् आश्रित्य समुचितम् उत्तरं चिनुत-

कथनम् (I) : परिसंख्या त्रिदूषणा

कथनम् (II) : श्रुतहानात्

अश्रुतकल्पनात्

प्राप्तबाधात्

यथोचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये
(b) (I) तथा (II) उभे अपि असत्ये
(c) (I) सत्यं परन्तु (II) असत्यम्
(d) (I) असत्यं परन्तु (II) सत्यम्

Ans. (a) : उपरिलिखितं कथनद्वयमाश्रित्य समुचितमुत्तरं (I) तथा (II) उभे अपि सत्ये स्तः।

अर्थात् उपरिलिखित दो कथनों पर आश्रित समुचित उत्तर (I) परिसंख्या त्रिदूषणा और (II) श्रुतहानात्, अश्रुतकल्पनात् तथा प्राप्तबाधात् ये दोनों सत्य हैं।

परिसंख्या दो प्रकार की होती है (1) श्रौती तथा (2) लाक्षणिकी। तत्र 'अत्र ह्येवावपन्ती' ति श्रौती परिसंख्या। 'पञ्चपञ्चनखा भक्ष्या' इति तु लाक्षणिकी। लाक्षणिकी परिसंख्या तीन दोषों से युक्त होती है- (I) श्रुतहानिः (II) अश्रुतकल्पना (III) प्राप्तबाधश्चेति।

84. अधोलिखितान् साहित्यकारान् कालक्रमेण योजयत -

- (A) अम्बिकादत्तव्यासः (B) पण्डिताक्षमारावमहोदया
(C) श्रीधरभास्करः वर्णकरः (D) वी. राघवन्

समुचितं विकल्पं चिनुत-

- (a) (A), (B), (C), (D) (b) (A), (B), (D), (C)
(c) (A), (D), (B), (C) (d) (A), (C), (B), (D)

Ans. (b) : उपरिलिखितान् साहित्यकारान् कालक्रमेण अम्बिकादत्तव्यासः → पण्डिताक्षमाराव महोदया → वी राघवन् → श्रीधर भास्करः वर्णकरः सन्ति।

अम्बिकादत्त व्यास का समय 1858 ई. मृत्यु 1900 ई. में।

पण्डिता क्षमाराव का समय 4 जुलाई 1890 ई. को हुआ था।

85. कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखित्वदुःखित्वाद्यभिमानित्वेन

इहलोकपरलोकगामी व्यावहारिकः जीवः-

- (a) मनोमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा
(b) प्राणमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा
(c) विज्ञानमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा
(d) आनन्दमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा

Ans. (c) : कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखित्वदुःखित्वाद्यभिमानित्वेन इहलोकपरलोकगामी व्यावहारिकः जीवः विज्ञानमयकोशावच्छिन्नः चिदात्मा अस्ति। अर्थात् यह बुद्धि ज्ञानेन्द्रियों के सहित विज्ञानमय कोश कहलाती है। यह कोश अर्थात् इससे अवच्छिन्न चिदात्मा ही, मैं कर्ता हूँ, भोक्ता हूँ, सुखी हूँ, दुःखी हूँ, इत्यादि व्यवहार का अभिमान करने वाला 'जीव' कहा जाता है और इसी अभिमान करने के कारण यह इहलोक और परलोक में गमन करता है। मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति। अतः विकल्प (c) सही है।

86. मन्त्रिपरिषदि यथासामर्थ्यम् अमात्यान् कुर्वीत इति कस्य मतम्?

- (a) बृहस्पतेः (b) औशनसस्य
(c) कौटिल्यस्य (d) पराशरस्य

Ans. (c) : मन्त्रिपरिषदि यथासामर्थ्यम् अमात्यान् कुर्वीत इति कौटिल्यस्य मतम् - अस्ति।

अर्थात् मन्त्रिपरिषद में यथासामर्थ्य मन्त्रियों को नियुक्त करना चाहिए यह मत आचार्य कौटिल्य का है। कौटिल्य के मत में कार्य करने वाले पुरुषों के सामर्थ्य के अनुसार ही मन्त्रियों की संख्या निश्चित करनी चाहिए। मनु मन्त्रियों की संख्या 12, बृहस्पति 16, शुक्राचार्य 20 तथा कौटिल्य सामर्थ्य के अनुसार निश्चित करते हैं। अतः विकल्प (c) सही है।

87. महाभारतस्य कस्मिन् पर्वणि रामोपाख्यानं वर्तते?

- (a) वनपर्वणि (b) शान्तिपर्वणि
(c) भीष्मपर्वणि (d) अनुशासनपर्वणि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans. (a) : महाभारतस्य वनपर्वणि रामोपाख्यानं वर्तते। अर्थात् महाभारत के वनपर्व में 'रामोपाख्यान' का वर्णन है। महाभारत में 18 पर्व हैं जिसमें तीसरा वनपर्व है। यह नलचम्पू, किरातार्जुनीयम्, आदि अनेक ग्रन्थों का आधारभूत ग्रन्थ है। भीष्मपर्व से श्रीमद्भगवद्गीता का अवतरण किया गया है। अतः विकल्प (a) सही है।

88. अधोलिखितेषु के द्वे आत्मनेपदविधायकसूत्रे स्तः?

- (A) पूर्ववत्सनः (B) परेर्मृषः
(C) समवप्रविभ्यः स्थः (D) उपाच्च
समुचितं उत्तरं चिनुत-
(a) (A) एवम् (C) (b) (B) एवम् (C)
(c) (C) एवम् (D) (d) (A) एवम् (D)

Ans. (a) : उपरिलिखितेषु 'पूर्ववत्सनश्च समवप्रविभ्यः स्थश्च' ये द्वे आत्मनेपदविधायकसूत्रे स्तः। अर्थात् उपर्युक्त कथनों में पूर्ववत्सनश्च और समवप्रविभ्यः ये दो सूत्र आत्मनेपद विधायक विधि सूत्र हैं। सूत्र- पूर्ववत्सनः - सन् प्रत्यय से पूर्व जिस धातु से आत्मनेपद हो, सन् प्रत्यय के बाद भी उससे आत्मनेपद ही होता है। जैसे- एधते आत्मनेपद है सूत्र - समवप्रविभ्यः स्थः - सम, अव, प्र तथा वि उपसर्ग पूर्वक स्था धातु आत्मनेपद में प्रयुक्त होता है जैसे- संतिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते तथा वितिष्ठते। परेर्मृषः तथा उपाच्च परस्मैपदी विधायक सूत्र हैं। अतः विकल्प (a) सही है।

89. 'चत्वारि हस्तशतानि वीशदुत्तराण्यायतेन एतावन्त्येव विस्तीर्णेन पञ्चसप्ततिहस्तानवगाढेन भेदेन निःसृतसर्वतोयं मरुधन्वकल्पमतिभृशं दुर्दर्शनमासीत्' - इति कस्माद् अभिलेखाद् वर्तते?

- (a) रुद्रदामनः गिरनाराभिलेखात्
(b) यशोधर्मणः मन्दसौराभिलेखात्
(c) समुद्रगुप्तस्य स्तम्भलेखात्
(d) खारवेलस्य हाथीगुम्भाभिलेखात्

Ans. (a) : चत्वारि हस्तशतानि वीशदुत्तराण्यायतेन एतावन्त्येव विस्तीर्णेन पञ्चसप्ततिहस्तानवगाढेन भेदेन निःसृतसर्वतोयं मरुधन्वकल्पमतिभृशं दुर्दर्शनमासीत् - इति 'रुद्रदामनः गिरनाराभिलेखात्' वर्तते। अर्थात् यह पंक्ति रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख से है। रुद्रदामन शक महाक्षत्रप वंश के राजा थे। इस अभिलेख की खोज 1832 में जेम्स प्रिंसेप ने की थी। इसकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी थी।

90. प्रकृतिः उपादानम्, कालः, भागः - इत्येते प्रभेदाः भवन्ति-

- (a) आभ्यन्तरतुष्टेः (b) बाह्यतुष्टेः
(c) मोहमहामोहयोः (d) अशक्तेः

Ans. (a) : प्रकृतिः, उपादानम्, कालः, भागः- इत्येते प्रभेदाः 'आभ्यन्तरतुष्टेः' भवन्ति। अर्थात् प्रकृति, उपादान, काल और भाग्य ये प्रभेद आभ्यन्तर तुष्टि के होते हैं।

आध्यात्मिक्यश्चतस्रः प्रकृत्युपादानकाल भाग्याख्याः।

बाह्याः विषयोपरमात् पञ्च च नव तुष्टयोऽभिमताः॥

प्रकृति, उपादान, काल और भाग्य ये चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ हैं, तथा विषयों से पूर्ण वैराग्य के कारण उत्पन्न होने वाली पाँच बाह्य तुष्टियाँ हैं। इस प्रकार कुल नौ तुष्टियाँ हैं।

बाह्यतुष्टि पाँच- पार, सुपार, पारपार, अनुत्तमाम्भ और उत्तमाम्भ।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् (91-95) उत्तराणि देयानि-

देव! मयापि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वचित्कूपाभ्यासेऽष्टवर्षदेशीयो दृष्टः। स च त्रासगद्गदमगदत् - महाभाग! क्लिष्टस्य मे क्रियतामार्थ! साहाय्यकम्। अस्य मे प्राणापहारिणीं पिपासां प्रतिकर्तुमुदकयुदञ्चे कूपे कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तम् इति। यथाहमभ्येत्य व्रतत्या कयापि वृद्धमुत्तार्य, तं च बालं वंशनालीमुखोद्धृताभिरद्भिः फलैश्च पञ्चषैः शरक्षेपोच्छितस्य लकुचवृक्षस्य शिखरात् पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य, तरुतलनिषण्णस्तं जरन्तम् अब्रवम्।

91. एषः गद्यांशः कस्मिन् काव्ये प्राप्यते?

- (a) दशकुमारचरिते (b) हर्षचरिते
(c) कादम्बर्याम् (d) नलचम्पूकाव्ये

Ans. (a) : एषः गद्यांश 'दशकुमारचरिते' काव्ये प्राप्यते। अर्थात् यह गद्यांश दशकुमारचरित काव्य में प्राप्त होता है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं। यह तीन पीठिका में विभक्त है। (1) पूर्वपीठिका (2) चरित्र भाग (3) उत्तर पीठिका। पूर्व पीठिका में पाँच उच्छ्वास हैं। उत्तर पीठिका में तीन उच्छ्वास हैं। इसमें 10 कुमारों के जीवन-चरित्र का वर्णन है। 'हर्षचरित्र' बाणभट्ट का ऐतिहासिक गद्य काव्य है इसमें आठ उच्छ्वास हैं। कादम्बरी बाणभट्ट की कथा काव्य तथा नलचम्पू, त्रिविक्रम भट्ट का चम्पूकाव्य है। अतः विकल्प (a) सही है।

92. 'पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य' इत्यस्मिन् वाक्ये कः अलङ्कारः?

- (a) छेकानुप्रासः (b) वृत्यानुप्रासः
(c) लाटानुप्रासः (d) यमकः

Ans. (b) : 'पाषाणपातितैः प्रत्यानीतप्राणवृत्तिमापाद्य' इत्यस्मिन् वाक्ये वृत्यानुप्रासः अलङ्कारः अस्ति। अर्थात् इस वाक्य में वृत्यानुप्रास अलङ्कार है। 'एकस्याप्यसकृत्परः' एक वर्ण का भी और अनेक वर्णों का भी अनेक बार का आवृत्तिसाम्य होने पर वृत्यानुप्रास अलंकार होता है। यह अनुप्रास का एक भेद है। इसमें प वर्ण, पा पा वर्ण तथा त वर्णों की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अनेक वर्णों की एक बार आवृत्तिसाम्य छेकानुप्रास होता है। जहाँ पर पदों का साम्य होता है। वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अर्थवान् होते हुए भिन्न-भिन्न अर्थ देने वाले वर्णों की उसी क्रम से पुनरावृत्ति यमक अलंकार कहलाती है।

93. 'क्वचित्कूपाभ्यासे' इत्यत्र अभ्यासपदस्य कः अर्थः?

- (a) द्वित्वम् (b) नैरन्तर्यम्
(c) सामीप्यम् (d) प्रवृत्तिः

Ans. (c) : 'क्वचित्कूपाभ्यासे' इत्यत्र अभ्यासपदस्य 'सामीप्यम्' अर्थः अस्ति। अर्थात् इस वाक्य में अभ्यासपद का 'सामीप्य' अर्थ है। क्वचित्कूपाभ्यासे का अर्थ किसी कुँए के पास में। द्वित्वम् का अर्थ है- दो होना नैरन्तर्यम् का अर्थ- निरन्तरता, अविच्छिन्नता, निरन्तरत्व है। प्रवृत्तिः का अर्थ - मन का झुकाव, आदत, स्वभाव है। अतः विकल्प (c) सही है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

94. कुमारस्य वयः किम् आसीत्?

- (a) अष्टादशवर्षीयः (b) अष्टवर्षीयः
(c) सप्तवर्षीयः (d) अष्टशतवर्षीयः

Ans. (b) : कुमारस्य वयः 'अष्टवर्षीयः' आसीत्।

अर्थात् कुमार की आयु सोलह वर्ष थी। यह दशकुमारचरितम् के विश्रुत चरित से कथित है। आचार्य दण्डी परिष्कृत गद्य-शैली के जन्मदाता हैं। वैदर्भी शैली के कवि हैं।

दण्डी की कृतियाँ-

1. दशकुमारचरितम् 2. काव्यादर्श 3. अवन्तिसुन्दरी कथा
4. छन्दोविचिचि 5. कलापरिच्छेद 6. द्विसन्धानकाव्य

95. 'कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः' इत्यत्र 'निष्कलः' शब्दः कस्य अर्थस्य परामर्शकः?

- (a) कलारहितस्य (b) विद्यारहितस्य
(c) वृद्धस्य (d) कलहरहितस्य

Ans. (c) : 'कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः' इत्यत्र 'निष्कल' शब्दस्य वृद्धार्थस्य परामर्शकः।

अर्थात् यहाँ पर निष्कल शब्द वृद्ध अर्थ का परामर्शक है। यह गद्य भाग विश्रुत चरित दशकुमार के अष्टम् उच्छ्वास से है यह कथन कुमार विश्रुत का है, कि इस कुएँ में गिर गया है वह मेरे लिए एक मात्र आश्रय था।

कलारहितस्य का अर्थ है- कला से हीन, विद्यारहितस्य का अर्थ- विद्या से हीन तथा कलहरहितस्य का अर्थ- कलह से रहित।

अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् (96-100)

उत्तराणि देयानि-

'गौः शुक्लः चलो डित्थ इत्यादौ चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्तिः' इति महाभाष्यकारः। परमाण्वदीनां तु गणपाठमध्यपाठात् पारिभाषिकं गुणत्वम्। गुणक्रियायदृच्छानां वस्तुतः एकरूपाणामप्याश्रयभेदाद् भेद एव लक्ष्यते। यथैकस्य मुखस्य खड्गमुकुरतैलाद्यालम्बनभेदात् हिमपयःशङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्ल इत्यादिरभिन्नाभिधानप्रत्ययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम्। गुडतण्डुलादिपाकादिष्वेवमेव पाकादित्वम्। बालवृद्धशुकाद्युदीरितेषु डित्थादिशब्देषु च प्रतिक्षणं भिद्यमानेषु डित्थाद्यर्थेषु वा डित्थादित्वमस्तीति सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये। तद्वानपोहो वा शब्दार्थः कैश्चिदुक्त इति ग्रन्थगौरवभयात् प्रकृतानुपयोगाच्च न दर्शितम्।

96. 'हिमपयःशङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्लः इत्यादिरभिन्नाभिधान प्रत्ययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम्।' इत्यस्मिन् गद्यांशे केषां सिद्धान्तः अस्ति?

- (a) नैयायिकानाम् (b) बौद्धानाम्
(c) मीमांसकानाम् (d) वैयाकरणानाम्

Ans. (c) : 'हिमपयःशङ्खाद्याश्रयेषु परमार्थतो भिन्नेषु शुक्लादिषु यद्वशेन शुक्लः शुक्लः इत्यादिरभिन्नाभिधान प्रत्ययोत्पत्तिस्तच्छुक्लत्वादि सामान्यम्।' इत्यस्मिन् गद्यांशे मीमांसकानां सिद्धान्तः अस्ति।

अर्थात् वर्ष, दूध, शङ्ख आदि में रहने वाला शुक्ल वास्तव में भिन्न होता है परन्तु शुक्ल आदि गुणों में जिनमें जिनके कारण शुक्लः शुक्लः इस प्रकार का एकाकार कथन और प्रतीति की उत्पत्ति होती है वह शुक्लत्व आदि सामान्य जाति है। यह सिद्धान्त मीमांसको का है। 'संकेतितश्रुतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा' अर्थात् वैयाकरण संकेतक जाति आदि में मानते हैं परन्तु मीमांसक केवल जाति में ही मानते हैं।

97. उपर्युक्तगद्यांशे कः सिद्धान्तः वर्तते?

- (a) स्फोटसिद्धान्तः (b) शक्तिग्रहसिद्धान्तः
(c) रससिद्धान्तः (d) व्यञ्जनासिद्धान्तः

Ans. (b) : उपर्युक्तगद्यांशे शक्तिग्रहसिद्धान्तः वर्तते।

अर्थात् उपर्युक्तगद्यांश में शक्तिग्रहसिद्धान्त वर्णित है। संकेतितश्रुतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा। अर्थात् संकेतित अर्थ जाति आदि (अर्थात् जाति, गुण, क्रिया तथा यदृच्छा) भेदों से चार प्रकार का होता है। अथवा मीमांसकों के मत में केवल जाति ही संकेतित अर्थ होता है। स्फोट सिद्धान्त वैयाकरणों का है, रस सिद्धान्त भरतमुनि का है। व्यञ्जना सिद्धान्त ध्वनिवादियों का है।

अतः विकल्प (b) सही है।

98. 'सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये' इत्यस्मिन् वाक्यांशे 'अन्ये' इति शब्दः कस्य परामर्शकः अस्ति?

- (a) नैयायिकानाम् (b) बौद्धानाम्
(c) मीमांसकानाम् (d) वैयाकरणानाम्

Ans. (c) : 'सर्वेषां शब्दानां जातिरेव प्रवृत्तिनिमित्तमित्यन्ये' इत्यस्मिन् वाक्यांशे 'अन्ये' इतिशब्दः मीमांसकस्य परामर्शकः अस्ति। अर्थात् इस वाक्य में 'अन्ये' यह शब्द मीमांसकों का बोधक है। इनके मत में जात्यादि चारों में प्रवृत्ति-निमित्त न मानकर केवल जाति को ही प्रवृत्ति-निमित्त मानना चाहिए और उसी में संकेतग्रह मानना चाहिए। परन्तु वैयाकरणों के मत में जाति आदि चारों में संकेतग्रह मानना चाहिए। अतः विकल्प (c) सही है।

99. 'तद्वान्' इति पदे अभिव्यक्तसिद्धान्तस्य विषये असत्यं कथनमस्ति -

- (a) अत्र 'तत्' पदांशः 'सामान्यमिति' अर्थस्य परामर्शकः अस्ति।
(b) अत्र 'वान्' इति पदांशः 'व्यक्तिः' इति अर्थस्य परामर्शकः अस्ति।
(c) अस्मिन् पदांशे 'जातिविशिष्टव्यक्तौ संकेतः गृह्यते' इति मन्यते।
(d) अयं सिद्धान्तः बौद्धानाम् अस्ति।

Ans. (d) : 'तद्वान्' इति पदे अभिव्यक्तसिद्धान्तस्य विषये असत्यं कथनं 'अयं सिद्धान्तः बौद्धानाम्' अस्ति।

अर्थात् 'तद्वान्' इस पद में अभिव्यक्त सिद्धान्त के विषय में 'यह सिद्धान्त बौद्धों का है' असत्य कथन है। तद्वानपोहो वा शब्दार्थः कैश्चिदुक्तः इति तद्वान् का अर्थ जातिमान् है। अर्थात् जातिविशिष्ट व्यक्ति में संकेतग्रह मानना चाहिए, यह नैयायिकों का मत है। 'तत्' पद सामान्य अर्थ का परामर्शक है तथा, वान् इस पद का अर्थ व्यक्ति अर्थ का परामर्शक है। 'अपोह' बौद्धों का सिद्धान्त है। अपोह का अर्थ 'अतद्-व्यावृत्ति' या 'तद्विन्नभिन्नत्व' होता है।

100. बौद्धानां सिद्धान्तः कः?

- (a) व्यक्तिवादः (b) जातिवादः
(c) अपोहवादः (d) जातिविशिष्टव्यक्तिवादः

Ans. (c) : बौद्धानां सिद्धान्तः 'अपोहवादः' अस्ति।

अर्थात् बौद्धों का सिद्धान्त अपोहवाद है। उनके मत में शब्द का अर्थ अपोह होता है। 'अपोह' का अर्थ 'अतद्-व्यावृत्ति' या 'तद्विन्नभिन्नत्व' होता है। बौद्ध संकेतग्रह अपोह में मानते हैं। मीमांसक संकेतकग्रह जाति में, नव्य नैयायिक व्यक्ति में तथा न्याय-वैशेषिक जाति विशिष्ट व्यक्ति में मानते हैं।

अतः विकल्प (c) सही है।

उच्चतर शिक्षा आयोग
असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा, जनवरी-2008

संस्कृत

व्याख्या सहित प्रश्न-पत्र का हल

1. निम्नलिखित में से कौन काव्य रामायण का उपजीव्य नहीं है?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) किरातार्जुनीयम्
(c) रघुवंशम् (d) महावीरचरितम्

Ans : (b) भवभूतिकृत उत्तररामचरितम् एवं महावीरचरितम् तथा महाकवि कालिदासविरचित रघुवंशमहाकाव्यम्, इन कृतियों का उपजीव्य रामायण है क्योंकि इनका कथानक रामायण से लिया गया है, लेकिन भारवि विरचितम् किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है। अतः रामायण का उपजीव्य काव्य किरातार्जुनीयम् नहीं है।

2. निम्नलिखित में से महाभारताश्रित नहीं है—

- (a) दशकुमारचरितम् (b) ऊरुभङ्गम्
(c) नलचम्पूः (d) शिशुपालवधम्

Ans : (a) महाकवि दण्डी की अद्वितीय गद्य रचना 'दशकुमारचरितम्' में दश राजकुमारों का वर्णन है इसका उपजीव्य गुणादय की 'बृहत्कथा' है। 'ऊरुभङ्गम्' भास द्वारा रचित एकाङ्की नाटक है जिसमें महाभारत युद्ध के अन्तिम दिनों का वर्णन है। नलचम्पू त्रिविक्रम भट्ट का चम्पू काव्य है जो महाभारत के वनपर्व से लिया गया है तथा महाकवि माघप्रणीत 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य महाभारत से सम्बन्धित है।

3. निम्नलिखित में से कौन काल-क्रम में प्रथम है?

- (a) कालिदास (b) भास
(c) भवभूति (d) शूद्रक

Ans : (b) कालक्रम की दृष्टि से (भास- कालिदास-शूद्रक-भवभूति) सबसे पहले भास आते हैं। जबकि महाकवि कालिदास का समय प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व तथा शूद्रक का समय तीसरी-चौथी शताब्दी ईसापूर्व स्वीकार किया जाता है। भवभूति का समय सातवीं-आठवीं शताब्दी है। अतः कालक्रम की दृष्टि से भास पहले है।

4. 'मृच्छकटिकम्' में चारुदत्त के पुत्र का नाम है—

- (a) सर्वदमन (b) चन्द्रकेतु
(c) सौधातकि (d) रोहसेन

Ans : (d) शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् नाटक में 10 अङ्क हैं। इसमें सार्थवाह चारुदत्त एवं गणिका वसन्तसेना की प्रणय गाथा का वर्णन है। चारुदत्त के पुत्र का नाम रोहसेन है। सर्वदमन महाराज दुष्यन्त एवं शकुन्तला का पुत्र है। चन्द्रकेतु लक्ष्मण का पुत्र है।

5. तर्कभाषा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन 'प्रमा' नहीं है?

- (a) उपमिति (b) स्मृति
(c) अनुमिति (d) शाब्दबोध

Ans : (b) 'यथार्थानुभवः प्रमा' अर्थात् यथार्थ अनुभव प्रमा है। 'ज्ञात विषयं ज्ञानं स्मृति' अर्थात् स्मृति वह ज्ञान है जिसका विषय पहले से ही ज्ञात हो। उपमिति, अनुमिति तथा शाब्दबोध प्रमा के अन्तर्गत आते हैं तथा प्रमा के विषय हैं, जबकि स्मृति प्रमा से भिन्न है, अतः स्मृति प्रमा नहीं है।

6. तर्कभाषाके अनुसार शब्द का प्रत्यक्ष किस सन्निकर्ष से होता है?

- (a) संयोग (b) संयुक्तसमवाय
(c) समवाय (d) विशेषणविशेष्यभाव

Ans : (c) तर्कभाषा में षड्विधः सन्निकर्षः कहा गया है, ये षट् सन्निकर्ष इस प्रकार हैं— (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

तर्कभाषा के अनुसार शब्द का प्रत्यक्ष समवाय नामक सन्निकर्ष से होता है।

7. न्यायदर्शन के अनुसार प्रमाण नहीं है

- (a) उपमान (b) अर्थापत्ति
(c) प्रत्यक्ष (d) शब्द

Ans : (b) न्याय परम्परा के अनुसार चार प्रमाण हैं—

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द।

'एतेभ्योऽन्यत्र प्रमाणम्' इस कथन से विदित होता है कि प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं है किन्तु मीमांसक और वेदान्ती अर्थापत्ति नामक प्रमाण भी मानते हैं, जबकि अर्थापत्ति को न्यायदर्शन में प्रमाण नहीं माना गया है।

8. सांख्यकारिका के अनुसार 'पञ्चतन्मात्रा- किसके विकार हैं?

- (a) बुद्धि (b) अहङ्कार
(c) मन (d) पञ्चमहाभूत

Ans : (b) सांख्यकारिका के अनुसार पञ्चतन्मात्रा अहङ्कार के विकार हैं, यह बात निम्न कारिका से सिद्ध हो जाती है—

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।

तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि॥२२॥

9. कठोपनिषद् के अनुसार बुद्धिमान् व्यक्ति किसका वरण करता है?

- (a) श्रेय (b) प्रेय
(c) श्रेय और प्रेय दोनों (d) न श्रेय और न प्रेय

Ans : (a) श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य के पास आते हैं। बुद्धिमान् पुरुष उन दोनों को भली-भाँति समझकर अलग-अलग करता है एवं वह प्रेय के समक्ष श्रेय को ही वरण करता है किन्तु मूढ़व्यक्ति योग और क्षेम के कारण प्रेय को वरण करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

10. तर्कभाषा के अनुसार 'गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्' में कौन हेत्वाभास है?

- (a) असिद्ध (b) अनैकान्तिक
(c) विरुद्ध (d) प्रकरणसम

Ans : (a) तर्कभाषानुसार 'गगनारविन्दं सुरभि, अरविन्दत्वात्, सरोजारविन्दवत्' में असिद्ध हेत्वाभास है। असिद्ध हेत्वाभास तीन प्रकार का होता है—

(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।
हेत्वाभास असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, प्रकरणसम तथा कालात्ययापदिष्ट के भेद से पाँच प्रकार का होता है।

11. निम्नलिखित में से किसमें 'आद्गुणः' सूत्र से सन्धि हुई है?

- (a) पावकः (b) सूर्योदयः
(c) विद्यालयः (d) इत्यादिः

Ans : (b) सूर्य + उदयः = सूर्योदयः। इसमें आद् गुणः सूत्र से गुण सन्धि हुई है।

आद् गुणः = अवर्ण अ या आ के बाद कोई भी स्वर हो तो पूर्व एवं पर के स्थान पर गुणोकादेश हो जाता है।

पावकः = पौ + अकः - एचोऽयवायावः सूत्र से अयादि सन्धि है।

विद्यालयः = विद्या + आलयः - अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से दीर्घ सन्धि है।

इत्यादिः = इति + आदिः - इकोयणचि से यण् सन्धि है।

12. निम्नलिखित में से कौन हल् सन्धि का उदाहरण नहीं है?

- (a) जगन्नाथः (b) शिवोवन्द्यः
(c) सच्चित् (d) चिन्मयः

Ans : (b) शिवोवन्द्यः हल् सन्धि का उदाहरण नहीं है क्योंकि इसका विच्छेद शिवः + वन्द्यः होगा 'हशि च' सूत्र से शिवोवन्द्यः बना।

जगन्नाथः = जगत् + नाथः।

सच्चित् = सत् + चित्।

चिन्मयः = चिद् + मयः।

13. आनन्दवर्धन ने वाच्य नामक काव्यार्थ का विस्तृत विवरण न देने का कारण क्या बताया?

- (a) पर्याप्त सामग्री का अभाव
(b) विषय की दुरुहता
(c) पूर्व आचार्यों द्वारा पर्याप्त विवेचित होना
(d) शब्दातीत होना

Ans : (c) आनन्दवर्धन ने वाच्य नामक काव्यार्थ का विस्तृत विवरण न देने के कारण पूर्व आचार्यों द्वारा पर्याप्त विवेचित होना बताया है। आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में इसके विषय में बताया है।

14. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र के उदाहरणों में लृवर्ण का उदाहरण नहीं है, इसका क्या कारण है?

- (a) उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं समझी गयी।
(b) इस पर ध्यान ही नहीं गया।
(c) यह उदाहरण देने वाले के अज्ञान का सूचक है।
(d) लृकार का दीर्घ नहीं होता।

Ans : (d) अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र के उदाहरणों में लृवर्ण का उदाहरण नहीं है, क्योंकि लृकार का दीर्घ नहीं होता है। अ, इ, उ, ऋ, एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादशभेदाः। लृवर्णस्य द्वादश भेदाः तस्य दीर्घाभावात्। एचामपि द्वादश, तेषां ह्रस्वाभावात्।

15. 'बृहदेवता' के रचयिता हैं—

- (a) पतञ्जलि (b) कात्यायन
(c) शौनक (d) यास्क

Ans : (c) 'बृहदेवता' के रचयिता शौनक हैं। जबकि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना करके लोकप्रसिद्धि पायी थी, इसी प्रकार वररुचि कात्यायन ने वार्तिक की रचना कर संसार में प्रसिद्ध हो गये।

16. निम्नलिखित में से किस अलङ्कार-युग्म के अलङ्कार सर्वथा विपरीत लक्षण वाले हैं?

- (a) अनुप्रास-रूपक (b) अनुप्रास-यमक
(c) विभावना-विशेषोक्ति (d) उपमा-उत्प्रेक्षा

Ans : (c) इन उदाहरणों में विभावना-विशेषोक्ति अलङ्कार सर्वथा विपरीत लक्षण वाले होते हैं। काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने दोनों अलङ्कारों की क्रमशः परिभाषा इस प्रकार दी है—

(1) "क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।"

(2) "विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।"

17. 'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' में अलङ्कार है—

- (a) अनन्वय (b) उपमेयोपमा
(c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा

Ans : (a) 'रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव' इसमें अनन्वय अलङ्कार है। आचार्य मम्मट ने अनन्वय अलङ्कार की परिभाषा इस प्रकार की है—“उपमानोपमेयत्वे एकस्यैवैकवाक्यगे अनन्वयः।

18. मम्मट के अनुसार लक्षणा है—

- (a) षड्विधा (b) त्रिविधा
(c) नवधा (d) दशविधा

Ans : (a) मम्मट ने लक्षणा षड्विधा कहकर लक्षणा के छः भेद बताये हैं। उपादान-लक्षणा तथा लक्षण-लक्षणा, शुद्ध लक्षणा तथा गोणी लक्षणा दोनों में से प्रत्येक के सारोपा तथा साध्यवसाना भेद होकर लक्षणा के छः भेद हो जाते हैं।

19. महाकाव्य में सर्गों की न्यूनतम संख्या है—

- (a) आठ (b) दस
(c) बारह (d) पाँच

Ans : (a) महाकाव्य में सर्गों की न्यूनतम संख्या आठ (8) होनी चाहिए— सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।

सद्वंश क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥

एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह॥

20. महाकाव्य में अङ्गीरस होता है—

- (a) शृङ्गार (b) हास्य
(c) बीभत्स (d) भयानक

Ans : (a) महाकाव्य में अङ्गीरस शृङ्गार होता है। कहा भी गया है—

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरसः इष्यते।

अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः॥

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

21. उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में सीता की सखी का नाम है—

- (a) तमसा (b) मुरला
(c) वासन्ती (d) अरुन्धती

Ans : (c) उत्तररामचरितम् नाटक महाकवि भवभूति का 7 अङ्कों का नाटक है इसमें सीता की सखी वासन्ती हैं। तमसा और मुरला नामक दो नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं तथा अरुन्धती महर्षि वशिष्ठ की पत्नी हैं।

22. शुक्लयजुर्वेद में अध्यायों की संख्या है—

- (a) चालीस (b) तीस
(c) बीस (d) पच्चीस

Ans : (a) शुक्लयजुर्वेद में अध्यायों की संख्या चालीस (40) है। चालीसवें अध्याय का नाम ईशावास्योपनिषद् है। यजुर्वेद की शाखाओं में शुक्लयजुर्वेद तथा कृष्णयजुर्वेद नामक दो शाखायें प्राप्त होती हैं।

23. मम्मट के अनुसार कौन मध्यमकाव्य है?

- (a) जिसमें व्यङ्ग्यार्थ की प्रधानता होती है।
(b) जिसमें वाच्यार्थ की प्रधानता होती है।
(c) चित्रकाव्य
(d) जिसमें व्यङ्ग्यार्थ गुणीभूत होता है।

Ans : (d) मम्मट के अनुसार मध्यमकाव्य वह होता है जिसमें व्यङ्ग्यार्थ गुणीभूत होता है।

24. 'मृच्छकटिकम्' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा—

- (a) मृत् + शकटिकम् (b) मृच् + छकटिकम्
(c) मृच्छ + कटिकम् (d) मृत्श + कटिकम्

Ans : (a) मृत् + शकटिकम् = मृच्छकटिकम्। सबसे पहले त् और श् का योग होने के कारण स्तोःश्चुना श्चुः सूत्र से श्चुत्व होकर त् को च् होकर मृच् + शकटिकम् बना अब शश्छोऽटि सूत्र से श् को छ् होकर मृच् + छकटिकम् = मृच्छकटिकम् बना।

25. ऋग्वेद में ऌ उपलब्ध होता है—

- (a) स्वर-व्यञ्जन के मध्य में
(b) दो स्वरों के मध्य में
(c) दो व्यञ्जनों के मध्य में
(d) व्यञ्जन-स्वर के मध्य में

Ans : (b) ऋग्वेद में ऌ दो स्वरों के मध्य में उपलब्ध होता है।

26. ऋग्वेद में 'देवासः' रूप किस विभक्ति का है?

- (a) प्रथमा विभक्ति (b) द्वितीया विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) सप्तमी विभक्ति

Ans : (a) ऋग्वेद में 'देवासः' रूप प्रथमा विभक्ति एकवचन का है। इसका प्रतिपादिक देवास् है।

27. निम्नलिखित में से किस सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है?

- (a) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगोऽपि
(b) रुच्यर्थानां प्रियमाणः
(c) जनिकर्तुः प्रकृतिः
(d) इत्थम्भूतलक्षणे

Ans : (d) इत्थम्भूतलक्षणे सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान किया जाता है। इत्थम्भूतलक्षणे = जब कोई विशेष ज्ञापक चिह्न से कोई पहचाना जा सके उसमें प्रकृत सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है। उदाहरण इस प्रकार हैं—जटाभिः तापसः, पुस्तकेन छात्रः, वर्णेन गौरः इत्यादि।

28. निम्नलिखित में से किस उदाहरण में षष्ठी विभक्ति है?

- (a) अक्षणा काणः
(b) विप्राय गां ददाति
(c) मातुःस्मरति
(d) हरये रोचते भक्तिः

Ans : (c) मातुःस्मरति में षष्ठी विभक्ति का विधान किया गया है। मातुःस्मरति = (माता सम्बन्धी स्मरण करता है) यहाँ माता स्मरण क्रिया का कर्म है किन्तु सम्बन्ध मात्र की विवक्षा में प्रकृत सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है।

29. माधुर्य गुण किस रस का धर्म है?

- (a) शृङ्गार (b) वीर
(c) अद्भुत (d) रौद्र

Ans : (a) माधुर्य गुण शृङ्गार रस का धर्म है। शृङ्गार रस का स्थायी भाव रति होता है तथा इसका वर्ण श्याम होता है।

30. 'गोः समीपे' में अव्ययीभाव समास कीजिये—

- (a) गोरूप (b) उपगौः
(c) उपगु (d) उपगोः

Ans : (c) गोः समीपे = उपगु। ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य सूत्र से यदि दूसरे शब्द का अन्तिम वर्ण दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व कर दिया जाता है। उप + गो = उपगो हुआ। ओ को ह्रस्व उ करने पर उप + गु = उपगु बना।

31. 'भवदीय' में प्रत्यय-निर्देश कीजिये—

- (a) छ (b) च्वि
(c) अण् (d) ल्यप्

Ans : (a) भवदीय में छ प्रत्यय का विधान किया गया है। भवत् + छ। छ को 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्यादीनां' सूत्र से 'ईय' आदेश होकर भवत् + ईय = भवदीय बना।

32. उत्तररामचरितम् में निम्नलिखित उक्ति किसकी है?

“त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे।
इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धां
तामेव शान्तमथवा किमतः परेण॥”

- (a) राम (b) भरत
(c) कौसल्या (d) वासन्ती

Ans : (d) “त्वं जीवितं किमतः परेण। उत्तररामचरितम् में वनदेवता वासन्ती राम को अपना सीताविषयक प्रतिकार सुना रही हैं। वह याद दिलाती हैं कि आप कहते थे कि सीता मेरा जीवन है दूसरा प्राण है लेकिन उसको एकान्त वन में छोड़कर आपने क्या कर दिया।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

33. 'मेघ एक अचेतन, ज्ञानशून्य, धुआँ-प्रकाश-जल और वायु का सम्मिश्रण हैं सन्देश तो किसी चेतन प्राणी के द्वारा ही भेजा जा सकता है, जिसकी इन्द्रियाँ कुशल हों। यक्ष यह सब समझता हुआ भी मेघ से निवेदन करता है।' निम्नलिखित सूक्तियों में से किस सूक्ति में इसका कारण बताया गया है?

- (a) प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।
- (b) कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।
- (c) याच्ना मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
- (d) सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।

Ans : (b) "कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" इस सूक्ति के माध्यम से यक्ष कहता है कि कामार्ता व्यक्ति जड़ और चेतन के विषय में स्वभाव से विवेकशून्य होते हैं। फिर भी आप मेरे सन्देश को मेरी प्रियतमा यक्षिणी के पास ले जाओ।

34. कालिदास का जन्मस्थान अधिकांश विद्वान् उनके ग्रन्थों में वर्णित सामग्री के आधार पर उज्जयिनी मानते हैं। पूर्वमेघ में भी कुछ श्लोकों में इसी अभिप्राय की ओर संकेत मिलता है।

निम्नलिखित में से किस श्लोक को उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित किया जाता है?

- (a) रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।
- (b) तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीम्।
- (c) वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशाम्।
- (d) राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः।

Ans : (c) कालिदास के जन्म के विषय में मतभेद है फिर भी अधिकांश विद्वान् इनका जन्म उज्जयिनी ही मानते हैं। कालिदास ने भी उज्जयिनी के प्रति अपना विशेष लगाव दिखाकर यह बात और पुष्टि कर दी है—'वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशाम्' इस श्लोक के आधार पर यह बात और प्रमाणिक लगती है।

35. भारवि विरचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' में 'किरात' से क्या अभिप्राय है?

- (a) प्रथमसर्ग का वनेचर जो ब्रह्मचारी के वेश में गुप्तचर है।
- (b) महाकाव्य के अगले सर्गों में जिन किरात-किरातिनियों का वर्णन किया गया है।
- (c) किरातवेशधारी शिव।
- (d) पाण्डुपुत्र, जो गुप्तवेश में दर-दर भटकते हैं।

Ans : (c) भारवि विरचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' में 'किरात' से अभिप्राय किरातवेशधारी भगवान् शिवजी से है। इस महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। इसमें किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर एवं अर्जुन के घोर युद्ध का वर्णन किया गया है।

36. नलचम्पू के 'आर्यावर्तवर्णनम्' में मुख्य रूप से किन अलङ्कारों का प्रयोग हुआ है?

- (a) श्लेष-उपमा-परिसंख्या
- (b) अपहृति-श्लेष-विभावना
- (c) श्लेष-रूपक-व्यतिरेक
- (d) श्लेष-काव्यलिङ्ग-दीपक

Ans : (a) नलचम्पू के 'आर्यावर्तवर्णनम्' में मुख्य रूप से श्लेष-उपमा और परिसंख्या अलङ्कारों का प्रयोग किया गया है।

37. निम्नलिखित में से कौन गद्यकारों का समूह है?

- (a) कालिदास-भवभूति-भास
- (b) सुबन्धु-दण्डी-भास
- (c) कुमारदास-कालिदास-जयदेव
- (d) सुबन्धु-दण्डी-बाण

Ans : (d) बात अगर गद्यकाव्य की हो तो सुबन्धु दण्डी और बाण ही आते हैं। ये कवि गद्यत्रयी कवि के अन्तर्गत हैं। सुबन्धु की वासवदत्ता, दण्डी का दशकुमारचरितम् तथा बाण की कादम्बरी और हर्षचरितम् उच्च कोटि की गद्य रचनायें हैं। गद्यकाव्य को शीर्ष में पहुँचाने का श्रेय इन्हीं तीनों (सुबन्धु-दण्डी-बाण) कवियों को जाता है।

38. आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में एक विशिष्ट अर्थ की प्रशंसा की है। वह महाकवियों की वाणी में उसी तरह सुशोभित होता है जैसे अङ्गनाओं में लावण्य। वह अर्थ ही काव्य की आत्मा है। उसे कहते हैं—

- (a) वक्रोक्ति
- (b) अलङ्कार
- (c) प्रतीयमान
- (d) वाच्यार्थ

Ans : (c) आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक में एक विशिष्ट अर्थ की प्रशंसा की है। वह महाकवियों की वाणी में उसी तरह सुशोभित होता है जैसे अङ्गनाओं में लावण्य। वह अर्थ ही काव्य की आत्मा है तथा उसे प्रतीयमान नाम से सम्बोधित किया जाता है।

39. रूपक-भेद की दृष्टि से 'मृच्छकटिकम्' क्या है?

- (a) नाटक
- (b) प्रकरण
- (c) व्यायोग
- (d) प्रहसन

Ans : (b) रूपक-भेद की दृष्टि से 'मृच्छकटिकम्' प्रकरण के अन्तर्गत आता है, प्रकरण में भी मिश्र प्रकरण के अन्तर्गत। मृच्छकटिकम् राजा शूद्रक द्वारा रचित उच्च कोटि का प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 10 अङ्क हैं। मृच्छकटिकम् में निर्धनता को पाप की श्रेणी में लाया गया है। इसके नायक सार्थवाह चारुदत्त एवं नायिका गणिका वसन्तसेना है। इसमें दोनों की प्रणय कथा का वर्णन है।

40. 'यो-हे-हो वाद' किस प्रसंग में आया है—

- (a) ध्वनि-परिवर्तन के कारण
- (b) ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएँ
- (c) भाषा का उद्भव
- (d) अर्थ-परिवर्तन के कारण

Ans : (c) 'यो-हे-हो वाद' इसका वर्णन भाषा का उद्भव नामक प्रसङ्ग में किया गया है। भाषा विज्ञान में 'यो-हे-हो वाद' के विषय में विस्तृत विवेचन है।

41. अपभ्रंश है—

- (a) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
- (b) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा
- (c) नवीन भारतीय आर्यभाषा
- (d) द्राविड परिवार की भाषा

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) अपभ्रंश मध्यकालीन भारतीयों के द्वारा बोली जाने वाली आर्यभाषा है। सबसे पहले पालि भाषा का विकास हुआ, तत्पश्चात् प्राकृत, बाद में संस्कृत, संस्कृत के बाद अपभ्रंश, इसके बाद अवहट्ट तथा सबसे अन्त में हिन्दी भाषा का विकास हुआ इसको इस प्रकार से समझा जा सकता है—

पालि→प्राकृत→संस्कृत→अपभ्रंश→अवहट्ट→हिन्दी।

42. शौरसेनी इसके अन्तर्गत है—

- (a) पालि (b) प्राकृत
(c) अपभ्रंश (d) पैशाची

Ans : (b) शौरसेनी प्राकृत के अन्तर्गत आने वाली भाषा है। इसके अन्तर्गत कई तरह की प्राकृत भाषाएं आती हैं। जैसे-महाराष्ट्रियन, प्राकृत इत्यादि।

43. अर्थसंकोच का उदाहरण है—

- (a) प्रवीण (b) तैल
(c) असुर (d) सरसिज

Ans : (b) अर्थसंकोच का उदाहरण 'तैल' है। जब किसी शब्द के विस्तारित अर्थ में पहले की तुलना में कमी आ जाती है तो उसे अर्थसंकोच कहते हैं।

44. धर्म का 'धम्म' होना इसका उदाहरण है—

- (a) तालव्य नियम (b) सादृश्य
(c) समीकरण (d) विषमीकरण

Ans : (c) धर्म का 'धम्म' होना इसका उदाहरण समीकरण है। इसका विस्तृत विवेचन भाषा विज्ञान में मिलता है।

45. ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है—

- (a) पाँच (b) दस
(c) आठ (d) बारह

Ans : (b) ऋग्वेद में 10 (दस) मण्डल प्राप्त होते हैं तथा प्रत्येक मण्डलों में मंत्रों की संख्या है। प्रत्येक मण्डल के ऋषि एवं देवता हैं। दस मण्डल के अलावा 1028 सूक्त तथा लगभग 10552 मंत्र भी प्राप्त होते हैं।

46. अथर्ववेद कितने काण्डों में विभाजित है?

- (a) दस (b) चालीस
(c) बीस (d) सोलह

Ans : (c) अथर्ववेद बीस (20) काण्डों में विभाजित है। प्रत्येक काण्ड में अलग-अलग लौकिक विषयों का वर्णन है। जैसे—रोगनिवृत्ति प्रथम काण्ड में, सर्पविषनाशन पञ्चम काण्ड में, वशीकरण मन्त्र षष्ठ काण्ड में तथा प्रसिद्ध गौ सूक्त दशम काण्ड में है इत्यादि।

47. 'लेटलकार' का प्रयोग हुआ है—

- (a) अपभ्रंश में (b) पालि में
(c) प्राकृत में (d) वैदिक संस्कृत में

Ans : (d) संस्कृत में 10 लकारों का वर्णन मिलता है। लट् लकार, लङ् लकार, लिट् लकार, लृट् लकार, लुट् लकार, लुङ् लकार, लेट् लकार, लोट् लकार, लड़लकार विधिलिङ् लकार इत्यादि। लेट् लकार वेदों में पाया जाता है। इसका लौकिक प्रयोग नहीं मिलता है।

48. रौद्ररस का स्थायीभाव है—

- (a) शोक (b) क्रोध
(c) उत्साह (d) भय

Ans : (b) रौद्ररस का स्थायीभाव क्रोध है तथा इसका वर्ण रक्त है। करुण रस का स्थायीभाव शोक है तथा इसका वर्ण कपोत है और देवता यम है। वीररस का उत्साह एवं भयानक का स्थायीभाव भय है।

49. 'शतपथब्राह्मण' किस वेद से सम्बन्धित है?

- (a) ऋग्वेद से (b) शुक्लयजुर्वेद से
(c) कृष्णयजुर्वेद से (d) अथर्ववेद से

Ans : (b) यजुर्वेद की दो शाखायें मिलती हैं—कृष्ण यजुर्वेद एवं शुक्लयजुर्वेद। शतपथब्राह्मण का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।

50. वेदाङ्गों की संख्या है—

- (a) पाँच (b) चार
(c) छः (d) दस

Ans : (c) वेदाङ्गों की संख्या छः है, जो इस प्रकार है—

(1) शिक्षा (2) कल्प (3) निरुक्त (4) व्याकरण (5) छन्द और (6) ज्योतिष।

51. 'भूमिसूक्त' (पृथ्वीसूक्त) किस वेद में है?

- (a) ऋग्वेद में (b) सामवेद में
(c) यजुर्वेद में (d) अथर्ववेद में

Ans : (d) अथर्ववेद को नवधाऽथर्ववेदो वेदः कहा गया है, अर्थात् अथर्ववेद में नव शाखायें थी, लेकिन वर्तमान में सिर्फ दो ही शाखायें प्राप्त होती हैं।

(1) पैप्पलाद/पिप्पलाद शाखा (2) शौनकीय शाखा।

'भूमिसूक्त' या (पृथ्वीसूक्त) का सम्बन्ध अथर्ववेद से ही है।

52. ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त किस देवता के लिए प्रयुक्त है?

- (a) अग्नि के लिये (b) इन्द्र के लिये
(c) उषा के लिये (d) विष्णु के लिये

Ans : (b) ऋग्वेद में लगभग 250 सूक्तों में इन्द्र की स्तुति की गयी है। अतः ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त इन्द्र के लिये प्रयुक्त हैं।

53. वेद के व्याख्याकार के रूप में सर्वाधिक प्रख्यात भारतीय आचार्य हैं—

- (a) अरविन्द (b) दयानन्द
(c) सायण (d) यास्क

Ans : (c) वेदों के व्याख्याकार के रूप में सर्वाधिक प्रख्यात भारतीय आचार्य सायण हैं, लेकिन कुछ विद्वान् अरविन्द एवं कुछ दयानन्द को भी मानते हैं।

54. 'पुरुषा-उर्वशी संवाद' किस वेद में है?

- (a) यजुर्वेद में (b) सामवेद में
(c) ऋग्वेद में (d) अथर्ववेद में

Ans : (c) 'पुरुषा-उर्वशी संवाद' ऋग्वेद के दशम मण्डल में प्राप्त होता है। इसमें पुरुषा-उर्वशी एक दूसरे के प्रश्नों का तर्कानुसार प्रत्युत्तर देते हैं।

55. तुमर्थक प्रत्ययों का प्रचुर प्रयोग हुआ है—

- (a) उपनिषदों में (b) पुराणों में
(c) वेदों में (d) रामायण में

Ans : (c) तुमर्थक प्रत्ययों का प्रचुर मात्रा में वेदों में प्रयोग हुआ है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

56. प्रचुर आयुर्वेदिक सामग्री किस वेद में है?

- (a) सामवेद में (b) यजुर्वेद में
(c) ऋग्वेद में (d) अथर्ववेद में

Ans : (d) आयुर्वेदिक सामग्री का वर्णन अथर्ववेद में प्राप्त होता है। क्योंकि अथर्ववेद में इह लौकिक विषयों का अधिकाधिक वर्णन है। यह एक प्रकार से लौकिक वेद ही है।

57. सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक किस वेद से लिये गये हैं?

- (a) शुक्लयजुर्वेद से (b) कृष्णयजुर्वेद से
(c) ऋग्वेद से (d) अथर्ववेद से

Ans : (c) सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक ऋग्वेद से लिये गये हैं। यजुर्वेद से भी लिये गये मन्त्रों का वर्णन है।

58. 'प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः' किस समास का लक्षण है—

- (a) अव्ययीभाव का (b) तत्पुरुष का
(c) केवलसमास का (d) बहुव्रीहि का

Ans : (d) प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः अर्थात् बहुव्रीहि समास में प्रायः अन्य पद प्रधान होता है। जबकि अव्ययीभाव पूर्व पद प्रधान होता है। प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः। इसी प्रकार उत्तर पद प्रधान तत्पुरुष समास होता है। प्रायेणोत्तरपदार्थ-प्रधानो तत्पुरुषः।

59. किस रचना का विभाजन निःश्वासों में है—

- (a) नलचम्पू (b) शिवराजविजयः
(c) काव्यप्रकाश (d) ध्वन्यालोक

Ans : (b) पं० अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित शिवराजविजय का विभाजन निःश्वासों में हुआ है। इसमें तीन विराम तथा 12 निःश्वास प्राप्त होते हैं। अर्थात् प्रत्येक विराम में 4 निःश्वास हैं।

60. भारवि के काव्यमार्ग को कहा जाता है—

- (a) विचित्रमार्ग (b) सुकुमारमार्ग
(c) प्राचीनमार्ग (d) अन्योक्तिमार्ग

Ans : (a) भारवि के काव्यमार्ग को विचित्र मार्ग कहा जाता है। भारवि अलङ्कार काव्य शैली के जनक भी हैं। इनके लिए प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती पद प्रयुक्त होता है।

61. 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' के रचयिता हैं—

- (a) माधव (b) सायण
(c) अरविन्द (d) पतञ्जलि

Ans : (b) 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' के रचयिता सायण हैं। जबकि पतञ्जलि का महाभाष्य है।

62. कठोपनिषद् किस वेद से सम्बन्धित है?

- (a) ऋग्वेद से (b) सामवेद से
(c) अथर्ववेद से (d) यजुर्वेद से

Ans : (d) कठोपनिषद् यजुर्वेद से सम्बन्धित है। यजुर्वेद की दो शाखाएँ— कृष्णयजुर्वेद (2) शुक्लयजुर्वेद। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद के कठ संहिता से सम्बन्धित है।

63. 'निरुक्त' के रचयिता हैं—

- (a) कात्यायन (b) शौनक
(c) यास्क (d) सायण

Ans : (c) यास्क ने निरुक्त की रचना की तथा वररुचि कात्यायन ने वार्तिकों की रचना की है।

64. 'मृच्छकटिकम्' में चारुदत्त किस प्रकृति का नायक है—

- (a) धीरललित (b) धीरोदात्त
(c) धीरप्रशान्त (d) धीरोद्धत

Ans : (c) 'मृच्छकटिकम्' में चारुदत्त धीरप्रशान्त कोटि का नायक है। शूद्रककृत मृच्छकटिकम् में 10 अङ्क हैं। यह प्रकरण के अन्तर्गत आता है। इसकी नायिका वसन्तसेना है जो एक प्रसिद्ध वेश्या (गणिका) है।

65. सत्कार्यवाद के साधक हेतुओं में एक है—

- (a) उपलब्धि (b) त्रैगुण्यविपर्यय
(c) उपादानग्रहण (d) अनुमान

Ans : (c) सत्कार्यवाद के साधक हेतुओं में उपादानग्रहण एक है— असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्। शक्तस्य शक्यकरणाद् कारणभावाच्च सत् कार्यम्॥

66. सांख्यदर्शन में प्रधान की अनुपलब्धि का कारण है—

- (a) अभाव (b) सूक्ष्मता
(c) अत्यधिक सामीप्य (d) अज्ञान

Ans : (b) सांख्यदर्शन में प्रधान की अनुपलब्धि का कारण सूक्ष्मता है।

सौक्ष्म्यात् तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः।

महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च ॥

67. सांख्यमत में प्रकृति है—

- (a) व्यक्त (b) अव्यक्त
(c) अव्यापी (d) अनेक

Ans : (b) सांख्यमत में प्रकृति अव्यक्त है। इस कारिका में प्रकृति अव्यक्त का वर्णन है—

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।

सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम्॥

68. सांख्यमत में पुरुष है—

- (a) कर्म (b) कर्ता
(c) भोक्ता (d) जड़

Ans : (c) सांख्यमत में पुरुष भोक्ता है। इसको निम्न कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है—

सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात्।

पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥

69. सांख्यकारिका के अनुसार कैवल्य का उपाय है—

- (a) भक्ति (b) कर्म
(c) विवेकख्याति (d) उपासना

Ans : (c) सांख्यकारिका के अनुसार कैवल्य का उपाय विवेकख्याति है।

70. सांख्यमत में अन्तःकरण है—

- (a) एकविध (b) द्विविध
(c) त्रिविध (d) त्रयोदशविध

Ans : (c) त्रिविध अन्तःकरण का वर्णन सांख्याचार्यों ने किया है— त्रिविध अन्तःकरण है—

(1) बुद्धि (2) अहङ्कार (3) मन।

इनके अलावा दश बाह्य कारणों का भी उल्लेख है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

71. वेदान्त के अनुसार अज्ञान है—

- (a) ज्ञान का अभाव (b) ज्ञानविरोधी
(c) सत् (d) असत्

Ans : (b) वेदान्त के अनुसार अज्ञान ज्ञानविरोधी होता है। समष्टि और व्यष्टि नामक भेदों से अज्ञान दो प्रकार का होता है।

72. निम्नलिखित में से कर्मन्द्रिय है—

- (a) चक्षु (b) श्रोत्र
(c) त्वक् (d) वाक्

Ans : (d) पञ्च कर्मन्द्रियों का वर्णन वेदान्त में है जो इस प्रकार है—

(1) वाक् (2) पाणि (3) पाद (4) पायु (5) उपस्थ।

पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ भी हैं—

(1) श्रोत्र (2) त्वक् (3) चक्षु (4) जिह्वा (5) घ्राण।

73. वेदान्त का प्रयोजन है—

- (a) वेदार्थविवेक (b) प्रकृतिपुरुषविवेक
(c) स्वस्वरूपानन्दावाप्ति (d) निर्वाण

Ans : (c) वेदान्त का प्रयोजन स्वस्वरूपानन्दावाप्ति है। इस विषय में वेदान्त की कुछ पंक्तियाँ निम्नवत् हैं—

“प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगता ज्ञाननिवृत्तिः स्वरूपानन्दावाप्तिश्च।”

74. वेदान्त का आधार है—

- (a) गीता (b) महाभारत
(c) उपनिषद् (d) ऋग्वेद

Ans : (c) वेदान्त का आधार उपनिषद् है। उपनिषदों में वेदान्त शब्द का प्रयोग श्रुतियों के चरम सिद्धान्त के अर्थ में उपलब्ध होता है। वेदान्त सञ्ज्ञा उपनिषदों को ही प्राप्त है।

75. तर्कभाषा के अनुसार इन्द्रियार्थसन्निकर्ष के प्रकार होते हैं—

- (a) दो (b) चार
(c) छः (d) सात

Ans : (c) तर्कभाषा के अनुसार इन्द्रियार्थसन्निकर्ष के छः प्रकार होते हैं—

(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय
(4) समवाय (5) समवेत समवाय (6) विशेषणविशेष्य भाव।

76. वेदान्तसार के अनुसार ‘तत्त्वमसि’ महावाक्य से अखण्डार्थ का बोध कराती है—

- (a) अभिधा (b) व्यञ्जना
(c) जहल्लक्षणा (d) जहदजहल्लक्षणा

Ans : (d) वेदान्तसार के अनुसार ‘तत्त्वमसि’ महावाक्य से अखण्डार्थ का जहदजहल्लक्षणा बोध कराती है। तत्त्वमसि महावाक्य छान्दोग्योपनिषद् से लिया गया है।

77. वेदान्त का मूल आधार है—

- (a) श्रुति (b) स्मृति
(c) तर्क (d) पुराण

Ans : (a) वेदान्त का मूल आधार श्रुतियाँ हैं। लेकिन उपनिषदों को भी वेदान्त का आधार बताया गया है।

78. तर्कभाषा के अनुसार कारण के प्रकार होते हैं—

- (a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

Ans : (b) तर्कभाषा के अनुसार कारण तीन प्रकार के होते हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) समवायि कारण (2) असमवायि कारण (3) निमित्तकारण।

79. न्यायदर्शन के अनुसार पट का असमवायिकारण है—

- (a) पटरूप (b) तन्तु
(c) तन्तुसंयोग (d) तुरी

Ans : (c) न्यायदर्शन के अनुसार तन्तुसंयोग पट का असमवायिकारण है। असमवायिकारण की परिभाषा है—

“यत्समवायिकारण-प्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्।”

80. निम्नलिखित में से त्रोटक है—

- (a) मालतीमाधवम् (b) कर्पूरमञ्जरी
(c) विक्रमोर्वशीयम् (d) रत्नावली

Ans : (c) त्रोटक के अन्तर्गत महाकवि कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीयम् नाटक आता है। यह पाँच अङ्कों का त्रोटक है इसमें विक्रम और उर्वशी के प्रणय का वर्णन है। मालतीमाधवम् भवभूति कृत 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। कर्पूरमञ्जरी राजशेखर की कृति है जो चार ‘सट्टक’ की नाटिका है तथा रत्नावली चार अङ्कों की हर्ष विरचित नाटिका है।

81. ‘मालतीमाधवम्’ का लेखक है—

- (a) शूद्रक (b) भास
(c) भवभूति (d) भट्टनारायण

Ans : (c) ‘महाकवि भवभूति मालतीमाधवम्’ के लेखक हैं— मालतीमाधवम् नाटक 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। जबकि मृच्छकटिकम् राजा शूद्रक द्वारा रचित 10 अङ्कों का प्रकरण है।

82. कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता ने यम से वर माँगा था—

- (a) पुत्रप्राप्ति (b) स्वर्ग का राज्य
(c) देवत्व (d) पितृपरितोष, यज्ञविद्या का ज्ञान और आत्मा का ज्ञान

Ans : (d) कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता ने यम से तीन वरदान माँगे थे जो इस प्रकार हैं—

(1) पितृपरितोष (2) यज्ञविद्या का ज्ञान (3) आत्मा का ज्ञान।

83. कठोपनिषद् में ‘सृङ्का’ का अर्थ है—

- (a) प्रवालजटित माला (b) तुलसीमाला
(c) रुद्राक्षमाला (d) अकुत्सित कर्ममयी गति

Ans : (d) अकुत्सित कर्ममयी गति को कठोपनिषद् में ‘सृङ्का’ कहा गया है अर्थात् सृङ्का = अकुत्सित कर्ममयी गति।

84. भाषा के आकृतिमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत यह विभाग आता है—

- (a) ग्रीकभाषा (b) तोखारियन
(c) योगात्मक (d) भारत-ईरानी

Ans : (c) भाषा के आकृतिमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत योगात्मक विभाग आता है।

85. निम्नलिखित में से अर्थ-परिवर्तन की दिशा है—

- (a) अर्थविस्तार (b) विषमीकरण
(c) नम्रताप्रदर्शन (d) इनमें से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) विषमीकरण को अर्थपरिवर्तन की दिशा कहा गया है। विषमीकरण के विषय में भाषा विज्ञान में विस्तृत विवेचन किया गया है।

86. निम्नलिखित में से कण्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनि है—

- (a) म् (b) त्
(c) ल् (d) अ

Ans : (d) कण्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनि अ है क्योंकि अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः सूत्र के अनुसार कण्ठ से उच्चारित होने वाले—अ, कवर्ग, ह, और विसर्ग (:) है। ल् का उच्चारण स्थान दन्त है। दन्त त् वर्ग का भी उच्चारण स्थान है। म् का उच्चारण स्थल ओष्ठ है।

87. निम्नलिखित में से अच् सन्धि का उदाहरण है—

- (a) तट्टीका (b) शिवोऽर्च्यः
(c) पावकः (d) विशनः

Ans : (c) पौ+अकः=पावकः, 'एचोऽयवायावः' सूत्र से पावकः में अयादि सन्धि हुई है जो कि अच् (स्वर) सन्धि के अन्तर्गत आता है। शिवोऽर्च्यः=शिवस् +अर्च्यः विसर्ग सन्धि के अन्तर्गत तथा तत् + टीका =तट्टीका और विश् + नः = विशनः हल् सन्धि के अन्तर्गत आते हैं।

88. निम्नलिखित शब्दों में से द्वन्द्वसमास का उदाहरण है—

- (a) राजपुरुषः (b) पीताम्बरः
(c) पितरौ (d) नीलोत्पलम्

Ans : (c) पितरौ द्वन्द्वसमास का उदाहरण है। इसका विग्रह होगा—माता च पिता च यह एकशेष द्वन्द्व के अन्तर्गत आता है क्योंकि द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है—

(1) इतरेतर द्वन्द्व (2) समाहार द्वन्द्व (3) एकशेष द्वन्द्व।

राजपुरुषः तत्पुरुष समास का उदाहरण है इसका विग्रह होगा—

राज्ञः + पुरुषः। पीतानि अम्बराणि यस्य सः—पीताम्बरः, बहुव्रीहि समास है तथा नीलं च तत् उत्पलम् = नीलोत्पलम्, कर्मधारय समास का उदाहरण है।

89. निम्नलिखित शब्दों में कृदन्त है—

- (a) कुम्भकारः (b) वैनतेयः
(c) पौरवः (d) वैदिकः

Ans : (a) कुम्भं करोति इति कुम्भकारः। यह उपपद तत्पुरुष समास का उदाहरण है और यह कृदन्त के अन्तर्गत आता है क्योंकि इसमें कृत् प्रत्यय लगा है तथा ढ प्रत्यय लगाकर वैनतेयः बना है। विनता + अण् + ढ = वैनतेय। यह तद्धित का उदाहरण है।

90. 'अभि' एवं 'नि' उपसर्गपूर्व 'विश्' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है—

- (a) सप्तमी (b) चतुर्थी
(c) पञ्चमी (d) द्वितीया

Ans : (d) अभिनिविशश्च सूत्र के अनुसार यदि विश् धातु के पहले अभि और नि उपसर्ग एक साथ लगे हों और क्रिया के अर्थ में हो तो क्रिया के आधार की कर्म सञ्ज्ञा होगी और कर्मणि द्वितीया सूत्र से उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा। जैसे—सः सन्मार्गम् अभिनिविशते।

91. 'हसनम्' में किस प्रत्यय का योग है?

- (a) शतृ (b) ल्युट्
(c) शानच् (d) ण्वुल्

Ans : (b) 'हसनम्' में ल्युट् प्रत्यय का योग है। √हस्+ ल्युट् था ल्युट् के ट् की 'हलन्त्यम्' सूत्र से 'इत् सञ्ज्ञा' और 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप होकर हस् + ल्यु बना ल्यु में ल् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत् सञ्ज्ञा और तस्य लोप सूत्र से लोप होकर हस् + यु बना। अब यु को 'युवोरनाकौ' सूत्र से अन होकर हस् + अन = हसन बना। चूँकि ल्युट् प्रत्यय नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है इसलिए 'अतोऽम्' सूत्र से अम् आदेश होकर हसन् + अम् = हसनम् सिद्ध हुआ।

92. ऋग्वेद में कौन देवता चमत्कारयुक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं?

- (a) अश्विनौ (b) इन्द्र
(c) मरुत् (d) उषा

Ans : (a) ऋग्वेद में 'अश्विनौ देवता' चमत्कारयुक्त कार्यों का सम्पादन करते हैं। ऋग्वेदीय देवताओं में अश्विनौ का विशेष स्थान है।

93. निम्नलिखित में से 'वासवदत्ता' (गद्यकाव्य) का नायक है—

- (a) कन्दर्पकेतु (b) उदयन
(c) चारुदत्त (d) यौगन्धरायण

Ans : (a) गद्यसम्राट् महाकवि सुबन्धु विरचित वासवदत्ता गद्यकाव्य का नायक राजकुमार कन्दर्पकेतु हैं तथा नायिका पाटलिपुत्र की राजकुमारी वासवदत्ता है। इस गद्य काव्य में दोनों के प्रणय सम्बन्धी कथा का वर्णन है।

94. 'हितम्' में किस प्रत्यय का योग है—

- (a) क्त (b) ण्वुल्
(c) ल्युट् (d) क

Ans : (a) हितम् 'क्त' प्रत्यय के योग से बना है। धा धातु से क्त प्रत्यय हुआ, धा + क्त अब दधातेर्हि सूत्र से धा को हि होकर हि + क्त बना। क्त का क् का लोप होकर हि + त बना। नपुंसकलिङ्ग होकर हितम् बना।

95. 'ऋक्संप्रातिशाख्य' किस वेदाङ्ग से सम्बन्धित है?

- (a) व्याकरण से (b) कल्प से
(c) निरुक्त से (d) शिक्षा से

Ans : (d) 'ऋक्संप्रातिशाख्य' शिक्षा वेदाङ्ग से सम्बन्धित है। शिक्षा विषयक नारदीय शिक्षा, कात्यायनी शिक्षा तथा पाणिनीय शिक्षा, ग्रन्थ अर्वाचीन माने जाते हैं। जबकि इस वेदाङ्ग के प्राचीनतम् ग्रन्थ 'प्रातिशाख्य' है जो कि पाणिनि आदि से पूर्व के हैं।

96. भरत के रससूत्र के व्याख्याकारों में 'भुक्तिवादी' आचार्य हैं—

- (a) भट्टलोल्लट (b) श्रीशङ्कुक
(c) अभिनवगुप्त (d) भट्टनायक

Ans : (d) भरत के रससूत्र के व्याख्याकारों में 'भुक्तिवादी' आचार्य भट्टनायक हैं। अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद, भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद एवं श्री शङ्कुक का अनुमितिवाद है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

97. मम्मट के अनुसार उत्तमकाव्य होता है—

- (a) शब्दचित्र (b) वाच्यचित्र
(c) गुणीभूतव्यङ्ग्य (d) ध्वनि

Ans : (d) मम्मट ने ध्वनि को उत्तमकाव्य माना है।

“इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्गे वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः॥”

98. ‘वान्तो यि प्रत्यये’ का उदाहरण है—

- (a) नायकः (b) नाव्यम्
(c) पावकः (d) विष्णवे

Ans : (b) नाव्यम् ‘वान्तो यि प्रत्यये’ का उदाहरण है। जबकि नायकः, पावकः, विष्णवे ‘एचोऽयवायावः’ के उदाहरण हैं।
वान्तो यि प्रत्यये = यदि ओ और औ के बाद कोई यकारादि प्रत्यय हो तो ओ को अच् और औ को आच् आदेश हो जाता है।
नौ + यम्, न् + आव् + यम् = नाव्यम्।

99. ‘के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः’— यह सूक्ति किस रचना से उद्धृत है—

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) नीतिशतकम्
(c) मेघदूतम् (d) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

Ans : (c) ‘के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः’— यह पंक्ति कालिदास विरचित मेघदूतम् खण्डकाव्य से उद्धृत है। इसमें यक्ष मेघ से कहता है कि हे मित्र! असफल प्रयत्न करने वाले कौन तिरस्कार के पात्र नहीं होते हैं अर्थात् सभी होते हैं।

100. मम्मट ने ‘आकांक्षायोग्यतासन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः’ यह कहकर किस वाद का संकेत किया है?

- (a) तद्वान्वाद
(b) अपोहवाद
(c) अभिहितान्वयवाद
(d) अन्विताभिधानवाद

Ans : (c) मम्मट ने आकांक्षायोग्यतासन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणां पदार्थानां समन्वये तात्पर्यार्थो विशेषवपुरपदार्थोऽपि वाक्यार्थः। यह बात कहकर अभिहितान्वयवाद का संकेत किया है

101. कारण के होने पर कार्य न होने के वर्णन में कौन अलङ्कार होता है?

- (a) आक्षेप (b) विभावना
(c) विशेषोक्ति (d) यथासंख्य

Ans : (c) कारण के न होने पर कार्य की उत्पत्ति विभावना अलङ्कार अलङ्कार होता है।

विभावना तु विना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।

सति हेतौ फलाभावो विशेषोक्तिस्ततो द्विधा॥

102. ‘केचित् पुनर्लक्षणकरणशालीनबुद्धयो ध्वनेस्तत्त्वं..... सहृदयहृदयसंवेद्यमेव समाख्यातवन्तः’— आनन्दवर्धन का ‘केचित्’ शब्द से संकेत किसके प्रति है?

- (a) विपर्ययवादी (b) अशक्यवक्तव्यवादी
(c) सन्देहवादी (d) ध्वनिवादी

Ans : (b) ‘केचित् पुनर्लक्षणकरणशालीनबुद्धयो ध्वनेस्तत्त्वं..... सहृदयहृदयसंवेद्यमेव समाख्यातवन्तः’— आनन्दवर्धन का ‘केचित्’ शब्द से संकेत अशक्यवक्तव्यवादी से है।

103. निम्नलिखित में कौन लघुत्रयी में सम्मिलित नहीं है?

- (a) गीतगोविन्द (b) मेघदूत
(c) कुमारसम्भव (d) रघुवंश

Ans : (a) गीतगोविन्द लघुत्रयी के अन्तर्गत नहीं आता है। लघुत्रयी के अन्तर्गत कालिदास विरचित कुमारसम्भवम् महाकाव्य, रघुवंशम् महाकाव्य एवं मेघदूतम् खण्डकाव्य आते हैं।

104. ‘पुरु’ किसका पुत्र था?

- (a) देवयानी (b) मेनका
(c) शकुन्तला (d) शर्मिष्ठा

Ans : (d) पुरु ‘ययाति और शर्मिष्ठा’ का पुत्र था जबकि शकुन्तला और दुष्यन्त के पुत्र का नाम भरत (सर्वदमन) था। मेनका और विश्वामित्र के मिलन से शकुन्तला का जन्म हुआ था।

105. ‘प्रस्थानत्रयी’ में कौन नहीं आता है?

- (a) ब्रह्मसूत्र (b) श्रीमद्भागवत
(c) उपनिषद् (d) गीता

Ans : (b) ‘प्रस्थानत्रयी’ के अन्तर्गत—(ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् एवं गीता) आते हैं। अतः श्रीमद्भागवद् प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत नहीं आता है।

106. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है—

- (a) देवदत्तः पादस्य खञ्जः। (b) देवदत्तः पादेन खञ्जः।
(c) देवदत्तः पादात् खञ्जः। (d) देवदत्तः पादे खञ्जः।

Ans : (b) “देवदत्तः पादेन खञ्जः” वाक्य शुद्ध है क्योंकि ‘येनाङ्गविकारः’ सूत्र के अनुसार अङ्गी के जिस अङ्ग से विकार लक्षित हो तो उस अङ्ग में तृतीया विभक्ति होती है। यहाँ पर देवदत्त पैर से लगड़ा है। देवदत्त के अङ्गभूत पैर में विकार है अतः उसमें तृतीया विभक्ति हुई है। शेष तीनों विकल्प व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध हैं।

107. ‘प्रियं वदति’ इस अर्थ में शुद्ध प्रयोग है—

- (a) प्रियंवदः (b) प्रियवाक्
(c) प्रियवद् (d) प्रियवचः

Ans : (a) प्रियं वदति इति प्रियंवदः। अतः प्रियंवदः पद शुद्ध है।

108. मम्मटकृत काव्यलक्षण में ‘तद्’ शब्द का आशय है—

- (a) प्रयोजन (b) हेतु
(c) अर्थ (d) काव्य

Ans : (d) मम्मटकृत काव्यलक्षण में ‘तद्’ शब्द का आशय काव्य से है। “तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि”।
तद् = काव्यम् (काव्य का परामर्शक)।

109. ‘अनलङ्कृती पुनः क्वापि’ से मम्मट का अभिप्राय है—

- (a) काव्य अलंकारविहीन होता है।
(b) काव्य में कहीं-कहीं अलंकार मिल सकता है।
(c) काव्य प्रायः सालंकार होता है, परन्तु कहीं अलंकार विहीन होने पर भी उसका काव्यत्व अक्षुण्ण रहता है।
(d) काव्य अलंकार विहीन हो ही नहीं सकता।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) अनलङ्कृती पुनः क्वापि से मम्मट का अभिप्राय है—
काव्य प्रायः सालङ्कार होता है, परन्तु कहीं अलङ्कार विहीन होने पर भी उसका काव्यत्व अक्षुण्ण रहता है।

110. गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' के लेखक हैं—

- (a) शूद्रक (b) दण्डी
(c) बाणभट्ट (d) सुबन्धु

Ans : (d) वासवदत्ता गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु हैं। इस गद्यकाव्य में कन्दर्पकेतु एवं वासवदत्ता की प्रेम कहानी वर्णित है। शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् नाटक है जिसमें 10 अङ्क हैं। दण्डीकृत दशकुमारचरितम् गद्यकाव्य है जिसमें दश राजकुमारों की यात्राओं का वर्णन है। बाणभट्ट की अद्भुत रचना कादम्बरी है जिसमें तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।

111. नाटक में सन्धियों की संख्या होती है—

- (a) तीन (b) पाँच
(c) चार (d) छः

Ans : (b) नाटक में पाँच सन्धियाँ होती हैं। कहा भी गया है “पञ्चसन्धि समन्वितम्।” ये सन्धियाँ इस प्रकार हैं— (1)मुख (2)प्रतिमुख (3)गर्भ (4)सावमर्श/विमर्श (5)उपसंहति/निर्वहण।

112. भर्तृहरि के नीतिशतकम् में 'तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः' का तात्पर्य है—

- (a) मूर्खता ज्वर है।
(b) मदमस्त हाथी मूर्ख होता है।
(c) मूर्खता मद है।
(d) बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने पर ज्ञानी होने का नशा उतर जाता है।

Ans : (d) भर्तृहरि के नीतिशतकम् में 'तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः' का तात्पर्य है कि— बुद्धिमानों के सम्पर्क में आने पर ज्ञानी होने का नशा उतर जाता है। सम्पूर्ण श्लोक इस प्रकार है—
“यदा किञ्चिज्जोऽहं गज इव मदान्धः समभवम्,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलपितं मम मनः।
यदा किञ्चिदिकञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः॥”

113. काव्यप्रकाश में उद्धृत 'स्वच्छन्दोच्छल-

दच्छकच्छकुहरच्छतेतराम्बुच्छटा' श्लोक किस काव्यभेद का उदाहरण है?

- (a) उत्तमकाव्य (b) उत्तमोत्तमकाव्य
(c) अवरकाव्य (d) मध्यमकाव्य

Ans : (c) काव्यप्रकाश में उद्धृत 'स्वच्छन्दोच्छल-दच्छकच्छकुहरच्छतेतराम्बुच्छटा' यह श्लोक अवरकाव्य के काव्यभेद का उदाहरण है।

114. निम्नलिखित अलङ्कारों में कौन उभयालङ्कार है?

- (a) अनुप्रास (b) यमक
(c) श्लेष (d) रूपक

Ans : (c) श्लेषालङ्कार उभयालङ्कार की श्रेणी में आता है।

115. 'अव्ययीभाव' में समास है—

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

Ans : (a) अव्ययीभाव में अव्ययीभाव समास है। इसका विग्रह होगा—
आत्मनि इति तथा अलौकिक विग्रह—आत्मन् डि अधि होगा। जिस समास का पूर्वपद प्रधान होता है वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः।

116. वैषयिक आधार में सप्तमी विभक्ति का उदाहरण है—

- (a) कटे आस्ते (b) सर्वस्मिन्नात्मास्ति।
(c) मोक्षे इच्छा अस्ति। (d) दिवसे कार्यं करोति।

Ans : (c) वैषयिक आधार में सप्तमी विभक्ति का उदाहरण मोक्षे इच्छा अस्ति है। आधार तीन प्रकार के बताए गये हैं—
(1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक और (3) अभिव्यापक। औपश्लेषिक आधार का उदाहरण है—कटे आस्ते। मोक्षे इच्छा अस्ति वैषयिक आधार का उदाहरण है तथा सर्वस्मिन्नात्मास्ति, तिलेषु तैलम् अभिव्यापक आधार के उदाहरण है।

117. भगवद्गीता महाभारत के किस पर्व का अंश है?

- (a) वनपर्व (b) भीष्मपर्व
(c) शान्तिपर्व (d) सभापर्व

Ans : (b) भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व पर्व में कही गयी है। भगवद्गीता में लगभग 700 श्लोक एवं 18 अध्याय हैं।

118. भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में योग का लक्षण है—

- (a) आत्मा और परमात्मा का मिलन
(b) समाधि
(c) कर्म में कुशलता
(d) चित्तवृत्तिनिरोध

Ans : (c) भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय (सांख्ययोग) में योग का लक्षण “कर्म में कुशलता बताया गया है।”

119. गीता के निष्काम कर्मयोग का अर्थ है—

- (a) कर्मों का परित्याग
(b) निषिद्ध कर्मों का त्याग
(c) फल की कामना छोड़कर कर्म करना
(d) भगवान् की शरण लेना

Ans : (c) गीता के निष्काम कर्मयोग का अर्थ फल की कामना छोड़कर कर्म करना बताया गया है। कहा भी गया है कि—
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा॥

120. निम्नलिखित में से किस रचना के अन्त में कवि ने भगवान् शिव से मुक्ति की प्रार्थना की है?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) मेघदूतम् (d) प्रतिमानाटकम्

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के भरतवाक्य में कवि ने भगवान् शिव से मुक्ति की प्रार्थना की है—
प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम् ।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥

उच्चतर शिक्षा आयोग
असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा, जनवरी-2012
संस्कृत

व्याख्या सहित प्रश्न-पत्र का हल

1. 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलाद्' इत्युक्तिः वर्तते-

- (a) उत्तररामचरिते (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) मृच्छकटिके (d) नैषधीयचरिते

Ans : (b) 'न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलाद्' यह उक्ति महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की है। शाकुन्तलम् सात अङ्कों का नाटक है यह सूक्ति प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त कहता है। दुष्यन्त को जब शकुन्तला की सखियों से यह बात ज्ञात होती है कि शकुन्तला ऋषि कन्या नहीं है तो वह कहता है कि-

मानुषीष कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।

न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलाद् ।।

अर्थात् प्रभा से दैदीप्यमान ज्योति भूतल से उत्पन्न नहीं हो सकती।

2. अधोऽङ्कितेषु पद्येषु शाकुन्तलस्य प्रसिद्धश्लोक-चतुष्टयं न गण्यते-

- (a) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति
(b) शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु
(c) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति
(d) अनाघ्रातं पुष्पं

Ans : (d) अधोलिखित पद्यों में अनाघ्रातं पुष्पं। श्लोक चतुष्टय के अन्तर्गत नहीं आता है। श्लोक चतुष्टय के विषय में किसी विद्वान् के द्वारा कहा गया है-

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।।

3. 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' श्लोकांशोऽयं तिष्ठति-

- (a) मृच्छकटिके (b) मेघदूते
(c) रघुवंशे (d) अभिज्ञानशाकुन्तले

Ans : (d) 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' यह श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की विश्व प्रसिद्ध कृति है। मेघदूतम् तथा रघुवंशम् भी कालिदास की कृतियाँ हैं। मृच्छकटिकम् राजा शूद्रक द्वारा रचित 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है।

4. छायाङ्कस्य योजना वर्तते-

- (a) महावीरचरिते (b) मालतीमाधवे
(c) मृच्छकटिके (d) उत्तररामचरिते

Ans : (d) छायाङ्क की योजना उत्तररामचरितम् नाटक में मिलती है। उत्तररामचरितम् नाटक भवभूति कृत 7 अङ्कों का प्रसिद्ध नाटक है। इसका तीसरा अङ्क छायाङ्क नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि तीसरे अङ्क में शुरू से अन्त तक सीता राम के साथ छाया रूप में रहती हैं।

5. रत्नावली नाटिकायाः स्वरूपं वर्तते-

- (a) नाटकप्रकरणयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(b) भाण्डिमयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(c) प्रकरणसमवकारयोः मिश्रितं स्वरूपम्
(d) सट्टकप्रहसनयोः मिश्रितं स्वरूपम्

Ans : (a) श्री हर्षवर्धन द्वारा रचित रत्नावली नाटिका में 4 अङ्क हैं। इसके नायक महाराज उदयन तथा नायिका रत्नावली हैं। नायिका रत्नावली (सागरिका) के नाम से ही इस नाटिका का नामकरण किया गया है। यह नाटिका नाटक और प्रकरण के मिश्रण का स्वरूप है।

6. रत्नावलीनाटिकायाः नायको वर्तते-

- (a) धीरप्रशान्तः (b) धीरोदात्तः
(c) धीरललितः (d) धीरोद्धतः

Ans : (c) रत्नावली नाटिका का नायक महाराज उदयन धीरललित कोटि की श्रेणी में आते हैं। धीरोदात्त की श्रेणी में महाराज दुष्यन्त आते हैं। महाबली भीम धीरोद्धत नायक की श्रेणी में आते हैं।

7. 'दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा' उक्तिरियम् उत्तररामचरिते वर्तते-

- (a) आत्रेय्याः (b) तमसायाः
(c) वासन्त्याः (d) सीतायाः

Ans : (d) 'दिष्ट्या अपरिहीनधर्मः खलु स राजा' यह उक्ति उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में सीता के द्वारा कही गयी है। सीता राम की बातें सुनकर कहती हैं कि भाग्य से वह राजा अभी भी धर्म से हीन नहीं है अर्थात् धर्म को जानते हैं।

8. मृच्छकटिके प्रथमोऽङ्कस्य नाम अस्ति-

- (a) अलङ्कारन्यासः (b) सन्धिच्छेदः
(c) मदनिकाशर्विलकः (d) द्यूतकरसंवाहकः

Ans : (a) राजा शूद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम् नाटक में 10 अङ्क हैं। इसके नायक सार्थवाह चारुदत्त एवं नायिका वसन्तसेना हैं। इसके प्रथमाङ्क का नाम अलङ्कारन्यास है। सन्धिच्छेद नामक तीसरा अङ्क है। इसके दशों अङ्क के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-

- (1) अलङ्कारन्यास (2) द्यूतकर संवाहक (3) सन्धिच्छेद
(4) मदनिका शर्विलक (5) दुर्दिन (6) प्रहरण विपर्यय
(7) आर्यकापहरण (8) वसन्तसेना मोचन (9) व्यवहार और
(10) संहार।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

9. मृच्छकटिके राजश्यालकस्य भाषाऽस्ति-

- (a) मागधी (b) शौरसेनी
(c) शकारी (d) महाराष्ट्री

Ans : (c) मृच्छकटिकम् नाटक में राजश्यालक की भाषा शकारी है। अर्थात् राजश्यालक शकारी प्राकृत बोलता है।

10. 'आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः' उक्तिरियं रत्नावल्यां वर्तते-

- (a) यौगन्धरायणस्य (b) उदयनस्य
(c) सूत्रधारस्य (d) रत्नावल्याः

Ans : (c) 'आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः' यह उक्ति रत्नावली नाटिका में सूत्रधार के द्वारा कही गयी है।

11. सन्धिच्छेदकर्मणः वर्णनं प्राप्यते-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तले
(b) उत्तररामचरिते
(c) शिशुपालवधे
(d) मृच्छकटिके

Ans : (d) सन्धिच्छेद कर्म शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् नाटक में प्राप्त होता है। इस नाटक में सन्धिच्छेद नामक तीसरा अङ्क है। इसमें सन्धि करने के कई तरीके बताये गये हैं।

12. मम्मटमतानुसारेण 'अबिन्दुसुन्दरी नित्यं गलल्ला-वण्यबिन्दुका' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

- (a) श्लेषः
(b) विरोधप्रतिभोत्पत्तिहेतुः श्लेषः
(c) श्लेषप्रतिभोत्पत्तिहेतुर्विरोधः
(d) विरोधः

Ans : (c) मम्मट मत के अनुसार 'अबिन्दुसुन्दरी नित्यं गलल्ला-वण्यबिन्दुका' इस पंक्ति में श्लेषप्रतिभोत्पत्तिहेतुर्विरोध नामक अलङ्कार है।

13. 'मदनिका' इति स्त्रीपात्रं तिष्ठति-

- (a) उत्तररामचरिते (b) मृच्छकटिके
(c) रत्नावल्याम् (d) कादम्बर्याम्

Ans : (b) मदनिका नामक स्त्रीपात्र का वर्णन शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम्' नाटक में मिलता है। मृच्छकटिकम् की नायिका वसन्तसेना प्रसिद्ध गणिका थी उसी की दासी का नाम मदनिका था। मृच्छकटिकम् नाटक प्रकरण ग्रन्थ के अन्तर्गत आता है।

14. 'कादम्बरी' इति शब्दस्य प्रसिद्धोऽर्थोऽस्ति-

- (a) अप्सरा (b) मदिरा
(c) भीरुस्त्री (d) कदम्बधारिणी

Ans : (b) कादम्बरी का शाब्दिक अर्थ मदिरा है। कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की अनुपम गद्यकृति है। इसमें तीन जन्मों की कथा मिलती है। दो भागों में विभक्त कादम्बरी गद्यकाव्य की अमूल्य निधि है। इसका नायक चन्द्रापीड तथा नायिका कादम्बरी है।

15. 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते' पद्यस्यास्य प्रणेता कविरस्ति-

- (a) भवभूतिः (b) श्रीहर्षः
(c) कालिदासः (d) बाणभट्टस्य

Ans : (d) 'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते' यह पद्य कादम्बरी के दुर्जन निन्दा नामक प्रकरण के अन्तर्गत आता है। इसके प्रणेता बाणभट्ट हैं। उनका कहना है कि बिना कारण वैर करने वाले दुष्ट व्यक्ति से किसे भय नहीं होता है, अर्थात् सबको होता है।

16. कादम्बर्या विन्ध्याटवीवर्णने अचेतनपदार्थानां चेतनदेवताभिः उपमाकरणस्य मूले चमत्कारोऽस्ति-

- (a) वक्रोक्तेः (b) यमकस्य
(c) श्लेषस्य (d) अनुप्रासस्य

Ans : (c) कादम्बरी के विन्ध्याटवी वर्णन में अचेतन पदार्थों के तथा चेतन देवताओं से उपमाकरण के मूल में चमत्कार श्लेष का वर्णन है कादम्बरी के विन्ध्याटवी वर्णन में कवि ने श्लेषालङ्कार का उत्कृष्ट परिचय दिया है।

17. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' उक्तिरियम् उत्तररामचरितेऽस्ति-

- (a) मुरलायाः (b) सीतायाः
(c) तमसायाः (d) वासन्त्याः

Ans : (c) 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' यह उक्ति भवभूति कृत उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क की है और यह तमसा के द्वारा उच्चारित है। इस श्लोक के माध्यम से भवभूति कहते हैं कि करुण ही एकमात्र रस है।

18. 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला' वाक्यांशोऽयं वैशिष्ट्यं प्रकटयति-

- (a) कादम्बर्याः (b) वासवदत्तायाः
(c) रत्नावल्याः (d) कथाकाव्यस्य

Ans : (a) 'स्फुरत्कलालापविलासकोमला' यह वाक्यांश कादम्बरी का है। इस पद्य के माध्यम से कवि बाणभट्ट ने कथा (कादम्बरी) की प्रशंसा इस प्रकार की है- "यह कथा स्फुट एवं सुन्दर शब्द रचना के माधुर्य के कारण रमणीय तथा शब्द गुम्फन को स्वयं प्राप्त होती हुयी नवीन वधू के समान लोगों के हृदय में कुतूहल उत्पन्न कर देती है।"

19. शिवराजविजयस्य वस्तुविभाजनं वर्तते-

- (a) उल्लासेषु (b) उच्छ्वासेषु
(c) निःश्वासेषु (d) समुल्लासेषु

Ans : (c) पं० अम्बिकादत्तव्यास द्वारा रचित शिवराजविजय निःश्वासों में विभक्त है। इसमें 3 विराम तथा 12 निःश्वास हैं प्रत्येक विराम में 4 निःश्वास प्राप्त होते हैं। इस प्रकार 3×4=12 निःश्वास।

20. कादम्बरीकथाकाव्यस्य नायकोऽस्ति-

- (a) पुण्डरीकः (b) तारापीडः
(c) चन्द्रापीडः (d) शुकनासः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) कादम्बरी कथा काव्य का नायक चन्द्रापीड है। चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड एवं माता विलासवती थी। कादम्बरी पूर्वाद्ध एवं उत्तराद्ध दो भागों में विभक्त है। कादम्बरी गद्यकाव्य की नायिका है। पुण्डरीक चन्द्रापीड का मित्र है तथा शुकनास तारापीड का मन्त्री है। चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के समय मन्त्री शुकनास द्वारा ही उपदेश दिया गया था।

21. 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' इति उपमासूचकवाक्येन शिशुपालवधे लक्षितः-

- (a) नारदः (b) श्रीकृष्णः
(c) शिशुपालः (d) हिरण्यकशिपुः

Ans : (a) 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' इस उपमासूचक वाक्य के द्वारा शिशुपालवधम् महाकाव्य में महर्षि नारद को लक्षित किया गया है।

22. शिवराजविजये युगव्यापिनिद्रातः जागर्ति-

- (a) महाराजः (b) महागुरुः
(c) महामात्यः (d) योगिराजः

Ans : (d) शिवराजविजये युगव्यापिनिद्रातः जागर्ति महर्षि योगिराजः। शिवराजविजय के अनुसार योगिराज सर्वप्रथम युधिष्ठिर के समय समाधि लगाकर विक्रमादित्य के समय जगे थे, पुनः विक्रमादित्य के समय समाधि लगाकर अब इन दुरात्माओं के समय जगे हैं।

23. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' कथनमिदमस्ति अभिज्ञानशाकुन्तले-

- (a) शार्ङ्गरवस्य (b) वैखानसस्य
(c) गालवस्य (d) गौतमस्य

Ans : (b) 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' यह कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क के 11वें श्लोक में वैखानस नामक तपस्वी तब कहता है जब महाराज दुष्यन्त आश्रम के मृगों को मारने के लिए उनका पीछा कर रहे थे तब वैखानस कहता है कि- "हे महाराज आपके शस्त्र तो पीड़ितों की रक्षा के लिए निर्मित हैं निरपराधों पर प्रहार के लिए नहीं।"

24. नासदीयसूक्तम् अस्ति-

- (a) प्रार्थनापरकम् (b) संवादात्मकम्
(c) दार्शनिकम् (d) काव्यात्मकम्

Ans : (c) नासदीयसूक्तम् दार्शनिकमस्ति अर्थात् नासदीय सूक्त दार्शनिक सूक्त के अन्तर्गत आता है। कुछ दार्शनिक सूत्र इस प्रकार हैं-(1) नासदीय सूक्त (2) हिरण्यगर्भ सूक्त (3) पुरुष सूक्त (4) वाक् सूक्त इत्यादि।

25. रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं

भास्वानुदेष्ट्यति हसिष्यति पंकजश्रीः ।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे।

हा हन्त! हन्त नलिनीं गज उज्जहार॥

श्लोकेऽस्मिन् 'कोशगतद्विरेफ' पदेन

कवेः अभिप्रायोऽस्ति-

- (a) भ्रमरः (b) अफजलखानः

- (c) अवरङ्गजीवः (d) गौरसिंहः

Ans : (b) रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं,
भास्वानुदेष्ट्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे,
हा हन्त! हन्त नलिनीं गजमुज्जहार॥

यह श्लोक पं० अम्बिकादत्तव्यास प्रणीत शिवराजविजय का है। इस श्लोक में "कोशगते द्विरेफः" इस पद से अफजलखान को सङ्केतित किया गया है।

26. शिवराजविजयकाव्यस्य समारम्भो भवति-

- (a) गौरसिंहवर्णनात्
(b) अफजलखानवर्णनात्
(c) शिववीरस्य शौर्यवर्णनात्
(d) सूर्योदयवर्णनात्

Ans : (d) शिवराजविजय काव्य का प्रारम्भ सूर्योदय वर्णन से होता है। उसमें एक ब्रह्मचारी बालक कहता है कि-अरुण एषः प्रकाश...।।

27. महाभारतस्य विषयवस्तुविभाजनं वर्तते-

- (a) काण्डेषु (b) अध्यायेषु
(c) सर्गेषु (d) पर्वसु

Ans : (d) महाभारत की कथावस्तु पर्वों में विभाजित है। महाभारत में 18 पर्व हैं। महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक हैं इसी कारण इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' कहा जाता है। काण्डों में रामायण का विभाजन है जिसमें सात काण्ड हैं तथा सर्गों में महाकाव्यों का विभाजन होता है।

28. 'यदिहास्ति तदन्यत्र यत्रेहास्ति न तत्त्वचित्' इयमुद्धोषणा स्वरचनाविषये कृता-

- (a) वाल्मीकिना
(b) श्रीमद्भागवतकृता व्यासेन
(c) महाभारतकृता व्यासेन
(d) श्रीहर्षेण

Ans : (c) 'यदिहास्ति तदन्यत्र यत्रेहास्ति न तत्त्वचित्' यह उद्धोषणा व्यासकृत महाभारत के लिए है। व्यास ने इसके बारे में कहा है कि जो इस काव्य में है वो और कहीं नहीं है और जो इसमें नहीं है तो और कहीं नहीं है।

29. रामायणे श्रीरामस्य ऋष्यमूकपर्वतनिवासो वर्णितः-

- (a) किष्किन्धाकाण्डे (b) बालकाण्डे
(c) सुन्दरकाण्डे (d) युद्धकाण्डे

Ans : (a) रामायण सात काण्डों में विभक्त है। वनवास के समय राम लक्ष्मण सहित ऋष्यमूकपर्वत में निवास करते हैं। इसका वर्णन किष्किन्धाकाण्ड में प्राप्त होता है।

30. अधस्तनेषु उपजीव्यमहाकाव्याश्रितं नास्ति-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) उत्तररामचरितम् (d) नैषधीयचरितम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) निम्न रचनाओं में से मृच्छकटिकम् का उपजीव्य महाकाव्य आश्रित नहीं है। क्योंकि मृच्छकटिकम् नाटक में भास के चारुदत्त नाटक का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जबकि अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का उपजीव्य महाभारत है। महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान में इसका वर्णन है तथा नैषधीयचरितम् की कथा महाभारत के वनपर्व में मिलती है। उत्तररामचरितम् का उपजीव्य काव्य रामायण है।

31. अधस्तनेषु महाभारताश्रितम् अस्ति-

- (a) शिशुपालवधम् (b) मेघदूतम्
(c) रत्नावली (d) कादम्बरी

Ans : (a) माघकृत शिशुपालवधम् महाकाव्य 20 सर्गों में विभक्त है। शिशुपालवधम् महाकाव्य में महाभारत के सभापर्व के घटनाक्रम का वर्णन है। इसमें चेदिनरेश शिशुपाल बीच सभा में भगवान् श्री कृष्ण का अपमान करता है जिससे क्रुद्ध होकर कृष्ण उसका संहार करते हैं। मेघदूतम् कालिदास का गीतिकाव्य है। कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की अद्वितीय रचना है तथा रत्नावली हर्षवर्धन द्वारा लिखित नाटिका ग्रन्थ है।

32. अर्धमागधी भाषायाः प्राचीनतमं रूपं प्राप्यते-

- (a) दिगम्बरजैनागमेषु (b) श्वेताम्बरजैनागमेषु
(c) वासुदेवहिण्डीकथायाम् (d) कल्पग्रन्थेषु

Ans : (a) अर्धमागधी भाषा का प्राचीनतम रूप दिगम्बर जैनों के आगमन के समय प्राप्त होता है। जैनमतावलम्बी कालान्तर में दो शाखाओं में विभक्त हो गए- (1) श्वेताम्बर (2) दिगम्बर।

33. 'बहडुकहा' (बृहत्कथा) इति कथाग्रन्थस्य भाषा श्रूयते-

- (a) अपभ्रंशः (b) शौरसेनी
(c) मागधी (d) पैशाची

Ans : (d) 'बहडुकहा' (बृहत्कथा) के रचयिता गुणादय हैं। बृहत्कथा मूलतः पैशाची प्राकृत भाषा में लिखी गयी थी तथा इसका प्राकृत नाम 'बहडुकथा' है। बृहत्कथा में एक मुख्य तथा अनेक उपकथाएँ थीं। मुख्य कथा कौशाम्बी राजा उदयन के पुत्र नरवाहन दत्त की थी। इसके अलावा अपभ्रंश शौरसेनी तथा मागधी भाषाएँ भी प्राकृत भाषा के अन्तर्गत आती हैं।

34. लुङ् - लङ् - लिट् लकाराणां बह्वर्थक प्रयोगो दृश्यते

- (a) पालिभाषायाम् (b) वैदिक संस्कृते
(c) श्रेण्यसंस्कृते (d) गाथासंस्कृते

Ans : (b) लुङ्, लिट् तथा लङ् लकारों का प्रयोग बहुधा वैदिक संस्कृत में मिलता है। संस्कृत में दश लकारों का प्रयोग मिलता है। इन तीनों लकारों के अलावा लेट् लकार का प्रयोग भी वैदिक संस्कृत में पाया जाता है। पालि भाषा प्राचीन काल की भाषा है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम प्राप्त होता है। तदुपरान्त प्राकृत और बाद में संस्कृत भाषा का प्रयोग मिलता है।

35. अभिचारसूक्तानि दृश्यन्ते-

- (a) ऋग्वेदे (b) सामवेदे
(c) कृष्णयजुर्वेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (d) अभिचार सूक्तों का प्रयोग अथर्ववेद में प्राप्त होता है। अथर्ववेद एकमात्र वेद है जिसमें इहलौकिक सिद्धि में सहायक मन्त्र है। अन्य तीनों वेदों में देवस्तुति, देवगान तथा यज्ञीय कर्मकाण्ड का प्रतिपादन है जो कि पारलौकिक उन्नति कराने वाले हैं जबकि अथर्ववेद में अधिकांश मन्त्र इहलोक से सम्बद्ध कल्याण, सुख और समृद्धि प्रदान करने वाले हैं।

36. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव' इत्यनेन मन्त्रांशेन सम्बद्धम् सूक्तम् अस्ति।

- (a) अग्निसूक्तम् (b) शिवसङ्कल्पसूक्तम्
(c) नासदीयसूक्तम् (d) इन्द्रसूक्तम्

Ans : (b) 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव' यह मन्त्र शिवसङ्कल्प सूक्त से सम्बन्धित है। शिवसङ्कल्प सूक्त शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है। शुक्ल यजुर्वेद, यजुर्वेद की दो सम्प्रदायों में से एक है। दूसरा है, कृष्ण यजुर्वेद।

37. सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास सोऽस्ति पाश्चात्यविद्वान् -

- (a) ओल्डेनबर्गः (b) हिल्लेब्राण्टः
(c) मैक्समूलरः (d) मैकडॉनलः

Ans : (c) सायण भाष्य सहित ऋग्वेद का सर्वप्रथम जिस पाश्चात्य विद्वान् ने सम्पादन किया है वह हैं- मैक्समूलर। मैक्समूलर ऐसे पाश्चात्य विद्वान् हैं जो ऋग्वेद पर भाष्य लिखे हैं।

38. 'इन्द्रियनित्यं वचनम्' इति सिद्धान्तः अस्ति-

- (a) यास्कस्य (b) कात्यायनस्य
(c) औदुम्बरायणस्य (d) पाणिनेः

Ans : (c) 'इन्द्रियनित्यं वचनम्' इति सिद्धान्तः औदुम्बरायणस्य अस्ति। अर्थात् 'इन्द्रियनित्यं वचनम्' यह सिद्धान्त औदुम्बरायण का है।

39. तैत्तिरीयारण्यकस्य द्वितीये प्रपाठकेऽस्ति-

- (a) स्वाध्यायपुरस्सरं पञ्चमहायज्ञानां प्रतिपादनम्
(b) आरुणकेतुनामकस्य अग्नेः उपासनावर्णनम्
(c) चातुर्होत्रचितेः उपयोगिनां मन्त्राणां संकलनम्
(d) अभिचारमन्त्राणां संग्रहः

Ans : (a) तैत्तिरीयारण्यक कृष्णयजुर्वेद का आरण्यक है। इस आरण्यक में दश प्रपाठक हैं जिन्हें परिच्छेद भी कहा जाता है। तैत्तिरीय आरण्यक के द्वितीय प्रपाठक में "स्वाध्यायपुरस्सरं पञ्चमहायज्ञानां प्रतिपादनम्" अर्थात् स्वाध्याय एवं पञ्चमहायज्ञों का प्रतिपादन किया गया है।

40. षड्भावविकाराणां चर्चामकरोत् -

- (a) शाकटायनः (b) भागुरिः
(c) यास्कः (d) वार्षाथिनिः

Ans : (d) षड्भावविकारों की चर्चा यास्क के निरुक्त में की गयी है। षड्भावविकार इस प्रकार हैं-

(1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

41. 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' उद्धृतोऽस्ति-

- (a) ईशावास्योपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) प्रश्नोपनिषदि (d) श्रीमद्भगवद्गीतायाम्

Ans : (b) 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' कठोपनिषद् से उद्धृत है। कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद के कठ शाखा से सम्बन्धित है।

42. 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतश्नुते' इत्युक्तेः मूलं स्रोतः अस्ति-

- (a) कठोपनिषद् (b) ईशावास्योपनिषद्
(c) तैत्तिरीयारण्यकम् (d) श्रीमद्भगवद् गीता

Ans : (b) 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतश्नुते' इस उक्ति का मूल स्रोत ईशावास्योपनिषद् है। सम्पूर्ण मन्त्र इस प्रकार है-
“विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।”

43. शुनःशेषस्य आख्यानं वर्ततेऽस्मिन् ब्राह्मणे-

- (a) ऐतरेयब्राह्मणे (b) तैत्तिरीयब्राह्मणे
(c) गोपथब्राह्मणे (d) शतपथब्राह्मणे

Ans : (a) शुनःशेष आख्यान ऐतरेयब्राह्मण में है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण के अन्तिम भाग को ऐतरेय आरण्यक कहा जाता है। यह आरण्यक 5 भागों में विभक्त है।

44. 'तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः' इतिकथनं वर्तते-

- (a) ऋक्प्रातिशाख्ये (b) अष्टाध्याय्याम्
(c) महाभाष्ये (d) निरुक्ते

Ans : (a) 'तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः' इतिकथनं ऋक्प्रातिशाख्यं वर्तते। अर्थात् 'तिस्रः प्लुत उच्यते स्वरः' यह कथन ऋक्प्रातिशाख्य का है।

45. अयोगवाहः कथ्यते-

- (a) कवर्गः (b) अन्तस्थः
(c) विसर्गः (d) ऋवर्गः

Ans : (c) विसर्गः अयोगवाहः कथ्यते। अर्थात् विसर्ग को अयोगवाह कहा जाता है। इसका वर्णन पाणिनीय शिक्षा में प्राप्त होता है।

46. अद्वैतवेदान्ते कर्तृत्वाद्यभिमानो उच्यते-

- (a) मनोमयकोषः (b) आनन्दमयकोषः
(c) प्राणमयकोषः (d) विज्ञानमयकोषः

Ans : (d) अद्वैतवेदान्त में विज्ञानमयकोष को कर्तृत्वाद्यभिमानो कहा गया है। विज्ञानमयकोष के अन्तर्गत- पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ अर्थात् (श्रोत, त्वक् चक्षु, जिह्वा, घ्राण) तथा बुद्धि परिगणित हैं।

47. 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यम् उपदिष्टमस्ति-

- (a) छान्दोग्योपनिषदि (b) मुण्डकोपनिषदि
(c) बृहदारण्यकोपनिषदि (d) ऐतरेयब्राह्मणे

Ans : (a) 'तत्त्वमसि' महावाक्य छान्दोग्योपनिषद् में प्राप्त होता है। छान्दोग्योपनिषद् सामवेदीय उपनिषद् सामवेद की उपनिषद् है जो विशालकाय एवं गद्यात्मक है, यह 8 अध्याय एवं 154 खण्डों में विभक्त है तथा इसमें कृष्ण का उल्लेख मिलता है।

48. तमोगुणस्य प्रयोजनमस्ति-

- (a) प्रवृत्तिः (b) प्रकाशः
(c) नियमनम् (d) विषादः

Ans : (c) तमोगुण का प्रयोजन नियमन है। इसको निम्न कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है-

“सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपच्चार्थतो वृत्तिः ॥”

49. अव्यक्तविषयिणी समापत्तिर्भवति-

- (a) निर्विचारा (b) निर्वितर्का
(c) सवितर्का (d) उपर्युक्तासु न काचित्

Ans : (b) अव्यक्त विषयिणी समापत्तिर्भवति निर्वितर्का। अर्थात् अव्यक्त विषयिणी निर्वितर्का होती है।

50. 'औलूक्यदर्शनम्' इति संज्ञया प्रसिद्धं दर्शनमस्ति

- (a) सांख्यदर्शनम् (b) योगदर्शनम्
(c) वैशेषिकदर्शनम् (d) मीमांसादर्शनम्

Ans : (c) 'औलूक्यदर्शनम्' को वैशेषिक दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। वैशेषिक दर्शन के प्रतिपादक आचार्य कणाद/उलूक या औलूक्य हैं।

51. 'नीलो घटः' इत्यस्मिन् सम्बन्धः भवति-

- (a) संयोगसम्बन्धः
(b) असमवायसम्बन्धः
(c) संयुक्तसमवायसम्बन्धः
(d) समवेतसमवायसम्बन्धः

Ans : (c) 'नीलो घटः' में संयुक्तसमवाय सम्बन्ध है। सन्निकर्ष षड्विधः होते हैं- (1)संयोग (2) संयुक्त समवाय (3)संयुक्त समवेत समवाय (4)समवाय (5) समवेत समवाय (5)विशेषण विशेष्य भाव। जब चक्षु आदि से घट के रहने वाले रूप आदि का ग्रहण होता है कि घट में श्याम रूप है, तब चक्षु इन्द्रिय है, घट का रूप विषय है। इन दोनों का सन्निकर्ष संयुक्त समवाय होता है।

52. पटस्य निमित्तकारणं भवति-

- (a) तन्तवः (b) तुरी
(c) तन्तुसंयोगः (d) तन्तुरूपम्

Ans : (b) पट का निमित्त कारण तुरी होता है। निमित्तकारण= जो न समवायि कारण है, न ही असमवायि कारण है, किन्तु कारण है वह निमित्त कारण कहलाता है, जैसे वेमादि पट का निमित्त कारण है।

53. 'अग्निमीले पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'इले' पदस्य अर्थः अस्ति-

- (a) गच्छामि (b) स्तौमि
(c) करोमि (d) प्रज्वालयामि

Ans : (b) 'अग्निमीले पुरोहितम्' इस मन्त्र में 'इले' का अर्थ-स्तौमि है। वैदिक सूक्त संग्रह में 'इले' से सम्बन्धित चर्चा की गयी है। अतः विकल्प (b) सही है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

54. तर्कभाषायां प्रमा प्रोक्ता-

- (a) स्मृतिः (b) यथार्थानुभवः
(c) विपर्ययः (d) संशयः

Ans : (b) 'यथार्थानुभवः प्रमा' अर्थात् यथार्थ अनुभव प्रमा है यह यथार्थ पद से संशय, भ्रान्ति (विपर्यय) तथा तर्क इन अयथार्थ अनुभवों का निराकरण किया गया है। 'अनुभव' पद के द्वारा स्मृति का निराकरण किया गया है। स्मृति वह ज्ञान है जिसका विषय (पहले ही) ज्ञात होता है। स्मृति से भिन्न ज्ञान अनुभव है।

55. योगदर्शने चित्तवृत्तीनां संख्या निर्दिष्टा

- (a) दश (b) षड्
(c) पञ्च (d) अनन्ताः

Ans : (c) योगदर्शन में चित्तवृत्तियों की संख्या पाँच बताई गयी है। इसका वर्णन भारतीय दर्शन में विस्तारपूर्वक किया गया है। अतः विकल्प (c) सही है।

56. अङ्गस्य प्रधानस्य च सम्बन्धपको विधिः कथ्यते-

- (a) विनियोगविधिः (b) अधिकारीविधिः
(c) उत्पत्तिविधिः (d) प्रयोगविधिः

Ans : (a) अङ्गस्य प्रधानस्य च सम्बन्धबोधको विधिः विनियोगविधिः उत्पत्तिविधिः कथ्यते। अर्थात् अङ्ग प्रधान का सम्बन्ध बताने के लिए विनियोगविधिः का प्रयोग किया जाता है। इसका वर्णन लौगाक्षिभास्कर कृत 'अर्थसंग्रह' में प्राप्त होता है।

57. बौद्धदर्शनस्य मान्यः सिद्धान्तोऽस्ति

- (a) स्यादवादः (b) प्रतीत्यसमुत्पादवादः
(c) मायावादः (d) आत्मवादः

Ans : (b) बौद्ध दर्शन का मान्य सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पादवाद है। भावनाचतुष्टय को भी बौद्ध मानते हैं। बौद्ध पञ्चस्कन्ध को अपना मूल मानते हैं ये स्कन्ध इस प्रकार हैं—
(1) रूपस्कन्ध (2) विज्ञानस्कन्ध (3) वेदनास्कन्ध (4) संज्ञास्कन्ध और (5) संस्कारस्कन्ध

58. 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्' इति कथनं प्राप्यते-

- (a) बौद्धदर्शनग्रन्थेषु
(b) सांख्यकारिकायाम्
(c) तर्कभाषायाम्
(d) अर्थसंग्रहे

Ans : (b) 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टम्' इति कथनं सांख्यकारिकायाम् प्राप्यते। यथा—

दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टम् प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धिः।

59. तर्कभाषानुसारेण चक्षुषा घटगतश्यामरूपस्य प्रत्यक्षे सन्निकर्षो भवति-

- (a) संयोगः (b) समवायः
(c) संयुक्तसमवायः (d) समवेतसमवायः

Ans : (c) तर्कभाषा के अनुसार चक्षु से घटगत श्याम रूप का जब प्रत्यक्ष सन्निकर्ष होता है तब वह संयुक्त समवाय सन्निकर्ष होता है। सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है।

60. जैनदर्शनानुसारेण आत्मनः परिमाणं भवति-

- (a) अणु (b) परमहत्
(c) मध्यमम् (d) ह्रस्वम्

Ans : (c) जैनदर्शनानुसारेण आत्मनः परिमाणं मध्यमम् भवति अर्थात् जैनदर्शन के अनुसार अपने आप होने वाला परिमाण मध्यम होता है।

61. अधस्तनेषु तत्त्वेषु प्रकृतिविकृतिस्वरूपात्मकं वर्तते-

- (a) अव्यक्तम् (b) अहंकारः
(c) पुरुषः (d) मनः

Ans : (b) अहंकारः प्रकृति विकृति स्वरूपात्मक होता है। इसको इस कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है—

“मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥”

62. सांख्यमतेन पुरुषोऽस्ति-

- (a) प्रकृतिः (b) प्रकृतिविकृतिश्च
(c) न प्रकृतिर्न विकृतिः (d) विकृतिः

Ans : (c) सांख्यमत में पुरुष 'न प्रकृति है और न विकृति' तथा कारणरूपा जो प्रकृति है वह किसी की विकृति (कार्य) नहीं है। मूलप्रकृतिरविकृतिः। प्रकृतिविकृतयः सप्त। षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।

63. तर्कभाषानुसारेण प्रमेयाणां संख्या भवति-

- (a) द्वादश (b) दश
(c) अष्टौ (d) चतस्रः

Ans : (a) तर्कभाषा के अनुसार प्रमेयों की संख्या द्वादश (12) हैं, जो इस प्रकार हैं—

(1) आत्मा (2) शरीर (3) इन्द्रिय (4) अर्थ (5) बृद्धि (6) मन (7) प्रवृत्ति (8) दोष (9) प्रेत्यभाव (10) फल (11) दुःख तथा (12) अपवर्ग।

64. ऋग्वेदानुसारेण 'होता' इति विशेषणम् अस्ति-

- (a) रुद्रस्य (b) वरुणस्य
(c) इन्द्रस्य (d) अग्नेः

Ans : (d) ऋग्वेद के अनुसार होता अग्नि का विशेषण है। इसके अलावा प्रचेता, कविक्रतु अजिर इत्यादि अग्नि के ही विशेषण हैं। इन्द्र के लिए शतक्रतु, मघवन्, वज्रबाहु, वज्रिन इत्यादि विशेषण प्रयुक्त हुये हैं। वरुण के लिए धृतवत तथा रुद्र के लिये श्वेतवर्णी विशेषण प्रयुक्त होते हैं।

65. तर्कभाषानुसारेण गुणो नास्ति-

- (a) स्नेहः (b) दिक्
(c) द्वेषः (d) बुद्धिः

Ans : (b) तर्कसंग्रह के अनुसार दिक् गुण नहीं है। क्योंकि प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक् होता है। गुण 24 होते हैं जो इस प्रकार हैं—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, सङ्ख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

66. योगदर्शने 'विकल्पवृत्तिः' अस्ति-

- (a) प्रत्यक्षानुमानप्रमाणता (b) स्मृतिः
(c) शब्दज्ञानानुपातिवस्तुशून्यता (d) वैराग्यभावात्मिका

Ans : (c) योगदर्शन में शब्दज्ञानानुपातिवस्तुशून्यता को विकल्पवृत्ति कहा गया है। शब्दज्ञानानुपाति विषय का वर्णन पतञ्जलि के योग सूत्र में किया गया है।

67. सांख्यकारिकानुसारेण 'अव्यक्तं' भवति-

- (a) असामान्यम् (b) अनाश्रितम्
(c) अप्रसवधर्मि (d) अविषयम्

Ans : (b) सांख्यकारिका के अनुसार अव्यक्त अनाश्रित होता है। इस कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है-
“हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् ॥”

68. वेदान्तदर्शनस्य प्रतिपाद्यम् अस्ति-

- (a) प्रकृतिपुरुषयोः ऐक्यसाधनम्
(b) जीवब्रह्मैक्यप्रतिपादनम्
(c) धर्मप्रतिपादनम्
(d) पदार्थनिरूपणम्

Ans : (b) वेदान्तदर्शन का प्रतिपाद्य है- जीवब्रह्मैक्यप्रतिपादनम्। इसमें मनुष्य का एकमात्र उद्देश्य जीवब्रह्म की प्राप्ति होना चाहिए। वेदान्त दर्शन को उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है।

69. 'कर्तृकर्मणोः कृति' इति सूत्रेण विभक्तिर्विधीयते-

- (a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) षष्ठी

Ans : (d) 'कर्तृकर्मणोः कृतिः' सूत्र षष्ठी विभक्ति का विधान करता है। कर्तृकर्मणोः कृतिः = कृदन्त के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- रामस्य कृतिः।

70. 'स्पृह' धातुप्रयोगे यस्य स्पृहा भवति तत्र विभक्तिर्भवति-

- (a) तृतीया (b) द्वितीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

Ans : (c) 'स्पृह' धातु के योग में ईप्सित (जिसे चाहा जाए) पदार्थ की सम्प्रदान संज्ञा होती है। उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसका सूत्र है- 'स्पृहेरीप्सितः' जैसे- सः पुष्पेभ्यो स्पृहति।

71. 'मातुः स्मरणम्' इत्यस्मिन् प्रयोगे षष्ठीविभक्तेः सूत्रमस्ति-

- (a) षष्ठी हेतुप्रयोगे (b) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन
(c) अधीगर्थदयेशां कर्मणि (d) कर्तृकर्मणोः कृति

Ans : (c) 'मातुः स्मरणम्' इस प्रयोग में मातुः में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' सूत्र से हुई है।

72. 'जटाभिस्तापसः' इत्यस्मिन् प्रयोगे 'जटाभिः' अत्र तृतीयाविभक्तिविधायकं सूत्रमस्ति-

- (a) हेतो (b) जनिकर्तुः प्रकृतिः

- (c) अपवर्गे तृतीया (d) इत्यम्भूतलक्षणे

Ans : (d) 'जटाभिस्तापसः' इस प्रयोग में जटाभिः में तृतीया विभक्ति का प्रयोग 'इत्यम्भूतलक्षणे' सूत्र से किया गया है। जब कोई विशेष चिह्न से पहचाना जाये उसमें तृतीया विभक्ति होती है, जैसे-चन्दनेन पण्डितः, पुस्तकेन छात्रः।

73. पररूपसन्धिः उदाहरणमस्ति-

- (a) प्रेजते (b) प्राच्छति
(c) उपैति (d) उपैषते

Ans : (a) प्रेजते पररूप सन्धि का उदाहरण है। 'एङि पररूपम्' सूत्र के अनुसार यदि अवर्णान्त उपसर्ग के बाद एङादि धातु-हो तो पूर्व एवं पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। जैसे-
प्र + एजते = प्रेजते
उप + ओषति = उपोषति

74. 'गार्ग्यायणी' इतिपदे प्रत्ययः वर्तते-

- (a) डीप् (b) डीष्
(c) डीन् (d) णिनि

Ans : (b) सर्वप्रथम 'गर्गादिभ्यो यञ्' सूत्र से गर्ग से यञ् प्रत्यय की प्राप्ति हुयी अब 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि स्वर की वृद्धि होकर गार्ग + यञ् = गार्ग्य बना। अब गार्ग्य से 'प्राचां षफ तद्धितः' सूत्र से षफ प्रत्यय होकर गार्ग्य + षफ हुआ। षफ में फ शेष बचता है। फ को आयन् होकर गार्ग्य + आयन् हुआ। अब 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से स्त्रीत्व की विवक्षा में डीष् प्रत्यय होकर गार्ग्य + आयन् + डीष् हुआ वर्णसम्मेलन करके गार्ग्यायणी बना।

75. अधोलिखितेषु वृद्धिसंज्ञकः नास्ति-

- (a) आ (b) ओ
(c) औ (d) ऐ

Ans : (b) 'वृद्धिरादैच्' सूत्र के अनुसार (वृद्धिः + आत् + ऐच्) आत् और ऐच् वृद्धि सञ्ज्ञक हैं अर्थात् आ, ऐ, औ, की वृद्धि सञ्ज्ञा होती है। ओ 'अदेङ्गुणः' से गुण सञ्ज्ञक होता है।

76. नित्यनपुंसकलिङ्गैकवचनान्तः समासः भवति-

- (a) बहुव्रीहिः (b) द्विगुः
(c) द्वन्द्वः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) 'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास नित्यनपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन में होता है। द्वन्द्व और द्विगु समास भी समाहार अर्थ में नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होते हैं।

77. अधस्तनेषु शुद्धं वाक्यमस्ति-

- (a) रजकाय वस्त्रं ददाति (b) रजकं वस्त्रं ददाति
(c) रजके वस्त्रं ददाति (d) रजकस्य वस्त्रं ददाति

Ans : (d) निम्न वाक्यों में से 'रजकस्य वस्त्रं ददाति' वाक्य शुद्ध है। क्योंकि देने के अर्थ में तीन विभक्तियों का प्रयोग मिलता है-
(1) कोई वस्तु देकर वापस न लिया जाए तो चतुर्थी विभक्ति।
(2) देकर वापस ले लिया जाए तो षष्ठी विभक्ति एवं
(3) देने में यदि देने वाले का व्यवहार अशिष्ट है तो तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

78. 'जनमेजयः' इत्यत्र प्रत्ययो वर्तते-

- (a) खश् (b) खच्
(c) क (d) ट

Ans : (a) जनमेजयः में खश् प्रत्यय है। जनमेज से खश् होकर जनमेज + खश् हुआ। अब खश् में ख शेष बचता है जनमेज ख हुआ अब ख को इयः होकर जनमेजयः बना।

79. 'कार्यम्' इतिपदे प्रत्ययो वर्तते-

- (a) यत् (b) ण्यत्
(c) क्यप् (d) ल्यप्

Ans : (b) 'कार्यम्' कृ धातु से ऋहलोर्ण्यत् सूत्र से ण्यत् प्रत्यय हुआ। अनुबन्ध लोप करके कृ+य बना। अब 'अचो ङिति' सूत्र से आदि स्वर की वृद्धि करके क् + आर् + य = कार्यम् बना।

80. 'कटे आस्ते' इत्युदाहरणे 'कटे' इत्यत्र आधारः अस्ति-

- (a) औपश्लेषिकः (b) वैषयिकः
(c) अभिव्यापकः (d) उपर्युक्तेषु न कोऽपि

Ans : (a) 'कटे आस्ते' इस उदाहरण में कटे में औपश्लेषिक आधार है। जिस आधार के साथ आधेय का भौतिक संश्लेष होता है उस आधार को औपश्लेषिक कहते हैं। आधार तीन प्रकार के होते हैं- (1) औपश्लेषिक (2) वैषयिक (3) अभिव्यापक।

81. 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' इत्यस्य उदाहरणं नास्ति-

- (a) सीतारामौ (b) मयूरीकुक्कुटौ
(c) अर्धपिप्पली (d) कुक्कुटमयूरौ

Ans : (a) 'परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' सूत्र के अनुसार तत्पुरुष समास और द्वन्द्व समास का लिङ्ग पर अर्थात् बाद वाले के अनुसार निर्धारित होता है। अतः सीतारामौ इसके अन्तर्गत नहीं आते हैं। क्योंकि सीतारामौ में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

82. पतञ्जलेनुसारं व्याकरणाध्ययनस्य मुख्य-प्रयोजनानि सन्ति-

- (a) चत्वारि (b) पञ्च
(c) षड् (d) सप्त

Ans : (b) पतञ्जलेनुसारं व्याकरणाध्ययनस्य पञ्च मुख्य-प्रयोजनानि सन्ति अर्थात् पतञ्जलि के अनुसार व्याकरण अध्ययन के पाँच मुख्य प्रयोजन हैं। जो इस प्रकार हैं-

(1) रक्षा (2) ऊह (3) आगम (4) लघु (5) असन्देह
"रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्।"

83. अयोगात्मकवर्गस्य प्रतिनिधिभाषाऽस्ति-

- (a) सूडानी (b) तोखारी
(c) चीनी (d) स्वामी

Ans : (c) अयोगात्मक वर्ग की प्रतिनिधि भाषा चीनी है। इन भाषाओं में अर्थतत्त्व व सम्बन्ध तत्त्व में योग नहीं होता है। या तो सम्बन्ध तत्त्व की आवश्यकता ही नहीं रहती, केवल स्थानक्रम से सम्बन्ध का पता चल जाता है या सम्बन्ध तत्त्व रहता भी है तो अर्थ तत्त्व से मिलता नहीं। इस प्रकार इस वर्ग की भाषाओं को स्थान प्रधान, एकाक्षर, व्यास प्रधान, निपात प्रधान, वियोगात्मक, धातु प्रधान, निरवयव, निर्योगी आदि नामों से भी जाना जाता है।

84. संस्कृतभाषाऽस्ति-

- (a) अयोगात्मिका
(b) श्लिष्टयोगात्मिका
(c) प्रश्लिष्टयोगात्मिका
(d) अश्लिष्टयोगात्मिका

Ans : (b) संस्कृत भाषा श्लिष्टयोगात्मिका है। श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं के वाक्यों में विभक्ति की प्रधानता होती है, जिनमें वाक्य आदि का सम्बन्ध विभक्ति के द्वारा प्रकट होता है, विभक्ति प्रधान वाक्य में प्रत्यय सम्बन्ध का ज्ञान कराते हैं। इसलिए इस वर्ग की भाषा को विभक्ति प्रधान भाषा भी कहते हैं।

85. प्रयत्नलाघवः कारणमस्ति-

- (a) ध्वनिनियमस्य (b) अर्थपरिवर्तनस्य
(c) भाषाहासस्य (d) ध्वनिपरिवर्तनस्य

Ans : (d) प्रयत्नलाघव का कारण ध्वनि परिवर्तन है। प्रयत्नलाघव से तात्पर्य है कम परिश्रम में अधिक लाभ होना अर्थात् कुछ शब्दों या अर्थों को इस प्रकार उच्चारित करना कि उनको कम प्रयत्न करने पर अधिक स्पष्ट किया जा सके।

86. वैयाकरणैः शब्दार्थयोः सम्बन्धः स्वीकृतः-

- (a) संयोगसम्बन्धः
(b) समवायसम्बन्धः
(c) नित्यसम्बन्धः
(d) अनित्यसम्बन्धः

Ans : (c) वैयाकरणैः शब्दार्थयोः नित्य सम्बन्धः स्वीकृतः। अर्थात् वैयाकरणों ने शब्दार्थ का सम्बन्ध नित्य माना है।

87. 'चक्रिंस्त्रायस्व' इत्यस्मिन् वाक्ये प्रयुक्तं 'चक्रिन्' इतिपदमस्ति-

- (a) प्रातिपदिकम्
(b) प्रथमैकवचनान्तम्
(c) सम्बोधने प्रयुक्तप्रथमैकवचनान्तम्
(d) द्वितीयैकवचनान्तम्

Ans : (c) 'चक्रिंस्त्रायस्व' वाक्य में प्रयुक्त चक्रिन् में सम्बोधन में प्रयुक्त प्रथमा का एकवचनान्त रूप है।

88. 'हरी रम्यः' इत्यस्मिन् वाक्ये 'हरी' इति पदमस्ति-

- (a) प्रथमद्विवचनान्तम्
(b) द्वितीयाद्विवचनान्तम्
(c) प्रथमैकवचनान्तम्
(d) सप्तम्यैकवचनान्तम्

Ans : (c) 'हरी रम्यः' वाक्य में हरी प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है। हरी रम्यः में रोरि और द्रुलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽणः सूत्रों से सन्धि कार्य हुआ है।

89. 'परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः' इति लक्षणमस्ति-

- (a) निदर्शनायाः (b) समासोक्तेः
(c) दीपकस्य (d) दृष्टान्तस्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) 'परोक्तिर्भेदकैः शिलष्टैः' यह लक्षण समासोक्ति अलङ्कार का है। "परोक्तिर्भेदकैः शिलष्टैः समासोक्तिः" अर्थात् प्रकृत अर्थ के प्रतिपादक वाक्य के द्वारा श्लेषयुक्त विशेषणों के प्रभाव से, न कि विशेष्य के सामर्थ्य से, जो अप्रकृत अर्थ का कथन है वह समास से अर्थात् संक्षेप से कथन होने से समासोक्ति अलङ्कार होता है।

90. मम्मटमते मध्यमकाव्यं भवति-

- (a) शब्दचित्रम् (b) ध्वनिः
(c) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (d) वाच्यचित्रम्

Ans : (c) मम्मट के अनुसार मध्यम काव्य गुणीभूतव्यङ्ग्यम् काव्य है। मम्मट के काव्य के तीन भेद किये हैं-

(1) ध्वनिकाव्य या उत्तम काव्य (2) गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य या मध्यम काव्य और (3) चित्रकाव्य या अधमकाव्य।

91. अधोलिखितेषु युग्मेषु परस्परं विरुद्धम् अलङ्कारयुगलमस्ति-

- (a) उपमा - उत्प्रेक्षा
(b) रूपकम् - दीपकम्
(c) काव्यलिङ्गम् - परिसंख्या
(d) विभावना - विशेषोक्तिः

Ans : (d) अधोलिखित युग्मों में विभावना एवं विशेषोक्ति अलङ्कार परस्पर विरोधी हैं। विशेषोक्ति का लक्षण इस प्रकार है-

"विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।" अर्थात् सम्पूर्ण कारणों के होने पर फल का न कहना विशेषोक्ति है। विभावना का लक्षण है-"क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।" अर्थात् कारण (क्रिया) का निषेध होने पर फल की उत्पत्ति विभावना अलङ्कार है।

92. सङ्केतग्रहे 'अपोहः' शब्दार्थः इति मतमस्ति-

- (a) नैयायिकानाम् (b) बौद्धानाम्
(c) मीमांसकानाम् (d) वेदान्तिनाम्

Ans : (b) सङ्केतग्रह में 'अपोह' शब्दार्थ यह मत बौद्धों का है। बौद्धों के मत में शब्द का अर्थ 'अपोह' होता है। अपोह का अर्थ-'अतद् -व्यावृत्ति' या 'तदभिन्नभिन्नत्व' है।

93. तात्पर्यावृत्तिः स्वीक्रियते-

- (a) अन्विताभिधानवादिभिः
(b) ध्वनिवादिभिः
(c) अभिहितान्वयवादिभिः
(d) भाक्तवादिभिः

Ans : (c) तात्पर्यावृत्ति को अभिहितान्वयवादियों के द्वारा स्वीकार किया गया है। काव्य में वाचक लाक्षणिक तथा व्यञ्जक के भेदों से शब्द तीन प्रकार का होता है लेकिन मीमांसक कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथि मिश्र आदि (अभिहितान्वयवादी) के मतों में तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का तात्पर्यार्थ भी होता है।

94. ध्वनिसिद्धान्तस्य मूलाधारः सिद्धान्तः वर्तते-

- (a) शब्दब्रह्मत्वम् (b) शब्दनित्यत्वम्
(c) स्फोटवादः (d) अभिधावृत्तिः

Ans : (c) ध्वनि सिद्धान्त का मूलाधार सिद्धान्त स्फोटवाद है। स्फोटवाद वैयाकरणों का प्रमुख सिद्धान्त है। स्फोट शब्द की व्युत्पत्ति 'स्फुटति' अर्थः यस्मात् स स्फोटः' इस प्रकार की जाती है। अर्थात् जिससे अर्थ की प्रतीति हो उसे स्फोट कहते हैं।

95. नाट्यवेदनिर्माणो भरतेन अभिनयो गृहीतः-

- (a) यजुर्वेदात् (b) ऋग्वेदात्
(c) अथर्ववेदात् (d) गन्धर्ववेदात्

Ans : (a) नाट्यवेदनिर्माणो भरतेन अभिनयो यजुर्वेदात् गृहीतः। अर्थात् नाट्यवेद निर्माण में भरत ने अभिनय यजुर्वेद से ग्रहीत किया था।

96. 'भ्रम धार्मिक विस्मयः' इति पद्ये व्यङ्ग्यमस्ति-

- (a) वाच्ये प्रतिषेधरूपे व्यङ्ग्यं विधिरूपम्
(b) वाच्ये विधिरूपे व्यङ्ग्यं प्रतिषेधरूपम्
(c) वाच्ये प्रतिषेधरूपे अनुभवरूपम्
(d) वाच्यात् विभिन्नविषयत्वेन व्यस्थापितम्

Ans : (b) 'भ्रम धार्मिक विस्मयः' इस पद में व्यङ्ग्य है-'वाच्ये विधिरूपे व्यङ्ग्यं प्रतिषेधरूपम्।'

97. उपमेयम् असत्यं कृत्वा उपमानस्य सत्यरूपेण स्थापनेऽलङ्कारो भवति-

- (a) रूपकम् (b) व्यतिरेकः
(c) निदर्शना (d) अपहृतिः

Ans : (d) उपमेयम् असत्यं कृत्वा उपमानस्य सत्यरूपेण स्थापनेऽलङ्कारो अपहृतिः भवति। अपहृति अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार है-

"प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपहृतिः।"

98. ध्वनिकाव्यं भवति-

- (a) यत्र वाच्येन तिरस्कृतं व्यङ्ग्यम्
(b) यत्र वाच्यातिशायि व्यङ्ग्यं प्रधानम्
(c) यत्र वाच्यव्यङ्ग्ययोः समं प्राधान्यम्
(d) यत्र व्यङ्ग्योपस्कृतं वाच्यम्

Ans : (b) ध्वनिकाव्यं भवति- यत्र वाच्यातिशायि व्यङ्ग्यं प्रधानम्। आचार्य मम्मट ने ध्वनिकाव्य को इस प्रकार बताया है-'इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।'

99. 'आयुर्वेदम् (घृतम्)' इत्यत्र लक्षणा अस्ति-

- (a) शुद्धा सारोपा
(b) गौणी सारोपा
(c) शुद्धा साध्यवसाना
(d) गौणी साध्यवसाना

Ans : (c) 'आयुर्वेदम्' (घृतम्) यहाँ पर शुद्धा साध्यवसाना लक्षणा है। इसका वर्णन काव्यप्रकाश में किया गया है।

100. 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' इति नाट्यलक्षणं कृतम्

- (a) धनञ्जयेन (b) धनिकेन
(c) भरतेन (d) विश्वनाथेन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' इति नाट्यलक्षणं धनञ्जयेन कृतम्। अर्थात् अवस्थानुकृति को नाट्य कहते हैं यह नाटक का लक्षण आचार्य धनञ्जय का है।

101. नाट्ये यत्र प्रस्तुतस्य भाविनः कथावस्तुनः अन्योक्तिमयी सूचना दीयते तद् भवति-

- (a) पताकास्थानकम् (b) पताका
(c) आधिकारिकम् (d) प्रासङ्गिकम्

Ans : (a) नाट्ये यत्र प्रस्तुतस्य भाविनः कथावस्तुनः अन्योक्तिमयी सूचना दीयते तद् पताकास्थानकम् भवति। पताकास्थानक का लक्षण इस प्रकार है-

“प्रस्तुतागन्तुभावस्य वस्तुनोऽन्योक्तिसूचकम्।
पताकास्थानकं तुल्यसंविधानविशेषणम्॥”

102. नृत्तनृत्ययोः स्वरूपं भवति-

- (a) नृत्यं भावाश्रयं, नृत्यं तालयाश्रयम्
(b) नृत्यं तालयाश्रयं, नृत्यं भावाश्रयम्
(c) नृत्यं भावाश्रयं, नृत्यं रसाश्रयम्
(d) नृत्यं रसाश्रयं, नृत्यं तालयाश्रयम्

Ans : (b) नृत्तनृत्ययोः स्वरूपं भवति- नृत्यं तालयाश्रयं, नृत्यं भावाश्रयम्। अर्थात् नृत्त ताल और लय आश्रित होता है, जबकि नृत्य भाव आश्रित होता है।

103. अद्भुतघटनायाः समावेशः वर्तते यस्मिन् तत् कथ्यते-

- (a) विलोभनम् (b) परिभावः
(c) उद्बेदः (d) विधानम्

Ans : (b) अद्भुतघटनायाः समावेशः वर्तते यस्मिन् तत् परिभावः कथ्यते अर्थात् अद्भुत घटना का समावेश जिसमें होता है उसे परिभाव कहते हैं।

104. कैशिकीवृत्तिः मुख्यरूपेण प्रयुज्यते-

- (a) शृंगारे हास्ये च (b) वीरे अद्भुते च
(c) वीभत्से भयानके च (d) रौद्रे अद्भुते च

Ans : (a) कैशिकीवृत्ति मुख्य रूप से शृङ्गार और हास्य रसों में प्रयुक्त होती है। इस विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है-

“शृङ्गारे कैशिकी वीरे सात्त्वती आरभट्टी पुनः।
रसे रौद्रे च वीभत्से वृत्तिः सर्वत्र भारती॥”

105. काव्यगुणानां लक्षणत्रयम् अस्ति-

- (a) शब्दसौष्टवम्, अर्थसौन्दर्यं व्यङ्ग्यचमत्कारश्च
(b) शब्दधर्मत्वं, वाच्यधर्मत्वं दोषरहितत्वञ्च
(c) काव्यधर्मत्वं अर्थधर्मत्वं रसापकर्षकत्वञ्च
(d) रसधर्मत्वं, रसोत्कर्षत्वम् अचलस्थितित्वञ्च

Ans : (d) काव्यगुणों के तीन लक्षण हैं-

(1) रसधर्मत्वं (2) रसोत्कर्षत्वम् (3) अचलस्थितित्वञ्च, जबकि गुण है-

“ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यदयः इवात्मनः।

उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयोः गुणाः ॥” (काव्यप्रकाश)

106. यत्र उत्पाद्यं लोकसंश्रयञ्च वृत्तं भवति तदस्ति रूपकम्

- (a) नाटकम् (b) प्रकरणम्
(c) ड्रिमः (d) व्यायोगः

Ans : (b) यत्र उत्पाद्यं लोकसंश्रयञ्च वृत्तं भवति तदस्ति रूपकम् - प्रकरणमस्ति। प्रकरण का लक्षण इस प्रकार है-

“अथ प्रकरणे तत्तमुत्पाद्यं लोकसंश्रयम्।
अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्॥
धीरप्रशान्तं सापायं धर्मकामार्थतत्परम्।
शेषं नाटकवत् सन्धिप्रवेशकरसादिकम्॥”

107. फलागमस्य परिगणनं भवति-

- (a) अर्थप्रकृतिषु (b) कार्यावस्थासु
(c) नाट्यसन्धिषु (d) अर्थोपक्षेपकेषु

Ans : (b) फलागम पञ्चकार्यावस्थाओं में परिगणित है। पञ्चकार्यावस्थाएँ इस प्रकार हैं-

(1) आरम्भ (2) यत्न (3) प्राप्त्याशा (4) नियताप्ति (5) फलागम। फलागम का लक्षण इस प्रकार है-

“समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः॥”

108. ‘याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा’ इत्यत्र ‘अधिगुणे’ इति पदेन बोध्य अस्ति-

- (a) यक्षः (b) राजहंसः
(c) शिवः (महाकालः) (d) मेघः

Ans : (d) ‘याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा’ यहाँ पर अधिगुणे पद से मेघ की ओर लक्षित किया गया है। यक्ष मेघ से कहता है कि गुणवान् से की गई निष्फल याचना भी अधम से की गई सफल याचना से श्रेष्ठ होती है।

109. ‘हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या’ रूपेण वर्णिता नगरी अस्ति-

- (a) विदिशा (b) उज्जयिनी
(c) अलका (d) दशपुरम्

Ans : (c) ‘हरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या’ से तात्पर्य अलका नगरी से है। इसका वर्णन कालिदास विरचित मेघदूतम् में किया गया है। मेघदूतम् दो भागों में विभक्त है- (1) पूर्वमेघदूत (2) उत्तरमेघदूत।

110. मेघदूतम् इति काव्ये प्रयुक्तं छन्दः अस्ति-

- (a) वंशस्थः (b) स्रग्धरा
(c) मालिनी (d) मन्दाक्रान्ता

Ans : (d) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् में आद्योपान्त मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग किया गया है। मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण इस प्रकार है-

“मन्दाक्रान्ता जलधि षडगैर्म्भीनतौ ताद् गुरु चेद्॥”

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तथा दो गुरु वर्ण आयें और जलधि (4) षट् (6) एवं अग (7) वर्णों पर यति हो उसे मन्दाक्रान्ता छन्द कहते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

111. लघुत्रयीति संज्ञया प्रथितस्य काव्यत्रयस्य प्रणेता कविर्वर्तते-

- (a) क्षेमेन्द्रः (b) जयदेवः
(c) बिल्हणः (d) कालिदासः

Ans : (d) लघुत्रयी काव्यत्रय के प्रणेता महाकवि कालिदास हैं। इनके रघुवंशमहाकाव्य, कुमारसम्भवमहाकाव्य एवं मेघदूतम् ये तीनों लघुत्रयी के अन्तर्गत परिगणित हैं। जबकि जयदेव ने गीतगोविन्द की रचना की है। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत (किरात, शिशुपाल, नैषध) महाकाव्य आते हैं।

112. मेघदूते 'वक्रः पन्था यदपि भवतः' इत्यादिभिर्वचोभिः मेघं प्रार्थयति यक्षः गन्तुम्-

- (a) अलकाम् (b) उज्जयिनीम्
(c) विदिशाम् (d) रामगिरिम्

Ans : (b) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् खण्डकाव्य में यक्ष मेघ से कहता है कि यद्यपि उत्तर दिशा में प्रस्थान किये हुए आपका मार्ग टेढ़ा हो जायेगा फिर भी आपको उज्जयिनी नगरी जो महाकाल की नगरी है उसकी रमणीय छटा को देखने अवश्य जाना चाहिए।

113. मेघदूते 'राजराजस्य दध्यौ' इति पद्ये 'राजराजस्य' इति पदेनाभिहितोऽस्ति-

- (a) यक्षः (b) कुबेरः
(c) महाकालः (d) इन्द्रः

Ans : (b) मेघदूत में 'राजराजस्य दध्यौ' इस पद में राजराजस्य से तात्पर्य यक्षों के अधिपति कुबेर से है। कुबेर की नगरी अलका है तथा वह यक्षों का अधिपति है। एक बार यक्ष ने प्रमादवश कुबेर के महल में समय पूर्व पुष्प नहीं पहुँचा सका जिससे कुपित होकर कुबेर ने यक्ष को अलकापुरी से एक वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया था।

114. 'प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महताकवीनाम्' सिद्धान्तस्यास्य प्रतिष्ठापकः आचार्यः अस्ति-

- (a) मम्मटाचार्यः (b) क्षेमेन्द्रः
(c) अभिनवगुप्तः (d) आनन्दवर्धनः

Ans : (d) 'प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महताकवीनाम्' सिद्धान्तस्यास्य प्रतिष्ठापकः आचार्यः आनन्दवर्धनः अस्ति। आनन्दवर्धन ने इसका वर्णन अपने ध्वन्यालोक में विस्तार से किया है।

115. आख्यानोपाख्यानैः उपबृंहितं काव्यम् अस्ति-

- (a) रामायणम् (b) नैषधीयचरितम्
(c) महाभारतम् (d) श्रीमद्भागवतम्

Ans : (c) आख्यानोपाख्यानैः उपबृंहितं काव्यम् महाभारतमस्ति। महाभारत महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रणीत है इसमें लगभग एक लाख श्लोक हैं। इसी कारण इसे शतसाहस्रीसंहिता कहा जाता है। महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है। इसी के भीष्म नामक पर्व में गीता का वर्णन हुआ है।

116. शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तं छन्दः अस्ति-

- (a) वंशस्थम् (b) शार्दूलविक्रीडितम्
(c) मालिनी (d) भुजङ्गप्रयातम्

Ans : (a) महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवधम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है। शिशुपालवधम् महाकाव्य 20 सर्गों में विभक्त है। इसके प्रथम सर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है। वंशस्थ का लक्षण है-

“जतौ तु वंशस्थ मुदीरतं जरौ।”

117. 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्' इति विशेषणेन माघकाव्ये सूच्यते-

- (a) श्रीकृष्णः (b) बलरामः
(c) अर्जुनः (d) नारदः

Ans : (d) 'पिशङ्गमौञ्जीयुजमर्जुनच्छविम्' महाकाव्य में यह विशेषण महर्षि नारद के लिए प्रयुक्त है। महाकवि माघकृत शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में महर्षि नारद इन्द्र का संदेश लेकर आकाश मार्ग से भगवान् श्री कृष्ण के महल की ओर आ रहे हैं। अतः यह विशेषण महर्षि नारद के लिए है।

118. 'निषध' -देशेन सम्बन्धितस्य पात्रस्य नामास्ति-

- (a) दमयन्ती (b) नलः
(c) पथिकः (d) हंसः

Ans : (b) निषध देश से सम्बन्धित पात्र का नाम नल है। इसका वर्णन श्री हर्ष कृत नैषधीयचरितम् महाकाव्य में प्राप्त होता है। यह महाकाव्य 22 सर्गों में विभक्त है। इसमें राजा नल और दमयन्ती की प्रणय गाथा का वर्णन है।

119. 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' इति कथनमस्ति-

- (a) हंसस्य (b) नलस्य
(c) पथिकस्य (d) भीमस्य

Ans : (a) 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' यह कथन हंस का है। श्री हर्ष विरचित नैषधीय महाकाव्य में निषध देश के राजा के विषय में रानी दमयन्ती को हंस सूचना देता है। 'मदेकपुत्राजननीजरातुरा' के माध्यम से हंस राजा को अपने विषय में बता रहा है। यह महाकाव्य विद्वानों के लिए औषधि माना गया है। यह 22 सर्गों में निबद्ध है।

120. नैषधीयचरिते प्रयुक्तोऽङ्गीरसः अस्ति-

- (a) अद्भुतः (b) करुणः
(c) शृङ्गारः (d) वीरः

Ans : (c) महाकवि श्री हर्ष द्वारा प्रणीत नैषधीय महाकाव्य में शृङ्गार रस का वर्णन है। शृङ्गार के अलावा भी कई रस अङ्गभूत मिलते हैं, किन्तु प्रधान रस शृङ्गार ही है, क्योंकि इस महाकाव्य में निषध देश के राजा महाराज नल एवं विदर्भ देश की राजकुमारी दमयन्ती की प्रणयकथा का वर्णन है। राजा नल को दमयन्ती की प्राप्ति काव्य का फल है।

उच्चतर शिक्षा आयोग
असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा, जनवरी-2013
संस्कृत

व्याख्या सहित प्रश्न-पत्र का हल

1. पाणिनीयशिक्षायां विसर्गस्योच्चारणस्थानमस्ति—

- (a) जिह्वा (b) गलप्रदेशः
(c) कण्ठः (d) जिह्वामूलम्

Ans : (c) पाणिनीयशिक्षा में विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ बताया गया है। 'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः' सूत्र के अनुसार अ, कवर्ग, ह और विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। जिह्वामूलीय अर्थात् ँक ँख का उच्चारण स्थान जिह्वा होता है।

2. सांख्यदर्शने 'न प्रकृतिः न विकृतिः ' इत्यनेन कस्य परिचयः भवति?

- (a) महाभूतसंघस्य (b) मोक्षस्य
(c) पुरुषस्य (d) संसारोत्तरस्य

Ans : (c) सांख्य दर्शन में 'न प्रकृतिः न विकृतिः' इस उक्ति से पुरुष का परिचय प्राप्त होता है। इसको इस कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है—

“मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥”

3. सांख्ये 'पङ्ग्वन्ध-संयोगः' कयोर्मध्ये उक्तः?

- (a) सत्त्वरजसोः
(b) कर्म-विकर्मयोः
(c) ज्ञान-मोक्षयोः
(d) प्रकृति-पुरुषयोः

Ans : (d) सांख्य में पङ्ग्वन्ध-संयोग प्रकृति और पुरुष के मध्य कहा गया है। इसको इस कारिका के माध्यम से समझा जा सकता है—

“पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः॥”

अतः चेतनाविहीन होने के कारण प्रकृति को अन्धा तथा निष्क्रिय होने के कारण पुरुष को लँगड़ा कहा गया है।

4. पातञ्जलयोगसूत्रे 'चित्तवृत्तिनिरोधः' इति कस्य परिचय उक्तः?

- (a) धर्मस्य (b) योगस्य
(c) मोक्षस्य (d) कर्मणः

Ans : (b) पातञ्जल योग सूत्र में 'चित्तवृत्तिनिरोधः' से योग का परिचय प्राप्त होता है। इसका वर्णन योगदर्शन के समाधिपाद के दूसरे (2) सूत्र में किया गया है। कहा भी गया है कि —“योगः कर्मसु कौशलम्।”

5. योगसूत्र—व्याख्याभाष्यं वर्तते—

- (a) व्यासभाष्यम् (b) महाभाष्यम्
(c) कटन्दीवृत्तिः (d) नारदसंहिता

Ans : (a) योगसूत्र—व्याख्याभाष्यं व्यासभाष्यम् वर्तते अर्थात् योगसूत्र व्याख्याभाष्य को व्यासभाष्य कहते हैं। पतञ्जलि योगदर्शन में व्यासभाष्य का वर्णन किया गया है। योगदर्शन 26 पदार्थ एवं 4 प्रमाण स्वीकार करता है। सत्कार्यवाद इनका सिद्धान्त है जो ईश्वर प्रधान है।

6. वेदान्तसारस्य ग्रन्थकृद् अस्ति—

- (a) कणादः (b) सदानन्दः
(c) सनातनः (d) सत्यानन्दः

Ans : (b) वेदान्तसार के रचयिता (कर्ता) योगीन्द्र सदानन्द हैं। इन्होंने वेदान्तसार में अनुबन्ध चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप, अपवाद, लिङ्गशरीरोत्पत्ति, पञ्चीकरण इत्यादि विषयों का वर्णन किया है। कणाद मुनि वैशेषिक दर्शन के प्रणेता हैं।

7. शाङ्कर-वेदान्तस्य प्रमुखं मतम् अस्ति—

- (a) अद्वैतम् (b) शुद्धाद्वैतम्
(c) द्वैताद्वैतम् (d) विशिष्टाद्वैतम्

Ans : (a) शाङ्कर-वेदान्तस्य प्रमुखं मतम् अद्वैतम् अस्ति। अर्थात् शाङ्कर वेदान्त का प्रमुखमत अद्वैत है। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त इन षड्दर्शनों में से वेदान्त एक प्रमुख दर्शन है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहते हैं। ये सभी दर्शन सूत्रात्मक हैं। सूत्रात्मक वेदान्त दर्शन की रचना बादरायण व्यास ने की है। इस सूत्रात्मक वेदान्त दर्शन पर द्वैतदृष्टि से अनेक व्याख्यायें लिखी गईं। अद्वैत दृष्टि से व्याख्या करने वालों में सर्वप्रमुख व्याख्याकार आचार्य शाङ्कर भगवत्पाद हैं। तभी से वेदान्तदर्शन के दो सम्प्रदाय चल पड़े, जो अद्वैतसम्प्रदाय एवं द्वैतसम्प्रदाय नाम से प्रसिद्ध हुए। उनमें से अद्वैतसम्प्रदाय को ही अद्वैत वेदान्त या शाङ्कर वेदान्त कहा जाने लगा।

8. 'अधिकारी-विषय-सम्बन्ध-प्रयोजनम्' इति चतुर्णां पारिभाषिकं नामास्ति—

- (a) अर्थचतुष्टयम् (b) अनुबन्धचतुष्टयम्
(c) निबन्धचतुष्टयम् (d) वर्णचतुष्टयम्

Ans : (b) 'अधिकारी-विषय-सम्बन्ध-प्रयोजनम्' इति चतुर्णां पारिभाषिकं अनुबन्धचतुष्टयं नामास्ति। अर्थात् अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन इन चारों का पारिभाषिक नाम अनुबन्ध चतुष्टय है। इसका वर्णन वेदान्तसार में किया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

9. अज्ञानस्य शक्तिद्वयं वेदान्ते वर्णितम्—

- (a) आवरणं विक्षेपं च (b) रूढिः प्रयोजनं च
(c) अभिधा लक्षणा च (d) चिद् अचित् च

Ans : (a) वेदान्त में आवरण एवं विक्षेप नामक अज्ञान की दो शक्तियों का वर्णन किया गया है। इनमें से प्रमाता की दृष्टि को आवृत कर आत्मा को सच्चिदानन्दस्वरूप को ढक देने वाली शक्ति को आवरण शक्ति कहते हैं। जबकि अब्रह्मस्थावरान्त समस्तनाम रूपात्मक जगत् की उत्पादक शक्ति को विक्षेप शक्ति कहते हैं।

10. अर्थसङ्ग्रहे प्रोक्तं धर्मलक्षणमस्ति—

- (a) यतो धर्मस्ततो जयः
(b) धारयते इति धर्मः
(c) चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः
(d) यतोऽभ्युदयः-निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः

Ans : (c) अर्थसङ्ग्रहे प्रोक्तं धर्मलक्षणमस्ति- चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः अर्थात् प्रेरणादायी विधिवाक्य द्वारा जो प्रतिपादित होता है, वह धर्म है। अर्थसङ्ग्रह में 'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' को धर्म का लक्षण कहा गया है।

11. न्यायदर्शने पदार्थ-संख्या कियती प्रोक्ता?

- (a) षोडश (b) सप्तदश
(c) विंशतिः (d) एकविंशतिः

Ans : (a) न्यायदर्शन में पदार्थों की संख्या षोडश अर्थात् (16) है। षोडशपदार्थ— प्रमाण – प्रमेय – संशय – प्रयोजन – दृष्टांत – सिद्धान्त – अवयव – तर्क – निर्णय – वाद – जल्प – वितण्डा – हेत्वाभास – छल – जाति – निग्रहस्थान।

12. 'अयं घटः' इति कीदृग् ज्ञानमस्ति?

- (a) निर्विकल्पम् (b) सविकल्पम्
(c) संशयितम् (d) सतर्कम्

Ans : (b) 'अयं घटः' इति सविकल्पम् ज्ञानमस्ति। अयं घटः यह सविकल्पक ज्ञान है। साक्षात्कार करने वाली प्रमा का करण प्रत्यक्ष कहलाता है और साक्षात्कार करने वाली प्रमा वह है जो इन्द्रिय से उत्पन्न होती है। सविकल्पक तथा निर्विकल्पक भेद से वह दो प्रकार की होती है।

13. तर्कभाषागता 'प्रमा' किंस्वरूपाऽस्ति?

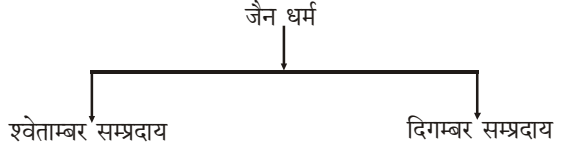
- (a) स्मृतिः (b) संशयः
(c) विपर्ययः (d) यथार्थानुभवः

Ans : (d) तर्कभाषागता 'प्रमा' यथार्थानुभवः स्वरूपाऽस्ति। तर्कभाषा में प्रमा को यथार्थानुभव कहा गया है। यथा- यथार्थानुभवः प्रमा। यथार्थ, इत्ययथार्थानां संशयविपर्यय तर्कज्ञानानां निरासः। अनुभव इति स्मृतेर्निरासः। ज्ञातविषयं ज्ञानं स्मृतिः।

14. 'स्याद्वादः' कस्य दर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति?

- (a) बौद्धदर्शनम् (b) चार्वाकदर्शनम्
(c) न्यायदर्शनम् (d) जैनदर्शनम्

Ans : (d) स्याद्वादः जैन दर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति। जैन धर्मावलम्बी अहिंसा में विश्वास करते हैं। इनका प्रमुख सिद्धान्त स्याद्वाद है। जैन धर्म कालान्तर में दो सम्प्रदायों में विभक्त होकर अलग-अलग विचार धारा में परिवर्तित हो गये ये दो सम्प्रदाय निम्न हैं—



15. बौद्धदर्शने कारण-कार्य-सिद्धान्तस्य का संज्ञाऽस्ति?

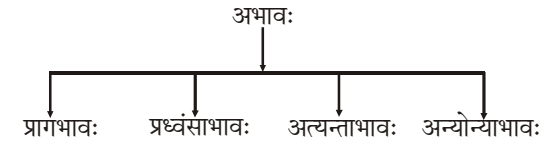
- (a) सत्कार्यवादः (b) असत्कार्यवादः
(c) प्रतीत्यसमुत्पादवादः (d) विवर्तवादः

Ans : (c) बौद्धदर्शने कारण-कार्य-सिद्धान्तस्य प्रतीत्यसमुत्पादवादः संज्ञाऽस्ति। अर्थात् बौद्ध दर्शन में कारण-कार्य सिद्धान्त की संज्ञा प्रतीत्यसमुत्पादवाद है। अर्थात् इस दर्शन को प्रतीत्यसमुत्पादवाद के नाम से भी जाना जाता है।

16. 'अभावः' कस्मिन् दर्शने 'पदार्थ' इत्युक्तः?

- (a) सांख्ये (b) योगे
(c) वेदान्ते (d) वैशेषिके

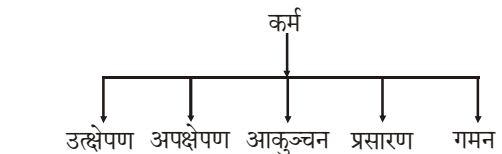
Ans : (d) अभाव को वैशेषिक दर्शन में पदार्थ कहा गया है। अन्नं भट्ट कृत तर्कसंग्रह में चतुर्विधः अभावः कहा गया है, अर्थात् अभाव चार प्रकार के हैं—



17. 'उत्क्षेपणम्' किमस्ति?

- (a) द्रव्यम् (b) गुणः
(c) कर्म (d) विशेषः

Ans : (c) उत्क्षेपणं कर्म अस्ति। अर्थात् उत्क्षेपण कर्म के अन्तर्गत आता है। पाँच प्रकार के कर्म बताये गए हैं—



18. 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिरिति शब्द' इति कथनं लभ्यते—

- (a) महाभाष्ये (b) लघुसिद्धान्तकौमुद्याम्
(c) सिद्धान्तकौमुद्याम् (d) वाक्यपदीये

Ans : (a) 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिरिति शब्द' इति कथनं महाभाष्ये प्राप्यते। यह कथन महाभाष्य में प्राप्त होता है।

19. 'पशुपशा' इत्युच्यन्ते—

- (a) पाशाः (b) पशुः
(c) वर्णाः (d) भाषा

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) 'पशपशा' वर्णाः उच्यन्ते। अर्थात् पशपशा को वर्ण कहते हैं। इसका वर्णन भाषा विज्ञान में प्राप्त होता है।

20. 'जन्मनः आ मरणात्' इति वाक्यांशे 'जन्मनः' पदे विभक्तिरस्ति-

- (a) तृतीया (b) पञ्चमी
(c) षष्ठी (d) चतुर्थी

Ans : (b) आ जन्मनः आ मरणात् इस वाक्यांश में जन्मनः पद में पञ्चमी विभक्ति है। जन्मनः का प्रातिपदिक जन्मन् है, इसके रूप कर्मवत् चलते हैं। जैसे-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जन्म	जन्मनी	जन्मानि
द्वितीया	जन्म	जन्मनी	जन्मानि
तृतीया	जन्मना	जन्मभ्याम्	जन्मभिः
चतुर्थी	जन्मने	जन्मभ्याम्	जन्मभ्यः
पञ्चमी	जन्मनः	जन्मभ्याम्	जन्मभ्यः
षष्ठी	जन्मनः	जन्मनोः	जन्मनाम्
सप्तमी	जन्मनि	जन्मनोः	जन्मसु
सम्बोधन	हे जन्म!	हे जन्मनी!	हे जन्मानि!

21. 'तुल्यास्यप्रयत्नम्' इत्यादि सूत्रं परिभाषयति-

- (a) संज्ञाम् (b) संख्याम्
(c) व्याकरणम् (d) सवर्णम्

Ans : (d) 'तुल्यास्यप्रयत्नम्' सवर्णम् होता है। अर्थात् प्रयत्न और उच्चारण स्थान जिन वर्णों के समान होते हैं उनकी सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। जबकि 'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते' शब्दाः अनेनेति व्याकरणम् है, व्याकरण वि + आङ् + कृ + ल्युट् से निर्मित होता है।

22. 'अभवत्' पदे लकारोऽस्ति-

- (a) विधिलिङ्ग (b) लुङ्
(c) लोट् (d) लङ्

Ans : (d) अभवत् 'भू' धातु के लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। इसके रूप इस प्रकार चलते हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म.पु.	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ.पु.	अभवम्	अभवाव	अभवाम्

23. 'चत्वारि शृङ्गास्त्रयोऽस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्तहस्ताऽसोऽस्य' इत्युद्धरणे रेखाङ्कितांशस्य आशयोऽस्ति-

- (a) सप्त विभक्तयः (b) सप्त लोकाः
(c) सप्त कराः (d) सप्तशवाः

Ans : (a) 'चत्वारि शृङ्गास्त्रयोऽस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्तहस्ताऽसोऽस्य' इस उदाहरण में सप्तहस्ताऽसोऽस्य से आशय सप्त विभक्तयः से है। इसका वर्णन व्याकरणमहाभाष्य में मिलता है।

24. 'स्वस्ति' योगे विभक्तिर्भवति -

- (a) द्वितीया (b) चतुर्थी
(c) पञ्चमी (d) षष्ठी

Ans : (b) स्वस्ति के योग में चतुर्थी विभक्ति का विधान किया गया है। 'नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलं वषट्' योग से नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे इन्द्राय नमः, गुरवे नमः इत्यादि।

25. पूर्वरूपस्य उदाहरणमस्ति-

- (a) गो अग्रम् (b) उपोषति
(c) रामोऽस्ति (d) गङ्गौघः

Ans : (c) रामोऽस्ति पूर्वरूप सन्धि का उदाहरण है। रामः + अस्ति था। अब 'विसर्जनीयस्य सः' सूत्र से 'स' तथा 'स' को 'रु' एवं 'अतोरोरप्लुदादप्लुते' सूत्र से 'रु' को 'उ' होकर रामो + अस्ति हुआ अब 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्व रूप होकर रामोऽस्ति बना।

26. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इति सूत्रेण सिद्धम् -

- (a) अक्षणा काणः (b) तिलेषु तैलम्
(c) हिमवतो गङ्गा (d) क्रोशं कुटिला नदी

Ans : (d) 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्रका उदाहरण क्रोशं कुटिला नदी है। जब कोई कार्य कुछ समय के लिए लगातार किया जाए तो कालवाची एवं मार्गवाची शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे- क्रोशं कुटिला नदी।

27. 'संयोग'-संज्ञासूत्रमस्ति-

- (a) अनचि च (b) संयोगे गुरुः
(c) हलोऽनन्तराः संयोगः (d) अचोऽन्त्यादि टि

Ans : (c) हलोऽनन्तराः संयोग होता है। अर्थात् जब दो हल् वर्णों के बीच किसी स्वर का व्यवधान न हो तो उन वर्णों की सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। 'अनचि च' द्वित्व विधायक सूत्र है। अचोऽन्त्यादि टि होता है। अर्थात् अचो में जो अन्तिम् अच् है उसकी टि संज्ञा होती है।

28. भाषाणां पारिवारिकं वर्गीकरणमेव मन्यते-

- (a) सामाजिकं वर्गीकरणम् (b) ऐतिहासिकं वर्गीकरणम्
(c) भौगोलिकं वर्गीकरणम् (d) मानवीयं वर्गीकरणम्

Ans : (b) भाषा में पारिवारिक वर्गीकरण को ऐतिहासिक वर्गीकरण कहते हैं। विश्व की भाषाओं के आधार पर पारिवारिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। यह वर्गीकरण अधिक मनोवैज्ञानिक सिद्ध हुआ है। रूपात्मक वर्गीकरण या आकृतिमूलक वर्गीकरण पारिवारिक वर्गीकरण है।

29. आर्यभाषा-परिवारे गणिता भाषा नास्ति-

- (a) पालिः (b) प्राकृतम्
(c) तमिलम् (d) महाराष्ट्री

Ans : (c) आर्यभाषा-परिवार में गणित भाषा के अन्तर्गत तमिल भाषा नहीं आती है। भारोपीय परिवार विश्व की भाषाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवार है। भारोपीय परिवार से आशय उन समस्त भाषाओं से है जो प्राचीन भारत यूरोपियन मूल भाषा से निकली है।

30. भाषायां ध्वनि-परिवर्तनस्य कारणं नास्ति-

- (a) शुद्धोच्चारणम् (b) स्वराघातः
(c) वर्णविपर्ययः (d) प्रयत्नलाघवम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) भाषा में ध्वनि परिवर्तन का कारण 'शुद्धोच्चारण' नहीं है जबकि स्वराघात, वर्णविपर्यय एवं प्रयत्नलाघव ध्वनि परिवर्तन के अन्तर्गत आते हैं। प्रयत्नलाघव से तात्पर्य कम परिश्रम से अधिक लाभ होना अर्थात् कुछ शब्दों या अर्थों को इस प्रकार उच्चारित करना कि उनको कम प्रयत्न करने पर अधिक स्पष्ट किया जा सके।

31. प्राकृते प्रायः वर्गानां द्वितीय-चतुर्थवर्णानां तथा शल् वर्णानां परिवर्तितो भवति-

- (a) विसर्जनीयः (b) उपधमानीयः
(c) जिह्वामूलीयः (d) हकारः

Ans : (d) प्राकृत भाषा में प्रायः द्वितीय वर्ग को चतुर्थ वर्ग में एवं शल् वर्णों का हकार में परिवर्तन होता है। इसका वर्णन भाषा विज्ञान में प्राप्त होता है।

32. 'पुहुवी' इति प्राकृत-शब्दस्य संस्कृतमूलमस्ति-

- (a) पार्थिवी (b) पृथ्वी
(c) प्रथवी (d) पृथिव्याम्

Ans : (b) प्राकृत भाषा 'पुहुवी' को संस्कृत भाषा में पृथिवी कहते हैं। अर्थात् पुहुवी का मूल पृथ्वी है।

33. 'पिअदस्सि राजा' इति उल्लेखो मिलति-

- (a) समुद्रगुप्तप्रशस्तिलेखे (b) रुद्रदामनः शिलालेखे
(c) स्कन्दगुप्तस्थाभिलेखे (d) अशोकस्थाभिलेखेषु

Ans : (d) 'पिअदस्सि राजा' यह उल्लेख अशोक के अभिलेखों में मिलता है। समुद्रगुप्त के प्रशस्तिलेख इलाहाबाद के कौशाम्बी में मिलते हैं तथा रुद्रदामन के शिलालेख गिरनार में प्राप्त होते हैं।

34. 'सूर्यः' पदस्य 'सुज्जो' इति परिवर्तने कारणमस्ति-

- (a) आगमः (b) लोपः
(c) स्थानपरिवर्तनम् (d) सरलीकरणम्

Ans : (c) 'सूर्यः' पद का 'सुज्जो' यह स्थान परिवर्तन का कारण है। सूर्यः संस्कृत भाषा है जबकि सुज्जो उसका प्राकृत रूप है।

35. 'सम्मासम्बुद्धि' इति पालिप्रयोगस्य पूर्वरूपमस्ति-

- (a) सम्यक् सम्बुद्धि (b) सम्यक्तरा बुद्धि
(c) सम्यक् सिद्धिः (d) सम्यक् सम्बोधनम्

Ans : (a) सम्मासम्बुद्धि का पालिप्रयोग के पहले का रूप सम्यक् सम्बुद्धि है। अर्थात् सम्यक् सम्बुद्धि संस्कृत रूप है जबकि सम्मासम्बुद्धि पालिभाषा में है।

36. युगाश्रित-निर्धारणे पालि-भाषाऽस्ति-

- (a) प्राचीना (b) अर्वाचीना
(c) मध्ययुगीना (d) आधुनिकी

Ans : (c) युगाश्रित-निर्धारणे पालिभाषा मध्ययुगीना भाषाऽस्ति अर्थात् युगनिर्धारण के आधार पर मध्ययुग की भाषा पालि भाषा थी।

37. 'गृह्णामि' इति लौकिकसंस्कृतस्य वैदिक्यं भवितुमर्हति-

- (a) गृहामि (b) गृह्णामि

- (c) गृहागामि (d) गृहामि

Ans : (b) 'गृह्णामि' इति लौकिकसंस्कृतस्य वैदिक्यं गृह्णामि भवितुमर्हति।

38. 'पञ्चगङ्गम्' इत्यस्मिन् पदे समासोऽस्ति-

- (a) द्विगुः (b) कर्मधारयः
(c) अव्ययीभावः (d) बहुव्रीहिः

Ans : (c) पञ्चगङ्गम् में अव्ययी भाव समास है। इसका विग्रह होगा पञ्चानां गङ्गानां समाहारः। पञ्चगङ्गम् में 'नदीभिश्च' सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ है। नदीभिश्च =जब नदीवाचक शब्दों का संख्यावाचक शब्दों से समास होता है तो वह अव्ययीभाव समास कहा जाता है। जैसे- पञ्चगङ्गम्, पञ्चनदम् इत्यादि।

39. भारतीयार्यभाषायाः वर्गानां प्रथमवर्णः पारसीकभाषायां तृतीयवर्णो भवति, कथम्?

- (a) पितृ - पितर (b) भ्रातृ - भ्रातर
(c) मातृ - मातर (d) मातृ - मादर

Ans : (d) भारतीयार्यभाषायाः वर्गानां प्रथमवर्णः पारसीकभाषायां तृतीयवर्णो मातृ - मादर भवति। अर्थात् भारतीय आर्यभाषा के वर्गों में प्रथम वर्ण, पारसीकभाषा में तृतीयवर्ण होता है वह वर्ण है- मातृ - मादर। इसका वर्णन भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र में मिलता है।

40. भाषाविज्ञाने 'यो-हे-हो-सिद्धान्तः' कस्मिन् प्रसङ्गे प्रवृत्तः?

- (a) भाषाणां वर्गीकरणे (b) वाक्यविज्ञाने
(c) ध्वनिविज्ञाने (d) भाषाया उत्पत्तौ

Ans : (d) भाषाविज्ञाने 'यो-हे-हो-सिद्धान्तः' भाषायाः उत्पत्तौ प्रसङ्गे प्रवृत्तः। अर्थात् भाषाविज्ञान में 'यो-हे-हो सिद्धान्त' भाषा की उत्पत्ति के प्रसङ्ग में आया है।

41. संस्कृतस्य भाषापरिवारः कथ्यते-

- (a) भारतीयः (b) भारोपीयः
(c) आर्य-द्रविडः (d) आर्यावर्तीयः

Ans : (b) संस्कृत का भाषा परिवार भारोपीय परिवार कहा जाता है। यह विश्व की भाषाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवार है। भारोपीय परिवार से आशय उन समस्त भाषाओं से है जो प्राचीन भारत यूरोपियन मूल भाषा से निकली है इसके मुख्य क्षेत्र भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान इत्यादि अनेक भागों में है। इस परिवार की दो मुख्य शाखाएँ हैं-(1)भारोपियन शाखा (2)भारत ईरानी शाखा।

42. संस्कृतस्य सहभाषे आस्ताम्-

- (a) उर्दू-हरयाणव्यौ (b) सिन्धी -पख्यून्वौ
(c) पालि-प्राकृते (d) डोगरी-पैशाच्यौ

Ans : (c) संस्कृतस्य सहभाषे पालि-प्राकृते आस्ताम्। संस्कृत की सह भाषा के रूप में पालि और प्राकृत भाषाएँ आती हैं। क्योंकि 'पालि-प्राकृत-संस्कृत' इनका क्रम ऐसे ही मिलता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

43. मम्मटस्य मते काव्यप्रयोजनानि सन्ति—

- (a) चत्वारि (b) पञ्च
(c) षट् (d) सप्त

Ans : (c) आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजन बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

“काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।”

44. ‘काव्यस्यात्मा स एवार्थः’ इत्यादिकारिकायाः रचयिताऽस्ति—

- (a) मम्मटः (b) कैयटः
(c) भरतमुनिः (d) आनन्दवर्धनः

Ans : (d) आनन्दवर्धन ने काव्य की आत्मा ध्वनि को माना है—
“काव्यस्यात्मा ध्वनिः। इनका विश्वप्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ ध्वन्यालोक है। इसमें इन्होंने ध्वनि के विषय में विस्तार से वर्णन किया है।

45. उपलब्धासु काव्यप्रकाशस्य प्राचीनतमा टीका मन्यते—

- (a) प्रतीपच्छाया (b) बालचिन्तानुरञ्जनी
(c) संकेत-टीका (d) दर्पण-टीका

Ans : (c) काव्यप्रकाश की उपलब्ध टीकाओं में सबसे प्राचीन टीका सङ्केत टीका मानी गई है। सङ्केत नामक टीका के कर्ता माणिक्य चन्द्र जी हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1216 तदनुसार 1160 ई० है। माणिक्यचन्द्र गुजराती जैन विद्वान् थे।

46. दशरूपककारस्य रससिद्धान्तोऽस्ति—

- (a) अभिनवगुप्तसम्मतः
(b) आनन्दवर्धनानुगतः
(c) रुद्रटानुगतः
(d) भट्टनायकानुमतः

Ans : (d) दशरूपकार धनञ्जय का रससिद्धान्त भट्टनायक के भुक्तिवाद नामक सिद्धान्त से ओत-प्रोत था। भट्टनायक के अनुसार रस की निष्पत्ति न अनुकार्य रामादि में होती है और न अनुकर्ता नट आदि में। अनुकार्य और अनुकर्ता दोनों तटस्थ हैं उदासीन हैं उनको रसानुभूति नहीं होती है। वास्तविक रसानुभूति तो सामाजिक को होती है। यही मत धनञ्जय को भी अभीष्ट है।

47. भरतस्य ‘नाट्यशास्त्रं’ परिचाययति—

- (a) नाट्यम् (b) नटस्य जीवन-चरितम्
(c) नटेश्वरम् (d) कविशिक्षाम्

Ans : (a) आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र में नाट्य का परिचय मिलता है। आचार्य भरत का नाट्यशास्त्र 36 अध्यायों में विभक्त है। इसमें नाट्य सम्बन्धित सभी विषयों का उल्लेख किया गया है।

48. ‘अतिशयिनि व्यङ्ग्ये’ परिभाषा परिचयः भवति—

- (a) रीति-कवितायाः (b) ध्वनिकाव्यस्य
(c) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य (d) अलङ्कृतकाव्यस्य

Ans : (b) ‘अतिशयिनि व्यङ्ग्ये’ इस परिभाषा से ध्वनि काव्य का परिचय होता है। क्योंकि मम्मट ने काव्य प्रकाश में ध्वनि काव्य या उत्तम काव्य के विषय में कहा है—

“इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।”

49. ध्वन्यालोके ध्वनिविरोधिनां कति पक्षाः भवन्ति?

- (a) पञ्च (b) चत्वारः
(c) अनेके (d) त्रयः

Ans : (d) ध्वन्यालोके ध्वनिविरोधिनां त्रयः पक्षाः भवन्ति। अर्थात् ध्वन्यालोक में ध्वनि विरोध के तीन पक्ष हैं। (1) अभाववादी (2) भक्तिवादी (3) अनिर्वचनीयतावादी। ‘ध्वन्यालोक’ आचार्य आनन्दवर्धन का विश्वप्रसिद्ध ध्वनि काव्य है।

50. ‘सूरिभिः कथितः’ इति प्रयोगेण ध्वनिवादिनः केषामुल्लेखं कृतवन्तः?

- (a) काव्यशास्त्रिणाम् (b) वैयाकरणानाम्
(c) वेदान्तिनाम् (d) नैयायिकानाम्

Ans : (b) ‘सूरिभिः कथितः’ इति प्रयोगेण ध्वनिवादिनः वैयाकरणानामुल्लेखं कृतवन्तः। अर्थात् सूरिभिः कथितः इस प्रयोग में ध्वनिवादियों ने वैयाकरणों का उल्लेख किया है। आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक में इसका वर्णन मिलता है।

51. रामायणे ‘सुग्रीवादिवृत्तम्’ अस्ति—

- (a) पताका (b) प्रकरी
(c) पताकास्थानकम् (d) आधिकारिकम्

Ans : (a) रामायण में ‘सुग्रीवादि’ का वृत्तान्त पताका अर्थप्रकृति के अन्तर्गत आता है। अर्थप्रकृतियाँ पाँच बताई गई हैं—
(1) बीज (2) बिन्दु (3) पताका (4) प्रकरी (5) कार्य।
रामायण 7 काण्डों में विभक्त एक विशालतम महाकाव्य है।

52. ‘उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते’ इत्यादौ पद्ये मम्मटेन को ध्वनिभेदः स्वीकृतः?

- (a) विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिः
(b) अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिः
(c) लक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनिः
(d) अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः

Ans : (d) ‘उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते’ इस पद में मम्मट को ध्वनिभेदों में से अत्यन्ततिरस्कृत वाच्यध्वनि स्वीकृत है। यथा—
अविवक्षितवाच्यो यस्तत्र वाच्यं भवेद् ध्वनौ।
अर्थान्तरे संक्रमितमत्यन्तं वा तिरस्कृतम्।।
अर्थात् अविवक्षित वाच्य ध्वनि के अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य और अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य दो भेद होते हैं।

53. मम्मटस्य मते उत्तमं काव्यमस्ति—

- (a) शब्दचित्रम् (b) ध्वनिः
(c) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (d) अर्थचित्रम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) मम्मट ने ध्वनिकाव्य को उत्तमकाव्य की श्रेणी में गिना है, उन्होंने कहा भी है-

“इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।”
मम्मट ने काव्य के तीन भेद बताये हैं-

(1) ध्वनिकाव्य या उत्तमकाव्य (2) गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य या मध्यम काव्य (3) चित्रकाव्य या अधमकाव्य।

54. ‘तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्’ इत्यंशे ‘केषुचित्’ पदेन मम्मटः केषां मतं प्रदर्शयति?

- (a) नैयायिकानाम् (b) मीमांसकानाम्
(c) वैयाकरणानाम् (d) वेदान्तिनाम्

Ans : (b) ‘तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्’ इस पद में केषुचित् पद से मम्मट ने मीमांसकों के मत को प्रकट किया है। मम्मट ने वाचक लाक्षणिक तथा व्यञ्जक नामक तीन प्रकार के शब्द को बताया है, लेकिन मीमांसकों ने ‘तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्’ कहकर कहीं-कहीं पर तात्पर्यार्थ नामक चौथा शब्द भी बताया है।

55. ‘विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्’ इति उदाहरणमस्ति-

- (a) व्यङ्ग्यसामान्यस्य (b) शब्दचित्रस्य
(c) अर्थचित्रस्य (d) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य

Ans : (c) ‘विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्’ यह उदाहरण अर्थचित्र का है। सम्पूर्ण पद्य इस प्रकार है-

‘विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात् भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयापि यम्।
ससम्प्रमेन्द्रदुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियामरावती।।’

56. ‘जातिरेव’ सङ्केतग्रहस्याऽऽधार इति मन्यन्ते-

- (a) वैयाकरणाः (b) मीमांसकाः केचन
(c) वेदान्तिनः (d) बौद्धाः

Ans : (b) ‘संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा’ इस कारिकांश में संकेतित अर्थ के विषय में 1. जात्यादि और 2. जातिरेव वा’ ये दो पक्ष दिखलाये थे। इनमें से ‘जात्यादिः’ यह पक्ष वैयाकरणों तथा उनके अनुगामी अलङ्कारशास्त्रियों का है और ‘जातिरेव वा’ यह दूसरा पक्ष मीमांसकों का है।

57. को नाम अलङ्कारो गम्यौपम्यमूलको नास्ति-

- (a) निदर्शना (b) प्रतिवस्तूपमा
(c) तुल्ययोगिता (d) विभावना

Ans : (d) विभावना अलङ्कारो गम्यौपम्यमूलको नास्ति। अलङ्कारों के वर्गीकरण में दूसरा वर्ग विरोधमूलक अलङ्कार का है। प्रकृत विभावना अलङ्कार को इसी विरोधमूलक अलङ्कार वर्ग में गिना गया है। इसका लक्षण इस प्रकार है-

“क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।”

58. शृङ्गारसाश्रया वृत्तिरस्ति-

- (a) कैशिकी (b) आरभटी
(c) भारती (d) सात्वती

Ans : (a) शृङ्गारसाश्रया वृत्तिः कैशिकी अस्ति। अर्थात् शृङ्गार रस में कैशिकी वृत्ति होती है। वृत्ति चार प्रकार की बताई गई है-

(1) कैशिकी (2) सात्वती (3) आरभटी तथा (4) भारती। शृङ्गार रस में कैशिकी, वीर रस में सात्वती तथा रौद्र और वीभत्स रस में आरभटी वृत्ति का प्रयोग होता है। इनमें से भारती नामक वृत्ति हर जगह होती है, “वृत्ति सर्वत्र भारती।”

59. ‘अवस्थाऽनुकृतिः’ इत्यनेन बोधितं भवति-

- (a) शास्त्रम् (b) काव्यम्
(c) नाट्यम् (d) साहित्यम्

Ans : (c) ‘अवस्थाऽनुकृतिः’ नाट्यम् भवति। भरतकृत नाट्यशास्त्र में नाट्य विषयक वर्णन मिलता है। इसमें 36 अध्याय हैं। नाट्यशास्त्र से ही नाटक की व्युत्पत्ति हुई है, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है।

60. ‘निर्वेदः स्थायिभावः’ कस्य मते नाट्ये नास्ति?

- (a) आनन्दवर्धनस्य (b) मम्मटस्य
(c) अभिनवगुप्तस्य (d) धनञ्जयस्य

Ans : (d) ‘निर्वेदः स्थायिभावः’ धनञ्जयस्य मते नाट्ये नास्ति। अर्थात् धनञ्जय के मत में निर्वेद नामक स्थायिभाव नाट्य में नहीं है। लेकिन आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में ‘नवमोऽपि शान्तोरसः’ कहकर नव रस बताये हैं जबकि नाट्य में आठ रस ही माने गये हैं।

61. कस्य मतेन “रसः भुज्यते”?

- (a) अभिनवगुप्तमतेन (b) मम्मटमतेन
(c) नैयायिकमतेन (d) भट्टनायकमतेन

Ans : (d) भट्टनायकमतेन “रसः भुज्यते” अर्थात् भट्टनायक के अनुसार ‘भावकत्व’ व्यापार से काव्यार्थ का ‘साधारणीकरण’ हो जाता है तब शब्द का ‘भोजकत्व’ नामक तीसरा व्यापार सामाजिकों को रस का साक्षात्कारत्मक ‘भोग’ करवाता है। यही भट्टनायक का भोजकत्व सिद्धान्त है, जो भुक्तिवाद कहलाता है।

62. ‘काव्ये रसयिता सर्वो’ इति कस्य परिचायकः?

- (a) ग्रन्थकर्तुः (b) काव्यानुकर्तुः
(c) काव्यशास्त्रज्ञस्य (d) सहृदयस्य

Ans : (d) ‘काव्ये रसयिता सर्वो’ इति सहृदयस्य परिचायकोऽस्ति। अर्थात् ‘काव्ये रसयिता सर्वो’ यह पद सहृदय का परिचायक है।

63. ध्वन्यालोके वस्तुध्वनेरुदाहरणरूपेण उदाहृतं ‘भ्रम धार्मिक विस्रब्धः’ इति पद्ये कीदृशं व्यङ्ग्यं वर्तते?

- (a) वाच्यस्य प्रतिषेधे विधिरूपम्
(b) वाच्यस्य प्रतिषेधरूपे अनुभयरूपम्
(c) वाच्यस्य विधिरूपे प्रतिषेधरूपम्
(d) वाच्यस्य विभिन्नविषयिरूपेणव्यवस्थापितम्

Ans : (c) ध्वन्यालोके वस्तुध्वनेरुदाहरणरूपेण उदाहृतं ‘भ्रम धार्मिक विस्रब्धः’ इति पद्ये वाच्यस्य विधिरूपे प्रतिषेधरूपम् व्यङ्ग्यं वर्तते।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

64. ब्रह्मणा परिकल्पिते नाट्ये निम्नाङ्कितेषु किं नास्ति?

- (a) सर्वेषां हितोपदेशजननम्
- (b) त्रैलोक्यस्य भावानुकीर्तनम्
- (c) काले विश्रान्तिजननम्
- (d) जनानां संत्रासकारकम्

Ans : (d) ब्रह्मणा परिकल्पिते नाट्ये जनानां संत्रासकारकम् नास्ति। इसका वर्णन भरत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। भरत का नाट्यशास्त्र 36 अध्यायों में विभक्त है।

65. नाट्यवेदान्तभूतमभिनयतत्त्वं कुतो गृहीतम्?

- (a) अथर्ववेदात्
- (b) ऋग्वेदात्
- (c) यजुर्वेदात्
- (d) सामवेदात्

Ans : (c) नाट्यवेदान्तभूतमभिनयतत्त्वं यजुर्वेदात् गृहीतम्। अर्थात् नाट्य वेदान्त में अभिनय को यजुर्वेद से गृहीत किया गया है।

66. नाट्ये 'उपसंहतिः' किं भवति?

- (a) कार्यावस्था
- (b) अर्थोपक्षेपकः
- (c) अर्थप्रकृतिः
- (d) सन्धिः

Ans : (d) नाट्ये 'उपसंहतिः' (निर्वहण) सन्धिः भवति। नाट्य में उपसंहति सन्धि होती है। दशरूपकार धनञ्जय ने इसका वर्णन अपने दशरूपक में किया है।

67. एकमेव पात्रं सर्वं नाट्यवस्तु प्रस्तीति-

- (a) डिमे
- (b) प्रकरणे
- (c) व्यायोगे
- (d) भाणे

Ans : (d) भाण में एक ही पात्र सम्पूर्ण नाट्यवस्तु की प्रस्तुति करता है। रूपक दश बताये गये हैं इन्हीं दश रूपकों में से भाण भी एक रूपक है।

68. दशरूपके गणितानि सन्ध्यङ्गानि सन्ति-

- (a) षष्टिः
- (b) चतुष्षष्टिः
- (c) अष्टषष्टिः
- (d) चतुःपञ्चाशत्

Ans : (b) दशरूपके गणितानि चतुष्षष्टिः सन्ध्यङ्गानि सन्ति।

69. मम्मटस्य मतेन काव्यगुणाः सन्ति-

- (a) रसस्य गौणीभूताः धर्माः
- (b) काव्यस्य जीवनधायक-तत्त्वानि
- (c) रसस्य उत्कर्षाधायक-तत्त्वानि
- (d) दोषरहित-काव्यरूपात्मकाः

Ans : (c) मम्मटस्य मतेन काव्यगुणाः रसस्य उत्कर्षाधायक-तत्त्वानि सन्ति। अर्थात् मम्मट के मत में काव्य गुण उत्कर्ष धायक तत्त्वों वाले होते हैं। मम्मट ने गुण इस प्रकार बताये हैं-

ये रसस्याङ्गिनो धर्मः शौर्यदयः इवात्मनः।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः॥

70. 'त्रयस्ते न पुनर्दश' इत्यादि काव्यगुणनिर्धारणं कृतवान्-

- (a) दण्डी
- (b) वामनः
- (c) विश्वनाथः
- (d) मम्मटः

Ans : (d) 'त्रयस्ते न पुनर्दश' इत्यादि काव्यगुणनिर्धारणं कृतवान्। यथा-

“माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।”

वामन ने शब्दगुण एवं अर्थगुणों का जो विभाग किया है, वह मम्मट को मान्य नहीं है। वे गुणों को शब्द या अर्थ का धर्म न मानकर रस का धर्म मानते हैं।

71. 'स्फोटाश्रित' - काव्यसिद्धान्तोऽस्ति-

- (a) रीतिः
- (b) रसः
- (c) अलङ्कारः
- (d) ध्वनिः

Ans : (d) 'स्फोटाश्रित' काव्यसिद्धान्तो ध्वनिः अस्ति। स्फोट आश्रित काव्य सिद्धान्त ध्वनि है। स्फोटवाद वैयाकरणों का प्रसिद्ध सिद्धान्त है। वैयाकरण शब्द को नित्य मानते हैं।

72. देवीभावं गमिता परिवारपदं कथं भजत्येषा।

न खलु परिभोगयोग्यं दैवतरूपाङ्कितं रत्नम्॥

अत्र श्लोकेऽलङ्कृतिरस्ति-

- (a) दृष्टान्तः
- (b) प्रतिवस्तूपमा
- (c) निदर्शना
- (d) दीपकम्

Ans : (b) देवीभावं गमिता परिवारपदं कथं भजत्येषा।

न खलु परिभोगयोग्यं दैवतरूपाङ्कितं रत्नम्॥

इस श्लोक में प्रतिवस्तूपमा नामक अलङ्कार है। प्रतिवस्तूपमा का लक्षण इस प्रकार है-

‘प्रतिवस्तूपमा तु सा’

सामान्यस्य द्विरेकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः।

73. विभावनाऽलङ्कारः भवति, यत्र-

- (a) कारणं विना कार्यसद्भावः
- (b) सत्यपि कारणे कार्यसद्भावः
- (c) विषयापह्नवे विषयिबोधः
- (d) विषयेऽपगते विषयिबोधः

Ans : (a) विभावनाऽलङ्कारः भवति, यत्र- कारणं विना कार्यसद्भावः। विभावना का लक्षण है-

“क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।”

74. अङ्गाङ्गिसम्बन्धेऽलङ्कृत्योः भवति अलङ्कारः-

- (a) संसृष्टिः
- (b) काव्यसृष्टिः
- (c) सङ्करः
- (d) सालङ्कारता

Ans : (c) अङ्गाङ्गिसम्बन्धेऽलङ्कृत्योः भवति सङ्कर अलङ्कारः।

सङ्कर अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार है-

“अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गित्वं तु सङ्करः।”

75. 'रूपकं तत्समारोपात्' इति कस्य कृते उक्तम्?

- (a) अलङ्कारः
- (b) नाट्यस्याऽपरं नामकरणम्
- (c) काव्यम्
- (d) काव्याभिनयः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) 'रूपकं तत्समारोपात्' इति नाट्यस्यऽपरं नामकरणस्य कृते उक्तम्। इसका वर्णन आचार्य धनञ्जय विरचित दशरूपक में प्राप्त होता है।

76. '..... ख्यातवृत्तं स्यात्' इति कस्य कृते उक्तम्?

- (a) नाटकम् (b) त्रोटकम्
(c) प्रकरणम् (d) नाट्यम्

Ans : (a) 'नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्' पञ्च सन्धि समन्वितम्। अर्थात् नाटक का वृत्तान्त प्रसिद्ध होना चाहिए तथा पञ्च सन्धियों से युक्त होना चाहिए। नाट्यशास्त्र में नाटक के लक्षण का विस्तार से वर्णन किया गया है।

77. 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः इति भरतवाक्यांशः कस्यास्ति?

- (a) भवभूतेः (b) कविकर्णपूरस्य
(c) महिमभट्टस्य (d) कालिदासस्य

Ans : (d) 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' यह भरत वाक्य महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का है। शाकुन्तलम् 7 अङ्कों का प्रसिद्ध नाटक है। शाकुन्तलम् का सम्पूर्ण भरतवाक्य इस प्रकार है—

'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वतीं श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥'

78. मेघदूते 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इत्युल्लेखतः परिचितो भवति-

- (a) विन्ध्याचलः (b) श्रीशैलः
(c) चित्रकूटम् (d) रामगिर्याश्रमः

Ans : (d) मेघदूत में 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' इस पद से रामगिरि आश्रम का परिचय होता है। प्रमादवश यक्ष अपने स्वामी कुबेर को समय पूर्व पुष्प नहीं पहुँचा सका जिससे क्रुद्ध होकर कुबेर ने यक्ष को अलकापुरी से एक वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया था। यक्ष शाप अवधि रामगिरि नामक पर्वत में बितायी थी।

79. 'वक्रः पन्था यदपि' इति सङ्केतेन का नगरी ज्ञाता भवति?

- (a) अलकापुरी (b) उज्जयिनी
(c) विदिशा (d) अयोध्या

Ans : (b) यक्ष अपनी प्रिया को मेघ से सन्देश भेजता है, उसी क्रम में वह मेघ से कहता है कि उत्तर दिशा में प्रस्थान किये हुए यद्यपि आपका मार्ग टेढ़ा हो जाएगा फिर भी उज्जयिनी नगरी का यदि दर्शन नहीं किया तो आप निश्चित रूप से ठगे हुए महसूस करेंगे।

80. मेघदूते प्रयुक्तस्य छन्दसो नामाऽस्ति-

- (a) अनुष्टुप् (b) वसन्ततिलका
(c) मन्दाक्रान्ता (d) स्रग्धरा

Ans : (c) सम्पूर्ण मेघदूत में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है। मन्दाक्रान्ता छन्द की परिभाषा इस प्रकार है—

“मन्दाक्रान्ता जलधि षडगैर्भौ नतौ ताद् गुरु चेति।”

81. किं नाम महाकाव्यं 'श्रियः पतिः' इति उल्लेखेन प्रारभ्यते?

- (a) कुमारसम्भवम् (b) शिशुपालवधम्
(c) किरातार्जुनीयम् (d) जानकीहरणम्

Ans : (b) श्री माघकृत के 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य में 'श्रियः पतिः' का उल्लेख मिलता है। शिशुपालवधम् महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। यह बृहत्त्रयी में दूसरा स्थान रखता है। इसमें श्रीकृष्ण एवं चेदिनरेश शिशुपाल का वर्णन किया गया है।

82. 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा' सूक्तिर्लभ्यते-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) शिशुपालवधे
(c) मृच्छकटिके (d) मेघदूते

Ans : (d) 'याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा' यह सूक्ति महाकवि कालिदास प्रणीत मेघदूतम् की है। इसमें कहा गया है कि अधिक गुणवान् व्यक्ति से की गई निष्फल याचना भी अधम व्यक्ति के सफल याचना से बढ़कर है।

83. 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्तं गृहीतमस्ति-

- (a) नैषधीयचरितात् (b) मृच्छकटिकात्
(c) शिशुपालवधात् (d) मेघदूतात्

Ans : (c) 'श्रेयसि केन तृप्यते' सूक्ति शिशुपालवधम् महाकाव्य की है। इस महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। इसके प्रथम सर्ग में स्वर्ग से नारद का आगमन होता है तथा वह भगवान् श्रीकृष्ण को बताते हैं कि किस प्रकार शिशुपाल जनता को त्रिषित रहा है अतः आप उसका वध करें।

84. कालिदासकृत-प्रभातवर्णन-श्लोकांशे 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इत्यादौ प्रयुक्तोऽलङ्कारोऽस्ति-

- (a) उपमा (b) अतिशयोक्तिः
(c) उत्प्रेक्षा (d) अप्रस्तुतप्रशंसा

Ans : (c) 'लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' इसमें प्रयुक्त अलङ्कार उत्प्रेक्षा है। उत्प्रेक्षा अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार है—

“सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।”

85. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति-

- (a) पृथ्वी (b) जलम्
(c) अग्निः (d) वायुः

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति जलम्। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नान्दी पाठ में वर्णित आद्या सृष्टि से तात्पर्य जल से है। यथा—

“या सृष्टिः सृष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री।”

86. 'इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रमुदुःसहानि' इति सूक्तमस्ति-

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

- (a) कालिदासस्य (b) भवभूतेः
(c) बाणभट्टस्य (d) श्रीहर्षस्य

Ans : (a) 'इष्टप्रवासजनिता न्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुः सहानि'। यह सूक्ति महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क की है। इसका वक्ता अनसूया है।

87. शिशुपालवधस्योपजीव्यमस्ति-

- (a) रामायणम् (b) महाभारतम्
(c) पुराणम् (d) गीता

Ans : (b) शिशुपालवधम् महाकाव्य का उपजीव्य महाभारत है। इसका कथानक महाभारत के सभापर्व से लिया गया है। शिशुपालवधम् महाकाव्य में 20 सर्ग हैं रामायण 7 काण्डों में विभक्त विश्व का प्रसिद्ध महाकाव्य है। पुराणों की संख्या 18 है। गीता 18 अध्यायों में विभक्त महाभारत के भीष्मपर्व से अवतरित है।

88. शिशुपालवधे सर्गाणां संख्याऽस्ति-

- (a) अष्टादश (b) विंशतिः
(c) द्वाविंशतिः (d) पञ्चविंशतिः

Ans : (b) शिशुपालवधम् महाकाव्य में 20 सर्ग हैं। यह बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है। इसके नायक श्रीकृष्ण तथा प्रतिनायक चेदिनरेश शिशुपाल हैं। यह महाभारत के सभापर्व की घटना की ओर संकेत करता है। अपने तिरस्कार से आहत श्रीकृष्ण शिशुपाल का वध करते हैं।

89. नैषधे 'निपीय यस्य क्षितिर्क्षिणः कथाम्' इति उल्लेखेन वर्णितोऽस्ति-

- (a) इन्द्रदेवः (b) भीमोत्तपः
(c) राजानलः (d) श्रीकृष्णः

Ans : (c) नैषधे 'निपीय यस्य क्षितिर्क्षिणः कथाम्' इति राजानलः उल्लेखेन वर्णितोऽस्ति। नैषधीयचरितम् महाकाव्य 22 सर्गों में विभक्त बृहत्त्रयी का एक प्रमुख महाकाव्य ग्रन्थ है।

90. 'चित्रदर्शनम्' इत्याख्यः अङ्कः कस्मिन् नाटके वर्तते?

- (a) मृच्छकटिके
(b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) मालविकाग्निमित्रे
(d) उत्तररामचरिते

Ans : (d) चित्रदर्शन नामक अङ्क महाकवि भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक में है। इसमें सात अङ्क हैं, जो इस प्रकार हैं—
(1) चित्रवीथीदर्शन (2) पञ्चवटीप्रवेश (3) छायांक
(4) कौशल्याजनकयोग (5) कुमारविक्रम (6) कुमारप्रत्यभिज्ञान
(7) गर्भांक या सम्मेलन।

91. 'दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा' संवादेन भवभूतिः परिचाययति-

- (a) जननायकम् (b) कुलगुरुम्
(c) श्रीरामम् (d) कलियुगम्

Ans : (c) 'दिष्ट्याऽपरिहीनधर्मः खलु स राजा' इस संवाद के माध्यम से भवभूति ने राम का परिचय दिया है। यह कथन सीता का है। सीता राम के प्रजा विषयक सेवा को जानकर कहती है कि सौभाग्य से अभी भी राजा (राम) धर्म से हीन नहीं हुए हैं।

92. 'वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे' उत्तररामचरिते कस्य संवादोऽस्ति?

- (a) रामस्य (b) अष्टावक्रस्य
(c) आत्रेय्याः (d) वनदेवतायाः

Ans : (c) 'वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे' उत्तररामचरितम् में यह संवाद आत्रेयी का है। इसका वर्णन प्रथम अङ्क में है। आत्रेयी कहती हैं कि गुरु जिस प्रकार बुद्धिमान को विद्या देते हैं उसी प्रकार मूर्ख को भी विद्या देते हैं लेकिन दोनों में विद्या का प्रभाव अलग-अलग होता है।

93. 'क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित्तुलसीवनानि छिन्दन्ते, क्वचिद्द्वारा अपह्रियन्ते, क्वचिद्धनानि लुण्ठयन्ते' गद्यांश कुतो गृहीतः?

- (a) कादम्बरीतः (b) हर्षचरितात्
(c) शिवराजविजयात् (d) वासवदत्तायाः

Ans : (c) कहीं पर मन्दिर तोड़े जा रहे हैं, कहीं पर तुलसीवन नष्ट किये जा रहे हैं, कहीं पर स्त्रियों का अपहरण किया जा रहा है तथा कहीं पर धन लूटा जा रहा है। प्रस्तुत गद्यांश पं.अम्बिकादत्त व्यास प्रणीत 'शिवराजविजयम्' से गृहीत है।

94. मृच्छकटिके प्रथमोऽङ्कः नामतो ज्ञायते-

- (a) द्यूतकर-संवाहकः (b) अलङ्कारन्यासः
(c) मदनिकाशर्विलकः (d) व्यवहारः

Ans : (b) शूद्रक रचित मृच्छकटिकम् 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। इसके नायक सार्थवाह चारुदत्त एवं नायिका गणिका वसन्तसेना है। चारुदत्त के पुत्र का नाम रोहसेन एवं पत्नी का नाम धूता है। इसके प्रथम अङ्क का नाम अलङ्कारन्यास है। दूसरा अङ्क द्यूतकर-संवाहक। तीसरा सन्धिच्छेद चौथा मदनिका शर्विलक एवं नवाँ व्यवहार नामक अङ्क हैं।

95. मृच्छकटिके शर्विलकोऽस्ति-

- (a) नायकः (b) पताकानायकः
(c) खलनायकः (d) लोकनायकः

Ans : (b) मृच्छकटिकम् में शर्विलक पताकानायक (उपनायक) है। शर्विलक एक गुणग्राही पात्र है। वह चारुदत्त के घर से चुराये हुए गहनों को भी अपनी प्रेयसी मदनिका के कहने पर देने को तैयार हो जाता है।

96. 'यातोऽस्मि पद् मनयने समयो ममैषः' रत्नावल्याः संवाद-श्लोकेन कः/का सम्बोध्यते?

- (a) महाराज्ञी (b) विदूषकः
(c) उदयनः (d) सागरिका

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (d) 'यातोऽस्मि पद् मनयने समयो ममैषः' रत्नावल्याःसंवाद-श्लोकेन सागरिका सम्बोध्यते। रत्नावली 4 अङ्कों की नाटिका है जिसके कर्ता राजा हर्षवर्धन हैं।

97. 'सागरिका' नायिकाऽस्ति-

- (a) मृच्छकटिके (b) कादम्बर्याम्
(c) रत्नावल्याम् (d) शिवराजविजये

Ans : (c) रत्नावली 4 अङ्कों की नाटिका है, जिसमें राजा उदयन तथा सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) के प्रेम एवं विवाह का कथानन सम्पूर्ण नाटिका में शृङ्गार रस मुख्य है।

98. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' इति श्लोकः लभ्यते-

- (a) मालविकाग्निमित्रे (b) उत्तररामचरिते
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मेघदूते

Ans : (c) 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' यह श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का है। इसमें अनसूया कहती है कि विरह रूपी आशाबन्धन बड़े से बड़े दुःख को सहन करवा देता है।

99. कादम्बर्याः तिर्यक्पात्रं वैशम्पायनः कस्मिन्नाश्रमे लब्धवानाश्रयम्?

- (a) रामगिर्याश्रमे (b) जाबाल्याश्रमे
(c) अगस्त्याश्रमे (d) चित्रकूटाश्रमे

Ans : (b) कादम्बरी में वैशम्पायन शुक को जाबालि आश्रम में आश्रय प्राप्त होता है। जब वैशम्पायन नामक शुक प्यास से व्याकुल होकर जल की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था तभी हारीत नामक ऋषि पुत्र की दृष्टि उस पर पड़ी और वह उसे जाबालि आश्रम ले आया।

100. शाकुन्तलकथायाः वास्तवमुपजीव्यमस्ति-

- (a) ऋग्वेदः (b) सामवेदः
(c) धर्मशास्त्रम् (d) महाभारतम्

Ans : (d) शाकुन्तल की कथा का वास्तविक उपजीव्य महाभारत है। महाभारत के शाकुन्तलोपाख्यान में शाकुन्तलम् की कथा मिलती है।

101. कादम्बर्याः 'शूद्रक' ऐतिहासिकं पात्रमस्ति न वा? निश्चीयताम्-

- (a) ऐतिहासिकः (b) कल्पितः
(c) उक्तमुभयमपि न (d) अनिर्णयः

Ans : (b) कादम्बरी में राजा शूद्रक ऐतिहासिक पात्र है या नहीं इस विषय को लेकर विद्वानों में मतभेद है लेकिन बहुतायत विद्वान् शूद्रक को ऐतिहासिक न मानकर कल्पित मानते हैं। अतः इस दृष्टि से विकल्प (b) सही है।

102. 'असज्जनात्कस्य भयं न जायते' इति सूक्तेराकरोऽस्ति-

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(b) उत्तररामचरितम्

- (c) कादम्बरी
(d) नाट्यशास्त्र

Ans : (c) 'असज्जनात्कस्य भयं न जायते' यह सूक्ति कादम्बरी कथामुखम् की है। कादम्बरी की शुरुआत में 20 श्लोक मिलते हैं। यह सूक्ति सज्जन दुर्जन निन्दा का है।

103. करुणोऽङ्गीरसोऽस्ति-

- (a) रत्नावल्याम् (b) मृच्छकटिके
(c) उत्तररामचरिते (d) शिवराजविजये

Ans : (c) करुण रस उत्तररामचरितम् में अङ्गीरस है। उत्तररामचरितम् नाटक महाकवि भवभूति की कृति है इसमें 7 अङ्क हैं। भवभूति वास्तव में कारुणिक कवि ही हैं तथा वो करुण रस के अलावा और किसी रस को मानते भी नहीं हैं। यथा-

'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्।' (उत्तररामचरितम् 3/47)

104. 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' मतं कस्यऽस्ति?

- (a) श्रीहर्षस्य (b) भवभूतेः
(c) विशाखदत्तस्य (d) चाणक्यस्य

Ans : (b) 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' यह मत भवभूति का है। उत्तररामचरितम् के प्रथमाङ्क में भवभूति राम के माध्यम से कहते हैं कि - 'लौकिक सज्जनों की वाणी तो अर्थ का अनुसरण करती है, परन्तु प्राचीन महर्षियों की वाणी के पीछे अर्थ स्वयं चलता है। यथा-

“लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।”

105. धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्त्वचित्॥

अत्र कस्य परिचयः उक्तः?

- (a) गीतायाः (b) रामायणस्य
(c) वेदस्य (d) महाभारतस्य

Ans : (d) “धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्त्वचित्॥”

इस पद्य के माध्यम से महाभारत का परिचय प्राप्त होता है।

106. कादम्बर्याः वास्तविकी कथा केनोक्ताऽऽसीत् -

- (a) वैशम्पायनेन (b) हारीतेन
(c) जाबालिना (d) तारापीडेन

Ans : (a) कादम्बरी की वास्तविक कथा वैशम्पायन के द्वारा कही गयी है। कादम्बरी में तीन जन्मों की कहानी है।

107. शिवराजविजयस्य काव्यविधाऽस्ति-

- (a) अलङ्कारशास्त्रम् (b) उपन्यासः
(c) महाकाव्यम् (d) जन्तुकथासाहित्यम्

Ans : (b) शिवराजविजय उपन्यास के अन्तर्गत परिगणित है। पं० अम्बिका दत्त व्यास द्वारा रचित शिवराजविजय में 12 निःश्वास हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

108. ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते-

- (a) सुतपा (b) पुरोहितः
(c) यज्ञः (d) सर्वकल्याणकः

Ans : (b) ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते-पुरोहितः। ऋग्वेद के अग्नि सूक्त में अग्नि को पुरोहित कहा गया है। ऋग्वेद में अग्नि दूसरा सबसे प्रभावशाली देवता है। इसकी 200 सूक्तों में स्तुति की गयी है।

109. 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव'

इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते?

- (a) अग्निः (b) हिरण्यगर्भः
(c) वरुणः (d) सूर्यः

Ans : (a) 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव' यह मन्त्रांश अग्नि सूक्त में प्राप्त होता है।

110. 'को अद्वा वेद क इह प्रवोचत' इत्यादयः प्रश्नाः कस्मिन् सूक्ते उल्थापिताः?

- (a) अग्निसूक्ते (b) सृष्टिसूक्ते
(c) अक्षसूक्ते (d) नासदीयसूक्ते

Ans : (d) 'को अद्वा वेद क इह प्रवोचत' इत्यादयः प्रश्नाः नासदीय सूक्ते उल्थापिताः।

111. 'कामस्तदग्रे' इति कस्य सूक्तस्य मन्त्रांशोऽस्ति?

- (a) हिरण्यगर्भः (b) नासदीयः
(c) पुरुषः (d) वागम्भृणी

Ans : (b) 'कामस्तदग्रे' इति नासदीय सूक्तस्य मन्त्रांशोऽस्ति। इसका वर्णन ऋक्सूक्तसंग्रह में प्राप्त होता है।

112. 'भूतस्य जातः पतिः' इति कस्य देवस्य परिचयोऽस्ति?

- (a) पुरुषस्य (b) इन्द्रस्य
(c) सूर्यस्य (d) हिरण्यगर्भस्य

Ans : (d) 'भूतस्य जातः पतिः' इति हिरण्यगर्भस्य देवस्य परिचयोऽस्ति। 'भूतस्य जातः पतिः' से हिरण्यगर्भ देवता का परिचय प्राप्त होता है। इसके विषय में वेदचयनम् में विस्तार से वर्णन किया गया है।

113. 'शिवसङ्कल्प' सूक्तस्याऽऽकरवेदोऽस्ति-

- (a) शुक्ल यजुर्वेदः (b) सामवेदः
(c) ऋग्वेदः (d) अथर्ववेदः

Ans : (a) 'शिवसङ्कल्प' सूक्त शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है। यजुर्वेद की दो शाखायें हैं-(1) कृष्ण यजुर्वेद (2) शुक्लयजुर्वेद। 'शिवसङ्कल्प' सूत्र शुक्लयजुर्वेद का विषय है।

114. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' इति सूक्तिः लभ्यते-

- (a) कठोपनिषदि (b) शतपथब्राह्मणे
(c) ईशावास्योपनिषदि (d) तैत्तिरीयारण्यके

Ans : (c) 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' यह सूक्ति ईशावास्योपनिषद् में है। ईशावास्योपनिषद् शुक्लयजुर्वेद संहिता का 40वाँ अध्याय है। इसमें 18 पद्यात्मक मन्त्र हैं तथा सबसे प्राचीन उपनिषद् है।

115. 'शतं पन्थानो यत्र' इत्युक्त्या यस्य ग्रन्थस्य परिचयोभवति सोऽस्ति-

- (a) 'ऐतरेय'-ब्राह्मणः (b) 'गोपथ'-ब्राह्मणः
(c) 'तैत्तिरीय'-ब्राह्मणः (d) 'शतपथ'-ब्राह्मणः

Ans : (d) 'शतं पन्थानो यत्र' इत्युक्त्या शतपथ ब्राह्मणस्य परिचयो भवति। शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण है। इसमें 17 काण्ड, 104 अध्याय तथा 6806 कण्डिकाएँ हैं। इस ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय ही बृहदारण्यकोपनिषद् कहलाते हैं।

116. पाणिनीय-शिक्षायां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि सन्ति

- (a) पञ्च (b) सप्त
(c) अष्ट (d) त्रीणि

Ans : (c) पाणिनीय-शिक्षायां वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि अष्ट सन्ति। अर्थात् पाणिनीय शिक्षा में वर्णों के आठ उच्चारण स्थान बताये गये हैं। पाणिनीय शिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षा के अन्तर्गत परिगणित है। पाणिनीय शिक्षा में 63-64 वर्ण होते हैं।

117. 'नचिकेतस' - अग्नेः उपदेष्टाऽभवत्-

- (a) यमः (b) ब्रह्मा
(c) विश्वेदेवाः (d) बृहस्पतिः

Ans : (a) 'नचिकेतस' - अग्नेः उपदेष्टा-यमः अभवत्। नचिकेता ने यम से तीन वरदान प्राप्त किये थे। अतः नचिकेता को अग्नि के विषय में यम ने उपदेशित किया था।

118. 'साम्नः' व्यावहारिकोऽर्थोऽस्ति-

- (a) वाचनम् (b) सान्त्वनम्
(c) गायनम् (d) संस्कारः

Ans : (c) 'साम्नः' व्यावहारिकोऽर्थोऽस्ति-गायनम्। अर्थात् साम्नः का व्यावहारिक अर्थ गायन है।

119. 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' इति कुत उद्धृतम् ?

- (a) ऋक्संप्रतिशाख्यतः (b) पाणिनीयशिक्षतः
(c) सिद्धान्तकौमुदीतः (d) निरुक्ततः

Ans : (a) 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' इति ऋक्संप्रतिशाख्यतः उद्धृतम्। अर्थात् 'सर्वः शेषो व्यञ्जनान्येव' यह ऋक्संप्रतिशाख्य से उद्धृत है।

120. वृत्रस्य 'मेघ' इत्यर्थः केषां पक्षतः कृतः?

- (a) मीमांसकानाम् (b) वैयाकरणानाम्
(c) नैरुक्तानाम् (d) बौद्धानाम्

Ans : (c) वृत्रस्य 'मेघ' इत्यर्थः नैरुक्तानाम् पक्षतः कृतः। वृत्र का मेघ यह अर्थ निरुक्त में है। इसका वर्णन निरुक्त में विस्तार पूर्वक किया गया है।

उच्चतर शिक्षा आयोग
असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा, जनवरी-2015
संस्कृत

व्याख्या सहित प्रश्न-पत्र का हल

1. देवतानाम् आकारः कतिविधः?

- (a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) दशविधः (d) द्वादशविधः

Ans : (a) देवतानाम् आकारः त्रिविधः। अर्थात् देवताओं के त्रिविध रूप हैं।

(1) पृथ्वी स्थानीय—अग्नि

(2) द्युस्थानीय—विष्णु

(3) अन्तरिक्ष स्थानीय—इन्द्र

2. अग्निसूक्तस्य (1.1) ऋषिः कः?

- (a) हिरण्यस्तूपः (b) दीर्घतमाः
(c) मधुच्छन्दाः (d) विश्वामित्रः

Ans : (c) मधुच्छन्दाः अग्निसूक्तस्य ऋषिः। अग्निसूक्त के ऋषि मधुच्छन्दा हैं। ऋग्वेद में 200 सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गई है। ऋग्वेदीय देवताओं में अग्नि दूसरा सबसे प्रभावशाली देवता है।

3. नासदीयसूक्तस्य का देवता?

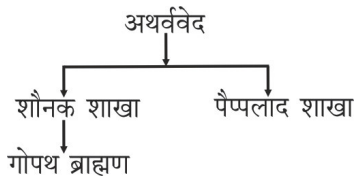
- (a) सूर्यः (b) आपः
(c) परमात्मा (d) परमेष्ठी

Ans : (c) नासदीयसूक्तस्य देवता परमात्मा अस्ति। नासदीय सूक्त का देवता परमात्मा है। इसका वर्णन ऋक्सूक्त संग्रह में प्राप्त होता है।

4. गोपथब्राह्मणस्य सम्बन्धः केन वेदेन अस्ति?

- (a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (d) गोपथब्राह्मण अथर्ववेद से सम्बन्धित है। अथर्ववेद की दो शाखाएं हैं-



5. दर्शपूर्णमासयज्ञे प्रथमा इष्टिः का?

- (a) दर्शेष्टिः (b) पौर्णमासेष्टिः
(c) पवमानेष्टिः (d) अवभृथेष्टिः

Ans : (b) दर्शपूर्णमासे प्रथमा इष्टिः पौर्णमासेष्टिः।

6. 'चरैवेति चरैवेति' उपदेशः कुत्र लभ्यते?

- (a) शुनःशोपाख्याने (b) यम-यमी-संवादे
(c) सरमा-पणि-संवादे (d) वाङ्मनससंवादे

Ans : (a) 'चरैवेति चरैवेति' उपदेशः शुनः शोपाख्याने लभ्यते अर्थात् 'चरैवेति चरैवेति' इसका वर्णन शुनः शोपाख्यान में प्राप्त होता है।

7. स्वरितात् परोऽनुदात्तः किम् उच्यते?

- (a) उदात्तः (b) प्रचयः
(c) जात्यस्वरितः (d) अनुदात्ततरः

Ans : (b) 'स्वरितात् परोऽनुदात्तः प्रचयः उच्यते' स्वरित से बाद आने वाले अनुदात्त को प्रचय कहते हैं।

8. 'दशतयी' पदेन कस्य बोधो जायते?

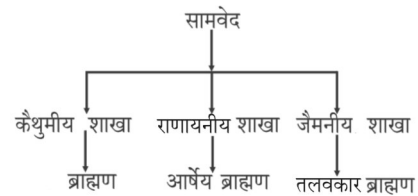
- (a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (a) 'दशतयी' पदेन ऋग्वेदस्य बोधः जायते। ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं इसी कारण इसे दशतयी नाम से भी जाना जाता है। इसमें 10 मण्डल, 1028 सूक्त एवं $10580\frac{1}{4}$ मन्त्र हैं।

9. केनोपनिषद् केन ब्राह्मणग्रन्थेन सम्बद्धः?

- (a) शतपथब्राह्मणेन (b) पञ्चविंशब्राह्मणेन
(c) तलवकारब्राह्मणेन (d) गोपथब्राह्मणेन

Ans : (c) केनोपनिषद् तलवकार ब्राह्मण से सम्बन्धित है। सामवेद की तीन शाखायें हैं। तलवकार ब्राह्मण का सम्बन्ध जैमिनीय शाखा से है, यथा-



10. 'श्रुतं मे गोपाय' श्रुतिवाक्यं कुतः गृहीतम्?

- (a) कठोपनिषदः (b) तैत्तिरीयोपनिषदः
(c) केनोपनिषदः (d) छान्दोग्योपनिषदः

Ans : (b) 'श्रुतं मे गोपाय' श्रुतिवाक्यं तैत्तिरीयोपनिषद् में प्राप्त होता है। तैत्तिरीयोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित उपनिषद् है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

11. 'शुल्बसूत्र' केन वेदाङ्गेन सम्बद्धम्?

- (a) शिक्षा (b) कल्पः
(c) व्याकरणम् (d) छन्दः

Ans : (b) 'शुल्बसूत्र' कल्पवेदाङ्गेन सम्बन्धोऽस्ति। शुल्ब सूत्र कल्पवेदाङ्ग से सम्बन्धित है। षड् वेदाङ्गों में कल्प का विशेष स्थान है।

12. वेदाङ्गेषु किं व्याकरणस्य पूरकं भवति?

- (a) शिक्षा (b) कल्पः
(c) निरुक्तम् (d) छन्दः

Ans : (c) वेदाङ्गेषु निरुक्तम् व्याकरणस्य पूरकं भवति। अर्थात् वेदाङ्गों में निरुक्त व्याकरण का पूरक है। क्योंकि यास्क रचित निरुक्त में व्याकरण सम्बन्धी सभी विषयों का वर्णन है।

13. निरुक्ते 'षड्भावविकारः' कस्य सिद्धान्तः?

- (a) कौत्सस्य (b) शाकपूणेः
(c) वार्षाणिकः (d) गार्ग्यस्य

Ans : (c) निरुक्ते 'षड्भावविकारः' वार्षाणिकः सिद्धान्तः। निरुक्त में षड्भावविकार का सिद्धान्त वार्षाणिक है। षड्भावविकार निम्न हैं— (1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति।

14. कस्य नैरुक्ताचार्यस्य मते उपसर्गाः वाचकाः न अपि द्योतकाः भवन्ति?

- (a) शाकटायनस्य (b) औदुम्बरायणस्य
(c) शाकपूणेः (d) तैटिकेः

Ans : (a) शाकटायनस्य नैरुक्ताचार्यस्य मते उपसर्गाः वाचकाः न अपि द्योतकाः भवन्ति। अर्थात् शाकटायन निरुक्ताचार्य के मत में उपसर्ग वाचक नहीं बल्कि द्योतक होते हैं। इसका वर्णन निरुक्त के प्रथम अध्याय में है।

15. उपमार्थकनिपातः कतिविधः?

- (a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (c) उपमार्थक निपातः चतुर्विधः सन्ति। अर्थात् उपमार्थक निपात चार प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं— इव न चिद् नु।

16. आचार्यशब्दनिर्वचनेषु कतमं निर्वचनं निरुक्तसम्मतः नास्ति?

- (a) आचारं ग्रहणाति (b) आचारं ग्राह्यति
(c) आचिनोत्यर्थान् (d) आचिनोति बुद्धिम्

Ans : (a) आचार्यशब्दनिर्वचनेषु आचारं ग्रहणाति निर्वचनं निरुक्तसम्मतः नास्ति।

17. 'सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न भवन्ति' इति कस्य मतम्?

- (a) शाकटायनस्य (b) कौत्सस्य
(c) शाकपूणेः (d) गार्ग्यस्य

Ans : (d) 'सर्वाणि नामानि आख्यातजानि न भवन्ति' इति गार्ग्यस्य मतमस्ति।

18. निरुक्तकारः 'समुद्र' पदस्य कतिविधं निर्वचनं करोति?

- (a) त्रिविधम् (b) चतुर्विधम्
(c) पञ्चविधम् (d) सप्तविधम्

Ans : (c) निरुक्तकारः 'समुद्र' पदस्य पञ्चविधम् निर्वचनं करोति। अर्थात् निरुक्तकार यास्क 'समुद्र' पद का पाँच प्रकार से निर्वचन करते हैं।

19. सांख्यदर्शने निःश्रेयस साधनं किम्?

- (a) ब्रह्मज्ञानम् (b) भक्तिः
(c) तत्त्वज्ञानम् (d) चित्तशुद्धिः

Ans : (c) सांख्यदर्शने निःश्रेयस साधनं तत्त्वज्ञानमस्ति। अर्थात् सांख्यदर्शन में निःश्रेयस साधन तत्त्वज्ञान होता है।

20. पृथिव्यां किं नास्ति?

- (a) सत्त्वम् (b) रसगुणः
(c) शब्दगुणः (d) प्रकृतित्वम्

Ans : (c) पृथिव्यां शब्दगुणः नास्ति। पृथिवी में शब्दगुण नहीं होता है क्योंकि शब्दगुणकं आकाश होता है। पृथ्वी में प्रकृतित्वम्, रसगुण एवं सत्त्वम् पाया जाता है।

21. कामशास्त्रे कलानां का संख्या?

- (a) चतुष्षष्टिः (b) सप्ततिः
(c) षडशीतिः (d) द्वासप्ततिः

Ans : (a) कामशास्त्रे कलानां चतुष्षष्टिः संख्या वर्तते। अर्थात् कामशास्त्र में (64) कलाओं का वर्णन किया गया है।

22. भूतादिशब्देन किमुच्यते?

- (a) तमःप्रधानोऽहङ्कारः (b) शुद्धोऽहङ्कारः
(c) सत्त्वप्रधानोऽहङ्कारः (d) रजःप्रधानोऽहङ्कारः

Ans : (a) भूतादिशब्देन तमःप्रधानोऽहङ्कारः उच्यते। अर्थात् भूतादि शब्द के द्वारा तमःप्रधान अहङ्कार होता है। आकाशादि पञ्चमहाभूतों के सम्मिलित सत्त्वगुण से अन्तःकरण की उत्पत्ति होती है। इसलिए उसमें प्रकाशत्व धर्म रहता है। अतः वह प्रकाशक है तथा ज्ञान का साधक है। इसलिए उसे तेजोमय (वासनामय) कहते हैं।

23. वेदान्तसारनिर्दिष्टेषु सूक्ष्मशरीरावयवेषु कस्यैकस्य गणना नास्ति?

- (a) आकाशस्य (b) बुद्धेः
(c) मनसः (d) वायुपञ्चकस्य

Ans : (a) वेदान्तसार में निर्दिष्ट सूक्ष्मशरीर के अवयवों में से आकाश की गणना नहीं होती है, क्योंकि आकाशादि पञ्चमहाभूतों के अन्तर्गत आता है। सूक्ष्म शरीर के अन्तर्गत— पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चवायु तथा बुद्धि एवं मन आते हैं।

24. अज्ञानसमष्ट्युपहितस्य चैतन्यस्य एका का संज्ञा नास्ति?

- (a) सर्वेश्वरः (b) प्राज्ञः
(c) अव्यक्तः (d) अन्तर्यामी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (b) अज्ञान की समष्टि से उपहित चैतन्य की प्राज्ञः नामक संज्ञा नहीं होती है। जैसे-शक्तिद्वयवदज्ञानोपहितं चैतन्यं स्वप्रधानतया निमित्तं स्वोपाधिप्रधानतयोपादानं च भवति।

25. क एको जीवन्मुक्तस्य पर्यायः?

- (a) तितिक्षुः (b) युञ्जानः
(c) ब्रह्मनिष्ठः (d) साधकः

Ans : (c) जीवन्मुक्त का पर्याय ब्रह्मनिष्ठ है जैसे कि वेदान्तसार में कहा गया है-

जीवन्मुक्तो नाम स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञानेन तद्ज्ञानवाधनद्वारा स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मणि ब्रह्मनिष्ठः।

26. अभावपदार्थः कतिविधः?

- (a) त्रिविधः (b) द्विविधः
(c) पञ्चविधः (d) चतुर्विधः

Ans : (d) अभावः चतुर्विधः अर्थात् अभाव नामक पदार्थ चार प्रकार का होता है-

- (1) प्रागभाव (2) प्रध्वंसाभाव (3) अत्यन्ताभाव तथा
(4) अन्योन्याभाव।

27. सर्वनामस्थानसंज्ञकाः प्रत्ययाः कति?

- (a) सप्त (b) चत्वारः
(c) नव (d) पञ्च

Ans : (d) सर्वनाम सञ्ज्ञक प्रत्यय 5 होते हैं-

- (1)सु (2)औ (3)जस् (4) अम् और (5) औट्।

28. 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' इत्यत्र तृतीयाविभक्तिः कं द्योतयति?

- (a) साफल्यम् (b) हेतुम्
(c) लक्षणम् (d) अत्यन्तसंयोगम्

Ans : (a) 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' इत्यत्र तृतीया विभक्तिः साफल्यम् द्योतयति। 'क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः' वाक्य में 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से क्रोशेन में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

29. कर्मादीनां सम्बन्धमात्रविवक्षायां का विभक्तिर्भवति?

- (a) षष्ठी (b) द्वितीया
(c) चतुर्थी (d) सप्तमी

Ans : (a) 'षष्ठी शेषे' सूत्र से कर्म आदि कारकों में सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।

30. 'अधिगोपम्' इत्यत्र अधिपदांशः कस्मिन्नर्थेऽस्ति?

- (a) समृद्धर्थे (b) अभावार्ये
(c) अत्ययार्थे (d) विभक्त्यर्थे

Ans : (d) 'अधिगोपम्' में अधि पदांश विभक्त्यर्थे अर्थात् विभक्ति अर्थ में प्रयुक्त है। क्योंकि अधिगोपम् में अव्ययीभाव समास हुआ है तथा इसका लौकिक विग्रह 'गोपि इति' होगा तथा अलौकिक विग्रह गोपा डि अधि होगा।

31. 'अवङ्' आदेशः कस्य स्थाने भवति?

- (a) आद्यस्य (b) सर्वस्य
(c) अन्त्यस्य (d) मध्यस्य

Ans : (c) 'अवङ्' आदेशः अन्त्य वर्ण के स्थान पर होता है क्योंकि 'अवङ्' में ङ् कार की 'हलन्त्यम्' से इत्सञ्ज्ञा होती है और 'तस्य लोप' सूत्र से लोप होकर केवल 'अव' बचता है। ङ् की इत्सञ्ज्ञा होने के कारण यह ङित है अतः अन्त्य वर्ण के स्थान पर आदेश होता है।

32. 'क्तक्तवतू' इत्यत्र का विभक्तिः?

- (a) प्रथमैकवचनम् (b) प्रथमाद्विवचनम्
(c) द्वितीयाद्विवचनम् (d) षष्ठीद्विवचनम्

Ans : (b) 'क्तक्तवतू' प्रत्यय की 'निष्ठा' सञ्ज्ञा होती है तथा यह भूतकाल में प्रयुक्त होता है। 'क्तक्तवतू' में द्वन्द्व समास है इसका विग्रह 'क्त च क्तवतु च =क्तक्तवतू' होगा अतः 'क्तक्तवतू' में प्रथमा विभक्ति द्विवचन का प्रयोग हुआ है।

33. किं पदं डीष्प्रत्ययान्तम्?

- (a) नदी (b) गार्गी
(c) नर्तकी (d) त्रिलोकी

Ans : (c) 'नर्तकी' शब्द में डीष् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है क्योंकि नर्तक से डीष् होकर नर्तक + डीष् बना। डीष् में 'ई' शेष बचता है, नर्तक + ई हुआ अब 'यस्येति च' सूत्र से नर्तक के ककार के आकार का लोप होकर नर्तक् + ई हुआ तथा वर्णसम्मेलन करने पर नर्तकी बना।

34. शब्दानुशासनस्य कति मुख्यानि प्रयोजनानि?

- (a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (c) शब्दानुशासन के पाँच मुख्य प्रयोजन होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

- (1) रक्षा (2) ऊह (3) आगम (4) लघु (5) असंदेह।

35. सम्बन्धतत्त्वाश्रयं वर्गीकरणं किम्?

- (a) आकृतिमूलकम् (b) परिवारमूलकम्
(c) देशमूलकम् (d) प्रभावमूलकम्

Ans : (a) सम्बन्धतत्त्वाश्रयं वर्गीकरणम् आकृतिमूलकम् अस्ति। अर्थात् सम्बन्ध तत्त्वाश्रय का वर्गीकरण आकृतिमूलक होता है। इसका वर्णन भाषाविज्ञान में है।

36. किमेकम् अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति?

- (a) गवेषणा (b) कुशलः
(c) परश्वः (d) महापात्रः

Ans : (d) महापात्रः अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति। अर्थात् इनमें से महापात्र अर्थविस्तार का उदाहरण नहीं है। भाषाविज्ञान में अर्थ विस्तार का वर्णन है।

37. प्रथमवर्णपरिवर्तनं कस्मिन् ध्वनिनियमे समाहितम्?

- (a) ग्रिमनियमे (b) ग्रासमैननियमे
(c) वर्नरनियमे (d) तालव्यनियमे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) 'प्रथमवर्ण परिवर्तन' ग्रिमनियम ध्वनि में समाहित है। ग्रिम नियम, ध्वनि नियमों में महत्वपूर्ण नियम है इसका नाम ग्रिम नामक विद्वान् के नाम पर पड़ा।

38. भारोपीया: भाषा: कस्मिन् भाषाखण्डे समाहिताः?

- (a) अफ्रीकाखण्डे
- (b) यूरेशियाखण्डे
- (c) प्रशान्तमहासागरीयखण्डे
- (d) अमेरिकाखण्डे

Ans : (b) भारोपीया: भाषा: यूरेशियाभाषाखण्डे समाहिताः। अर्थात् भारोपीय भाषा यूरेशिया भाषा खण्ड में समाहित है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भारोपीय परिवार की है।

39. ह्वेनसाङ्गः कुत्र अधीतवान्?

- (a) वलभीविश्वविद्यालये
- (b) विक्रमशिलाविश्वविद्यालये
- (c) तक्षशिलाविश्वविद्यालये
- (d) नालन्दाविश्वविद्यालये

Ans : (d) ह्वेनसाङ्गः नालन्दाविश्वविद्यालये अधीतवान्। अर्थात् ह्वेनसाङ्ग नालन्दाविश्वविद्यालय में पढ़ा था। ह्वेनसाङ्ग एक चीनी यात्री था जो भारत आने पर बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया तथा काफी समय तक भारत में शिक्षा ग्रहण की।

40. आचार्यविश्वनाथेन वाक्यनिष्पत्तौ कति तत्त्वानि निर्दिष्टानि?

- (a) त्रीणि
- (b) चत्वारि
- (c) द्वे
- (d) पञ्च

Ans : (a) आचार्यविश्वनाथेन वाक्यनिष्पत्तौ त्रीणि तत्त्वानि निर्दिष्टानि। अर्थात् आचार्य विश्वनाथ ने वाक्य की निष्पत्ति में तीन तत्त्व बताये हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) योग्यता (2) आकांक्षा (3) आसक्ति।

41. गौतमबुद्धस्य चिकित्सकः कः आसीत्?

- (a) जीवकः
- (b) मणिभद्रकः
- (c) नागसेनः
- (d) संघभद्रः

Ans : (a) जीवकः गौतमबुद्धस्य चिकित्सकः आसीत्। अर्थात् जीवक नामक व्यक्ति गौतमबुद्ध का चिकित्सक था। इसका वर्णन प्राचीन भारतीय इतिहास में है।

42. भारतीयसंस्कृतौ चातुर्वर्ण्यस्य विधानं किमर्थम्?

- (a) पराभवाय
- (b) सामाजिकरचनायाः सौष्टवार्थम्
- (c) वेदबुद्धिजननाय
- (d) स्वार्थपूर्त्यर्थम्

Ans : (b) भारतीयसंस्कृतौ चातुर्वर्ण्यस्य विधानं सामाजिक रचनायाः सौष्टवार्थम् अस्ति। अर्थात् भारतीय संस्कृति में चातुर्वर्ण्य का विधान सामाजिक रचना तथा सौष्टव के अर्थ से है।

43. 'किरातार्जुनीयः' शब्दे कः प्रत्ययः?

- (a) अनीयर्
- (b) घ
- (c) छ
- (d) यत्

Ans : (c) 'किरातार्जुनीयम्' शब्द में 'छ' प्रत्यय है किरातार्जुन + छ। अब 'आयनेयीनीयियः फटखछघां प्रत्यादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश होकर किरातार्जुन + ईय बना 'यस्येति च' एवं वर्णसम्मेलन करने पर किरातार्जुनीयम् शब्द बनता है।

44. फलनिर्मितानां पात्राणां शुद्धिः कथं भवति?

- (a) गोमूत्रेण
- (b) गोमयेन
- (c) गोबालेन
- (d) गोदुग्धेन

Ans : (d) फलनिर्मितानां पात्राणां शुद्धिः गोदुग्धेन भवति।

45. रसायनः कः आसीत्?

- (a) वटुः
- (b) हर्षस्य सुहृद्
- (c) वैद्यकुमारकः
- (d) कञ्चुकी

Ans : (c) रसायनः वैद्यकुमारकः आसीत्। अर्थात् रसायन वैद्यकुमार था, इसका वर्णन हर्षचरितम् के पञ्चम् उच्छ्वास में है।

46. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकस्य किं नाम?

- (a) माधवः
- (b) माधव्य
- (c) वसन्तकः
- (d) रैवतकः

Ans : (b) महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् सात अङ्कों का विश्व प्रसिद्ध नाटक ग्रन्थ है। इसमें राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला के गान्धर्व विवाह का वर्णन है। शाकुन्तलम् के विदूषक का नाम मादव्य/माधव्य है।

47. कः एकः कामजव्यसने न गणितः?

- (a) मृगया
- (b) परिवादः
- (c) दिवास्वप्नः
- (d) असूया

Ans : (d) असूया कामजव्यसने न गणिता। अर्थात् असूया कामजव्यसन में नहीं परिगणित है। इसका वर्णन मनुस्मृति में प्राप्त होता है।

48. 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा' अस्मिन् कारिकांशे 'त्रिधा' शब्देन कस्य त्रित्वं प्रतिपादितम् अस्ति?

- (a) उपाधीनाम्
- (b) उपाधेयानाम्
- (c) काव्यानाम्
- (d) अर्थानाम्

Ans : (a) 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा' अस्मिन् कारिकांशे 'त्रिधा' शब्देन 'उपाधीनाम्' त्रित्वं प्रतिपादितम् अस्ति

49. भट्टोल्लटः साक्षात्सम्बन्धेन रसस्य स्थितिं कस्मिन् मनुते?

- (a) काव्ये
- (b) नटे
- (c) अनुकार्ये
- (d) सामाजिके

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (c) भट्टलोल्लट ने मुख्य रूप से रस की स्थिति अनुकार्य में मानी है। इन्होंने अपने उत्पत्तिवाद में कहा है कि रस मुख्य रूप से अनुकार्य रामादि में रहता है और उसका अनुकर्ता होने के कारण गौण रूप से नट में भी रस की स्थिति मानी है लेकिन सामाजिक में रस की उत्पत्ति नहीं होती है।

50. केषां मते तात्पर्यार्थोऽपि भवति?

- (a) बौद्धानाम् (b) नैयायिकानाम्
(c) अन्विताभिधानवादिनाम् (d) अभिहितान्वयवादिनाम्

Ans : (d) अभिहितान्वयवादियों अर्थात् मीमांसकों ने वाचक, लक्षक तथा व्यञ्जक शब्दों के अतिरिक्त तात्पर्यार्थ नामक चौथा शब्द भी माना है।

51. कस्य नियामकत्वे 'स्थाणुं भज भवच्छिदे' इति वाक्यम् उदाहृतम्?

- (a) प्रकरणस्य (b) अर्थस्य
(c) देशस्य (d) कालस्य

Ans : (b) अर्थस्य नियामकत्वे 'स्थाणुं भज भवच्छिदे' इति वाक्यम् उदाहृतम्।

52. 'गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

- (a) लुप्तोपमा (b) तद्धितगा अर्थी पूर्णोपमा
(c) तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा (d) उपमेयोपमा

Ans : (c) 'गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत्' यहाँ पर तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा अलङ्कार है।

53. 'श्रव्यत्वं पुनः ओजःप्रसादयोरपि' अनेन कस्य मतं खण्डितम्?

- (a) भामहस्य (b) दण्डिनः
(c) रुद्रटस्य (d) वामनस्य

Ans : (a) 'श्रव्यत्वं पुनः ओजःप्रसादयोरपि' अनेन भामहस्य मतं खण्डितम्। अर्थात् यहाँ पर आचार्य भामह के मत का खण्डन है।

54. अनौचित्येन आच्छादिता का न भवति?

- (a) एकाश्रया रतिः (b) अनेकाश्रया रतिः
(c) शोकावस्थायां रतिः (d) स्वकान्तविषया रतिः

Ans : (d) अनौचित्येन आच्छादिता स्वकान्तविषया रतिः न भवति।

55. साक्षात्सम्बन्धेन दोषस्य कुत्र स्थितिः?

- (a) रसे (b) शब्दे
(c) अर्थे (d) वाक्ये

Ans : (a) साक्षात्सम्बन्धेन दोषस्य रसे स्थितिः। अर्थात् साक्षात्कार सम्बन्ध से दोष की रस में स्थिति होती है। इसका वर्णन साहित्यदर्पण में विस्तार से मिलता है।

56. आचार्यविश्वनाथः कतीनाम् आचार्याणां काव्यलक्षणं खण्डितवान्?

- (a) त्रयाणाम् (b) चतुर्णाम्
(c) पञ्चानाम् (d) षण्णाम्

Ans : (c) आचार्य विश्वनाथः पञ्चानाम् आचार्याणां काव्यलक्षणं खण्डितवान्। अर्थात् आचार्य विश्वनाथ ने पाँच आचार्यों के काव्य लक्षण का खण्डन किया है।

57. 'व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिः' अस्मिन् वाक्ये व्यङ्क्तः इत्यत्र का विभक्तिः?

- (a) प्रथमैकवचनम् (b) द्वितीयैकवचनम्
(c) प्रथमपुरुषद्विवचनम् (d) प्रथमपुरुषैकवचनम्

Ans : (c) 'व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिः' इस वाक्य में व्यङ्क्तः में विभक्ति प्रथमपुरुष द्विवचन की लगी है।

58. अद्भुतरसस्य को देवः?

- (a) यमः (b) ब्रह्मा
(c) विष्णुः (d) रुद्रः

Ans : (b) अद्भुत रस के देवता ब्रह्मा हैं कुछ लोग गन्धर्व को भी मानते हैं यम करुण रस के देवता हैं तथा रुद्र रौद्र रस के देवता हैं शान्त रस के देवता श्री विष्णु हैं।

59. महामखाः कति?

- (a) पञ्च (b) चत्वारः
(c) षट् (d) सप्त

Ans : (a) महामखा पञ्च सन्ति।

60. रामायणेऽङ्गिरसः कः?

- (a) करुणः (b) वीरः
(c) शान्तः (d) शृङ्गार

Ans : (a) रामायण में करुण रस अङ्गीरस है। रामायण सात काण्डों में विभक्त भारत का विशालकाय महाकाव्य है।

61. रामचरितज्ञानार्थं वाल्मीकये को वरमदात्?

- (a) नारदः (b) गौतमः
(c) ब्रह्मा (d) मालवः

Ans : (c) रामचरितज्ञानार्थं वाल्मीकये ब्रह्मा वरमदात्। अर्थात् रामचरित ज्ञान के लिए वाल्मीकि को ब्रह्मा जी ने वरदान दिया तथा यहीं से रामायण की रचना की नींव रखी गयी। महर्षि वाल्मीकि को रामायण की कथा नारद ने सुनाई थी।

62. गङ्गावतरणोपाख्यानं रामायणे कस्मिन् काण्डे स्थितम्?

- (a) अयोध्याकाण्डे (b) सुन्दरकाण्डे
(c) अरण्यकाण्डे (d) बालकाण्डे

Ans : (d) गङ्गावतरण का उपाख्यान रामायण के बालकाण्ड में स्थित है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण सात अङ्कों में विभक्त है तथा इसमें लगभग 24000 श्लोक हैं अतः इसे चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता भी कहते हैं।

63. महाभारतस्य कः क्रमः?

- (a) जयः, भारतम्, महाभारतम्
(b) भारतम्, जयः, महाभारतम्
(c) महाभारतम्, जयः, भारतम्
(d) जयः, विजयः, महाभारतम्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) वेदव्यास प्रणीत महाभारत का क्रम है-
जय, भारतम्, महाभारतम्। महाभारत की कथा 18 पर्वों में है तथा इसमें लगभग 1 लाख श्लोक हैं।

64. महाभारतयुद्धे सर्वाधिकदिवसपर्यन्तं कौरवसेनापतिः कः आसीत्?

- (a) द्रोणः (b) कर्णः
(c) शल्यः (d) भीष्मः

Ans : (d) महाभारत के युद्ध में सर्वाधिक दिनों तक कौरव सेनापति भीष्म थे।

65. नैमिषारण्ये महाभारतीयां कथां क उक्तवान्?

- (a) वैशम्पायनः (b) उग्रश्रवाः
(c) शौनकः (d) व्यासः

Ans : (b) नैमिषारण्य में महाभारत की कथा को उग्रश्रवा नामक ऋषि ने कही थी।

66. शकुन्तलोपाख्यानं कस्मिन् पर्वण्युपलभ्यते?

- (a) आदिपर्वणि (b) वनपर्वणि
(c) विराटपर्वणि (d) कर्णपर्वणि

Ans : (a) शाकुन्तलोपाख्यान महाभारत के आदिपर्व में है।

67. 'पुरा नवं भवति' इति पुराणशब्दनिर्वचनं कः कृतवान्?

- (a) गार्ग्यः (b) मधुसूदन सरस्वती
(c) व्यासः (d) यास्कः

Ans : (d) 'पुरा नवं भवति' इति पुराणशब्दनिर्वचनं यास्कः कृतवान्।

68. श्रीमद्भागवते कति स्कन्धाः?

- (a) द्वादश (b) एकादश
(c) चतुर्दश (d) दश

Ans : (a) श्रीमद्भागवद् में द्वादश स्कन्ध हैं।

69. अनूचानः कः?

- (a) वैयाकरणः (b) दैवज्ञः
(c) साङ्गवेदाध्येता (d) होता

Ans : (c) अनूचानः साङ्गवेदाध्येता भवति।

70. कः एकः संस्थागुप्तचरो नास्ति?

- (a) कापटिकः (b) तीक्ष्णः
(c) गृहपतिकः (d) उदास्थितः

Ans : (b) तीक्ष्णः संस्थागुप्तचरो नास्ति। अर्थात् तीक्ष्ण संस्था गुप्तचर का लक्षण नहीं है।

71. 'राधा पत्रं लेखिष्यति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तने लेख्यं भवति

- (a) पत्रे राधा लेखिष्यति
(b) राधया पत्रं लिखिष्यते
(c) पत्रेण राधया लिखिष्यते
(d) राधायाः पत्रं लिखिष्यते

Ans : (b) 'राधा पत्रं लेखिष्यति' इसका वाच्य परिवर्तन होगा-

"राधया पत्रं लिखिष्यते"। क्योंकि कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति कर्म में प्रथमा विभक्ति एवं क्रिया कर्म के लिङ्ग, वचन एवं पुरुष के अनुसार आती है।

72. 'प्रपठ्यते' पदे 'प्र' इत्युपसर्गयोगाद्विशेषः ज्ञायते

- (a) प्रकर्षः (b) प्रकाशः
(c) प्रमाणम् (d) प्रमेयम्

Ans : (a) 'प्रपठ्यते' पद में 'प्र' इस उपसर्ग योग से प्रकर्षः ज्ञात होता है। प्र=प्रकर्षः, अत्यधिक।

73. 'कुम्भकारः' पदे किमुप्रत्ययोऽस्ति।

- (a) अण् (b) घञ्
(c) क (d) अच्

Ans : (a) कुम्भकारः पद में अण् प्रत्यय का विधान किया गया है। इसका विग्रह 'कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।' यहाँ पर 'उपपदमतिङ्ग' सूत्र से कुम्भकारः में उपपद तत्पुरुष समास हुआ।

74. 'पाचकः' इति पदे धातु + प्रत्यययोगोऽस्ति

- (a) पच् + ण्वुल् (b) पच् + अण्
(c) पच् + वुञ् (d) पच् + अक्

Ans : (a) पाचकः में पच् धातु से ण्वुल् प्रत्यय होकर पच् + ण्वुल् बना। ण्वुल् में वु शेष बचता है, अब बना पच् + वु। अब 'युवोरनाको' सूत्र से वु को अक होकर पच् + अक बना। अब 'अचो ङिति' सूत्र से आदि स्वर की वृद्धि होकर पाच् + अक हुआ तथा वर्णसम्मेलन एवं रुत्वविसर्ग होकर पाचकः बना।

75. 'सवर्णसंज्ञा' सूत्रमस्ति

- (a) अकः सवर्णे दीर्घः
(b) अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(c) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(d) ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्

Ans : (c) 'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्' सवर्ण सञ्ज्ञा विधायक सूत्र है। जबकि 'अकः सवर्णे दीर्घः' दीर्घ सन्धि विधायक सूत्र है। 'ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्' वार्तिक से ऋ और लृ की सवर्णता ज्ञात होती है।

76. निम्नोक्त-वाक्येषु शुद्धम् एकमस्ति-

- (a) शतरूप्यकाणि धारयामि
(b) शतं रूप्यकाणि धारयामि
(c) शतानि रूप्यकाणि धारयामि
(d) शतरूप्यकं धारयामि

Ans : (b) अधोलिखित वाक्यों में से 'शतं रूप्यकाणि धारयामि' वाक्य शुद्ध है। क्योंकि 'शतम्' नित्यबहुवचनान्त है।

77. उत्तररामचरितेऽङ्कास्सन्ति-

- (a) सप्त (b) अष्ट
(c) षट् (d) दश

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

Ans : (a) भवभूति के प्रसिद्ध नाटक उत्तररामचरितम् में सप्त (7) अङ्क हैं। इस नाटक में छायाङ्क एवं गर्भाङ्क की व्यवस्था की गयी है। प्रथम अङ्क का नाम चित्रवीथी दर्शन है तथा अन्तिम गर्भाङ्क है।

78. नायिकाविहीनं नाटकं वर्तते

- (a) कुन्दमाला (b) नागानन्दम्
(c) प्रसन्नराघवम् (d) मुद्राराक्षसम्

Ans : (d) विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षसम् नाटक में नायिका का अभाव है। यह सात अङ्कों का प्रसिद्ध नाटक है। इसमें चाणक्य अपनी कुटिल बुद्धि एवं चालों से नन्दवंश का विनाश करके चन्द्रगुप्त को राजा बनाता है तथा नन्दवंश का अमात्य राक्षस राजा का सेनापति नियुक्त होता है।

79. अध उक्तेष्वेको लघुत्रय्यां नास्ति-

- (a) ऋतुसंहारः (b) कुमारसम्भवम्
(c) रघुवंशम् (d) मेघदूतम्

Ans : (a) 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य, 'मेघदूतम्' गीतिकाव्य एवं 'रघुवंशम्' महाकाव्य ये तीनों ग्रन्थ लघुत्रयी के अन्तर्गत परिगणित हैं, जबकि कालिदास विरचित ऋतुसंहार लघुत्रयी के अन्तर्गत नहीं आता है।

80. हर्षवर्धनस्य रचना नास्ति-

- (a) प्रियदर्शिका (b) रत्नावली
(c) नागानन्दम् (d) नैषधीयचरितम्

Ans : (d) हर्षवर्धन की तीन रचनाएं प्राप्त होती हैं- (1) प्रियदर्शिका (2) रत्नावली (3) नागानन्दम्। जबकि 'नैषधीयचरितम्' महाकवि श्रीहर्ष का प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें 22 सर्ग हैं।

81. मम्मटेनोक्तं नास्ति-

- (a) भारती कवेर्जयति
(b) लक्ष्यं न मुख्यम्
(c) स्थायिभावो रसः स्मृतः
(d) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

Ans : (d) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' यह मम्मट की उक्ति नहीं है क्योंकि 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' आचार्य विश्वनाथ का काव्य लक्षण है।

82. 'तपोधनं वेत्ति न माम् उपस्थितम्' इति कस्य परिचयोऽस्ति?

- (a) हनूमतः (b) भरतस्य
(c) शर्विलकस्य (d) दुर्वाससः

Ans : (d) 'तपोधनं वेत्ति न माम् उपस्थितम्' इस वाक्य से दुर्वासा ऋषि का परिचय मिलता है। यह पद्य शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का है जब शकुन्तला राजा दुष्यन्त की चिन्ता में मग्न थी उसी समय ऋषि दुर्वासा आ जाते हैं और शकुन्तला उनका आगमन नहीं जान पाती तब दुर्वासा ऋषि कहते हैं-

“विचिन्त्यन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्ति न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥

83. 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' इति सिद्धान्तस्य आचार्योऽस्ति

- (a) अभिनवगुप्तः (b) भट्टलोल्लटः
(c) आचार्यः भरतः मुनि (d) कविराजः विश्वनाथः

Ans : (c) 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' इस सिद्धान्त के आचार्य भरत मुनि हैं उनके अनुसार विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है।

84. "पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः" इति वाक्यम् उत्तररामचरितस्य केन पात्रेण प्रयुक्तम्?

- (a) तमसया (b) मुरलया
(c) गोदावर्या (d) आत्रेय्या

Ans : (b) "पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः" इस वाक्य का सम्बन्ध मुरला से है। तृतीय अङ्क में मुरला राम को देखकर सहसा बोल उठती है-

“अनिर्भिन्नो गभीरत्वाद् अन्तर्गूढधनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥”

85. 'यदि यथा वदत्यधिपस्तथात्वम् पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्॥' इति कस्य काव्यांशः?

- (a) राजानक-रुय्यकस्य
(b) पण्डितराज-जगन्नाथस्य
(c) महाकवेः कालिदासस्य
(d) उत्तररामचरितकारस्य

Ans : (c) 'यदि यथा वदत्यधिपस्तथात्वम् पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्॥' यह पद्यांश महाकवि कालिदास से सम्बन्धित है। इसका वर्णन अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्राप्त होता है।

86. "तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति" उत्तरे वाल्मीकिरामायणकाण्डे केनोक्तम्?

- (a) सीतया (b) कैकेय्या
(c) कौशल्याया (d) पृथिव्या

Ans : (a) "तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति" यह वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड में सीता के द्वारा कथित है।

87. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

- (a) उपमा (b) समासोक्तिः
(c) उत्प्रेक्षा (d) अतिशयोक्तिः

Ans : (c) 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः' यहाँ पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार है। उत्प्रेक्षा अलङ्कार की परिभाषा इस प्रकार है-
“सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्”

88. "वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्थान्तिकम्" इत्यत्र कः काव्यभेदः?

- (a) गुणीभूतव्यङ्ग्यम् (b) व्यङ्ग्यप्राधान्ययुक्तम्
(c) लाक्षणिकम् (d) चित्रात्मकं चित्रं वा

Ans : (b) "वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्थान्तिकम्" यहाँ पर व्यङ्ग्यप्राधान्ययुक्तम् काव्यभेद है।

89. काव्यहेतुविषये मम्मटरीत्या किं साधु वर्तते?

- (a) इति हेतुः (b) त्रयो हेतवः
(c) काव्यहेतवः (d) मम्मटोक्त-काव्यहेतुः

Ans : (a) काव्यहेतुविषये मम्मटरीत्या 'इति हेतु' साधु वर्तते। यथा-
शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे॥

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL

<https://t.me/uppcstestseries2023pdf>

90. कालिदासेन गीतमयं खण्डकाव्यं विरचितम्

- (a) ऋतुसंहारः (b) मालविकाग्निमित्रम्
(c) कुमारसम्भवम् (d) मेघदूतम्

Ans : (d) कालिदास ने गीतमय 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य की रचना की। यह खण्डकाव्य 'मेघदूतम्' दो भागों में प्राप्त होता है—
(1) पूर्वमेघ एवं (2) उत्तरमेघ।

91. शूद्रकेन मानभूतं प्रकरण-नाट्यं निर्मितमासीत्

- (a) वेणीसंहारः
(b) विद्धशालभञ्जिका
(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(d) मृच्छकटिकम्

Ans : (d) शूद्रक ने मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण ग्रन्थ की रचना की। इसमें 10 अङ्क प्राप्त होते हैं। इसमें सार्थवाह चारुदत्त एवं गणिका वसन्तसेना की प्रणय कथा का वर्णन है। चारुदत्त की पत्नी का नाम धूता एवं पुत्र का नाम रोहसेन था।

92. 'अलङ्कार-शब्दस्य' व्युत्पत्तिमूलको वास्तविकोऽर्थो भवति

- (a) उपमादयो भेदाः
(b) भामहशास्त्रम्
(c) रसरसापकर्षकतत्त्वम्
(d) अलङ्करोतीति

Ans : (d) अलङ्कार शब्द का व्युत्पत्तिमूलक वास्तविक अर्थ-अलङ्करोति इति अलङ्कार है। अलङ्कार मुख्यतः दो प्रकार का होता है—(1) शब्दालङ्कार (2) अर्थालङ्कार। फिर शब्दालङ्कार एवं अर्थालङ्कारों के कई भेद हो जाते हैं।

93. अध्यवसाये सिद्धेऽलङ्कारो भवति-

- (a) उत्प्रेक्षा (b) अतिशयोक्तिः
(c) समासोक्तिः (d) अप्रस्तुतप्रशंसा

Ans : (b) अध्यवसाये सिद्धेऽलङ्कारो अतिशयोक्तिः भवति। यथा—
“सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।”

94. काव्यप्रकाशे काव्यप्रयोजनानि संख्यासूक्तानि सन्ति-

- (a) दश (b) पञ्च
(c) षट् (d) सप्त

Ans : (c) काव्यप्रकाश में काव्य के प्रयोजनों की संख्या षट् (6) है जैसे—

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

95. 'काव्यं यशसे' इति मम्मटोक्तस्योदाहरणं विद्यते-

- (a) धावकादीनामिव (b) मयूरभट्टादीनामिव
(c) बाणभट्टादीनामिव (d) कालिदासादीनामिव

Ans : (d) 'काव्यं यशसे' से मम्मट ने कालिदासादीनामिव का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। जैसे-कालिदासादीनामिव यशः। श्रीहर्षादीर्घावकादीनामिव धनम्, आदित्यादेर्मयूरादीनामिव अनर्थनिवारणम् इत्यादि।

96. काव्यप्रकाशकारोक्ता 'शक्तिः' कमाशयं प्रकटयति?

- (a) कविबुद्धिम्
(b) कविधारणाम्
(c) कविभारतीम्
(d) कविप्रतिभाम्

Ans : (d) काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट के द्वारा कही गयी 'शक्तिः' इस पद से 'कवि प्रतिभाम्' का आशय प्रकट हो रहा है।

97. रसनिष्पत्तिप्रसङ्गे साधारणीकरणसिद्धान्तस्य अवधारणा प्रथमं केनाचार्येण प्रवर्तिता?

- (a) भट्टलोल्लटेन (b) भट्टनायकेन
(c) विश्वनाथेन (d) जगन्नाथेन

Ans : (b) रस निष्पत्ति के प्रसङ्ग में साधारणीकरण सिद्धान्त की अवधारणा सर्वप्रथम भट्टनायक के द्वारा दी गई। इन्होंने अपने भुक्तिवाद में कहा है कि- रस की निष्पत्ति न अनुकार्य रामादि में होती है और न अनुकर्ता नटादि में। बल्कि वास्तविक रसानुभूति सामाजिक को होती है।

98. 'भाणः' कस्य महाविषयस्य भागः?

- (a) महाकाव्यस्य (b) ऐतिहास्य
(c) नाट्यस्य (d) मुक्तक-वाङ्मयस्य

Ans : (c) भाण नाटक के महाविषय का भाग है। रूपक के दश भेद बताये गये हैं, उनमें से भाण भी एक है। यथा—
नाटकमथ प्रकरणं भाणं व्यायोग समवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश।।

99. उपमानापेक्षयोपमेय प्रकर्षे सत्यलङ्कारो भवति

- (a) अपह्नुतिः (b) व्यतिरेकः
(c) दृष्टान्तः (d) समासोक्तिः

Ans : (b) उपमानापेक्षयोपमेय प्रकर्षे अलङ्कारः सति व्यतिरेकः भवति।

व्यतिरेक अलङ्कार की परिभाषा इस प्रकार है—“उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः।”

100. को नाम समासः नित्यं क्लीबलिङ्गं धारयति?

- (a) द्वन्द्वः
(b) द्विगुः
(c) विशेष्य-विशेषण-सम्बन्धि-कर्मधारयः
(d) अव्ययीभावः

Ans : (d) “अव्ययीभावश्च” सूत्र से अव्ययीभाव समास नित्यनपुंसकलिङ्ग एकवचन में होता है। इसके अलावा द्विगु और द्वन्द्व समास भी समाहार अर्थ में नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होते हैं।